☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

तीसरा भाग

http://nehklankharshabad.com/

तत्करा

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
०५ जेठ २०१० बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	००१
०६ जेठ २०१० बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	०३७
०६ जेठ २०१० बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे चंदोआ भेट करन समें	जेठूवाल		०४६
०७ जेठ २०१० बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	०४६
०७ जेठ २०१० बिक्रमी	जीवन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	०५७
०८ जेठ २०१० बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	झबाल	अमृतसर	०७२
०६ जेठ २०१० बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	०८२
०६ जेठ २०१० बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह	भुचर	अमृतसर	०८८
१२ जेठ २०१० बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	१०५
१३ जेठ २०१० बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	१२८
१३ जेठ २०१० बिक्रमी	मासटर सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	१७४
१४ जेठ २०१० बिक्रमी	बीबी सवरन कौर दे अन्त समें	वास्ते जलालाबाद		१८४
१४ जेठ २०१० बिक्रमी	मासटर सोहण सिँघ	रामपुर	अमृतसर	१८६
१४ जेठ २०१० बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	१६०
१५ जेठ २०१० बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	२०५
१६ जेठ २०१० बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	२१२
१७ जेठ २०१० बिक्रमी	माई दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	२२२
१७ जेठ २०१० बिक्रमी	आत्मा सिँघ दे गृह	पट्टी	अमृतसर	२२५
१७ जेठ २०१० बिक्रमी	गुरमेज सिँघ दे गृह	पट्टी	अमृतसर	२२७
२४ जेठ २०१० बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३४

1
०३

1
०३

२६ जेठ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३८
२८ जेठ २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२४०
३० जेठ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२४७
०४ हाढ़ २०१० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	२५१
०४ हाढ़ २०१० बिक्रमी धर्मबीर सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	२५६
०६ हाढ़ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२५९
०६ हाढ़ २०१० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह	टांगरा	अमृतसर	२६
०७ मग्घर २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२६४
११ मग्घर २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२७१
१२ मग्घर २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२७४
१३ मग्घर २०१० बिक्रमी मनजीत सिँघ नवित	जेठूवाल	अमृतसर	२७६
१४ मग्घर २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	२९४
१५ मग्घर २०१० बिक्रमी मनजीत सिँघ दी देह छुडाउण नवित जेठूवाल			३२५
१६ मग्घर २०१० बिक्रमी मनजीत सिँघ दे अन्तम ससकार नवित जेठूवाल			३३१
१७ मग्घर २०१० बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३५१
पहली माघ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	३८३
२-३ माघ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	४३८
०३ माघ २०१० बिक्रमी घर तों बाहर खेत विच	बुग्घे	अमृतसर	४४९
०४ माघ २०१० बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ ते डा० पाल सिँघ दे पिछले जन्म नवित	भलाईपुर	अमृतसर	४६९
०५ माघ २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर	जेठूवाल	अमृतसर	४७१
०६ माघ २०१० बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	४७७

2
०३

०५ चेत २०११ बिक्रमी नसीब सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी उतर प्रदेश ४६४

3 3

०३ ०३

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।

❋ पंचम जेठ २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल विहार होया ❋

ओअँ एक एक करतारा। जोत सरूपी रूप अपारा। वड वड भूपी तीन लोक सिक्दारा। बिन रंग रूपी एका जोत करे पसारा। साचा हरि हरि सति सरूपी जन भगतां देवे नाम सहारा। कलिजुग अन्धेर सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, बिन गुर पूरे कोए ना लावे पारा। जूठे झूठे लायण चरन भबूती, जिन हरि मिल्या नैण मुँधारा। बेमुख दर घर साचे लायण लूती,
१ ०३ आत्म होई सर्ब हँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत धर निहकलंक जोत सरूपी ल्या अवतारा। तीन लोक १ ०३
हरि आपे साजे। कर किरपा हरि गरीब निवाजे। आप उपाए आप बणाए आप सुहाए वड राजन राजे। प्रगट जोत निहकलंक विच कलि आया देस माझे। साचा शब्द वजाए डंक, सोहँ शब्द चढ़ाए सच्चे ताजे। इक्क कराए राउ रंक, चरनी डिग्गण राजन राजे। लिख्त लेख हरि आप लिखाए, प्रगट हो विच माझे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साजन साजे। साजन साज आप अख्वाए। सोहँ साची आवाज़ गुरसिक्खां कन्न सुणाए। आत्म जाए मन्न, धन्न धन्न धन्न जणेंदी माए। हरया होए मन तन, जो जन सरनाई आए। धर्म राए ना लाए डन्न, जो जन रहे सेव कमाए। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्, वेले अन्त होए सहाए। आप उठाए आपणे जन, कर किरपा पार लँघाए। गुरमुख साचे पार कराए, आप कढाए आत्म जन। सतिजुग चढ़ाए साचे चन्न महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जन सरन लगाए। किरपा करे आप गिरधारा। गुरसिक्खां हरि कर्म विचारा। मानस जन्म विच कलि सुधारा। मिटाए भरम मिल्या हरि पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि अन्त जुगां जुगन्त एका जोत निरँजण नर नरायण आवे जावे वारो वारा। आवे जावे वारो वार। जामा धारे विच संसार। करे खेल अपर अपार। ना कोई जाणे जीव गंवार। गुरमुख पूरे करन चरन प्यार। जिस जन

बख्शे हरि साचा किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मातलोक सच सच लाए दरबार। साचा दर सच्चा दरबारी। प्रगट जोत राम अवतारी। घनईआ कृष्ना नैण मुँधारी। अचरज खेल करे हरि हरि बनवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जोत सरूप अचरज वरते विच संसारी। अचरज खेल किया हरि सरबग्ग। गुरमुख साचे हरि चरनी गए लग्ग। आप बुझाए आत्म तृष्ना अग्ग। दर आए हरि माण दवाए हँस बणाए कग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ शब्द मुख लगाए साचा सग। मुख लगाए शब्द सगन। गुरसिख रहे सदा मग्न। साची देवे चरन लग्न। आप बिठाए विच गगन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दीपक विच मात जगण। आपणा बिरद रखाए आप। एका सोहँ जपाए जाप। कोटन कोट उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां आप मिटाए तीनो ताप। सन्त जनां हरि दे वड्याई। तृष्ना अग्न तन रहण ना पाई। बेमुखां आत्म लग्न रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्तिम, अन्त कलि साची जोत मात प्रगटाई। जोत सरूपी जामा धार। मातलोक अवतार नर। जन भगतां चुकाए झूठा डर। एक दिसाए साचा घर। जिथ्थे वसे नरायण नर। गुरमुख साचे दरस कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म शांत कराए अमृत मेघ बरस कर। सन्त जनां हरि संग सुहेला। आप कराया साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ साचा शब्द गुरमुख लगाए फल केला। अमृत फल प्रभ दर खाओ। आप आपणी बूझ बुझाओ। दर घर साचे एका एक ध्यान लगाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर दरस आत्म भेव गूझ खुलाओ। देवे दरस धीरज जति। बीज सोहँ बीज आत्म साचे वत। आपे दे समझावे मति। साचा नाम रसना चरखा लैणा कत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां जाणे आपे मित गत। साचा दान हरि साचे दीआ। आत्म जोत जगाया दिया। आप आपणा किया हीआ। सतिजुग रखाए साची नीआ। गुरमुख साचे सन्त जन दर घर साचे लैण पूर्ब जन्म जो बीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा एका पिया। गुर गोबिन्द लेख लिखारा। लिख्या लेख अपर अपारा। देवे शब्द अगम्म अपारा। वरते वरतावे विच संसारा। करे करावे हरि करनेहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका एक एकँकारा। गुर गोबिंद लिखाए लिख्त। प्रभ अबिनाशी पूर कराए इच्छत। आप होए सर्ब रिच्छत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ पाए गुरसिक्खां आत्म झोली भिच्छत। गुर पूरे तेरे हत्थ वड्याई। दुःख रोग दर दे गंवाई। आत्म दुःख रहे ना राई। उपजे सुख रसना हरि हरि हरि जस गाई। उतरे भुक्ख जोत सरूपी हरि दर्शन पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे आप वड्याई। दुःख रोग दूर जाए नस्स। सोहँ शब्द तीर चलाया कस। अमृत मेघ घर साचे साचा रस। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ सच संदेश जगत रिहा दस्स। सच संदेश जगत गुर देवे। गुरमुख विरला दर लेवे सोहँ साचे मेवे देवे हरि अलख अभेवे। दिवस रैण रैण दिवस जन जपया जेहवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां पूर कराए सेवे। दर दुआरे आयण सिक्ख। प्रभ दर मंगण साची भिक्ख। देवे वड्याई विच मुन रिक्ख। साचे लेख प्रभ देवे लिख। आत्म उतारे तृष्ना तृख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां देवे साची भिक्ख। मंगे दर सच दरबारा। देवणहार इक्क दातारा। जोत सरूपी हरि वरतारा। भरे रहण दर सद भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां देवे चरन प्यारा। आए दर चरन परवान। धुर दरगाहे साचा मान। मिल्या हरि बली बलवान। गुरमुख साचे सच दर परवान। अमृत मेघ बरसे सावण, आत्म जोत दीप जगाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जोत सरूपी विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवानयां पहरया जामयां। सोहँ देवे नाम निधानयां। गुरमुखां आत्म उपजावे ब्रह्म ज्ञानयां। वज्जे तीर सोहँ आत्म बज़र कपाटी आप खुलानयां। दर आयां देवे माण निमाणयां। अमृत साचा सीर पिलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर कर वड मेहरवानयां। साचा दर इक्क जगदीश। सोहँ छत्र झुलाए सीस। वेले अन्त काल कलि सृष्ट सबाई जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख वड्याए, कोए ना करे गुरसिख तेरी रीस। प्रभ अबिनाशी अछल अछेदा। भेव ना पायण चारे वेदा। ना मिले हरि विच कतेबा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी अभेद अभेदा। आप अभेद सदा अभेव। भेव ना पायण देवी देव। सुरपति राजा इन्द मंगे दर सेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जोत सरूप गुरसिक्खां सोहँ नाम जपावे जिह्व। गुरमुख मंगे सच द्वार। प्रभ अबिनाशी देवे तार। सर्ब घट वासी पावे सार। करे बन्द खुलासी लक्ख चुरासी गेड़ निवार। जो जन होए मदिरा मासी, दर दर होयण ख्वार। सृष्ट सबाई अन्त निवासी, बेमुख होए दुष्ट दुराचार। गुरमुख साचे मानस जन्म होए रहिरासी, गुर चरन कर प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात ल्या अवतार। गुरमुख साचे सच ढंडोरा। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए विच मात अन्ध घोरा। चार वरन प्रभ भेव चुकाए तोरा मोरा। सोहँ साचा शब्द चलाए जोत सरूपी साचा घोड़ा। चार वरन हरि रसना गाए, निहकलंक तेरे चरन आए दौड़ा। धन्न धन्न धन्न जणेंदी माए, प्रभ दर्शन जिस जन लोड़ा। मात गर्भ फिर ना आए, आप कटाए चुरासी गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाए, गुरसिक्खां वसाए तेरी काया नगर खेड़ा। गुरमुख साचे सच रंग माण। आपणा मूल आप पछाण। कलिजुग जीव ना भुल्ल अञ्याण। वेले अन्त आवे हाण। सोहँ वज्जे आत्म बाण। सृष्ट सबाई सुंञ मसाण। मायाधारी होए नादान। आत्म ना वस्सया हरि भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरे जोत बली बलवान।

गुरमुख साचे सच रंग वेख। प्रभ अबिनाशी किया भेख। सृष्ट सबाई लिखाए लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए मेट मिटाए औलीए शेख़। गुरमुख साचे सच घर वास। सचखण्ड निवासी विच आत्म रक्खे वास। बैकुण्ठ निवासी आत्म जोत करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा दास। दर घर आयां देवे माण। दरगाह साची कर परवान। आप तुड़ाए आत्म जिंदा किरपा कर महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर साचे मंगो इक्क भगवान। गुरमुख साचे सच दर मंग, मानस जन्म ना होए भंग। आदि अन्त साध सन्त प्रभ साचा वसे संग। दिवस रैण रैण दिवस चढ़ाए एका रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सदा सहाई वसे अंग संग। एका मंगो साचा दर। कलिजुग अन्तिम जाओ तर। उधरे पार नारी नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर पुचाए साचे घर। धुर दरगाह सच टिकाणा। एका जोत जगे महाना। जोत सरूपी इक्क भगवाना। आदि अन्त जुगा जुगन्त आवे जावे जोत सरूपी पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार गुरमुख विरले कलि पछाणा। कलिजुग आया सतिजुग लाया। डंक वजाया राउ रंक इक्क कराया। दर आयां सभ शंक मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। सर्ब जीआं हरि जाणे अन्तर। गुरसिख बणाए तेरी बणतर। दवाए माण जुगा जुगन्तर। जगाए जोत आत्म अन्तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपाए साचा मन्त्र। गुरसिख तेरी बुध बबेक। एका रक्ख चरन टेक। कलिजुग माया ना लागे सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म जोत जगाए एक। एका जोती जाए जग। कलिजुग बुझे तृष्ना अग्ग। आप बणाए हँस कग्ग। गुरमुख साचे पंचम जेठ सिर तेरे बंधे हरि पग्ग। मातलोक देवे वड्याई, देवे वधाई सारा जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचा जो जन जायण चरनीं लग्ग। किरपा करे आप निरँकारे। जगे जोत काया महल मुनारे। आपे खोले गुरसिख तेरे बन्द दुआरे। गुरसिख खुल्ले सुन्न तुट्टे मुन, रंगे रंग अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप भरे तेरे भण्डारे। आप भण्डारे देवे भर। गुरमुखां किरपा देवे कर। आप वखाए साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी बैठा वेखे हरि। भिन्नी रैनड़ीए तूं सद अडोल। गुरसिख सोहण गुर चरन कोल। सतिजुग फुलवाड़ी रही मवल। आप उलटाए गुरसिक्खां नाभ कँवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई उप्पर धवल। भिन्नी रैनड़ीए तेरी साची रुत्त। गुरसिख बणाए प्रभ साचे सुत्त। प्रगटे जोत विच मात, पारब्रह्म परमेश्वर अचुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए नित नवित्त। भिन्नी रैनड़ीए रंग साचा जानणा। साचा सुख हरि चरन मानणा। सोहँ देवे प्रभ साचा दानणा। गुरमुखां आत्म जोत जगाए कोटण

भानणा। जगे जोत अगम्म अपारे, गुरमुख साचे कलिजुग तारे, प्रगटे जोत कृष्ना काहनणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मात जोत धरे विष्नूं भगवानणा। विष्नूं भगवान रंग अवल्लड़ा। एका एक सद वसे अकल्लड़ा। गुरसिक्खां करे विच मात भारा पल्लड़ा। बेमुखां उतारे तन खलड़ा। साचा नाम गुर साचा देवे, दस्से राह सुखलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत जगाए, राह दिसाए सतिजुग सद अवल्लड़ा। सतिजुग साचा राह दिसाए। एका राह एका थां एका मां धरत मात बणाए। एका दात एका बात एका रात एका नात गुर संगत बणाए। चार वरन बणाए भैण भ्रात, साची दात प्रभ भिच्छया पाए। गुरसिक्खां अन्तिम पुच्छे बात, वेले अन्त होए सहाए। आत्म वेख विचार, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप, जोत निरँजण आपणे रंग रंगाए। रंग रंगाए नर नरायण। आपणा बिरद आप रखाया, गुरसिख बणाए साक सज्जण सैण। प्रभ दर साचे गुरमुख विरले लहणा साचा लैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी पैण। भिन्नी रैनड़ीए तेरा राह न्यारा। साचा शब्द हरि वरतारा। जन भगतां देवे नाम भण्डारा। देवणहार इक्क दातारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आयण चरन दुआरा। भिन्नी रैण रंग मजीठ। गुरमुख साचे प्रभ नेत्र डीठ। एका रंग चढ़ाए आत्म मजीठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे पीठ। भिन्नी रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई। गुरमुख साचे सन्त जन हरि लए मिलाई। प्रभ अबिनाशी मात जोत धर हरि करे जगत रुशनाई। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा बणे साचा मित सखाई। भिन्नी रैनड़ीए वेख साचा रंग। प्रभ अबिनाशी गुरसिक्खां वसे अंग संग। गुरमुख साचे प्रभ दर आए मंगण साची मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म देवे साची गंग। गुरसिख वेख जगत विहारा। वरते वरतावे जो संसारा। तरनहार गुरसिख प्यारा। जन्म मरन जिस डरन निवारा। सच धाम गुर चरन प्यारा। पूरन ब्रह्म हरि नाम रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहावे सच दवारा। साचा घर जिथ्थे वसे साचा हरि। खुल्ले रहण सदा दर। गुरमुख साचे लहणा लैण, प्रभ अबिनाशी देवे वर। जो जन दरस पेखे नैण, जम का भउ चुक्के डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा वर। सच वर प्रभ साचे दीआ। आत्म जोत जगाया दिया। सच बीज प्रभ साचे बीआ। साध संगत दर लैण पूर्ब जन्म जो बीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए सतिजुग नीआ। सतिजुग तेरी साची धार। एका वरते विच संसार। कोए ना करे दूजा ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे करावे आपणी कार। सतिजुग त्रेता साचा राह। लिख्त लिखाए बेपरवाह। दूसर कोई दिसे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पकड़े आपे बांह। सतिजुग तेरी सति वड्याई। एका शब्द एका सुरत

देवे हरि जोत सवाई। अकाल मूर्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होए आप सहाई। सतिजुग सति सति कर
मन्नणा। निहकलंक बेड़ा अन्त बंनणा। बेमुख कलिजुग जीव धर्म राए दर टंगणा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, दर साचा गुरसिख एका मंगणा। गुरसिख आए साचे घर। प्रभ अबिनाशी देवे वर। आप चुकाए जम का डर।
किरपा कर साचा हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच जामा धर। जामा धरया नर अवतार। पारब्रह्म
हरि खेल अपार। पुर्ब कर्म गुरसिख विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिखाए सच दरबार। सच द्वार गुरसिख
जाण। जिथ्थे वसे हरि भगवान। गुरमुख साचे आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। सोहँ देवे साचा दान। एका शब्द सुणावे कान।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा हरि भरम भउ काटे। सोहँ शब्द विकाए साचे हाटे। आत्म जोत जगाए काया
माटे। एका जोत तेरे विच जगाए ललाटे। गुरमुख साचा सोहँ रसना गाए, रस साचा चाटे। हउमे दुबिधा मैल हरि सच
काटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्त कराए, सतिजुग नेड़ ल्याऐ वाटे। सतिजुग लाए वरते विच संसार।
गुरमुख साचा पावे सार। दर घर साचे मति साची पावे, ना होए कदे ख्वार। आप पकड़ तरावे बांह, महाराज शेर सिँघ
६ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार। भेख वटाए जगत भुलाए। भेव छुपाए खेल रचाए। देवी देव किसे दिस ना आए। ६
०३ रिक्ख मुन सभ रहे तरसाए। गुरमुख साचे सन्त जन सोए जगाए। माया पर्दा लाहया तन आत्म दीपक जोत जगाए। महाराज ०३
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव पंचम जेठ आप खुल्हाए। पंचम जेठ भेव खुल्हाणा। साचा मार्ग जगत लगाणा। राजा
राणा तख्तों लाहणा। वरन बरन कोई रहण ना पाणा। अठु दस्स अठारां इक्क कराणा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
साचा डंक वजाणा। पंचम जेठ जगत विचारया। साध संगत गुर मेल मिला रिहा। आपे होए सर्ब सहाया। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ विच मात दे आया। मातलोक वज्जी वधाई। सुर नर मिल रसना गाई। एका धुंन तीन
लोक उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर कलिजुग देवे अन्त मिटाई। पंचम जेठ ल्या अवतारा। एका
रमईआ राम एका एक कृष्न मुरारा। एका शब्द एका नाम जपईआ, गुरसिक्खां दिसाए इक्क किनारा। चार वरन बणाए
भैणां भईआ, ऊँच नीच ना करे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ सृष्ट सबाई एका बन्न्हे धारा। सृष्ट
सबाई शब्द बंधावे। गुरमुख साचा सच रसना गावे। बेमुख झूठे बन्न्हण दाअवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खा
सर्ब सूख आत्म उपजावे।

गोबिन्द गोपाल मदन मूर्त। एका जोत एका नूरत। एका शब्द एका तूरत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आसा पूरत। हरि गोबिन्द दीन दयाला। भगत वछल सदा रखवाला। गुरमुख साचे गोद उठाए जिउँ माता बाला। कलिजुग सोए आप जगाए, सोहँ पहनाए गल साची माला। आप आपणी सरन लगाए, कट्टे गलों जगत जंजाला। धरनी धर आप अख्वाए, गुरसिख कराए माला माला। चरन सरन इक्क रखाए, चार वरन सच्ची धर्मसाला। सोहँ साचा फल लगाए, सतिजुग साचे डाला। कलिजुग वेला टल ना जाए, बेमुख ना वक्त संभाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जन भगतां होए आप रखवाला। हरि हरि हरि गुणवन्ता। पूरन पुरख प्रभ हरि भगवन्ता। जोत प्रगटाए गुरसिख उपजाए माण दवाए विच जीव जन्ता। सोहँ शब्द जणाए, आत्म भेव चुकाए, साची सेव लगाए, आप बणाए साची बणता। वड वड देवी देव आप अख्वाए, करोड़ तेतीस सरन लगाए सुरपति राजे इन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आदि अन्त जन भगतां सद बख्शिंदा। हरि नर नर अवतारी। नरायण नर जोत अकारी। जोती जोत सरूप तीन लोक शब्द पवन करे अस्वारी। शब्द पवन तीन गवन एका रंग रंगे करतारी। अमृत मेघ बरसावे गुरमुख लगावे सतिजुग सच्ची फुलवाड़ी। दरस दिखाए हरस मिटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चिट्टे अस्व अस्वारी। हरि घर दर घर साचा।
७ ०३ गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ अबिनाशी साचा वाचा। देवे वर जाओ तर चुकाओ डर हरि साचा हिरदे राचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख दर आए जाए नाचा। सन्त संग हरि सति समावे। सन्त जनां हरि मार्ग लावे। सन्त जनां प्रभ साचा नाम सच वस्त हरि झोली पावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे आत्म लालो। आत्म लाल नाम अवल्लड़ा। प्रभ अबिनाशी सोहँ दिया मात सुखल्लड़ा। साचा शब्द आप चलाए लाए रंग अवल्लड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर गुरसिक्खां फड़े पलड़ा। नर नरायण नर अवतारी। खेल करे हरि कलि गिरधारी। विरला जाणे जीव संसारी। सृष्ट सबाई माया धारी। बेमुखां होई आत्म अन्ध अंध्यारी। आत्म भुल्लया नैण मुँधारी। काया कोट जिस आप उसारी। शब्द चोट ना लग्गी, काया होई अँध्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दरस दिखाए विच जंगल जूह पहाड़ी। नरायण नर हरि नर अवतारा। जोत सरूपी खेल अपारा। करे खेल विच संसारा। होए मेल सोहँ देवे नाम भण्डारा। बिन बाती बिन तेल जोत जगाए अगम्म अपारा। अचरज पारब्रह्म कलि खेल, गुरमुख देखे कर विचारा। बेमुखां बेड़ा जाए ठेल, अन्त आए पासा हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उठाया खण्डा दो धारा। शब्द खण्डा दो धारी। उठाए हत्थ आप जोत निरँकारी। सृष्ट सबाई होए दर भिखारी। बेमुखां होए कलिजुग किस्मत माढ़ी।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़ीं। सोहँ खण्डा आप उठाए। विच नव खण्डां खेड खिडाए। चार कुन्ट पैण डण्डां, अन्त काल ना कोई छुडाए। रोंदीआं फिरन नारां रंडां, कन्त सुहाग ना कोई हंढाए। बेमुख डुब्बण बैहन्दे वहिण बेड़ा आप डुबाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच नव खण्ड रोवे वरभण्ड, ना कोए होए सहाए। गुरमुख साचे गुर चरन बहा के। सोहँ शब्द देवे दात विच मात दे आ के। साचा शब्द ज्ञान दे, हरन फरन प्रभ जाए खुल्हा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा पंचम जेठ नौ खण्ड पृथ्मी विच ब्रह्मण्ड आपणा हत्थ उठा के। फड़या खण्डा हत्थ दो धारा। सृष्ट सबाई होए दो धाड़ा। अचरज खेल प्रभ आप कराए। एक उठाए रूसा धाड़ा। बेमुख जीव कलि पिंजाए जिउँ तेली वाड़ा। चारों तरफ कराए काड़ काड़ा। एका अग्न लगाए विच जंगल जूह पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरा इक्क बणाए अखाड़ा। इक्क अखाड़ा जाए बण। सूरबीर प्रभ आप उठाए जो जनणी लए जण। आपणी खेल आप वरताए सृष्ट भउ रखाणा ना लथ्थे तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त आप लिखाए, सृष्ट सबाई जो रिहा बण। आप बणावे आपणी धारा। वरते वरतावे विच संसारा। आवे जावे वारो वारा। जोत सरूपी खेल न्यारा। बिन रंग रूपी भेख धारा। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, प्रभ अबिनाशी ना पाई सारा। जगे जोत सति सरूपी, गुरमुखां देवे नाम आधारा। वड वड शाह वड भूपी, तेरे खड़े रहण दवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे तेरा पसर पसारा। आदि अन्त वड पसारी। आदि अन्त वड संसारी। आदि अन्त जोत आधारी। आदि अन्त साध सन्त कर्म विचारी। आदि अन्त जीव जन्त रक्खे जोत अपारी। आदि अन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवे जावे वारो वारी। आवे जावे जगत रहावे। जोत जगावे गुरमुख तरावे। बेमुख खपावे साचा मार्ग लावे। राउ रंक इक्क करावे। ऊँच नीच इक्क थां बहावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरावे। आया जग जगत का दाता। पूरन प्रभ सर्ब का ज्ञाता। एका एक रंग रंगाए एका संग सर्ब निभाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे होए पिता माता। मात पित प्रभ आपे होए। दूसर अन्त ना दीसे कोए। बेमुख कलिजुग रहे सोए। गुरमुख साचे सन्त जन दर आए मैल पापां धोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बीज आत्म बोए। सोहँ बीज आप बिजाया। आत्म ठंडा आप कराया। गुरमुखां रीझ सोहँ नाम रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर दहिलीज सद डेरा लाया। आत्म दर सच दरवाजा। जिथ्थे वसे हरि गरीब निवाजा। जिस जन तेरा साजण साजा। आप संवारे तेरे काजा। सोहँ देवे साचा दाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड शाह वड राजन राजा। वड राजा वड सुल्तान।

८
०३

सोहँ देवे वड वड दानी दान। गुरसिक्खां करे कलि पछाण। महाराज शेर सिँघ वाली दो जहान। अमृत वेला हरि गुण
गावणा। आत्म दर आप खुल्ह्रावणा। दीपक जोती सच जगावणा। गुरसिख मानस जन्म माणक मोती सुफल करावणा। जाए
दुरमति मैल धोती, चरनी सीस झुकावणा। आप उठाए आत्म सोती, पूर कराए भावना। सृष्ट सबाई रही सोती, प्रभ अबिनाशी
नज़र ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पकड़े दामना। दामन पकड़े दामनगीर। आत्म करे शांत
सरीर। सोहँ देवे साची धीर। अमृत देवे आत्म नीर। सोहँ पिलाए रसना सीर। माया रूपी लाहे चीर। महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, आप कटाए जगत जंजीर। कलिजुग बेड़ा देवे कट्ट। गुरमुख लाहा लैणा खट्ट। बेमुख कलिजुग जीव जिउँ
बाजीगर नट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए झट्ट। प्रगटे जोत हरि हर घट। साध संगत
सद रक्खे वास। जगे जोत इक्क अबिनाश। तीन लोक करे आपणे दास। गुरमुख साचा सन्त जन सोहँ जपे स्वास स्वास।
बाहों पकड़ कलि आप तराए, गलों कटाए जम का फास। अन्तिम अन्त दरस दिखाए, गुरसिक्खां कराए बन्द ख़लास।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दासन दास। प्रभ अबिनाशी राखो चीता। आपे परखे गुरसिख नीता।
एका देवे चरन प्रीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस होए आत्म सीतल सीता। सीतल सीत सांतक सति।
६०३ गुरमुखां देवे सोहँ धीरज जति। आपे जाणे मित गति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द देवे साचा तत्त। कर ६०३
दरस दुःख दलिद्र जायण नस्स। गुर संगत दर आए हस्स। प्रभ अबिनाशी राह साचा जाए दस्स। हरि हिरदे साचा जाए
वस। कोटन कोट पाप दर जायण नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए आत्म जोत करे प्रकाश
कोट रवि ससि। आत्म जोत हरि प्रकाशे। देवे दरस पुरख अबिनाशे। जो जन तजाए मदिरा मासे। मानस जन्म प्रभ कराए
रासे। अन्तकाल कलि प्रभ सचखण्ड कराए वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई वसे पासे। आस पास
रसना जप जीव स्वास स्वास। जगे जोत प्रभ अबिनाश। अन्तिम होए सहाई प्रभ साचा दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, एका जोत करे प्रकाश। जोत प्रकाश मिटे अन्धेर। होए अन्धेर विनास, ना लागे देर। ना लग्गे देर ना होए
संञ सवेर। चुक्के मेर तेर ना रहे हेर फेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां चुकाए चुरासी गेड़। गेड़ चुरासी
आप कटाए। स्वास स्वास नाम जपाए। मदिरा मासी दर दुरकाए। जो दर आए करन हासी, धर्म राए दए सजाए। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा दए आप चुकाए। लहणा लवे लहिणेदार। देवणहार सर्ब संसार। एका हरि सच्ची
सरकार। एथे ओथे रिहा पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका एकँकार। एका एक इक्क

अकारा। एका एक इक्क विहारा। एका एक इक्क वरतारा। एका एक एका टेक जगत पसारा। एका एक महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबारा। एक एक एक रंग। एका एक साचा संग। एका एक साची मंगो हरि दर नाम
मंग। एका एक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे सदा अंग संग। एका एक एका नूर। एका एक शब्द भरपूर। एका
एक गुरमुख साचे देवे शब्द तूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे नेड़ ना जाणो दूर। एका एक रंग रंगीला।
ना उह काला ना उह पीला। प्रभ अबिनाशी जोती जोत सरूप जुगा जुगन्त शब्द रंगीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
चार कुन्ट एका जोत लगाए तीला। सृष्ट सबाई जाए दग। झूठे वहिण जायण वग। अग्न जोत जाए लग्ग। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हाहाकार कराए, जीव जन्त बिल्लाए, करन हाए हाए, कोई ना होए सहाए, भज्जे जाण वाहो
दाहे, जिउँ सुंञे घर कग। कलिजुग जीव वेख विचार। कलिजुग वेला अन्तिम मूल ना हार। साचे सन्त कर हरि चरन
प्यार। जिस बणाई तेरी बणत, नेत्र वेख नैण मुँधार। महिंमा प्रभ बड़ी अगणत जोत सरूपी आया जामा धार। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ विच मात ल्या अवतार। पंचम जेठ वड वड्याई। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई। घनकपुरी
हरि भाग लगाई। सुर नर मुन जन करोड़ तेतीस प्रभ सरन लगाई। शिव शंकर ब्रह्मा विष्नूं महेष दर खड़े सीस झुकाई।
१० जोती जोत सरूप हरि, बैठा आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रखे वड्याई। साचा धाम सदा १०
०३ अटल। कलिजुग आप कराए अन्त जल थल। वेले अन्त आप ल्याए ना लाए घड़ी पल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०३
सृष्ट सबाई जाए दल। सृष्ट सबाई दल दो फाड़। बेमुखां उजाड़ा आपणा वाड़। एका उठे रूसा धाड़। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट दिसाए धरत मात उजाड़। उठे रूसा लशकर भारी। चार कुन्ट कराए आप ख्वारी। ईसा
मूसा मुहम्मद दिसे पासा हारी। अञ्जील कुरान ना पावे सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जामा धारे
नरायण नर अवतारी। उठे शाह साचा रूसीआ। मिटाए भेख शाह अबनूसीआ। ईसा मूसा मुहम्मद तन पहनाए काले सूसीआ।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरताए, जोत जगाए मात प्रगटाए, विच गुरसिख टिकाए, ना किसे दिसाए,
बिन रंग रूपी आप हो जाए, क्या कोई करे जसूसीआ। क्या कोई जाणे क्या वखाणे। करया खेल आप भगवाने। धरी
जोत मात महाने। गुरमुख साचे आप पछाणे। बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। मावां भज्जण छड्ड बाल अञाणे। नेज्यां
उप्पर प्रभ आप टिकाने। जो जीव होए आत्म काणे। मदिरा मासी होए दीवाने। प्रभ अबिनाशी गए भुलाने। सर्ब घट वासी
सर्ब पछाणे। घनकपुरवासी निहकलंक बली बलवाने। सृष्ट सबाई करे दासी, एक जोत जगे महाने। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, महिंमा तेरी कवन जाणे। जगत महिंमा अपर अपार। गुरमुख विरला करे विचार। बेमुख सोए पैर पसार।
धर्म राए मारे कलि कर ख्वार। गुर साचे प्रभ साचा तारे, पंचम जेठ जो आए चल चरन द्वार। मानस जन्म विच मात
संवारे, फिर ना आवे दूजी वार। आप बहाए सच दुआरे, जगे जोत अगम्म अपारे, एका दिसे हरि निरँकारे, सच शब्द
सच्ची धुन्कारे गुरमुख सुणे सच सुन्यार। रुण झुण रहे दिवस रैणारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणे
भाणे पूर्ब कर्म विचार। आपणे भाणे आप रखाए। सुघड़ स्याणे गुरसिख बणाए। मूर्ख मुग्ध अञ्याणे कलि तराए। सर्ब जीआं
हरि आपे जाणे, भरम भुलेखा क्या कोई पाए। साचा बेड़ा गुरसिक्खां आप तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम
जेठ कलि जामा पाए। पंचम जेठ पंच पंचायत। सृष्ट सबाई इक्क शरायत। सोहँ शब्द चार कुन्ट हदायत। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए। सृष्ट सबाई एका रंग रंगायत। आपे वेदी वेद पुराना। आपे भेदी अंज़ील कुराना।
आपे जाणे आपणा भाणा। आपे आपणे रंग समाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरताना। आपणे
भाणे आप समाया। आपणा भेव ना किसे जणाया। इन्द इन्द्रासण रहे गाया । सिँघ सिँघासण डेरा लाया । गुरमुख होए
११ दास दासन हरि दरस दिखाया। सन्त जन हरि सद वड्आया। सृष्ट सबाई अन्त विनासण, साचा लेख आप लिखाया। ११
०३ जोती जोत जोत प्रकाशण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम धराया। नाउँ धराए नरायण नर अवतारा। ०३
आवे जावे वारो वारा। राज हँस हँस राज बणया बंस सारा। साजण साज कराए काज, करे खेल अपर अपारा। जोत
सरूपी जोत हरि, आदि अन्त इक्क वरतारा। आदि अन्त इक्क वरतारी। आपे धरे जोत सृष्ट सबाई करे उज्जयारी। बेमुखां
विच मात प्रभ साचा करे ख्वारी। जोती जोत सरूप हरि अचरज खेल करे गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक
नरायण नर अवतारी। अचरज खेल करे गिरधारा। मातलोक ल्या अवतारा। दूतां दुष्टां हरि आप सँघारा। जोती जोत
सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। आपणी सार
आप ही जाण। आपे आपणी करे पछाण। जीव जन्त सभ होए नादान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धरे
बली बलवान। आया प्रभ वड वड बलकारी। त्रेता भयो राम अवतारी। दुष्ट रावण करे सँघारी । अचरज खेल रंग करतारी।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजण नरायण नार अवतारी। नरायण अवतारा जामा धारा जिउँ कृष्न मुरारा।
बेमुखां अन्त करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आदि अन्त एका एकँकारा। कृष्न मुरारी
वड गिरधारी। आपणा खेल किया अचरज वरते विच संसारी। जोती जोत सरूप ना कोई पावे सारी। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। आपणा आप ना जीव पछाणे। माया ममता विच रुले जीव अञ्याणे। आत्म रंगता सद रखाणे। जोती जोत सरूप हरि, आप चलाए आपणे भाणे। आपणे भाणे आप समाणा। अर्जन हत्थ फड़ाए तीर कमाना। आपे आप महांसार्थी जगत अख्वाणा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वरते आपणा भाणा। मोहण माधव कृष्न मुरारी। अचरज खेल करे विच मात ना जाणे जीव गंवारी। प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई माया पसर पसारी। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वारी। मात जोत धर भगवान। सृष्ट सबाई देवे ज्ञान। पंजे पांडो गए जाण। सच्ची शब्द धुन चरन धूढ़ अशनान। जोती जोत सरूप हरि जन भगतां करे आप पछाण। गुरमुख साचे दया कमाए। कर तरस साचा नाम भिच्छया पाए। आत्म इच्छया पूर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। सरन लगावे सरना निध। कारज कीने गुरसिख सिध्ध। घर उपजावे रिद्ध सिद्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां घर उपजावे नव निध। नव निध नौ दर। गुरमुख साचा लए वर। जिथ्थे वसे साचा हरि। सच धाम सच राम सच काम साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप खुल्हाए आत्म दर। आत्म दर देवे खोल्ह। आप खुल्हाए झूठा पोल। सोहँ शब्द वजावे ढोल। मानस जन्म कलि लेखे लावे, लक्ख चुरासी अनमोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

१२
०३

गुरसिख तन मन गुर चरन घोल। तन मन धन गुर चरन दुआरे। देवे माण विच संसारे। सर्ब घट वासी देवे दरस अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक विच जामा धारे। पुरी घनक विच जामा धार। प्रभ अबिनाशी ल्या अवतार। भरम भुलेखे भुल्ला सर्ब संसार। गुरमुख विरला पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म देवे साची धार। अमृत साचा सीर पिलाया। दूई द्वैत पड़दा लाहया। एका जोत करे रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गलों लाहे जगत माया। जगत माया लथ्थे चीर। सन्त मनी सिँघ वज्जा शब्द तीर। दूरों पैंडा आवे चीर। आत्म बन्न्हे ना अजे धीर। बिन प्रभ साचे ना जाए हउमे पीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए हस्त कीड़। आया दर सच दरबारे। पुरी घनक हरि चरन निमस्कारे। खाली भरे प्रभ भण्डारे। आत्म जोत करे अकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच करे प्रकाश सन्त मनी सिँघ दस्म दुआरे। दस्म दुआर आप खुल्हाया। आप आपणा राह बताया। दूई द्वैती पड़दा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची धुन उपजाया। आत्म धुनी उपजे धुन। सन्त मनी सिँघ खुल्ले सुन्न। प्रभ अबिनाशी कवण जाणे तेरे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण गुरमुख साचे विच मात दे चुण। सन्त मनी सिँघ दर साचे आया। दर घर साचे प्रभ अबिनाशी साचा पाया। हरि हिरदे वाचा वेख भाण्डा काचा तन मन धन प्रभ

सरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा विच धराया। आप आपणा विच टिकाए। अज्ञान अन्धेर
सर्ब मिटाए। संञ सवेर इक्क कराए। हरन फरन दए खुल्हाए। मरन डरन सर्ब चुकाए। एका एक करन साची सरन
रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन भवन दी बूझ बुझाए। सन्त मनी सिँघ सेवा लग्ग। प्रभ अबिनाशी पकड़े
पग्ग। कलिजुग माया विच ना लग्ग। पल्ला फेर विच सारे जग। घर घर लग्गी दिसे अग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, मात जोत प्रगटाई राउ रंक चरनी जाए लग्ग। सन्त मनी सिँघ ऊँच पुकारे। प्रभ अबिनाशी जामा धारे। घनकपुरी
विच ल्या अवतारे। भुल्ले जीव हरि गंवारे। दुष्ट दुराचारी ना पायण सारे। गुरमुख साचे सन्त जन दर आयण करन चरन
निमस्कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप मनी सिँघ देवे शब्द हुलारे। शब्द हुलारा रिहा झूल। आप
चुकाया पिछला मूल। गुरमुख गुरसिख साचा दर ना जाणा भूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग भन्नी चौथी
चूल। चौथी चूल गई तुट्ट। कलिजुग भाग गए निखुट्ट। बेमुख कलिजुग जीव लहणा देणा कदे ना जाए छुट्ट। सृष्ट सबाई
पाए भीड़, आपे मारे पकड़ गल घुट्ट। ईसा मूसा मुहम्मदी जड़्ह देवे पुट्ट। गुरमुख साचे सन्त जन दर साचे लाहा लैण
१३ नाम दान अतुट्ट। अमृत आत्म प्रभ साचा बरखे, गुरमुख साचे पी लैणा घुट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड भण्डारी १३
०३ वड संसारी सद भण्डारे रहण अतुट। अतुट्ट भण्डार हरि का जाण। निखुट्ट ना जाए विच जहान। छुट्ट ना जाए गुरसिख ०३
तेरा चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धरे भगवान। सन्त मनी सिँघ तेरी वड्याई। साची सुरत
साची धुन शब्द अनहद उपजाई। तुट्टी मुन होई रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका लिव चरन रखाई। सन्त
मनी सिँघ माण दवा के। आप आपणी सेवा ला के। सुरत शब्द हरि मेल मिला के। आत्म जोती दीप जगा के। सोहँ
साची दात प्रभ झोली पा के। एका साचा रंग प्रभ चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर धरनी धर देवे
वर डिगे चरनी आ के। चरनी डिग हाज़र हज़ूर। प्रभ अबिनाशी पाया सोलां कला भरपूर। सोहँ शब्द देवे आत्म तूर।
जोत सरूपी करे आत्म नूरो नूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांतक सति वरताए सन्त मनी सिँघ सति सरूर। सांतक
सति सीतल धारा। देवे हरि वस्त हरि थारा। गुरमुख साचे आप रखाए आपणे चरन दवारा। जिथ्थे वसे नरायण नर जोत
सरूपी खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस गुरसिक्खां कर प्यारा। गुरसिख गुरमुख आत्म सोध।
शब्द लिखाए प्रभ अगाध बोध। कलम उठाए वड जोधन जोध। गुरसिख उठाए प्रभ आपणी गोद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, साची लिख्त लिखाए कलम नाल सृष्टी लए सोध। सन्त मनी सिँघ लिख्त लिखावे। प्रभ अबिनाशी रसना गावे।

दिवस रैण ना मनों भुलावे। साचे भाणे विच सद समावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्म दुआर बूझ बुझावे। दस्म दुआर सति ध्याना। आत्म उपज्या ब्रह्म ज्ञाना। होया दरस कृष्न काहना। मिटाई हरस मिल भगवाना । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कलि पहरया बाणा । सन्त मनी सिँघ तन साचा मन्दिर। दीपक जोती जगे अंदर। काया अन्धेरी झूठी कंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुड़ाया आत्म जंदर। आत्म जंदर आप तुड़ाए। साचा मन्दिर आप बणाए। हरि वसे अंदर बेमुखां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन जाणे जिस जन दया कमाए। नवखण्ड विच वरभण्ड, चमके चण्ड पवे वंड, रोवण रंड कट्टी गंढु। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए खण्ड खण्ड। खण्ड खण्ड खण्डा दो धारी। वंड वंड करे सृष्टी साची। डन लगाए जीव दुष्ट दुराचारी। तन जलाए होए हँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कराए वरताए आप विच संसारी। सच चण्डी शब्द चमकानी। दामन दमक दमके दामनी। आपे आप संघारे जिउँ रामा रावनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल वरतावनी। कलिजुग जीव जाग, भरम ना भुल्ल। कलिजुग जीव जाग, माया विच ना रुल। कलिजुग जीव जाग, सच भण्डारा गया खुल्ल्ह। कलिजुग जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ लगाए भाग, देवे नाम अनमुल्ल। कलिजुग जीव जाग,
१४ ०३ सच संदेश। कलिजुग जीव जाग, जोत प्रगटाई प्रभ माझे देस। कलिजुग जीव जाग, प्रभ अबिनाशी कलि आया जोत १४ ०३
सरूपी कर के भेस। कलिजुग जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रभ साचे को सदा आदेस। कलिजुग जीव जाग, क्यों होए भाग मन्द। कलिजुग जीव जाग, आत्म होई पापां कंध। कलिजुग जीव जाग, आत्म द्वार होया बन्द। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा सुणाए राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दान दर मंग। कलिजुग जीव जाग वक्त सुहञ्जणा। कलिजुग जीव जाग, कलिजुग जोत प्रगटाए नरायण निरँजणा। कलिजुग जीव जाग, बण साचा साक सैण सज्जणा। कलिजुग जीव जाग, भाण्डा काचा अन्तकाल कलि भज्जणा। कलिजुग जीव जाग, माया नाल ना किसे रज्जणा। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचे अन्त तेरा पर्दा कज्जणा। कलिजुग जीव जाग, वेला अन्तकाल गोला मौत सिर ते वज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पी अमृत दर ते रजणा। कलिजुग जीव जाग, छड्ड भरम भुलेखा। उठ जीव जाग, प्रभ चुकाए पिछला लेखा। उठ जीव जाग, कलि रहे ना वेखी वेखा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए औलीए शेखा। उठ जीव जाग, अन्त अखीर। उठ जीव जाग, चार कुन्ट होए वहीर। उठ जीव जाग, सोहँ शब्द चलाए तीर। उठ जीव जाग, आप मेट मिटाए औलीए प्रभ साचा पीर फकीर। उठ जीव जाग,

कोई ना देवे धीर दस्तगीर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खिचाए अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ नीर। उठ
जीव जाग, सुण साचा राग,। उठ जीव जाग, धो पापा दाग। उठ जीव जाग, बुझा तृष्ना आग। उठ जीव जाग,
बण हँस काग। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग लगाया पहली माघ। उठ जीव जाग, कलि
अन्ध अन्धघोर। उठ जीव जाग, पंचां लुट्टया घर तेरा बण चोर। उठ जीव जाग, ना बण हराम खोर। उठ जीव जाग,
प्रभ अबिनाशी देवे शब्द घनघोर। उठ जीव जाग, चरन प्रीती लै जोड़। उठ जीव जाग, क्यों मुख भवाया। उठ जीव
जाग, क्यों दु:ख उठाया। उठ जीव जाग, क्यों सुख गंवाया। उठ जीव जाग, क्यों मुख छुपाया। उठ जीव जाग,
क्यों आत्म तृष्ना भुक्ख वधाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। उठ
जीव जाग, जगत अन्धेर। उठ जीव जाग, एका अग्न लग्गे चार चुफेर। उठ जीव जाग, दुष्ट दुराचार मारे घेर। उठ
जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मार मारे कराए ढेर। उठ जीव जाग, ढठ्ठे ढेरी। उठ जीव जाग,
मातलोक ना पावे फेरी। उठ जीव जाग, वेला अन्त ना लग्गे देरी। उठ जीव जाग, एका शब्द झुलाए जगत अन्धेरी।
शब्द अन्धेरी जाए झुल्ल। सृष्ट सबाई जाए रुल्ल। गुरमुख साचे सन्त जन, प्रभ दर पायण अनमुल्ल। महाराज शेर सिँघ
१५ ०३ विष्नूं भगवान, शब्द अन्धेर जगत जाए झुल्ल। शब्द अन्धेर आप झुलावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। साचा लेख पंचम १५ ०३
जेठ लिखावणा। दाढ़ां हेठ सृष्ट चबावणा। कलिजुग जीव कौड़ा रेठ रहण ना पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। वड वड सेठ वड सिठाणीआं। भज्जे फिरन मुगल मुगलाणीआं। ना कोई दिसे शाह सुल्तानीआं।
चारों कुन्ट होए वैरानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग झुलाए सोहँ तेरी सच निशानीआं। मायाधारी आत्म
अन्धे। विषे विकारी आत्म गन्दे। जगत उल्झाए काया धन्दे। आत्म वज्जे बेमुखां जंदे। बेमुख आपणा आप गंवाया परमानंदे।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप उपजाए साचे चन्दे। मायाधारी माया रूप। कलिजुग भुल्ले वड वड
भूप। आत्म नगरी होई अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे जोत सरूप। मायाधारी मदिरा मासी।
वेख भेख खुलाए घनकपुर वासी। ना कोई दीसे शाहो शाबाशी। सृष्ट सबाई धर्म राए चढ़ाए फाँसी। महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, सो जन उधरन पार जो जन सोहँ गायण स्वास स्वासी। धर्म राए धर्म दुआरा। ओथे लथ्थे पापां अफारा।
कराए मार होए दु:ख भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे आप विहारा। आप आपणा कर विहारा। सतिजुग
बणाए साची सरकारा। सच सुच्च रखाए साचा देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम करे आप वरतारा।

पंचम पंचम पंचम विच जहान। सोहँ रक्खे साची आन। आप चुकाए जम की कान। एका तन लगाए शब्द बबाण। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप रखाए जगत आण। एका आण जगत रखाए। एका बाण शब्द लगाए। एका माण
एका ताण चरन रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई रहण ना पाए। ना कोई दूसर ना कोई दूज। एक
बुझावे साची बूझ। सोहँ शब्द साची सूझ। गुरमुख साचे सन्त जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए भेव गूझ।
गुरमुख साचे बूझ बुझाई। गुरमुख साचे नाद धुन उपजाई। गुरमुख सुन्न समाध खुल्हाई। गुरमुखां देवे आप वड्याई। गुरमुख
मिले साचा सुख, प्रभ वरन सेव कमाई। गुरमुख सुफल मात कुख, चल आए हरि सरनाई। गुरमुख उतरे भुक्ख मिटे
दुःख प्रभ साचा दर्शन पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे मात वड्याई। गुरमुख गुर एका जाण। गुरमुख
गुर सच पछाण। गुरमुख गुर देवे माण। गुरमुख साचे प्रभ साचे तारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुरमुख गुर
वेख विचारे। गुरमुख गुर साचा तारे। पारब्रह्म हरि खेल अपारे। वेखे विगसे करे विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
पंचम जेठ लेख लिखारे। पंचम जेठ लिख्त लिखाइत, साचा कर्म कमईआ। गुरमुख पढ़ाए इक्क जमाइत, सोहँ नाम जपईआ।
एक बणाए शरअ शरायत, एका राह चलईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैत मिटईआ। एका दूजा कट्टे रोग।
१६ ०३ आप मिटाए चिन्ता सोग। सोहँ देवे साचा जोग। गुरमुख साचे कलि लैणा भोग। बेमुखां लग्गे कर्म विजोग। महाराज १६ ०३
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कट्टे हउमे रोग। हउमे रोग आप निवारे। सोहँ नाम देवे वस्त अपारे। जो जन आए चरन
दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे सर्ब सारे। सर्ब सार आपे जाण। गुरमुख साचे कर पछाण। आप
चुकाए जम की काण। मिल्या मेल हरि भगवान। महाराज शेर सिँघ बली बलवान। विष्नूं भगवान त्रैलोकी नाथा। आप
निभाए सगला साथा। सच चलाए जगत गाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समराथा। सर्ब कला आप
भरपूरे। प्रभ अबिनाशी साचा नूरे। आप उठाए मिटाए वड वड सूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई कराए
चूरे। सृष्ट सबाई पंचम जेठ भाग लगावणया। सोहँ साचा राग सुनावणया। मात जोत धरे बावन रूप वटावणया। जिउँ
काहना कंस हरे दुष्ट मुकावणया। गुरमुख साचे सन्त जन दर तरे, दर घर साचे भाग लगावणया। प्रभ अबिनाशी जो जन
वरे, कर किरपा चरन लगावणया। साची तरनी जो जन तरे, प्रगट जोत दरस दिखावणया। गुरमुख साचा रसना गाए
नर हरे, साचे तीर्थ नुहावणयां। प्रभ अबिनाशी साचा पाए, साचा सुख उपजावणया। प्रभ अबिनाशी खेल रचाए, भाण्डा
कलिजुग भन्नावणया। सतिजुग साची लिख्त लेख पंचम लिखवाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव खुल्हावणया।

गुरमुख साचे जोती जोत जगावणया। गुरमुख साचे हरि आपणी सरन लगावणया। गुरमुख साचे साचा दरस दिखावणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुकाए आवण जावणया। पंचम जेठ पंज घर वसे। साचा राह प्रभ साचा दस्से। गुरमुख साचा प्रभ दर वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलाए स्वास स्वासे। स्वास स्वास जप एका एक। एका सोहँ साची टेक। गुरमुखां करे बुध बबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख वखाणे एका एक। उठो सिँघो हरि हाजर हजूरे। देवे दरस जो जन आए नेड़े दूरे। प्रगट जोत हरि साचा नूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरे। सर्ब कला आप संपूरन। सोहँ शब्द उपजावे साची तूरन। किसे ना दिसे हरि साचा जानण दूरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा सर्ब पूरन। आसा मनसा सर्ब पूरी। आत्म लथ्थी सर्ब वसूरी। प्रभ अबिनाशी चिन्ता करे दूरी। कोई ना जाए दर घर साचे झूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए जिउँ कोहतूरी। साचा लहणा देवे आप। सोहँ सच जपावे जाप। कोटन कोट उतारे पाप। गुरसिख तेरा होए वड प्रताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए माई बाप। मात पित शब्द ज्ञाना। साचा देवे नाम निधाना। सोहँ शब्द जगत निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन ध्याना। इक्क शब्द चरन गुर प्यारा। इक्क सति शब्द दी धारा। इक्क मत शब्द अपारा। इक्क शब्द वरताए विच संसारा। इक्क शब्द पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्ले जगत भण्डारा। शब्द भण्डार गया खुल्ल। देवे प्रभ आप अनमुल्ल। आप संवारे पिछली कुल। आत्म दीपक ना होए गुल। काया अग्न बुझे चुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तुलाए साचे तुल। साचे तोल आप तुलाए। वड अनमोल नाम दवाए। चरन कँवल जो प्रीत कमाए। सोहँ शब्द प्रभ आत्म ढोल वजाए। आत्म पर्दे देवे खोल्ल, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए। जो जन रहे रसना बोल, धुर दरगाहों प्रभ पार कराए। जोत सरूप प्रभ वसे कोल, आत्म पर्दा वेखे फोल, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी डगमगाए। आत्म वेख जीव विचार। एका शब्द साची धार। एका धर्म विच संसार करे नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकार। सच सरकार सच्ची सिक्दारी। जोत सरूपी हरि निरँकारी। वेखे विगसे करे विचारी। लेखा चुकावे आवे जावे वारो वारी। गुरमुखां जाए तारी, बेमुखां करे ख्वारी। एका दिसे पासा हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाउ चरन बलिहारी। चरन बलिहारो आपणा आप गुर साचे वारो। ना कोई भरम भुलेखा सच दरबारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख भुक्ख दर सर्ब निवारो। दुःख भुक्ख प्रभ देवे निवार। साचा शब्द देवे इक्क आधार। उज्जल मुख विच संसार। उलटा रुक्ख ना होए दूजी वार। महाराज

१७
०३

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ कर किरपा जाए तार। साचा प्रभ साचा संगी। पूरन करे आस जो दर मंगी। कोई
ना जाए भुक्खी नंगी। आत्म नाम प्रभ साचे रंगी। सोहँ धार वगाए जिउँ जल धार गंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
होए सहाई सदा अंग संगी। अंग संग सदा सहाई। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन आए सरनाई। अन्तिम कलिजुग
ना होवे नंग, प्रभ साचा सिर हत्थ टिकाई। आपे कट्टे भुक्ख नंग विच मात देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
दया कमाई। भुक्खा नंगा गरीब निमाणा। दर घर साचे होए परवाना। दूर दूर धकावे राजा राणा। हरि आपणी गोद उठाए,
नीचों नीच बाल अञ्याणा। आत्म देवे सोध देवे माण विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक इक्क
कराणा। इक्क कराए राउ रंक। सोहँ शब्द वजाए साचा डंक। आप सुहाए द्वार बंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
पंचम जेठ गुरसिख तारे जिउँ राजा जनक। भगत जनक प्रभ आप तारया। किरपा कर अपर अपारया। दित्ता वर हरि
शब्द उचारया। गया तर धर्म राए दर निमस्कारया। चुकया डर ख़ाली होए नर्क भण्डारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
जोती जोत सरूप आदि अन्त गुरमुखां काज संवारया। काज संवारे दीन के दाते। पंचम जेठ वेले प्रभाते। सो जन उधरे
१८ जो जन रसना सोहँ गाते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए साचे नाते। साचा नाता चरन बन्नू। सोहँ शब्द १८
०३ सुणावे कन्न। हरया होवे मन तन। आप मिटाए झूठा जन। भाण्डा भउ प्रभ देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०३
अन्तिम बेड़ा देवे बन्नू। पंचम जेठ रंग रंगा रिहा। अंग संग आप निभा रिहा। प्रभ दर मंगण साची मंग, साचा नाम रंग
मजीठ चढ़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आप आपणी जोत जगा रिहा। जोत जगाए प्रभ साचा
बीठला। गुरमुख साचे घर साचे डीठला। कोई ना दिसे दर ते कौड़ा रीठला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक
चढ़ाए रंग मजीठला। पंचम जेठ पंचम गिरधार। वेखे विगसे करे विचार। क्या कोई जाणे प्रभ दी सार। आपणा आप
करे वरतार। वरते वरतावे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे सीस धरे बैठ दस्तार। सिर दस्तार आपणे
बन्नू। कलिजुग जीव देवे भाण्डे भन्न। बेमुखां मात देवे डन्न। गुरसिक्खां बेड़ा जाए बन्नू। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
साचा शब्द सुणावे कन्न। गुरसिख हँस सरोवर चुग लउ मोती। आत्म जोत जगावे जोती। दुरमति मैल जाए धोती। चार
वरन बण जाए एका गोती। सृष्ट सबाई रही सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणे हत्थ उठाए सोटी।
एका सोटी शब्द हुलारा। सृष्ट सबाई होवे ख्वारा। चार कुन्ट हाहाकारा। आप छुडाए बत्ती धारा। घर घर रोवण नारी
नारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जिस वसारा। वेद अथर्बण आप मिटाया। अरबण खरबण रहण ना

पाया। देस सम्बल प्रभ डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ होए रुशनाया। पंचम जेठ जटा जूट
धार। आपे होए अस्व अस्वार। शब्द सरूपी पवण धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट कराए हाहाकार।
पवण अस्वारा प्रभ गिरधारा। शब्द दो धारा चले वारो वारा। एका अग्न लगाए विच बहत्तर नाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, सृष्ट सबाई मौत बणाए लाड़ी लाड़ा। लाड़ी मौत जगत प्रनाए। वेले अन्त ना कोई बचाए। धर्म राए दे दर
बहाए। जम दूतां दे हत्थ फड़ाए। पुठे कर दर टंगाए। अग्न कुण्ड दे विच जलाए। मदिरा मासी जीव हलकाए। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कुंभी नर्क दे सजाए। कुंभी नर्क नर्क निवासा। जिस जन रसना लाया मदिरा मासा। झूठा जानण
खेल तमाशा। दर घर आए कर जायण हासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ करे प्रकाशा। मदिरा मासी
मायाधारी। अन्तिम बाजी कलिजुग हारी। भुल्लया कलिजुग आपणा आप जीव संसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
वेले अन्त करे ख्वारी। वेले अन्त होए ख्वार। धर्म राए मारे डाहढ्ढी मार। कोई ना ओथे दिसे सहार। संग ना चले झूठी
नार। कोई ना पावे बेमुखा सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि करे ख्वार। बेमुख मूढ़ जगत अञ्याणा।
प्रभ अबिनाशी मनों भुलाणा। मदिरा मासी साचा जाणे खाणा। होया झूठे वस अन्त पछाणा। ना कोई जाए नस्स, वेले
१६ ०३ अन्त देवे सजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। धरया भेख हरि भगवन्ता। क्या कोई १६ ०३
जाणे जीव जन्ता। माया पाए जगत बेअन्ता। गुरमुख जगाए साचा सन्ता। देवे वड्याई आदिन अन्ता। सोहँ तन पहनाए
प्रभ साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग सदा रहंता। आत्म घर वज्जी वधाई, होए मंगलाचार।
आत्म घर वज्जी वधाई, प्रभ देवे शब्द हुलार। आत्म घर वज्जे वधाई, प्रभ साचा देवे शब्द धुन्कार। आत्म घर वज्जे
वधाई, अमृत चले साची धार। आत्म घर वज्जी वधाई, उलटयां कँवल खिड़ी गुलज़ार। साचे घर वज्जी वधाई, प्रभ
खोल्हे बन्द कवाड़। साचे घर वज्जे वधाई, बत्ती दन्द रहे हरि रसन उचार। साचे घर वज्जी वधाई, पतित पापी दर
आए उतरे पार। साचे घर वज्जी वधाई, जोत सरूप प्रगटे नर अवतार। साचे घर वज्जे वधाई, राम रमईआ आया कृष्न
मुरार। साचे घर वज्जी वधाई, एका जोत खेल अपार। साचे घर वज्जी वधाई, कलिजुग बेड़ा लाए पार। साचे घर
वज्जे वधाई, लक्ख चुरासी देवे गेड़ निवार। साचे घर वज्जी वधाई, झूठा झेड़ा कीना जगत गंवार। साचे घर वज्जी
वधाई, बन्न्हे बेड़ा प्रभ साचे भव जल किया पार। साचे घर वज्जी वधाई, गुर संगत आई गुर दरबार। साचे घर वज्जी
वधाई, दिवस रैण होया मंगलाचार। साचे घर वज्जी वधाई, दुखियां दुःख हरि दए निवार। साचे घर वज्जी वधाई, जोत

सरूपी प्रगट्या हरि अगम्म पार। साचे घर वज्जी वधाई, पंचम जेठ निहकलंक नरायण नर अवतार। साचे घर वज्जी वधाई, दर मंगल गाया। साचे घर वज्जी वधाई, प्रभ अबिनाशी साचा पाया। साचे घर वज्जी वधाई, नौ निध प्रभ दे उपजाया। साचे घर वज्जी वधाई, आत्म विच हरि शब्द चलाया। साचे घर वज्जी वधाई, कारज सिद्ध जो दर ते आया। साचे घर वज्जी वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुर संगत दरस दिखाया। साचे घर वज्जी वधाई, गुरमुख साचे जागो। साचे घर वज्जी वधाई, प्रभ अबिनाशी चरनी लागो। साचे घर वज्जी वधाई, आत्म धोवो झूठे दागो। साचे घर वज्जी वधाई, अनहद शब्द सच सुहागो। साचे घर वज्जी वधाई, सतिजुग लाए प्रभ पहली माघो। साचे घर वज्जी वधाई, प्रभ हँस बणाए कागो। साचे घर वज्जी वधाई, देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड भागो। वड वड भाग होए दर साचे। प्रभ अबिनाशी विच बैठा हिरदे वाचे। साचे लेख लिखाए धुरदरगाही साचे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा हरि घर साचो साचे। साचा दर देवे वर, ना जाणा डर। साचा सुक्ख हरि नाम लै जाओ घर। भरम भुलेखा जाओ निवार। साचा लेखा प्रभ आत्म देवे धर। सतिजुग साचा शब्द गुर संगत लैणा वर। दर आई संगत प्रभ

२० दए भण्डारे भर। एका चढ़ाए नाम रंगत, आप बहाए साचे घर। जो जन आए साची संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं २०

०३ भगवान मानस जन्म देवे सुफल कर। मानस जन्म सुफल कराया। सरन सरनाई जो जन आया। साची तरनी आप तराया। ०३

करनी भरनी हरि दे सजाया। जम की डरनी प्रभ दे चुकाया। हरनी फरनी प्रभ दे खुल्हाया। सच दात विच मात दे धरनी, सोहँ साचा शब्द सुणाया। सृष्ट सबाई होई दरनी, प्रभ आपणा खेल रचाया। कोई ना जाणे प्रभ की करनी, भरम भुलेखे जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पर्दा माया पाया। माया पर्दा लालच चोली। सृष्ट सबाई होई गोली। झूठे कंडे प्रभ साचे तोली। धर्म राए दे दर ते टंग, जो गुरमुख साचे मारे बोली। आपे करे खण्ड खण्ड खण्डे, पंचम जेठ देवे भेव खोल्ही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द लगाए साचा ढोली। साचा शब्द साचा ढोला। चार वरन एका बोला। प्रभ अबिनाशी गुर संगत देवे नाम अनमोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठी देह तजाए छड्डया काया चोला। झूठी देह आप तजाए। आप आपणा खेल रचाए। शब्दी शब्द शब्द सरूप हो जाए। पवण सरूपी पवण हो आए। सोहँ साची मात अल्ख जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका जोत विच जाए मात धराए। काया चोला आप तजाया। झूठा डोला विच ख़ाक रलाया। रोल घचोला विच मात दे पाया। अन्धा बोला कोई दिस ना आया। कला संपूरन सोलां प्रभ जोत प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी डेरा लाया। जोत

सरूपी डेरा लाए। गुरमुख साचे आप जगाए। बणाए साची बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच जीव जन्त। देवे वड्याई सोहँ साचा निशाना। अचरज खेल करे कलि करता जिउँ कृष्ना काहना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना गाना बद्धा गुरसिख हत्थ। आप चढ़ाया सोहँ साचे रथ। विच मात दवाई गुरमुख साचे तेरे आत्म साची वथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे सोला कला समरथ। सोलां कला प्रभ संपूरन। लिखाया लेख ना होए अधूरन। गुरमुखां सद वसे नेड़े, बेमुखां दिसे दूरन। वेला गया हत्थ ना आवे, जूठे झूठे अन्तकाल कलि झूरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां उपजाए सोहँ शब्द साची तूरन। साची तूरन साची धारा। साचा रूप अगम्म अपारा। जोत सरूपी खेल अपारा। वेख वेख भुल्लया संसारा। अचरज भेख किया करतारा। गुरमुख साचे वेख खिच ल्याए चरन दुआरा। आप लिखाए साचे लेख, पंचम जेठ बणे लिखारा। आप मिटाए झूठी रेख, प्रभ अबिनाशी निहकलंक नरायण नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोए ना पावे सारा। आदि अन्त अन्त गुर आदि। प्रभ अबिनाशी विच ब्रह्माद। साचा शब्द वजाए सोहँ नाद। शब्द लिखाए बोध अगाध। गुरमुखां देवे साची दाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दिवस रैण सद रसना अराध। सच बंक सच दुआरा। सच टेक इक्क एकँकारा। मिटाए भेख इक्क कराए राउ रंक विच संसारा।
२१ ०३ ना कोई दिसे औल्या पीर शेख़, सदी चौधवीं आई हारा। कलिजुग अन्तिम मिटाई रेख, पंचम जेठ हरि करे धुंदूकारा। साध संगत दर घर वधाई, हरि पाया अगम्म अपारा। सोहँ रसना जै जै जैकार कराई, उपजे शब्द सच्ची धुन्कारा। पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे करे सच विहारा। सच विहार आप कराए। सच दस्तार सीस टिकाए। बीस इकीस इकीस बीस इक्क हो जाए। रागनी तीस प्रभ संग रलाए। छतीस राग हरि कन्न सुणाए। रागी नादी कोई भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गए भुलाए। साची जोत विच मात दे जागी, पंचम जेठ होए रुशनाए। सो जन उधरे पार जो प्रभ सरन लागी, कर किरपा पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हत्थ टिकाए। साचा जोग सरन गुर। मेल मिलाया लिख्या धुर। गुर दर्शन को तरसण सुर। साध संगत दर आई तुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वर घर हरि साचा पाया। आप उपजाए आत्म सुर। आत्म सुरत देवे खोल्ह। अकाल मूर्त वसे कोल। साची तूरत सोहँ शब्द वजाए ढोल। सर्ब जीआं हरि आसा पूरत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए गुर संगत चोहल। साचा चोलड़ा तन रंगाए। वड अनमोलड़ा प्रभ रंग रंगाए। जे कोई मारे बोलड़ा, विच संसार रहण ना पाए। सोहँ शब्द कुण्डा प्रभ साचे खोल्हड़ा, पंचम जेठ सच भण्डार लगाए। सच भण्डारा आप खुल्हाया। गुरमुख साचे सन्त तराया। सोहँ

साचा नांउँ वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरमुखां संग समाया। पंचम जेठ तेरी साची रुत्त। गुर संगत मिल गई धुरत। धर्म राए ना मारे जुत्त। गुरमुख बणाए साचे सुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप पारब्रह्म अचुत। पारब्रह्म तेरी पूरन घाल, गुर संगत तेरी सूली सूल। बेमुखां मारे हरि त्रसूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव गए भूल। घनकपुर वासी जोत प्रकाशी करे बन्द खलासी। कलिजुग कट्टे गलों सिलक जम फाँसी। दर आए मानस जन्म होए रासी। सोहँ भिच्छया गुरमुख साचे बलि बलि जासी। साचे तीर्थ आत्म नुहाए, आत्म चिन्ता सर्ब ग्वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर एका वसे पुरख अबिनाशी। एका एक पुरख अबिनाश। एका जोत करे प्रकाश। गुरसिक्खां होया दास। बेमुखां कलि करे नास। गुरसिक्खां सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंच जेठ मानस जन्म कराए रास। मानस जन्म आप संवारया। मातलोक विच जामा धारया। नरायण नर पूरन अवतारया। सोहँ शब्द छत्तर झुला रिहा। वड वड सय्यद शेख़ मुलाना प्रभ दर दुरकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप वरता रिहा। एका ओट हरि तकाना, जोत सरूपी पहरया बाणा, प्रभ आपणे रंग वखा रिहा। आप उठाए बाल अञ्याणे, जो जन सीस झुका रिहा। मात बणाए सुघड़ स्याणा, साचे माण दवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वरते कलिजुग भाणा, आपणी बूझ बुझा रिहा। झूठा भेख जगत मिटावणा। सच धर्म दा छत्तर झुलावणा। एका झण्डा नाम झुलावणा। राजा राणा सरनी लावणा। वाली दो जहान आपणा डंक वजावणा। बेमुखां उखाड़े जड़, सोहँ खण्डा हत्थ उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा धाम सुहावणा। गुरमुखां बुझाए आत्म दाग़। बेमुखां माढ़े होए भाग। गुरसिख साचे जायण जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे लाए भाग। जमन किनारे आए चल। शब्द सरूपी फेरे हल। अन्तिम अन्त करे नबेड़ा, वेला अन्त ना जाए टल, ना लाए घड़ी पल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सद अचल्ल। अचल अचल्ल निहचल धामा। जिथ्थे वसे हरि भगवाना। आप मिटाए कलिजुग धामा। एका शब्द वजावे सच दमामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नामा। सोहँ नाम प्रभ देवे वंड। बेमुखां देवे कंड। बेमुख दर ते आयण जायण आत्म होई रंड। मदिरा मासी दर दुरकारी, आत्म होई रंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए खण्ड खण्ड। साचा खण्डा आप उठाया। शब्द डण्डा मगर लगाया। चण्ड प्रचण्ड वस कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत राउ उमराउ सरन लगाया। राउ उमराउ सरन लगाए। आपणी खेल आप रचाए। चार कुन्ट सोहँ साचा डंक वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणा संगरूर

पकड़ उठाए। राणा संगरूर उठाणा चुण। साचा नाम दिवाणा गुण। साचा शब्द उपजाणी धुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। गुरसिख पल्ला देणा फेर। वेला अन्त ना आउणा कलिजुग फेर। राजे राणे प्रभ चरन ल्यावे घेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कराए कलिजुग ढेर। आपे ढाहे करे ढेरी। बेमुख प्रभ साचा आप कटाए जिउँ बाढ़ी बेरी। एका शब्द झुलाए जगत अन्धेरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सोहँ नाम देवे सच दलेरी। गुरमुख साचे सन्त जनो दर आओ हस्स। दुःख दर्द सभ जायण नस्स। दर घर साचे जाओ, राह साचा प्रभ जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ, राती सुत्या वस। साचा नाम जगत चलावणा। साचा डंक दर दर घर घर वजावणा। चार कुन्ट दिवस रैण एका खेल वरतावणा। अग्न जोत जगत लगाए बरखे मेघ जिउँ सावणा। बेमुख पाउण झूठी डण्ड, प्रभ अबिनाशी ना रसना गावणा। महाराज शेर सिँघ धरत मात रणभूम बणाए ना किसे अन्त छुडावणा। वेले अन्त ना कोए छुडासी। प्रभ अबिनाशी गल पाए फाँसी। कलिजुग जीव लाड़ी मौत प्रनासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाए ना कोई मेट मिटाए, ना कोई करे बन्द खुलासी। गुरसिख साचे मन विचारी। आया हरि शब्द उडारी। प्रभ साचा आया शब्द लिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक जगाए जोत अपारी। पुरी घनक जोत जगाई। गुरमुखां हरि बूझ बुझाई। प्रभ दर आए मिले वड्याई। हँगता माण देवे गंवाई। महाराज शेर सिँघ इक्क अकार जोत रखाई। जोत अकार जगत जहाने। सोहँ देवे नाम निधाने। माण गंवाए तोड़े अभिमाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन पकड़ ल्याए राजे राणे। राजे राणे चरन द्वारी। प्रभ अबिनाशी देवे नाम अपर अपारी। सच शब्द सति अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए चरन द्वारी। चरन दुआरे जो आए ढुक। लहणा देणा जाए मुक्क। आत्म वहिण जाए सुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मुख पाए थुक्क।

२३
०३

आत्म तृष्ना जगत अपार। मानस जन्म दिसे कूड़ा कुड़यार। साचा धन ना आया हिस्से, ख़ाली रहे घर भण्डार। आत्म रहे चिन्ता दुःख, दिवस रैण रहे दुख्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचा पाया आए सच दरबार। साचा दर साचा पाली। प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई आपे माली। आपे बीज बिजावे आपे करे अन्त रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर आए तेरे सवाली। दर सवाली मंगण मंग। आप निभाए आपणा संग। साचा प्रभ बतावे सोहँ साचा ढंग। गुरमुख साचा रसना गावे, आपे चाढ़े साचा रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर

कराए जो दर मंगे साची मंग। गुरमुख साचे सच विचार। सोहँ साचा रसन उचार। मदिरा मास दे निवार। साची खिड़े घर गुलज़ार। एका गेड़ा गिड़े शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत धरे गुरसिक्खां सुण पुकार। आत्म जोती साचा नूर। गुरमुखां आत्म करे भरपूर। आप उपजाए घर साचा सुक्ख गुर सूर। जे जन आए दूरों चल हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूर। साचा शब्द शब्द ज्ञाना। आत्म खिच्चे तीर निशाना। एका चले शब्द निशाना। साचा गुर ना मनों भुलाणा। सोहँ साचा रसना गाणा। मदिरा मास नूं हत्थ ना लाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे वर, गुणवन्त गुण निधाना। दुःख दर्द जो देवे वंड। सिर उठाई जो औखी पंड। बाल जवानी गई हंढ। आत्म अजे ना होए ठंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाए पल्ले बन्न्हणी साची गंढ। दुःख दर्द हरि आप निवारया। साचा सुख मन तन उपजा रिहा। सोहँ साची धुन प्रभ साचा नाम दवा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म, रंग चढ़े चलूल। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग विच ना भूल। रक्ख चित पारब्रह्म, वसे काया अंदर अस्थूल। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप चुकाए साचा मूल। रक्ख चित पारब्रह्म, शब्द घनघोर। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म उपजे साची धुन मिटाए मोर तोर। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म तोड़े साची सुन्न आप मिटाया काया अन्धघोर। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान झूठा दिसे जगत शोर। रक्ख चित पारब्रह्म, अगम्म अपारा। रक्ख चित पारब्रह्म, जोत सरूपी नर अवतारा। रक्ख चित पारब्रह्म, आदि अन्त इक्क अकारा। रक्ख चित पारब्रह्म, देवणहार सर्ब संसारा। रक्ख चित पारब्रह्म, भरे रहण सद भण्डारा। रक्ख चित पारब्रह्म, मानस जन्म ना होए कलि ख्वारा। रक्ख चित पारब्रह्म, फिर ना आवे दूजी वारा। रक्ख चित पारब्रह्म, उज्जल मुख करे विच संसारा। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ फेरे सिर पापां आरा। रक्ख चित पारब्रह्म, सुफल कराए माता बत्ती धारा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। रक्ख चित पारब्रह्म, बोध अगाधी। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग झूठी देही आत्म साधी। रक्ख चित पारब्रह्म, साची जोत पंचम जेठ विच मात दे लाधी। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द आप सुणाए अनादी। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि मेल मिलाए सुरत चलाए ब्रह्मादी। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन जोत इक्क भगवन्त। सोहँ देवे हरि साचा मंत। कलिजुग भुल्ले सर्ब जीव जन्त। आप बणे प्रभ साचा कन्त। पकड़ पछाड़े वड वड देव दंत। गुरमुखां दर बहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा बड़ी अगणत। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस साजन साजा। रक्ख चित पारब्रह्म, तेरे आत्म दर वसे खोल्हे दसम दरवाजा।

रक्ख चित पारब्रह्म, आप सवारे तेरा काजा। रक्ख चित पारब्रह्म, साची शब्द धुन उपजाए मारे एका अवाजा। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा शब्द जपाए पार लँघाए सोहँ देवे दरगाह साची दाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट पाई भाजा। रक्ख चित पारब्रह्म, उत्तम जाता। रक्ख चित पारब्रह्म, सर्ब जीआं का एका दाता। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन जोत पुरख विधाता। रक्ख चित पारब्रह्म, आपणे रंग सदा प्रभ राता। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख विरले कलि पछाता। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख साचे प्रभ देवे चरनी साचा नाता। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म जोत जगाए दरस दिखाए प्रभ साचा पुरख बिधाता। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्ध अन्धेर मिटाए जिउँ चौधवीं चन्द राता। रक्ख चित पारब्रह्म, मिटा अन्धेरा। रक्ख चित पारब्रह्म, मिटे चुरासी गेड़ा। रक्ख चित पारब्रह्म, इक्क कराए संञ सवेरा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मात जोत प्रगटाए ना लाए देरा। रक्ख चित पारब्रह्म, सर्ब समाना। रक्ख चित पारब्रह्म, दर साचे बण बाल अञ्याणा। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द हरि जाप जपाना। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन जोत देवे भगवाना। रक्ख चित पारब्रह्म, आप बहाए सच टिकाणा। रक्ख चित पारब्रह्म, एका जोत जगे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। रक्ख चित पारब्रह्म, बण वड वड हँस। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ आप बणाए साचा बंस। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ देवे वड्याई विच मात सहँस। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग माया विच ना फंस। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुखां मेट मिटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिउँ काहना कंस। रक्ख चित पारब्रह्म, दीन दयाला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुर गोपाला। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे सच्चा धन माला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख होए ना जगत कंगाला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख विरले विच मात प्रभ भाला। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे प्रभ साचा शब्द सुखाला। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे होए गुरसिख तेरा रखवाला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख जग जी। रक्ख चित पारब्रह्म, अन्तकाल कलि लै जाणा की। रक्ख चित पारब्रह्म, झूठे दिसण पुत्तर धी। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ साचा अमृत आत्म बरसे मींह। रक्ख चित पारब्रह्म, पहली माघ प्रभ सतिजुग रखाए साची नींह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा जग जी। रक्ख चित पारब्रह्म, जगत पित। रक्ख चित पारब्रह्म, रक्ख चरन हित्त। रक्ख चित पारब्रह्म, मिल प्रभ अबिनाशी साचा मित। रक्ख चित पारब्रह्म, आपे जाणे गुरसिख तेरी गति मितक। रक्ख चित पारब्रह्म, मानस जन्म जाए कलि जित्त। रक्ख चित पारब्रह्म, सर्ब दु:ख भंजन। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म जोत जगाए निरँजण। रक्ख चित पारब्रह्म, नेत्र देवे प्रभ साचा अञ्जण। रक्ख चित पारब्रह्म, शब्द ढंडोरा आत्म वज्जण। रक्ख

चित पारब्रह्म, आपे बणे साक सैण सज्जण। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ अबिनाशी चरन धूढ़ी साचा मजन। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच मात दे गज्जण। रक्ख चित पारब्रह्म, कलि खेल न्यारा। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि भेख अपारा। रक्ख चित पारब्रह्म, बिन रंग रूपी ना कोई पावे सारा। रक्ख चित पारब्रह्म, आदि जुगादी जोत आधारा। रक्ख चित पारब्रह्म, जुगा जुगन्त प्रभ अबिनाशी सद सदा निराहारा। रक्ख चित पारब्रह्म, आप खुल्हाए तेरा सच दुआरा। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द भरे तेरे आत्म सच भण्डारा। रक्ख चित पारब्रह्म, वेला अन्त आ गया ना भुल्ल जीव गंवारा। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा शब्द पंचम जेठ हरि अवतारा। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख पल्ले प्रभ साचे दी साया हेठ, पंचम जेठ आपे आप बणे रख्वारा। रक्ख चित पारब्रह्म, मिटाए वड वड सेठ, बेमुखां दुःख लग्गे भारा। रक्ख चित पारब्रह्म, आप भन्नाए कौड़े रेठ, मदिरा मासी मुग्ध गंवारा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। प्रभ अबिनाशी जामा धारे। आप आपणा बिरद आप संभाले। सोहँ देवे पंचम जेठ गुरसिक्खां देवे दोशाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गावे। पंचम जेठ पंच प्रधाना। चार वरन देवे एका माना। चार यारां वक्त चुकाना। सच धर्म आप चलाणा। पूरन कर्म हरि कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समाना। सोहँ वरते विच संसार। घर घर गायण नारी नार। साची धुंन सच्ची धुन्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोती जोत अकार। जोती जोत होए अकारा। चार वरन एका गोत करे संसारा। धुर मेल रंगे रंग करतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्क वरतारा। साची सिख्या देवे, लैणी सिख। सच लेख सच दर प्रभ दए लिख। सच दरबारे मंगो सच नाम प्रभ दए भिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच मुन रिख। रंग रंगीला प्रभ साचा पाओ। सोहँ मजन तिलक लगाओ। बेमुख भाण्डे कलिजुग भज्जण, वेला गया हत्थ ना आओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रखाओ। रंगो रंग हरि साचा। प्रभ अबिनाशी हिरदे वाचा। बेमुख दर आए घर साचा नाचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरे हिरदे राचा। वड जोधा दाना सूरबीर। सोहँ शब्द लगावे साचा तीर। चार कुन्ट पै जाए वहीर। कलिजुग तेरा होया अखीर। बेमुखां हत्थ ना आवे तीर। कोई ना देवे किसे धीर। बालकां छुट्टा माता सीर। झूठे कट्टे गलों जगत ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट कराए आप वहीर। वहीर वहार यारां अहिमद मुहम्मद होए ख्वारा। विच मात ना दिसे कोई किनारा। ईसा मूसा होए दो फाड़ा। एका उठे रूसा धाड़ा। चार कुन्ट कराए आप उजाड़ा। सो जन उधरे पार, निहकलंक जो

तेरे चरन छुहाए दाहढ़ा। हरि हरी हरि साचा माण। हरि हरी हरि देवे माण। हरी हरि चरन मसाण। हरी हरि हरि विटहों कुरबान। हरी हरि एका जोत जगे भगवान। हरी हरि जोत सरूप सर्ब जीआं दा जाणी जाण। हरी हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। हरी हरि जन जाणो। हरी हरि आत्म रस माणो। हरी हरि देवे दरस तोड़े अभिमानो। हरी हरि दरगाह साची करे परवानो। हरी हरि सोहँ देवे सच निशानो। हरी हरि आप मिलाए कर कर कर बिध नानो। हरी हरि सोहँ खिच्चे तीर कमानो। हरी हरि शब्द लिखाए विच ज़बानों। हरी हरि मेट मिटाए अञ्जील कुरानो। हरी हरि रहण ना पाए वेद पुरानो। हरी हरि खाणी बाणी मिटे निशानो। हरी हरि एका जोत जगे महानो। हरी हरि खिच्चे नीर अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ ना कोई दस्स सच टिकाणो। हरी हरि प्रगटे जोत वड बली बलवानो। गुरमुख साचे जाणो वड मेहरवानो। हरी हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाओ सुफल कराओ ज़बानो। हरी हरि कलि साचा गुर। हरी हरि मेल मिलाया लिख्या धुर। हरी हरि गुरमुख साचे चरन गए जुर। हरी हरि आप चढ़ाए गुरमुख साचे घोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे तोड़। चरन प्रीती आप दवाए। कलिजुग बंधन आप तुड़ाए। परमानंद सुख उपजाए। त्रैलोकी नंदन दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आप आपणा सिर रक्खे हत्थ। प्रभ दी महिंमा
२७ बड़ी अकत्थ। कर दरस सगल वसूरे जायण लत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। अन्तिम अन्त कलिजुग बेमुखां पाए २७
०३ नत्थ। गुरमुख हरि आप जगाए। बेमुख हरि आप खपाए। गुरसिख हरि आप तराए। बेमुख दर रहण ना पाए। बेमुख ०३
गूढ़ी नींद सवाए। गुरसिख हरि दर घर साचे दर्शन पाए। बेमुख दर आए नाचे जाए पिच्छों पछताए। गुरमुख साचे दर साचा माण दवाए। बेमुख भाण्डे काचे, वेला अन्त भन्न वखाए। गुरमुख सोहँ पाए साचो साचे, चरन सेव कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे सद रहाए। सच नबेड़ा देणा कर, झूठा झेड़ा चुक्के डर। मातलोक खुल्हा वेहड़ा प्रभ आप बणाए साचा दर। गुर संगत गुर दर आए साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ देवे भण्डारे भर। साध संगत हरि मंगल गाई। साची रुत्त हरि आप सहाई। प्रगट जोत आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे लए बहाई। दर घर साचे आप बहाया। दरगाह साची माण दवाया। वेले अन्त होए सहाया। धर्म राए ना दए सजाया। बाहों पकड़ गुरसिख तराया। जोत सरूपी अंग संग सद आप रहाया। प्रभ दर मंगे साची मंग, अन्त जोती मेल मिलाया। मातलोक मानस जन्म ना होए भंग, बैकुण्ठ निवासी विच बैकुण्ठ निवास रखाया। बेमुखां प्रभ देवे दंड, धर्म राए दे सजाया। कलिजुग अन्तिम होए नंग, साचा नाम ना रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई

देवे वंड, सोहँ शब्द जै जै जैकार कराया। सोहँ शब्द कराए जैकारा। वरते वरतावे विच संसारा। चार वरन बहाए इक्क दरबारा। दर घर आए साचे तरन, बेमुखां लाहे आत्म अफारा। आप चुकाए मरन डरन, जो जन सरन चरन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर अवतारा। जामा धारा गुरसिख आयण दुआरा। सुणे पुकारे आवे वारो वारा। मातलोक हरि साचे साची तेरी कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ लए अवतारा। पंचम जेठ जोत जगाए। एका जोग नाम दवाए। आत्म रोग सर्ब मिटाए। निज़ानंद विच वास रखाए। सोहँ स्वास स्वास जपाए। मानस जन्म रास कराए। मदिरा मास रसन तजाए। पूरन आस हरि आप कराए। साची धुन शब्द उपजाए। बैकुण्ठ निवासी घर साचे साची जोत जगाए। बेमुख कलिजुग जीव कौड़े रीठे आप भन्नाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणे डन्ने मात जोत प्रगटाए। राजे राणे प्रभ देवे डन्न। शब्द सरूपी ल्यावे बन्न्। गुरमुख मन्ने धन्न धन्न। पंचम जेठ शब्द लिखाए जगत वरताए, सृष्ट सबाई मिटाए आत्म जन। भरम भुलेखा करो दूर। दर घर साचा हरि साचा शाहो खड़ा हज़ूर। देवे वड्याई गुरसिक्खां मन वधाई। पंचम जेठ गुरसिक्खां आत्म करे भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी काया करे नूरो नूर। गुरसिख तेरी काया नूर नुरानी। सोहँ सुणाए आत्म लाए साची कानी। सृष्ट सबाई होई हैरानी।
२८
०३
गुरमुखां देवे शब्द निशानी। दर आए प्रभ साचा माण गंवाए, वड वड आत्म ध्यानी। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगट भुल्ले कलिजुग जीव ज्ञानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुण निधानी। गुण निधान गुणवन्त। पूरन जोत आप भगवन्त। आप बणाए साची बणत। महिंमा जगत सदा अगणत। आप बणाए साची बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे तेरा आदि अन्त। आदि अन्त किस जन जाणयां। प्रभ अबिनाशी ना किसे जन वखाणयां। साचे चलण हरि साचे तेरे भाणयां। आपे होए वड वड महांराणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिक्खां आपणी गोद उठाए बाल अञ्याणयां। गुरमुखां हरि किया प्यार। आप दिखाया आपणा दरबार। कर्म धर्म जरम हरि ल्या विचार। मिटाई शर्म विच संसार। कलिजुग जो रहे सोए, वेले अन्त होयण ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत जाए तार। दर आए सच दरवाजे। किरपा करी प्रभ गरीब निवाजे। पंचम जेठ प्रगटे जोत विच देस माझे, जोत सरूपी शब्द धर, शब्द वजाए अनहद वाजे। चार कुन्ट दहि दिश प्रभ साचा गाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा साजण साजे। आप आपणा साजन साजना। आपे होए वड वड राजन राजना।, आपे चढ़े निहकलंक साचे ताजना। चार कुन्ट बेमुखां अग्गढ़ पिच्छड़ पैण भांजड़ां। साध संगत दर साचे आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ शब्द लगाए

२८
०३

साची अवाजना। पंचम जेठ हरि दया कमाए। गुरमुख साचे सेव लगाए। आपणा हुक्म आप फ़रमाए। सिँघ तेजा प्रभ दे वड्याए। आत्म सुखी सिक्खी मुख रखाए। दु:ख भुक्ख रहे ना राए। साचा चवर प्रभ हत्थ फड़ाए। सीस आपणे छत्तर झुलाए। सच जगदीश होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची तेरी इक्क सरनाए। पंज जेठ प्रभ देवे वधाई। सिँघ इन्द्र हरि माण रखाई। सज्जे पासे लए खड़ाई। चौथी कूट प्रभ पहरा लाई। त्रै कूट हरि शब्द वजाई। साचा सोहँ संग रलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे मात वड्याई। पंचम जेठ लाहा लैण। सिँघ प्रीतम मन्न साडा कहण। दरस पेखे तीजे नैण। फेर ना वहिणा झूठे वहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लहणा देण। सच्चा हुक्म सच्चा फरमाण। आपे देवे चरन ध्यान। गुरसिक्खां दर घर देवे माण। उठे सिँघ प्रेम सेवा करी जिस महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची देवे माण। तीजे कूट कर ध्यान। ठाकर सिँघ हरि ठाक रहाया। चौथी कूटे हरि आप बहाया। सोहँ झूटे हरि आप झुटाया। फल्ल लग्गा कदे ना तुटे, प्रभ विच मात दे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिक्खां दे वड्आया। सोहण सिँघ बली बल धार। आए खड़ प्रभ चरन द्वार। एका दिसे सच दरबार। एका एक हरि निरँकार। जगे जोत अगम्म अपार। एका शब्द विच मात चले साची दो धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच धाम इक्क कराए चरन प्यार। गुरमुख सिँघ उठे गोबिन्द राए। प्रभ अबिनाशी रिहा सुणाए। घनकपुर वासी साचे लेख दए लिखाए। जो जन तजाए मदिरा मासी, प्रभ साचे धाम दे बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खा नव द्वार बन्द कराए, दसवां आप खुल्हाए। सिँघ आत्मा प्रभ दे वड्याई। भोली भाली देह उपजाई। साची डोली नाम चढ़ाई। गुरमुख साचे पूरे तोल तोली आए हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा दर बन्द कराई। जीवण सिँघ उठ उठ जाग। आत्म धो पिछले दाग़। सच सुणाए प्रभ साचा राग। पंचम जेठ तेरी पकड़े आपे वाग। गुरसिख बणाए हँस काग। सोहँ लाए आत्म जाग। आपे देवे वड्याई वड वड बणाए भाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वरते सांग। तीजा नैण तीजी धारा। गुरमुख साचे बूझ बुझारा। एका वेख शब्द हुलारा। प्रभ अबिनाशी खोल्हे तेरा आत्म दर दुआरा। सिँघ पाल उठ बोल सोहँ सच जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ साचा शब्द लिखारा, भाण्डा भरम भउ निवारा। आसा सिँघ रक्ख पूरन आस। रक्खे प्रभ सुखाले स्वास। आपे होए तेरा दास। सोहँ शब्द चलाए बाणी सत्त अकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ साचा शब्द लिखास। प्रभ अबिनाशी दर दरबारी। गुरसिक्खां जाए पैज संवारी। सिँघ दलीप तेरे हत्थ फड़ाए साची आप कटारी। मानस जन्म सुफल

कराए। फिर मात ना आए दूजी वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उडाए शब्द उडारी। सिँघ गुरदयाल वेख
गुर का घर। चरन सेव देवे साचा वर। चरन लाग कलि जाए तर। आप चुकाया जम का डर। शब्द सरूपी आप खुल्हाए
आत्म दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ किरपा कर। तेज भान सच कर जाण। आत्म तुटे सर्ब माण।
सोहँ वज्जे साचा बाण। एका झुल्ले शब्द निशान। वड वड राउ उमराउ तेरी चरनी डिग्गण आण। वड वड शाहन शाहो
प्रभ देवे साचा माण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां करे आप पछाण। गुरसिक्खां हरि आप पछाणे। आप
आपणे संग रलाणे। साचा संग इक्क भगवाने। आत्म चाढ़े रंग दूई द्वैत मात मिटाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
गुरमुखां कलि आप तराणे। गुरमुख साचा पार उतारया। दु:ख दलिद्र सर्ब नवारया। प्रगट जोत जिउँ घर बिदर भोग लगा
रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर सिँघ सोहण आप तरा ल्या। सिँघ बिशन हरि देवे दात। गुरमुखां
पुछे आपे वात। कलिजुग ना होई अन्धेरी रात। सोहँ शब्द सुणावे साची गाथ। आप चढ़ाए साचे राथ। पंचम जेठ प्रगट
जोत दरस दिखाए त्रिलोकी नाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सद रहे साथ। दर्शन सिँघ दीआ दर
माण। आत्म जोत धरे भगवान। खुल्ले सोत उपजे ब्रह्म ज्ञान। देवे वड्याई प्रभ साचा वाली दो जहान। होए रुशनाई
३० ०३ दर साचे बूझ बुझाई, भरम भुलेखे सर्ब मिट जाण। मिले वड्याई आया सरनाई, हरि साची कलम फड़ाई। लेख लिखाए ३० ०३
वड बली बलवान। दरगाह साची माण दवाए, जिथ्थे वसे आप भगवान। गुरसिक्खां पूरन होई आस, सोहँ शब्द स्वास
स्वास गावणा। प्रभ अबिनाशी आत्म अन्ध अन्धेर मिटावणा। वास ना होए गर्भ दस मास रसना तजावणा। प्रभ साचा करे
बन्द खलास, प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। हरि हिरदे सच रक्खे वास, दिवस रैण हरि रस गावणा। जगाए जोत मात
पताल अकाश, बेमुख मिटाए जिउँ रामा रावणा। हँकारीआं करे नास, मोहण माधव भेख वटावणा। जिउँ जन अर्जन होया
दास, पंचम जेठ हरि शब्द लिखावणा। गुरमुख साचे होवो पास, वेला गया हत्थ ना आवणा। मानस जन्म होवे रास, अमृत
मेघ हरि आप वरसावणा। सोहँ गावणा स्वास स्वास, साचे तीर्थ गुर चरनी नहावणा। निहकलंक दर होवे दास, प्रभ अबिनाशी
साचा पावणा। मात जोत धरे प्रभ अबिनाश, भाण्डा भरम भउ भनावणा। साचे शब्द रखावणा वास, दिवस रैण मिले ना
सावणा। गुरमुखां उपजाए शब्द अकाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखावणा। गुरमुख उतरन पहले
पूर। अग्गा नेड़े आ गया पिच्छा रहि गया दूर। प्रभ साचा वक्त सुहा गया। आत्म धरे जोत कोहतूर। जो जन प्रभ चरनी
पंचम जेठ आ गया, प्रभ आत्म करे भरपूर। जो जन सोहँ साच गा गया, दु:ख दर्द कीने दूर। जो जन मदिरा मास

तजा गया। प्रभ साचा होए हज़ूर। दर आए भुल्ल बख्शा गया, प्रभ देवे चरन धूढ़। आपणा आप गुर दर बणा गया,
मातलोक विच होया सूर। प्रभ सरनई मिले वड्याई, पंचम जेठ गुर संगत तैनूं मिले वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
सिर तेरे हत्थ टिका गया, सर्ब कला भरपूर। गुरसिख तेरी पूरन घाला। साध संगत तेरे कट्टे सर्ब जंजाला। पतिपरमेश्वर
तेरा होए आप रखवाला। सोहँ साचा शब्द तेरे तन पहनाए माला। जो जन आए दर घर साचे, अन्तिम कलि ना होए
कंगाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पर्दा पाए सोहँ देवे तन रुमाला। सोहँ देवे तन रुमाल। आत्म जोती
देवे बाल। सतिजुग गुरमुख उपजाए मातलोक अनमुल्लड़े लाल। पंचम जेठ प्रभ अबिनाशी आपणे चरन लए बहाल। किरपा
करे घनकपुर वासी देवे शब्द गुरसिख रक्ख संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत कीनी मालो माल।
साचा धन सच्चा माल। सोहँ वस्त रक्ख संभाल। अन्तकाल तेरे चले नाल मात पित भाई भैण सज्जण साक सैण ना देवण
बहाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां वेले अन्त करे संभाल। वेला अन्त हरि आप संभालणा। हरि हरि प्रभ
साचे आपणी गोद आप उठावणा। आप बठावे पकड़ गोदी, आपणे दर बहावणा। वड वड सूर वड वड जोधन जोधी, सृष्ट
३१ सबाई आप निवावणा। शब्द लिखाए अगाध बोधी, भेद किसे ना पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत ३१
०३ प्रगटाए, गुरसिक्खां दरस दिखाए, जिउँ धारे रूप बावना। बावन रूप धार हरि बल उधारया। बल्ख बखारा आप संवारया। ०३
बलख नगरी सच द्वारया। धरत मात दे विच लिखा रिहा। मुक्त जुगत दा राह बता रिहा। दो करसा कर तिन्न लोए
सभ दा माण गंवा ल्या। गुरमुख साचे सन्त जन आपणा आप जणा रिहा। किरपा कर साचा हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, बाहों पकड़ गले लगा रिहा। गले लगावे देवे धरवास। बालक ध्रू ना होए उदास। राम रमईआ साचा गावे एक
स्वास स्वास। बाल अवस्था ना होए सहाई, आत्म जोत करे प्रकाश। अट्ठ सौ बरस राज कराई, साचा धाम देवे गुणतास।
चार जुग मिली वड्याई, प्रभ रक्खे चरन पास। चौथे जुग प्रभ अन्त कराई, सेव कमाई होई रास। सतिगुर साचे साचे
मार्ग लाई, सिँघ सवरन होए दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैकुण्ठ निवासी एका जोत करे प्रकाश। भगत प्रहलाद
हरि आप उधारया। किरपा कर आप गिरधारया। तोड़े माण सर्ब हंकारया। एका वस्त रक्खे तख्त, झूठी खेड बणा रिहा।
एका राम रमईआ कंठ, रसना आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आप वरता रिहा। प्रगट जोत हरि
साचा सभ दुष्ट नष्ट करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जन भगतां पैज रखा रिहा। भगत अमरीक
आपे तार। साचे देवे नाम अधार। एका बख्शे चरन प्यार। जन भगत प्रभ पावे सार। दस अट्ठ अठारां करे खाली देवे

नाम आधार। धर्म राए दे जाए विच दरबार। आपे जाए सुणे पुकार। दुखीए जीव करन हाहाकार। जन भगत देवे सर्ब तार। आदि जुगादि जुगो जुग प्रभ साचा वरते सच विहार। भगत जनक किरपा करी अपार। एका तोला आप तुलाईआ। साचा बोला नाम रखाईआ। तन मन धन प्रभ साचे घोला, अन्त साच रखईआ। जोती जोत सरूप हरि, भारा पासा नाम रखईआ। उधरी तारा साची नार। गुर संगत संग किया अपार। दर घर साचा छड्ड आई हरि दरबार। आपणा किया लैणा वढ्ढ, जीव जन्त कोई ना करे विचार। अग्गे दिसे अन्धेरी खड्ड, धर्म राए विच देवे डार। जूठा झूठा भेख कलि देणा छड्ड, प्रभ देवे नाम आधार। जोती जोत सरूप हरि, आदि जुगादि जन भगतां पावे सार। आदि जुगादि भगत उधारी। घर बिदर जाए कृष्न मुरारी। तुट्टे माण दुर्योधन हँकारी। सुंञे दिसण महल मुनारी। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ काया सेज संवारी। जोती जोत सरूप रुक्खा सुक्खा खाए करे भगत तेरी जैकारी। रुक्खा सुक्खा आपे खाधा। जन भगतां कराए मात वाधा। आपे बणे पिउ दादा। एका शब्द उपजाए नादा। जोती जोत सरूप हरि जन भगत लेख लिखाए शब्द बोध अगाधा। भगत सुदामा आपे तार। पूरन कर्म ल्या विचार। बाल अवस्था किया प्यार। साचा अस्त दीआ गिरधार। जोती जोत सरूप हरि आपणे खेल करे करतार। दलिद्री आया साचे दर। मनो ना मंगया कोई वर। चुप चुपीता रिहा कर। दूरों दिसे आपणा दर। जिथ्थे रिहा भुक्खा मर। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी आपे देवे किरपा कर। आपे करे बन्द ख्लासी, किल्ला कोट प्रभ देवे साचा घर। सृष्ट सबाई होए उदासी, जोती जोत सरूप निरँजण जन भगतां करे बन्द खलासी। जै दिउ प्रभ नामा तारया। भगत जनां हरि काज संवारया। रविदास चुमार संग रला ल्या। एका बहार जगत रखा ल्या। सोहँ धारा इक्क रखा ल्या। जगत भिखारा हरि आप बणा ल्या। भाणा हरि वरतारा गुरमुखां झोली नाम भरा ल्या। आपे देवे शब्द ललकारा, बेमुखां आप डरा रिहा। गुरसिक्खां देवे शब्द हुलारा, सोहँ झूले आप झुला रिहा। प्रगट जोत मात कृष्न मुरारा, जोत सरूपी भेख वटा ल्या। जो जन रसना गाए नारी नारा, प्रभ साचे मार्ग पा ल्या। कर्म धर्म हरि आप विचारा, दरगाह लेखा पंचम जेठ चुका ल्या। आप कराए आपणी कारा, गुरमुखां माण दवा ल्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ साचे धाम बहा ल्या। सदना सैण कबीर तारे। एका दीआ नाम मुरारे। झूठे चाम झूठ दाम जगी जोत काया महल मुनारे। जोती जोत सरूप निरँजण आवे जावे वारो वारे। धन्ना जट्ट प्रभ दित्ता तार। इक्क कराया चरन प्यार। प्रगट जोत भोग लगाया प्रभ साचे किरपा धार। भुल्ले रुल्ले प्रभ मार्ग पाया, किरपा कर अपार। जोती जोत सरूप निरँजण विच मात आवे जावे वारो वार। गनका पापण आपे तारी। उतरी पार दुबदा उतारी। पापन पूतना होए ख्वारी। मोहण मम्मे

पाया हरि नैण मुँधारी। अन्तिम अन्त हरि आप कराया, डिग्गी जाए वांग पहाड़ी। लहणा देणा प्रभ आप चुकाया, दर घर साचे आप बणाए साची लाड़ी। बधक बद्धा मारे तीर। चरन कँवल नूं गया चीर। प्रभ अबिनाशी आपे देवे धीर। माण दवाए भरम चुकाए, अमृत देवे साचा सीर। जोती जोत सरूप निरँजण जन भगतां लथ्थण ना देवे मात दे चीर। आत्म शब्द प्रभ आप जणाई। उज्जल बुध विच मात कराई। आप उपजावे नव निध, पंचम जेठ देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत देवे आप वधाई। गुर संगत होए तेरा वाधा। प्रभ अबिनाशी साचा लाधा। कोई ना छुट्टे प्रभ का बाधा। एका धुन उपजाई सोहँ साची नादा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार कराए जिस जन रसना अराधा। सन्त मनी सिँघ हरि हरि समझाया। आत्म साचा ज्ञान दवाया। चिट्टा अस्त्र साचा बस्त्र तन पहनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणा बाणा आप उल्टाया। सन्त मनी सिँघ सति समाली। आत्म चढ़ी साची लाली। बेमुखां दिसाए विच मात घटा काली। गुरसिक्खां कटाए प्रभ साचा जगत जंजाली। आपे होए एथे ओथे दो जहानां वाली। गुरमुख साचे सन्त जन पंज जेठ बणे सवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धरे निहकलंक नरायण नर सुक्के फल लगाए डाली। सतिगुर मनी सिँघ सति कर मन्नया। प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्नया। आपे होए दासन दास, माल चराए
३३ ०३ जिउँ धन्नया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए दर आई संगत आत्म जानया। सति सरूप साची बुध राखी। ३३ ०३
प्रभ अबिनाशी साचा लाखी। आपे करे गुरसिख फुलवाड़ी राखी। एका शब्द धुन दर भाखी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत प्रगटाए अलखणा अलाखी। अलक्खण अल्ख ना कोई लिखाए। आपे भाणे विच समाए। सुघड़ स्याणे प्रभ भुलाए। माया रूपी पर्दा पाए। वड वड भूपी गए मुख भवाए। आत्म होई कलिजुग अन्ध कूपी, किसे ना दिसे साचा हरि राए। प्रभ अबिनाशी साचा सन्त सुहेली, पंचम आया जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। जोत जगाए जगत अकाली। कलिजुग तेरी पाई चाली। सतिजुग लगाए प्रभ साचा माली। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ आप उपजाए, साची देवे नाम लाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा पार कराए, ना मंगे किसे दलाली। दिल दलाली ना कोई देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। गुरमुख विरला रसना सेवे। पंज जेठ प्रभ साचा लहणा देणा आप देवे। सोहँ शब्द मुख लगाए, गुरसिक्खां साचे मेवे। मात जन्म सुफल कराए, देवे वड्याई विच देवी देवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई भुल्ले भरम भुलेवे। भरम भुलेखे ना जाणा भुल्ल। कलिजुग माया विच ना जाणा रुल्ल। झूठी काया झूठी चुल्ह। सच भण्डारा सभ दा गया खुल्ल। पंचम जेठ होए अवतार, गुरमुख आओ भर लै जाओ आत्म

चोला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम वड वड अनमुल्ला। वड दाता हरि गहर गम्भीरा। कर दरस होए शांत सरीरा। कलिजुग ना लथ्थे आत्म चीरा। आप उपजाए विच मात साचा हीरा। थाउँ थांईं आप रखाए, सोहँ साचा जाप जपाए, मेट मिटाए अठ्ठ सठ तीर्थ नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम पिलाए जिउँ बालक माता सीरा। माता सीर दोए धार। गुरमुखां प्रभ करे प्यार। पंज जेठ कर सच विहार। किरपा कर अवतार नर। गुरसिक्खां बेड़ा लाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लाए आपे बैठ विच दरबार। सच दरबार आप लगाया। सच घर बाहर आप वसाया। सच दर दवारा आप रखाया। कलिजुग झूठा भेख आप मिटाया। वड लेख लिखारा आप हो आया। सोहँ शब्द फड़ खण्डा दो धारा, बेमुखां पार कराया। गुरमुख विरले कलि पछाणयां, प्रभ अबिनाशी ल्या अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणयां करे ख्वारया। चिट्टा बाणा चिट्टा घोड़ा। शब्द सरूपी चिट्टा जोड़ा। गुरमुख वेला रहि गया थोड़ा। कलिजुग झूठ सतिजुग साचा लग्गे बोहड़ा। ना कोई मेटे मेट मिटाए ना कोई अटकाए विच रोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व चार कुन्ट विच रहे दौड़ा। चार कुन्ट शब्द सवारी। पवण उनन्जा हाहाकारी। करे खेल हरि न्यारी। चार कुन्ट एका धुन उपजाए साची धुन्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए महल अटारी। महल्ल अटारीआं जायण मिट। घर घर नारां रहीआं पिट्ट। पतिपरमेश्वर गए पिच्छे सिट। लग्गा रोग एका खिट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां सिर आप लगाई सोहँ इट्ट। इक्क अकारी इक्क उसारी इक्क दरबारी इक्क घर बाहरी। इक्क सरदारी इक्क विहारी इक्क जोत निरँकारी। एका एक वरते वरतावे विच संसारी। कलिजुग देवे गुरमुखां शब्द एक, भुल्ले जीव गंवारी। आपे करे बुध बबेक, सोहँ देवे नाम खुमारी। कलिजुग अग्न गुरसिख तेरे तन ना लाए सेक, प्रभ आप बहाए चरन द्वारी। जोत सरूपी किया भेख, आप मिटाए वड वड हँकारी। कलिजुग जीव रहे वेखा वेख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत पसारी। धरत मात प्रभ देवे दात। गुरसिख तुहाढ्ढा संग बणाए पंचम जेठ भिन्नड़ी रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे सच करामात। वल करामाती गुरसिख पढ़ाए इक्क जमाती। वरन चार हरि देवे दाती। गुरसिक्खां प्रभ दरस देवे सुत्या रातीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन कराए भैण भ्राती। चार वरन इक्क कराया। चार वरन इक्क सरनाया। चार वरन तरनी तरन धरनी धरन प्रभ साचे मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ चारे कुन्ट आपणा शब्द चलाया। चार कुन्ट वेख विचारो। प्रभ अबिनाशी आपणा खेल करे अपारो। वेखो सुणो कलिजुग होए हाहाकारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां बणे सच भतारो। सच

३४
०३

भतारा साचा मीत। गुर संगत दर गाए गीत। आपे बख्शे चरन प्रीत। विच मात प्रभ परखे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना सद गुण गाओ, मानस मानस जन्म जाओ जग जीत। चार वरन चार किनार। चार किनार जुग चौथे देवे हार। चार यार प्रभ दर कराए ख्वार। पंचम जेठ प्रभ साचा पंच बणाए सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्हाए साची धार। आपणी धारा देवे बन्ह। गुर संगत दर जाए मन। साचा शब्द सुणाए कन्न। हरया करे मन तन। आप चुकाए जम का डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां बेड़ा देवे बन्ह। चारे कुन्टां चारे घर। चौथे पौड़े गुरसिख जाए चढ़। आपे जायण अंदर वड़। अग्गे ना किसे कोई दिसे किला गढ़। कलिजुग पाप ना रुढ़ाए हड़। तीनो ताप दर साचे बैठे दड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सच धाम लगाए साची जड़। चार कन्नी गुर संगत साची बन्नी। साचे सिहरा प्रभ साचे गुरसिक्खां सिर बन्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ सृष्ट सबाई करे अन्नी। शब्द सिहरा प्रभ देवे बन्ह। आत्म अन्धेर प्रभ कढ्ढे जन। ना लाए देर बेमुखां जाए डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख कलिजुग झूठे देवे भन्न। चौथा जुग दसवां गेड़। आप मिटाए झूठा झेड़। राजे राणे आप मिटाए खपाए भेड़ भेड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फेर रखाए विच चुरासी गेड़। चार कुंन प्रभ देवे गंढ। गुरसिक्खां आत्म वरसे ठंड। पंचम जेठ टुट्टी आप लए गंढ। आप उतारे सिरों पापां गंढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी आत्म कदे ना होए रंड। आत्म तेरी सद सुहागण। गुरमुख साचे प्रभ दर जागण। चरन सेवा हरि साची लागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उपजाए साचा रागण। साचा राग रंग कलि वेख। प्रभ अबिनाशी धारे भेख। आप मिटाए औलीए शेख़। भुल्ल भुलाई सृष्ट सबाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए सगला लेख। पंचम जेठ हरि जामा धारे। साध संगत आए चल दुआरे। दस बरस वेख विचारे। आपे देवे शब्द बुझारे। कलिजुग जीव होए गंवारे। झूठा जानण भेख भिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ बेमुखां दर दुरकारे। बेमुख दुरकारया दर आए हंकारया। नर्क निवास प्रभ साचे डारया। मदिरा मास जो रसन लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समा रिहा। पतिपरमेश्वर हरि भतार। राम रमईआ नर अवतार। सोहँ चलाई साची नईआ, गुरसिख उतरे पार। चार वरन बणाए भैणां भईआ, साचा देवे नाम अधार। एका रंग आप चढ़ईआ, सोहँ देवे शब्द जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणे सिर धरे दस्तार। सच दस्तार सच करतार। सच वस्त पावे थार। सच्चा लग्गा इक्क दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे आप विहार। सच दस्तारा सीस सजावणा। सोहँ साचा बीज

३६
०३

बिजावणा। तन मन आत्म भीज गुरसिख रखावणा। आप कराए साची रीझ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। शब्द घेरा प्रभ साचे पाया। सिर बन्नू दस्तार बेड़ा हरि आप बन्नाया। सच नबेड़ा आप कराया। झूठा झेड़ा जगत मुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत एह बचन सुणाया। गुर संगत हरि घेरा पा। गुरसिक्खां चरन प्रीती देवे साचा राह। बेमुखां दर दुरका। बेमुख जीव विच साध संगत रहण ना पा। होए निमाणा गुरसिख प्रभ दर तेरा देवे मूल चुका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए साची थां। गुरसिख जे होए आत्म खोटी। बेमुख बन्नाए पकड़ चोटी। आप कटाए बोटी बोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगयां देवे ना किसे रोटी। गुर संगत विच जिस जन रहणा। मन्नणा पवे साचा कहणा। साध संगत जाणो माई भैणा। बेमुख दर साचे घर साचे मूल ना रहणा। प्रभ अबिनाशी आप सुणाए दर दरवाजिउँ हो बाहर बहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां तन पहनाए सोहँ साचा गहणा। बेमुख दर तों कीने दूर। प्रभ अबिनाशी विच मात कीने चूर चूर। गुरमुखां आत्म करे भरपूर। प्रभ अबिनाशी खड़ा हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत आसा पूर। बेमुख दर तों जायण भज्ज। प्रभ अबिनाशी बन्ने सिर तेरे छज्ज। कोई ना रक्खे तेरी लज्ज। शब्द दमामा गया वज्ज। गुर संगत प्रभ साचा पड़दे लए कज्ज। कलिजुग जीव भन्ने वांग कच्ची वंग। गुरसिख साचे सच भण्डार खुल्हाया, पी अमृत दर जायण रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी रिहा गज्ज। गुरसिक्खां रक्खे धीर। बेमुखां करे वहीर। करे दो फाड़ प्रभ आपणी हत्थीं चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे ना देवे धीर। आत्म तोड़े धीर ध्याना। चलाए तीर शब्द विष्नूं भगवाना। चार कुन्ट होए सुंञ मसाना। गुरसिख चित्त पंचम जेठ चरन लगाना। आपे रक्खे आपणी साया हेठ, वेले अन्त आप छुडाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए लै जाए चढ़ाए विच बबाना। शब्द बबाण आप चढ़ाए। कलिजुग जीव अंजाण रहे कुरलाए। साचे धाम हरि साचा माण दवाए। आवण जावण लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। वड बली बलवान, आपणी भुजा लए उठाए। वड वड शाह सुल्तान, प्रभ साचा देवे ख़ाक रुलाए। गुरमुखां होए मेहरवान, आपणा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ सतिगुर मनी सिँघ तेरे सिर दस्तार बंधाए। सतिगुर मनी सिँघ सिर दस्तारा। चार वरन आए तेरे चरन दुआरा। भरम भुलेखा तोड़े हँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगे करतारा। आप आपणा कर्म विचार। वेखा वेखी ना जाणा हार। साचा दर हरि का द्वार। पूरन न्याउँ करे करतार। बेमुखां दर करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पाए आपे सार। सच कर्म हरि आप रंगाए। सच धर्म हरि रसना गावणा। सच

कर्म हरि साचा पावणा। जन्म जन्म दी मैल गंवावणा। गुरसिक्खां सति संग निभावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमावणा। साचा कर्म हरि विच मात दे करता। सच कर्म गुरसिख कमावे प्रभ अबिनाशी भाण्डे भरता। सच कर्म ना कोई भुल्ल जावे, प्रभ तारनहार करता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए रेख सची धरती। सच कर्म सच माणो रस। सच कर्म हरि जोत जगाए, गुरसिख आओ नस्स। सच कर्म हरि सोए जगाए, गुरसिख साचे होवे वस, सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां राह जाए दस्स। सच कर्म रस भोगी। सच कर्म गुरसिख ना होए कदे विजोगी। सच कर्म सच धर्म साचा रस विच मात दे भोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुगाए सोहँ चोगी। सच कर्म मुख बोलो सच। सच कर्म ना झूठ विहाजो कच्च। सच कर्म प्रभ दर आए ना जाणा नच्च। सच कर्म अग्न तृष्ना विच ना जाणा मच्च। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लिखाए सच्चो सच। सच कर्म सच शब्द कमावणा। सच कर्म हरि धाम सुहावणा। सच कर्म हरि सोहँ साचा जाम पिलावणा। सच कर्म एका साचा नाम दवावणा। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुरसिख भैण भ्रा बणावणा। सच कर्म सीतल सति। सच कर्म प्रभ आत्म देवे साची मति। सच कर्म गुरसिख तेरा कदे ना टुट्टे जत्त। सच कर्म माया लालच ना पीणी झूठी रत्त।
३७ ०३ सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे गुरसिक्खां घट घट। सच कर्म कलि सच संदेश। प्रभ अबिनाशी गुरसिख साचे विच प्रवेश। पंचम जेठ जोत सरूपी किया वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पलटयां आपणा भेस। सच कर्म भरत भउ भागे। सच कर्म गुरसिख सोया प्रभ दर जागे। सच कर्म प्रभ अबिनाशी धोए आत्म दागे। सच कर्म आप उपजाए अनहद साचे रागे। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आत्म साधे। सच कर्म ना मंगो भिख। सच कर्म प्रभ पंचम जेठ जाए लिख। सच कर्म हरि रसना गाओ लाहो आत्म विख। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उपजाए जिउँ कँवल बिरख। सच कर्म सर्ब घर वरते। जो जन आए साचे दर ते। सच कर्म हरि भरम निवरते। सच कर्म गुरसिख साचे कलिजुग तरते। सच कर्म वेले अन्त नहींउँ डरते। सच कर्म प्रभ दा भाणा सिर ते जरते। सच कर्म आप वसायण हरि साचा दर ते। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे वरते।

❊ ६ जेठ २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ❊

निर्मल सरीर तुटी धीर। तन काया विच रहे पीड़। अक्खीं दिवस रैण रहे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

३८
०३

किरपा कर दर आयां कट्टे भीड़। सिर पैरां तन लग्गे अग्ग। झूठा दिसे सारा जग। प्रभ साचे दे पकड़े पग। प्रभ चरन गया लग्ग। आप बंधाए सोहँ तग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाओ, दुःख कलेश जायण दग। सोहँ शब्द अग्ग तप। कोटन कोट हरि उतारे पप्प। कलिजुग माया ना डंगे सप्प। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उतारे काया दुःख, आपे बणे माई बप्प। आपे होए माई बाप। आपे मारे तीनो ताप। साचा देवे एका सोहँ जाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए सर्ब सन्ताप। आत्म दुखड़े देवे कढ्ढ। आप कराए सुखाले हड्ड। जोत जगाए काया अन्धेरी खड्ड। दुःख रोग प्रभ देवे वढ्ढ। साचा दान जो दर मंगे ख़ाली झोली अड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लडाए आपणे लड। मंगे दात साची भिच्छया। पूर कराए प्रभ साचा इच्छया। आपे करे गुरसिख रिच्छया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे साची सिख्या। साची सिख्या सिक्ख विचार। दिवस रैण हरि रसन उचार। सोहँ साची शब्द धार। भरम भुलेखा देवे निवार। आत्म लेखा ना रहे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मरन जन्म दोए दए संवार। जन्म मरन ना लागे दुःख। आप निवारे सर्ब भुक्ख। सुफल कराए मात कुक्ख। काया अग्न बुझे धुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर साचा घर साचा वर साचा मंगो सदा सदा आत्म सुक्ख। आत्म सुखिया सज्जण सुहेला। विछड़यां कलि आप कराया मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई विच जंगल जूह पहाड़ बेला। साचा राम नाम रसना लैण। गुरमुख साचे रसना कहण। साचा लहणा प्रभ दर लैण। दरस पेखण दर आए नैण। साध संगत विच रल के बहिण। सर्ब बणाए प्रभ भाई भैण। कलिजुग माया ना खाए डैण। आपे होए साक सज्जण सैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गायण। रसना गाओ सर्ब सुक्ख पाओ। तन कलेश दुःख मिटाओ। प्रभ साचे को करो आदेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस हरि साचा पाओ। दिवस हरि साचा गावणा। दर घर साचे आए हरि पूर कराई भावना। गुरसिख साचे हिरदे वाचे काया तन तन्दूर बुझावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर करावणा। आसा मनसा होई पूरी। जो जन आए चल हजूरी। आत्म देवे सति सरूरी। सर्ब कला प्रभ साचा भरपूरी। प्रभ साचा सीर पिलाए, जो दर बणे काली बूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाक भविख्त लिखाए ना कोई होए अधूरी। राग रंग धन झूठा माल। आत्म रहे सदा कंगाल। सोहँ देवे प्रभ साचा लाल। खर्च खाए गुरसिख एथे ओथे तेरे नाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आप समझाए जिउँ बालक माता बाल। गुरसिख अञ्याणे बाले। प्रभ अबिनाशी सुरत संभाले। बाहों पकड़ कलि गले लगाले। आपे कट्टे जगत जंजाले। सोहँ देवे

साचा धन माले। कोई ना जाए हरि दर तों ख़ाले। दुध्ध पुत्त दे भरे प्याले। आत्म दुःख सर्ब मिटा ले। एका सुक्ख हरि नाम प्याए। उज्जल मुख जो जन रसना गा ले। सुफल कराए मात कुक्ख जो जन चरनी सीस निवा ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आया माण दवा ले। दर घर आया मिल्या माण। आत्म टुट्टी जम की कान। प्रभ अबिनाशी लए पछाण। बेमुख झूठे दर तों भज्ज जाण। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरनी डिग्गण आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवण पाणी आपे वसे जोत सरूपी इक्क मसाण। पवण पाणी खाणी बाणी। प्रभ साचे एका जोत जगाणी। सोहँ देवे मात सच निशानी। गुरसिक्खां हरि बणया बानी। आत्म होए सर्ब दी दानी। चरन धूढ़ करे इशनानी। कलिजुग जीव होए मूढ़, भुल्ले फिरन जगत ज्ञानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप हँकार निवारे जो दर आए बण वड वड विद्‌वानी। विद्‌वान विद्‌वान विद्‌वान। क्या कोई करे प्रभ पछाण। सो जन जाणे जिस किरपा करे भगवान। कर किरपा सोहँ देवे साचा दान। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरन लाग कलि तर जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए विच बबान। सच बबान जाणा चढ़। प्रभ अबिनाशी फड़ाया लड़। साचे अंदर जाणा वड़। आप तुड़ाए काया कोट किल्ह गढ़। गुरमुख साचे प्रभ साचे धाम बहाए लगाए तेरी जड़्ह। धाम अवल्लड़ा इक्क वसे इकल्लड़ा। गुरमुख साचे गल पाओ पल्लड़ा। वेला अन्तिम अन्त प्रभ बेमुखां लाहे खल्लड़ा। एका एक दिसाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां भारा करे पल्लड़ा। गुरमुख साचे लैणा शब्द अनमोल। प्रभ अबिनाशी वसे तेरे आत्म दर दरवाजे कोल। प्रभ अबिनाशी तेरे आत्म पर्दे खोल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई उप्पर धवल। धरत धवल, प्रभ रिहा मवल, काहना सँवल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तराए जिउँ फुल्ल कँवल। गुर सूरा, गुर गहर गम्भीरा। सर्ब कला भरपूरा। गुरसिक्खां देवे आत्म धीर, साचा शब्द उपजाए साची तूरा। बज़र कपाटी देवे चीर, आत्म जोती नूरो नूरा। तुट्टे मुन छुट्टे सुन्न अमृत वरखे प्रभ साचा सीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चुण आप बन्न्हाए आत्म धीरा। धीरज धीर प्रभ देवे बन्न्ह। साचा शब्द प्रभ सुणाए कन्न। कोए ना लाए झूठा जन। धर्म राए ना लाए डन्न। प्रभ अबिनाशी गुरसिख तेरा बेड़ा देवे बन्न्ह। भरम भुलेखा झूठा लेखा, भाण्डा भरम भउ प्रभ देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए गुरसिख तेरे तन। साचे तन जोत जगा ली। साचा दीपक प्रभ साचे बाली। एका देवे रंग गुलाली। आपे बणे तेरे दर प्रभ साचा वाली। दिवस रैण रैण दिवस गुरमुख तेरे आप करे रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा आपे माली। सर्ब जीआं हरि साचा दाता। साचा देवे शब्द सोहँ गुरमुख होए जगत ज्ञाता। जोती जोत सरूप

३६
०३

निरँजण, जन भगतां बणे आपे पित माता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन बन्नाए साचा नाता। चरनी नाता
पुरख बिधाता। कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता। सोहँ देवे साची दाता। साचा शब्द वड करामाता। चार वरन पढ़ाए इक्क
जमाता। अठारां बरन मेट मिटाता। ऊँच नीच प्रभ इक्क कराता। राजा राणा तख्तों लाहता। सुघड़ स्याणयां माण दवाता।
जो जन होए दर बाल अञ्याणे, प्रभ आपणी गोद उठाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा आपे ज्ञाता।
आपे ज्ञाता आपे ज्ञानी। आपे देवे सोहँ सच निशानी। रसना खिच ल्याए आत्म लाए साची कानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, सर्ब जीआं दा जानी। जाणी जाण आप भगवान। सोहँ झुल्ले सच निशान। चार वरन प्रभ रसना गान। राउ
रंक इक्क हो जान। शाहो मिटाए शंक, आउण प्रभ दरबान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा किरपा करे गुरसिक्खां आप
महान। प्रभ अबिनाशी जोत धर। राउ रंक जाए इक्क कर। चार वरन खुल्लाए इक्क दर। गुरमुख दर ते जायण तर।
निहकलंक तेरी सरनी जायण पर। मात जोत प्रगटाई हरि साचे कल्गी धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ
भेव खुल्लाई सृष्ट सबाई मानस जन्म कलि गई हर। मानस जन्म कलि हारया। बेमुख ना आए चल द्वारया। भरम भुलेखा
४० प्रभ साचा पा रिहा। अन्तिम लेखा कलिजुग मुका ल्या। जो जन रहे वेखी वेखा प्रभ साचा नष्ट करा रिहा। गुरमुख साचे ४०
०३ प्रभ नेत्र पेखा। प्रभ आत्म जोती आप जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख माणक मोती गल आपणे विच ०३
लटका रिहा। गुरसिख दर साचा मोती। दुरमति मैल जाए धोती। आप उठाए आत्म सोती। चार वरन कराए एका गोती।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणे हत्थ फड़ाए सोहँ एक सोटी। सोहँ साचा हत्थ उठावणा। सृष्ट सबाई
लेख लिखावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। शाह सुल्तान कोई रहण ना पावणा। ऊँच नीच दा भेव मिटावणा। गऊ
गरीब नूं माण दवावणा। हत्थ आपणे निमाणयां निताणयां प्रभ साचे सीस छत्तर झुलावणा। वड वड सेठ सिठाणयां प्रभ विच
ख़ाक रुलावणा। वड वड राउ उमराउ प्रभ दर दर भीख मंगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत
सरूपी सृष्ट सबाई आपणा खेल वरतावणा। सृष्ट सबाई वज्जे डंक। आप मिटाए आत्म शंक। एक लगाए आत्म तनक।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप फिराए मन का मणक। मन का मणका प्रभ देवे फेर। गुरसिक्खां मिटाए मेर तेर।
आत्म जोत जगाए ना लाए देर। आत्म अन्धेर मिटाए, ना आत्म रहे अन्धेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए
संञ सवेर। आत्म अन्धेरा अन्ध अज्ञान। कलिजुग भुल्ले जीव अञ्याण। माया झूठी विच रुल्ले, भुल्लया हरि भगवान। मानस
जन्म गंवाया अनमुल्ले, आपणा आप ना सके पछाण। झूठे कंडे कलिजुग तुले, जूठे झूठे होए बेईमान। गुर गोशब्द तेरा

बचन सारे भुल्ले, लिखाई लिख्त जो बैठ विच दीवान। सृष्ट सबाई अग्ग ना मिले किसे चुल्ले, करे खेल आप बली बलवान,
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द तेरी सच वड्याई। पुरी अनन्द जो लिख्त लिखाई। सरसा विच जो आप
टिकाई। एका ओट निहकलंक रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत वाक भविख्त दे लिखाई। पिछला
लेखा प्रभ फेर लिखावणा। गुर गोबिन्द प्रगट जोत फेर विच मात दे आवणा। अमृत आत्म साचा दर प्रभ साचे आप खुल्लावणा।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां नष्ट करावणा। रामदास सच्चा दरबारी। सर अमृत जिस नींह उसारी। ओथे
धीआं भैणां करन ख्वारी। मायाधारी होए वपारी। जूए बाजी आपणी हारी। झूठी खेड खिडाए बेमुख जीव संसारी। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलिजुग करे ख्वारी। बेमुखां प्रभ मेट मिटावणा । साचे दर कोई रहण ना पावणा।
अन्तिम लेखा आप चुकावणा। झूठा भेख प्रभ सर्ब मिटावणा। सर अमृत प्रभ थेह करावणा। दूजी वेर फेर वसावणा। सच
धर्म हरि सच सच मार्ग लावणा। कल्गी धर फेर अख्वावणा। जमन किनारे डेरा लावणा। दिल्ली तख्त हरि चरन टिकावणा।
आपणे सीस छत्तर झुलावणा। राणयां महांराणयां प्रभ सरन लगावणा। गुरमुख साचे कर किरपा पार लगावणा। सृष्ट सबाई
आत्म सोध, शब्द सरूपी ज्ञान दवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी एका डंक वजावणा। नौ खण्ड
४१ ०३ कलिजुग अन्तिम होई रंड। चार चुफेर पए डण्ड। वड वड पीरां टुट्टे घमंड। किसे ना पल्ले बध्धी रही गंढ। बेमुखां ४१ ०३
कलिजुग आई कंड। ना सुहागण ना रंड। जूठे झूठे पायण डण्ड। मायाधारी आपणीआं वंडां लैण वंड। गरीब निमाणयां
बेमुखां किया खण्ड खण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत तोड़े सर्ब घमंड। राजयां राणयां माण गंवाणा।
गरीबां बाल अञ्याणयां माण दवाणा। वड वड शाह सुल्तानयां, प्रभ ख़ाक रुलाणा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी पहरया बाणा।
सोहँ देवे सच निशानयां। सतिजुग साचा मार्ग लाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क थां बहाणयां। चार
वरन इक्क घर बाहर। चार वरन इक्क सरकार। चार वरन इक्क जोत अकार। चार वरन एका एक कराए प्रभ साचा
सच विहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत कलंकनिह अन्तिम देवे हार। चार वरन हरि सच मार्ग लाए।
एका आपणा नाम जपाए। दूसर कोई रहण ना पाए। एका दूआ भेव चुकाए। ओअं सोहँ इक्क हो जाए। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग साचे लग्गे पहली माघ। प्रभ साचा हत्थ आपणे पकड़े वाग। गुरमुखां
आत्म धोए दाग। साचा शब्द सुणावे अनहद राग। कलिजुग सोए गुरसिख गए जाग। पंचम जेठ प्रभ दर आए पूरन होए
भाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हँस बणाए काग। काग हँस गुरसिख वड्याई विच सहँस। सतिजुग

बणाए साचा बंस। आप उपजाए आपणी अंस। बेमुख खपाए जिउँ काहना कंस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच रहँस। जगत रहंता खेल करंता। प्रभ भगवन्ता जोत जगंता भेख मिटंता। लेख लिखंता वेख वखंता। गुरमुख साचे सन्त जन आप बणाए साची बणता। गुरमुखां हरि बणत बणाए। आप आपणी सरन लगाए। सारंग धर भगवान बीठला दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम जपाए। अचरज खेल हरि प्रभ किया। ना कोई जाणे प्रभ का हीआ। सोहँ बीज साचा बीआ। सतिजुग लगाए सच फुल्वाड़ी आपणा हीआ आपे किया। गुरसिख बणाए साचा वाड़ा, प्रभ अबिनाशी जो चरन छुहाए दाहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ घोड़ी आप चढ़ाए गुरसिख साचा लाड़ा। शब्द घोड़ी हरि आप चढ़ाया। सोहँ सिहरा सिर बंधाया। जोत लाड़ी नाल विहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बहत्तर नाड़ी जोत जगाया। लाड़ी जोत गुरसिख प्रनाई। पंचम जेठ मिले वड्याई। गुरसिख तेरे आत्म सच होए रुशनाई। दिवस रैण प्रभ साचा एका रंग रंगाई। साचा बणे सज्जण सैण अंग संग होए सहाई। सोहँ देवे प्रभ सचा लहिण, रसन सद सद गाई। आप खुल्हावे तीजा नैण , दस्म दुआर बूझ बुझाई। गुरमुख वेख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत जगाई। नैण तीजा आप खुल्हाया। कँवल नाभ हरि आप उल्टाया। अमृत झिरना हरि आप झिराया। फुरे फुरना हरि धरनी धरना विच समाया। करनी करना चुकाए डरना दीपक जोती आप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म, सिँघ सिँघासण डेरा लाया। आत्म तेरा सच सिँघासण। प्रभ साचे दा साचा आसण। कलि सृष्ट सबाई सारी नासण। एका जोत सद प्रकाशण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिख होया दास दासण। दासण दास होया गुरसिख। प्रभ दर मंगे साची भिख। सच लेख प्रभ देवे लिख। आत्म निवारे तृष्ना तृख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो बिधना लेख दिते लिख। लिख्या लेख आप मिटावणा। साचा लेख फेर लिखावणा। सच धाम दे विच बहावणा। रमईआ राम जोत जगावणा। दूजा कोई रहण ना पावणा। गुर चरन तीर्थ गुरसिख साचे न्हावना। आत्म सति प्रभ सोहँ सच लिखावणा। जोत खिचाए प्रभ अठसठ तीर्थ नीर, पंचम जेठ प्रभ शब्द लिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक विच जामा पावणा। पुरी घनक हरि जामा पाया। पुरी घनक हरि आपणी जोत जगाया। तीन लोक होए रुशनाया। गुरमुख साचे हरि साचे तेरे दरस तिहाया। प्रगट जोत पंज जेठ प्रभ साचा तृखा मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भुक्खां सभ गंवाया। आत्म उतरे सगल वसूरे। जो जन आए चल हज़ूरे। आप उपजाए अनहद साची तूरे। प्रभ अबिनाशी हिरदे वसे, बेमुख जानण दूरे। जोत सरूपी राह साचा दस्से, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़े। करे प्रकाश कोट रवि

सस्से, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आसा पूरे। आसा मनसा पूर कराई। गुरमुख साचे शब्द छत्तर सीस टिकाई। बीस इकीस भेव चुकाई। संग रागणी तीस रलाई। छतीस राग रहे रसना प्रभ गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव कोई ना पाई। राग रागणी साचा पाया। प्रभ अबिनाशी भेव ना पाया। चार वेद चार मुख ब्रह्मा रहे अलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत सरूप आदि अन्त किसे ना पाया। रसन उचारे चारे वेद। फिर भी पाया ना प्रभ दा भेद। प्रभ अबिनाशी अछल अछेद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणा भेद। वेद पुरानां ना पछाणयां। कुरान अञ्जीलां लेख लिखाणयां। आप उठाए सत्तर लक्ख पठाणयां। एका बन्ने हत्थीं गानयां। कलिजुग तेरे कन्ढे खड़, प्रभ वेखे रंग महानयां। आप उखाड़े बेमुखां जड़, शौह दरया विच रुढ़ाए, गुरमुख साचे पकड़े लड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानयां। गुरमुख साचा पकड़े लड़। हरि की पौड़ी गया चढ़, कलिजुग जीव भुल्ले निधाना। प्रभ अबिनाशी अंदर बैठा वड़, क्यों भुल्लया मूर्ख मुग्ध अञ्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथ सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। त्रैलोकी नाथा सगला साथा। आप चढ़ाए सोहँ साचा राथा। सतिजुग चलाए साची गाथा। गुरसिक्खां लेख लिखाए माथा। आत्म दुखड़ा सारा नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा सगला साथा। सगला साथ निभे तोड़। चरन प्रीती लैणी जोड़। प्रभ साचे दी साची लोड़। एका मन्न नाम हरि साचा काया झूठी दिसे कूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे गुरसिख उपजाए जिउँ प्रभास विच लग्गा बोहड़। मांगो दरस गुर दर गुरदेव। पूरन होए गुरसिख तेरी सेव। जोत सरूपी साचा हरि अलख अभेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे आत्म साचा मेव। आत्म मेवा साचा खाणा। साचा वास करे आप भगवाना। मानस जन्म होए रास, लक्ख चुरासी हरि गेड़ कटाना। सोहँ जपाए स्वास स्वास, पुरी सच्ची विच आप बठाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका कर चरन ध्याना। गुर चरन सति दुआरा। गुरमुखां मिले नाम अधारा। गुर चरन खुल्ल्हे हरन फरन मिले सच घर बाहरा। गुर चरन चुक्के डरन, गुरमुख साचे तरन, सोहँ देवे हरि भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ होए वरतारा। साचा हरि सच भण्डारी। जोत सरूपी नर अवतारी। सृष्ट सबाई होए भिखारी। गुरमुख सोहण हरि तेरे चरन द्वारी। एका एक बिठाए सोहँ साचे शब्द अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए जेठ हरि निरँकारी। हरि निरँकारा खेल अपारा। जोत सरूपी किया पसारा। आदि अन्त ना किसे विचारा। गुरमुख साचा कोई पावे सारा। जिस जन खोल्ल्हे आत्म दर दुआरा। जोती जोत सरूप निरँजण बैठा करे आप पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण

नरी जोत धरी किरपा करी, तीर्थ अमृत नहावणा। अमृत आत्म साचा सरी, प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, चरन निमस्कार जिस जन करी, प्रभ अबिनाशी पूरा पावणा। प्रभ अबिनाशी पूरा पाओ। आत्म साची
जोत जगाओ। भरम भुलेखे विच भुल्ल ना जाओ। कलिजुग माया विच रुल ना जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
सोहँ साचे कंडे गुरसिख आपणा आप तुलाओ। सोहँ कंडे जाणा तुल। मदिरा मास रसना ना लाणा भुल्ल। कलंक ना लवाणा
बेमुख आपणी कुल। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई शब्द पंघूड़ा साचा झुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम अनमुल्ल।
अनमुल्ल लाल देवे गोपाल होए दयाल। गुरसिख साचे वस्त संभाल। आदि अन्त तेरे निभे नाल। कदे ना होए जगत कंगाल।
साचा वेख नाम सच्चा धन्न माल। आत्म दीपक जोती प्रभ साचा देवे बाल। आप उठाए आत्म सोती, सुरत शब्द प्रभ देवे
उठाल । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उपजावे साचे लाल। शब्द पवण वज्जे मृदंग। माई गौरजां तेरे भन्ने
अंग। किंगरे किंगरे ना वज्जे तेरा मृदंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप करे तैनूं नंग। भूत प्रेत बीर बैताले।
दिवस रैण सद रहण नाले। अट्ठे पहर ना देण सुरत संभाले। दर घर होया वांग कुठाले। जीव जन्त होए बेहाले। दुःख
४४ रोग लग्गा तन नाले। मातलोक पए वड्डे जंजाले। बिन प्रभ पूरे कोए ना किसे संभाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ४४
०३ आपे करे मूंह काले। सिद्ध बीर भूत प्रेत। वड वड देव दंत रहंत। लगाए सोहँ शब्द बैंत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०३
साचा शब्द लिखाए तेरे नेड़ ना आए कोई जिंन जनेत। हाकन डाकन नेड़ ना आए। प्रभ अबिनाशी मूंड मुंडाए। सर्ब घट
वासी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द दए गंवाए। दृष्ट मुष्ट सभ देवे बन्न्। छल छिदरां विच
मारे कंध। टूणा जादू बन्न्हे सोहँ कच्चे तन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए पवण सरूपी फरन मसाण।
मसाण पौण फड़ लैंदे धौण। बिन प्रभ पूरे छुडावे कौण। दिवस रैण ना देंदे सौण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म
शांत कराए जिउँ अमृत बरखे साउण। साचा तेज आप रखाए। चोर खोर कोई नेड़ ना आए। काया डोर आपणे हत्थ
रखाए। मानस जन्म कलि जाए सौर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए। तप सभ प्रभ आप मिटाए। दूती
दुष्ट दए खपाए। अमका काज़ी कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देव परी मवकल आपे दे सजाए।
दरोही पावण सच ख़ुदाए। प्रभ अबिनाशी नबी रसूल ना कोए छुडाए। दस्तगीर ना कोई सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, शब्द मार आप कराए। साची किरपा आप कराए। छेआ देवी होए सहाए। काल बाल कोई नेड़ ना आए। उल्ट
वाहू प्रभ दे सजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द मार आप कराए। अहिमद मुहम्मद भौंदा बीर। खिलंता सलसला

तुटे धीर। निरंदी नेसरी केसरी प्रभ साचा लाए तीर। अंचनी कंचनी निरंचनी कला सोदरी शक्ती भवती प्रभ शब्द बंधाए ज़ंजीर। लोहे का संगल पाए गले, सार की मुंगली मारे सिरे, कोई ना देवे अन्तिम धीर। साचा आप करे आकार। हुक्म ते बाहर सिर मार। सन्त का दोखी होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द देवे निवार। शब्द बाण आप लगाए। सर्ब मुशिक्ल प्रभ असान बणाए। मसाण पौण कोई नेड़ ना आए। जम का बेटा परे हटाए। काल का बेट नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा आपे होए सहाए।

चिट्टा मिट्ठा दुध्ध पी आत्म करे शुद्ध। प्रभ साचा देवे बुद्ध। निर्मल पीणा दुध्ध। आप रहाए जल थल, गुरसिक्खां घर उपजाए नौ निध। जो जन दर आए साचे भुल्ल, प्रभ साचा चरन लगाए पंचम जेठ कीनी बिध। जो जन आए प्रभ दरस ध्याए, प्रभ वस कराए रिध्ध सिध्ध। जो जन आए भेख वटाए, प्रभ भजाए जिउँ केहर गिद। जो जन आए वेख वखाए, प्रभ आत्म कीनी शुद्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत कारज कीने सुध। मिट्ठा जल सच मिठास। पूरन कराए प्रभ साचा आस। आत्म साची जोत धर एका जोत करे प्रकाश। आवे जावे नर हरे, एका पुरख सदा अबिनाश। गुरमुख साचे दर तरे, सोहँ गाया मुख स्वास। ख़ाली भण्डारे आपे भरे, कोई ना जाए दर तों निरास। घर साचे आए काज सरे, तृखा अग्न बुझाए प्यास। ना उह जन्मे ना उह मरे, गुरमुख प्रभ मिलण दी रक्ख आस। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी वरे, मातलोक ना होए उदास। प्रगटाई जोत प्रभ सचे घरे, प्रभ साचे को शाबाश। गुर संगत आए दर तरे, मानस जन्म कराया रास। जल मिठा साची धारा। प्रभ डिठा टुट्टा हँकारा। कलिजुग जीव कौड़ा रीठा, प्रभ भन्ने कर ख्वारा। मूर्ख मुग्ध माया लूठा, अबिनाशी हरि ना पाए सारा। साचा पीसण प्रभ साचे पीसा, दो पुड़ रसना भारा। गुरमुख साचे क्या कोई करे रीसा, देवे दरस अगम्म अपारा। आप झुलाए सिर छत्तर सीसा, मोर मुकट लगाए सिर गिरधारा। ना कोई दिसे मुहम्मदी ईसा, प्रभ फड़या शब्द कटारा। आप पढ़ाए शब्द हदीसा, वक्त चुकाए चार यारां। भेव मिटाए बीस इकीसा, पंचम देवे शब्द अपारा। एका जोत जगे जगदीशा, निहकलंक नरायण नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे सोहँ सच भण्डारा। सोहँ नाम प्रभ देवे वंड। गुर संगत आत्म पाए ठंड। आपे पीचे आत्म गंढु। दसवां द्वार प्रभ आपणे विच ल्या वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा सद सहाई कदी ना होवे रंड। गुरसिख साचा शब्द सुहागण। प्रभ अबिनाशी चरनी लागण। आप उपजाए साचा रागण। कलिजुग सोए गुरसिख जागण। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, आप मिटाए माया नागण। माया नागण ना जाए डस्स। शब्द तीर प्रभ आप चलाया कस। अंमित साचा सीर पिलाया, हरि हिरदे होया वस, गुरमुख साची धीर धराया, राह साचा जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होया वस। क्या मिट्ठा क्या फिक्का। आदि जुगादि एका इक्का। सोहँ शब्द पंचम जेठ गुरसिक्खां लगाए प्रभ साचा टिक्का। वाली दो जहान विच वरभण्ड आप चलाए आपणा सिक्का। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना एह मिट्ठा ना एह फिक्का। मिट्ठा फिक्का एका रंग। गुरमुख साचे वेख निसंग। सोहँ शब्द प्रभ आत्म कसे तंग। सृष्ट सबाई भेड़ भिड़ाए, आप कराए नव खण्ड जंग। लक्ख चुरासी आप खपाए, धरत मात होए रंड। गुरमुख साचे आप उठाए, कलिजुग ना आई कंड। साचे धाम आप बहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग। मिट्ठा मिट्ठा साची मीठ। गुरसिख वेख रंग मजीठ। साचा रंग प्रभ रिहा पीठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख खपाए कौड़े रीठ।

✻ ६ जेठ २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ठाकर सिँघ दे चन्दोआ भेंट करन समें विहार होया ✻

आहर किया सिक्ख बलवान। धरया सिर हत्थ आप भगवान। चन्द चन्दोआ दित्ता ताण। रोशन होए विच जहान। सिँघ आसण बैठा वाली दो जहान। गुरसिख साचे सन्त जन प्रभ सीस चवर झुलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची देवे दान। चन्द चन्दोआ आप रखाया। गुरमुख सोया आप जगाया। पहली कन्नी सतिजुग प्रभ साचे गुरमुख साचा जोया। सतिजुग नींह साची बन्नी, सोहँ बीज आत्म बोया। गुरमुख साचे आत्म धन धनी, प्रभ अबिनाशी दर दुआरे आण खलोया। साध संगत प्रभ शब्द सुणाए कन्नीं, भरम भुलेखा सभ दा लाहया। सोहँ लाड़ा साची वंनी, गुरमुख साचे नाल प्रनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा पर्दा पाया। पर्दा पाए नीली तत्त। आप रखाए धीरज यति। साचा लहणा सोहँ देवे एका तत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे मति। देवे मति मत ना भूलणा। आप झुलाए सोहँ साचा झूलणा। बेमुखां कलिजुग अन्तिम प्रभ साचे जूड़ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पार उतारे पंचम जेठ मस्तक लाए धूढ़ना। मस्तक धूढ़ी आप लगाई। किरपा करे आप रघुराई। साध संगत सच्चे मेल मिलाई। ग़रीब निमाणा संग रलाई। भुक्खा नंगा आप उठाई। मदिरा मास जो खाए चंगा, प्रभ साचा दर देवे दुरकाई। कलिजुग पापी गन्दा, धर्म राए दे सजाई। अन्तिम होया आत्म अन्धा, ना आया चल सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे आप वड्याई। साचा ताणा आप तणाया। आणा जाणा आप चुकाया। सुघड़ स्याणा आप बणाया। आपणा भाणा आप

वखाया। सोहँ गाणा हुक्म सुणाया। गुरमुख साचे भुल्ल ना जाणा, प्रभ साचा दे सजाया। जोत सरूपी हरि पहरया बाणा, निहकलंकी नाम रखाया। पकड़ पछाणे राजा राणा, तख्त ताज सर्ब मिटाया। किसे घर ना लभ्भे दाणा, कलू काल हरि आप वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ साचा बाणा तन लगाया। लग्गा बाणा साचे तन। कच्चे भाडे जाए भन्न। गुरमुख साचे आप चढ़ाए साचे चन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम, ना लग्गे कदे संन्न। सांतक तेरी साची धार, सांतक वरते विच संसार। सांतक तेरी साची धार, सति सति हरि सति वरताए जोत जगाए अगम्म अपार। सांतक तेरी साची धार, सतिजुग लगाणा प्रभ कर्म विचार। सांतक तेरी साची धार, सच सच सच प्रभ देवे शब्द अधार। सांतक तेरा सति विहार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम रंगण दे जाए तार। सांतक तेरा सति सरूप। सांतक तेरा रंग अनूप। सांतक सति सति हरि साचा वरते, ना कोई वखाणे रंग रूप। सांतक तेरा साचा रूप। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे प्रभ आप बिठाए, प्रभ आप बिठाए चार कुन्ट जिउँ वड वड भूप। सांतक तेरी साची धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए साची नाए। सांतक तेरा साचा वास, एका जोत करे प्रकाश। सांतक तेरा सच्चा वास, सृष्ट सबाई तजाए रसना मदिरा मास। सांतक तेरा सच्चा वास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आप

४७ ०३ तराए आपे आप। सांतक तेरा सच्चा मेघ, प्रभ अबिनाशी आप उठाए सोहँ तेग। गुरमुख साचे कलिजुग लए वेख। महाराज ४७ ०३

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रक्ख चरन टेक। सांतक तेरा उज्जल मुख। प्रभ अबिनाशी आप कटाए जगत भुक्ख। किसे ना दिसे आत्म दुःख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सुक्के हरे कराए कलिजुग जीव रुक्ख। सांतक तेरा साचा वहिण। गुरमुख साचे प्रभ चरनी बहिण। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ दर साचे लहणा लैण। सांतक तेरी साची रैण, पंचम जेठ गुर संगत मिल प्रभ अबिनाशी रसना गायण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा खोल्हे तीजा नैण। सांतक तेरा साचा रंग, प्रभ अबिनाशी आप निभाए साचा संग। सांतक तेरा साचा गुर संगत प्रभ अबिनाशी कट्टे तेरी भुक्ख नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर पिलाए, आत्म चढ़ाए साची कंग। सांतक तेरा साचा नीर, सोहँ चले तेरा साचा तीर। मेट मिटाए ख़्वाज़ा ख़िज़र पीर। सांतक तेरा साचा सीर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत खिचाए अठसठ तीर्थ नीर। सांतक साचे रंग रंगाउणा। प्रभ अबिनाशी भेव खुल्हाउणा। घनकपुर वासी प्रगट जोत विच मात सतिजुग साचा लावणा। चार कुन्ट कराए चरन दासी, सोहँ साचा जाप जपावणा। कोई ना दिसे मदिरा मासी, सच मार्ग प्रभ साचे लावणा। सृष्ट सबाई होए दासी, गुरसिक्खां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गावणा।

सांतक तेरा सति वरतारा। सतिजुग लाए साचा गिरधारा। बेमुख कोई ना दिसे मूर्ख मुग्ध गंवारा। प्रभ अबिनाशी सोहँ शब्द सृष्ट सबाई सिर रक्खे आरा। आपे चीर चिराए जगत करे दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव आप पिंजाए जिउँ तेली वाड़ा। सांतक तेरा रंग मजीठ। गुर संगत प्रभ अबिनाशी साचा डीठ। सोहँ साचा रंग चढ़ाए आत्म इक्क मजीठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना देवे पीठ। सांतक तेरा रंग चलूल। प्रभ अबिनाशी मात ना भूल। एका जोत प्रकाश प्रभ साचा कन्त कन्तूहल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मुख लगाए सोहँ साचा फूल। सांतक तेरी सति फुलवाड़ी। सतिजुग साचे प्रभ अबिनाशी गुरसिख फिरे तेरे पिछे अगाड़ी। गुरमुख साचे सन्त जन पंचम जेठ चरन छुहाए दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए विच जंगल जूह पहाड़ी। सांतक साचा नेत्र पेख। गुरमुख साचे कलिजुग छड्ड झूठा भेख। धुरदरगाही आप मिटाए बिधना लिखे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे बुद्ध बबेक। सांतक वरते साची धुन। गुरमुख साचे आत्म कन्न सुण। प्रभ अबिनाशी साचो साचे चरन लगाए चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। जोत सरूप पहरया बाणा। लक्ख चुरासी विच समाणा। एका जगे जोत भगवाना। तीन लोक सच टिकाणा। लोक परलोक प्रभ साचा रक्खे एका आना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
४८ ०३ आपे होए दानी दाना। तीन लोक प्रभ देवे बन्न्ह। सृष्ट सबाई होए अन्ध। आत्म होई पापां कंध। प्रभ अबिनाशी ना रसना ४८ ०३
गाया विच्चों बत्ती दन्द। मदिरा मास मुख लगाया। कलिजुग जीव झूठा गन्द। आपणा आप क्यों भुलाया, गंवाया आत्म परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि वड ब्रह्मादी गुरसिख गुरमुख चढ़ाए साचा चन्द। सांतक सतिजुग साचा मन्न। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्ह। सुणे लोकाई गुरमुख साचा कहे धन्न धन्न। भरम भुलेखा दे मुकाई बेमुखां लाए डन्न। गुरसिक्खां मन वज्जी वधाई, सतिजुग बेड़ा उठाए आपणा कन्न्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निवारे बेमुखां जन। आप आपणे कंठ लगाए, सन्त जनां बख्शिंदा। आप आपणे मार्ग लाए, वड दाता गुणी गहिंदा। साची रंगण नाम चढ़ाए, आप मिटाए आत्म चिन्दा। गुरमुख मंगण किते ना जाए, देवणहार इक्क गुणी गहिंदा। साची रंगण नाम चढ़ाए, आप तुड़ाए आत्म जिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणी गहिंदा। आप मिटाए चिन्ता रोग। गुरमुख ना होए कदी सोग साचा भोग लैणा भोग। सोहँ शब्द साचा जोग। रसना गाओ प्रभ देवे दरस अमोघ। प्रभ साचा सरन लग जाओ। आप मिटाए हउमे रोग। साची भिच्छया नाम पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लिख्या धुरों संजोग। लिख्या धुर प्रभ साचे देणा। झूठा जगत मारे मेहणा। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी पेख तीजे नैणा। सच घर हरि आत्म वेख, अठे

पहर जिथ्थे रहणा। सोहँ लग्गे साची मेख, धर्म राए ना लेवे लहणा। जोत सरूपी हरि धारया भेख, गुर संगत प्रभ चरनी बहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना कहणा। रसना गाओ प्रभ गम्भीर। काया सीतल शांत सरीर। झूठा दिसे देही पीतल, नाल ना जाणे अंग अखीर। सोहँ नाम करे आत्म सीतल, प्रभ साचा देवे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गहर गम्भीर। गहर गम्भीर वड वड हँस। देवे वड्याई, विच सहँस। बेमुखां दे खपाई, जिउँ काहना कंस। गुरमुख साचे तेरे मन वधाई, प्रभ बणाई साची अंस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए सतिजुग साचे राज हँस। राज हँस राज प्रमुख। आप उतारे तृष्ना भुक्ख। कलिजुग माया ना लग्गे दुःख। प्रभ साचा जोत प्रगटाए, जन भगत रहे सुखणा सुक्ख। पंचम जेठ होए वधाई उज्जल होए मुख। साध संगत सद रसना गाई, मात गर्भ ना होवे उलटा रुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए तेरी तृष्ना भुक्ख। सच शब्द हरि तीर कमाना। सोहँ चले लग्गे सच निशाना। आप उठाए बली बलवाना। सृष्ट सबाई भेड़ भिड़ाना। एका गेड़ सर्ब मुकाणा। बेमुख कलि होए ढेर, प्रभ अबिनाशी अन्त कराना। गुरमुखां लहणा देणा दए नबेड़, प्रभ आपणी सरन लगाणा। सोहँ मिटाए आत्म झेड़, सभ दे अंदर आप रखाणा। गुरमुख चरन ल्याए घेर, जोती जोत हरि जोती मेल मिलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
४६ ०३ भगवान, आप बन्न्हाए हत्थीं गाना । हत्थीं गाना देवे बन्न्ह। बेमुख जूठयां झूठयां प्रभ साचा देवे डन्न। कलिजुग अन्धे मूठयां, प्रभ आप कटाए कन्न। बेमुखां हत्थ फड़ाए ठूठयां, आत्म हँकार देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी रसन कराए धन्न धन्न। नैण मुँधारी मूँध मुँधारया। बाशक सेजा आसण ला रिहा। ब्रह्मा विष्न महेशा सेवा लाया। प्रभ साचा वेसन वेसा, भेव किसे ना पाया। गुरमुख साचे नेत्र पेखा, पंचम जेठ दे वड्आया। पंचम जेठ मिले वड्याई। प्रभ साचे रुत्त सुहाई। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे सन्त बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खी वड्याई। ४६ ०३

✻ ७ जेठ २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल माता बिशन कौर दे गृह ✻

सप्तम जेठ पुरख प्रभ दीना। प्रभ अबिनाशी दाना बीना। साचा नाम रस प्रभ दर पीना। शांत कराए गुरसिख सीना। अमृत मेघ हरि बरसाए, जिस जन रसना चीना। साचे घर दे वसाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे जिहा कीना। सच घर हरि सद वसंदा। गुरसिख बणाए साचा बन्दा। कलिजुग वेख जूठा झूठा धन्दा। मदिरा मासी दर ना आए, धुरदरगाही होया गन्दा। गुरमुख साचे हरि आप तराए, सोहँ तीर चलाए, तुड़ाए आत्म जिंदा। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, दर आई संगत सद बख्शिंदा । बख्शणहार बख्शणजोग। गुरसिख आत्म ना होए वियोग। कदे ना होए चिन्ता सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कट्टे हउमे रोग। हउमे रोग देवे निवार। सोहँ देवे साची धार। अमृत झिरना झिरे अपार। आत्म खिड़े गुरसिख तेरे गुलज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग वेख करतार। साचा रंग प्रभ साचे कीना। आप उठाए रूसा चीना। आप मिटाए मुहम्मदी दीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता वड सूरबीना। आपणा रंग आप वरता के। गुरमुख ताकी आत्म आप खुल्हा के। एका टांक शब्द रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस जोत प्रगटा के। प्रगटे जोत जगत अन्धेरा। प्रभ अबिनाशी पाया फेरा। गुरसिख बणाए आपणा चेरा। बेमुख खपाए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा ढाहया ढेरा। कलिजुग ढाया गया ढठ्ठ। अग्न जोत प्रभ लगाए, सृष्ट सबाई बणाए भट्ठ। छिन्न भंगर एह खेल वरताए, उलटी गेड़े कलिजुग लट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म रक्खे हट्ठ। हट्ठ हठीला छैल छबीला। अग्न जोत लगाए तीला। आप उठाए चार तरफ दुड़ाए रहण ना पाए मैकाईल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई, गुरमुख चरन मिलण दा कर लओ हीला। आत्म उदम आपणे धारो। प्रभ अबिनाशी चरन निमस्कारो। कलिजुग ना सौणा पैर पसारो। प्रभ अबिनाशी देवे सोहँ साची धारो। वक्त चुकाए प्रभ साचा चार यारो। पंचम जेठ पंचम प्रधान पंचम बणे साची सरकारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणाई साची धारो। पंचां हुक्म इक्क फ़रमाण। पंचम राज तख्त सुल्तान। पंचम शब्द जगत निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम विच मात आप करे प्रधान। पंचम पंचम पंचम हत्थ राज। एका रक्खे सिर आपणे प्रभ ताज। गुरसिक्खां प्रभ साचा आपे रक्खे लाज। प्रगट विच मात आप संवारे काज। सोहँ शब्द आप उडाए, चार कुन्ट साचा बाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंज पंचायत बणाए राज। पंचम देवे हरि सरदारी। पंचम होवे मात सिक्दारी। पंचम पंचम वरते विच संसारी। पंचम जेठ निहकलंक मात जोत प्रगटाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभनां जीआं करे आप अकारी। पंचम देवे प्रभ साचा गुण। सृष्ट सबाई विच्चों चुण। आप उपजाए शब्द धुन। गुरमुख साचे सन्त जन दर घर साचे लए सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग आप समाणे, क्या कोई जाणे तेरे गुण। आपणे रंग आप समाया। भेखाधारी भेख वटाया। लेखा लिख्या सच भगवान ना किसे वखाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पहरे आपणे बाणया। आपणा बाणा आपे पाया। झूठी काया देह तजाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती खेल रचाया। अचरज खेल मात कर, गुरमुख साचे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

५० ०३

५१ ०३

बिन रंग रूपी नज़र किसे ना आया। रूप रंग ना कोए वेखे। प्रभ अबिनाशी धारे भेखे। गुरसिख लगाए साचे लेखे। दर घर आए साचे प्रभ साचा नेत्र पेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कढु भरम भुलेखे। तुट्टे माण मर्द मरदान। चरन धूढ़ गुरसिख कर इशनान। आत्म वज्जे शब्द सच्चा बाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्ख चरन ध्यान। चरन ध्यान राखो चीता। प्रभ अबिनाशी साचा मीता। नाम निधान प्रभ दर पीता। चतुर सुजान प्रभ साचे कीता। वड्डे बली बलवान मिल साची रीता। वाली दो जहान सृष्ट सबाई परखे नीता। गुर चरन जाओ सद कुरबान, मानस जन्म जाओ जग जीता। प्रभ अबिनाशी होए मेहरवान, आप चलाए आपणी रीता। गुरमुख साचे सति कर मान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची चरन प्रीता। चरन प्रीती चरन धूढ़। चतुर सुजान बणाए जो दर आए मूढ़। सोहँ साचा नाम जपाए, आत्म रंगत चाढ़े गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिख लगाए चरन धूढ़। चरन धूढ़ लाए मुख। सुफल कराए मात कुक्ख। कोई ना रहे काया दुःख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए देवे साचा सुख। साची सिख्या उज्जल मुखीआ। लथ्थी भुखीआ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर आया तेरे दुखीआ। दुःख दलिद्र प्रभ देवे कढु। करे सुखाले बेमुखां हड्ड। कलिजुग डिग्गण अन्धेरी खड्ड। चरन प्रीती देवण छड्ड। आपणा किया लैण वढु। बाहों पकड़ प्रभ साचा बाहर देवे कढु। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आप लडाए आपणा लड। गुर गोबिन्द इक्क दरबारी। साचा तख्त सच्ची सिक्दारी। गुर संगत प्रभ साचा जाए तारी। दर घर साचे आवण वारो वारी। गुर गोबिन्द दोए बैठ करन चरन निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीस साचा छत्तर झुलारी। गुर संगत हरि माण दवईआ। सतिजुग चढ़ाए साची नईआ। आपे आप बणे रखवईआ। धरत मात बणाए साची मईआ। चार वरन कराए भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखईआ। गुर संगत मन धरे धीर। आत्म कढु प्रभ साचा पीड़। अन्तिम अन्त ना लथ्थण चीर। सोहँ साचा अमृत आत्म देवे सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शांत कराए सरीर। शांत सरीरा टुट्टे जंज़ीरा, प्रभ आपणा आप उठाया बीड़ा। हरि भजन हरि होए सहाई। हरि भजन हरि देवे वड्याई। हरि भजन गुरमुख दात प्रभ दर ते पाई। हरि भजन वड करामात, आत्म तृखा दे बुझाई। हरि भजन इक्क रखाए नात, आत्म जोती आप जगाई। हरि भजन गुरसिक्खां मिटाए अन्धेरी रात, दिवस रैण रहे रसना गाई। हरि भजन अन्तिम पुच्छे गुरसिक्खां बात, वेले अन्त होए सहाई। हरि भजन अंदर वेख मार झात, सच वस्त तेरे घर टिकाई। हरि भजन मिटाए ज़ात पात, भरम भुलेखा रहे ना राई। हरि भजन देवे दात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात आप रघुराई।

हरि भजन कलि साचा जोग। हरि भजन रस साचा भोग। हरि भजन गुरमुखां मेटे सर्ब वियोग। हरि भजन रसना जप मिटाए हउमे रोग। हरि भजन सोहँ शब्द चुगाए चोग। हरि भजन हरि देवे दरस अमोघ। हरि भजन हरि आप मिटाए चिन्ता सोग। हरि भजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे धोग। हरि भजन आत्म उज्जयारी। हरि भजन देवे गिरधारी। हरि भजन गुरमुख साचे दुरमति उतारी। हरि भजन हरि देवे दात शब्द भण्डारी। हरि भजन साचा राज सच्ची सिक्दारी। हरि भजन चरन लगाए सच्चा दरबारी। हरि चरन फिरन आए वड हँकारी। हरि चरन गुरसिख साचे आत्म धारी। हरि चरन आत्म जोत जगाए अगम्म अपारी। हरि भजन प्रगट होए आप निरँकारी। हरि चरन वेखे विगसे करे विचारी। हरि भजन काया कोट किला उसारी। हरि भजन सोहँ देवे सच अटारी। हरि भजन विच मात ना होए ख्वारी। हरि भजन साचे धाम आप बहाए बनवारी। हरि भजन एका रंग रंगे अपारी। हरि भजन गुरमुख खुल्हाए दस्म दुआरी। हरि भजन एका जोत प्रभ इक्क उधारी। हरि भजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरमुखां नाम अपारी। हरि भजन हरि का ध्यान। होए मेल भगत भगवान। हरि भजन चरन धूढ़ इशनान। हरि भजन आत्म सहिँसे सर्ब मिट जाण। हरि भजन एका शब्द उपजावे कान। हरि भजन साची धुन देवे महान। हरि भजन आत्म मारे साचा बाण। हरि भजन साचा देवे शब्द ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साचा दान। हरि भजन वड राजन राज। हरि भजन प्रभ सोहँ बन्न्हाए गुरसिक्खां सिर ताज। हरि भजन आप लगाए घर दसवें साची आवाज़। हरि भजन गुरसिख चढ़ाए साचे जहाज। हरि भजन शब्द सरूपी उडावे बाज। हरि भजन गुरसिख संवारे आपे काज। हरि भजन आप मिटाए जगत तृष्ना तृखा डांज। हरि भजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे चरन रखाए साची सांझ। हरि भजन सच धन माल। रसना जप ना होए कंगाल। हरि भजन आत्म होए लालो लाल। हरि भजन साचा दीपक जोत जगे मिसाल। हरि भजन सच शब्द सुरत संभाल। हरि भजन भज्जण ना मानस जवानी डाल। हरि भजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। हरि भजन हरि हरि दा वास। हरि भजन आप दवाए गुरसिक्खां स्वास स्वास। हरि भजन मात गर्भ होए सहाई, आत्म रक्खे वास। हरि भजन माया ममता करे नास। हरि भजन शब्द उडारी आप लगाए मात पताल अकाश। हरि भजन गुरमुख कराए सच घर वास। हरि भजन गुरमुखां करे बन्द खलास। हरि भजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन होए चरन दास। हरि भजन शब्द घनघोर। हरि भजन हरि शब्द चुकाए मोर तोर। हरि भजन गुरसिख उडाए पतंग डोर। हरि भजन हरि दिवस रैण रखाए, साची अनहद साची धुन उपजाए, सुन्न मुन्न आप

खुल्हाए, पैंदी रहे सदा घनघोर। हरि भजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे पंजे चोर। पंजे चोर वसण तन। हरि भजन ना लग्गण देवे आत्म सन्न्ह। हरि भजन प्रभ अबिनाशी आप सुणाए कन्न। हरि भजन लग्गण देवे ना झूठा डन्न। हरि भजन अन्तिम बेड़ा देवे बन्न्ह। हरि भजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कराए धन्न धन्न। हरि भजन शब्द इशारा। हरि भजन आप खुल्हाए दस्म दुआरा। आप वखाए पार किनारा। आप कराए जोत अकारा। आप आपणा किया पसारा। सच शब्द सच्ची धुन्कारा। अनहद वज्जे पवण हुलारा। आवण गवण बूझ बुझारा। अमृत मेघ बरसे सवण, उलट कँवल चले फुहारा। गुरमुख आत्म होई बवल, प्रभ अबिनाशी पावे सारा। होए प्रकाश उप्पर धवल, पंचम जेठ किया अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां माण दवाए, साची भिच्छया झोली पाए, मंगया जिस द्वार। मंगे दान देवे दीना नाथ। होए सहाई निभाए सगला साथ। साचे लेख लिखाए मात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत आप पंचम जेठ त्रैलोकी नाथ। गुर चरन जिस जन मंगणा। मदिरा मास रसना तज्जणा। पी अमृत दर ते रज्जणा। प्रभ साचे पर्दा कज्जणा। काया झूठा भाण्डा अन्तकाल कलि भज्जणा। गुर चरन धूढ़ दर साचे साचा मजना। सोहँ शब्द नगारा चार कुन्ट वजणा। अमृत आत्म झिरना झिरे अपारा, देवे दात हरि साचा साक सैण सज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई वेला गया फेर ना लज्जणा। गुरमुख गुर हुक्म कमावे। प्रभ अबिनाशी संग रहावे। साची वस्तू विच टिकावे। अमृत साचा मुख चवावे। सोहँ शब्द देवे आत्म धीरज टुट्ट ना जाए। विच्चों कढ्ढ हउमे पीड़, मानस जन्म निखुट्ट ना जावे। बज़र कपाटी देवे चीर, आत्म जिंदा आप तुड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन साची किरपा आप करावे। मदिरा मास गुरसिख त्यागी। आत्म रहे सदा वैरागी। एका प्रीत चरन गुर लागी। कलि होया वड वड भागी। प्रभ साचा धोए आत्म दागी। आप बणे सतिजुग साचा वागी। सोहँ शब्द वजाए धुन साचा रागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा गुरमुख साचे चरन लागी। मदिरा मास रसन ना लावणा। प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। भरम भुलेखा सर्ब मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द आप सुणावणा। सच शब्द हरि आप जणाए। सोहँ साचा रसना गाए। शब्द तमाचा आप लगाए। आपे ढाले साचे ढांचे, नाम कुठाली आपे पाए। सच सच प्रभ दे सुहागा, कंचन रूप चढ़ाए। प्रभ चरन जो जन लागा, प्रगट जोत दरस दखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे अन्त सजाए। प्रभ चरन सेव जन कमाए। साचा जोड़ आप जुड़ाए। लग्गी प्रीती तोड़ निभाए। हरिजन कीती ना कोई मोड़े ना मोड़ मुड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ आप चढ़ाए। पूर्ब

कर्म हरि विचार। फूलण बख्शे माला हार। उलटी नाभी वगे अमृत धार। प्रभ अबिनाशी जोत साची लभ्भी, निर्मल जोत करे अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म दए सवार। फूल फूले विच संसार। पूरे तोल तुलणा लहणा लैणा हार। प्रभ अबिनाशी वड अनमुल्लणा, ना लैणा मनों विसार। सोहँ पंघूड़ा साचा झूलणा, प्रभ देवे शब्द अधार। हरि पाया कन्त कन्तूलणा, सुण लथ्था पापां भार। वड वड शाहो वड वड दूलो, किरपा करी हरि अपर अपार। आप बंधाए साचा रूलो, सोहँ रक्खे साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए तार। आत्म फुल खिड़े गुलज़ार। अमृत झिरना झिरे अपार। किरना किरे जोत अपार। हरना फरना हरि खुल्हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे विचार। हारो हार आप कर। साची धार मात धर। नारी नारी एक कर। शब्द हुलारा देवे हरि। पवण मसाणी चुक्के डर। सच दरबारा लैणा वर। एका पुरख अपारा चरनी लाग जाणा तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार। फूल फूलां फुल्ल। पूरे तोल जाणा तुल्ल। आत्म प्रीती प्रभ चरन कँवल, अमृत आत्म ना जाए डुल्ल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तृखा अग्न बुझाए काया झूठी कुल। अग्न तृष्ना दए निवार। साचा शब्द देवे अधार। रसना गाए जाए हरि के दुआर। अमरा पद पाए आप वसाए हरि साचा घर बाहर। आपे आप सद लै जाए, वेले अन्त होए सहार।
५४ सोहँ साचा नाद वजाए, शब्द धुन उपजे धुन्कार। गुरमुख साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा लँघाए पार। ५४

०३ ०३

साचा फूल सोहँ हारा। मिल्या हरि साचे दा सच दुआरा। आत्म भरया जिस भण्डारा। शब्द सरूपी मेल मिलारा। अचरज खेल करे करतारा। बिन बाती बिन तेल करे उज्जयारा। आपे सज्जण सुहेल बणे संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सीस बंधाए सोहँ सच दस्तारा। सोहँ बख्शे साचा ताज। आपे रक्खे गुरसिख लाज। काया कोट देवे सुख राज। लाए शब्द चोट पंजे जायण भाग। आत्म कढ्ढे झूठा खोट, एका उपजे साचा राग। बेमुख आल्हणिउँ डिगे बोट, माढ़े होए भाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म धोवे दाग। फूल क्यारी सच फुलवाड़ी। आपे करे प्रभ साचा कारी। सोहँ देवे मात सरदारी। आप मिटाए काया रात अंध्यारी। एका धरे प्रभ साचा जोत, दर आयां काज सरे। जो जन सरनी परे। जन्म मरन ना आवे डरे। साची तरनी गुरसिख तरे। जो जन आए सच्चे दरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आसा सभ करे। पूरन आसा आसा हारी। पूरा गुर गुरसिक्खां जाए तारी। पूरा गुर साचा शब्द बणे खिलाड़ी। पूरा गुर गुरसिख लगाए सच्ची फुलवाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे पिछा अगाड़ी। फूल फुलया, प्रभ अबिनाशी सदा अट्टल्या। गुरमुख साचा रहे ना इक्कल्या। सोहँ शब्द अठे पहर रहे तेरे संग रलया। आत्म दर दरवाजा

५५ ०३

साचा मल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाओ सद सद बलया। फूल वाष्ना जोत प्रकाशना। हरि हँकार विनासना। होए दास दासना। चलाए शब्द स्वास स्वासना। आप कराए साचा वासणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए मात पताल अकाशना। हरि घर साचा आसा वरया। सप्तम जेठ दिवस भागी भरया। गुर संगत मिल गुरसिख तरया। दर चाढ़े नाम रंगत, जो दर दुआरे आए खड़या। होए सहाई जिउँ नानक अंगद, साची जोत प्रभ साचा देवे धरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी वड ब्रह्मादी सर्ब जीआं दा आसा वरया। आवणा जावणा खेल वखाणा। लेख लिखावणा सोहँ साची मेख लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गावणा। रसना गाओ आत्म रहिरास। खाली जाए ना कोई स्वास। दिवस रैण हरि सदे वसे पास। प्रभ अबिनाशी सर्ब गुणतास। जन भगतां हिरदे रक्खे वास। आत्म साची जोत करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द धरवास। शब्द धीरज देवे धरवासा। गुरसिक्खां पूरन करे आसा। आपे देवे नाम भरवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस कलि दुखड़ा नासा। दुक्खां रोगां ढेरी ढाहे। उजड़े होए फेर वसाए। प्रभ दर आए जो बिल्लाए। दुखीए भुखीए गले लगाए। आत्म सुखीए आप कराए। मात कुखीए सुफल कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। रसना गाओ हरि गुणवन्त। प्रभ अबिनाशी पूरन भगवन्त। देवे वड्याई आप बणाए साचे सन्त। होए सहाए सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एका जोत सोहँ देवे साचा मंत। सोहँ साचा मंत सच दरबारया। गुरमुख साचे दर ते पाया। साचा न्हावण तीर्थ नहाया। साचा सीर्थ प्रभ मुख चवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम साचा मार्ग लाया। साचा मार्ग आप लगाए। जूठ झूठ प्रभ नष्ट कराए। ऊँच नीच दा भेख मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। आप उठाए गुरसिख सोया। सोहँ बीज साचा बोया। पापां मैल देवे धोया। हरि बिन अवर ना दीसे कोया। बेमुख जीव कलिजुग रोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दरस दिखाए पंचम जेठ प्रगट होया। प्रगटे जोत पंचम जेठ। गुरसिख रखाए आपणी साया हेठ। सरन लगाए वड वड सेठ। कलिजुग जीव बणाए कौड़े रेठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात देवे वड्याई, सतिजुग साची नींह रखाई, जोत विच मात हरि आई। निहकलंक नांउँ रखाई पंचम जेठ। पंचम जेठ जेठ सिठाणयां। तोड़े माण सर्ब महांराणयां। बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां। सोहँ चलाए साचा बाणयां। साचा हुक्म धुरदरगाही सच करे फुरमाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां गल लगाए बाल अञ्याणयां। साचा शब्द सच्चा सुल्तान। सोहँ पहने तीर कमान। धीरज फड़े हत्थ किरपान। गुरमुखां देवे साचा दान। साचे तख्त बैठा वड

राजा राजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आत्म सिँघासण रिहा माण। आत्म सिँघासण साचा शाहो। डेरा लाया बेपरवाहो। दिस ना आया अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सद रक्ख मिलण दा चाउ। प्रभ मिलण दा राखो चाओ। आप बहावे साचे थां। आवण जावण गेड़ मुका। पतित पावण दया कमा। भगत भगवान देवे मेल मिला। जोती जोत हरि जोती खेल करा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी गुरसिख बहाए साचे थां। सचखण्ड हरि का द्वार। झिलमिल झिलमिल होए झिलकार। बालू बिमल जिउँ चमत्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका जोत करे अकार। एका जोत इक्क अकार। एका रंग इक्क पसार। गुर नानक जाए हरि दरबार। दर घर साचे करे निमस्कार। आत्म भरे हरि भण्डार। देवे शब्द जोत अधार। सति नाम मन्त्र अपार। सृष्ट सबाई लाए पार। चार कुन्ट कराए सच विहार। बेमुख नष्ट कराए दुष्ट दुराचार। जोती जोत सरूप हरि आपे करे आपणा वरतार। सच दुआरा नानक मंगया। जोत सरूपी साचे रंगया। होए सहाई सदा अंग सन्गया। शब्द अस्व अस्वार कसाए तन्गया। जोती जोत सरूप हरि, वर देवे जो दर साचे मंगया। साचा नाम जगत सुणाया। सच जाप दा नाम जपाया। हउमे सारा ताप गंवाया। बेमुखां अन्तिम आप भुलाया। निहकलंक कलि जामा पाया। बेमुखां देवे अन्त सजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर नाम अख्वाया। नरायण नर तेरी सिक्दारी। तीन लोक तेरे चरन पनिहारी। साचा शब्द तेरा लशकर भारी, सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़ी। चार कुन्ट कराए उजाड़ उजाड़ी। एका जोत अग्न लगाए जंगल जूह पहाड़ी। गुरमुख साचे मग्न रखाए, गुर चरन लग्गे आत्म ताड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए विच बहत्तर नाड़ी। नाड़ी नाड़ी हरि का वास। साची जोत करे प्रकाश। जो जन होए हरि का दास। प्रभ अबिनाशी आत्म रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। स्वास स्वास शब्द चलावे। दीपक जोत आप जगावे। माणक मोती गुरसिख बणावे। दुरमति मैल धोती हरि दर्शन पावे। आप जगावे आत्म सोती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ दया कमावे। आत्म सोती आप जगावे। कागों हँस आप बणाए। साची चोग नाम चुगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निभाए संग दया कमाए। प्रभ अबिनाशी रक्ख सन्मुख। आत्म तृष्ना उतरे भुक्ख। आत्म लग्गे ना झूठा दुःख। मात गर्भ ना होवे उलटा रुख। सुफल कराए मात कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दर्शन पाओ, आप निवारे भुक्खयां भुक्ख। तृष्ना भुक्ख निवार। सोहँ देवे तन शिंगार। आत्म देवे बन्न्ह, ना जावे दहि दिश धार। प्रभ शब्द सुणावे कन्न, सोहँ साची गुंजार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धार। धन्न धन्न

धनईआ। नईआ आप चढ़ाए सोहँ चप्पू शब्द लगईआ। भव जल बेड़ा पार करईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम दवईआ। साचा नाम शब्द अपारा। उतरे पार नारी नारा। बिरधां बालां प्रभ पावे सारा। जो जन आए दर दुआरा। सोहँ नाम रसना उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप गिरधारा। गिरवर गिरधारा देवणहार दातारा। सर्ब जीआं दी पावे सारा। पूरन जोत सच करे विहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ ल्या अवतारा। पंचम जेठ मातम माती। प्रगटे जोत हरि प्रभाती। गुरसिक्खां देवे आत्म बूंद स्वांती। बेमुखां आत्म लाए काती। देवे दरस हरि सुत्या राती। गुरमुख पढ़ाए इक्क जमाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां मिल्या कमलापाती। कँवल पत्त रक्खे जत्त, देवे मति साचा तत्त, सोहँ बीजो सच वत। निर्मल देह ना लग्गे रत्त। साचा नाम रसना चरखे लैणा कत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां रक्खे आपे पति। पतिपरमेश्वर सर्ब प्रधान। गुरसिख बणाए चतुर सुजान। सोहँ देवे साचा नाम निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा वड बली बलवान।

✻ ७ जेठ २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल जीवण सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✻

५७ ०३ लिखी लिख्त हरि आप मिटाए। साचा लेख फेर लिखाए। झूठा भेख रहे ना राऐ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ५७ ०३
आप चलाए आपणे भाए। आपणे भाणे आप चलावणा। गुरमुख भुल्लयां राहे पावणा। विच संसार फले फुलया, प्रभ अबिनाशी रसना गावणा। चरन प्रीती घोल घुलया, आत्म रस हरि सच दवाणा। सच भण्डारा प्रभ दा खुल्या, दर मंगया दान प्रभ साचे झोली पावणा। आदि ब्याध मिटाई। आत्म साध दया कमाई। विच विरोध रहे ना राई। एको एक पाया हरि रघुराई। साची देवे नाम वड्याई। प्रभ अबिनाशी माधव माध होए आप सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिखी लिख्त देवे मिटाई। लिख्या लेख धुरदरगाही। प्रभ साचे आपे आप दए मिटाई। साचा लेखा घर साचे आप दए लिखाई। गुरमुख साचे आप तराए फड़ के दोवें बाहीं। फड़े दोवें बाहीं, कलिजुग जीव भुल्लया प्रभ साचा पाए राही। पूरे तोल जो जन तुल्या, देवे वड्याई सभनी थाईं। हरि दुआरा सदा रहे खुल्लया, गुरमुख साचे झोली भर घर लै जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन ना भुल्लया, प्रभ साचा होए सहाई। भुलणा भुलाणा, रुल्लणा रुलाणा, कुलणा गावणा, दर घर साचे गुरमुख साचे भुल्ल बख्शाणा। आत्म काया भाण्डे काचे, प्रभ साची वस्त टिकाणा। हरि हिरदे जन साचा वाचे, प्रभ साची लिख्त लेख कराना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां वक्त सुहाणा। वक्त सुहावा आपे किया। सोहँ

बीज साचा बिया। आत्म जोत जगाया साचा दिया। गुरसिख तेरी आत्म जोत जगाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल कराए तेरा जिया। निर्मल जिया निर्मल बुध। आप कराए गुरमुख कारज सिद्ध। आप बणाए आपणी बिध। तन मन दर घर साचे आप उपजाए घर नव निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी बिध। नव निध हरि आप उपजावे। दु:ख भुक्ख हरि रोग गंवावे। साचा सुख हरि घर उपजावे। उज्जल मुख जगत रहि जावे। गुर चरनी जो जन सीस झुकावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा दिवस रैण सद रसना गावे। रसना गावणा दु:ख मिटावणा, भुक्ख गवावणा, सुख उपजावणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेत्र पेख आत्म शांत करावणा। नेत्र पेख दीन दयाला। भगत वछल हरि हरि कृपाला। गुरसिक्खां देवे आपे बाला। चरन प्रीती लगाण घाला। सुक्के फूल लगाए डाला। आपे बणे गुरसिख तेरा गुर दलाला। सोहँ देवे आत्म साची माला। गलों कट्टे प्रभ साचा जगत जंजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा कदे ना कंगाला। आप जंजाला देवे कट्ट। सोहँ तन पहनाए साचा पट। हउमे मैल प्रभ साचा आत्म देवे कट्ट। एका आत्म नीर वहाए, एका तीर्थ एका तट्ट। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए वसे घट घट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण पहनाए साचा पट। भुक्ख दु:ख गया रोग। आप मिटाए चिन्ता सोग। देवे

दरस हरि अमोघ। एका सोहँ बख्शे साचा जोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए आपण चोज। चोजन चोजी खोजन खोजी। आपे देवे प्रभ साचा रोजी। प्रगटे जोत हरि हरि हरि चतुर भोजी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख रखाए आपणे मौजी। मौज मेला वक्त सुहेला। सच खेल प्रभ साचे खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराया आपणा मेला। मेल मिलावा आपणा कर। दु:ख दर्द हरि जाए हर। जन्म कर्म दोए सुफल कर। गुरसिख साचे तेरी सरनी जायण पड़। चरन धूढ़ी मिले मजूरी। प्रभ अबिनाशी सदा हज़ूरी। गुरमुख साचे आत्म नूरो नूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए सर्ब कला भरपूरी। भरपूरा वड सूरा। सद वसे नेड़ना ना जाणो दूरा। जोत सरूपी हाज़र हज़ूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम शब्द सरूरा। शब्द नाम लेखा लिख। दूई द्वैत उतारे तृख। साची देवे नाम भिक्ख। काया लोभ ना रहे विक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए सतिजुग होवे पूरन सिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाओ। निज़ानंद निज घर में पाओ। परमानंद दे विच समाओ। बन्द बन्द विच जोत जगाओ। आत्म कंध परे हटाओ। सोहँ छन्द आप सुणो अवर सुणाओ। मदिरा मास रसना लावणा गन्द, प्रभ अबिनाशी दे सजाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता बेपरवाहो। मदिरा मासी आत्म अन्धे। बत्ती दन्दे कराए गन्दे।

आत्म दर दरवाजे वज्जे जंदे। आत्म होया अन्धेर जिउँ मस्सया चन्दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम दे सज़ाए सोहँ रंदे रंदे। सोहँ रंदे आप रंगावणा। हड्ड मास हरि आप वड वड खड्ड पावणा। अठाई कुण्ड विच फिरावणा। धर्म राए दे हत्थ फड़ावणा। तत्तीआं तवीआं उत्ते बहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां नष्ट करावणा। धर्म राए दर सच पुकारे। ख़ाली भर हरि मेरे भण्डारे। कलिजुग जीव होए बेमुख सारे। अन्ध अंध्यार वरतया विच संसारे। ठग्ग चोर यार लुट्टण घर बाहरे। झूठी होई मात सरकारे। डाके वज्जण दिन दिहाड़े। निहकलंक आया कलि जामा धार, घर घर पैण पवाड़े। प्रभ साचा दया कमाए। गुरसिक्खां नाम जपाए। जगत भंवर चों बाहर कढाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धर्म दी जै जै जैकार कराए। सच धर्म सच जैकारा। सच सच करे जगत विहारा। चार वरन इक्क रखाए सच दुआरा। ऊँच नीच ना प्रभ विचारा। सूचो सूच आप गिरधारा। चार कुन्ट दर आए साचे गुरचरन करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुच्च करे वरतारा। सच सुच्च तेरा वरतार। सच सुच्च तेरा अधार। सच सुच्च तेरा हरि सिक्दार। सच सुच्च तेरी साची धार। सच सुच्च वरतावे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे लाए पार। सच सुच्च सति सन्तोख। सच सुच्च गुरसिक्खां देवे मोख। सच सुच्च आत्म निवारे सभ दोख। सच सुच्च आप गंवाए तृष्ना भोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कराए उज्जल मुख। उज्जल मुख गुरसिख तेरा। प्रभ अबिनाशी आप कराए नबेड़ा। आप कटाए तेरा लक्ख चुरासी गेड़ा। आवण जावण जावण आवण, आप मुकाए झेड़ा। प्रभ अबिनाशी पतित पावण, बन्नू वखाए बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन पार लँघाए केहड़ा। गुरमुखां हरि कर्म विचारया। जन्म मरन हरि आप संवारया। साचा धर्म साचा वरन विच साची जोत जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप मेल मिला रिहा। मिल्या मेल सच करतारा। चढ़े रंग अपर अपारा। ना आवे भुक्ख नंग, सोहँ देवे शब्द भण्डारा। जो दर मंगे साची मंग, देवणहार हरि दातारा। होए सहाई सदा अंग संग, दिवस रैण होए रख्वारा। आप चढ़ाए अमृत साची कंग, आत्म चले सच फुहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणे आप वरतारा। अमृत मेघ आप बरसाए। गुरमुख साचे आप तराए। विच देस माझे जोत जगी हरि राए। अनहद शब्द अनाहद वाजे दिवस रैण हरि रिहा वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी गुरमुख साचे विच समाए। गुरमुख साचे प्रभ डेरा लाया। आप आपणा भेव रखाया। वड वड देवी देव सर्ब भुलाया। गुरमुख साची सेव आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा मेव मुख लगाया। पूरन जोत पूरन प्रकाश। अज्ञान अन्धेरा जाए विनास। दुक्खां डेरा होया नास। प्रभ अबिनाशी

पाया फेरा, गुरसिक्खां होया दास। आप चुकाए तेरा मेरा, गुरसिक्खां सोहँ जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। राज दुआरा हरि भगवन्त। गुरमुख साचे मंगण सन्त। आप बणाए साची बणत। देवे वड्याई विच विच जीव जन्त। प्रभ साचे दी महिंमा बड़ी अगणत। सोहँ देवे साचा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा साचा कन्त। सृष्ट सबाई एका कन्ता। लक्ख चुरासी विच रहंता। बन्द खलासी आप करंता। सर्ब घट वासी आप अख्वन्ता। घनकपुरी विच जोत जगंता। एका जोत मात प्रकाशी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता। आदि अन्त अन्त आदि प्रभ अबिनाशी साचा अराध। दिवस रैण सद रखणा याद। सोहँ शब्द वजाए साचा धुन नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका जोत आदि जुगादि। जुगा जुगन्तर आपे देवे आपणा मन्त्र, जन भगता बणाए साची बणतर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी जाणे घट घट अन्तर। आदि जुगादि जुगा जुगीशर। सर्ब जीआं दा एका ईश्र। गुरमुख साचे आप उठाए चरन लगाए, सौ जन्म रहे तपीसर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं एका जगदीश्र। जगदीश पीत पतम्बर। आप कराए आपणा अडम्बर। गुरसिक्खां संग पंचम जेठ आपणा आप रचाए सवम्बर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप विष्नूं विश्वम्बर। विष्नूं विष्नूं विष्नूं भगवान। ब्रह्मा बैठ चार मुख करे वख्यान। शिव शंकर लाए बैठ ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत बली बलवान। शिव शंकर हरि ध्यान लगाया। जटा जूट सीस रखाया। बाशक तशक गल लटकाया। हज़ार अठासी बरस हरि रसन ध्याया। प्रगट होए हरि जोत जोत सरूप आपणा दरस दिखाया। अठासी हज़ार बरस किया हरि तपीशर। मिल्या फिर हरि साचा जगदीश्र। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप सर्ब जीआं दा एका ईश्र। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब ध्यान मुनी रखीशर। हरि साचा नहीं भुलावणा। दिवस रैण रसना गावणा। आपणा मूल नहीं गंवावणा। मदिरा मास रसन ना लावणा। काया कोट सुफल करावणा। प्रभ साचा रिदे वसावणा। सोहँ साचा गावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरपूर शब्द करावणा। पूरन आसा देवे कर। जो दर मंगे आए साचे घर। मिले नाम वस्त प्रभ साचा किरपा देवे कर। नाम खुमारी रहणा मस्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भण्डारे दए भर।

दर मंगण आया मंगता। प्रभ तोड़े रोग हँगता। आप रलाए विच संगता। नाम साचे सच रंगता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो दर तेरे मंगता। मंगया वर हरि साचे मन्दिर। प्रभ ममता रोग मिटाए तन काया अंदर। हरि साची

जोत जगाए आप तुड़ाए मन का जंदर। साची जोत होए रुशनाए, मिटाए अन्धेर काया अंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए प्रगट होए आत्म अंदर। स्वच्छ सरूपी स्वच्छ सरूपा। प्रभ अबिनाशी वड वड भूपा।
हरि हिरदे सद रक्खे वास, ना जाणे कोई रंग रूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत करे प्रकाश देही अन्ध
कूपा। अन्ध कूप जोत प्रकाशया। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनास्सया। ना लाई देर हरि अबिनास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, किरपा करे जो जन होए दासन दास्सया। दासन दास दास दसीता। साचा माण चरन प्रीता। सोहँ माण अठारां
ध्याए गीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंदर अटल रखाए चीता। निर्मल देहा निर्मल चित्त। प्रभ अबिनाशी कर
साचा हित्त। आप बणाए आपणा मित। गुरमुख तेरा बणे मात पित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद
रसन उचार, मानस जन्म जाओ कलि जित्त। मानस जन्म जित कलि जावणा। साचा हित हरि अख्वावणा। आत्म सिंच
सोहँ साचा बीज बिजावणा। उठ सवेरे नित, प्रभ अबिनाशी रसना गावणा। वेला जाए बीत फेर हत्थ ना आवणा। आप
चलाए आपणी रीत, सतिजुग साचा मार्ग लावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पकड़े दामना। दामन पकड़े
धुर दरगाह। साचे धाम हरि दए बहा। ओथे लेखा मंगे कोई नांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती मेल दए
६१ ०३ मिला। मन तन सीतल शब्द धार। काया कलिजुग होई सीतली, सोहँ सुहागा उप्पर डार। सतिगुर राखो चीतली, देवणहार ६१ ०३
इक्क दातार। आप चलाए साची रीतली, प्रभ पूरन अवतार। हरि राखो साची मीतली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
आपे देवे नाम अधार। काया ताकी चार द्वारी। पंजे बैठे बण हँकारी। सिर अड्डां रक्खे आप सवारी। नावें लद्दां रिहा भवाई।
दस्में गंढु आप खुलाई। आत्म भट्ठा आपे चाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारी। काया कूड़
कूड़ कुड़यारी। झूठी देह जीव तन शिंगारी। अन्तिम बाजी जाए हारी। झूठी काया साजी महल्ल अटारी। विच बद्धा साचा
ताजी, सोहँ शब्द कर अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि तेरी पैज सवारी। काया कपड़ा कूड़ हंढावणा।
तीर्थ छप्पड़ झूठा नावणा। ना कोई सके अपड़, प्रभ अबिनाशी हत्थ ना आवणा। माया रूपी दित्ता कप्पड़, भरम भुलेखा
डाहडा पावणा। आप कराए पापी पप्पड़, विषे विकारां विच रुलावणा। सोहँ शब्द मारे थप्पड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, गुरमुखां मार्ग पावणा। काया कंचन काची वंग। हरि का साचा नाम चाढ़े साचा रंग। झूठा तन झूठा मन झूठा
धन, दरस दान सद मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। काया किला कोट गढ़। प्रभ अबिनाशी
बैठा अंदर वड़। दिस किसे ना आया प्रभ साचे वट्टी दड़। गुरमुखां आप जगाया, आप लगाई साची जड़। बेमुखां प्रभ

आप रुढ़ाया, कोई ना अग्गे रहे खड़। वैहन्दे वहिण जगत विहाया, प्रभ अबिनाशी छड्डुया लड़। गुरमुख साचा आण तराया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे गया चढ़। काया हस्त असत अस्वारा। साचा वस्त शब्द अपारा। फड़या दस्त सोहँ कटारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारा। काया कूड़ कुटम्बा। झूठी जगत गुलज़ार दिसे चम्बा। सोहँ शब्द कमावो रसना गावो, प्रभ आप उडाए बिन खम्बां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगा। काया कूड़ कूड़ कुड़यारी। प्रभ अबिनाशी करे ख्वारी। झूठी माया दे विच रुली, बाजी आपणी अन्तिम हारी। जगत अन्धेरी झूठी झुल्ली, पत्त ना लग्गे रहण आपणी डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सिक्दारी। काया मृदंग वज्जण ढोल नगारे। होए रुशनाई वसे अंग संग, साची शब्द होए धुन्कारे। एका चाढ़े साचा रंग, साचा दिसे हरि दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत टिकाए तेरे काया महल्ल मुनारे। काया कोठी महल्ल मुनारा। प्रभ अबिनाशी दिवस रैण रसन उचारा। सर्ब घट वासी आपे विच करे पसारा। घनकपुर वासी निर्मल जोत करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दसवां आप खुल्हारा। द्वार दसवां आप खुल्हाए। आत्म ताला आपे लाहे। दीपक जोती बाल करे रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांई होए सहाए। दीपक जोत आप जगाई। गुरसिक्खां देवे हरि वड्याई। सोहँ वस्त हरि झोली पाई। सच दात सच वस्त हरि हत्थ फड़ाई। बिन कलम दवात, हरि लिख्त लिखाई। विच अंदर मार झात, हरि बैठा जोत जगाई। आपे पुच्छे तेरी वात, जीव भुल्ल ना जाई। कलिजुग मिटाए अन्धेरी रात, सोहँ जोत करे रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। मिल्या कन्त सच सुख भागी। चरन प्रीती साची लागी। हरि हरि हरि साचा आत्म धोए पापां दागी। घर हरि दर साचा उपजावे शब्द धुन अनरागी। हरि सर तर दरस कर आया दिन वड वडभागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, भव जल बेड़ा पार कराए, नगर खेड़ा आप वसाए, गुरमुखां बणे आप वागी। नगर खेड़ा खुल्हा वेहड़ा। प्रभ अबिनाशी आप बन्न्हे बेड़ा। दर घर साचे हरि साचा सुणे झेड़ा। बिन गुर पूरे अन्त पार लँघाए केहड़ा। पिच्छा रिहा दूर अगे आया नेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुकाए कलिजुग झेड़ा। कलिजुग झेड़ा आप मुकाउणा। बेमुखां बेड़ा आप डुबाउणा। गुरसिक्खां हरि पार कराउणा। सोहँ नईआ आप चढ़ाउणा। मात पित हरि आप अख्वाउणा। आपे पुच्छे वात, दिवस रैण रसना गाउणा। सोहँ देवे साची दात, सच नाम हरि झोली पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाउणा। सरन लगाए हरि का रूप। खिच ल्याए वड वड भूप। जोत प्रगटाए बिन रंग रूप। महिंमा करे जगत अनूप। होवे प्रकाश विच

अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत मात प्रगटाए गुरसिक्खां दिसे सति सरूप। सति सरूपया, रंग अनूपया, वड शाहो वड वड भूपया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ करे प्रकाश अन्ध अन्धेर मिटाए झूठी सृष्ट मात अन्ध कूपया। अन्ध अन्धेरा आप मिटाउणा। सच विहार आप कराउणा। साची कारे सृष्ट लगाउणा। साची धारे शब्द चलाउणा। साची मारे बेमुखां कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नर नारे, दर आए जिस दर्शन पाउणा। नर नारी जो आयण दर। कर दरस जायण तर। ख़ाली भण्डारे प्रभ साचा देवे भर। कलिजुग लग्गे दुखड़े हरि हरे देवे कर। उज्जल होए मुखड़े, प्रभ चरनी गए तर। तन लथ्थे सभ दुखड़े, जम का लथ्था डर। जो जन आए दर ते भुक्खड़े। प्रभ देवे साचा वर। मात सुफल कराए कुक्खड़े, जिस रसना ल्या उचर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप नुहाए तीर्थ साचे सर। सच सरोवर साचा जाण। अन्तर आत्म कर इशनान । सोहँ मन्त्र जप मिले भगवान । बैठा रहे सद इकन्तर, एका लग्न हरि चरन ध्यान। आप बणाए तेरी बणतर, देवे दरस हरि दयावान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप चुकाए जम की कान। जम जमदूत ना आवण नेड़े। हरि साचा जिस वसे खेड़े। आप मिटाए चुरासी गेड़े। साचे शब्द बंधाए बेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए सच नबेड़े। भगत भण्डारा आप चलाया। गुरमुख साचे सेवा लाया। अन्न दान जिस जन कराया। तन मन हरि हरा कराया। साचा धन्न हरि झोली पाया। आत्म जन सर्ब कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुट भण्डारा आप रखाया। गुर संगत सेवा करी विचार। मानस जन्म ल्या सुधार। पंचम जेठ प्रभ साची दस्सी धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां जाए तार। सेवक सेवा करी प्यारी। साचा नाम मिले नाम खुमारी। शाहो शब्द सच अटारी। जिथ्थे वसे हरि मुरारी। ओथे होए ना रैण अंध्यारी। एका जोत जगे निरँकारी। बैठा अडोल आप गिरधारी। झिलमिल झिलमिल होया वेखो रंग रंगी करतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड सच्चा दरबारी। सचखण्ड सच अरदासा। तीन लोक हरि रक्खे वासा। खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभण्ड जीव जन्त देह विच निवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे बन्द खुलासा। सेवा घाली प्रभ साचा बणे आपे पाली। गुरसिक्खां करे दिवस रैण सुखाली। आत्म जोती आप जगाए जिउँ कत्तक विच दीवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां वाली। आत्म जोती आपे बाले। गुर संगत दर सेवा घाले। चरन प्रीती निभे नाले। आपणी गोद आप उठाले। आपणा बिरद प्रभ साचा आप संभाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सद वसे नाले। सेवक सेवा कर्म कमाया। साचा धर्म जगत रखाया। मानस जन्म सुफल कराया। पंज जेठ दिवस मनाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस आए दर्शन पाया।

उज्जल होए मुक्ख, धर्म राए ना दए सजाया। सभ उतारे तृष्ना भुक्ख, सोहँ साचा वास रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस आप कराया। गुर संगत दर सेवा कीनी। कलिजुग रैण बणाई साची भीन्नी। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरा मुखड़ा, प्रभ अबिनाशी रसना चीनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात दर साचे दीनी। देवे दात दया हरि दान। मंगया इक्क दाता भगवान। अन्तिम अन्त आप मुकाए जम की कान। डन्न ना लग्गे विच जहान। गुरसिक्खां सेवा प्रभ लाई लेखे, सृष्ट सबाई पई वेखे, पंचम जेठ वाली दो जहान। गुरसिख प्रभ लाए लेखे। प्रभ दर आए दरस नेत्र पेखे। अज्ञान अन्धेर मिटाए भरम भुलेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म लाया लेखे। भरम भुलेखा देवे कढ्ढ। करे सुखाले काया हड्ड। प्रभ अबिनाशी बाहों पकड़ बाहर देवे कढ्ढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत प्रगटाई। साचा लड़ ना देणा छड्ड। साचा लड़ ना छड्डणा। आपणा किया आपे वढ्ढणा। साचो साचा सच प्रभ सोहँ विच मात दे गढ्ढणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे दान नाम गुरमुखां वंडणा। वंड वंडाया साचा नाम। आत्म ठंडा कराया पूरन होए काम। सोहँ साची गंढ्ढ पल्ले बंधाया, घर साचे आया शाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा किया काम। पूरन कामा, पूरन रामा, पूरन शामा। जोत सरूपी पहरया बाणा। सोहँ देवे वाली दो जहानां। सतिजुग साचा इक्क निशाना। गुरसिक्खां हत्थ बद्धा गाना। जोती जोत करे प्रकाश कोटन कोट भाना। कदे ना होए कलिजुग नास, जिस जन रसना गाणा। मिल्या हरि पुरख अबिनाशी, जोत सरूपी मेल मिलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाणा। हरि हरि हरि दर मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी साचा पाया। जो जन होए दासन दासी, प्रभ साचा दया कमाया। प्रगट जोत घनकपुर वासी, आपणा दरस दिखाया। रूप रंग ना रेख रखासी, जोत सरूपी गुरसिख समाया। शब्द सरूपी वेख वखासी, आत्म साची बूझ बुझाया। गुरमुख साचा प्रभ दर पासी, साचा लहणा लैण जो आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा आप चुकाया। साध संगत सद सद सद वधाई। पंचम जेठ हरि दर ते आई। अष्टम् नूं हरि विदा कराई। हउमे ममता रोग गंवाई। तृखा तृष्ना आप बुझाई। काहना कृष्ना जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत विदा कराई। गुर संगत जाए आपणे घर। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर। कर दरस कलि जाओ तर। जो दर आए नारी नर। बिरधां बालां मिल्या हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती इक्क दिसाए साचा सर। साचा तीर्थ चरनी नहावणा। चरन धूढ़ लै मस्तक लावणा। सोहँ साचा रसना गावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर जाए ना मनों भुलावणा। घर घर झूठे धन्दे। पूरे तोल तुलणा, आत्म अन्धे। कलिजुग

माया विच ना रुलणा, ना होयण भाग मन्दे। सच द्वार प्रभ दा खुल्ह्णा, रहण ना देवे पापी गन्दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए आप बणाए साचे बन्दे। बन्दी तोड़ तोड़े अभिमाना। आप दिसाए सच टिकाणा। जिथ्थे वसे आप भगवाना। जोत सरूपी इक्क अस्थाना। दिवस रैण इक्क रंग रंगाणा। गुरमुख साचे लहणा लैण, हरि चरन प्रीती सेव कमाणा। दरस पेखे हरि साचे नैण, प्रभ अबिनाशी भुल्ल ना जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाणा। भरम भुलेखा विच ना भुलणा। कलिजुग माया विच ना रुलणा। कलिजुग अन्धेर एका झुलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे बख्शे जो दर आए बख्शाए भुल्ल्णा। भुल्लया रुल्लया आए दर। प्रभ अबिनाशी पकड़े लड़। दर दुआरे अग्गे खड़। किल्हा कोट तोड़े तेरा हँकारी गढ़। करे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि की पौड़ी जाए चढ़। हरि की पौड़ी सच अस्थाना। एका घर एका टिकाना। एका दर इक्क भगवाना। एका सर इक्क इशनाना। एका दर एका दाता महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाणा। धीरज सति सन्तोख ज्ञान। प्रभ अबिनाशी साचा मान। कलिजुग भुल्लया जीव निधान। वेले अन्त ना बणी बाल अञ्याण। शब्द सरूपी वज्जे बाण। बेमुखां प्रभ देवे शान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिथ्थे वसे साचा काहन। काहन घनईआ नैण मुँधारा। साची जोत सच पसारा। इक्क रंग रूप एकँकारा। सति सरूप सच सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंग अनूप अपर अपारा। अपर अपार अन्तर जानत। गुरमुख साचे हरि साचा मानत। वेले अन्त प्रभ साचा करे पछानत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आनत। आप रखाए आपणी आना। सच सुच्च दा मींह बरसाना। जूठ झूठ सभ नष्ट कराणा। रंग अनूठ इक्क चढ़ाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाणा। एका एक एका टेक। एका बुध करे बबेक। एका कलिजुग माया ना लागे सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे नेत्र पेख। माया अग्न ना लागे तन। दुखीआ होए ना आत्म मन। धर्म राए ना लाए डन्न। बेमुख जीव आत्म होई अन्न्। झूठ भाण्डे प्रभ साचा देवे भन्न। गुरसिक्खां बेड़ा देवे बन्न्। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए साचे जन। जन बणाया, तन वसाया, मन मनाया, धीर धराया। सोहँ साचा तीर चलाया। अमृत साचा सीर प्याया। हउमे विच्चों पीड़ कढाया। वड वड सूरबीर आप अख्वाया। गुरमुखां देवे धीर, एका ध्यान चरन लगाया। कलिजुग अन्तिम ना लथ्थण चीर, प्रभ अबिनाशी होए सहाया। आपे कट्टे गुरमुख तेरी भीड़। आप आपणा सिर हत्थ टिकाया। सोहँ बद्धी साची बीड़, सतिजुग बेड़ा आप चलाया। बेमुखां हरि जाए पीड़, सतिजुग साचे दिस ना आया। क्या हस्त क्या कीड़, सृष्ट सबाई विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

पंचम जेठ जोत सरूपी जामा पाया। जामा पाए, जगत जगाए, शब्द चलाए, वक्त सुहाए, भगत उठाए, दरस दिखाए, तृखा बुझाए, साचा नाम भिच्छया पाए। आत्म विखा सर्ब लुहाए। आत्म तृष्ना आप बुझाए। नेत्र पेख दुःख रोग मिटाए। वेखा वेख कोई भुल्ल ना जाए। कलिजुग माया विच कोई रुल ना जाए। अमृत आत्म हरि साचा देवे डुल्ल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे तोल तुलाए। पूरे तोल साचा कंडा। आप तुलाए खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब वरभण्डा। आपणे हत्थ उठाए सोहँ साचा डण्डा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देव वड चण्ड प्रचण्डा। साचा तोला एका धारन। हरि अबिनाशी भगत उधारन। घनकपुर वासी पावे सारन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणाए आप सच्ची सरकारन। सतिजुग बणे सच्ची सरकारा। आपे दस्से सच विहारा। सच सुच्च दर करे वपारा। कर्म धर्म दा इक्क जैकारा। सिदकी सरदार ऊँच अपारा। साचे तख्त बैठे आप होए सिक्दारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणे छत्तर झुलारा। सच सुच्च करे सिक्दार। कूड़ कड़ावे देवे मार। अग्न कुण्ड विच देवे डार। शब्द खण्डा उठावे दो धार। प्रभ साचा जो जन सरनी लागे, अन्तिम अन्त उतरे पार। बेमुख दर ते जायण भागे, प्रभ साचा करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंचम पंचायत करे सरकार। चरन मजन राम मुरारी। किरपा करे आप गिरधारी। गुर संगत दर आए तारी। देवे नाम रंगत शब्द खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क अधारी। सर्ब जीआं हरि साचा गाया। प्रगट हो हरि दरस दिखाया। गुरसिख सेवा लेखे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर घर साचे भोग लगाया। लग्गे भोग भगत द्वार। आत्म खोल्ले तन कवाड़। बेमुखां काया होई उजाड़। कलिजुग झूठे लग्गे रहण झाड़। गुरमुखां सोहँ शब्द कराए साची वाड़। शब्द मार प्रभ साचा देवे झाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए गुरसिख साचे लाड़। लाए भोग भगत अधारी। दर घर आए पैज संवारी। काहना कृष्ना हरि मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस अट्ठे पहर चिट्टे अस्व अस्वारी। शब्द अधारा अस्व अस्वारा। जोत अकारा विच संसारा। तीन लोक करे चरन पनिहारा। मात पताल अकाश एका रंग रंगे करतारा। गुरमुखां सोहँ देवे शब्द अधारा। बेमुखां प्रभ साचा करे नास गुरमुखां आत्म नाम भरे भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिक्खां आप बणे वरतारा। भोग लगाया हरि हरि भगवन्त। गुरसिक्खां चोग चुगाए, आप बणाए साची बणत। आप आपणी जोत जगाए, बेमुख भुल्ले सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हरि साचा कन्त। भोग भगत घर लग्गे। आत्म जोती साची जगे। शब्द अन्धेरी एका वगे। सृष्ट सबाई दगे। गुरमुख साचे प्रभ चरनी लग्गे। बैकुण्ठ निवासी लाए अग्गे।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सीस निवाए पग्गे। कर किरपा हरि मेल मिलाया। रंग रंगीला माधव पाया। जिउँ जादव विच कृष्ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। जामा धारे हरि हरि गोबिन्दा। आप मिटाए सगली चिन्दा। बेमुख दे सजाए, दर घर साचे आए करन जो निंदा। गुरसिक्खां माण दवाए, आप मिटाए साची चिन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा मृगिन्दा। वड मृगिन्दा दरस दिखंदा, वक्त सुहंदा, भगत तरंदा, मानस जन्म सुफल करंदा, सोहँ शब्द हरि हरि चलंदा। दर घर साचे रहण ना पाए, मदिरा मासी गन्दा। आपे दे सजाए, धर्म राए ने पाया फंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन भुलाए आत्म होए अन्धा। आत्म अन्धा अन्ध अन्धयारा। कूड़ा होए सर्ब पसारा। मानस जन्म आपणा हारा। भुल्लया हरि साचा करतारा। अमृत डुल्लया सच भतारा। कलिजुग माया दे विच रुल्लया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना पाए तेरी सारा। सरन तेरी जाणे कोए। दो जहानी बैठ रोए। पापां मैल कवण धोए। जम जमदूत सीखा विच नैण परोए। संगी साथी होइ ना कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सहाई आपे होए। बेमुख झूठा जगत विहारा। गुरमुख साचे एका साचा गुर दरबारा। आओ दर कलि जाओ तर चरन कर निमस्कारा। आवण जावण चुक्के डर, हरि देवे चरन प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम अधारा। नाम अधारी, सतिजुग तारी, करे आत्मकारी, जावे तारी, आए दरबारी, आत्म देवे नाम ख़ुमारी। भव सागर तों पार उतारी। काया गागर जोत अपारी। चिट्टी चादर शब्द पटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पाए आपे सारी। चिट्टी चादर चन्द चन्द्रायण। चन्द चन्द्रमा वेखे नैण। तीजी रले नाल भिन्नड़ी रैण। पंचम जेठ मिल तिन्ने बहिण। आप बणाए भाई भैण। साचा लाहा आपे लैण। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ अबिनाशी रसना कहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां घर घर पवाए वैण। चन्द चन्द्रमा सीतल धारी। रथ रथवाही सच अस्वारी। भव सागर विच्चों जाए तारी। वेले अन्त ना आए हारी। किरपा करे आप बनवारी। सतिजुग साचे फेर देवे सिक्दारी। सीतल सीतला होवे भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगया इक्क सच्चा दरबारी। सूरज तप अगर अघाए। कलिजुग पाप रिहा तपाए। प्रभ साचे दी आए सरनाए। करे बेनन्ती सुणो हरि राए। जूठ झूठ दा नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर आपणा खेल आप वरताए। सूर सूर्या भानण भाणा। मंगे दर एका दाना। कलिजुग जीव पापी हर, भुल्लया जिन्हां हरि भगवाना। धर्म मात विच आवे डर, जोती जोत हरि आप लगाणा। दर दुआरे आए खड़, किरपा करे हरि आप भगवाना। सूरा सूर्या सुणे पुकार। आपे लए थल्ले उतार। अग्न जोत लए साड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा

करे आप विहार। चन्द सितारे सर्ब पुकारे। वेखण जायण सर्ब दुआरे। दिवस रैण रैण दिवस बेमुख रहे झक्ख मारे। झूठे बन्दे पापी गन्दे माया धारी, गरीबां करन ख्वारी, महाराज शेर सिँघ सुणे पुकारा, हरि दातारा, जामा धारा, जोत सरूपी किया अकारा। सोहँ फड़या शब्द कटारा। चौथे जुग आई हारा। ना कोई दिसे शाहदारा। एका दिसे साचा हरि अस्व अस्वारा। जोत सरूपी शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरँजण नर नरायण नर अवतारा। तीनां लोकां सुणे पुकारी। ब्रह्मा विष्न खड़े दरबारी। दिवस रैण करन चरन निमस्कारी। प्रभ अबिनाशी धरत मात होई बड़ी ख्वारी। कलिजुग जीव आपणा मूल गए हारी। भाई भैणां बणे वपारी। पैसा मंगण करन ख्वारी। प्रभ अबिनाशी गलों कट्ट जगत बिमारी। तट्ट तीर्थ ना रहे सहारी। बेमुख कलिजुग जीव जिन्हां हत्थ मिली सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत पंचम जेठ आपणे फड़े हत्थ कटारी। साचा खण्डा आप उठावणा। बेमुखां नष्ट करावणा। धर्म राए दे दर पुठे टंगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां अंगूठे दर साचे लगावणा। दर घर साचे लाए अंगूठा। आत्म रंग चढ़ाए इक्क अनूठा। पंचम जेठ जोत जगा हरि साचा तूठा। आप आपणे हत्थ रखाए, इक्क बणाए मुठा। गुरमुख साचे आप मनाए, जो दर आए रुट्ठा। बेमुख आप जलाए जिउँ अग्न लगाए भुट्ठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लुकया रहण ना देवे विच गुट्ठा। मदन मूर्ति इक्क गोपाल। देवणहार हरि इक्क साचा भाल। झूठा वणज मात ना करना, एका बणाए साचा लाल। सच वस्त हरि एका देवे, गुरसिख घर रक्खणी संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद सहाई आपे वसे तेरे नाल। सति प्रसाद लावणा मुख। प्रभ दर गंवावणा काया दुःख। घर सच वसावणा, एका आत्म सुख। भरम भुलेखा सारा लाहवणा, भुल्ल ना जाणा किसे मनुक्ख। प्रभ अबिनाशी साचा गावणा, उज्जल कराए मुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वर घर हरि साचा पाया। पंचम जेठ सुखणा सुक्ख। सुक्खणा सुक्खी संगत सारी। पंचम जेठ करी त्यारी। करी बेनन्ती संगत सारी। सुणे आप हरि अवतारी। पंचम जेठ प्रभ साचे मात जोत उतारी। गुरसिक्खां जाए जन्म संवारी। भरम भुलेखे दए निवारी। जो जन आए सच दरबारी। कोई ना रहे खड़ा दर अग्गे हँकारी। शब्द सरूपी आप उठाए खण्डा दो धारी। आओ उठो नेत्र पेखो चिन्ता करो ना कोई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे भेखाधारी। भेखाधारी ना लैणा जाण। प्रभ अबिनाशी करो पछाण। भुल्ल ना जाणा जीव अञ्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। आत्म होवे जिस हँकारा। उठे आवे चल दुआरा। भाण्डा भरम प्रभ दए निवारा। बूझ बुझाए आप गिरधारा। गुरसिख वसे चौथे पद, प्रभ लए सद्द, बेमुख होए रद्द, गुरमुख साचे जाओ गद

गद, आप बहाए चरन दुआरा। सोहँ पिलाए साची मदि, दिवस रैण रहे खुमारा। एका वज्जे साचा नद, साची धुन करे धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए अन्ध अन्धयारा। अन्ध अन्धयारा आपे मेटे। गुर संगत हरि शब्द पेटे। आप बणाए आपणे बेटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेवट खेटे। गुर साचा आत्म माना। जोत सरूपी पवन समाना। तीन लोक हरि बूझ बुझाना। साचा मेघ सवण वरसाना। आत्म धुन सर्ब वजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिक्खां साचा लेख लिखाणा। गुरसिक्खां सेवा साची कीती। आपे देवे चरन प्रीती। प्रभ अबिनाशी परखे नीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दे वड्याई, सदा रहे जग जीती। सदा जग जीवणा, अमृत पीवणा। सोहँ बीज साचा बीजणा। तन पाटा आवे घाटा, सोहँ धागा लै के सीवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना चाटा, सदा सदा जग जीवणा। साचा हट्ट सच्चा पसारी। साची वस्त रक्खे अपारी। सौदा लैणा वारो वारी। जो जन आए चल दरबारी। प्रभ बैठा वड भण्डारी। गुरसिख मंगण चरन द्वारी। प्रभ देवणहार दातारी। गुरसिक्खां जाए पैज संवारी। जो दर आए बिरध बाल नर नारी। काम क्रोध दए निवार, आत्म देवे शब्द खुमारी। पुत्त दुध्ध दे भरे भण्डार, दर आए जो भिखारी। गुरसिख ना होए कलि ख्वार, मंगया इक्क सच्चा दरबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
६९ साचा नाउँ लैणा खट्ट, मानस जन्म ना आणा दूजी वारी। साची हट्ट हरि आप लगाई। एका वस्तर नाम पहनाई। शब्द ६९
०३ शस्त्र हरि हत्थ फड़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होए आप सहाई। दर घर गुर साचा हट्ट। साचा ०३
तीर्थ साचा तट्ट। कलिजुग झूठी खेल जिउँ बाज़ीगर नट। कलिजुग प्रभ भन्नया तेरा काया मट। सोहँ साचा शब्द हरि चरन लाग, दिवस रैण सद रसना रट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेल मिलाए तेरी दूई द्वैत फट। सच प्रभ दा बण सुदागर। निर्मल कर्म होए उजागर। प्रभ पार कराए गुरमुख सिँघ सिक्ख भव सागर। आप कराए दर आयां आदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे गुरसिक्खां उप्पर आप रखाए चिट्टी चादर। सच्चा सौदा वेख विचार। प्रभ अबिनाशी हरि करतार। भरम भुलेखे देवे सर्ब निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन देवे गेड़ निवार। प्रभ अबिनाशी चरन पनिहारा। आपे खोल्हे दस्म दुआरा। उपजे धुन सच्ची धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आपणा रंग दिखाए अपारा। गुर संगत तेरा प्रेमी तीर। सिँघ सिँघासण देवे चीर। विष्नूं वंसी पाए वहीर। कोटन कोट जो जन आए चीर। गुरमुखां आत्म प्रेम कर, आप वहाए नेत्र नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह सच पिलाया आत्म सीर। नेत्र नेत्र नीर निराला। पीर फ़कीर ना किसे संभाला। दस्तगीर ना होए रखवाला। साचा माही आप गोपाला।

कलि पए दुहाई आप होए रखवाला। झूठी मिटाए शाही, तोड़े सर्ब ज़ंजाला। गुरसिक्खां फड़े बाहीं, गुरसिक्खां करे प्रितपाला। आप बहाए साचे थाएँ, साचे घर आप रखवाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा प्रीतम गुसिक्खां करे प्रितपाला। प्रीत प्रीतम गई लग्ग। दूई द्वैत ना रही अग्ग। कूड़ा नाता तुटा तग। आत्म जोती जाए जग। सच शब्द सिर धरे पग्ग। देवे वड्याई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबग्ग। पग्ग पगड़ी सिर बद्धा सिहरा। दूई द्वैत ढाया डेरा। गुरसिख बणाया आपणा चेरा। पंचम जेठ ना लाया डेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाया आवण जावण गेड़ा। आवण जावण आप मिटाया। राजस तामस मगरों लाहया। सांतक रूप हरि सांतक सति सति वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे ठंड वरताया। घर साचा ठंडा दरबारा। अमृत चले इक्क फुहारा। साची बरखे एका धारा। गुरमुख विरला नुहाए करे चरन निमस्कारा। दर घर साचे पावे जो मंगे हरि दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारा। जन्म मरन अजे ना जाणया। कलिजुग भुल्ले जीव निधाणयां। कलिजुग माया अग्न लग्गी विच शैतानयां। ऐवें फुल्लया फिरे मस्तानयां। सचा राह हत्थ ना आया, बेमुख की करे दानया। साचा नाम ना रसना गाया, किथों मिले हरि भगवानयां। भरम भुलेखा झूठा लेखा, प्रभ अबिनाशी अजे ना देखा, किथों मंगे साचा लेखा, कवण मिटाए तेरी पिछली लिखी रेखा , माया धारी अन्ध अंध्यारी। पापां होई जीव हैंस्यारी। जूठी झूठी जीव अटारी। प्रभ अबिनाशी ना मनों वसारी। हरि का नाम सच सवारी। शब्द सरूपी वेख अटारी। जिथ्थे दिसे हरि मुरारी। जन्म मरन हरि गेड़ निवारी। जोत सरूपी मेल मिलारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर साचा शब्द देवे अस्वारी। साचा शब्द प्रभ वखाण। कलिजुग जीव ना भुल्ल निधान। माया विच ना रुलीं बण अन्त नादान। अमृत आत्म ना जीव डोहलीं, जोती जोत सरूप हरि, गुरसिक्खां मेल मिलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान। नाम निधाना हरि दर पाओ। आत्म झूठा ताक खुल्हाओ। कलिजुग जीव हँस काग बण जाओ। आत्म धो हँगता दाग, सोहँ साचा रसना गाओ। प्रभ अबिनाशी पकड़े वाग, जन्म मरन विच फेर ना आओ। गुरसिख सोया जाए जाग, लक्ख चुरासी जून कटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दर्शन पाओ। क्या वेखे क्या करे विचारा। साचे प्रभ ना जाणे सारा। साची धुन सच्ची सरकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां गेड़ निवारा। अमृत मेघ आप बरसाए। आत्म तृखा सर्ब मिटाए। बेमुख आत्म अग्न लगाए। दर दर फिरन हलकाए, कोए ना पाए साची थांए, जिथ्थे वसे हरि रघुराए। गुरसिख साचा सेव कमाए। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मेघ बरसाए। अमृत पीणा अमृत धार। मानस

जन्म लैणा संवार। भुल्लयां रुल्लयां प्रभ देवे तार। पूर्ब कर्म लए विचार। महाराज शेर सिँघ गुरसिक्खां पाए सार। आत्म रस हरि साचा गांवणा। आत्म जोती दीप जगावणा। अन्ध अंध्यार सर्ब मिटावणा। एका अकार जोत करावणा। सोहँ धार हरि इक्क रखावणा। वक्त विचार प्रभ साचे साचा मार्ग लावणा। चार वरन आवे इक्क द्वार, एका डंक वजावणा। राउ उमराउ कर ख्वार, राजा राणा तख्तों लाहवणा। आप सुहाए थान बंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच माता जामा पावणा। पंचम जेठ ख़ुशी मनाए। गुर संगत हरि विदा कराए। सोहँ दात भिच्छया पाए। सति करामात इक्क कराए। इक्क जमात हरि आप पढ़ाए। आपे पुच्छे वात, अन्तिम अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। उठे संगत करे त्यारी। प्रभ चरन जाओ बलिहारी। मानस जन्म हरि जाए संवारी। जो जन करे निमस्कारी। दर घर साचे देवे सच्ची सरदारी। जिथ्थे वसे हरि आप मुरारी। राम रमईआ नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत कलि भेखाधारी। भेख धर दया कमाए। पंचम जेठ सोहँ शब्द मुख लगाए मेवा। पंचम जेठ हरि जोत प्रगटाए, प्रभ अबिनाशी अलख अभेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विरथी जाए ना तेरी सेवा घाली। गुर दरबार गुरमुखां जाए हरि तार। देवे दरस अगम्म अपार। मिटाए हरस आत्म तृष्ना भुक्ख निवार। काहना कृष्ना साची जोत अकार। ब्रह्मा विष्न खड़े रहण द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार। नर अवतार जामा धारया। गुरमुख साचे विच समा रिहा। बिन रंग रूपी दिस ना आ रिहा। भरम भुलेखे सृष्ट भुला रिहा। गुरमुख साचे आपणे लेखे ला रिहा। विच मात प्रगट आपे वेखे जो जन सोहँ रसना गा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मार्ग सतिजुग साचा ला रिहा। जोत सरूपी जामा पाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। कलिजुग झूठा भेख मिटाए। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ साचा सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क कराए। चार वरन इक्क दुआरा। चार वरन इक्क घर बाहरा। चार वरन एका सरन निहकलंक नरायण नर अवतारा। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक देवणहारा। चार वरन इक्क संग। प्रभ अबिनाशी चाढ़े साचा रंग। आप मिटाए आत्म भुक्ख नंग। जोत सरूपी शब्द अस्वारी काया घोड़ा कसे तंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप वड सूरा सरबंग। वड सूरा सूरबीर। क्या कोई जाणे वड पीरन पीर। भुल्ले विच मात औलीए दस्तगीर। कलिजुग अन्तिम आप तुड़ाए पापां बद्धी जंज़ीर। सोहँ खण्डा हत्थ उठाए चार कुन्ट कराए वहीर। बेमुखां हरि दिस ना आए, ना कोई देवे धीर। घर घर रोवण नारीआं रंडां, वैहन्दे रहण नेत्र नीर। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त कराए अखीर। वैहन्दे वहिण जायण शक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

७१
०३

मात जोत प्रगटाए वड पीरन पीर। मात जोत प्रगटाए। आपणा भेव आप खुल्हाए। सोहँ साचा शब्द चलाए। सतिजुग साचा मरग लाए। जूठ झूठ हरि नष्ट कराए। रंग अनूठ आप चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्क कराए। सच भगवानणा, प्रभ साचा मानणा। भरम भुलेखा सर्ब निकालणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ विच मात जोत प्रगटानणा। मातलोक वज्जा डंक। इक्क कराए राउ रंक। आप मिटाए आत्म शंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जोत जगाए आत्म लाए साची तनक।

✻ ८ जेठ २०१० बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड झबाल ज़िला अमृतसर ✻

साचा वक्त हरि विचारया। अष्टम जेठ उठ पधारया। साध संगत संग रला रिहा। जिउँ अंगद अंग लगा ल्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अपणे भाणे विच समा रिहा। अष्टम जेठ अष्ट कर माण। प्रभ अबिनाशी पूरन भगवान। धरे जोत मात महान। गुरसिक्खां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा वाली दो जहान। गुरमुख तेरी आत्म
७२ जागी। अष्टम जेठ आया दिन वड वडभागी। चरन धूढ़ तेरे मस्तक लागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती ७२
०३ साची लागी। चरन प्रीती सेव कमाई। दर घर आए प्रभ साचा दे वधाई। अष्टम जेठ होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ ०३
विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी पैज रखाई। पैज रखाए सच दरबारे। जिथ्थे वसे हरि निरँकारे। साचा रंग अनूप अपारे। बैठा वड शाहो वड भूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकारे। सच सरकार सच्चा सिक्दारा। तीन लोक हरि पावे सारा। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड हरि चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। आया दर हरि भगवन्ता। काज संवारे गुरमुख साचे सन्ता। कलिजुग जीआं माया पाए प्रभ बेअन्ता। गुरमुख साचे आप उठाए प्रभ अबिनाशी साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्ता। गुरमुख साचा आप उठाया। आप आपणी सेवा लाया। साचा मेवा नाम दवाया। वड वड देवी देवा करोड़ तेतीस चरन बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण भेव किसे ना पाया। गुरमुख तेरी सच अटारी। जिथ्थे वसे आप मुरारी। आपे करे आत्म कारी। बेमुखां करे हरि ख़ुआरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। नरायण नर अवतारा। गुरसिख तेरा वसाया हरि सच्चा घर बाहरा। आपे होए तेरा सिक्दारा। सतिजुग उपजे धाम न्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए लेख लिखारा। साचा धाम बणे तेरा साचा घर। सर्ब थांई बाकी आए डर। आपणी करनी जायण कर। बेमुख

आपणी भरनी लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचा सर। साचा दर साचा घर। साचा वर मिल्या हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी करनी रिहा कर। करनी करे करणेहारा। कलिजुग जीव भुल्ला मूर्ख मुग्ध गंवारा। प्रभ अबिनाशी ना रिदे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक ल्या अवतारा। कलिजुग जीव वेख विचार। मानस जन्म ना कलिजुग हार। भुल्ले भरम क्यों गंवार। आप आपणा काज संवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। पंचम जेठ ल्या अवतार। आया चरन सच्चे गुरदेव। आत्म प्रीती करी सच्ची सेव। सोहँ मिले आत्म साचा मेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई अलख अभेव। अछल अछेदा अलख अलेखा। क्या कोई पावे प्रभ का भेता। गाए थक्के चारे वेदा। झूठे जूठे पढ़न कतेबा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सृष्ट सबाई जुगो जुग अछल अछेदा। सृष्ट सबाई जाए छल। आप छलाई माया पाई कलि। ख़ाक रलाई सुध ना पाई, सच दरबार ना आए चल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। अन्तिम अन्त कलि आप लुहाए खल्ल। गुरसिख हरि रसन उचारे। रसना रस देवे करतारे। होए वस जोत मुरारे। राह साचा जाए दस्स, जन भगतां लेख लिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। जोत प्रगटाई सच दुआरे। गुरसिख गुर साचा जाणया। प्रभ अबिनाशी आप पछाणयां। दर घर आवे होवे माणयां। दरगाह साची मिले सच टिकाणयां। वेले अन्त जम नेड़ ना आणयां। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त गले लगाणयां। आप बणाए साची बणत, सोहँ नाम जपाणयां। देवे वड्याई विच जीव जन्त, जोत सरूपी पहरे बाणयां। एका शब्द सच्चा गुर मंत, हरि साचे मात वखाणयां। कोई ना जाणे हरि का अन्त, कलिजुग भुल्ले जीव निधाणयां। धरे जोत हरि साचा कन्त, गुरमुख विरले कलि पछाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। घर आए गुण निधानयां। गुरसिख तेरे गुण गम्भीरा। शब्द सुत्त आप देवे धीरा। सांतक वरते तेरे सति सरीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप प्याए अमृत साचा सीरा। अमृत आत्म देवे धार। सुरत शब्द हरि मेल मिलार। खुल्ले सुन्न तुट्टे मुन, उपजे धुन सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई घर आए जाए पैज संवार। गुरमुख गुर चरनी लागा। पापां धोया झूठा दागा। कँवल नैण हरि शब्द धुन उपजाए साचा रागा। साचा लाहा प्रभ दर लैण, विच मात जो जन जागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टम जेठ लिखाए दिवस भागा। गुरमुख तेरी रहिरास। प्रभ अबिनाशी होया दास। आप बुझाए आत्म तृखा प्यास। जोत सरूपी हरि हिरदे रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे प्रकाश। आत्म जोत हरि प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासे। एका शब्द चलाए सोहँ स्वास स्वासे। मानस जन्म विच मात कराए रासे। अन्तकाल करे बन्द खुलासे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, जोती जोत निरँजण कर दरस तेरी मिटे हरस तेरा आत्म दुखड़ा नासे। गुरसिख रक्ख इक्क गुर ओट। सोहँ लगावे आत्म साची चोट। अन्तिम अन्तकाल कलिजुग बेमुखां दिसे इक्क लंगोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए बेमुखां कढ्ढे खोट। जोत जगाए, सृष्ट खपाए, देर ना लाए, अन्धेर रखाए, हेर फेर कर जगत भुलाए, पंचम जेठ संञ सवेर ना किसे दिखाए। मेर तेर सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगाए। जगत भुलेखा आपे पाया। वेखा वेखी जगत भुलाया। आपे मंगे साचा लेखा, धर्म राए दे दर बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आपणी सरन लगाया। गुरसिक्खां देवे हरि आप वड्याई। प्रभ चरन जो सेव कमाई। लहणा देणा हरि दे चुकाई। एथे ओथे होए सहाई। साची लिख्त रिहा लिखाई। सतिजुग साचे दे उपाई। साचा धाम झबाल बणाई। इन्द्र सिँघ तेरे हत्थ वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी कुली भाग लगाई। तेरी कुली लग्गे भाग। बेमुखां घर लग्गे आग। कलिजुग जीव झूठे विषे विकारां लग्गे दाग। इक्क ना उपजया साचा राग। सोहँ वज्जा ना साचा नाद। सुरत शब्द ना आप ना कोई जाणे ब्रह्म ब्रह्माद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए आदि जुगादि। आदि जुगादी एका एका। गुरमुख साचे राखो टेका। करे बुध बबेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे तन ना लागण देवे सेका। साचा तन साचा नूर। आत्म आसा करे भरपूर। सोहँ शब्द उपजावे साची तूर। प्रभ अबिनाशी हिरदे वसे बेमुख जाणे दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत खड़ा हज़ूर। हाज़र हज़ूरा। सर्ब कला भरपूरा। आप मुकाए आत्म चिन्ता सगल वसूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरबीरा। सूरबीर वड दातारा। गुरमुख मंगे आए दुआरा। सोहँ देवे सच्चा भण्डारा। वरते वरतावे विच संसारा। देवणहार इक्क दातारा। कोटन कोट खड़्हे रहण तेरे दुआरा। सो जन उधरे पार सोहँ जिस जन रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम अधारा। नाम अधारी शब्द खुमारी। माया ममता सर्ब निवारी। गुरसिख आत्म होए ना हँकारी। आपे रक्खे पैज मुरारी। आवे जावे सत्तर जामा भगत उधारी। तीन लोक सच्ची सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजण साची रक्खे सिक्दारी। तीन लोक सच्चा सिक्दारा। आपे करे सर्ब विहारा। जीव जन्त क्या कोई विचारा। गुरमुख विरला पावे सारा। जिस जन देवे दरस अपारा। किरपा करी प्रभ अबिनाशी, खोल्हे दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर, लैणा वर, चुक्के डर, जाओ तर, खुल्ल्हे दर, आत्म सर, काया भण्डारे लैणे भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक हरी हरि। राग रंग हरि गुण गावणा। प्रभ दर मंगो साची मंग, होवे पूरन भावना।

कलिजुग जीव ना साक संग पकड़े तेरा दामना। गुरमुखां सद सहाई रहे अंग संग। दर घर साचे दे वड्याई, मानस जन्म ना होवे भंग। बेमुख झूठे आप भन्नाए जिउँ काची वंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए आपणे संग। सच कर्म गुर चरन प्यार। कर किरपा कलि देवे तार। तारनहार आप दातार। साचा देवे शब्द अधार। देवे शब्द जाए तार। जो जन आए चल दरबार। भुक्खे नंगे होयण पार। बेमुखां हरि देवे दर दुरकार। वेले अन्त होयण ख्वार। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ साचा देवे तार। जोती जोत सरूप हरि विच मात जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ ल्या अवतार। निहकलंक तेरा अवतारा। निहकलंक भगत उधारा। निहकलंक सतिजुग शब्द चलावे जगत अपारा। निहकलंक राउ रंक इक्क कराए सच दरबारा। निहकलंक वजाए डंक सुहाए बंक जिस आए चल दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नरायण नर अवतारा। जोत सरूपी जामा धारा। करे खेल कलि अपर अपारा। सृष्ट सबाई मानस जन्म गए कलि हारा। गुरमुख विरले सन्त जन दर साचे उतरे पारा। सोहँ शब्द सुणाए कन्न, आप चुकाए जम का डर, गुरमुख दरस दिखाए साचा हरि, भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप तेरे आत्म दर दुआरे खड़ा। आत्म दर सच विचारो। हरि पावो पूरन पुरख अपारो। एका जोत जगाए प्रभ अबिनाशी साचा हिरदे वाचा अगम्म अपारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण आप बंधाए सृष्ट सबाई एका धारो। सृष्ट सबाई एका धार। एका शब्द चले विच संसार। चार वरन हरि आप सुनार। एका शब्द एका डंक चार कुन्ट कराए जै जैकार। वड वड राजे राणयां, प्रभ साचे करे ख्वार। गरीब बाल अञ्याणयां, प्रभ साचा देवे तार। गुरमुखां सुघड़ स्याणयां, प्रभ साचा देवे चरन प्यार। कलिजुग जीव मूर्ख मुग्ध बाल अञ्याणयां, प्रभ साचा मारे मार। प्रभ अबिनाशी गए भुलाणयां, मदिरा मास करे अहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर अवतार। मदिरा मासी जो जन होए। सच दरबारे रहे ना कोए। धर्म राए दे अग्गे रोए। पापां विच रहे परोए। आत्म भेव रहे ना कोए। बेमुख जीव कलिजुग रहे सोए। प्रभ अबिनाशी प्रगट होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार गुरमुख विरला जाणे कोए। सचखण्ड धर्म जैकारा। सोहँ नाम प्रभ रिहा वंड, गुरमुख विरला पावे सारा। बेमुखां आत्म होई रंड, छड्डुया हरि दरबारा। कलिजुग अन्तिम आई कंड, कोई ना पावे सारा। झूठी करन जगत विच वंड, झूठा दिसे सर्ब पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि करे सर्ब ख़ुआरा। सर्ब ख़ुआरी देवे कर। दर दर घर घर आवे डर। कोई ना दिसे साचा सर। खिच्चे जोत अवतार नर। गुरमुख भण्डारा तेरा भर। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना उचर। भंड भण्डारा तेरा भरया। प्रभ अबिनाशी आसा वरया। सोहँ दात अग्गे धरया। मानस जन्म होए रहिरासा, आवण जावण गेड़ निवरया। पूरन किया चरन भरवासा, कर दरस पार परया। आत्म जोत करे प्रकाशा। प्रभ अबिनाशी दर साचे खड़या। हउमे दुखड़ा आत्म नासा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा करया। गुरसिख राज जोग सच लीना। साचा नाम महां रस पीना। प्रभ अबिनाशी साचा दाना बीना। पार उतारे किरपा धारे जिस जन रसना चीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म शांत कराए जिउँ जल मीना। गुरमुख तेरी आत्म सति। सांतक सांतक सति वरतावे सति। आपे दे समझावे मति। गुरमुख हरि जाणे मित गत। सच शब्द धीरज देवे जत। वेले कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ साचा रक्खे पत। सोहँ साचा सच बीजाए आत्म साचे वत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द रखाए साचा तत्त। गुरमुखां हरि कर्म विचारे। मानस जन्म कलि संवारे। भरम भुलेखे सर्ब निवारे। साचा लेखा आप लिखारे। आप बहाए सच दरबारे। जिथ्थे वसे नर नरायण एका जोत जगे अपारे। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई पावे सारे। गुरमुख साचे रक्खी आस। देवे दरस आप पुरख अबिनाश। आत्म तृखा बुझाए प्यास। हरि हिरदे प्रभ साचा वस्सया, दिवस रैण सद रहे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन गाए स्वास स्वास। गुरसिख तेरा कर्म विचारया। मानस जन्म आप संवारया। भव सागर तों पार उतारया। साचा देवे शब्द अधारया। आत्म जोती दीप करे उज्जयारया। एका रंग रंगे करतारा सच सरकारया। मानस जन्म ना होए भंग, विच मात ना आवे हारया। साचा नाम चढ़ाया रंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना उचारया। गुरमुख तेरा आत्म प्यार। प्रभ अबिनाशी लए विचार। लेखा देवे सच दरबार। एथे ओथे रहण ना देवे सिर उधार। कर्म धर्म हरि दोवें लए विचार। बेमुखां दर आए शर्म, जूठे झूठे रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लाए पार। गुरमुख साचे रंग रंगाया। एका साचा रंग चढ़ाया। अंग संग संग अंग प्रभ साचा होए सहाया। प्रभ दर मंगी साची मंग, सच दान प्रभ भिच्छया पाया। मानस जन्म ना होया भंग, वेले अन्त होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बेड़ा पार कराया। भगत वछल आप गिरधारी। गुरमुख साचे पैज संवारी। साचा देवे नाम अधारी। सोहँ शब्द सच्ची अटारी। जिथ्थे वसे हरि निरँकारी। आओ सिक्खो करो सवारी। शब्द पवण हरि देवे अस्व भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। गुरसिख दुआरे साचे आओ। भरम भुलेखा सर्ब गंवाओ। पिछला लेखा मात चुकाओ। अगला लेखा धुरदरगाही साचे दर आए मुकाओ। क्यों रहे विच भरम भुलेखा, कोई मिले ना साचा थाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, मात जोत प्रगटाई अगम्म अथाहो। अगम्म अथाह, बेपरवाह, होए सहा, साचा हिरदे देवे नाम वसा। जो जन रसना लए गा। सोहँ चाबी देवे ला। साचा तन हरि रबाबी साची किंग दए वजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाड़ी बहत्तर एका देवे राग सुणा। काया खाट खट खटोला। एका ओढ़ शब्द चोला। एका बोले सोहँ बोला। एका तोल तुलो प्रभ साचा होए तोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कला संपूरन सोलां। सोलां कला संपूरन आप स्वामी। आसा मनसा पूरन वड नेहकामी। एका शब्द उपजावे साची तूरन, साचा नाम शब्द दमामी। बेमुख कलिजुग बैठे झूरन, होए निमक हरामी। बैठे वेखण दूरन, आत्म घाटा नाम खामी। वट्टण मूंह जिउँ पेटे विच सूलण, विष्टा खायण भोगण कामी। प्रभ अबिनाशी कीते चूरन, जिन्हां मिल्या हरि स्वामी। गुरमुख साचे कलि साचे सूरन, जिन्हां पाया हरि साचा अन्तरजामी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे बणया बानी। साचा बानी आप भगवाना। गुरमुख साचे सिक्ख हरि साचे संग रलाना। कलिजुग अन्तिम लेख लिख, सतिजुग फेर उपजाना। साची देवे नाम भिख, साचा वक्त फेर सुहाना। देवे वड्याई विच मुन रिख, जन सन्तां सिर ताज रखाणा। आत्म उतारे तृष्ना भुक्ख, साचा अमृत साचा सीर पिलावणा। साची सिख्या गुरसिख लैणी सिक्ख, मदिरा मास तजावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले हरि आप भगवानणा। साची सिख्या सिक्खी दान। गुरमुख साचे सच निशान। मूर्ख मुग्ध ना बण अज्ञाण। वेला कलिजुग अन्त पछाण। बण गुरमुख साचा सन्त, हरि चरन कर ध्यान। आप बणाए तेरी बणत, जिस दिया जिया दान। हरि हरि महिंमा बड़ी अगणत, क्या कोई करे वखान। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भरम भुलेखे आया पाण। गुरमुख साचा आप बणाया सन्त, जिस घर डेरा लाया आण। हरि पाया प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, कलि आया पुरख सुजान। मिले वड्याई विच जीव जन्त, देवे हरि साचा वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ साचा नाम निशान। सच निशान आप झुलाए, गुरमुख धरत मात उप्पर प्रभ आप रखाए, जिउँ सागर कँवल फुल। कलिजुग अन्तिम सोहँ बीज बिजाए, सतिजुग साचे जाए मवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए। देवे वड्याई, गुरसिक्खां होए सहाई, बणत बणाई, पैज रखाई, मिले वधाई, जोत प्रगटाई, गुरसिख तराई, घर साचे आए दर्शन पाई, तृखा मिटाई भुक्ख रहे ना राई। सतिजुग साचे मिले वड्याई। भाण्डे काचे हरि दे भन्नाई। बेमुख दर ते आए नाचे, दर घर साचे रहण ना पाई। गुरमुख साचे हिरदे वाचे, हरि देवे चरन सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। गुरसिख गुर एका धार। एका जगत इक्क विहार। एका शब्द एका धार। एका हरि प्रभ एका करतार। गुरसिख साचे दर घर

आए जाए तार। कर्म धर्म जरम प्रभ साचा लए विचार। बेमुखां निवारे भरम, जो आए चरन द्वार। दूतां दुष्टां आए शर्म, बैठे बैठ रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरा आत्म भरे भण्डार। आत्म भाण्डा आप भराना। एका अमृत मेघ बरसाना। साची देग घर साचे एका शब्द वरताना। चार वरन मिल दर घर साचे आणा। पी पी अमृत सर इन्द्र सिँघ तेरे साचे घर, मानस जन्म संसारी जीवां सुफल कराणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा छत्तर निशान वाली दो जहान देवे माण, लेखे लाण चुक्के काण विच जहान, तेरा नाउँ रखाणा। तेरा नाउँ सच निशाना। देवे माण हरि भगवाना। सच सरोवर तेरा धाम, पूर कराए हरि साचा कामा। पहरे मातलोक विच बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सच सरोवर तेरा धाम। पूर कराए हरि साचा काम। काया कौड़ी चिट्टे दाग प्रभ आप कराए शाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दात हरि बख्शे हरि नाम। सच सरोवर आप बनावणा। सतिजुग साचे विच उपजावणा। सौ चार करम दा गेड़ रखावणा। ऊँच नीच नीच ऊँच इक्क रंग रंगावणा। सच सुच्च प्रभ अबिनाशी विच अमृत साचा पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर अवतार आपणा चरन छुहावणा। आपणा चरन आप छुहाए। सर सरोवर आप बणाए। सतिजुग साचा राह दिसाए। पतिपरमेश्वर दया कमाए। जगत निशानी अटल रहि जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पूरन घाल कराए। पूरन सेव प्रभ दर कमाई। तन मन धन हरि अग्गे टिकाई। चन्दोआ चन्दन भेट चढ़ाई। सौ चार विच ल्या बणाई। सोहणा मन्दिर दे हरि बणाई। वसे अंदर हरि जोत जगाई। बेमुख जीव नचाए जिउँ बन्दर, दर घर साचे रहण ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखा देवे आप वड्याई। साचा तीर्थ साचा तट्ट। प्रभ अबिनाशी वसे घट घट। दुःख रोग सारे देवे कट्ट। जो जन आए सर सरोवर रसना लए भूमिका चट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निवारे पेट अफारे, जिन्हां वधाए पेट मट्ट। मात जोत प्रगटाए, साचे गुरमुख साचा लाहा लैण खट्ट। लहणा खट्टो, पाप कट्टो, नाम साचा वट्टो, अमृत साचा झट्टो, सोहँ तन हंढ्ढाओ पट्टो। जोत जगाओ आत्म मट्टो। झूठा खेल सृष्ट सबाई, जिउँ बाज़ीगर नटो। संसारी माया झूठी छाया, जिउँ खोते उप्पर छट्टो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई गुरसिक्खां दे वड्याई दिवस रैण सद रसना रटो। गुरसिख तेरा राम सहाई। आदि अन्त जिस बणत बणाई। रसना गाया हरि साचा कन्त, देवे आप वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खी ओट सरनाई। एका ओट रक्खी सरनाया। साचा फल प्रभ दर ते पाया। जाओ बलि बलि बलि प्रभ अबिनाशी दया कमाया। ना वेखो अज्ज ते कल्ह, वेला गया हत्थ ना आया। प्रभ भुलाए कर वल छल, गुर संगत मेल मिलाया।

सोहँ देवे आत्म साचा फल, गुरमुखां चोग चुगाया। आत्म दीपक जाए बल, जिस जन रसना गाया। अन्तिम वेला जाए ना टल, प्रभ साचा रिहा लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा बेड़ा पार कराया। बेड़ा तेरा देवे बन्नृ। आप उठाए आपणे कंध। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्द। सृष्ट सबाई कहे धन्न धन्न। गुरसिख जिस आत्म गया मन्न। प्रभ अबिनाशी एका शब्द सुणाया कन्न। भरम भुलेखा झूठ कढुया जन। सच वस्त लई संभाल। पंजां चोरां ना लाई संनृ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त बेमुखां देवे डन्न। वाह वाह गुर पाया। वाह वाह दर साचे माण गंवाया। वाह वाह आप ढाले साचे ढांचे, जिस हरि सरनी आया। वाह वाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मेल मिलाया। संजोगी मेल क्या कोई जाणे। जुगा जुगन्तर विछड़े, प्रभ साचा कलिजुग मेल मिलाणे। घट पीड़ जाणे अन्तरे, जन भगतां आप पछाणे। आप बणाए साची बणतरे, आत्म धाम सुहाने। साया हेठ बहाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां संग निभाणे। संग संग हरि संग निभावणा। रंग रंग हरि एका रंग रंगावणा। संग अंग अंग संग जन साची मंगे शब्द दात, प्रभ साचे झोली पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उज्जल मुख विच मात करावणा। उज्जल मुक्खड़ा आप करा के। कलिजुग अन्धेरी रात मिटा के। एका जात एका पात सृष्ट सबाई आप बणा के। एका एक पढ़ाए जमाइत, सोहँ मन मन्दिर विच बहा के। घर घर भाण्डे भरे बहु भांत, एका रक्खे जोत जगा के। बैठा रहे सद इकांत, हरि आपणा आप छुपा के। गुरमुख साचा वेख मार झात, हरि देवे दरस जोत प्रगटा के। आपे पुच्छे तेरी वात, सतिजुग साचा मात ला के। आपे देवे साची दात, साचा जाए धाम बणा के, साची पाए विच करामात, लंगढ़े लूले उतरन पार विच साचे तीर्थ नुहा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए माण दवा के। माण ताण हरि आपे रक्खे। सतिजुग साचे कीने वक्खे। लेख लिखावे अलक्खणा अलक्खे। कलिजुग जीव होए कक्खे। माया मोह अग्न विच भक्खे। मदिरा मास मुख विच रक्खे। अन्तकाल कलि जायण दोवें हत्थ सखे। गुरमुखां प्रभ साचा लजपत आपे रक्खे। एका बंधावे साचा चरन नते, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन नेत्र पेखे। नेत्र पेख पीड़ कढाओ। काया माया झूठा कपड़ा, झूठे चीर लुहाओ। क्यों नहावे तीर्थ छप्पड़ा, गुर चरन तीर्थ नहाओ। दर घर साचे साचा अपड़ा, प्रभ अबिनाशी पकड़े बांहो। बेमुखां प्रभ आप तुलाए जिउँ पापड़ पपड़ा, धुरदरगाही मिले ना थांउँ। अग्गे मिले ना तन ते कपड़ा, नंगा दोजक चल्लया अन्धेर राहो। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी तेरा साचा बप्पड़ा, आपे होए सहाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ। सच भूमिका सच अस्थान। धरया चरन आप भगवान। पवण पाणी हरि देवे माण। मढ़ी मसाणी जीव ना जाण।

सभनीं थांईं हरि प्रधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धाम सच चरन छुहाया। सच राम हरि कर्म कमाया। सच
जाम हरि नाम प्याया। सच धाम अमृत बरसाया। सच काम सोहँ साचा रसना गाया। ना लग्गे दाम, प्रभ अबिनाशी अनमुल्लड़ा
आप वरताया। हरे करे सुक्के चाम, हरि हरि नाम प्रभ रसना गाया। अन्तिम कोए ना पल्ले बद्धे दाम, खाली हत्थीं बाहर
कढाया। एका होए सहाई राम, मात पित भैण भाई सज्जण साक सैण भाण्डा अद्धविचकार दे भन्नाया। मढ़ी मसाणी गोर
बणाई झूठी काया झूठी माया विच रलाई। एका तेल अग्न लगाई, झूठी माटी विच ख़ाक रल जाणी। ओ बेमुख चढ़ जा
औखी घाटी, प्रभ सोहँ देवे नाम निशानी। आप लगाए साची हट्टी, लग्गे मूल ना इक्क दवानी। पापां मैल जाए काटी,
जो जन जाए चरन कुरबानी। साचा लाहा गुरसिख खाटी, वेले अन्त ना फेर पछताणी। एका जोत जगाए ललाटी, देवे
नूर सच्चा नुरानी। काया चोली तेरी पाटी, आपे सीं आपणी पशेमानी। अग्गे नेड़े दिसे वाटी, प्रभ साचा जाए डानी। सोहँ
दर साचे पाएं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच निशानी। सच निशाना लहणा देण। आत्म गहणा गुरसिख पहिण।
तीजे नैणां मन सुख लैण। मिल साध संगत विच बहिणा , भरम भुलेखे सारे लहिण। कलिजुग ना वहिणा झूठे वहिण, अन्त
पेखो आपणे नैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया मगर लगाई बेमुखां खाई जाए डैण। कलिजुग माया
८० ०३ मगर लगाई, भैण भरावां बण ना आई। माओ पुत्तां ना मिले वड्याई। धीआं पुत्तां होवे अन्त लड़ाई। दुध्धां पुत्तां वंड पूरी ८० ०३
ना आई। खण्ड खण्ड वंड वंड आपणे हत्थ रखाई। अन्तिम अन्त आए ना लए कोई छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, कलिजुग तेरी औध मुकाई। वंड वंडीआं आपे पा के। कलिजुग टेडीआं डण्डीआं कलिजुग जीव चला के। कलिजुग
जीव सुहागण नारां रंडीआं आप करा के। अमृत वेले उठ ना जागण, प्रभ अबिनाशी ना वेख्या रसना गा के। झूठे धन्दे
झूठे रागण, साचा राम मनों भुला के। दर घर साचा देण त्यागण, काम क्रोध हँकार वधा के। दर साचे तों दूर भागन,
मदिरा मासी मुख छुपा के। गुरमुख साचे गुर दर जागण, प्रभ रक्खे अंग लगा के। कलिजुग होए भाग वड भागण, प्रभ
साचा रक्खे गोद उठा के। आप बणाए हँस कागन, सोहँ चोग चुगा के। सोहँ शब्द उपजाए साचा रागन, साची धुन
आप उपजा के। जो जन प्रभ चरनी लागण, प्रभ जाए माण दवा के। आप बुझाए तृष्ना आगन, शब्द सरूपी तीर चला
के। काम क्रोध हरि दर तों भागण, सच आसण बैठा डेरा ला के। कलिजुग माया ना डस्से नागन, जो जन जायण दर्शन
पा के। आप तुड़ाए झूठे तागन, कलिजुग जीव जो बैठे पा के। गुरमुखां मिटाए आत्म दाग, सच नाम दी भट्ठी चढ़ा
के। आप फड़े अन्तकाल कलि वागण, शब्द घोड़ी खड़े चढ़ा के। गुरसिख तेरे वड वड भागन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, साचा जाए जोड़ जुड़ा के। जुड़या जोड़ ना जाए टुट्ट। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट। साचा नाम ल्या लुट्ट। बेमुखां जड़् देवे पुट्ट। धुर दरगाहों कढ्ढे कुट्ट। जमदूतां गल लैणां घुट्ट। ना होए सहाई कोई मां पुत्त। झूठे दिसण खाली बुत्त। धर्म राए दर पैंदे जुत्त। कलिजुग जीव भौंदे फिरन कुत्त। साचे घर साचे दर वढ्ढी जावे नक्क गुत्त। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ आप सुहाए साची रुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद राखो चित्त। चित्त चितारना हरि काज संवारना। आवण जावण गेड़ निवारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना उचारना। रसना उचारो लेख लिखारो। बण भिखारो मंगो दर द्वारो। देवणहार इक्क दातारो। खाली भरे सर्ब भण्डारो। दर घर साचे करो निमस्कारो। लहणा देणा साचा देवे कदे ना करे उधारो। गुरमुख साचा प्रभ दर लेवे, कलिजुग उतरे पारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे प्यारो। गुरमुख तेरे नाम वधाई। गुरसिख तेरी वड वड्याई। गुरमुख तेरी कथा कथन ना जाई। गुरसिख हरि साचे रथना आप चढ़ाई। प्रेम सरूपी पाए नत्थना, डोर आपणे हत्थ रखाई। सृष्ट सबाई आपे मथना, झूठी छाछ बणाई। भरम भुलेखा सारा लथ्थना, वेला अन्त हरि आप ल्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा बणत बणाई। सच मूर्त इक्क भगवान, कर्म विचारदा। चरन धूढ़ देवे इशनान, जन्म संवारदा। एका देवे माण ताण, गढ़ तोड़े झूठ हँकार दा। एका देवे शब्द निशान, इक्क वस्त हरि साची डालदा। एका विच बिठाए बबाण, हरि साचा वाली दो जहान दा। एका देवे आण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सद रंग माणदा। सर्ब जीआं हरि आपे जाणदा। भगत भगवन्तो साचे सन्तो। हरि चरन लगाए साचा कन्तो। आप मिटाए झूठे भेखाधारी बण बण बैठे जो वड महन्तो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां हत्थ देवे वड्याई सतिजुग साचा मार्ग लाई, बणत बणाए जीव जन्तो। जीव जन्त जीआं का दाता। गुरमुखां बणया भैण भ्राता। आपे आप आप हो आया, हरि बणया सच्चा पिता माता। आपे होए दाई दाया, किल विख पाप गंवाता। आपे होए साचा राही, सच मार्ग हरि साचा पाता। आप उठाए आपणी बांही, हरि घर दर प्रभ आप बहाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ साची नाम सुगाता। सोहँ सुगात, सुहाग रात, विच मात बंधे नात, प्रभ अबिनाशी साचा कमलापात। भगत जनां सर्ब घटां घट रक्खे वास। सोहँ देवे साची दात। पूरन प्रभ हरि अबिनाशी जन भगतां पुच्छे आपे वात। घट घट रव्या हरि घट वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर ना होए अन्धेरी रात। दर अन्धेर कदे ना होए। दिवस रैण इक्क जोत बलोए। गुर गोबिन्द दर बैठे दोए। दर घर साचे सोभा होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा रंग कलिजुग जीव ना जाणे कोए। दर घर रंग शोभ शिंगारी। गुरमुख साचा

८१
०३

तरे साची तारी। प्रभ अबिनाशी सच भतारी। आत्म सेज बणी निवारी। जिथ्थे लाया आसण भारी। सुखी होए भिन्नड़ी रैणारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पावे आपे सारी। हउँ आत्म सेज वछाईआ। फल फूलण बरखा लाईआ। सच शाहो संग रलाईआ। कर बेनन्ती ल्या मनाईआ। घर मिल्या साचा कन्त मिली वधाईआ। आप बणाए तेरी बणत, जगत वड्याईआ। होए सहाई आदिन अन्त, साची जोत करे रुशनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इन्द्र सिँघ तेरी पैज रखाईआ। चरन पूजयां होए पुजारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। आपणा फ़र्ज तेरा कर्ज गुरसिख दए उतारी। आत्म आपणी लैणी वर्ज, एका चरन करे निमस्कारी। सोहँ शब्द साची तर्ज, छत्ती रागां सिर सरदारी। बेमुख जीव ना कोई मर्ज, प्रभ देवे दर दुरकारी। जो जन दोवें जोड़ करे अर्ज, प्रभ साचा बख़्शणहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन देवे जन भगतां किरपा धारी।

✻ ६ जेठ २०१० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✻

राग जोग शब्द घनघोरा। माझे देस फिरे ढंडोरा। अग्गा नेड़े आया, वक्त रहि गया थोड़ा। प्रभ साचा दुःख दर्द रोग गंवा रिहा, जो दर आए चल के कोड़ा। गुरमुखां माण दवा रिहा, सोहँ देवे नाम धुरदरगाही घोड़ा। हरि आपणा खेल आप वरता रिहा, पैरीं पाउण ना देवे किसे जोड़ा। आपणे भाणे विच चला रिहा, आपे करे तोड़ विछोड़ा। हरि जोती खेल खिला रिहा, ना सके कोई मोड़ा। गुरमुख साचा चरन लगा रिहा, प्रभ साचे दी साची लोड़ा। घर साचे आप बहा रिहा, साची दरगाह कोई ना अटके रोड़ा। साचा सोहँ नाम जपा रिहा, हउमे ममता भन्नया फोड़ा। प्रभ साचे रंग रंगा ल्या, लग्गी प्रीत निभाए तोड़ा। दर घर साचा गुरसिख पा ल्या, ना होए कदे विछोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस चरनी सीस निवा ल्या, किसे वस्त ना आवे तोड़ा। एथे ओथे ना निखुट्टे। प्रभ अबिनाशी सद भण्डार अतुट्टे। बेमुखां हरि साचा कलि जड़्ह विच मात दे पुट्टे। गुरमुख साचे सन्त जन सोहँ लाहा लैण लुटे। अमृत साचा आप प्याए पी अमृत धार हो पहले घुट्टे। आत्म साचा सीर वहाए, दूई द्वैत पर्दा तुट्टे। हउमे दीर्घ रोग गंवाए, पंजां चोरां फड़ साचा कुट्टे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाई मिले वड्याई तत्ती वाह ना लागे शब्द भण्डारे वड अतुट्टे। खाणी बाणी कवण विचारे। आत्म लोभी वड हँकारे। ना मिल्या साचा धोबी, जो पांपां मैल उतारे। एका एक हरि एका साचा नाम वरतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नरायण नर, चार कुन्ट चार वरन एका शब्द चलाए विच संसारे। शब्द बाण हरि आप चलाया। तीन लोक दे विच फिराया। पवण सरूप सर्ब जणाया। बिन रंग रूपी विच

समाया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणा राह छुपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाया। सच बाणी ना शब्द वखाणयां। कलिजुग भुल्ला जीव अञ्याणयां। गुर अर्जन भेव ना पाणयां। आपणा किया आप वखाणयां। मनमुख मूढ़ आत्म गन्दे, लग्गे झूठे धन्दे, बण बैठे वड वड बाणीआं। मायाधारी करन ख़ुआरी आत्म हँकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत प्रगटाए, सोहँ साचा डंक वजाए, बेमुख जायण जड़ पुटाए जो लग्गी दिसे विच पतालया। ढोल ढमक्का झूठा वज्जे। कूड़ कुड़यारा कौण पर्दे कज्जे। झूठा दिसे सर्ब पसारा, आत्म अन्धयारा सिर बद्धा पापां छज्जे। दर साचा पाया हरि अबिनाशी जिस शब्द सुणाया, कोई ठहिर ना पाया, वाहो दाही जायण भज्जे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई, सिँघ सिँघासण डेरा लाई, भेव खुल्हाए भरम चुकाए, आपणा पहनाए शब्द साचा झग्गे। शब्द बाणी गुर आप उचारदा। बिन गुर पूरे कोए ना लेख लिखारदा। आदि जुगादि जुगो जुग बेमुखां पासा आवे हारदा। जोती जोत सरूप हरि जन भगतां काज सवारदा। शब्द बाण गुर आप चलाए। बेमुखां तन अग्न लगाए। गुरमुखां हरि मग्न रखाए। आत्म हँकारी नाम नग्न रखावे, गुरमुख साचा पूरन ब्रह्म विचारे प्रभ साचा तेरे विच समावे। साची जोत करे अकारी, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। एका जोत एका शब्द अधारी, दूई द्वैत आप मिटावे। एका शरअ इक्क शरायत, ऊँच नीच ना सच दरबारी। एका हरि अबिनाशी करे हमायत, राउ रंक सर्ब इक्क वड सिक्दारी। सृष्ट सबाई एका नायक, आवे जावे वारो वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण कलिजुग वरते खेल न्यारी। जोत सरूप कलि खेल न्यारा। वेख वेख कलि भुल्ला सर्ब संसारा। जीव जन्त ना हरि विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात ल्या अवतारा। जोत सरूपी जामा धारया। साचा लेख आप लिखा रिहा। बेमुखां वेख वखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब गवा रिहा। माली खोजे खोज विचारे। माया बोझे भरे भारे। दरस ना पाए प्रीतम साचे चोजे, भुल्ले रहे सर्ब गंवारे। अन्तिम होए काया कोझे, ना बणया कोए सहारे। दर घर साचा मूल ना सूझे, अजे ना खुल्ल्हे आत्म दर दुआरे। गुरमुख विरला प्रभ चरन प्रीती जूझे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण देवे दरस अगम्म अपारे। आत्म बूझ बूझ विचारो। नरायण नर इक्क करतारो। दिवस रैण इक्क नाम चितारो। ओअं सोहँ चले विच संसारो। आप बणाए साची धारो। कलिजुग जीव की करे विचारो। आपणा आप भुल्ले, कलिजुग जीव मूर्ख मुग्ध गंवारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए निहकलंक नरायण नर अवतारो। अगाध बोध शब्द हरि गाथा। गुरमुख विरला हरि चाढ़े साचा राथा। बेमुख दर रहण ना पायण, हरि ना टिकाए माथा। वेले अन्त

दे सजाए, आपे पाए नक्कीं नाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाक भविख्त रिहा लिखाए, प्रभ दी महिंमा अकथ्थना अकाथा। वाक भविख्त हरि आप लिखावणा। कलिजुग झूठा भेख मिटावणा। गुरमुखां हरि चरनी सीस झुकावणा। हँकार हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं करे ख़ुआरीआं प्रभ दर दर घर घर आप भवावणा। बेड़े डोबे विच मंञधारीआं, ना किसे पार करावणा। एका वड्डा हरि संसारीआं, हिसाब किसे ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग जगत चलावणा। साचा राह जगत चलावणा। साचा थां आप सुहावणा। साचा नाम इक्क जपावणा। साचा काम आप करावणा। लिख्या लेख ना किसे मिटावणा। सतिजुग साचा मात लगावणा। कलिजुग भाण्डा काचा भन्न वखावणा। बेमुख दर ते आए नाचा, हरि साचा भेव ना पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा हरि आप उठावणा। शब्द डण्डा सिर जाए लग्ग। आपे तुट्टे काया तग्ग। मानस जन्म मिल्या बणया हँस कग। झूठा मुख वाद विवाद वखाणे, देवे माण विच जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे जो जन चरनी जायण लग्ग। सच नगर हरि दास है। एका जोत सच्ची प्रकाश है। प्रभ अबिनाश पुरख अबिनाश है। ना होया बेमुखां दास है। गुरमुखां सद वस्सया पास है। पूरन कराए आस, जो जन तजाए मदिर मास है। साचा शब्द रसना गाए स्वास स्वास है । साचे दर ना होए कोए निरास है । मानस जन्म होए रास है। झूठी माया करे नास है। एका जोत एका गोत, तीन लोक विच वास है। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड प्रभ साचे दे दास है। लक्ख चुरासी कर कर हेरा फेरा, आप कराए नास है। बेमुखां अन्त कराए नबेड़ा, जो रहे झूठा झक्ख मार है। ना कोई दिसे नगर खेड़ा, जिथ्थे हरि मिलण दी ना आस है। आपे जिस थम्मया गगन अकाश है। धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा, दूजा कोए ना तेरे पास है। प्रभ अबिनाशी तुध बिन पार लँघावे केहड़ा, बेमुखां अन्तिम करना नास है। गुरमुखां बन्नू वखावे बेड़ा, साचा देवे शब्द बाणी अकाश है। आप कटाए लक्ख चुरासी गेड़ा, जन होया दासन दास है। जोती जोत सरूप हरि, आदि जुगादि एका साची जोत करे प्रकाश है। साची जोत हरि प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासे। सर्ब घटां घट रक्खे वासे। तन मन्दिर हरि वसे अंदर। जोत जगाए तेरी काया अन्धेर कंदर। आप तुड़ाए तेरी जंदर। कलिजुग भुल्ला क्यों जीव बन्दर। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे तेरी आत्म अंदर। आत्म वेख दर दुआरा। जिथ्थे वसे हरि गिरधारा। वेखे विगसे करे विचारा। रूप रंग ना कोई पावे सारा। साचा संग निभावे गुरसिख तेरा होए प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, निज घर साचे वसे, हरि पूरन बूझ बुझारा। निज घर वासी आसण लाया। जोत सरूपी दीप जगाया। दिवस रैण इक्क कराया। एका शब्द मन वसाया। माया पर्दा आपे लाहया। बेमुखां हरि आप भुलाया। गुरमुखां

हरि जाग लगाया। आत्म धो दाग वखाया। सोहँ साचा राग सुणाया। दर घर साचा आप खुलाया। द्वार दस्म दी बूझ बुझाया। एका एकँकार एका धुन सुन्न समाधी आप तुड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण गुरमुख साचा एका रंग रंगाया। एका रंग आप रंगाए। गुरमुखां अंग संग निभाए। मानस जन्म ना भंग कराए। अंग अंग दे विच समाए। दरस दान दर ल्या मंग, साची भिच्छया प्रभ साचा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण हरि आपणा आप बिरद रखाए। काया कोट किला अटारी। वसे विच हरि मुरारी। सुख आसण बैठा आप निराधारी। साची जोत हरि निरँकारी। पूर्ब कर्म हरि रिहा विचारी। चित्र गुप्त अट्ठे पहर लेखा लिखे लिखारी। बेमुख झूठे धन्दे लग्गे आत्म होई हँकारी। आत्म गन्दे आप उठाए मदिरा मासी होए ख़ुआरी। आत्म अन्धे आप रखाए, गुर अर्जन बाणी मनों वसारी। जोती जोत सरूप प्रगट निहकलंक बेमुखां करे आप ख्वारी। हरि गाया मन भए अनन्दा। प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदा। परम पुरख परमेश्वर वड दाता सुरपति राजे इन्दा। दूई दुष्ट आप मिटाए जो दर आए करन निंदा। गुरमुख साचे आप तराए, दरगाह साची आप बहिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गुणी गहिंदा। गुरसिख तेरी घाल निराली। प्रभ अबिनाशी प्रीत कमा ली। काया सीतल आप रखा ली। बणया मीत हरि बनवाली। रखणा चीत घनकपुर वाली। मानस जन्म जाणा जग जीत, कदे ना होए भण्डारा खाली। हरि काया कीनी सीत, अमृत देवे धार निराली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणया आपे वाली। पतिपरमेश्वर पित तुमारा। दर घर आए काज संवारा। राज तख्त सच निशान गुर चरन दुआरा। एका रक्खो चरन ध्यान, देवे दरस अगम्म अपारा। पारब्रह्म पूरन भगवान, साचा देवे नाम अधारा। भगत भगवान एका जाण, मिल्या हरि साचा गिरधारा। आवण जावण सर्ब मिट जाण, जन्म ना पाए दूजी वारा। एका राखो चरन ध्यान, कलिजुग भुल्लया सर्ब संसार। हरि साचा वाली दो जहान, सर्ब जीआं दा इक्क दातारा। दर आए सर्ब तर जाण, चरन प्रीत करन निमस्कारा। आत्म वज्जे साचा बाण, सोहँ खोले शब्द कुआड़ा। आप रखावे गुरसिख तेरी शान, बहावे विच सच दरबारा। आपे देवे साचा माण, पूरन कर्म हरि विचारा। एका ओट सच्ची भगवान, दूसर दिसे झूठ पसारा। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, क्या कोई रक्खे भेव जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे प्यारा। तन दुःख जो लग्गे रोग। आप मिटाए चिन्ता सोग। साचा नाम लैणा जोग। रसना रस हरि का नाम लैणा भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कर्म विजोग। नेत्र नीर दुखिया रोए। बुझी जोत ना देवे कोए। साची जोत ना कोए बलोए। पुत्तर धीआं भैण शरा सहाई होए ना कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे

जो जन दोए जोड़ अग्गे खलोए। किरपा कर हरि उधारे। सर्ब दुःखा हरि आप निवारे। साचा सुख देवे नाम अधारे। उतरे दुःख मिटे भुक्ख, दरस पाया हरि गिरधारे। एका मिल्या साचा सुख, प्रभ चरन कँवलारे। उज्जल होया गुरसिख मुख, उप्पर सारी धवलारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण ना कोई जाणे कमलारे। सच प्रीती साचा माही। कलिजुग भुल्लयां पावे राह। आप कटावे जम की फाही। साची नईआ दे चढ़ाई। सोहँ विच मात टिकाई। आपणा बणे आप रथवाही। वंञ मुहाणा इक्क लगाई। संसार सागर गुर पार कराई। अमृत गागर दे टिकाई। कर्म उजागर गुरसिख बणाई। साचा बणया दर सुदागर, नाम वस्त जन वणज कराई। आत्म जोती रहे इकागर, एका सेव चरन कमाई। आपे देवे शब्द चिट्टी चादर, वेले अन्त लए गोद उठाई। सेव कमाई बण वड सूरबीर बहादर, बाकी लेखा रहे ना काई। पिछला लेखा गया मुक्क, आया चल प्रभ साचे दी सच सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लए जोत मिलाई। जगन नाथ हरि जोत मिलाए। गगन नाथ विच गगन टिकाए। मग्न नाथ आत्म मग्न गुरसिख रखाए। रंगन नाथ आपणा रंग नाम चढ़ाए। सगन नाथ वेख आपणे संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती मेल मिलाए। मातलोक दा मुकया दाना। साचा दाना जिथ्थे वस्सया हरि भगवाना। एका साचा सच टिकाणा। गुरसिक्खां साची संगत रल जाणा। बेमुखां साचे दर तों उठ उठ जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए आप मिटाए आणा जाणा। आवण जाण आप कटाए। छुट्टे देह जोत मिलाए। झूठा काया भाण्डा भन्नया, अन्तिम अन्त मिट जाए। प्रभ अबिनाशी राह साचा दस्सया, सोहँ शब्द पार लँघाए। प्रभ साचे दा साचा शब्द वेले अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होए सहाए। खोजो राम देवे सच नाम। साचा नाम पूर कराए काम, ना होए खाम। ना होए ख़ाम, अग्गे मंगे ना कोई दाम। हरया होवे सुक्का चाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम। सोहँ देवे नाम हरि निधाना। धुरदरगाही साचा सच ख़ज़ाना। गुरमुख साचे खा खर्च निखुट्ट कदे ना जाणा। आपे खोल्हे तेरी सुरत, चरन प्रीती नाता तुट्ट ना जाणा। एका जोत अकाल मूर्त, जन भगतां हरि विच समाना। एका शब्द उपजावे साची तूरत, एका देवे चरन ध्याना। बेमुख दर ते रहण झूरत, ना मिल्या कोई टिकाणा। दर घर साचे रहे दूरत, मदिरा मास मुख रखाणा। आत्म उपजे ना साचा नूरत, दीपक जोती हरि बुझाणा। गुरमुख साचे हरि सर्ब गुणां भरपूरत, आपे देवे नाम धन माल ख़ज़ाना। गुरमुख साचे तेरे दर रखाए साची मूर्त, जगत रव्हे नाम निशाना। बेमुखां हरि सद ही दूरत, आपे मेटे मेट मिटाना। रसन बोल जो बोलण कूड़त, विष्टा मुख हरि आप रखाना। आपे पाए आत्म जूड़त, धर्म राए दे दर टिकाना। गुरमुख साचे कदे ना झूरत, मिल्या

मेल हरि भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार कलिजुग विच मात पछाना। साचा नाम जगत ढंडोरा। कलिजुग अन्धेर होया अन्ध घोरा। दिवस रैण धन्न साचा लुटण चोरा। सृष्ट सबाई होई फफ्फे कुट्टण, प्रभ अबिनाशी भुल्लया मोरा। मदिरा मासी झूठे बुल्ले लुटण, वेले अन्त ना होवे छुटकारा। गुरमुख साचे अमृत बूंद आत्म सुटण, आत्म जोत होए उज्जयारा। अन्तकाल जम लेखे तों छुट्टण, होए सहाई आप निरँकारा। शब्द पंघूड़ा साचा झूटण, देवे नाम इक्क हुलारा। आप लगाए साचे बूटण, गुरमुखां हरि आप वड्डिआरा। पैण ना देवे किसे फुट्टण, इक्क घर होए दो फाड़ा। चरनी नाता ना देवे टूट्टण, पूरा गुर सच्चा करतारा। आप पहनाए तन सोहँ साचा सूटण, सिर रक्खे हत्थ आप गिरधारा। साचा लहणा गुरसिख प्रभ दर लुट्टण, साचा देवे नाम खुमारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक बल बलकारी। गुरमुखां जाए पैज संवारी। बेमुख जीव रहे कलि झक्ख मारी। आपणा मूल जायण हारी। जूए बाजी आपणी हारी। भुल्लया इक्क सच्चा अवतारी। सृष्ट सबाई विच पसारी। आवे जावे वारो वारी। कलिजुग खेल करे न्यारी। हँसा रामा होए अवतारी। काहना कृष्ना नैण मुँधारी। गुरू नानक गोबिन्द उडारी। सच धाम इक्क जोत अपारी। अन्तिम अन्त प्रगट जोत, निहकलंक विच मात लए अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

८७
०३

वरते खेल अपर अपारी। वरते खेल अपर अपारा। आपे जाणे आपणी सारा। मायाधारी भुल्ले जीव गंवारा। प्रभ अबिनाशी साचा मनों विसारा। ज्ञानी ध्यानी वड इशनानी, मदिरा मास करन अहारा। साची भुल्ली इक्क निशानी, साचा नाम ना किहा अपारा। अन्तिम लग्गे दुक्खां कानी, काया रोग लग्गे भारा। गुरमुख साचे तेरा साचा बानी, आपे होए आप रख्वारा। एका देवे सोहँ नाम निधानी, दिवस रैण सद रसन उचारा। चरन निमस्कार वड्डी कुरबानी, साचा शब्द खण्डा दो धारा। गुरमुख साचे सच कर मानी, करे कराए हरि वड सिक्दारा। तुटे माण सर्ब अभिमानी, बैठे बण वड हँकारा। ना कोई बूझे बूझण शब्द ज्ञानी, आत्म अन्धे होए ख्वारा। किते ना लभ्भे धर्म निशानी, आत्म लोभी होए गंवारा। झूठे जूठे मुख जूठे पढ़ण बाणी, गुर अर्जन मनों वसारा । गुर गोबिन्द जो साचा बानी, चार वरन दा इक्क प्यारा। एका रंग आप रंगाया , एका राह चलाया न्यारा। पंचम आप प्रधान बणाया, अग्गे करे आप निमस्कारा। कलिजुग अन्तिम पंचम झूठे धन्दे लाया, झूठा करन वपारा। आत्म लोभी होई हँकारी, लुट लुट खायण गुरदुआरा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप बैठा वेखे विच सच्चे दरबारा। प्रगट जोत निहकलंक पंचम जेठ विच मात लए अवतारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पाए आपे सारा। सृष्ट सबाई लए सोध। भेव चुकाए जो जन बैठे आत्म बोध। दिवस रैण जो दगे कमायण, दूरों दिसण आत्म

सोध । चोर यार ठग्ग बण जायण, आत्म वसे काम क्रोध। गुरमुख तेरा अजे ना खुल्लया तीजा नैणा बण बैठा वड जोधन जोध। साचा लहणा प्रभ दर लैण, जो आत्म लैण सोध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए अगाध बोध।

✻ ६ जेठ २०१० बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड भुचर ज़िला अमृतसर ✻

साचे सन्त तेरी धन्न कमाई। साचे सन्त हरि लिव लाई। साचे सन्त तेरी हत्थ वड्याई। दे मति गुरमुखां दे समझाई। साचे सन्त तेरी आत्म सति रुशनाई। साचे सन्त प्रभ अबिनाशी पूरन बूज बुजाई। साचे सन्त एका राखो हरि सरनाई। साचे सन्त अगाध बोध शब्द जणाई। साचे सन्त तेरी प्रभ साचे संग बण आई। साचे सन्त साचा हरि देवे जोत जगाई। साचे सन्त दिवस रैण रैण दिवस हरि रक्खे एका रंग रंगाई। साचे सन्त कलिजुग जीव झूठे छड्डे मात पित साक सज्जण माई। साचे सन्त मिल्या हरि साचा कन्त, इक्क सुणया शब्द साचा तत्त आप बणाई। साची बणत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ दे वड्याई। साचे सन्त सति वरतंत। साचे सन्त पूरन जोत देवे भगवन्त। साचे सन्त होए हज़ूर साचा कन्त। साचे सन्त अंग संग आप रहाए देवे वड्याई विच जीव जन्त। साचे सन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दे दिखाए, बैठा दिसे इकन्त। साचे सन्त हरि बूझ बुझाई। साची सेवा मात लगाई। सन्त मनी सिँघ शब्द सुणाई। पतिपरमेश्वर दया कमाई। दोए जोड़ करे बन्दन आया चल सरनाई। लिख्या लेख कौण मिटाए प्रभ साचा रिहा लिखाई। आप आपणी बणत बणाए, जिउँ मात पिता पुत्त माई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात देवे वड्याई। सन्त मनी सिँघ शब्द धुन्कारा। आत्म दिया इक्क शब्द अधारा। एका रंग रंगे करतारा। प्रभ दर मंगे साची मंग, आत्म भरे सर्ब भण्डारा। आप चढ़ाया सच मजीठी रंग, आपे खोल्हे दस्म दुआरा। आप कसाया शब्द सरूपी साचा तंग, चार कुन्ट किया अस्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका देवे शब्द नाम अधारा। साचे सन्त हरि देवे दात। सोहँ शब्द वड करामात। दिवस रैण सद रसना गायण, आपे पुच्छे तेरी वात। आप जपे अवरा नाम जपाए, होए सहाई तेरा अन्त अन्त विच मात। ऊँच नीच प्रभ इक्क थां बहाए, सोहँ शब्द इक्क करामात। तीर्थ तट कोई रहण ना पाए, कोई ना दिसे ज़ात पात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ हत्थ फड़ाए कलम दवात। गुरमुखां प्रभ आप जणाई। बेमुखां सिर छाही पाई। साचे सन्त संग बण आई। धन्न धन्न धन्न हरि सेव कमाई। बेड़ा बंध हरि आप वखाई। मिटया जन जो आया सरनाई। संग शब्द हरि लए मिलाई। सन्त मनी सिँघ चरन धूढ़ छुहाई। साचे लेखे लए लगाई। जिथ्थे

वसे हरि इक्क रघुराई। ओथे कोई पहुंच ना जाई। गुरमुख साचे प्रभ पुचाए पकड़ बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां घाल थाएँ पाई। साचे सन्त सति वरतारा। साचा भरया रहे तेरा भण्डारा। साचा नाम जगत वरतारा। चार कुन्ट किया जैकारा। आप उठाए सोए जगाए, घर घर दर दर डंक वजाए, निहकलंक ल्या अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक सुत्ता पैर पसारा। पुरी घनक हरि जामा पाया। सृष्ट सबाई आप भुलाया। साचे सन्त मेल मिलाया। शब्द सरूपी खेल रचाया। बिन बाती बिन तेल एका दीपक आप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे मालवे चरन छुहाए। माझा मालवा इक्क कराए। वेला अन्त कलिजुग ल्याए। गुरमुख साचे सन्त गले लगाए। बेमुख कलिजुग जीव रहण ना पाए। प्रभ अबिनाशी सर्ब मन्ने एका ओट रखाए। चार कुन्ट सोहँ शब्द होए धन्न धन्ने, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका रंग रंगाए। सन्त मनी सिँघ सच तेरी धारा। साचा घर साचा दर साचा वर कर चरन निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी साचा ल्या वर, कलि चरन लाग गया तर, एका मिल्या शब्द भण्डारा। ना उह जन्मे ना उह मरे सृष्ट सबाई हरि वरतारा। गुरमुखां हरि बेड़ा बन्न्हे, जो जन आए चल दुआरा। बेमुखां प्रभ धौणां भन्ने, जो जन दर आए हँकारा। बेमुखां होए आत्म रंडे, मूर्ख मुग्ध गंवारा। गुरमुख साचे लाए बन्न्हे, दर घर साचे आए करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक ल्या अवतारा। भोग लगाए हरि भगवाना। चिन्ता रोग सर्ब मिटाणा। साचा सुख हरि उपजाणा। आत्म दुःख रहण ना पाणा। माता कुक्ख सुफल कराणा। उज्जल मुख जगत रखाणा। प्रभ अबिनाशी आप उपजाए, गुरमुख साचे वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर तेरे भाग लगाणा। माहणा सिँघ तेरे घर वधाई। लहणा देणा सतिगुर साचा दर घर आए दए चुकाई। साचा गहणा सोहँ तेरे आत्म तन पहनाई। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, एको रक्खो हरि सरनाई। एका शब्द सुणाया काना, आत्म करे जोत रुशनाई। अन्त काल ना कलिजुग डरना, दर घर साचे हरि माण दवाई। कलिजुग जीव अन्तिम आया, वेखा वेख रहे वक्त लँघाई। गुरमुख लहणा लैण नाम धना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगो जुग जन भगतां होए सहाई। माहणा सिँघ मन साचा मानया। प्रभ अबिनाशी साचा जाणयाँ। हरि लेखे तन लगानयाँ। झूठे जीव मारन ताहन्याँ। ना कोई पछाणे मात जोत प्रगटाए वाली दो जहानयँ। चुप्प चपीता डेरा लाए, घनकपुर वासी साचा आपणा अनहद राग उपजाए, बेमुख होए मदिरा मासी, मुख विष्टा सद रखान्याँ। गुरमुख साचे तेरी आत्म रहिरासी, साचा नाम स्वास स्वास जपान्याँ। हरि पाया प्रभ अबिनाशी, दर आया वक्त सुहान्याँ। लहणा देणा रहे ना बाकी, लक्ख चुरासी गेड़ चुकान्याँ। एका जोत मात प्रकाशी, अज्ञान अन्धेर मिटान्याँ।

गुरमुख साचे तेरी आत्म रहिरासी, सतिजुग सोहँ साचा गीत गान्याँ। आपे करे तेरी बन्द खुलासी, जिस दा दित्ता पीणा खाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत घर साचे भोग लगान्याँ। दर घर आए भोग लगाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। सृष्ट सबाई भरम भुलाए। गुरमुख साचे आप जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाए। एका जोत होए रुशनाए। दूई द्वैत पड़दा लाहे। एका एक रंग गुरसिख रंगाए। मदिरा मास कोई रसन ना लाए। सोहँ स्वास स्वास ध्याए। ओअं सोहँ एका अंक, प्रभ साचा आप रंगाए। भुक्ख नंग सर्ब गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आप वड्याए। गुरमुखां हरि दे वड्याई। शब्द ताज सिर रखाई। आप आपणी पैज रखाई। पूरन सेवा घाल पाल सिँघ संग रलाई। सन्त मनी सिँघ तेरी वड वड्याई। बाहों पकड़ गुरसिक्खां चरन लगाई। तेजा सिँघ संग रलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांह हत्थ फड़ाई। उठो जीव जागो, प्रभ साचे दी चरनी लागो। वेला गया हत्थ ना आई। उची कूक कूक पुकारे, होके देवे वांजां मारे, सन्त मनी सिँघ आप लल्कारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक मात जोत प्रगटाई। गुरसिख तेरा धाम अवल्लड़ा। हरि जोत प्रगटाए एका दिसे साचा घर, विच मात इकल्लड़ा। गुरमुखां हरि भारी करे पल्लड़ा। बेमुखा अन्तिम अन्त हरि रक्खे सिर चमड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण, गुरसिख तेरे आत्म देवे लाल अनमुल्लड़ा। लाल अनमुल्लड़ा दीआ नाम। एक पिलाए साचा जाम। मिल्या प्रभ साचा हरि राम। पूरन होए कलिजुग काम। निखुट्ट ना गए साचे दाम। कलिजुग अग्न विच तलया झूठा नाम। प्रभ अबिनाशी तेरी छत्तर छाया हेठ पलया, जिस गाया तेरा नाम। माहणा सिँघ तेरा उज्जल मुख रखाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाया तेरा धाम। घर न्यारा बैठा विच हरि करतारा। वस्त देवे नाम हरि थारा। तरसण जीव कलि गंवारा। दर दर फिरन मंगण भिख ना कोई पाए होए फिरन भिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कवण देवे नाम अधारा। बेमुख जूठे झूठे ठूठे कलिजुग भराए, होई आत्म अन्ध अन्धयारा। मायाधारी विषे विकारी होए हँकारी, प्रभ अबिनाशी मनो विसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ पुरी घनक ल्या अवतारा। पुरी घनक हरि जामा पाए। आप आपणी देह तजाए। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। अचरज खेल कर विच मात दे आए। भरम भुलेखे सृष्ट पाए। गुरमुख साचे दर घर आए लाए लेखे, महिंमा अगणत गणी ना जाए। साची भिच्छया कोई ना मंगे प्रभ दर आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे घर भण्डारे भोग लगाए, मात जोत प्रगटाए। हरि जन जन हरि साजन साज्जया। हरि जन जन हरि वसे इक्क दर दरवाज्जया। हरि जन जन हरि एका देवे किरपा कर गरीब निवाज्जया। हरि जन चरनी लग्ग गया तर, हरि साचा विच

मात दे रक्खे लाज्जया। जन हरि चुक्का डर, प्रगट होया विच देस माज्झया। जन हरि वसया घर, कलिजुग बुझी आत्म
तृष्ना आज्ञा। जन हरि हरि जन प्रभ एका एक देवे कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। हरि जन हरि रंग माण।
हरि जन हरि साचा जाण। हरि जन जन हरि एका जोत बली बलवान। हरि जन जन हरि एका माल धन वस्त सच
संभाल। हरि जन जन हरि तेरी आत्म कदे ना होए कंगाल। हरि जन हरि साची वस्त देवे, सोहँ साचा लाल। हरि
जन चरन प्रीती तेरी निभे नाल। हरि जन प्रभ अबिनाशी आप उठाए, आपणा बिरद संभाल। हरि जन महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, आपणी शरन लगाए, विच मात करे पछाण। हरि जन हरि संग रखाया। हरि जन जन हरि प्रभ एका
रंग रंगाया। हरिजन जन हरि मानस जन्म ना भंग कराया। हरिजन दरस दान दर साचे मंग, प्रभ अबिनाशी होए सहाया।
हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। हरिजन हरि साची धार। मिल्या हरि साचा भतार।
दे दरस अन्त जाए तार। गुरमुख साचा सन्त प्रभ साचा करे प्यार। कलिजुग भुल्ले सर्ब जीव जन्त, एका दिसे पासा हार।
बेमुखां माया पाए बेअन्त, मानस जन्म चले जूए हार। गुरमुख साचे आप उठाए सन्त, एका बख्शे चरन प्यार। होवे मिलावा
६१ साचे कन्त, गुरमुख आत्म बूझ बुझार। जोत प्रगटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। ६१
०३ हरिजन हरि घर साचे पाओ। दर घर साचे मंगो वर, अन्तकाल जम फंद कटाओ। आत्म होया बन्द दर, साचा नाम ०३
चाबी लाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटाओ हरस, दरगाह साची माण रखाओ। हरिजन हरि सज्जण
सुहेला। आप कराए विछड़यां कलिजुग मेला। बेमुखां बेड़ा शौह दरयाए ठेला। सन्त जन हरि आप कराए सतिजुग साचा
मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। हरिजन हरि रंग वेख।
कलिजुग झूठा छड्ड भेख। हरिजन हरि रंग नेत्र पेख। हरिजन हरि अबिनाशी एका वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
आपे करे बुध बबेक। हरिजन तेरी उत्तम जाती। देवे दरस हरि सुत्तयां रातीं। हरिजन मिले वड्याई विच लोक माती।
हरिजन जन हरि प्रभ एका रंग रंगाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां संग निभाती। हरिजन हरि साचा
संगी। साचा दरस दान घर साचे मंगी। प्रभ अबिनाशी होए सहाई सद रहे अंग संगी। सृष्ट सबाई अन्तकाल कलिजुग
बिन हरि नामे होई भुक्खी नंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए चार कुन्ट कराए एका जंगी। हरिजन
हरि वस्त संभाल। चरन प्रीती निभे नाल। हरिजन ना होवे मात कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे
नाम धन माल। नाम धन सच ख़ज़ीना। देवे हरि घर आए प्रबीना। गुरमुख साचे रसन जपीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आप आपणे रग रंगीना। आप आपणे रंग रंगाए। गुरमुख साचा मात वड्याए। आपे जाणे लेख लिखाए। जोत सरूपी भेख वटाए। भरम भुलेखे सर्ब भुलाए। गुरमुख साचे लेखे आप लगाए। माण निमाणयां देवे दात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई सिँघासण बैठा डेरा लाए। गुरसिख तेरा सिँघ सिँघासण, प्रभ अबिनाशी होया दासण दास। दर घर आए साचे हरि, गए दु:ख रोग करे विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत करे प्रकाश। आत्म जोत हरि प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब निवासे। दुखड़ा रोग ना रहे मासे। उज्जला मुखड़ा सतिगुर तेरे भरवासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रहिरासे। मानस जन्म तेरा होया रास। किरपा करे पुरख अबिनाश। आपे होया जन भगतां दासन दास। दिवस रैण रैण दिवस सद रक्खे आत्म वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे प्रकाश। जोत निराली आत्म दिया। साचा बीज गुरमुख साचे आत्म सोहँ बीआ। वज्जे वधाई दर घर आए साचे हरि साची जोत जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेल मिलाया कर के साचा हीआ। आप आपणा मेल मिलाए। साचा सज्जण सुहेल आप बणाए। एका शब्द नकेल पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जाए भाग लगाए। गुरमुखां पाया हरि भगवाना। हरि हरि देवे साचा नाम निधाना। भर भर जावे आत्म नाम ख़ज़ाना। घर घर जाए दर दर आए प्रभ साचा लेख लिखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां हत्थ बन्ने सोहँ शब्द साचा गाना। सोहँ गाना देवे बन्न। कलिजुग अग्न ना लागे तन। एका शब्द सुणाए कन्न। गुरमुखां आत्म जाए मन्न। प्रभ बेड़ा देवे बन्न। आप उठाए आपणे कन्न। सतिजुग उपजाए साचे चन्न। ना लग्गे कदी संन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाण्डा भरम भउ देवे भन्न। भाण्डा भरम आप भन्नावणा। एका राह सतिजुग चलावणा। एका थां सर्ब बहावणा। एका नाम सर्ब जपावणा। एका मां बाप अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजावणा। एका राज एक काज। एका देवे साजण साज। एका कर सृष्ट सबाई नाते, जन भगतां देवे दात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खे सिर आपणे ताज। इक्क अकारा इक्क अहारा। एका आप विच संसारा। एक चलाए साची धारा। आप उपजाए शब्द अपारा। आप सुणाए शब्द धुन्कारा। आप कराए सोहँ जैकारा। आप वरताए वड भण्डारा। आप चलाए विच संसारा। सृष्ट सबाई आए मंगण इक्क दुआरा। चार वरन आवण सरन हरि खोले एका सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वरते विच मात वरतारा। इक्क द्वार एका घर। एका देवे साचा वर। ऊँच नीच दा भेख निवार। आत्म साची जोत धर। सृष्ट सबाई हरि जाए वर। बेमुख आपणा कीता लैणा भर। गुरमुख साचे जाण तर। आप मुकाए जम का डर।

जो जन सरनी गए पर। ना कोई दिसे किल्ला गढ़। शब्द अन्धेरी जाए चढ़। दर दर घर घर आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अग्न लगाए सृष्ट सबाई जाए सड़। अग्न जोत हरि आप लगाए। लग्गी अग्न ना कोए बुझाए। सृष्ट सबाई आप तपाए। ना कोई मेटे मेट मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। कलिजुग तेरा अन्त करावणा। झूठा भेख सर्ब मिटावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। शाह सुल्तान कोई रहण ना पावणा। राउ रंक इक्क करावणा। ऊँच नीच दा भेख मिटावणा। एका रंग जगत रंगावणा। एका संग आप निभावणा। एका तंग आप कसावणा। एका डंग सृष्ट सबाई आप लगावणा। बेमुखां प्रभ जाए डंग, शब्द सरूपी नाग लड़ावणा। मानस जन्म कराए भंग, मदिरा मास जिस रसन लगावणा। आप भन्नाए जिउँ काची वंग, वेले अन्त ना किसे छुडावणा। कोए ना होवे संग, भैणां भाईआं मूंह छुपावणा। प्रभ दर मंगो साची मंग, अन्तकाल जिस पार करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख जगत लिखावणा। लिखाए लेख लिख्त लिखारा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा। कलिजुग जीव होए गंवारा। माढ़े कर्मां आई हारा। कर्म धर्म दोए गए वसारा। धीआं भैंणां करन वपारा। घर घर रंडीआं रोवण नारां। कोई ना देवे सहारा। प्रभ अबिनाशी खेल अपारा। कलिजुग तैनूं आई हारा। आपे चीर करे दो फाड़ा। हत्थीं फड़या शब्द कुहाड़ा। ना कोई चंगा ना कोई माढ़ा। आप चबाए आपणी दाढ़ां। धर्म राए दे हत्थ फड़ाए, अग्न लगाए विच बहत्तर नाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा लेख लिखाए, गुरमुख साचे पार लँघाए, जो जन चरन छुहाए दाढ़ा। एका शब्द इक्क अधारी। एका एक वरते विच संसारी। एका करे सच्ची सिक्दारी। तीन लोक होए पनिहारी। प्रभ अबिनाशी खेल अपारी। क्या कोई जाणे जीव संसारी। गुरमुख विरले कलि जो जन आए चल द्वारी। साचा देवे नाम अधारी। सोहँ शब्द सच्ची खुमारी। साचा शब्द सच्ची अटारी। गुरमुख विरला बणे वपारी। बेमुख कलिजुग जीव दर दर घर घर रहे झक्ख मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन गुर पूरे कवण पार उतारी। कलिजुग तेरा लेख लिखाया। वेख वेख भेख भेख तेरा अन्तिम अन्त कराया। झूठी मिटे रेख, साधां सन्तां जत्त गंवाया। भेखाधारी लायण वेस, गुर दर बैठ पाप कमाया। हरि मन्दिर विच धारे भेस, घर मन्दिर आण बणाया। बेमुखां आत्म वज्जा जंदर, मायाधारी पूजा धान झोली पाया। प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभनां दे सजाया। हरि मन्दिर हरि धाम न्यारा। एका जोत अगम्म अपारा। जूठे झूठे रहे झक्ख मारा। धीआं भैणां करन ख्वारा। राम दास तेरा सर सरोवर, दूतां दुष्टां किया ख़ुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आपे लाहे सर्ब अफारा। सच दरबार सच्चा दरबारी। जन्म मरन दोए जाए सवारी। लक्ख

६३ ०३

चुरासी गेड़ निवारी। जम की फाँसी आप कटारी। जो जन करे चरन निमस्कारी। देवणहार इक्क दातार, लेवणहार सृष्ट सारी। सेवणहार जन भगत अधारी। लेख लिखावणहार जन भगतां लेख लिखारी। प्रभ भेख मिटावणहार आवे जावे वारो वारी। क्या कोई करे विचार, जुगां जुगन्तर खेल न्यारी। वेद पुरानां अंज़ील कुरानां खाणी बाणी प्रभ वसे बाहर, कदे गुप्त कदे ज़ाहर, कदे मोन कदे शायर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप वरते आपणी कारी। आपणा रंग ना किसे जणावे। बिन रंग रूपी दिस ना आवे। सृष्ट सबाई दे विच समावे। गुरमुखां नज़री आवे। जो जल गुर साचे चरनी सेव कमावे। हरि हरि हरि नाउँ हिरदे वाचे, प्रभ आत्म जोत जगावे। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, आपे भन्न वखावे। बेमुख दर ते आए नाचे, जिउँ सुंञे घर कांवे। गुरमुख साचा हिरदे वाचे, प्रभ अबिनाशी पार लँघावे। पढ़न पोथीआं जिउँ पंडत काशी, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवे। ब्रह्मा विष्न महेश ध्यायण गणेशा, शिव शंकर सीस झुकावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण एका जोत डगमगावे। जोती जोत जोत महाना। एका जोत तीन अस्थाना। साची जोत वस्त हरि देवे दाता, लक्ख चुरसी विच टिकाणा। आप आपणा भेव चुकाणा। बेमुखां हरि दिस ना आणा। पंजां संग हड्ड रखाणा। उलटी लड्ड आप गिढ़ाना। पापां भट्ठ आप तपाणा। गुरमुख विरले नठ्ठ प्रभ अबिनाशी दर्शन पाणा। तीर्थ इशनान कराए अट्ठ सट्ठ, गुर चरन धूढ़ जिस नहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। अठसठ कलि गए नठ्ठ। सभ दी सत्तया पई भट्ठ। सृष्ट सबाई छुट्टया हड्ड। काया तपया झूठा मट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उलटी आप गिढ़ाए लड्ड। आत्म हड्ड आप तुड़ाया। वैहन्दे वहिण जगत वहाया। तट तीर्थ कोई रहण ना पाया। विषे विकारां डेरा लाया। धीआं भैणां रहे तकाया। दर घर साचे बेमुखां कर्म धर्म जरम नष्ट कराया। राम दास तेरा साचा घर, मदिरा मासीआं फेरीआं पाईआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दे सर्ब सजाया। साचा तख्त सुल्तान, साचा वास्सया। साचा शब्द निशान, छत्तर झुलास्सया। साचा ब्रह्म ज्ञान, जगत दवास्सया। एका सच ध्यान, आपणे चरन रखास्सया। एका शब्द बान, सोहँ लास्सया। एका पावे आण, घनकपुर वास्सया। एका रक्खे शान, शाहो शाबास्सया। एका रक्खे ताण, माण निमास्सया। एका देवे डान, वड वड बदमास्सया। एका देवे शान थान, चार वरन इक्क थां बहास्सया। एका लावे डान सृष्ट सबाई डहि डास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतास्सया। आपणा भाणा आप वरताणा। कूड़ कुड़यारा कोई रहण ना पाणा। सच सच्यार प्रभ आप कराना । सच विहार प्रभ जगत चलाणा। एका धन्दा एका कार, एका शब्द धार रखाणा। एका एक वरताए विच संसार, दूई द्वैत पड़दा लाहणा। एका बन्ने साची धार,

शरअ शरायती हुक्म लिखाणा। आप बणाए सच्ची सरकार। सृष्ट सबाई लेख लिखाणा। आपे करे सर्ब विचार, झूठ जूठ प्रभ नष्ट कराना। साचा धर्म वरते विच संसार, सोहँ साचा डंक वजावणा। चार चरन चल आयण द्वार, सच दुआरा आप खुल्लावणा। प्रभ अबिनाशी भरे भण्डार, अखुट्ट अतुट आप अख्वावणा। मंगण खड़े कोटन कोट द्वार, देवणहार आप भगवानना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लावणा। कलू काल तेरा आया काल। अन्तकाल ना सके कोई संभाल। ठग्गां चोरां यारां तेरा लुट्टया माल। झूठा धन्दा जगत विहार, आत्म होई सर्ब कंगाल। झूठे शाह झूठे दार, सच्ची वस्त ना सके संभाल। झूठी होई सर्ब सरकार, घर घर रोवन बाल अञ्याण कंगाल। झूठा जगत झूठ पसारा, सच वस्त किसे हत्थ ना आई लाल। मूर्ख भुल्ले जीव गंवारा, हँकारी बद्धे सिर चीरे लाल। भुल्लया हरि सच्चा गिरधारा, करे सदा प्रितपाल। कलिजुग अन्तिम आई हारा, बेमुख दो फाड़ कराए दाल। गुरमुख विरला पावे सारा, चरन प्रीती निभे नाल। दर घर मंगे शब्द अधारा, प्रभ आत्म बाती देवे बाल। जो जन चरन करे प्यारा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त लए आप संभाल। आपणी वस्त आप संभाले। तोड़े गलों जगत जंजाले। नाम वस्त तेरी चल्ले नाले। खाली रहे ना मध प्याले। कलि जीव क्यों भुल्ले बाले। प्रभ अबिनाशी दरस पा लै। आत्मक दीपक आप जगा लै। सोहँ साचा रसना गा लै। भरम भुलेखा सर्ब गंवा लै। साचा लेखा धुरदरगाही आप लिखा लै। वेखा वेखी ना जन्म गवा लै। भरम भुलेखे भुल्लया कर्म कमा लै। प्रभ अबिनाशी शाहो चरनी सीस लगा लै। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जोती जोत मिला लै। वेला अन्त वेख भगवन्त। गुरमुख साचे प्रभ दर आए सन्त। देवे वड्याई जोत जगाई पति रखाई विच सर्ब जीव जन्त। प्रभ अबिनाशी साचा पाउ दर घर आया साचा कन्त। आत्म बुझी दीप जगाउ, सोहँ देवे हरि साचा मंत। लक्ख चुरासी गेड़ कटाउ, होए मिलावा साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए पूरा गुर हरि भगवन्त। सुरत शब्द हरि मेल मिलावे। आप आपणे रंग रंगावे। साचा संग आप निभावे। प्रभ दर मंगी साची मंग, नाम दान हरि भिच्छया पावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटावे। अज्ञान अन्धेर आप मिटाए। मेर तेर सर्ब चुकाए। संञ सवेर इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति वस्त हरि नाम तेरी झोली पाए। नाम वस्त जीव सच वपारी। सृष्ट सबाई कूड़ कुड़यारी। साचा जीव इक्क हरि मुरारी। रसना जप उतरे पारी। मात गर्भ ना आए दूजी वारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। अनहद शब्द उपजे सच्ची धुन्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सुन खोल्ल खुलारी। सुरत शब्द हरि आपे देवे। गुरमुख साचा रसना सेवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे , दिवस रैण जन जपणा जेहवे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, पूर कराई तेरी सेवे। सेवक सेवा दर कमाए। प्रभ अबिनाशी दे वड्याए। सच दात हरि झोली पाए। आत्म अन्धेरी रात प्रभ आप मिटाए। अंदर वेख मार झात, निज घर बैठा डेरा लाए। आपे पुच्छे तेरी वात, जोत सरूप विच समाए। नाम वस्त मिली साची दात, निखुट्ट कदी ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त मेल भगवन्त तेरा साथ छुट्ट ना जाए। मंगी मंग दर घर पेखे। आत्म गए भरम भुलेखे। बेमुख पछाणे क्या कोई वेखे। प्रभ अबिनाशी लखणा लेखे। जोत सरूपी धारे भेखे। गुरमुखां गुरसिक्खां मानस जन्म लगाए लेखे। आप मिटाए बिधना लिखी रेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन नेत्र पेखे। नेत्र पेख निर्मल जीउ। आप जगाए आत्म दियो। साचा नाम प्रभ दर पीउ। सोहँ बीज आत्म बीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड रखाए तेरी नींओ। सचखण्ड धरे हरि ध्याना। जिथ्थे वसे हरि भगवाना। एका दिसे इक्क टिकाणा। गुरमुख एह सच निशाना। जगे जोत इक्क महाना। होए प्रकाश कोटन भाना। क्या कोई जाणे जीव अञ्याणा। प्रभ अबिनाशी ना किसे पछाणा। मदिरा मासी दर दुरकाणा। दर घर साचे रहण ना पाणा। गुरमुख साचा आप जगाणा। बाहों पकड़ सरन लगाणा। सोहँ साचे तक्कड़ आप तुलाणा। जिस जन रहे आत्म अकड़, प्रभ काला मूंह कराना। झूठे मारन मूहों फक्कड़, प्रभ अबिनाशी सार ना जाणा। दर घर साचे ना सकण अप्पड़, क्या कोई करे हरि पछाणा। कलिजुग जीव जिउँ दल मक्कड़, शब्द बाज़ हरि आप उडाना। अग्न जोत जलाए जिउँ सुक्की लक्कड़, वेले अन्त ना किसे छुडाणा। गुरमुख साचे गुर दर आए जिउँ शमा भमक्कड़, प्रभ अबिनाशी सरन लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म पूरन भगवाना। अमृत वेला आया, फल साचा खावना। हरि साचे वक्त सुहावना। दे मत्ती आप समझावना। एका रक्खो ओट रघुराया, साचा नाम रसना गावना। प्रभ अबिनाशी दिसे घट घटी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण ना मनों भुलावणा। दिवस रैण हरि रसना गावणा। मानस जन्म लेखे लावणा। कलिजुग रुल वक्त गवावणा। प्रभ अबिनाशी देवे लाल अनमुल्ल, सोहँ पल्ले गंढु बन्ावणा। पूरे कंडे जाए तुल, पासा हार कदे ना आवणा। अमृत आत्म जाए ना डुल्ल, अमृत कुण्ड सच रखावणा। गुरमुख साचे जाणा ना भुल्ल, प्रभ अबिनाशी रसना गावणा। शब्द भण्डारा गया खुल्ल, भर झोली घर लै जावणा। कोई ना लग्गे एथे मुल्ल, एका रक्खो चरन ध्याना। जो जन बख्शाए प्रभ दर भुल्ल, प्रभ साचे लेखे लावणा। प्रभ अबिनाशी सदा अडुल्ल, आदि अन्त ना किसे डुलावणा। प्रभ साचा सदा अतुल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग समाणा। आप आपणे रंग समाए। गुरमुख साचे रंग रंगाए। एका रंग मजीठ चढ़ाए। कलिजुग कौड़े रीठ भन्न वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां नाम

जपाए। गुरमुख हरि नाम अधारी। देवे नाम आप निरँकारी। आया मात नैण मुँधारी। भरम भुलेखे ना भुल्लो जीव गंवारी। शब्द पंघूड़ा साचा झूलो, आत्म रक्खो सदा खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा करो चरन निमस्कारी। सदा सदा चरन निमस्कारो। प्रभ अबिनाशी जाओ बलिहारो। साचा नाम रसन उचारो। पावो दरस अगम्म अपारो। मिटाए हरस प्रभ सागर तारो। करे तरस गुरमुख करो चरन निमस्कारो। प्रभ अबिनाशी जाओ बलिहारो। अमृत मेघ आत्म देवे बरस, हरी करे काया क्यारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए सच दरबारो। सच दरबारा चरन दुआरा। गुरसिख साचे कर प्यारा। दोए जोड़ करे निमस्कारा। भव सागर हरि पार उतारा। काची गागर काया महल्ल मुनारा। विच साचा सागर अमृत धारा। निर्मल जोत इक्क अकारा। जोत सरूपी पसर पसारा। साचा शब्द सच्ची धुन्कारा। आप खुल्हाए तेरा दर दुआरा। जिथ्थे वस्सया हरि निरँकारा। सोहँ साचा तीर चलाए, बज़र कपाटी आरा पारा। आप चढ़ाए औखी घाटी, गुरसिख खोल्हे दस्म दुआरा। साचा रस हरि रसना चाटी, हरि देवे मुक्त दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क वरतारा। इक्क दातारा देवणहार। मंगण आओ इक्क दरबार। देवणहार इक्क दातार। प्रभ अबिनाशी भरे भण्डार। साचा शब्द करे वरतार। जो जन मंगे आए द्वार। आत्म झोली प्रभ देवे डार। चरन गोली आप बणाए विच संसार। हउँ घोली गुरसिख रसना रही पुकार। प्रभ पूरे तोल तोली, हरि मिल्या कन्त सच्चा भतार। कोए ना मारे कलिजुग बोली, गुरमुख बणाए साची नार। सोहँ शब्द वजाए साची ढोली, सृष्ट सबाई सुणे धुन्कार। आप रंगाए तेरी काया चोली, शब्द रंग चढ़ाए अपार। कलिजुग अन्तिम मूल ना डोलीं, प्रभ साचा होए सहार। सच वस्त तेरी पाई झोली, प्रभ आया सच द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा माहणा सिँघ तेरा बंस जाए तार। बंस तारया हँस बणा रिहा। विच सहँस आप उपजा रिहा। साची अंस आपणी आप रखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे उप्पर दया कमा रिहा। तारे बंस आप बनवाली। दिवस रैण तेरी करे रखवाली। आपे बण जाए तेरा पाली। प्रभ अबिनाशी साचा माली। चरन प्रीती साची घाली। सोहँ मंगी इक्क दलाली। आत्म चाढ़े साची लाली। आत्म जोती आपे बाली। चरन प्रीती आप निभा ली। साची रीती प्यार रखा ली। मात जोत प्रगटा घर साचे लेख लिखा ली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी घाल थां पा ली। गुर संगत हरि संग रलाई। साचे धाम हरि आण बहाई। दर घर साचे दी साची वड्याई। प्रभ अबिनाशी आप लिखाए, सुणे सर्ब लोकाई। लहणा देणा सर्ब चुकावे, दर घर आया साचा माही। जन्म मरन दा गेड़ चुकाया, आप कटाई जम की फाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम ध्याई। चरन कँवल कँवल

चरन हरि बलिहार। गुरमुख साचा गया मवल, घर साचे खिड़ी सच्ची गुलज़ार। मिले वड्याई उप्पर धवल, लेख लिखाया
प्रभ विच संसार। आप खुल्हाया नाभ कँवल, अमृत झिरना झिरे अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा दित्ता
तार। झिरना झिरे अपर अपारा। एका धार सच फुहारा। हरि एका तार रंग अपारा। कर वेख विचार जो वरते संसारा।
ना भुल्ल गंवार, अन्त होए धूंदूकारा। मानस जन्म ना जाणा हार, ना कोई करे छुटकारा। प्रभ अबिनाशी रसना उचार,
तेरा साचा बणे सहारा। कर्म धर्म रिहा विचार, अन्तिम देवे सच टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा
धार। आपे दे मति समझांयदा। साची वस्त नाम तत्त हरि हिरदे विच पांयदा। काया मैली होए ना मति, जो जन रसना
गांयदा। आपे रक्खे अन्तिम पत्त, दरगाह साची माण दवांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी तत्त, प्रभ साचा पर्दा लाहिंदा। एका
देवे धीरज जत्त, हरि सोहँ बीज बिजांयदा। नाम बीजो साचे वत्त, प्रभ साचा फल लगांयदा। रसना चरखा लैण कत्त,
ताणा पेटा हरि तन उणांयदा। मानस जन्म ना आवणा वत्त, क्यों भुल्ल भुल्ल वक्त गवांयदा। एका देवे साचा तत्त, हरि
आपणे रंग रंगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा पार करांयदा। गुरमुख बेड़ा पार करावणा। तेरे नगर
६८ खेड़े भाग लगावणा। खुल्हा वेहड़ा आप रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा झेड़ा आप मुकावणा। जूठ झूठ ६८
०३ प्रभ आप मुकाए। साचो साचा राह दिसाए। हरि चरनी जो सीस झुकाए। प्रगट जोत जगदीस दरस दिखाए। क्या कोई ०३
करे रीस, जो दर साची सेव कमाए। बेमुखां हरि जाए पीस, जो रसना रस हलकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
गुरमुख साचे साचे लेखे लाए। साचे लेखे आप लगाए। बाहों पकड़ कलि आप तराए। आप आपणे दर बहाए। जिथ्थे
लेखा कोई मंगे नाहे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंग संग होए सहाए। कट्टे भुक्ख नंग, जो जन सरनाई आए।
मानस जन्म ना होए भंग, प्रभ साचा लेखे लाए। वड दाता हरि सूरा सरबंगे, विच मात जोत प्रगटाए। एका नाम साचे
रंग रंगे, गुरमुख साचे आप वड्याए। कलिजुग अन्तिम पार लँघे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सरनाए।
आपणी सरन आप लाया। बाहों पकड़ कलि चरन बहाया। आत्म किला हँकारी गढ़, प्रभ साचे आप तुड़ाया। प्रभ अबिनाशी
अंदर वड़, गुरमुख सोया आप जगाया। साची पौड़ी गया चढ़, मानस जन्म सुफल कराया। कलिजुग अग्न विच ना गया
सड़, जिस जन रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन बहाया। आप आपणी सरन रक्ख।
बेमुख विच्चों कीने वक्ख। प्रभ अबिनाशी साचा अलक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त हरि लए रक्ख।
अन्तिम रक्खे आप संभाल। गुरसिक्खां फल लगाए काया आत्म डाल। साची वस्त विच टिकाए, जोत सरूपी दीपक बाल।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां सद सदा सद करे प्रितपाल। प्रितपाल करे प्रभ साचा पूरा। सच शब्द अनाहद तूरा। एका देवे आत्म सति सरूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। गुरमुख साचे माण रखावो। प्रभ अबिनाशी साचा पाया सच नाम रिदे वसावो। आत्म साचा दर खुल्हावो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस अमरा पद पावो। अग्न तन प्रभ बुझा। एका जोत मग्न रखा। साचा योग नाम दवा। आत्म रोग आप मिटा। हउमे विच्चों रोग गंवा। संजोग वियोग इक्क करा। अमृत साचा फल खवा। सोहँ मेवा मुख लगा। वड देवी देवा आपे हो सहा। आप कराए आपणी सेवा, सांतक सति दए वरता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाए साचा थां। अग्न तेज कलि करे करतार। सृष्ट सबाई आर पार। जगे जोत अगम्म अपार। गुरसिख ठांडा हरि दरबार। प्रभ टुट्टी गांढे गंढुणहार। नेड़े तेड़े सभ गवांढी, प्रभ साचा जाए तार। जूठे भाण्डे जाए मांजी, सोहँ देवे नाम अपार। कलिजुग माया मैल ना लग्गे काची, प्रभ साचा तेरा अन्त लए सुधार। दिवस रैण रैण दिवस आत्म हरि अराधी, हरि देवे एका वस्त साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर सच लाया दरबार। अग्न तेज की करे विचारी। दर घर आए करे चरन निमस्कारी। किरना किरना प्रभ जोत अधारी। दिवस रैण रैण दिवस हुक्मे अंदर फिरना उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारों कुन्ट प्रभ सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड एका जोत अकारी। चन्द सूरज जो सितारे। सच्चा हरि करे सर्ब प्यारे। दिवस रैण भौं मण्डल दे विच खल्यारे। जीव जन्त क्या पावे सारे। प्रभ अबिनाशी खेल न्यारे। बिन थम्मां गगन खिलारे। सूरज अग्न ना गुरसिख साड़े। कर दरस तेरे आत्म दीपक जगण, आप बणाए सतिजुग साचे लाड़े। साची जोत करे प्रकाश विच गगन, तेरी काया महल्ल मुनारे। जो प्रभ साचे दी सरन लगण, दु:ख दर्द प्रभ सर्ब निवारे। मूंह छुपाए जो दर भज्जण, भिच्छया मिले ना सच्चे घर बाहरे। झूठे वहिण कलिजुग वगण, आप रुढ़ाए बेमुख सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई पावे सारे। पवण पाणी प्रभ दे चेरे। गुरसिक्खां हरि वसे नेरे। आप ल्यावे चरन घेरे। प्रभ अबिनाशी कोई ना लाए देरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पार कराए बेड़े।

राम नाम राम नाम हरि नामा। करे करावे आपणे आप कामा। आवे जावे जावे आवे जोत सरूपी पहरया बाणा। रसना गावे दर्शन पावे उज्जल कराए हरि काया जामा। रसना गावे भरम चुकावे, साचे लेख लिखावे, साचा धर्म कमावे जो जन चरनी सीस झुकावे। मेल मिलावा साचे राम, दिवस रैण एका रंग लावे। सोहँ साचा नाम जपावे, भुल्लयां मार्ग पावे। आत्म

वजावे इक्क दमामा, सति शब्द दी बूझ बुझावे। आत्म एका दूज चुकावे। आप आपणी सूझ सुझावे। प्रभ अबिनाशी साचा रामा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए चतुर सुजान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, सोहँ देवे नाम निशान, मिल्या गुर लिख्या धुर प्रभ पूर कराए कामा। साचा नाम सच रख्वारा। साचा नाम गुरसिख जाण, कर साचा वणज वपारा। साचा नाम हरया करे तन बेड़ा देवे बन्न्ह जिस जन रसन उचारा। साचा नाम आत्म चाबी ला एका जाम मुख हरि थारा। हरया होवे तन दा चाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गावे पूर कराए आप वसाए सच्चे घर बाहरा। हरि का नाम हरि ही जेहा। हरि का नाम अलख अभेवा। हरि का नाम आदि जुगादि एका रिहा। हरि का नाम आत्म साध, निर्मल कराए तेरी देहया। हरि का नाम मिटे विवाद, आप लिखाए धुरदरगाही सच सुनेहा। हरि का नाम मिलाए माधव माध, विच विचोला कोई ना रिहा। हरि का नाम शब्द बोध अगाध, दर घर साचे उहला कोई ना रिहा। गुरमुख बण साचा साध, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि नाम अमोला दिया। हरि नाम हरि संग ल्याया। आप आपणा रंग चढ़ाया। गुरमुखां हरि वंड वंडाया। पल्ले हरि नाम साची गंढु बन्न्हाया। आत्म सांझी ठंड रखाया। बेमुखां हरि कंड वखाया। चण्ड प्रचण्ड हरि चमकाया। विच नव खण्ड रहण ना पाया। आत्म रंड रहे कुरलाया। पल्ले बद्धी पापां गंढु, पल्ला भार

१०० ०३ कराया। धर्म राए अन्त मारे फंद, कुंभी नर्क निवास रखाया। गुरमुख गुरसिख साचा नाम लैण वंड, प्रभ अबिनाशी सच १०० ०३

भण्डार लगाया। आओ जाओ ढोला सोहँ गाओ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। हरि का नाम हरि जन जानी। वेला अन्त ना फेर पछतानी। हरि का नाम भुल्ले ना परानी। हरि का नाम दर घर साचे की साची रानी। हरि का नाम गुरमुख तेरी आत्म बानी। हरि का नाम दिवस रैण रैण दिवस सद रसन वखानी। हरि का नाम एका रंग रंगानी। हरि का नाम संग निभाए वाली दो जहानी। हरि का नाम हरि आप जपाए बण के साचा बानी। हरि का नाम अन्त चुकाए जम की कानी। हरि का नाम अन्तकाल हो जाए डानी। हरि का नाम कलिजुग मिटाए झूठी जगत निशानी। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे दानी। हरि का नाम हरि जगदीश्र। हरि का नाम मिलाए ईश्र। हरि का नाम कोटन कोट गायण पतीश्र। हरि का नाम रिदे समायण, सुन्न समाधी लायण वड मुनीश्र। हरि का नाम एका मेल मिलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले इक्क जगदीश्र। इक्क जगदीश राखो चित्त। हरि का नाम देवे साचा मित्त। हरि का नाम साचा हित्त। हरि का नाम साचा पित। हरि का नाम रसना जप मानस जाए कलि जित। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां बणया साचा पित। हरि का नाम सच सुनेहड़ा। हरि का नाम

आप कटाए जम का जेवड़ा। हरि का नाम गुरमुख तेरा तन बणाए नगर खेड़ा। हरि का नाम आप कटाए तेरा लक्ख चुरासी गेड़ा। हरि का नाम आप कटाए आवण जावण झूठा जगत झेड़ा। हरि का नाम वेले अन्त करे नबेड़ा। हरि का नाम गुरमुखां बंध वखाए बेड़ा। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सोहँ साचा बेड़ा। हरि का नाम हरि की रीती। हरि का नाम हरि की प्रीती। हरि का नाम परखे नीती। हरि का नाम काया करे पतित पुनीती। हरि का नाम रसना जप, होए सीतल सीती। हरि का नाम रसना जप, जीव औध हत्थ ना आए बीती। हरि का नाम रसना लाओ, मदि साची ना उतरे पीती। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म जाओ जग जीती। हरि का नाम साची मति। हरि का नाम आत्म जति। हरि का नाम साचा तत्त। हरि का नाम आपे दे समझाए मति। हरि का नाम आपे पाड़े काया कोठी झूठी तत्त। हरि का नाम आत्म साचा बीज बिजाए साचे वत। हरि का नाम प्रगट होए, मेल मिलाए प्रभ अबिनाशी साचे पति। हरि का नाम आत्म साची जोत जगाए, एका राह दिसाए सति। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा एका सति। हरि का नाम हरि की चाल। हरि का नाम हरि निभे नाल। हरि का नाम गुरमुख साचे साची वस्त संभाल। हरि का नाम अन्तिम अन्त होए रखवाल। हरि का नाम पल्ले बन्नृ ना होए जीवण कंगाल। हरि का नाम हरि हरि देवे सच्चा धन माल। हरि का नाम आत्म दीपक जोती देवे बाल। हरि का नाम माणक मोती रक्खणा गुरसिख संभाल। गुर संगत तेरी धन्न कमाई। दिवस रैण हरि रसना गाई। मानस जन्म हरि सुफल कराई। जो जन आए चल सरनाई। ऊँच नीच दा भेव ना राई। साचे बेड़े हरि चढ़ाई। सोहँ चप्पू हरि आप लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा बन्नृ वखाई। गुर संगत तेरी सच पुकार। प्रभ अबिनाशी पाए सार। घनकपुर वासी जामा धार। आपे कर शब्द विचार। जो जन रहे रसन उचार। दिवस रैण रसन गाया स्वास स्वासी, मोहण माधव कृष्न मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए गुर संगत जाए तार। गुर संगत गुर साचा पाया। हरि हरि साचा नाम प्रभ दर ते पाया। देही भाण्डा सच वस्त हरि इक्क थार रखाया। सच शब्द जिस हिरदे वाचा, तिन जम नेड़ ना आया। एका लग्गे शब्द तमाचा, दूरों भज्जण वाहो दाहया। गुरमुख साचा प्रभ ढाले साचे ढांचे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम भट्ठी आप चढ़ाया। गुर संगत मन चढ़या चाउ। दर घर साचे मिल्या थांउँ। राम नाम हरि साचा देवे आत्म झोली भर लै जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गाओ। संगत साध हरि साध के संग। मातलोक कट्टे भुक्ख नंग। अमृत आत्म झिरना आप झिराए पए फुहारा गंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत चाढ़े रंग।

१०१
०३

अमृत रंग आप चढ़ावणा। साचा राग आप सुणावणा। झूठा दाग आप मिटावणा। गुरमुख सोया गया जाग, प्रभ अबिनाशी दरस दिखावणा। आप बुझाए तृष्ना आग, ना फेर सतावणा। तेरा आत्म जगे गुर दर चिराग, बिन बाती बिन तेल जगावणा। प्रभ दर उठ चरनी लाग, वेला गया हत्थ ना आवणा। सतिजुग लग्गे पहली माघ, प्रभ अबिनाशी साचा भेव खुल्हावणा। आप बणाए हँस काग, साध संगत दे विच रलावणा। आपे पकड़े तेरी अन्तिम वाग, गुरमुख साचे प्रभ साचा लेख लिखावणा। आत्म लाए सोहँ साची जाग, शब्द भण्डारा आप फुटावणा। कलिजुग माया डसणी नाग, झूठे धन्दे मोह ना लावणा। धन्न धन्न धन्न गुर संगत तेरे भाग, प्रभ अबिनाशी दरगाह साची माण दवावणा। गुर संगत संगत गुर। एका दर दुआरे बैठे जुड़। दोहां होया एका पुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत निभाए तेरी तोड़। तोड़ निभाए गुर संगत तेरी। प्रभ अबिनाशी ना करे हेरा फेरी। एका देवे शब्द दलेरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक कलि पाए फेरी। गुर संगत गुण माण दवईआ। साची नईआ आप चढ़ईआ। साचे भाणे विच रखईआ। बिरध बाल जवान तरईआ। जो जन आए सरन ढह पईआ। सच सुच्च हरि वरतार रखईआ। एका कार एका धार एका जैकार शब्द रखईआ। इक्क विचार इक्क संसार इक्क करतार इक्क विहार इक्क आपे आप रखईआ। इक्क मुरार इक्क दस्तार इक्क तलवार सोहँ तिखी धार प्रभ आपणे हत्थ उठईआ। इक्क सिक्दार सृष्ट सबाई होए पनिहार, प्रभ अबिनाशी एका छत्तर सीस झुलईआ। राउ उमराउ आउण दरबार, दोए जोड़ करन निमस्कार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तख्त सच्ची सरकार बणईआ। सच तख्त सच सुल्ताना। उत्ते बैठे जिउँ कृष्ना काहना। जोत सरूपी पहरया बाणा। कलिजुग झूठा भेख मिटाणा। सतिजुग साचा लेख लिखाणा। सतिजुग साचा मार्ग लाणा। वाली हिन्द पकड़ उठाणा। आप आपणी सरन लगाणा। साचा हुक्म आप फ़रमाणा। चार वरन इक्क कराना। एका दूज रहण ना पाणा। भय भयानक दरस दिखाणा। अचन अचानक खेल वरताणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आपणा आप चलाए वरताए करे कराए आपणा भाणा। वाली हिन्द आप उठा के। दर्शन देवे सुत्या जा के। दया कमाए दर घर जा के। आपे आए गले लगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए चरन लगाए जाए माण दवा के। वाली हिन्द आप उठावणा। बाहों पकड़ चरन लगावणा। सच मार्ग आप बतावणा। सारंग धर भगवान बीठला आप अख्वावणा। कलिजुग जीव कौड़ा रीठड़ा भन्न वखावणा। सोहँ साचा नाम मीठला, प्रभ सृष्ट सबाई आप सुणावणा। हरि हरि साचा नेत्र डीठला, उतरे पार जो दर आए भुल्ल बख्शावणा। सृष्ट सबाई पीठन पीठला अन्त ना किसे छुडावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक डंक वजावणा। पुरी

घनक वजाउणा डंक, सुहाणा बंक पकड़ ल्यावणा। राउ रंक गुरमुखां नाम उपजाए जिउँ राजा जनक, जोत सरूपी लाउणी तनक दीपक जोती इक्क टिकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब गवावणा। सति सति नाम खज़ानयां। देवे वड वड वड भगवानयां। कलिजुग गया तर, सतिजुग दिसे सच निशानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे नरायण हरे, कलिजुग बेड़ा पार करे गुरसिक्खां कर मेहरबानीआं। मेहरवान आप दयावान। गुरमुख साचे बूझे बुझान। खाणी बाणी गगन पताली पवण पाणी प्रभ एक मसाण। जोती जोत सरूप हरि साचा लेख लिखाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म पूरन भगवान। सच नाम अधार हरि जगत वक्खर हरि जान। सच नाम अराध्या, हरि मिल्या दर घर आण। हरिजन के अग्गे आया बाध्या, धरया आत्म इक्क ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां मिल्या आण। गुर प्रसाद रसना लावना। कर किरपा आप वरतावणा। गुर संगत मुख लगावणा। गुरमुख दर साचे आए पूर कराए भावना। दिवस रैण जन हिरदे वाचे, काया अग्न आप बुझावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पार उतारे जिउँ धारे रूप बावना। गुर संगत गुर हिरदे विच वसावणा। मानस जन्म सुफल करावणा। दरगाह साची हरि माण दवावणा। पिछला लेखा जाए मुक्क, अग्गे हरि मार्ग पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुर संगत माण दवावणा। निहकलंक

१०३
०३

नर नरायण अवतार, गुरमुख साचा वांग बल आप तरावणा। गुर प्रसादी गुर पूरा जानयां। दर घर आए आप पछाणयां। सोहँ देवे दान हरि भगवानयां। आत्म देवे ज्ञान, मिटावे अन्ध अंध्यानयां। एका बुझे दर साचा सुझे ब्रह्म ज्ञान, गुरमुखां हरि विच समानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर गुरमुखां मानयां। गुरमुख तेरा दर दुआरा। आप दिखाए सच्चा घर बाहरा। जोत सरूपी जामा धारा। आवे चल दर हरि करतारा। सतिजुग जाए जिउँ बल दुआरा। अछल अछल करे अपारा। अछल अछल कर आप छल जाए सर्ब संसारा। दर घर साचा जिस जन मलया, प्रभ अबिनाशी कर किरपा पार उतारा। प्रभ अबिनाशी तेरे आत्म दर दुआरे आए खलया, जोत सरूपी दीप उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे लेखे लाया तेरा आया वर भण्डारा। गुर प्रसादि आत्म रस। प्रभ अबिनाशी होया वस। मातलोक राह साचा जाए दस। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ शब्द डोर बन्न्हे कस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्धेर मिटाए जिउँ चन्द मस। शब्द डोरी हरि देवे बन्न्ह। साचा शब्द सुणाए कन्न। गुरमुख आत्म जाए मन। कलिजुग अग्न ना लागे तन। कलिजुग दूत ना देवे डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम विच मात ना लग्गे सन्न्ह। सन्न्ह ना लागे हरि के घर। ओथे रहण बन्द कवाड़, आपे खोल्हे किरपा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए दसवें द्वार।

दस्म दुआरा आप खुल्हाए। जोत अकारा आप कराए , सच घर बाहरा आप दिखाए। एका जोत शब्द गुंजारा आप सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे मुन सुन्न आप खुल्हाए। नाम भण्डारा गुर दर वरते। गुरमुख विरले आयण दर ते। प्रभ अबिनाशी आत्म झोली आपे भरते। अचरज खेल किया कलि कादर करते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई मिली वधाई, पंचम जेठ होए रुशनाई, अन्ध अन्धेर मिटाई, देवे साचा माण ताण जो जन आए दर ते। साचा माण देवे गुर पूरा। सर्ब कला समरथ आप उतारे आत्म सगल वसूरा। आपे रक्खे दे कर हत्थ, सोहँ शब्द उपजावे साची तूरा। सोहँ नाम देवे साची वथ, झूठा लोभ कढाए कूड़ा। आप चढ़ाए सोहँ साचे रथ, अन्तिम पार कराए पूरा। प्रभ दी महिंमा बड़ी अकथ्थ, क्या कोई कथे वड दाता वड सूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी आत्म जोत जगाया एका नूरा। गुर प्रसादि गुर किरपा धारे। गुर संगत बणया हरि वरतारे। दर आई संगत प्रभ भरे भण्डारे। एका चाढ़े नाम रंगत, रंग मजीठी अपर अपारे। आप बणाए साची संगत, मात बिठाए चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी धारे। तन काया कपड़ हरि सुहावणा। गुरसिख तेरा आत्म जोती दीप जगावणा। गूढ़ी नींद आत्म सोती, प्रभ शब्द धुन दे आप जगावणा। दुरमति मैल जाए धोती, जिस जन चरनी सीस निवावणा। एका हरि
१०४ ०३ एका गोती, हरि एका रंग रंगावणा। गुरमुखां बणाए हरि साचा मोती, गल आपणे विच लटकावणा। महाराज शेर सिँघ १०४ ०३
विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण गुरमुखां माण दवावणा। गुरमुख साचा शब्द कमाओ। दर घर साचे प्रभ अबिनाशी आपणा आपे पाओ। सृष्ट सबाई अन्त विनासी, एथे कोई रहण ना पावणा। एका जोत प्रभ अबिनाशी आदि जुगादि हरि इक्क थाउँ रहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गावणा। राज जोग हरि के घर। पूरन भोग रसन उचर। मिटे सोग आत्म धर। ना होए विजोग सरनी पड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई धरनी धर। धरे जोत आप गिरधारी। फड़ फड़ बाहों गुरसिक्खां जाए तारी। साचा शब्द सच्ची अस्वारी। गुरमुख रहे इक्क उडारी। देवे आप हरि निरँकारी। तीन लोक जिस चरन पनिहारी। माहणा सिँघ तेरी सच अटारी। चरन छुहाए जोत सरूप, निहकलंक निरँकारी। उतरया पार तेजा सिँघ सपूत, प्रभ चरन जाए बलिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जाए पार उतारी।

✻ १२ जेठ २०१० बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरा ✻

हरि करता कर्म कमांयदा। विच मात जोत धरांयदा। आपणा भेव आप खुल्लांयदा। लेखा साचा आप लिखांयदा। दरगाह साची माण दवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पांयदा। जोत सरूपी जामा धारे। पुरी घनक लए अवतारे। जूठे झूठे जीव गंवारे। माया मूठे आत्म होए अन्ध अंध्यारे। भज्जे फिरन नाल शिकारी, प्रभ अबिनाशी पाई ना सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाहों आप दुरकारे। घनकपुर वासी मारे डंक। इक्क कराए राउ रंक। आप सुहाए साचा थाउँ बंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई महिंमा बड़ी अगणत। मातलोक हरि जामा धारे। अचरज खेल करे करतारे। गुरमुख साचे आप उठाए साचा देवे शब्द अधारे। बाहों पकड़ आप उठाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। सच घर दीपक प्रगास्सया। हरि आया शाहो शाबास्सया। गुरमुखां आत्म करे रहिरास्सया। साचा शब्द आप धरे धरवास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां करे बन्द खलास्सया। दर घर साचा ल्या पछाण। एका जोत जगी भगवान। साध संगत रल बैठी आण। सोहँ शब्द हरि देवे दान। जो जन आत्म करे ध्यान। प्रभ अबिनाशी देवे ब्रह्म ज्ञान। सुरत शब्द हरि मेल मिलाण। दूई द्वैत पर्दा लाहण। कर्म जरम दोए बण जाण। जो जन चरनी डिग्गण आण। जन्म मरन चुक्के जम की काण। चरन धूढ़ कर इशनान। एका देवे सोहँ हरि साचा दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। इक्क दुआरा साचा मानो। प्रभ अबिनाशी हरि पछानो। कलिजुग जीव भुल्ल ना बण अंजानो। वेला गया फेर पछतानो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि साचा जानो। निहकलंक हरि नर अवतारी। जोत सरूपी खेल अपारी। आवे जावे वारो वारी। वरते वरतावे विच संसारी। तीन लोक एका कारी। प्रभ अबिनाशी वड संसारी। लक्ख चुरासी जोत अधारी। भुल्ले जीव मुग्ध गंवारी। प्रभ अबिनाशी सच विचारी। दोए जोड़ कर चरन निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। नरायण नर हरि जामा धारे। पारब्रह्म रूप करतारे। एका कर्म करे विच संसारे। एका धर्म धरे ऊँच नीच दा भेव मिटारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा काज आप संवारे। ऊँच नीच हरि एका करना। प्रभ अबिनाशी धरनी धरना। सोहँ साचा अमृत भरना। गुरमुख विरले कलिजुग वरना। बेमुखां दर दुआरे भुल्ले फिरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरनी जुड़ना। चरन लाग प्रभ देवे मत। शब्द रखावे साचा तत्त। आत्म धीरज देवे यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाप जपावे आपे दे समझावे मति। सच नाम हरि दर ते पाउणा। आप आपणा भेव खुल्हाउणा।

आत्म दर खुल्हाणा, एका दरस अमोघ दिखाउणा। सच सोहँ रसना गावणा ना होए विजोग घनकपुर वासी तेरी चरनी सीस झुकाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजाउणा। आओ दर चरन दुआरे। देवे नाम पंचम जेठ ल्या अवतारे। पुरी घनक हरि जोत जगारे। सृष्ट सबाई होए उज्जयारे। एका शब्द धुन्कार सृष्ट सबाई गुरमुख साचे लैण सुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। आए दर ल्या वर, मिले हरि चुक्के डर, जाओ तर नहाओ सर, साचे घर जिथ्थे बैठा जोत धर। एका एक दिसाए घर। आवण जावण गेड़ निवर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण मातलोक आया भेख धर। वेख वखाया जगत भुलाया। ख़ाक रुलाया सार ना पाया। मदिरा मासी दर दुरकाया। आत्म वज्जे झूठे पापां जिंदा ना किसे तुड़ाया। आप बणाए साचे बन्दे, आप आपणा सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचा मेल मिलाया। आप आपणा मेल मिलाए। आत्म जोती जोत जगाए। बिन बाती बिन तेल रखाए। गुरमुख साचे सन्त जनां साचा सज्जण सैण अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण आप आपणा रंग रंगाए। सच रंग हरि हरि का वास। विच जोत इक्क अबिनाश। सृष्ट सबाई होए उदास। गुरमुख साचे तेरे हिरदे हरि रक्खे वास। एका जोत करे प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। महाराज
१०६
०३
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा वसे आस पास। आस पास सद वसेरा। प्रभ अबिनाशी नेरन नेरा। शब्द सरूपी पाए घेरा। आप तुड़ाए जम का जेड़ा। बिन गुर पूरे पार लँघावे केहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बन्न्ह वखाए बेड़ा। गुरमुखां हरि पार लँघाए। सोहँ साची नाओ चलाए। एका चप्पू नाम लगाए। पहले पूर पार कराए। दूरों नेड़िउँ सद ल्याए। माझे देस होए रुशनाए। जूठे झूठे रहे मुख छुपाए। मदिरा मासी आत्म रूठे सदा रहे हलकाए। गुरमुख साचे आत्म अनूठे प्रभ अमृत साचा सीर प्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत सोहँ साचा तीर चलाए। तीर चलाए इक्क भगवाना। सृष्ट सबाई इक्क निशाना। आपे खिच्चे तीर कमाना। वड जोधन जोध बली बलवाना। आपे राउ आपे रंक आपे वड शाहो सुल्ताना। एथे ओथे रक्खे पति गुरमुखां हरि वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। भुल्ले जीव मुग्ध गंवारी। प्रभ अबिनाशी ना पाई सारी। झूठे धन्दे बाज़ी हारी। अन्तिम कलि होए ख्वारी। प्रभ अबिनाशी गुरमुखां कलि जाए तारी। सोहँ शब्द देवे वर, एका दिखावे थिर घर सच्ची अटारी। जिथ्थे वसे हरि मुरारी। आओ सिक्खो साचे घर मिलो हरि प्रभ शब्द उडारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। शब्द उडारी जो जन जाणे। प्रभ अबिनाशी सच वखाणे। आप चलाए आपणे भाणे। ऊँच नीच ना कोई जाणे। बाल बिरध हरि इक्क

रंग रंगाणे। जो जन चरनी डिग्गण आणे। आत्म मैल पापां धोए, आपे करे सुघड़ स्याणे। गुरमुख साचे आप बणाए, सोहँ देवे नाम निधाने। सोहँ धागे लए परोए, आप आपणे गल लटकाणे। अमृत साचा मुख विच चोए, कँवल नाभ आप उलटाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत जहाने। चरन कँवल हरि देवे माण। चरन कँवल गुरसिख पछाण। चरन कँवल घर साचा जाण। चरन कँवल इक्क ध्यान। चरन कँवल हरि देवे दरगाह साची माण। चरन कँवल कँवल चरन पूजो इक्क भगवान। चरन कँवल प्रभ आत्म रिहा मवल, सोहँ देवे सच निशान। चरन कँवल हरि धरे उप्पर धवल, बेमुखां मारे बाण। चरन कँवल कृष्ना सँवल गुरमुख साचे जायण मवल, आत्म जोत धरे भगवान। चरन कँवल गुरमुख साचे लाग, प्रभ देवे साचा दान। चरन कँवल हरि का द्वार। चरन कँवल हरि मेल सच भतार। चरन कँवल आत्म उपजे कन्त प्यार। चरन कँवल साचे सन्त करन निमस्कार। चरन कँवल देवे गुरमुख हरि किरपा धार। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए केस चवर खलार। चरन कँवल एको पूजा। चरन कँवल भेव चुकाए दूजा। चरन कँवल लाग गुरमुख साचे दर घर साचा सूझा। गुर चरन गुरमुख विरला विच मात दे लूझा। गुर साचे दर घर साचा सूझा। गुर चरन गुरमुख विरला विच मात दे लूझा। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले बूझा। गुर चरन बण पुजारी। गुर चरन मिले गिरधारी। गुर चरन देवे नाम हरि अधारी। गुर चरन आत्म दीप करे उज्जयारी। गुर चरन मैल धोए पापां सारी। गुर चरन गुर पूरे जाओ बलिहारी। गुर चरन सदा सदा सदा चरन निमस्कारी। चरन कँवल गुरसिख परसण वारो वारी। गुर चरन गुरमुख विरले आए मंगण दर दरबारी। गुर चरन आत्म साची नाम रंगण देवे सच खुमारी। गुर चरन जो दर ना संगण गुर देवे साचा नाम अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक निहकलंक नरायण नर अवतारी। गुर चरन करोड़ तेतीस तरसण सुरप्त राजा इन्द। गुर चरन आप लगाए उठाए वाली हिन्द। गुर चरन प्रभ अबिनाशी आप लगाए सदा बख़शिंद। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पूजो वड सूरा मृगिन्द। गुर चरन कँवल सिख पुजारी। आत्म दर हरि आप खुल्हारी। एका करे जोत अकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब निवारी। आत्म जोत अकार कर। साचा शब्द अधार कर। गुरमुख पूरन विचार कर। गुरमुखां जन्म संवार कर। बेमुखां कलि ख़ुआर कर। गुरसिक्खां बेड़ा पार कर। चित साचा सति करतार कर। भाण्डा काचा भन्न पूर्ब विचार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पार लँघाए मानस जन्म सवार कर। मानस जन्म सवारना। गुरसिक्खां पार उतारना। मानस जन्म हरि सवारना। लक्ख चुरासी गेड़ निवारना। जम की फाँसी आप तुड़ावणा। सर्ब घट वासी आपणी किरपा धारना।

घनकपुर वासी जिस जन आए चरन निमस्कारना। आत्म लाहे सर्ब उदासी, सोहँ शब्द भरे भण्डारना। हउमे ममता रोग गवासी, एका देवे शब्द सच्ची धुन्कारना। एका जोत मात प्रकाशी, आप चलावे आपणी धारना। कलिजुग औध अन्त विनासी, प्रभ साचा खेल खलारना। सतिजुग साचा विच मात लगाए घनकपुर वासी, हरि साचा मार्ग लावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लेख लिखावणा। सतिजुग साचा लेख लिखावणा। कलिजुग झूठा भेख मिटावणा। जूठा झूठा हरि नष्ट करावणा। एका रंग अनूठ चढ़ावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता आप अख्वावणा। दूसर ना अवर इक्को दाता। गुरमुख विरले कलि पछाता। बेमुखां बीतीआं ऐवें रातां। ना जुड़ाया हरि मन चरनी नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कलि पछाता। हरि ना जाणया, भुल्ला जीव अञ्याणयां। भेव ना पाया वड वड स्याणयां। माया धारी अन्धाणयां। आप भुलाए वड वड राजे राणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां किरपा कर आपणे चरन लगाणयां। आप भुलाए जगत रुलाए। कवण छुडाए दे सजाए। चार कुन्ट पै जाए दुहाए। बैठा वेखे इक्क रघुराए। अचरज खेल आप वरताए। आप लड़े ना सिख लड़ाए। बेमुखां हरि भेड़ भिड़ाए। जोत सरूपी अग्न जोत लगाए। मौत गोद दे विच सवाए। वड जोधन जोध सच सिँघासण डेरा लाए। सृष्ट सबाई जाए सोध, शब्द सरूपी तेज रखाए। शब्द लिखाए अगाध बोध, कोई भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा कलि वरताए।
साचा भाणा कलि वरतावणा। साचा लेख कलि विच मात लिखावणा। सोहँ शब्द खण्डा हत्थ उठावणा। नव खण्डां विच जंग करावणा। वरभण्ड एह नष्ट करावणा। खण्ड खण्ड एह कर वखावणा। बेमुखां हरि कंड वखावणा। दंड दंड हरि दंड लगावणा। गुरमुखां हरि नाम साचा वंड, प्रभ अबिनाशी आपणी चरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाम पिलावणा। साचा जाम पीओ दर। प्रभ अबिनाशी लैणा वर। आत्म सुखीए जाओ घर। आपे खुल्ले दसवां दर। सदा वसाओ रिदे हरि। एका एक रिहा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतार नर। माझे देस मिली वधाई। मात जोत हरि प्रगटाई। साचा डंक रिहा सुणाई। वेला अन्तिम अन्त कराई। वड वड राजे साध सन्त प्रभ अबिनाशी भेव ना पाई। क्या कोई जाणे जीव जन्त, आपणा आप गए भुलाई। आप बणाए आपणी बणत, करते कादर सृष्ट सबाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। सृष्ट सबाई गई भुल्ल। वेले अन्त कलिजुग माया विच गए रुल। झूठे तोल गए तुल। चोरां यारां ठग्गां किते ना पैंदा मुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए गुरसिक्खां पार लँघाए जो दर आए बख्शाए भुल्ल। कलिजुग तेरी बाजी अन्त। प्रगटे जोत हरि साचा कन्त। आप उपजावे

सर्ब जीव जन्त। एका देवे सोहँ साचा मंत। आप सँघारे वड वड देव दंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणाए साची बणत। देव दंत आप सँघारे। सोहँ खण्डा फड़े दो धारे। चण्डी चमके विच संसारे। रंडी होवे घर घर नारे। वरभण्डी होए सर्ब ख्वारे। आत्म डण्डी होए जीव विचारे। घर घर फिरन घमंडी आत्म भरे सर्ब हँकारे। सोहँ नाम प्रभ जांदा वंडी, आओ पीओ उतरन पापां भारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए तेरे चरन दुआरे। चरन दुआरा इक्को घर। जिथ्थे वस्सया एका हरि। सोहँ देवे साचा वर। गुरमुख साचे ना जाओ डर । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त लैणा फड़। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा। प्रभ अबिनाशी झूठा लेखा आप मिटावणा। वेले अन्त ना किसे छुडावणा। चित्र गुप्त हरि हिसाब लिखावणा। भरम भुलेखा सर्ब खुल्हावणा। धर्म राए दे अग्गे लावणा। अग्गे पिच्छे नंग रखावणा। दिवस रैण ना मिले सोवणा। भुख्यां नंगयां ना मिले रोवणा। मिले दान ना मंगया, जिस मदिरा मास रसन लगावणा। सोहँ देवे साचा दान वड सूरा सरबन्गया, सच भण्डारा विच मात खुल्हावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, विच मात डेरा लावणा। प्रभ अबिनाशी जगत पसारा। जीआं जन्तां करे प्यारा। आपे सदे चरन दुआरा। सोहँ देवे नाम अधारा। आप उपजावे साची धारा। ओअं सोहँ इक्क रंग रंगारा। खुल्ल्हे भेव दिसे देव एका वेख रंग करतारा।
१०६ ०३ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सच भण्डारा आप खुल्हाया। सोहँ वस्त हरि साचे विच पाया। सृष्ट सबाई दे वरताया। जो दर मंगण साचे आया। साची रंगण नाम चढ़ाया। सोहँ कंगण तन पहनाया। दूजा दर ना जानण मंगण, जो निहकलंक तेरी आया सरनाया। मानस जन्म ना होवे भंगण, प्रभ अबिनाशी होए सहाया। बेमुख दर दर मंगण, कितों नाम हत्थ ना आया। गुरमुख साचे आत्म साची रंगण, आपे रंग मजीठ चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मात जोत धर सतिजुग साचा मार्ग लाया। सच सच हरि वरतारा। साचा नाम भरे भण्डारा। गुरमुख देवे साची धारा। आपे बख्शे चरन प्यारा। कर किरपा पार उतारा। साचा शब्द साची देवे धुन्कारा। आत्म सुन्न खोल्हे आप मुरारा। कवण गुण जाणे तेरे निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटाई सच दुआरा। सच दुआरा गया खुल्ल्ह। कलिजुग जीव ना रहणा भुल्ल। देवे दात वड अनमुल्ल। साचे कंडे जाणा तुल। अमृत आत्म ना जाए डुल। पाए शब्द पाणी तेरी काया चुल्ह। शब्द पंगूढ़ा रिहा झुल्ल। चरन प्रीती गुर चरन घुल। सोहँ देवे साची दात अनमुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुलाए साचे तुल। साचे तोल आप तुलईआ। पर्दा खोल्ह दरस दिखईआ। हिरदा फोल भरम चुकईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाईआ। सोहँ नाम साची

धार। सतिजुग वरते विच संसार। चार कुन्ट चार वरन रसना लैण उचार। राउ रंक ऊँच नीच नीच ऊँच एका रंग रंगे
करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी सच्ची सरकार। सच सरकार सच विहारा। सच सरकार
सच्चा दातारा। सच सरकार सच्चा भण्डारा। सच सरकार सच्चा वरतारा। सच सरकार सच्चा सिक्दारा। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा। सच सरकार एका दात। सच सरकार एका पात। सच सरकार एका मात।
सच सरकार भैण भ्रात। सच सरकार दूई द्वैत पर्दा देवे काट। एका रंग एका संग एका मंग प्रभ सोहँ कसे साचा शब्द
अस्वारा। एका राज एका ताज एका काज एका साज एका बाज सोहँ देवे विच संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
सृष्ट सबाई लेख लिखारा। आपे होए ना कोई वक्त विचारे ना जाणे कोए। पावे सारे भेव रहे ना कोए। बंधे तारे एका
एक दूजी रहे ना कोए। विच संसार वरते एक एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह अवतारे। इक्क दरबार
हरि रखावणा। इक्क सरकार नव खण्ड रचावणा। इक्क घर बाहर वरन चार बहावणा। इक्क संसार एका जोत एका गोत
सृष्ट सबाई आप रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा साचा मार्ग लावणा। हरि साचा सच भतारा।
पूरन कर्म रिहा विचारा। इक्क लाया सच दरबारा। जोत धरी इक्क करतारा। इक्का तख्त सच सरकारा। लिखाए लिख्त
११० अपर अपारा। गुरमुख विरला लए सिक्खत, जिस पूरन ब्रह्म विचारा। प्रभ दर मंगी साची भिखत, हरि देवे नाम दातारा। ११०
०३ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक भरे सर्ब भण्डारा। घनकपुर वासी वड भण्डारिया। मात लोक ल्या सच ०३
अवतारिया। जो जन मंगण आए बण भिखारिया। देवणहार दातार वड संसारिया। कर किरपा जाए तार, सोहँ देवे नाम
खुमारिया। गुरमुख कर्म विचार, प्रभ बेड़ा पार उतारिया। सिँघ गुरमेज हरि पाई सार, चल आए प्रभ द्वारया। मूर्ख मुग्ध
ना करन विचार, भुल्ले जीव सर्ब गंवारया। प्रभ बेड़ा कर जाए पार, लक्ख चुरासी गेड़ निवारया। फेर जन्म ना आवे
दूजी वार, सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास दवा रिहा। जरम धर्म सभ लए संवार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
जन तेरी सरन निमस्कारया। गुर पूरा देवे वड्याई। नित नवित्त हरि जोत प्रगटाई। साचा मित आप हो जाई। जो जन
रक्खे हित्त, प्रभ देवे आण वधाई। अबिनाशी साचा मित्त, क्यों बैठा मनों भुलाई। अमृत आत्म लैणा सिंच, काया हरी
कराई। मानस जन्म कलि लैणा जित्त, एका निहकलंक सरनाई। प्रभ अबिनाशी आपे मात पित, वेले अन्त होए सहाई।
गुरमुखां गुरसिक्खां संग किया हित्त, वेले अन्त लए छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाई।
दरगाह साची माण दवावणा। साचे धाम आप बहावणा। राम रमईआ कर्म कमावणा। एका साचा नाम जपावे, साचे मार्ग

सृष्ट सबाई आप लगावणा। दूई द्वैत पर्दा लाहया, जगत भेख सर्ब मिटावणा। वेख वेख गुरसिख उठावणा। गुरमुख प्रभ आत्म दीपक आप जगावणा। जो दर मंगे साची भिक्ख, सोहँ दान प्रभ झोली पावणा। देवे वड्याई विच मुन रिख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगावणा। एका आपणे रंग रंगा के। गुरमुखां हरि संग निभा के। बेमुख वांग कच्ची वंग भन्ना के। आपणे अंग हरि आप लगा के। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए पार लँघा के। कलिजुग चढ़या आए हड़्ह। कंडे उत्ते आ के गया खड़। एका गेड़ा डिग्गे दड़। धरत मात तेरा खुल्हा होए वेहड़ा, कलिजुग जीव जायण झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी दे दुहाई, बेमुख क्यों बैठे अंदर वड़। वेला अन्त आए कांग। प्रभ अबिनाशी वरते सांग। प्रभ मिलण दी साची तांघ। कलिजुग जीव झूठे कूक पुकारे जिउँ मसीते मुलां बांग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, आपणी खेल वरताए, साचा लेख लिखाए, वेला अन्तिम ल्याए, ना कोई मेटे मेट मिटाए, राजे राणे आए सरनाए, वेले अन्त जाण पछताए ना कोई लए किसे छुडाए, भज्जे जायण वाहो दाहे, इक्ठे होण ना भैण भ्राए, पुत्तर मात हत्थ ना आए, नीरो नीर फिरन तिहाए, बालक शीर ना मुख विच पाए, दुःख भुक्ख ने सर्ब सताए, मात कुक्ख ना कोई सुफल कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग प्रगट जोत साची देवे सर्ब सज़ाए। वेला अन्त शब्द ढंडोरा। जोत सरूपी आप फिराए सृष्ट सबाई शब्द घोड़ा। रहण ना देवे किते जोड़े जोड़ा। कलिजुग जीव ना भुल्ल गंवार, प्रभ अबिनाशी दी साची लोड़ा। बेमुखां हरि आप पछाड़े, जिउँ नाई नस्तर फोड़ा। वेला अन्त ना होए ख़ुआरे, धरत मात अकाश चढ़े दूजा पौड़ा। गुरमुखां हरि तारे, सोहँ शब्द आत्म रखाए साचा घोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन प्रीती लाए सेव कमाए आप निभाए तोड़ा। कलिजुग तेरी उलटी बुद्ध। प्रभ अबिनाशी आवण ना देवे किसे सुध। कलिजुग माया विच दिते गुध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां घर आप उपजावे नौ निध। नौ निध देवे गुण निधाना। पूरन पुरख हरि भगवाना। जन भगतां करे आप पछाना। एका देवे नाम निधाना। जोती साचा दीप जगाणा। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाणा। चरन धूढ़ कर इशनाना। अठसठ तीर्थ मेट मिटाणा। एका साचा सीरथ गुर अमृत जाम पिलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाणा। अठसठ तीर्थ मेट मिटाए। गंगा गोदावरी रहण ना पाए। पीर पैगम्बर औलीए आप खपाए। अहिमद मुहम्मद पीर दस्तगीर चार यार कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अञ्जील कुरानी खाणी बाणी आप मुकानी। कलिजुग तेरी चुक्की कानी। कोई ना मिल्या साचा बानी। गुरमुख साचे साचा जानी। शब्द बणाए साची राणी। कलिजुग उलझी अन्तिम ताणी। ना

कोई जाणे वेद पुरानी। ब्रह्मा विष्न खड़े हैरानी। प्रभ अबिनाशी खेल निराली करे करावे दो जहानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई गुरमुखां दे समझाई, वेला अन्तिम अन्त कलि आई, भैणां तांई छड्डण भाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे निशानी। सोहँ वज्जे साचा तीर। चार कुन्ट होए वहीर। कलिजुग तेरा अन्त अखीर। बेमुखां कोए ना देवे धीर। हत्थ ना आवे अन्तिम नीर। ना होए सहाई कोए पीर फकीर। अन्तिम अन्तकाल कलि मुख छुपायण पीर पैगम्बर औलीए दस्त गीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाए जिउँ पत्थर उप्पर लकीर। लिख्या लेख ना किसे मिटावणा। साचा लेखा आप लिखावणा। गया वेला वेख वेख ना वक्त गंवावणा। वेला गया हत्थ ना आवणा। वेले अन्त कावां वांग कुरलावणा। दर दर घर घर सभ नूं फिरावणा। राह साचा किसे ना पावणा। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवणा। घनकपुर वासी डेरा पार ब्यासों लावणा। मस्तूआणा साचा धाम आप उपजावणा। राजा राणा सरनी लावणा। राणा संगरूर पकड़ उठावणा। शब्द सरूपी मेल मिलावणा। एका धुन शब्द उपजावणा। माण ताण सर्ब मिटावणा। एका सरन निहकलंक रखावणा। दिवस चाली लेख लिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक साचा डंक वजावणा। राजे राणे आप उठाए। फड़ फड़ प्रभ सरन लगाए। शब्द डंगोरी मगर लगाए। वाग ढोरी हिक्क ल्याए। चोरी चोरी जो रहे मुख छुपाए। मायाधारी विषे विकारी होए हँकारी आपणी पति गंवाए। गुरमुखां देवे सच सिक्दारी शब्द उडारी जो आए चल द्वारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तारी। मस्तूआणा देणा माणा। चरन टिकाणा राजा राणा सरनी लाणा। चरनी डिग्गे होए निमाणा। तख्त ताज ना किसे सिर टिकाणा। एका दिसे साचा शाह सुल्ताना। एका अंक राउ रंक ऊँच नीच कोई रहण ना पाणा। आपे वरते आपणा भाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बंक द्वार सुहाए मस्तूआणा। मस्तूआणे देवे वड्याई। चार वरन चरन लगाई। एका जोत होए रुशनाई। चार कुन्ट पए दुहाई। अचरज खेल करे रघुराई। कलिजुग जीआं सुत्या रैण विहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई। गुरसिख तेरे नाम वड्याई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। दर घर घर दर तेरे भाग लगाई। साध संगत मिल हरि जस गाई। रसना रस देवे रघुराई। मानस जन्म लेखे लाई। जो चल आए हरि सरनाई। प्रभ अबिनाशी वेले अन्त लए छुडाई। देवे दरस मिटावे हरस भुल्ल ना जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाई। आए सरन दरस जिस पाया। जन्म मरन हरि गेड़ चुकाया। हरन फरन एह खेल रचाया। दानी दान तरनी तरन अमृत साचा भरन जिस जन रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाया। नेत्र वेख्या वटाया भेख्या। प्रभ अबिनाशी कीना वेस्सया, मिटे भुलेख्या।

प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया नज़र ना आया कोई रूप रेख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत लावे लेख्या। साचे लेखे आपे लावे। लहणा देणा आप मिटावे। सोहँ गहणा तन पहनावे। फड़ फड़ दोवें बाहीं प्रभ साचा पार लँघावे। कलिजुग लहर चढ़ आया हढ़, प्रभ अबिनाशी गुरमुखां पार लँघावे। चार कुन्ट होए कड़ कड़ होए धड़ धड़ खड वड़ कोई रहण ना पावे। बाहों फड़ देण झाड़, छुट्टण लड़ दिसण धड़, झूठे भाण्डे देवे भन्न जो प्रभ साचे लए घड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल वरतावे भन्न भन्नावे। कलिजुग अन्तिम आई हार। चौथा जुग होया ख्वार। वेद अथर्बण होया पार। सतिजुग लग्गे विच संसार। आप बुझाए आत्म अग्गे, सोहँ देवे शब्द सच्ची धार। गुरमुख साचा जो चरनी लग्गे, हरि देवे दरस अपार। जगत अन्धेरी कलिजुग वगे, घर घर होयण बन्द कवाड़। गुरमुख साचे दर साचे आयण भज्जे, प्रभ साचा सोहँ शब्द करावे साची वाड़। आप रखाए आपणी लज्जे, जो जन करन चरन निमस्कार। पी अमृत दर साचे रज्जे, मानस जन्म ना होए ख्वार। प्रभ अबिनाशी पर्दे कज्जे, अन्तिम बाजी ना जाए हार। शब्द नगारा तेरी काया अंदर वज्जे, साची सुण शब्द धुन्कार। बेमुखां सिर बद्धे छज्जे, दर दर फिरन भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी सर्ब घट वासी एका देवे सोहँ सच्ची शब्द कटार। सच शब्द धुन सिख साची जान। खुल्ले सुन्न तुटे मुन, आपणी आप करन पछाण। गुरमुख साचे प्रभ कलिजुग चुण, सोहँ देवे साचा दान। बेमुख काया पंचां लाया झूठा घुण, आपणा आप ना सके पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आया मंगल गाया सोहँ देवे साचा दान। मंगल गाया हरि प्रभ पाया। नेत्र पेख आत्म तृप्ताया। प्रभ अबिनाशी साचा वेख रोग सोग क्यों मन वसाया। जोत सरूपी धारया भेख, बेमुखां दिस ना आया। गुरमुखां साचा आत्म नैणा तीजे रिहा वेख, लोचण तीजा आप खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द पवण चलाया। शब्द पवण इक्क हुलारा। सुरत शब्द हरि मेल मिलारा। देवे शब्द आप गिरधारा। सुरती सुरत उपजे धुन्कारा। अकाल मूर्त तेरे विच पसारा। मानस जन्म पाए क्यों झूरत, प्रभ अबिनाशी कर चरन निमस्कारा। आप दिखाए साची सूरत, तेरे विच बैठा गिरधारा। जिस जन जाणो दूरत, वोह सद सदा सद विच पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप लक्ख चुरासी इक्क अकारा। मिले वड्याई दर घर साचे भिन्नड़ीए रैणे। संगत गुर दोए इक्क घर विच बहिणे। बेमुख जायण खाली हत्थ मुड़, गुरसिख लैण साचे लहिणे। कलिजुग वहन्दे वहिण जायण हड़्, ना कोई पार कराए साक सज्जण सैणे। बिन हरि साचे भाण्डे काचे, ना कोई छुडाए भाई भैणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई संगत पेखे नैणे। भिन्नी रैनड़ीए तेरा रंग निराला। भिन्नी रैनड़ीए दर

घर साचे आए गुर गोपाला। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुखां देवे सोहँ नाम सुखाला। भिन्नी रैनड़ीए आप पहनावे आत्म तन साची माला। भिन्नी रैनड़ीए आप कट्टे तेरा जगत जंजाला। भिन्नी रैनड़ीए गुर दर साचे आए कदे ना होए कंगाला। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख विरले कलिजुग साचा वक्त संभाला। भिन्नी रैनड़ीए बेमुखां अन्तिम होए मात मूंह काला। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुखां हरि फल लगाए सोहँ साचे डाला। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सच तेरा रखवाला। भिन्नड़ीए रैणे गुरसिख बणाए तेरे साचे भाई तूं बण साची भैणे। एका दर एका घर एका देवे वर, साचा हरि भर प्याले आत्म लैणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आप खुल्हाए तीजे नैणे। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहावा। गुरमुख साचे प्रभ मिलण दा कर साचा दाअवा। भिन्नी रैनड़ीए तेरे हत्थ वड्याई गुरमुख साचे लए जगाई बेमुखां गूढ़ी नींद सुआवा। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां देवे आप शब्दावा। भिन्नी रैनड़ीए इक्क साची ओट। गुरमुखां लावे शब्द चोट। बेमुखां कढ्ढे दर ते खोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुट्ट भण्डारी कदे ना होवे तोट। भिन्नी रैनड़ीए तेरी साची रुत्त। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ अबिनाशी गुरसिख बणाए साचे सुत्त। आत्म साची जाग लगाई, दुरमति मैल जाए धोत। बेमुखां प्रभ दे सजाई, दरगाह साची बाहर कढाई वढ्ढे नक्क गुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क
११४ ०३ सुहाए तेरी रुत्त। भिन्नी रैनड़ीए तेरा अन्त विचारया। भिन्नी रैनड़ीए जन भगतां देवे सोहँ शब्द खुमारीआ। भिन्नी रैनड़ीए ११४ ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए अगम्म अपारीआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा सच अकारा। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख मिल्या हरि कन्त प्यारा। भिन्नी रैनड़ीए जीव जन्त की करे विचारा। भिन्नी रैनड़ीए कलिजुग अन्त होया अन्धयारा। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख विरले दर साचा बूझा, प्रभ आप ल्यावे खिच दुआरा। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ अबिनाशी भेव खुल्हाए गूझे, क्या बूझे जीव विचारा। भिन्नी रैनड़ीए जूठे झूठे माया लूठे दर दर फिरन भिखारा। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे एका दर मंगण नाम रंगण पूरन कर्म विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा देवे नाम अधारा। भिन्नी रैनड़ीए तेरा रंग मजीठा। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुखां प्रभ अबिनाशी साचा डीठा। भिन्नी रैनड़ीए कलिजुग जीव आत्म हँकारी दुष्ट दुराचारी दर घर आए होए कौड़ा रीठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो सच पछाण। आप रसना रिहा वखाण। सोहँ देवे साचा दान। दरगाह साची पावे माण। जिथ्थे झुल्ले इक्क निशान। आवण जावण सर्ब मिट जाण। मेल होए भगत भगवान। बेमुख जूठे झूठे आत्म अन्धे पाप कमाण। पापी गन्दे मदिरा मास खाण। कलिजुग होए भाग मन्दे, प्रभ अबिनाशी ना सके पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। भिन्नी रैनड़ीए तेरी बुध बबेक। भिन्नी

रैनड़ीए गुरसिक्खां रक्खी एका टेक। भिन्नी रैनड़ीए कलिजुग अग्न ना काया लागे सेक। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए इक्क कराए एका एक। गुरसिख तेरे मन वधाई। बैठी तेरी आत्म काया कूंज प्रभ दर
बिल्लाई। किरप करे अवतार नरे, अमृत बूंद स्वांती दे पिलाई। आत्म जोत हरि साचा धरे, सांतक सति सति दे वरताई।
अज्ञान अन्धेर दूर करे, एका जोत जगे रघुराई। एका रखावे शब्द दरे, कूड़ कुड़ाना दे मिटाई। साचा दीपक जोत धरे,
आत्म होए सच रुशनाई। कारज तेरे सर्ब सरे हरि हरि जस हरि रसना गाई। ना उह जन्मे ना उह मरे, महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां दे वड्याई। एका साची रक्खी आस। प्रभ मिलण दी इक्क प्यास। मिल्या हरि हरि पुरख
अबिनाश। हउमे ममता रोग तेरा होवे नास। सोहँ देवे साचा जोग साचा शब्द अकाश। अमृत आत्म रस साचा भोग, अज्ञान
अन्धेर जाए विनास। माया ममता कट्टे काया रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कदे ना होवे वियोग। गुरमुख तेरी
आत्म धीर। गुर दर पीणा अमृत साचा सीर। आप चलाए प्रभ साचा सोहँ तीर। दूई द्वैत बज़र कपाटी जाए चीर। आप
चढ़ाए औखी घाटी, जिथ्थे जाए कोई विरला साधू सन्त फकीर। कलिजुग खेल झूठी बाजी झूठा दिसे मेल। काया चोली
सभ दी पाटी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मेल मिलाया साचा मेल। गुरमुख तेरा धीर ध्याना। आत्म राम
११५ ०३ वसे भगवाना। सोहँ शब्द लग्गे चोट, साचा वज्जे इक्क दमामा। हउमे विच्चों जाए खोट, साचा दरस पाए हरि नामा। ११५ ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए पूर कराए कामा। गुरमुख तेरी बूझ विचार। आत्म दूज दए निवार। तीजा
चौथा होया पार। आप लै जाए सच दरबार। इक्क दिखाए हरि का द्वार। जिथ्थे वसे हरि करतार। कलिजुग राह साचा
दस्से, सोहँ शब्द साची धार। प्रभ अबिनाशी हिरदे वसे, जो जन रसना लए उचार। आत्म जोत होए प्रकाश कोट रवि
सस्से, मिटाए अन्ध अंध्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे किया शब्द प्यार। सच शब्द हरि मंगल गाया।
प्रभ अबिनाशी सच्चा पाया। आप आपणी दया कमाया। सच नाम हरि झोली पाया। कौडी दाम मुल्ल ना लाया। एका
राम नाम ध्याया। अमृत साचा जाम पिआया। मन तन हरया आप कराया। काया कंचन शब्द कराया। एका जोत निरँजण
आप जगाया। भरम भुलेखा सारा लाहया। वेखी वेखा भुल्ल ना जाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे
माण दवाया। सुरत शब्द हरि रलाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। एका सुरत देवे रघुराई। अकाल मूर्त हरि बूझ बुझाई।
साची तूरत शब्द उपजाई। ना जाए झूरत जो जन गुर दर आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराई।
रसना गाया हरि गोबिन्दा। प्रभ आप मिटाए मन की चिन्दा। साचा फल नाम हरि दविंदा। भगत जनां हरि सद बख्शिंदा।

माण मोह जो रखिंदा। दर घर साचे आए करे जो निंदा। आत्म वज्जे हँकारी जिंदा। गुरमुख साचा सच तरंदा। आप बणाए साचा बन्दा। दर रहण ना पाए मदिरा मासी गन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म आप रंदाए सोहँ साचा रंदा। गुरमुख तेरी प्रीत न्यारी। आत्म सिंची प्रेम क्यारी। सोहँ शब्द लाओ साची फुलवाड़ी। एथे ओथे तेरा होए सहाई बाकी मिले अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पकाए तेरी कर्मां हाढ़ी। गुरमुख तेरे कर्म गुण। प्रभ अबिनाशी लए सुण। आत्म वजावे साची धुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मात चुण। गुरमुख तेरी आत्म रस। प्रभ अबिनाशी होए वस। सच कर्म हरि जाए दस्स। पंजे चोर जायण नस्स। शब्द तीर हरि मारया कस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होया तेरे वस। गुरमुख तेरा धीर ध्याना। दर घर आए किया चरन धूढ़ इशनाना। प्रभ अबिनाशी आप मिटाए आत्म उदासी, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। वेले अन्त कराए बन्द ख़लासी, ना पए जम की फाँसी घनकपुर वासी जिस जन रसन वखाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाणा। गुरमुख तेरी लाज रखाई। शब्द सुरत हरि अवाज लगाई। सोहँ साचा ताज पहनाई। एका मंग हरि शरनाई। दूसर कोई दिस ना आई। एका इक्क ओंकार एका लिव लाई। एका जोत मिटाए अंध्यार, एका शब्द सुणाई। एका गोत सर्ब संसार, वरन अठारां

११६ ०३ दे मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख रिहा लिखाई। गुरसिख साची परखी नीत। चरन कँवल हरि ११६ ०३

बख्शे प्रीत। मानस जन्म जग्ग जाए जीत। काया होवे सांतक सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां चलाए उलटी रीत। आत्म ध्यान धरे भगवाना। गुरमुख साचे आप पछाणा। दर घर आए ना करे अभिमाना। एका रक्खे चरन ध्याना। साचा बख्शे प्रभ चरन धूढ़ इशनाना। सोहँ बन्ने आत्म गाना। प्रभ अबिनाशी साचा जाणा। भरम भुलेखा सारा लाहणा। जोत सरूपी पहरया बाणा। राउ रंक दा इक्क सुल्ताना। राजन राज इक्क रजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। प्रभ दर मंगी साची मंग। काया चोला प्रभ देवे रंग। आत्म चिन्ता सोग मिटाए सुखी कराए अंग अंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग। आत्म आकड़ आप गंवाए। सोहँ तक्कड़ आप तुलाए। आत्म जकड़ चरन लगाए। नाड़ बहत्तर जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस अमोघ आप दिखाए। आप दिखाए दरस अमोघा। आपे कट्टे हउमे रोगा। ना कदे चिन्त ना लग्गे सोगा। एका देवे साचा जोगा। साध संगत रस साचा भोगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मेल मिलाया विछड़यां संजोगा। विछड़यां कलि मिल्या मेल। अचरज पारब्रह्म कलि खेल। गुरमुख साचे आत्म मेल मिलाए, आत्म जोती दे धराए, आप जगाए बिन बाती तेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां

होए साचा सज्जण सुहेल। गुरमुख हरि आप पछाणे। दरगाह साची देवे माणे। मानस जन्म हरि लेखे लाणे। आप बणाए गुरसिख साचे सुघड़ स्याणे । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गोद उठाए गुरसिख बाल अञ्याणे। अञ्याणा बाला गुरसिख पाला। आत्म देवे नाम साचा लाला। एका रंग चढ़ाए गुर गोपाला। आपे होए गुरसिख तेरा रखवाला। अन्तिम अन्त आप छुडाए ना मंगे कोई दलाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं करे प्रितपाला। ओअं तेरा सच दरबारा। एका रूप अनूप अगम्म अपारा। एका सति सरूप सति सहारा। वड शाहो वड वड भूप जोत सरूपी जोत निरँकारा। तीन लोक लोक परलोक खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड नवखण्ड नव सर्ब पसारा। लक्ख चुरासी जीव जन्तां देवे जोत अधारा। आपे होए आपणा इक्क सहारा। जोती जोत सरूप हरि एका तेरा वड दुआरा। वड द्वारी वड दरबारी वड संसारी। जोत निरँकारी रूप अपारी। खेल न्यारी सर्ब जीआं दर साचे बैठा प्रभ अबिनाशी सुणे पुकारी। सुणे पुकारा प्रभ दातारा। जोत अकारा सर्ब पसारा। विच संसारा सुरत शब्द मेल मिलारा। जोती जोत सरूप हरि दिवस रैण रैण दिवस सद एका रंग रंगे करतारा। रंग अवल्लड़ा वसे इकल्लड़ा। भारा पलड़ा दर साचे खलड़ा। घर साचा मलड़ा। साचे ढांचे ढलड़ा। ना पीला ना लाल एका रंग गुल्लड़ा। साचा नर हरि गुर गोपाल प्रभ अबिनाशी जोत सरूप बिन रंग रूप सच धाम दर साचा मलड़ा। एका जोत सरूप हरि दर द्वार सद सदा सद खलड़ा। प्रेम वैरागी पावे वैण, जगत त्यागी पेखे नेत्र प्रभ अबिनाशी साचा नैण। एका सुरत शब्द गुर लाई, देवे सुनेहा स्वास पवण। माछूवाड़े कंडयां सेज विछाई, तुध बिन होवे सहाई कवण। तेरा विछोड़ा मैं कदे ना लोड़ा, क्यों दर तों होड़ा अज सेज वछाई मेरी रोड़ा। मेरा वक्त रहि गया थोड़ा। जोती जोत सरूप हरि लगी प्रीत निभावे तोड़ा। गुर गोबिन्द शब्द धुन्कार। पवण सरूपी जाए संवार। आप पुजाए विच दरबार। मन बैरागी जगत त्यागी वड वड भागी एका मंगे तेरा दरस प्यार। जोती जोत सरूप हरि किरपा कर छेती मेल मिलावा होए सच भतार। उठ जीव जाग प्रभ होए सहाई। जुगा जुगन्तर आदि जुगादि गुरसिक्खां जिन बणत बणाई। किरपा कर पूरे हरि लक्ख चुरासी विच्चों मानस देह दित्ती वड्याई। रक्त बूंद हड्ड नाड़ पिंजर प्रभ तेरी देह बणाई। पवण सरूपी आत्म स्वास प्रभ साचा दे चलाई। साची जोत कर प्रकाश दीपक जोती दे जगाई। आन बाट विच तेरी काया आप पकाई। काया कोट अन्धेरी खाड, प्रभ उलटा सिर रखाई। नर्क कुन्ट घोर अन्धेर प्रभ अबिनाशी तेरा होए सहाई। हरि हरि हरि तेरी रसना गाई। तत्ती वाओ ना लागे राई। प्रभ अबिनाशी किरपा कर दसवें मास दित्ती वधाई। मातलोक विच जन्म धर, मात पिता देवे वड्याई। जगत माया लागी तन, विसरया रघुराई। बाली बाल बाल बालड़ा आपणी सुध बैठा भुलाई। एका दूजा तीजा चौथा पंजवें सुरत

११७
०३

रखाई। छेवें सतवें अठवें नांवें दसवें खेड खिडाई। खेड खिडावे झूठी बाजी साची बूझ बुझाई। प्रभ अबिनाशी विसरया जिस विच बणत बणाई। भुल्लया हरि ना वक्त विचारया। चुकया डर भुल्ल गवा रिहा। मानस जन्म जूए बाजी हारया। गुरमुख विरले उतरे पार, जिस मिल्या गुर प्यारया। आत्म देवे नाम निधाना, नाम साचा जाम पिला रिहा। पूर कराए मात कामा, प्रभ साचे मार्ग ला रिहा। जोत सरूपी जोत हरि जुगो जुग जन भगतां पैज रखा रिहा। जन भगत हरि सेव कमावे। दिवस रैण हरि रसना गावे। प्रभ अबिनाशी लेखे लावे। आदि जुगादी वड ब्रह्मादी साचा नाद शब्द धुन उपजावे। जोती जोत सरूप हरि आप आपणे रंग रंगावे। गुर पूरा गुरसिख पछाणे। मन तन धन करे कुरबाने। आत्म तुटा जन निकलया माने। रसना कहे धन्न मिल्या भगवाने। दरगाह साची ना लग्गे डन्न, जमदूत नेड़ ना आने। प्रभ अबिनाशी आप उठाए आपणे कंध, सचखण्ड निवास रखाने। जोती जोत सरूप हरि जन भगतां मार्ग पाने। गुरमुख आत्म जाए मन, साचा शब्द सुणे हरि काने। भरम भुलेखा निकले जन, झूठी अग्न ना रहे ताने। एका लागण प्रभ मिलण दी, जोती जोत सरूप हरि आत्म होण ना देवे नग्न, गुरमुख वेखे गुरद्वारया। आप आपणा आपा वारया। एका जापा हरि आप जपा रिहा। तीनों तापा मगरों लाह रिहा। कोटन पापां मैल गंवा रिहा। माई बापा आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि गुरमुखां लेखे
११८ ०३ ला रिहा। मानस जन्म लेखे जाए लग्ग। प्रभ अबिनाशी जो जन पकड़े पग्ग। कलिजुग अग्न विच ना जाए दग। महाराज ११८ ०३
शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आप बुझाए तृष्ना अग्ग। मोहण माधव जिस जन जाणयां। नैण मुँधारी देवे माणयां। कृष्न मुरारी आप बणाए सुघड़ स्याणयां। राम अवतारी एका रंग रंगाणयां। भगत भण्डारी हरि भगवानयां। कलंकनिह नरायण नर अवतारी गुरमुखां पार करानयां। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिगुर साचा जिस जन मातलोक विच जाणयां। रसना गावे भेव छुपावे, दर भुलावे, सार ना पावे, चरन प्रीत साची नीती इक्क रखावे। प्रभ अबिनाशी गले लगावे। भुल्लयां कलिजुग मार्ग पावे। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुख विरला चरन धूढ़ी तीर्थ नुहावे। हरि सन्त इक्क जान। हरि सन्त इक्क अस्थान। हरि सन्त इक्क ज्ञान। हरि सन्त इक्क ध्यान। हरि सन्त इक्क इशनान। हरि सन्त एका इक्क मान। हरि सन्त एका एक रक्ख टेक हरि भगवान। हरि सन्त हरि का दास। हरि का दास सदा अबिनाश। हरि का दास हरि आप आपे रक्खे वास। हरि का दास अन्त एका नित रसना गाए, आप बणाए बणत। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, रसना गाण मिले साचा कन्त। सन्त रंग सद रंगीला। आपे रंगे कर कर हीला। साचा नाम प्रभ दर मंगे देवे हरि भर प्याले पी ला। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सोहँ घोड़ा देवे छैल छबीला। हरि सन्त हरि वेख विचार। हरि सन्त

हरि शब्द अधार। हरि सन्त कर हरि प्यार। हरि सन्त हरि आप खुल्हाए दस्म दुआर। हरि सन्त हरि आप उपजावे एका शब्द धुन्कार। हरि सन्त सच धाम रहाए, पूरन ब्रह्म कर्म विचार। हरि सन्त हरि का दास। जन सन्तां हरि वसे पास। आदि अन्त आदि अन्त आदिन अन्ता प्रभ अबिनाशी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्तां करे बन्द खलास। बन्द खलासी बन्दी तोड़े। जुगा जुगन्तर विछड़े प्रभ साचा जोड़े। चरन प्रीती दिवस रैण प्रभ साचा लोड़े। लोड़े दर घर साचे सेव कमाई, लहणा देणा प्रभ साचा मोड़े। विच मात हरि दे वड्याई, आप चढ़ाए नाम घोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखाए कलिजुग अन्तिम दिन रहि गए थोड़े। वेला अग्गे आया नेड़े। दरगाह साची होण नबेड़े। कलिजुग तेरे मुक्कण झेड़े। उलटे आवण सारे गेड़े। खुल्ले होयण सभ दे वेहड़े। आप डुबाए भर भर बेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त अन्तकाल लेखा सर्ब नबेड़े। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात। सृष्ट सबाई तुट्टा नात। छेती फेर ना आवे मात। कुकर्म कीए कुधर्म कीए बेमुखां बहु बहु भांत। जुरम वरम कीए अजे ना होई आत्म शांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लेख लिखाए बैठा इक्क इकांत। कलिजुग तेरा झूठ विहारा। पूरन करे हरि विचारा। पासा अन्तिम आया हारा। देवे ना तैनूं कोई सहारा। आपणी खेल आप वरताए सृष्ट सबाई ना पावे सारा। आत्म अग्नी जोत लगाए, सृष्ट सबाई होए दो फाड़ा। वड वड बोध सूरबीर उठाए, धरत मात बणाए इक्क अखाड़ा। अग्न मेघ आप बरसाए, कोई ना छुपया रहे विच जंगल जूह पहाड़ां। नौ खण्ड पृथ्मी भेड़ भिड़ाए, मौत बणाए लाड़ी लाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त तेरा आप चुकाया भाड़ा। सृष्ट सबाई होए दो धड़। एका दूआ पैण लड़। गोली गोला आप बरसाए, ना कोई दिसे किल्हा गढ़। नगर खेड़ा कोई रहण ना पाए, ना कोई वेखे पौड़ी चढ़। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेख वखाए सर्ब जीआं दे अंदर वड़। उठे रूसा लशकर भारी। ईसा मूसा होए ख्वारी। लुट्टी जाए मुहम्मद तेरी चार यारी। सदी चौधवीं होई भारी। चारों तरफ होए ख़ुआरी। किसे ना होवे नार प्यारी। दर दर घर घर बेमुख भज्जण, कोई ना बणे ब्योपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द उठाए खण्डा दो धारी। रूस चीना एका कीना। आप मिटावे मुहम्मदी दीना। धरत मात तेरा खुल्हा सीना। झूठा राज प्रभ साचे छीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई दाना बीना। संग मुहम्मद चार यार। उठण भज्जण होयण ख्वार। पीर दस्तगीर ना होए कोई सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द फड़े कटार। एका फड़े शब्द कटारी। नबी रसूलां होए ख्वारी। आपणा मूल गए हारी। बेमुखां प्रभ अबिनाशी भूला, झूठी करन सिक्दारी। मात जोत प्रगटाए हरि साचा कन्त कन्तूला, पूर्ब कर्म

रिहा विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप नरायण नर अवतारी। अहिमद मुहम्मद वक्त चुकाया। चार यारां संग रलाया। मातलोक विच्चों बाहर कढ़ाया। उम्मत नबी रसूल दी रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द त्रसूल लगाया। एका शब्द चल्ले तीर। मेट मिटाए पीर फकीर। ना कोई होए सहाई औलीए पैगम्बर दस्तगीर। अन्तिम अन्तकाल कलि लथ्थे चीर। नेत्रां विच्चों वगे नीर। एका लग्गे दुक्खां पीड़। बेमुखां टुट्टी हड्डी रीड़। प्रभ अबिनाशी साचा जाए पीड़। वेला अन्त अन्तकाल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बीड़। मुहम्मद मंग एका मंग। सदी चौधवीं होए भंग। आप भन्नाए जिउँ काची वंग। शाह सुल्तानां तुट्टे तंग। सच शब्द हरि जाए डंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप भन्नाए काया अंग। काया अंग देवे तोड़। लग्गी प्रीती देवे विछोड़। अन्तकाल कलिजुग ना निभी तेरी तोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त उपजाए मात लगाए धर्म बिरख बोहड़। मन तन भिन्नड़ा हरि चरन प्यासा। मन तन भिन्नड़ा हरि देवे शब्द दिलासा। मन तन भिन्नड़ा गुरमुख साचा आप रखाया जिउँ कंचन पासा। मन तन भिन्नड़ा वेखे हरि रंग तमाशा। मन तन भिन्नड़ा हरि करे बन्द खलासा। मन तन भिन्नड़ा सोहँ साचा जाप जपाए स्वास स्वासा। मन तन भिन्नड़ा मुक्त जुगत कराए तेरी दासा। मन तन भिन्नड़ा आप कटाए जम की फासा। मन तन भिन्नड़ा अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्त आण सहाए, जोती मेल मिलाए, सचखण्ड रखाए निवासा। मन तन भिन्नड़ा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि पाया शाहो शाबाशा। मन तन भिन्नड़ा तन वज्जी वधाई। मन तन भिन्नड़ा हरि एका लिव लाई। मन तन भिन्नड़ा तन धन हरि नाम साचा देवे पाई। मन तन भिन्नड़ा साचा राग हरि देवे कन्न सुणाई। मन तन भिन्नड़ा आत्म धो दाग प्रभ निर्मल दे कराई। मन तन भिन्नड़ा आपे पकड़े गुरसिख तेरी वाग सच दुआरे दे बहाई। मन तन वज्जी वधाई, पूरन होए भाग आए प्रभ शरनाई। मन तन वज्जी वधाई, गुरसिख हँस बणया काग, प्रभ सोहँ चोग दे चुगाई। मन तन वज्जी वधाई, आप उपजावे अनहद साचा राग, सुन्न समाध आप खुल्हाई। मन तन वज्जी वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दस्म दुआर दी बूझ बुझाई। दस्म दुआरा हरि खुल्हारे। मन सिख साची शब्द धारे। साचा शब्द इक्क धुन्कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल करे जोत अकारे। तेरी काया महल मुनारे। काया महल मुनारा विच हरि पसारा। मिटाए अन्धयारा जीव की करे विचारा। रसना गाए घर साचा पाए, दर सच खुल्हाए जिथ्थे वसे आप मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सरूप बैठा विच निराधारा। निराधार निराहार जोत अकार वेख विचार, जन्म सुधार मूल ना हार, कर प्यार उतरे पार, हरि देवे तार, जन्म मरन देवे संवार। लक्ख चुरासी गेड़ निवार।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यार। चरन सेवा साचा मेवा। देवे हरि वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द जपाए सोहँ जेहवा। सोहँ शब्द रसना गावणा साचा गुण। गुरमुखां देवे माण मात चुण। आप उपजाए आत्म साची धुन। गुर साचे विरले लई मात सुण । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। गुणवन्त हरि गुण ना जाणा। जीव जन्त ना किसे पछाणा। आत्म वस्सया माण अभिमाना। बण बण बैठे बली बलवाना। पल्ले नहीं नाउँ, ना कौडी ना आना। वेले अन्त किस छुडाणा। धर्म राए ने डन्न लगाना। कुंभी नर्क निवास रखाणा। गुरसिख साचे पास कराणा। सोहँ स्वास स्वास जपाणा। मानस जन्म रास कराणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाणा। सरन लगाए दे वड्याए दया कमाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पूरन आस कराए। हरि पाया कन्त कन्तूहला। सतिगुर झुलाए सोहँ साचा झूला। हरि आप मिटाए गुरसिक्खां पिच्छला मूलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सचे कदे ना भूलणा। ना भुल्लो ना विसरो। दिवस रैण सद रसन उचारो। मानस जन्म होए सुधारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखारो। साचे लेख प्रभ रिहा लिख। दर घर साचे मंगो भिख। साचे लेख हरि देवे लिख। आत्म सहिँसा रोग गंवाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए बिधना लिखी रिख।
१२१ ०३ लिख्या लेख आप मिटाया। साचा लेख फेर चुकाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। पूरन आस आप कराया। महाराज शेर सिँघ सर्ब गुणतास आप अख्वाया। पूरन आस हरि आप कराए। सच घर वास रखाए। हउमे दुखड़ा होए नास, जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दे मति आप समझाए। साचे मार्ग आप लावणा। आप आपणा राह दिखावणा। प्रभ अबिनाशी पकड़ बाहों, आप आपणे संग रलावणा। आपे रक्खे सिर छत्तर छाउँ, वाली दो जहान आप अख्वावणा। गुरसिख बणाए जिउँ बालक माउँ, पित मात आप अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गावणा। सच घर जिस जन वसणा। राह साचा हरि प्रभ दस्सणा। मदिरा मास ना लावण रसना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए हिरदे वसणा। मदिरा मास तजावणा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गावणा। आत्म दान प्रभ साचे झोली पावणा। एका शब्द निशान तेरे आत्म महल्ल रखावणा। कर मेल भगत भगवान महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सति सरूपी दरस दिखावणा। महल्ल मुनारा होए उज्जयारा। आप मिटाए अन्ध अन्धयारा। काया कूड़ा गढ़ विच हरि पसर पसारा। बज़र कपाटी पर्दा पाड़ा। बिन गुर पूरे कोई ना पाए, बन्द रहे दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख चलाए आपणे भाए, अमृत आत्म देवे सीर फुहारा। अमृत आत्म चले नीर। गुरमुख साचा

पीवे सीर। आपे देवे आत्म धीर। दूई द्वैत कट्टे जंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पिलाए अमृत साचा सीर। सति गुरमुख आत्म जान। मिल्या साचा हरि भगवान। बिन हरि पूरे सुंञा होए वैरान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए करे रुशनाए महान। आत्म जोती जाए जग। चरन सरन हरि जाए लग्ग। आप बणाए हँस कग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द बंधाए सिर तेरे पग्ग। तन मन्दिर आप सुहाए। हरि हिरदे वास रखाए। तन मन्दिर आप सुहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम जपाए। तन मन्दिर दर हरया होवे। हरि मन्दिर हरि आपे तोड़े आत्म जंदर, जो जन मंगे हरि नाउँ साचा जोड़ हत्थ दोवें। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जगाए कलिजुग सोए। सोया जीव जीव उठ उठ जाग। प्रभ अबिनाशी चरनी लाग। आप सुणाए हरि साचा राग। वेले अन्त हरि पकड़े वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म लावे सोहँ साची जाग। कलिजुग जीव जाग भरम ना भुल्ल। झूठे धन्दे झूठी माया विच ना रुल। प्रभ अबिनाशी देवे सोहँ दात अनमुल्ल। कलिजुग जीव प्रभ बुझाए आग देवे नाम सुहाग हरि संग साचे तुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बणाए जिउँ सागर कँवल फुल्ल। कँवल फुल्ल सागर संसारा। गुर चरन जो करे निमस्कारा। करनहार इक्क दातारा। देवणहार वड भण्डारा। दिवस रैण रैण दिवस रहे आप वरतारा।
१२२ ०३ जो जन मंगण आए दुआरा। दुध्ध पुत्त हरि रोग निवारा। तन लागे ना लागे भारा। पेट रोग ना रहे अफारा। जो जन प्रभ साचे तेरी चरन निमस्कारा। गुर चरन सद निमस्कारो। मिले पारब्रह्म करतारो। गुर चरन जाओ बलिहारो। हउमे रोग देवे निवारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस उतरस पारो। कर दरस उतरे भुक्ख। कर दरस उतरे दुःख। कर दरस उपजे सुख। कर दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुकड़े हरे कराए रुक्ख। रुखड़े सुकड़े हरे होए। चरनी आए जो खलोए। जगत अग्न ना लागे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम रिदे परोए। साचा नाम रसना गीत। मिले प्रभ अबिनाशी साचा मीत। दिवस रैण सद राखो चीत। हरि हिरदे वसे परखे नीत। कलिजुग अवध गई बीत। प्रभ चरन ना लागी प्रीत। ढहि ढेरी हो जाणा जिउँ बालू दी भीत। बिन गुर पूरे किसे ना पार लँघावणा, ना काया होवे सीत। साचा शब्द ज्ञान ना किसे दवावणा, ना होए आत्म अतीत। आत्म तृखा ना कोई बुझावणा, ना धीरज होवे नीत। दीपक जोती ना किसे जगावणा, एका प्रभ साचे दी रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुखां घर आया सचा मीत। दरस करना हरि तरस करना। अमृत मेघ बरसना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारना। उतरे पार जन आए द्वार। दुःख रोग दलिद्र प्रभ दए निवार। आपणे रंग रंगे करतार। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, भुक्खयां आपे पावे सार। दुखीए जीव दर बिल्लाए। बिन गुर पूरे कवण पार लगाए। एका एक बन्दी छोड़ आप अख्वाए। एका राखो साचा संग, चरन प्रीती तोड़ निभाए। आपे करे बुध बबेक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई नांहे। गोपाल मुरारी हरि जू तारे। जो जन आयण चल दुआरे। प्रभ अबिनाशी दरस पायन जोत सरूपी खेल अपारे। साची जोत मात प्रकाशे, अचरज खेल करे कलि भारे। सर्ब घटां हरि घट वासी, गुरमुख विरला करे विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नरायण नर अवतारे। गुर चरन जो करे प्यारा। साचा देवे नाम अधारा। आत्म देवे शब्द खुमारा। सोहँ साचा सच भण्डारा। गुरमुख साचा करे वपारा। देवणहार इक्क दातारा। आओ मंगो आत्म रंगो, प्रभ आत्म देवे खोल्ह कवाड़ा। गुरमुख साचे पार लँघो, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग उपजाए साचा लाड़ा। सोहँ तेरा सति वरतारा। चार वरन बणाए इक्क सरदारा। ऊँच नीच दे विच पसारा। ऐका देवे जोत एका शब्द अपर अपारा। दर दर घर घर होए जै जैकारा। सोहँ तेरा साचा वज्जे डंक डफारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सोहँ तेरा साचा राग। प्रभ अबिनाशी पकड़े तेरी वाग। गुरमुख कन्न सुणावे हँस बणावे काग। तेरा बन्न्ह वखाए बेड़ा, आत्म बुझाए आग। आत्म अन्धेर गंवाए, आत्म दीप करे प्रकाश। सोहँ साचा चन्न चढ़ाए साचा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर रक्खे वास। सोहँ तेरी सच सिक्दारी। चार वरन होए पनिहारी। देवे वर गिरधारी नरायण नर नर अवतारी। पारब्रह्म मात जोत धर, करे खेल अपर अपारी। उतरे पार जो जन आए चरन निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए काहना कृष्ना राम मुरारी। काहना कृष्ना माधव माधो। प्रभ अबिनाशी साचा लाधो। मात जोत प्रगटाए बोध अगाधो। एका शब्द उपजावे नादव नादो। आप सुणाए तीन लोक खण्ड ब्रह्मण्ड ब्रह्मादो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मिल्या साचा माधो। मोहण माधव कृष्न मुरारी। कलि जोत प्रगटाए जोत सरूपी जामा धारी। आप आपणे विच समावे। क्या कोई वेखे जीव गंवारी। गुरमुख साचे बूझ बुझाए जो जन आए चल द्वारी। आत्म भेव गूझ खुल्हाए जो जन आए चल दरबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। काहन घनईआ राम रमईआ। कलिजुग भेस वटईआ। सृष्ट सबाई आप भुलईआ। सोहँ चलाए साची नईआ। संसार सागर दे विच रखईआ। चार वरन एका पूर करईआ। एका नाम वंञ मुहाणा प्रभ साचा नाम दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन कराए एका भैणां भईआ। चार वरन एका जाति। चार वरन एका दाती। चार वरन इक्क कराए भैण भ्राती। चार वरन सोहँ देवे एका दान हरि वड वड दातन दाती। एका शब्द झोली पाए गुरमुख साचा रसना गाए, प्रभ अबिनाशी

दीपक जोत जगाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाई, चार कुन्ट ऊँच नीच ना कोई जाणे जाती। चार वरन चार कुन्ट इक्क द्वार। एका एक करे संसार। एका दूआ देवे निवार। तीजा चौथा होए पार। एका रंग रंगे करतार। सोहँ देवे साची धार। वरते वरतावे विच संसार। आपे करे सच विहार। कलिजुग होया अन्त ख़ुआर। बेमुखां आई हार। प्रभ अबिनाश गए विसार। मदिरा मासी दुष्ट दुराचार। आत्म वस्सया सर्ब हँकार। राम रमईआ ना रिहा कोई विचार। काहन घनईआ भेस सर्ब संसार। झूठा भेख वटाया, दर दर फिरन भिखार। प्रभ अबिनाशी सार ना पाया। मात जोत धरे लए अवतार। कलिजुग अन्तिम अन्त मुकईआ, कोई ना जाणे प्रभ दी सार। सतिजुग साचा मार्ग लईआ, पहली माघ करे विहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। चार वरन इक्क जोग। वार वरन एका भोग। चार वरन आ मिटाए हउमे रोग। चार वरन एका घर इक्क संजोग। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक कटाए आत्म रोग। चार वरन एका सिक्ख। चार वरन एका भिक्ख। चार वरन एका सुख। चार वरन एका दुःख। चार वरन एका रुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक कराए सतिजुग साचा लाए आप मिटाए तृष्ना भुक्ख। चार वरन एका घर। चार वरन एका दर। चार वरन एका सरन। चार वरन एका चुक्के डर। चार वरन एका मिल्या साचा
१२४ ०३ हरि। चार वरन घनकपुर वासी चरन लाग जाए तर। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे किरपा जाए कर। चार वरन एका रंग। चार वरन एका संग। चार वरन एका मंग। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग। चार वरन इक्क दातारा। चार वरन इक्क सरकारा। चार वरन एका एक हुक्म प्यारा। चार वरन एका झण्डा झुल्ले तेरे सीस छत्तर झुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द अधारा। चार वरन इक्क धार। चार वरन इक्क विहार। चार वरन एका यार । चार वरन इक्क भतार । चार वरन एका कन्त प्रभ साचा कर प्यार। चार वरन महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, साची जोत करे अकार। चार वरन एका जोती। चार वरन माणक मोती। चार वरन दुरमति मैल प्रभ साचे धोती। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख जगाए एका जोती। चार वरन एका रीता। चार वरन एका मीता। चार वरन एका देवे चरन प्रीता। चार वरन खुल्ले हरन फरन प्रभ अबिनाशी दीता। चार वरन जम का चुक्के डरन, नाम निधान गुर दर पीता। चार वरन प्रभ साचे दी सरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मानस जन्म जाओ जग जीता। चार वरन एका राम। चार वरन एका दाम। चार वरन एका कम्म। चार वरन एका ब्रह्म। चार वरन एका धर्म। चार वरन एका शर्म। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए

आपणी सरन। चार वरन एका खाणा। चार वरन एका बाणा। चार वरन एका ताणा। चार वरन एका माणा। चार वरन एका एक प्रभ अबिनाशी जाणा। चार वरन सोहँ चढ़ाए प्रभ सच बबाणा। चार वरन एका धाम। चार वरन एका राम। चार वरन एका शाम। चार वरन एका जाम। चार वरन एका काम। चार वरन एका नाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपावे आत्म देवे साचा धाम। चार वरन एका मति। चार वरन एका तत्त। चार वरन एका यति। चार वरन एका सति। चार वरन एका रत। चार वरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दे समझावे मति। चार वरन एका रीत। चार वरन एका प्रीत। चार वरन प्रभ साचा काया करे सीत। चार वरन आपे पुणे करे पतित पुनीत। चार वरन सुणावे एका शब्द सोहँ साचा गीत। चार वरन प्रभ अबिनाशी मिल्या हरि साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस गुरमुख सद गाओ रसना गीत। गीत गोबिन्दा, दरस दखिंदा, माण दविंदा, ताण रखंदा, सद बख्शंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा मृगन्दा। वड सूरबीरा, सर्ब भरपूरा, एका देवे साचा नूरा। शब्द उपजावे अनाहद साची तूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती दीप जगाए जगे जोत जिउँ कोहतूरा। कोहतूरी, साची नूरी। आपे करे सति सरूरी। जो जन आए चल हज़ूरी। आसा मनसा प्रभ साचे पूरी। दुक्खां सुक्खां करे दूरी। आत्म सुक्खां
१२५ ०३ देवे चूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाओ सर्ब सुख पाओ। उतरे सगल वसूरी। रसना गाओ गुण गोबिन्दा। १२५ ०३
आप उपजावे परमानंदा। क्यों गंवाया निज़ानंदा। प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदा। आप उतारे मन की चिन्दा। जन भगत बणाए साची बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन लगाए सुरपति राजे इन्दा। त्रैलोकी नाथा, सगला साथा, सृष्ट सबाई आप चढ़ाए सोहँ साचे राथा। सोहँ साचा शब्द चलाए साची गाथा। गुरमुख साचा पार लँघाए, आप लिखाए लेख माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगला साथा। सगला संगी, देवे दान दात जो दर मूहों मंगी। आत्म रहे ना किसे भुक्खी नंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरा सरबंगी। सूरबीर वड दातार। देवणहार आप करतार। भरे रहण सद भण्डार। सृष्ट सबाई होए भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे आपे होए तेरा वरतार। सतिजुग तेरा सच वरतारा। प्रभ अबिनाशी जामा धारा। जोत सरूपी खेल अपारा। सोहँ चलाए शब्द अपारा। आप उठाए खण्डा दो धारा। गुरमुखां पार करावे, बेमुखां डोबे विच मञ्झधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे आप बंधाए साची धारा। सतिजुग तेरा धीर धरावणा। कलिजुग तेरा चीर लुहावणा। गुरमुख साचे अमृत साचा सीर प्यावणा। हउमे विच्चों पीड़ गंवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमावणा। कर्म कमाओ, धर्म रखाओ,

भरम चुकाओ, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाओ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। जूठ झूठ सभ नष्ट करावणा। सच सुच्च हरि आप वरतावणा। झूठा भेख कोई रहण ना पावणा। वेख वेख सर्ब सरन लगावणा। जोत सरूपी दरस दिखावणा। स्वच्छ सरूपी नज़री आवणा। बिन रंग रूपी आपणा मेल मिलावणा। सति सरूपी जोती जोत समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिजुग तेरा साचा नाम धरावणा। सतिजुग साचा नाम धराए। पहली माघ जन्म दवाए। कलिजुग तेरी औध विहाए। कलिजुग जीव फेर पछताने वेला गया हत्थ ना आए। सोहँ साचा नाम जपाए, एका साचा बीज बिजाए। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिजुग तेरी पूरन रीझ आप कराए। सतिजुग तेरा साचा रंग। गुरमुखां प्रभ दर मंगी मंग। आप मिटाए सर्ब भुक्ख नंग। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, किसे होण ना देवे नंग। ना कोई भुक्खा ना कोई नंगा। एका रंग सारे सतिजुग तेरा रंगा। प्रभ अबिनाशी पूरा दर एका मंगा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, एका एक वरतावे कराए ना कोई माढ़ा ना कोई चंगा। गुर प्रसाद गुर आप वरताए। दुक्खां रोगां नास कराए। साची भिच्छया नाम पाए। पूरन इच्छया आप कराए। दर घर साचे जो चल आए। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, हउमे सहिंसा रोग चुकावे। गुर संगत प्रभ दे वड्याई। प्रभ दर आए सेव कमाई। साचा बेड़ा प्रभ बन्नू वखाई। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन तेरा दर्शन पाई। दर घर वेख सिँघ सिँघ बैठा सेज। प्रभ अबिनाशी आप वखाए आपणा तेज। दर आए भोग लगाए आप रखाए तेरी पैज। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा भोजन भोज कराए, ना कराए लेहज फेहज। भोजन भोज करे भगवान। दर घर साचे सच पकवान। बिन गुर पूरे भोग लगाए कवण आण। दु:ख रोग सोग सर्ब मिट जाण। भोग लग्गा तेरे दर। आप खुल्हाए साचा दर। आपे जाए हरि अंदर वड़। प्रभ अबिनाशी किरपा कर। आत्म जोत देवे धर। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आप खुल्हाए तेरा आत्म साचा सर। आत्म सर आप खुल्हाए। अमृत आत्म सीर पिलाए। एका तीर शब्द चलाए। बज़र कपाटी चीर वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सोहँ साची धीर धराए। एका चल्ले तीर निशाना। मेला होए भगत भगवाना। कलिजुग मिटया आवण जाणा। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाणा। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ साचे तेरे घर भाग लगाणा। गुर चरन लाग प्रभ अबिनाशी रसना गाणा। गुरमुख साचे जायण जाग, सीत प्रसाद जिस रसना लाणा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आपणी हत्थीं आप वरताणा। आपणी हत्थीं आप वरताए। गुरमुख साचे आप जगाए। दु:ख रोग सर्ब मिटाए। हउमे रोग रहण ना पाए। दरस अमोघ आप दिखाए। सोहँ साचा जोग दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे दर घर भाग लगाए। भाग लगाया दर घर

१२६ ०३

आण। किरपा करी हरि आप भगवान। गुरमुख लाए साचे लेखे दर घर होए परवान। साचा झुल्ले इक्क निशान। देवे वड्याई वाली दो जहान। साचा दर साचा घर जिथ्थे वस्सया हरि भगवान। गुर संगत दर सेव कमाई। प्रभ अबिनाशी लेखे लाई। दिवस शुद्ध भण्डार कराई। दुःख भुक्ख रहे ना राई। साचा सुख हरि उपजाई। उज्जल मुख जगत कराई। मात कुक्ख सुफल कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन तेरी सेव कमाई। उज्जल होई मात कुक्ख। कर दरस उतरी भुक्ख। आत्म रहे कोई ना दुःख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, गर्भवास ना होए उलटा रुख। प्रभ अबिनाशी दया कमावणा। गर्भवास फेर ना आवणा। लक्ख चुरासी गेड़ मिटावणा। वेले अन्त प्रभ साचे दरस दिखावणा। बाहों पकड़ गले लगावणा। गोद आपणी विच बिठावणा। धर्म राए मूंह छुपावणा। प्रभ अबिनाशी संग रलावणा। सच धाम दे विच बहावणा। आप मिटाए आणा जावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन कर्म कमावणा। गुरमुख तेरी घाल थाएँ। प्रभ अबिनाशी होए सहाए। साची लिख्त रिहा लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए। दरगाह साची धाम न्यारा। एका एक करे जोत अकारा। बिन बाती बिन तेल सच्चा दीद करे उज्जयारा। गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण दवाए तेरे आए दर दुआरा। गुरमुख साचा कलिजुग जाग्या। पूरन होए कलिजुग भाग्या। प्रभ अबिनाशी आत्म धोया दाग्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे जो जन सरनी तेरी लागया। सरन लाग करी सेवा। सोहँ देवे प्रभ साचा मेवा। प्रभ अबिनाशी वड देवी देवा। साचा शब्द जपाए रसना जेहवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी काया मुंदरी विच लगाए सोहँ थेवा। काया अंदर आन बाट। आप खुल्हाए बज़र कपाट। सोहँ शब्द रसन जपाए आप चढ़ाए औखे घाट। अग्गा नेड़े दिसे वाट। प्रभ अबिनाशी तेरी आत्म सुत्ता, तेरी काया बणाई खाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे प्रकाश तेरी विच ललाटे। एका जोत जगे ललाटे, प्रभ पूरन करे घाटे। बेमुखां तन झूठे पाटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे जस जन रसना राटे। हरि अमृत मेघ बरसांयदा। कर किरपा पार लँघांयदा। दुखियां दुःख गंवांयदा। जिस रसना बूंद लगांयदा। आत्म तृष्ना भुक्ख गवांयदा। बत्ती दन्दां विच्चों लिखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन कर्म कमांयदा। अमृत पीवणा सदा जग जीवणा। प्रभ अबिनाशी चरनी नीवणा। तन पाटा आपणा सीवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाए तेरा जीवणा। अमृत आत्म साची धार। कर किरपा देवे हरि गिरधार। गुर संगत किया चरन प्यार। सरखण्ड निवासी मातलोक ल्या अवतार। घनकपुर वासी कलि आया भेख धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच रिहा

पसार। गुर संगत गुर संगत एका रंग रंगाए। एका देवे नाम रंगत घर साचे हरि विदा कराए। कदे ना होए भुक्खा नंगत, जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म धर्म सभ लेखे लाए।

❊ १३ जेठ २०१० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ❊

उलटी होई मति, उलटी रीत है। उलटी होई मति, ना चरन प्रीत है। आपे परखे नीत है। प्रभ साचा नेतन नीत है। आपे जाणे जाण वखाणे, सर्ब जीआं दे विच समाणे, जो कुछ रही बीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर ठंडा सीत है। हुक्म हकूमत गई छुट। दोवें गए जगत निखुट्ट। आपे देवे जड़्ह पुट्ट। रसना रस जो लए लुट्ट। झूठा जूठा पिया घुट्ट। प्रभ अबिनाशी लड़ गया छुट। धुरदरगाही बाहर कढ्ढे वेले अन्त कुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे शब्द सुट्ट। आत्म अन्धा गुर बणाया। पापी बन्दा सार अख्वाया। आत्म अन्धा आप जगाया। आप आपणे भाणे विच समाया। बचन भुल्ले जगत रुल्ले झूठे तोल तुल्ले झूठी खेल होई गुल्ले ना कोई फले ना कोई फुल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए पहले बुल्ले। भुल्ल भुलाया उलटा राह चलाया। हँकार विकार विच समाया। झूठी कार, झूठा यार, झूठा विहार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द बाण आप लगाया। झूठे यार यार कुड़यार। अन्ध अंध्यारे देवे डार। नर कोई दिसे पार किनार। जिथ्थे वसे सच भतार। वेले अन्त ना आवे हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे कर प्यार। झूठी यारी उलटा राह। झूठे वहिण दित्ता वहा। सच्चे दर कोई रहण ना पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे साचा थां। आत्म वड वड हँकार। ना उठे करन चरन निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किया खेल अपार। गुरमुखां माण ताण रक्खे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाण्डा भरम दे निवार। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न। एका कढ्ढे आत्म जन। एका ताओ चढ़ाए तन। एका नाउँ देवे डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रहण ना देवे कोई झूठा तन। तन मन्दिर अग्न वांग तपे। प्रभ अबिनाशी जाणे ना कोए माए ना कोई बापे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे बैठा क्या कोई छुपे। क्या कोई छुपे छुपाए। आपे फड़ लए उठाए। आत्म किल्ला गढ़ तुड़ाए। झूठी जड़्ह आप कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा हरि वरताए। भाणा भावना सर्ब चलावणा। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई आप कराए आपणे कामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब हँकार गवावणा। आत्म हँकारी आत्म अन्धे। प्रभ अबिनाशी आपे जाणे चंगे मन्दे। जूठे झूठे पापी गन्दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए

आत्म अन्धे। आत्म अन्धे होए हँकारी। क्या कोई करे जीव गंवारी। रसना लोभ पापां भारी। तिनां तांईं मिली सिक्दारी। पंजां चोरां चंगी यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर सचे बैठा सर्ब जीआं करे वेख विचारी। आपे वेखे आत्म दर। एका जोत अवतार नर। सभ दे अंदर रिहा वड़। दिवस रैण रैण दिवस साचा लेखा रिहा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख धर। वेख विचारे, भरम निवारे, आत्म सुधारे। हउमे रोग ना कोई विचारे। गुर गोबिन्द दोए चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लेख लिखारे। आत्म लेखा इक्क लिखावणा। गुरमुख साचे आप नाम जपावणा। गुरसिख दर घर साचे आप वसावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गुर लैणा वर। साचा सीस छत्तर झुलावणा। गुर गोबिन्द एका दर। गुर गोबिन्द एका घर। गुर गोबिन्द एका सर। गुर गोबिन्द लैणा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा जूठा रहे ना तेरे दर। झूठी माया, झूठी छाया। झूठे धन्दे आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हत्थ ना आया। क्या कोई फड़े क्या कोई खड़े, क्या कोई अड़े। आपे आप कराए जो मन मन्ने। करे कराए जो मन भाए। आपे चले आपणी रजाए। लहिणेदार आप अख्वाए। देवणहार सृष्ट सबाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो साच नयां कराए। साचा नाउँ साचा लेखा साचा भेखा, धुर दरगाहे कढ्ढे भरम भुलेखा।
१२६ ०३ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेखा। धीरज धर्म तत्त ज्ञान। झूठी मति होई क्यों भुल्ला बण अञ्याण। १२६ ०३
प्रभ अबिनाशी ना सके पछाण। ऊँच नीच इक्क असथान। सूचो सूच आप भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखावणा। सच दरबार साचा आसण। आए बैठा साचे आसण। आपे बैठा जोत प्रकाशण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख करे सर्ब विनासण। जगत रीती सति है, गुर चरन करो प्यार। जगत रीती सति है, होए झूठा जन्म ख़ुआर। जगत रीती इक्क सति है, कर दरस पारब्रह्म पूरन हरि अवतार। जगत रीती सति है, साचा नाम रसन उचार। जगत रीती सति है, जूठ झूठ देवे निवार। जगत रीती सति है, नाम मजीठ लए गुर दरबार। जगत रीती सति है, कर दरस हरि जाए तर उतरे पार। जगत रीती सति है, चरन कँवल कँवल दर सीस मिले जगदीश आत्म होए प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर्शन देवे अगम्म अपार। जगत रीती इक्क सच है, साचा देवे चरन प्यारो। जगत रीती सति है, पूरे गुर सद निमस्कारो। जगत रीती सति है, झूठे धन्दे जगत विहारो। जगत रीती सति है, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा सच दरबारो। जगत रीती सति है, साचा हरि दरबारा। जगत रीती इक्क सति है, जोत सरूपी हरि निरँकारा। जगत रीती सति है, कर दरस आए गुर चरन दुआरा। जगत रीती सति है, मानस जन्म उत्तस पारा। जगत रीती सति

है, अन्तिम देवे हरि साचा मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आए चल दुआरा। जगत प्रीती सच रीत है, क्यों भुलयो जीव गंवारया। जगत प्रीती सच रीत है, गुर गोबिन्द सोहण इक्क द्वारया। जगत प्रीती सति है, बलि बलि जाओ सद बलहारया। जगत रीती सति है, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म खेल क्यों वक्त गवा रिहा। वड भण्डारा गुर हज़ूरया। प्रभ दुक्खां भुक्खां करे दूरया। साचा सुख सहज सबूरीआ। हरि आसा मनसा पूरीआ। आप कट्टे जगत मज़बूरीआ। अग्गा नेड़े आया पिच्छा रिहा दूरया। प्रभ साचा फेर सुणा रिहा, जो ना भुल्ल बण गरूरीआ। साची बणत फेर बणा रिहा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान घर हज़ूरीआ। सच वस्त गुर अग्गे टिकाई,। दु:ख भुक्ख हरि दे मिटाई। साचा सुख दे उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दे मति समझाई। एका जाणो हरि भगवान। दूजा कोई ना विच जहान। तीजा दिसे ना कोई निशान। चौथा वेखो एक बली बलवान। पंचम पंच मिले परवान। अमृत आत्म सिंच प्रभ साचा देवे हरि दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाण। साचे शब्द सच संदेशा। ना कोई भरम ना भुलेखा। अगला पिछला चुक्के लेखा। ना कोई सिक्खे ना सिखाए ना कोई रहे विच भुलेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे फेर लिखाए लेखा। साचे लेख फिर लिखावणा। गुर प्रसादी भोग लगावणा। पंचम पोए इक्क वरतावणा। साचा सति आत्म तत्त साची मति निज धीरज हरि रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कदे ना मनों भुलावणा। साची वस्त रक्खी हरि थार। किरपा करे आप गिरधार। भरे रहण सद भण्डार। मातलोक ना आवे हार। एका जोत धरे करतार। कर किरपा जाए तार। पंजां बख्शे इक्क प्यार। दूतां दुष्टां करे ख्वार। जूठा झूठा रहण ना पाए गुरसिख तेरे सच दरबार। चुगल निन्दक दुष्ट दुराचार। प्रभ साचा करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सर्ब सार। चुगली निन्दया जगत बखीली, जो कोई आत्म लावे तीली, आत्म रत्त प्रभ साचे पी ली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया खाली करे पतीली। साची मति सच उपदेस। गुर पूरे को करो आदेस। प्रगट जोत आए विच माझे देस। जोत सरूपी धारे भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्क नरेश। इक्क नरेश इक्क निरँजण। पंचां देवे एका मजन। आपे बणे साचा सज्जण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द नगारे तेरे वज्जण। शुद्ध नगारा आत्म ढोल। दूई द्वैती पर्दा देवे खोल्ह। गुरसिख ना मारे गुर घर बोल। महाराज शेर सिँघ पंचां वसे सदा कोल। पंचे वेखो हरि हरि पंच। एका लाए आत्म अंच। बेमुख काया कूड़ी कंच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचां सिर आप सरपंच। पंचां मिल्या साचा पीर। होए सहाई आप दस्तगीर। एका शब्द देवे जग साची धीर। पंजे बण जाओ साचे वीर। वेला गया

१३० ०३

हत्थ ना आवणा, काहनूं होए लीरो लीर। बेमुख घर घर दर दर फिरन जिउँ भौंदे भेखाधारी फकीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचां आपणी हत्थीं आप पिलाए साचा सीर। आप आपणी गोद रखाया। अमृत साचा सीर पिलाया। दिवस रैण रैण दिवस सद अंग रखाया । वेले अन्तिम अन्त झूठे धन्दे लाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्धे दे समझाया। आत्म अन्धे ना भुल्ल निधाना। पंचां वाली इक्क भगवाना। आप बणाए आपणा बाणा। आपे ढाहे क्या कोई करे जीव अञ्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। आप उगाए आपणे वत्ते। क्या कोई देवे घर घर गुर दर मत्ते। आत्म होई जिन्नां तत्ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंचम जोत सत्ते। पंचम जोत करे प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। प्रभ अबिनाशी क्यों भुल्ले पुरख अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी रास। आपणी रास आप बणाने। कलिजुग जीव हरि भगवाने। इधर उधर की क्या कोई जाणे। साची सद्धर हरि भगवाने। आओ सेव गुर चरन ध्याने। मिले हरि आप भगवाने। ना कोई डन्ने ना कोई डाने। ना कोई मंगे तैथों दाने। प्रभ अबिनाशी साचा पाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ निध घर उपजाने। नौ निध घर उपजाणा।
१३१ ०३ दुःख भुक्ख दा रोग मिटाणा। भरम भुलेखा दूर कराना। सोहँ साचा नाम जपाणा। एका मार्ग सृष्ट लगाणा। एका घर होई दो राता। अंदर वेख मार झाता। प्रभ अबिनाशी साचा नाता। भुल्लया जीव जिउँ रंडी कमज़ाता। महाराज शेर सिँघ १३१ ०३
विष्नूं भगवान, ना कलि पछाता। पूरन गुर हरि पछाणो। आत्म रक्ख इक्क ध्यानो। पंजां विच परमेश्वर जाणो। निहकलंक कलि साचा मानो। आप आपणे रंग रंगानो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम करे जगत प्रधानो। पंचम देवे हत्थ वड्याई। प्रभ अबिनाशी होए सहाई। एका जोत आप रघुराई। देवणहार सर्ब है थांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घाट रहे ना राई। सच हुक्म सच फ़रमाणा। ना कोई मेटे मेट मिटाणा। एका हरि एका दर निहकलंक बली बलवाना। सो जन उधरे पार जिस हत्थ बध्धी गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणा बाणा। आपे धारया पीर पैगम्बर ना किसे विचारया। क्या कोई करे कलिजुग जीव विचारया। पंचां देवे एका जोत शब्द अधारया। एका गुर लिख्या धुर देवे नाम शब्द गिरधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंचम हरि आप बणवा रिहा। पंचम होए आप रखवाली। पंचम दिवस रैण हरि बणया पाली। सृष्ट सबाई फड़ उठा ली। आप आपणी सेवा ला ली। कोई भण्डारा ना रहे खाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार दातार सच्ची सरकार दो जहानां वाली। साचा हरि नर निरँजण आया। साचा खेल आप खिलाया। साचा हरि मेल मिलाया। सन्त जना हरि हिरदे वसाया। सन्त मनी सिँघ नाम वड्आया। सतिजुग

साचे माण दवाया। सतिगुर पूरा आप बणाया। पूरन जोत धरे हरि प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई सरन लिखाया। भरम भुलेखा कोई रहण ना पाया। भैण भाई ना कोई भेड़ भिड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख बैठ विच दरबार लिखाया। सतिजुग साचे सच वड्याई। गुर गद्दी दी नींह रखाई। निहकलंक तेरी साची सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत मात धराई। एका जोत गुरसिख नागर। गुरमुखां करे कर्म उजागर। आत्म भरी सच्ची गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे उत्ते सोहँ चादर। सच्ची चादर सच चन्दोआ। प्रभ अबिनाशी साचा चोआ। दर दुआरे आण खलोआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बीज विच मात दे बोया। बीज बीज्जया जाए उग। लग्गे भाग पिण्ड बुग्घ। देवे वड्याई चार युग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुख रखाए सगली सुध। दूजी जोत हरि भगवाने। सिँघ मोता दे विच टिकाणे। देवे माण चतुर सुजाणे। एका रंग रंगाणे। पूरे गुर दी सरनी लाणे। आप आपणे थां बहाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बिध बताने। एका हुक्म मिले सरकारा। दूजा करो फेर विहारा। तीजो कोई ना दिसे धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचे लेख लिखारा। पंज दीपक उज्जयारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धारया। सतिगुर मनी सिँघ चरन निमस्कार बलि बलि बलि जाओ बलिहारया। भुल्ल भुल्ल क्यों वक्त विहा रिहा।
१३२ वेला हत्थ ना आवणा दूजी वारया। साचे लेख साचे तख्त बैठ लिखा रिहा। भरम भुलेखे सर्ब गंवा रिहा। साची शब्द १३२
०३ ०३
सुरत प्रभ साचा आप दवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघआसण डेरा ला साचे लेख लिखा रिहा। साची लिखाए लिख्त अपारे। ऊधम रखाए विच अन्धकारे। आपणा गया बचन हारे। प्रभ अबिनाशी ना करे प्यारे। धीआं पुत्तर ना हरि विचारे। सो जन उधरन पार जो जन चरन निमस्कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। शाम नाम देवे वड्याई। आपणे रंग रवे हरि लाई। साचा संग हरि आप निभाई। सुरत शब्द हरि आप दवाई। साची जुगत हरि आप बणाई। सतिगुर साचे इक्क सरनाई। दूजा थाउँ कोई नांही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचां होवे आप सहाई। पंचां होया एका धागा। एका शब्द एका रागा। एका एक आपणे हत्थ रक्खी वागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कदे ना जाणो सोया, दिवस रैण सद रहे जागा। सच वस्त हरि भोग लगाई। पंचम वेला इक्क सहाई। इक्ट्ठे बैठ खाओ भाई। फेर विछोड़ा होए ना राई। साची वाग सतिगुर मनी सिँघ तेरे हत्थ फड़ाई। घर विच रहे ना कोई लड़ाई। ना ताहने मेहणे देवे कोई लोकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर सच्ची सरनाई। पंचां देवे एक दान। पंचां देवे एका नाम रमईआ राम। पंचां देवे माण विच जहान। सच मार्ग जो चल जाण। दु:ख रोग सर्ब मिट जाण।

आत्म भुल्ले ना रहे घर शैतान। किरपा कर हरि साचे घर साचे दर करे परवान। पंचां पाए साची सार। आपे कर जगत विहार। देवणहार इक्क दातार। साचा बैठा विच दरबार। पंचां दिया इक्क प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण लैणा रसन उचार। लब लोभ आत्म हँकारा। प्रभ अबिनाशी साचे मारा। आप बहाए सच दरबारा। आप बंधाए साची धारा। पंचां बख्शे इक्क प्यारा। हुक्मे अंदर सभ वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए सति सरूपी वड वड भूपी सिर सच्चा दस्तारा। सच दस्तार सीस सुहाए। बीस इकीस भेव चुकाए। सृष्ट सबाई पीस वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका प्रीत घंटे चौबीस रखाए। अट्ठे पहर पहर अठ। एका देवे पंजां इक्ठ। एका देवे साचा हट्ठ। प्रभ अबिनाशी आप बंधाए साची गट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैतां पाए भट्ठ। पंचां का हरि एका ज्ञाता। एका पित एका माता। एका दूआ क्यों भेव रखाता। झूठा जाणो जगत का नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वस्त अनेक कर किरपा देवे निहकलंक सच जिस जाता। साचा नाता जिस जन जाता। सर्ब बिधाता ध्यान धराता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रलाता। साचा रंग दिया काहना। सच तख्त सच सुल्ताना। कोई दीवाना कोई मस्ताना। कोई नाम रंगाना कोई मंग दर नाम दाना। कोई मंगे चरन धूढ़ इशनान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
१३३
०३
एका देवे साचा दाना। साचा तख्त साचा ताजा। उप्पर बैठा गरीब निवाज़ा। सृष्ट सबाई जिस साजण साजा। वड पातशाह वड राजन राजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे आपणे काजा। सच तख्त वड सिक्दारी। सृष्ट सबाई जिस पसारी। अचरज खेल करे मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। सच तख्त सच सिक्दारी। उत्ते बैठा नैण मुँधारी। तीन लोक इक्क अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल अपारी। साचा तख्त चार कूट। सच पँघूढ़ा रिहा झूट। सृष्ट सबाई रिहा कूट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जड़ रिहा पूट। सच तख्त हरि चरन छुहाना। प्रगट होए घनईआ काहना। सिँघासण हरि आप सुहाणा। गुर संगत हरि आप बिराजे जिउँ गोपीआं काहना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सहाए साचे थाना। काहन घनईआ राम मुरारी। सिँघासण बैठा पैर पसारी। सृष्ट सबाई की करे विचारी। सुघड़ स्याणयां करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा अपर अपारी। सच सिँघासण उप्पर गद्दी। सृष्ट सबाई प्रभ साचे बद्दी। नौ खण्ड पृथ्मी होई रद्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट उखेड़ा लाए उप्पर सिँघासण, आप हिलाई गद्दी। चार कुन्ट चार मुख। सृष्ट सबाई होए दुःख। नज़र ना आयण किते रुक्ख मनुक्ख। चार कुन्ट वरते भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे आत्म सुख। सिँघ

सिँघासण आप कम्बाया। सृष्ट सबाई दे हिलाया। बाशक तशक रहे कुम्लाया। हरि भाणा एह की वरताया। इन्द इन्द्रासण आप हिलाया। शिव शंकर भज्जा फिरे आप घबराया। ब्रह्मा आए वाहो दाया। नारद मुंन फेरा पाया। करोड़ तेतीस संग रलाया। प्रभ अबिनाशी चरनी लाया। विष्नूं बंसी आप अख्वाया। करो मेहर ना वरतो कहर, वरभण्ड ना दे उलटाया। ना कोई नगर ना कोई खेड़ा ना कोई दिसे शहर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गेड़ा आप लगाया। उलटी लट्ठ आप गिढ़ाई। सृष्ट सबाई भट्ठ कराई। गुरमुख विरला नठ्ठ गुर चरनी आई। साचा हट्ठ प्रभ आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म दे मति समझाई। सिँघ सिँघासण दिया गेड़ा। सृष्ट सबाई मुके झेड़ा। कलिजुग तेरा डुब्बा बेड़ा। आपे मारे भेड़ भेड़ा। बिन हरि पूरे छुडावे केहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी पाए जेड़ा। शब्द सरूपी जेड़ा पाया। राजा राणा फड़ तख्तों लाहया। सिँघ आसण हरि आप सुहाया। दूसर कोई रहण ना पाया। नौ खण्ड पृथ्मी हरि दे हिलाया। वंड वंड वंड हरि वंड कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सप्तम दीपक विच समाया। सप्तम दीपक सच द्वार। सति पुरख नर अवतार। क्या कोई सके जीव विचार। करे कर्म अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे तेरी सार। अचरज खेल वरते जग। चरन धरया उप्पर पलँघ। सृष्ट सबाई होई भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप भन्नाए जिउँ काची वंग। सिँघ सिँघासण आप उलटाया। जल थल थल जल हरि दे विहाया। ना लागे घड़ी पल वेला अन्तिम अन्त आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे लेख लिखाया। सिँघ सिँघासण बैठा दुआरा। उच्चा कूके कूक सुणाए गुरमुख विरला सुणे पुकारा। सोहँ साचा रसना गाओ, प्रभ अबिनाशी देवे धारा। वेला अन्तिम आया कलिजुग किस बिध उतरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक लए अवतारा। जीव भुल्ल ना जाणा। ना कोई दिसे राजा राणा। आपे बणे वड सुल्ताना। चार कुन्ट हरि छत्तर झुलाणा। सोहँ साचा डंक वजाणा। एका अंक आप रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा सिक्का आप चलाणा। आपणा सिक्का आप चलाए। एका टिक्का आप लगाए। दूसर कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण डेरा लाए। डेरा लाया घर हरि नाम। प्रभ दर पीओ सोहँ साचा जाम। साचा वक्त पछाण पंभ आप कराया पूरन काम। गुरमुख विरले रंग साचा माणया, नेत्र पेख घनईआ शाम। ना भुलाया कलि वेख जोत सरूपी बानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान्या। सच तेरी वड्याईआ। अचरज खेल रचाईआ। मिले गुर गोबिन्द रघुराईआ। पूरन आस आप कराईआ। चारे दिशा आप भवाईआ। एका भिच्छा गुरसिक्खां पाईआ। सृष्ट सबाई सतिजुग साची वाड़ी लाईआ। प्रभ अबिनाशी आप

उगाईआ। आपे बणया सर्ब सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ आत्म बीज बिजाईआ। सच फूल लगाए फूलना। गुरमुख ना गुर पूरा भूलना। शब्द पंघूड़ा सोहँ झूलणा। हरि साचा कन्त कन्तूहलना। महाराज शेर सिँघ आप चुकाया तुहाढ्डा मूलना। रचना आपणी हरि जाणदा। साचा सज्जण जो जन पछाणदा। वेखो रंग सच्चे भगवान दा। की होवे हाल जहान दा। घाटा आवे पीण खाण दा। भैणां तांईं ना भाई पछाणदा। किसे वर ना लभ्भे हाण दा। सृष्ट सबाई प्रभ साचा आपे छाणदा। गुरमुखां मन वधाई, सोहँ तन पहनावदा। वेला आया पीण ते खाण दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाओ गेड़ा चुक्के आवण जाण दा। दर घर साचा अमरा पद पाओ, हरि साचा इक्क पछाणदा। निज घर वासी निज घर माण रखाओ, गुरमुख साचा माण कलि माणदा। घनकपुर वासी घर साचा दर्शन पाओ , होया मेल भगत भगवान दा। सृष्ट सबाई हरि मथ वखाए, आप किसे दे हत्थ ना आए, सिँघ सिँघासण बैठा चार कुन्ट हरि नत्थ पवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि रथ चढ़ाए। रथ रथवाही साचे चाढ़ा। किसे कोलों ना मंगे भाड़ा। आपे पार कराए, जंगल जूह पहाड़ उजाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए साचा लाड़ा। रंग लगाए साचा धामा। संग निभाए गुरसिक्खां रामा। वेला तंग ना आए प्रभ अबिनाशी पहरया जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

१३५ ०३ भगवान, देवे सर्ब वधाई, गुरमुख तेरी वड वड्याई, आत्म वॅज्जया एका शब्द दमामा। शब्द दमामा सच ढंडोरा। गुरमुख १३५ ०३

ना लग्गण पंजे चोरा। आप कढ्ढे राम मथोरा। रहण ना पाए विच देह अन्ध घोरा। साचा हरि मेल हरि साचा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रखाई डोरा। आपणे हत्थ रक्खे डोरा। जिद्धर जिद्धर चाहे लए मोड़ा। किसे ना चले अग्गे ज़ोरा। क्या कोई पावे झूठा शोरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, ना कोई जाणे होरा। सृष्ट नत्थीं आपणी हत्थी। महिंमा अकथ्थना कथी। गुरमुख आए जाए चढ़, प्रभ आप बणे रथवाही, सोहँ शब्द चलाया रथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथी। समरथ पुरख आप करतार। आपणा करे सच विहार। कोई ना करे, कच्चा वणज वपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे शब्द गुरसिक्खां कर प्यार। गुरमुख तेरे आत्म चाउ। प्रभ अबिनाशी मिल्या साचा शाहो। एका गुर एका हरि एका रंग हो जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाए साचा थाउँ। साचा थांउँ चरन धूढ़। गुरसिख जो जन आए दर मूढ़। सोहँ साचा नाम रंग चढ़ाए, उत्तर ना जाए गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप गिढ़ाए एका बूड़। लेखा लिखणा हरि ने भाई। प्रभ अबिनाशी आप रखाए, अंग संग तेरे आप हो जाई। झूठे तजे भैण भराए। आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आपे पूरन आस कराए। विच मात

ना कोई तेरी आत्म जीत जिताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म ज्ञान दे तीन लोक दी बूझ बुझाए। आपे दीआ इक्क भण्डारा। सच वस्त शब्द इक्क पाई थारा। एका खिच्चे साची लाट आपे बख्शे साची धारा। आपे तोड़या बज़र कपाट, जगी जोत अगम्म अपारा। मातलोक ना आवे घाट, सेवा करी गुर दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दवाए माण विच संसारा। अंग संग तेरा सज्जण सुहेला। एका रंग रंग ना जाणो दुहेला। आपणी आप प्रभ सरन रखाए आप सुहाए वेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग तेरा साचा मेला। चार जुग तेरी निभे नाल। साची वस्त रक्खी संभाल। तीन लोक ना होए कंगाल। ना कोई मंगे विच दलाल। मिल्या मेल एका हरि गोपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती देवे बाल। वाह वाह सच दरबारया। वाह वाह करे खेल अपर अपारया। वाह वाह वड वड संसारया। वाह वाह तीन लोक एका करे सच सरकारया। वाह वाह मात लोक तेरा रंग अपर अपारया। वाह वाह आवे जावे सद बनवारया। वाह वाह मात लोक आया निहकलंक अवतारया। घनकपुरी विच जामा धारया। वाह वाह आपणा आप सदा छुपा रिहा। वाह वाह बवंजा साल ना किसे विचारया। वाह वाह वाह वीह सौ बिक्रमी काया झूठी आप गवा गया। वाह वाह धीआं पुत्त साक सज्जण पुरी घनक सभ रुवा गया। वाह वाह मातलोक विच मातम पा गया। वाह वाह लोक परलोक जोत सरूपी सर्ब थांईं आप सुहा गया। वाह वाह सचखण्ड साचा दीपक आप जगा गया। वाह वाह पुरी घनक भाग लगा गया। वाह वाह घर जाए दरस दिखा गया। वाह वाह जोती जोत मिला गया। वाह वाह एका गोत बणा गया। वाह वाह घर साचे हरि साचा भोग लगा गया। गुरमुखां सोहँ साची चोग चुगा गया। वाहवा माहणा सिँघ तेरे पूरन भाग लिखा गया। वाह वाह सिँघ तेजा तेरी आत्म आवाज लगा गया। वाह वाह सिँघ पाल संग बणा गया। वाह वाह प्रभ महिंमा सुण दिल सोया कलिजुग जगा गया। वाह वाह पूरन इच्छया करन काहना कृष्ना घर विच आ गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रातीं सुत्या दरस दिखा गया। वाह वाह आपे बुझी दीप जगा गया। वाह वाह लहणा सच वखा गया। वाह वाह गुरसिख साचे भेज विच विचोला आप रखा गया। वाह वाह साचा आत्म चुकया उहला, पुरी घनक आ दर्शन पा गया। वाह वाह दे मति तेजा सिँघ समझा गया। वाह वाह लै प्रसाद कर अरदास महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हत्थीं आपणी सीत प्रसाद खवा गया। वाह वाह सीत प्रसद दिया गुर सूरे। आत्म उपजे अनहद तूरे। वाह वाह घर आया आसा होई पूरे। वाह वाह मन की चिन्दया होई दूरे। वाह वाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे दरस हज़ूरे। वाह वाह पाल सिँघ हरि दरस दिखाई। गुरमुख साचा आप बणाई। वाह वाह आत्म सच धरवास रखाई। वाह वाह हिरदे

साचा वास रखाई। वाह वाह मदिरा मास रसन तजाई। वाह वाह आपणा परिवार सभ समझाई। वाह वाह सिँघ आत्मा संग रलाई। वाह वाह जीवण सिँघ हरि लड़ फड़ाई। वाह वाह बंस सबाया लई तराई। वाह वाह सिँघ प्रीतम हरि दे वड्याई। पूरन सिँघ विच प्रभ पूरन जोत टिकाई। पाल सिँघ दा पूत मिली वड्याई। वाह वाह वीह सौ इक्क बिक्रमी पंचम जेठ आपणे आप मनाई। वाह वाह पुरी घनक विच वज्जी वधाई। सुणे लोकाई जोत सरूपी खेल रचाई। पूरन सिँघ विच जोत टिकाई। दिवस रैण इक्क रंग रखाई। भरम भुलेखे सर्ब गंवाई। साचे लेखे गुरसिख लगाई। वेखा वेखी कोई भुल्ल ना जाई। जगे जोत इक्क रघुराई। घनकपुर वासी आउण वाहो दाही। दर दवारिउँ हरि बाहर रखाई। आप समाधी उप्पर जोत टिकाई। जीव अपराधी कोई दरस ना पाई। बेमुखां तुटी गाधी, घनकपुर कोई रहण ना पाई। सृष्ट सबाई आपे साधी, घर घर होए दुहाई। गुरमुख साचे प्रभ सरन अराधी, आए चल्ल सरनाई। शब्द चलाए बोध अगाधी, अचरज खेल कलि वरताई। प्रभ अबिनाशी माधव माधी, आपणे भाणे विच समाई। जोत सरूप सद विस्मादी, आपणे रंग आपे वरताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत धर अवतार नर, दर घर कोठे चढ़ सिँघ तेजा पल्ला फिराई। वाह वाह आपणा पल्ला आप फिराया। वाह वाह वाली दो जहानां विच मात दे आया। वाह वाह कलिजुग पंचम जेठ प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। वाह वाह जीव

१३७
०३

मरया मर जाए फेर ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान फेरा पाया। अचरज राह दिखाए। सृष्ट सबाई आप भुलाए। गुरमुखां भेव खुल्हाए। पुरी घनक करे रुशनाए। अठताली घंटे लिख्त लिखाए। खाणी बाणी रसन अलाए। वेद पुरानां दे समझाए। कुरान अञ्जील रसन चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाए। वाह वाह खेल अपारे। झूठे जो वेखण आयण जायण करे विचारे। प्रभ अबिनाशी खेल अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दीवानयां, मस्तानयां, आपणी चरनी केस झुलारे। योग आसण हरि बता रिहा। साचा योग देवे गुरसिक्खां सोहँ नाम अधारया। आप मिटाए तृष्ना भुक्खा घर साचे भाग लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा आप चुका रिहा। साचा योग मिट्ठा बोलणा। साचा योग कौड़ कूड़ा ना रसना तोलणा। साचा योग सोहँ शब्द ना गुरसिख भूलना। वाह वाह होवे मिलावे कन्त कन्तूहलणा। साचा योग देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दवारा सतिजुग खोल्हणा। सच योग सहज घर पाओ। सच योग प्रभ अबिनाशी रिदे वसाओ। साचा योग गुर गोबिन्द गुर शब्द नाम ध्याओ। साचा योग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लग जाओ। पूरन योग गुरू दुआरा। पूरन योग एका एक गुरसिख चरन दुआरा। पूरन योग रसना जप नाम मुरारा। पूरन योग देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आपणी धारा। कर किरपा पार उतारया। एका देवे साचा

जाप सोहँ साचा मेल मिला रिहा। कोटन कोट उतारे पाप, साची दरगाह लेखे ला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे आप लगा रिहा। इन्द्र सिँघ चढ़या चन्द। आप चढ़ाए सद बख्शंद। ख़ुशी होई तन बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दिखाए परमानंद। परमानंद परम पुरख जाणे आत्म। क्या कोई जाणे जीव सनात्म। ना होए एका वास आत्म। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाया मात। क्यों होया जीव वैरागी है। तन काया हँस त्यागी है। प्रभ साचे चरनी लागी है। जन होया वड वडभागी है। घर साचे सदा सच रागी है। किस्मत सोई कलि विच जागी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाई साची बाजी है। उडया हँस देह निमाणी। घर दे जीव रहे पछताणी। छोटे वड्डे बुड्ढे बाल अञ्याणी। दिवस रैण रैण दिवस टुट्टे रहण प्राणी। एका एक जुगो जुग प्रभ साचे दी सच निशानी। गुरमुख साचे सन्त जनो प्रभ साचा नाउँ पछानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम निधानी। उडया हँस छुट्टयां बाज। हरि साचे दा लथ्था ताज। कवण करे तेरे पूरे काज। याद आवे गुर तेरी आज। आपे रक्खे साडी लाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आण संवारे तेरे काज। चेत सिँघ प्रभ आए हज़ूरी। आसा मनसा प्रभ साचे पूरी। सेवा तेरी ना रही अधूरी। साचा प्रभ दरगाह साची देवे सच मजूरी। एका आपणे रंग रंगाए, दिवस रैण हरि संग रखाए, ना उठाए खूंडी भूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मुख चवाए आपे कुट्ट ख्वाए चूरी। चेत सिघ तेरी चार यारी। दिवस रैण सद करे ख्वारी। शब्द मार प्रभ साचे मारी। आपे कट्टे जिउँ लकड़ी आरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे चीर करे दोफाड़ी। चेत सिँघ तेरी सेव बल। प्रभ अबिनाशी कर के छल। दर घर साचे सास दवाए, दूर दुराडा आए चल। मातलोक हरि दे वड्याई, अमृत भरे साचा जल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखावे जुगो जुग अटल। चेत सिँघ हरि साचा आया। दर घर तेरे भाग लगाया। वक्त विचार कर्म कमाया। आप आपणे संग रलाया। सिँघ सवरन सरन बहाया। सचखण्ड दा राज दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन पाए तेरी सेव कमाया। सवरन हरि लए संभाल। दिवस रैण हरि रक्खे नाल। आप आपणे कंठ लगाया, जिउँ माता गल लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। मातलोक सवरन तजाया। झूठी काया दे छुडाया। हुक्मे खेल रचाया। अंदरे अंदर भेव किसे ना पाया। आत्म जिंदरा आपणे हत्थ तुड़ाया। जोत सरूपी स्वास खिचाया। आप आपणा विच्चों वास कढाया। जोती सरूपी जोत हरि आप विच अकाश बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा राज दवाया। सिँघ सवरन सरन गुर पाई। साचे घर मिली वड्याई। चरन दुआरे दिवस रैण हरि दर्शन पाई। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सवरन देवे वड्याई। सिँघ सवरन तेरा ऊँचा राज। सिँघ सवरन तेरा उच्चा साज। सिँघ सवरन चरन बहाए गरीब निवाज़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रक्खे तेरी लाज। चार युग हरि लाज रखाए। आप आपणे रंग रंगाए। दूजी नौकरी कोई रहण ना पाए। जोती जोत सरूप हरि आपणे भाणे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि साचा कन्त गुरसिक्खां पैज रखाए। सवरन सिँघ सच वसे धामा। चरन लगाया साचे रामा। सवरन सवरन सवरन बणाया कलिजुग देह तजाई चामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल कराया जोत सरूपी पहरया बाणा। सिँघ सवरन राज दुआरे। प्रभ अबिनाशी आप खलारे। अट्ठे पहर एका लहर वेखे रंग करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच्चों देवे वड सरदारे। वड सरदारी देवे भारी, करे चरन प्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आप बहाए गुरमुख कर्म विचारी। साचा योग जगत पित दिया। पूरन होया काम, हरि दर्शन किया। उतरे सर्ब वियोग हरि जोती थिया। कोए ना लग्गे रोग, अट्ठे पहर जोत सरूपी जगे दिया। अट्ठे पहर जोत प्रकाश। एका एक प्रभ अबिनाश। दूजी वस्त ना कोए पास। एका समग्री एका रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे काज करे सच सच जोत प्रकाश। सच जोत श्री कल्गीधर। गुरसिख मिल्या साचा वर। हरि दुआरे

१३८ ०३ गया खड़। चार जुग ना छड्डे लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाया आपणी हत्थीं खड़। आपणी हत्थीं १३८ ०३

आप उठाए। आप आपणी गोद रखाए। सृष्ट सबाई आप भुलाए। साचा भेव खुल्ह्राए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रक्खे आपणी सरन लगाए। प्रभ अबिनाशी तेरी अचरज माया। विछड़यां कलि मेल मिलाया। सोहँ संगल नाल बन्न्हाया। ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाया। तुटी गंढ्ढे चरनी जोड़े ना कदे विछोड़े, ना कदे मरे ना जाया। महाराज शेर सिँघ पिता पूत एका संग रलाया। पिता पूत इक्क नरायण । एका घर दोए चल बहिण। जन्म जन्म दा लहणा लैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे लहणा देण। गुर चरन सवरन कलि गया तरन। मिली हरि साचे सरन। फेर ना होए मरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्न्हाए आपणी धारन। साचे लेखे लगा पत्नी पति। प्रभ अबिनाशी आप रखाए आपणा तत्त। मातलोक हरि साचा आत्म देवे धीरज जति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप समझावे देवे मति। साचा प्रभ बख्शे सच प्रीत। सिँघ सवरन तेरा फड़या लड़ तेरे नाल तेरी सुरजीत। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर, आत्म रहे सदा अतीत। काम क्रोध हँकार प्रभ विच्चों कढ्ढे फड़। आपे बणे साचा मित दिवस रैण रैण दिवस प्रभ अबिनाशी सद सद सद वसे चीत। सुरजीत देवे चरन प्रीत। हरि परखे साची नीत। मानस जन्म कलि जाणा जीत। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, आपे लेखे लाए चरन कँवल उप्पर धवल रक्खी प्रीत। साचे लेखे जाए लग्ग। प्रभ अबिनाशी पकड़े पग। झूठी माया झूठी काया झूठी तृष्ना अग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म बन्ने धीरज तग। धीरज तग सति सन्तोख। प्रभ साचा देवे अन्तिम मोख। जगत व्यापे ना कोई दोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस कर दरस तेरी उतरे मन दी भुक्ख। दिवस रैण हरि तेरे दुआरे। खाली भरे तेरे भण्डारे। बाहों पकड़ पार उतारे। सिँघ सवरन दी साची नारे। पति पत्नी दोए एका धारे। एका मंगी मंग प्रभ देवे सच दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा जन्म मरन संवारे। पतिपरमेश्वर साचा जाण। दिवस रैण तेरी करे पछाण। भुल्ल ना जाणा रुल ना जाणा तुल ना जाणा झूठे तोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लए तेरी सुरत संभाल। संग साथ आप निभावंदा। जिस जन प्रभ दया आप कमावंदा। रक्खे दे कर हत्थ, ना मात कदे डुलावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुटी चरन प्रीत तोड़ निभावंदा। चरन प्रीती तोड़ निभाए। तुट्टी गंढु जोड़ वखाए। प्रभ अबिनाशी कर चरन प्रीती काया कोहड़ हटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्दी छोड़ आप अख्वाए। काया कौड़ी क्या कराए, सिर पैरां दु:ख रहे थोड़ा थोड़ा। साथ ना देवे काया घोड़ा। औख कदे ना होवे प्रभ साचा सच रखाए जोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम अंत गुरमुखां साचा बौहड़ा। गुर बौहड़या आवे दौड़या। फड़ फड़ बाहों प्रभ साचे आपणी चरन जोड़या। गुरमुख दर साचा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वर पाया जिहा लोड़या। मन चिन्दया फल पाए। चरन प्रीती जो जन कमाए। पिछली बीती भुल्ल बख्शाए। अग्गे मार्ग प्रभ साचा पाए। आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। सच वस्त हरि विच रखाए। एका बस्त्र तन पहनाए। साचे अस्व अस्वार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्त बदस्त लेखा आप चुकाए। गुर संगत सेवा जिस कमाई। मातलोक हरि दे वड्याई। लहणा देणा आप चुकाई। आत्म साचा सोहँ गहणा तन पहनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खी वड्याई। सोहँ गहणा तन पहनाया। धर्म राए ना डन्न लगाया। गुरमुखां बेड़ा बन्नृ वखाया। आप आपणी सेव रखाई, दर साचे माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थान सुहाए जिथ्थे डेरा लाया। थान सुहाए आप आए। माण दवाए आपे जाए। आपे पुच्छे अन्तिम वात, प्रभ अबिनाशी होए सहाए। आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। आत्म अंदर बूझ बुझारा। एका जोत आप करतारा। गुरमुख विरला करे विचारा। जिस हरि देवे चरन प्यारा। चरन प्रीती विच मात सोहँ देवे साची धारा। रसना जप जीव कलि उतरे पारा। प्रभ अबिनाशी पाए तेरी सारा। बेड़ा डुब्बे विच मंझधारा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक नर अवतारा। वरते वरतावे विच संसारे। कलिजुग जीव भुल्ले गंवारे। मायाधारी लोभी आत्म होई हँकारे। झूठे जूठे महल मुनारे। हरि का नाम लग्गे भुसाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात जामा धारे। हरि चरन कलि प्रीत कर, क्यों सौं के वक्त लँघाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, क्यों रो रो जन्म गंवाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, क्यों भरम भुलेखे विच कलिजुग जीव भुलाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, आपणा मूल क्यों रिहा गंवाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, कन्त कन्तूहल हरि जामा पाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, बेमुख होए ना भुल प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, शब्द पंघूड़ा साचा झूल प्रभ अबिनाशी दे झुलाया। हरि चरन कलि प्रीत कर, गुरमुख बणाए मात कँवल फुल्ल दरगाह साची माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाया। सरन लगाया लिख्या लेख कलि कमाया। मिटाई रेख धर्म धराया। गुरसिख तराया, पार लँघाया, सरन लगाया, मरन डरन चुकाया, हरन फरन खुल्हाया, धरनी धरन अख्वाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे मार्ग लाया। कलिजुग वेला अन्तिम आई। कलिजुग झूठी माया विच रुल ना जाई। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई। घर साचे वज्जे वधाई। आत्म देवे दर खुल्हाई। आत्म तृखा तृष्ना दे मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खी वड्याई। गुर चरन प्रीती साची जानो। प्रभ अबिनाशी एका मानो। जूठ झूठ छड्डो जगत निधानो। एका एक दर घर साचे आप पछाणो। देवणहार दातार सच्ची सरकार इक्क भगवानो। कोटन कोट खड़े द्वार अन्त कोए ना आनो। जो जन आए करे निमस्कार प्रभ अबिनाशी दरगाह साची देवे मानो। दरगाह साची धाम अवल्लड़ा। जिथ्थे वसे हरि आप इकल्लड़ा। आत्मक दीपक जोती बलड़ा। एका नाम भारा पलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, कलिजुग अन्त कराए, सतिजुग साचा लाए राह चलाए अवल्लड़ा। कलिजुग तेरा अन्त करावणा। सतिजुग साचा रंग रंगावणा। सोहँ शब्द मुख रखावणा। राउ रंक इक्क करावणा। ऊँच नीच दा भेव मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साचा माण दवावणा। सन्त जन हरि इक्क समान। सन्त जनां हरि देवे आत्म शब्द ज्ञान। प्रभ अबिनाशी आप बिठाए साचे शब्द बबाण। त्रैलोकी नाथ आप वड्याए, तीन भवन दी बूझ बुझाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां हरि देवे माण। सन्त जनां सिर रक्खे हत्थ। आपे देवे सोहँ साची वथ। साचे शब्द आप चढ़ाए सोहँ साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। हरि सन्त हरि आप बणाए। आप आपणा राह जणाए। बाहों पकड़ हरि चरनी लाए। आत्म आकड़ सर्ब कढाए। आपे तकड़ सोहँ शब्द तुलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म ज्ञान दे

हँकार हँगता रोग गंवाए। सन्त जन मन वज्जी वधाई। आत्म जोत होई रुशनाई। एका लिव गुर चरन लगाई। गुर पूरे दे हत्थ वड्याई। आत्म दर दे खुल्हाई। झूठे धन्दे दे गंवाई। आपणे बन्दे लई बणाई। द्वार दस्म दी बूझ बुझाई। जिथ्थे वसे एक रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन सन्तां आपे मेल मिलाई। वाह वाह सन्त हरि साचा मेला। प्रभ अबिनाशी खेल कलि खेला। गया हत्थ ना आवे वेला। गुरमुख साचे सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सज्जण सुहेला। हरि सन्त दोए एका घर। हरि सन्त दोए एका दर। हरि सन्त दोए एका सर। हरि सन्त एका धाम रहण एका घर। हरि सन्त हरि पकड़े लड़। हरि सन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंदर बैठा वड़। साचे सन्त आप बणाए बणत। मेल मिलावा होए साचे कन्त। गुरमुख हरि की पौड़ी जाए चढ़। हरि की पौड़ी वेख अखीर। बज़र कपाटी जावे चीर। अमृत झिरना झिरे साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे सन्त जनां साची धीर। सोहँ शब्द सच ज्ञाना। गुरमुख साचे कलि पछाणा। देवे माण विच जहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कराए चरन धूढ़ इशनाना। सोहँ ताज सिर प्रभ साचे दिया। आत्म जोत जगाया दिया। आप आपणा खेल किया। सतिजुग रखाए साची निया। सन्त जनां हरि साचा लेखे लाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए पुत्तर धीआं। गुर पूरा घर आया। दर मन्दिर आण सुहाया। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि साचा मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची इक्क सरनाया। गुर चरन इक्क सरनाई। गुर चरन मिले वड्याई। गुर चरन गुरसिख आत्म तृखा दे बुझाई। कलिजुग भुल्लया रहे ना काई। भरम भुलेखे दे मिटाई। गुर चरन एका लिव लाई। गुर चरन सच वस्त देवे झोली पाई। गुर चरन एका जोत करे रुशनाई। गुर चरन दुरमति मैल धोत आपणे रंग रंगाई। गुर चरन चार वरन कराए एका गोत हरि सरनाई। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन गुरमुखां लै बुझाई। गुर चरन साची सेवा। गुर चरन देवे सोहँ साचा मेवा। गुर चरन मिले माण वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख अभेवा। गुर चरन मिले सिक्दारी। गुरसिख पूजो बण पुजारी। गुर चरन हउमे ममता दे निवारी। गुर चरन एका देवे शब्द उडारी। गुर चरन आप बहाए सचखण्ड सच्ची अटारी। गुरचरन एका मेल होए निहकलंक नरायण नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे दरस अगम्म अपारी। गुर चरन गुर पूरा पावना। गुर चरन हउमे रोग गंवावणा। गुर चरन जिस जन रसना गावणा। कलिजुग माया डसणी नेड़ ना आवणा। गुर चरन पंजां करे वस, रसन सोहँ शब्द गावणा। साची वस्त सतिजुग धर, एका मार्ग सृष्ट लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट सोहँ साचा डंक वजावणा। सतिजुग तेरा

१४३
०३

सति वरतारा। सतिजुग तेरा रंग अपारा। सतिजुग वरते वरतावे हरि करतारा। सतिजुग सच सच हरि भण्डार वरतारा। सतिजुग सृष्ट सबाई होए चरन भिखारा। देवणहार इक्क दातारा। सतिजुग निखुट ना जाए देवे वड भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लखाए अगाध बोध बण लिखारा। सतिजुग तेरा इक्क वरतंत। गुरमुख विरला जाणे सन्त। बेमुखां माया पाए बेअन्त। गुरसिक्खां मिल्या प्रभ साचा कन्त। प्रभ दी महिंमा बड़ी अगणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त। सच कर हरि जानणा। वाली दो जहानणा। झण्डा धर्म दा आप झुलावणा। चार कुन्ट डंक वजावणा। राउ रंक आप उठावणा। थांउं बंक आप सुहावणा। जिस थांए चरन छुहावणा। गुरसिक्खां पार करावणा। बेमुखां नष्ट करावणा। दर दर भिखार बनावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतावणा। सतिजुग हरि सच वरतन्दा। सतिजुग हरि गुरमुखां हरि गुरसिक्खां रहंदा। सतिजुग जन भगतां आप तुड़ाए आप जिंदा। सतिजुग दर घर साचे कोए रहण ना देवे मदिरा मासी गन्दा। सतिजुग बेमुख ना जाणे माया झूठा जगत अन्धा। सतिजुग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग चढ़ाए गुरसिख तराए बणाए आपणा बन्दा। प्रगटे जोत वाली दो जहानी। सृष्ट सबाई साचा देवे सच निशानी। पंचम जेठ मात जोत प्रगटाए, आवे पन्थ दा सच्चा बानी। एका माण दवाए एका ताण गुरमुख तेरा तेरी आत्म मारे कानी। सतिजुग गुरमुखां आप उठाए, अन्ध अन्धेर मिटाए, संञ सवेर इक्क कराए सोहँ देवे वड दानी। वड दानी इक्क दातार। आदि जुगादी भरे रहण भण्डार। सृष्ट सबाई आए मंगण, प्रभ साचे तेरे दर द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव खुल्हाए गुरसिख दिन रहे चार दिहाड़। कलिजुग रिहा चार दिहाड़े। गुरमुख बणाए विच मात दे लाड़े। शब्द घोड़ी प्रभ आपे चाढ़े। सदा सदा बणे रहण प्रभ साचे दे सच अखाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए एका जोत जगाए गुरसिख तेरी बहत्तर नाड़े। बहत्तर नाड़ जोत जगाई। एका बख्शे चरन सरनाई। भरम भुलेखे आत्म सच बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची सच धाम बणाई। सच नाम जिस जाणया। सच नाम जिस जन माणयां। सच राम जिस पछाणयां। सच काम पूरन करे आप भगवानयां। सच धाम प्रभ साचा आप सुहानयां। सच जाम प्रभ साचे सोहँ शब्द आप पिलावणा। सच नाम प्रभ अबिनाशी एका रसन जपावना। सच ग्राम नगर खेड़ा आप वसावणा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणे विच रहावणा। सच नाम जगत ज्ञाना। सच नाम भगत ध्याना। सच नाम जिस जन हिरदे जाना। सच नाम आत्म देवे नाम महाना। साचा नाम साची जोत करे प्रकाश कोटन भाना। सच नाम अज्ञान अन्धेर होए विनास कराए बिध नाना। साचा नाम गुरमुख विरले होवे पास, प्रभ अबिनाशी जिस साचा जाना। साचा नाम गुरमुख हरि हिरदे

रक्खे वास, चरन कँवल जिस किया ध्याना। साचा नाम मानस जन्म जन्म कराए रास जो जाणे श्री भगवाना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी रसन वखाना। साचा नाम सच दृढ़ावे। साचा नाम सच राह बतावे। साचा नाम सच थां बहावे। साचा नाम सच काम करावे। साचा नाम सच राम मिलावे। साचा नाम सच दाम पल्ले बन्नृ नाल लै जावे। साचा नाम सुक्का हरया करे चाम, हँगता रोग जन गंवावे। सच नाम ना होए खाम, दिवस रैण एका लिव लावे। सच नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पावे। सच नाम सच मन्त्र जाण। सच नाम गुरमुख अन्तर आप पछाण। सच नाम साची बणतर बणाए विच जहान। सच नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सच नाम साची नईआ। सच नाम गुरमुख जपईआ। सच नाम सच मार्ग लईआ। सच नाम आत्म साची धीर धरईआ। सच नाम अमृत साचा सीर पलईआ। साचा नाम काया रोग दे गंवईआ। साचा नाम दिवस रैण रैण दिवस जिस जन जपईआ। साचा नाम आपे होए सज्जण सुहेल, दरगाह साची मेल मिलईआ। सच नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख चढ़ाए साची नईआ। साचा नाम साची धारा। साचा नाम जन उतरस पारा। साचा नाम साचा राम कर्म धर्म दोए लए विचारा। साचा नाम भाण्डा भरम भउ दे निवारा। साचा नाम एका वस्त विच पाए थारा। साचा नाम अमृत भरे भण्डारा। साचा
१४४ ०३ नाम प्रभ अबिनाशी हरि वरतारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका किया जोत अकारा। साचा नाम १४४ ०३
रसना गाओ। प्रभ अबिनाशी साचा पाओ। हरि का नाम हरि हिरदे विच वसाओ। हरि का नाम कारज सिद्व मात कराओ। हरि का नाम साची बिध मेल मिलाओ। हरि का नाम आत्म बिध धीर धराओ। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाम पिलाओ। साचा नाम साची धारी। साचा नाम सच्ची अस्वारी। साचा नाम जीव अधारी। साचा नाम हरि साचे पिण्ड उसारी। साचा नाम जीव जन्त हरि आप सुनारी। साचा नाम हरि आप वसाए गुरमुख तेरी काया महल्ल अटारी। हरि का नाम हरि हिरदे वसाए, एका जोत जगे अपर अपारी। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया खेल अपारी। हरि का नाम साचा धन धनवन्त। हरि का नाम पूरन भगवन्त। हरि का नाम मेल मिलावे साचे सन्त कन्त। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मातलोक कलि साचा कन्त। हरि का नाम सच सिक्दार। हरि का नाम सच विहार। सच नाम कलि देवे तार। सच नाम रसना जीव जप उतरे पार। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे उतरस पार। सच राम साची भाख्या। सच राम जिस जन रसना आख्या। सच नाम मिलावे हरि साचे साथिआ। हरि नाम देवे दरस अलक्खणा लाख्या। हरि नाम आपे करे गुरसिख तेरी राख्या। हरि

नाम प्रभ अबिनाशी साचे भाख्या। हरि नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन होवे दास्सया। सच नाम प्रभ अबिनाशी साचे भाख्या। सच नाम सच्चा सिर ताज। सच नाम धुरदरगाही साचा राज। साचा नाम रसना जप पूरन होए काज। सच नाम शब्द सरूपी उडे बाज। सच नाम गुरमुखां रक्खे आपे लाज। साचा नाम धीरज धरना। साचा नाम जप फिर होए ना मरना। सच धाम रसना जप धर्म राए दा डन्न ना भरना। साचा नाम प्रभ अबिनाशी साचा देवे मातलोक विच धरनी धरना। साचा नाम गुरमुख विरले आए पीता, प्रभ अबिनाशी सरनी पढ़ना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी करनी करना। साचा नाम सर्ब सुखदाई। साचा नाम मिले वड्याई। साचा नाम गुरमुख विरला गुर दर पाई। साचा नाम गुरमुखां पूरन आस कराई। साचा नाम आत्म धीरज इक्क धरवास रखाई। साचा नाम साचा बीरज आप बिजाई। साचा नाम अमृत साचा सीरज आप पिलाई। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां आत्म शांत कराई। साचा नाम शांत सरीर। साचा नाम आत्म धीर। साचा नाम अंमित पीणा साचा सीर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हउमे कढ्ढे आत्म पीड़। साचा नाम सर्ब सुखदाई। साचा नाम दुःख भुक्ख रोग दे गंवाई। साचा नाम आत्म सुख दे उपजाई। हरि का नाम तृष्ना भुक्ख दे गंवाई। हरि का नाम रसना जप माया रोग रहे ना राई। साचा

१४५
०३

नाम साची लग्न गुरसिख पूरे गुर साचे संग रखाई। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आपे होए सहाई। सच नाम सति सरूपा। सच नाम रंग अनूपा। सच नाम मेल मिलावा वड वड भूपा। साचा नाम गुरमुख वेखे ना कोए जाणे रंग रूपा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सति सरूपा। साचा नाम शब्द कटारी। साचा नाम खण्डा दो धारी। साचा नाम गुरमुख विरला बणे वपारी। साचा नाम कलिजुग जीव ना जानण गंवारी। साचा नाम हरि साचा देवे, जो जन मंगण आए चल द्वारी। साचा नाम रसना भेड़ कराए गंवारी। साचा नाम झूठे गेड़ हरि आप गिड़ारी। साचा नाम लहणा देण दए नबेड़, जो जन आए दर भिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे बणया लेख लिखारी। साचा नाम सर्ब का ज्ञाता। साचा नाम हरि देवे पुरख बिधाता। साचा नाम गुरमुख विरले कलि पछाता। साचा नाम ऊँच नीच नीच एका रंग रंगाता। सच नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां माण दवाता। साचा नाम साची धारा। साचा नाम आप चलाए विच संसारा। साचा नाम गुरमुख विरला बणे वपारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसन उचारा। साचा नाम रसना गाओ। अमृत फल साचा खाओ। साचा नाम जन्म मरन गेड़ कटाओ। लक्ख चुरासी फेर ना आओ। साचा नाउँ

भीड़ भाड़ा ना वक्त गवाओ। आत्म साची बूझ बुझाओ। साचा नाम एक दर दोथेड़ मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी साचा पाओ। साचा नाम सति सन्तोख। साचा नाम अन्तिम देवे मोख। साचा नाम रिदे वसाओ लग्गे ना कोई दोख। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुख। साचा नाम जिस जन पछाणयां। दरगाह साची देवे माणयां। हरि का नाम हरि हिरदे साचे विच वसानयां। हरि का नाम आत्म सहिँसा दूर करानयां। साचा नाम देवे जो जन चल्ले हरि के भाणयां। हरि का नाम हरि देवे जो जन मंगण आए दर बण निमाणयां। साचा नाम आत्म गहणा तन पहनान्यां। साचा नाम भाण्डा भरम भउ भन्नान्यां। साचा नाम एका दस्से साचा राहो विच जहानयां। साचा नाम आप बहाए साचे थाउँ जिथ्थे वसे हरि भगवान्यां। साचा नाम गुरमुख विरले कलि पछाणयां। साचा नाम भुल्ले फिरन जीव अञ्याणयां। साचा नाम भेव किसे ना पाया सुघड़ स्याणयां। साचा नाम गुरमुख साचे धीर धरान्यां। साचा नाम प्रभ अबिनाशी साचा बीज बिजान्यां। साचा नाम सतिजुग दिखावे सच निशानीआं। साचा नाम हरि साचा बख्शे कर कर वड मेहरबानीआं। साचा नाम गुरमुख साचे लहणा लैण क्या कोई मारे विच भानीआं। साचा नाम प्रभ साचा देवे वाली दो जहानीआं। साचा नाम आत्म तीर चलाए साची कानीआं। साचा नाम सतिजुग साची हानीआं। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
१४६ ०३ आपणे रंग रंगानीआं। साचा नाम हरि सद वरतारा। साचा नाम हरि इक्क भण्डारा। साचा नाम सृष्ट सबाई देवणहारा। १४६ ०३
साचा नाम आपे बणे हरि वरतारा। साचा नाम गुरसिख साचा पाए वस्त विच हरि थारा। साचा नाम आत्म जगाए जोत अगम्म अपारा। साचा नाम एका रूप अनूप दिखाए पारब्रह्म करतारा। साचा नाम सति सरूप समाए सति सति सति करे वरतारा। साचा नाम जूठ झूठ नष्ट कराए ना दिसे जो रहे झक्ख मारा। साचा नाम गुरमुख विरला बूझ बुझारा। साचा नाम आत्म दूज दए निवारा। साचा नाम खोल्हे गूझ हरि का दुआरा। साचा नाम एका शब्द जगत अपारा। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां कर प्यारा। साचा नाम कलिजुग वंडाए अन्धेरी राती। साचा नाम गुर चरन बंधाए साची नाती। साचा नाम देवे पुरख बिधाती। साचा नाम गुरमुखां आत्म बूंद प्याए स्वांती। साचा नाम जोती साचा दीप जगाए अज्ञान अन्धेर मिटाती। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं दा एका दाती। साचा नाम सर्ब सुख जाण। साचा नाम हरि आत्म राम पछाण। साचा नाम आत्म बान। साचा नाम जीआं दान। साचा नाम गुरमुख विरला सुणे कान। साचा नाम कलिजुग झूठ देवे छाण। साचा नाम अन्तिम होए दुःख मिटाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा नाम सहज सुभाए। साचा नाम गुरमुख गुर दर पाए। साचा नाम देवे जो चले हरि रजाए।

हरि का नाम बेमुख संग ना लै जाए। साचा नाम गुरमुखां आपणे रंग रंगाए। साचा नाम सच दात हरि झोली पाए। साचा नाम वड करामात विच जगत रहि जाए। साचा नाम आत्म मिटाए अन्धेरी रात आत्म ज्ञान दवाए। साचा नाम धीरज ध्यान जो जन रखाए। साचा नाम मेल भगत भगवान कराए। साचा नाम सोहँ दान प्रभ भिच्छया पाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। साचा नाम सहज सुख धार। साचा नाम गुर चरन कँवल कर प्यार। साचा नाम रसना जप जीव उतरस पार । साचा नाम कलिजुग जीव क्यों बैठा भुल्ल गंवार । साचा नाम जे वड कोए ना तुल तोल साचे धन्न तुलार। साचा नाम दर दसवें दे ख्वार। साचा नाम एका देवे शब्द सच्ची धुन्कार। साचा नाम तोड़े सुन्न मुन्न अपार। साचा नाम दर घर साचे पाए मुक्त द्वार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन निमस्कार। साचा नाम सीतल धारा। साचा नाम बेमुख फिराए आत्म आरा। साचा नामगुरमुख साचे लाए कारा। साचा नाम विच मात साचा जगत विहारा। साचा नाम गुरमुख विरला करे वणज वपारा। साचा नाम कलिजुग जीव भुल्ले रहण गंवारा। साचा नाम देवणहार इक्क दातारा। साचा नाम प्रभ अबिनाशी भरे भण्डारा। साचा नाम जो जन मंगे आए दुआरा। साचा नाम वरताए मात आप बणे वरतारा। साचा नाम गुरमुखां होए आप सिक्दारा। साचा नाम बेमुखां चीर करे दो फाड़ा।

१४७
०३

साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पार उतारा। सच नाम साची धुन। साचा नाम गुरमुख साचे कन्न सुण। साचा नाम कलिजुग आत्म देवे पुण। साचा नाम प्रभ अबिनाशी आत्म देवे गुरमुख विरला चुण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। साचा नाम जगत प्रीत। साचा नाम चरन प्रीत। साचा नाम हरि साचा देवे सीत। साचा नाम गुरमुख आत्म करे पुनीत। साचा नाम एका शब्द सच्ची रीत। साचा नाम जुगा जुगन्तर प्रभ साचे दी साची रीत। साचा नाम गुरमुख विरले आए प्रतीत। साचा नाम रसना जप मानस जन्म जाए जग जीत। साचा नाम रसन उचारना। साचा नाम कलिजुग अन्तिम पार उतारना। साचा नाम आत्म ब्रह्म विचारना। साचा नाम हरि देवे साची धारना। साचा नाम रूप रंग ना रेख किसे विचारना। साचा नाम हरि आपे लेख लिखारना। साचा नाम गुरमुख विरले वेख वेख प्रभ आत्म साचे धारना। साचा नाम बेमुख नेत्र नेत्र पेख पेख हँकारना। साचा नाम एका शब्द चलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात साची धारना। साचा नाम साचा राग। साचा नाम आत्म तृष्ना बुझाए आग। साचा नाम बणाए गुरमुख हँस काग। साचा नाम सुण कन्न, गुरमुख विरला जाए जाग। साचा नाम हरि दर्शन बेमुख दर तों जायण भाग। साचा नाम वेले अन्त गुरमुख तेरी पकड़े वाग। साचा नाम रसना जप आत्म धो झूठा दाग। साचा नाम काया बन्न्

साचा ताग। साचा नाम एका रंग रंगाए गुरमुखां सुणाए साचा राग। साचा नाम एका अग्न लगाए, बेमुख दर तों जायण भाग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन पूरे भाग। साचा नाम पाए गुरमुख वड वडभागी। साचा नाम रसना जप आत्म सोई जागी। साचा नाम आप उपजाए शब्द सच्चा रागी। साचा नाम गुरमुख बणाए हँस कागी। साचा नाम प्रभ साचा देवे जिस चरन प्रीत प्रभ लागी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म धोए पापां दागी। साचा नाम सर्ब गुणवन्त। साचा नाम देवे भगवन्त। साचा नाम देवे वड्याई गुरमुख साचे सन्त। साचा नाम आप बणाए गुरसिक्खां बणत। साचा नाम क्या कोई जाणे जीव जन्त। साचा नाम इक्क मिलावा साचे कन्त। साचा नाम साचा राह हरि दिसन्त। साचा नाम जिह्वा मणियाँ मंत। साचा नाम आपे आप जपाए आदि अन्त जुगा जुगन्त। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा कन्त। साचा नाम वड वड्याई। साचा नाम हरि दर ते पाई। साचा नाम रोगां सोगां दे मिटाई। साचा नाम पूरन भोगा रसना गाई। साचा नाम ना होए वियोगा, दरस अमोघ हरि दिखाई।
१४८ साचा नाम हउमे कट्टे रोगा, आत्म पीड़ गंवाई। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाई। १४८
०३ साचा नाम सर्ब का ज्ञाता। साचा नाम दीन का दाता। साचा नाम भैण भ्राता। साचा नाम गुरमुख होए आप पित माता। ०३
साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच पछाता। साचा नाम शब्द भण्डारा। साचा नाम रंग करतारा। साचा नाम हरि शब्द अपर अपारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची धारा। साचा नाम साजण मीता। साचा नाम राखो चीता। साचा नाम परखे नीता। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन प्रीता। साचा नाम आत्म रस। साचा नाम हरि हिरदे जाए वस। साचा नाम शब्द कटारी मारे कस। साचा नाम पंजे चोर जायण नस्स। साचा नाम साचा राह हरि जाए दस्स। साचा नाम दु:ख वसूरे कराए भस। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हिरदे जाए वस। साचा नाम धीर धरईआ। साचा नाम हउमे पीड़ मिटईआ। साचा नाम अमृत साचा सीर पिलईआ। साचा नाम आप चलाए साची नईआ। साचा नाम गुरमुख विरले आप चढ़ईआ। साचा नाम आत्म गढ़ हँकार तोड़ तुड़ईआ। साचा नाम बेमुख जड़्ह पुटईआ। साचा नाम गुरमुखां आत्म रस रसईआ। साचा नाम साची नाओ। साचा नाम सच न्याउँ। साचा नाम प्रभ देवे अगम्म अथाहो। साचा नाम रसना जप हरि आप बहाए साचे थांउँ। साचा नाम रसना जप अमरा पद पाओ। साचा नाम निज़ानंद दे विच समाओ। साचा नाम परमानंद भुल्ल ना जाओ। साचा नाम आत्म कंध आप तुड़ाओ। साचा नाम बंधन बंध हड्ड छुडाओ। साचा नाम आत्म अन्ध आप गवाओ। साचा नाम

अज्ञान अन्धेर वज्जा जिंदा, सोहँ चाबी लाओ। साचा नाम आप तुड़ाए जम के फंद, रसना हरि गुण गाओ। साचा नाम कलिजुग जीव ना होए भाग मन्द, ना वेले अन्त जाओ पछताओ । हरि का नाम जो जन गाए बत्ती दन्दे, वेले अन्त हरि लए छुडाए। हरि का नाम साची दरगाह दए बहाए। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। साचा नाम आसा वरी। साचा नाम हरि प्रभ साचे किरपा करी। हरि का नाम गुरमुख विरले हरि दर वरी। साचा नाम प्रभ अबिनाशी सरनी परी। हरि का नाम आप लगाए आत्म साची झड़ी। साचे नाम दर घर साचे जाए वड़ी। हरि का नाम आत्म साची जोत जगाए ना लाए देर घड़ी। साचा नाम बेमुखां जाए जड़ी। साचा नाम सच कटार प्रभ हत्थ साचे फड़ी। साचा नाम विच संसार रिहा लड़ी। साचा नाम आप कराए सृष्ट सबाई दो धड़ी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दर दुआरे खड़ी। साचा नाम हरि का द्वार। साचा नाम पूरन ब्रह्म करे विचार। साचा नाम जन्म मरन दोवें दए सवार। साचा नाम लक्ख चुरासी देवे गेड़ निवार। साचा नाम मानस जन्म ना आवे हार। साचा नाम दर घर साचा पाए जाए सच दरबार। साचा नाम वसे हरि हरि थाएँ, हरि वेखे रंग अपार। साचा नाम प्रभ अबिनाशी रसना गाए, साचा नाम आपे पकड़ लँघाए पार, अन्तर दोवें बाहीं। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दूसर कोई
१४६ ०३ नाही। साचा नाम गुर गोपाला। साचा नाम दीन दयाला। साचा नाम भगत रच्छक आप रखवाला। साचा नाम गुरमुख देवे भर प्याला। साचा नाम गुरमुखां कट्टे जगत जंजाला। साचा नाम गुरमुख विरले कलि संभाला। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी आत्म ना होए कंगाला। साचा नाम शब्द भण्डारया। साचा नाम देवे विच हरि संसारया। साचा नाम जीव जन्त विच इक्क अधारया। साचा नाम धुरदरगाही खेल अपारया। साचा नाम गुरमुखां मेल मिला रिहा। साचा नाम आत्म धीर धरा रिहा। साचा नाम हरि साचा तीर चला रिहा। साचा नाम बज़र कपाटी चीर वखा रिहा। साचा नाम औखी घाटी आप चढ़ा रिहा। साचा नाम साची जोत विच ललाट आप जगा रिहा। साचा नाम विच काया झूठी माटी विच साची वस्त टिका रिहा। साचा शब्द विकावे हाटी, सच भण्डार लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां वेख वखा रिहा। साचा नाम सर्ब गुण जाण। साचा नाम आप पछाण। साचा नाम कलिजुग जीव ना भुल्ल निधान। साचा नाम प्रभ अबिनाशी साचा जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। सच शब्द जिस जन पछाणयां। दरगाह साची साचा माण दवाणयां भरम भुलेखे सर्ब भुलाणयां। गुरमुख विरले साचे लेखे लाणयां। जिनां दन्दां भेड़ भिड़ाणयां। आत्म कंधा अन्धेर रखाणयां। बेड़ा डोबे ना कोई पार लँघाए वंञ मुहाणयां। प्रभ अबिनाशी साचा शाहो १४६ ०३

गुरमुख विरले कलि पछाणयां। आप चलाए साची नाओ, गुरमुख साचे आप चढ़ाणयां। आप बहाए लै जाए साचे थांउँ, जिथ्थे वसे हरि भगवानयां। एका जोत अगम्म अथाहो, हरि जोती जोत मिलाणयां। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, क्या कोई करे जीव शैतान्यां। आवे जावे सुंञे घर काउँ, ब्रह्म ना कोई विचारे ब्रह्म ज्ञानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती जो जन कमाए प्रभ साचे देवे सच निशानीआं। आत्म हँकारा तन विकारा। मन अफारा दुःख लग्गे भारा। जीव जन्त क्या कोई करे विचारा। प्रभ अबिनाशी ना पावे सारा। भुल्ले रहे जीव गंवारा। भज्जे फिरन जगत अवारा। हरि प्रभ साचा गुरमुखां देवे साची धारा। जो जन करे चरन निमस्कारा। आपे बख्शे प्रीत चरन कमलारा। आपे परखे नीत, बैठ उप्पर ध्वलारा। हरि हरि हरि सद सदा सद सच राखो चीत, करो सद सदा निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे जो रक्खे मन हँकारा। आत्म हँकारी होई अँध्यारी। ना करे विचारी भुल्ल जगत गंवारी। एका पासा आया हारी। दूजा दिसे ना कोए दुआरी। ओमी कूके कूक पुकारे फक्कड़ फोके बोल बुलारी। सच घर सच दर सच सांतक हरि वरतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारी। ताहना मेहणा जगत झल्लणा। दर घर साचा गुरसिख मल्लणा। प्रभ अबिनाशी चतुर सुजाना बैठा उप्पर पलँघणा । बेमुखां विच ना रलणा । अन्तिम अन्त अन्तकाल अन्ने्र एका झुल्लणा।

१५० ०३

हठ हँकारी वड गंवारी कोई ना अग्गे खलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा सद बेड़्हा बन्न्हणा। प्रभ अबिनाशी मायाधारी। क्या कोई करे जीव गंवारी। करे खेल अपर अपारी। जूठे झूठे भाण्डे हँकारी। आपे लाहे झूठे विहारी। रसना रस ना कोई विचारी। झूठा झक्ख रहे सभ मारी। वख वख करे गिरधारी। ना कोई सके रक्ख, कलिजुग अन्तिम बाजी आपणी हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे ख्वारी। शब्द बाण हरि आप चलाए। माण ताण किसे रहण ना पाए। एका आण शब्द रखाए। जूठे गैन जो जन खाए। मौत डैन सभ को खाए। धर्म राए दे सजाए। गुरमुख साचा प्रभ साचा लए छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए। दरगाह साची हरि का दुआरा। एका जोत अगम्म अपारा। जोत सरूपी हरि निराधारा। नर नरायण इक्क पसारा। जे कोई वेखे ना सके कहण, रूप अनूप सरूप अपारा। जो जन पेखे तीजे नैण, प्रभ अबिनाशी खोल्ह खुल्हारा। गुरमुख विरले रसना लैण, जिन हरि मिल्या मीत मुरारा। आपे बणया साचा साक सज्जण सैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारा। नरायण नर जामा धारया। खेल करतारया रूप अपारया। क्या कोई पावे सारया। आपणे भाणे आप समा रिहा। राजे राणे तख्तों लाह रिहा। सुघड़ स्याणे आप डुला रिहा। हरि ऊँचों नीच नीचों ऊँच बणा रिहा। चारों कुन्ट एक डंक वजा रिहा। सोहँ शब्द साची

सच सूच विच मात लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक सभ थाईं आप रखा रिहा। साचा डंक हरि
शब्द वजावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। एका माण हरि चार वरन आप दवावणा। ऊँच नीच दा भेख मिटावणा। सच
सुच्च दा राज चलावणा। जूठ झूठ रहण ना पावणा। सच सुच्च हरि वरतावणा। बेमुख भाण्डा कच्च प्रभ भन्न वखावणा।
जिन्हां पल्ले सच प्रभ साचे पार लँघावणा। बेमुख दर ते आयण जायण नच्च, हत्थ किछ नहीं आवणा। गुरमुख वखाणे
सच्चो सच, प्रभ अबिनाशी मुल्ल चुकावणा। महाराज शेर सिँघ दिवस रैण सद रसना गावणा। सच शब्द सच निशानीआं।
हरि देवे कर मेहरबानीआं। प्रभ वरतारा पुरख सुजानीआं। क्या कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानीआं। भुल्ले जीव होए निधानीआं। आत्म
होई सर्ब अभिमानीआं। रसन उचारन खाणी बाणीआं। हरि की जोत ना किसे पछाणयां। भरम भुलेखे आप रखानीआं। साचा
लेख मेट मिटानीआं। वेखा वेख हरि साचा मूल ना जानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप नितारे दुधों पाणीआं।
सच शब्द जिस जन पछाणयां। दरगाह साची देवे माणयां। गुरमुखां हरि रंग रंगाणयां। साचा संग हरि आप निभाणयां।
जो दर मंगे साची मंग देवे हरि कर वड मेहरबानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान जगत निशानीआं।
१५१ सोहँ देवे साचा दाना। चरन धूढ़ साचा इशनाना। बेमुख दर ते रहण ना पाणा। गुरमुख साचा शब्द निशाना। एका दीपक १५१
०३ जोत जगाणा। आत्म सोत आप खुल्हाणा। दुरमति मैल धोत अन्धेर मिटाणा। प्रभ अबिनाशी साची जोत जगाणा। साचे ०३
रंग प्रभ साचे आप रंगाणा। लक्ख चुरासी मेट मिटाणा। सर्ब जहां हरि बीना दाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ
देवे साचा माना। साचा माण मन का मीत। चरन कँवल हरि रखो प्रीत। सर्ब सुखां हरि साचा मीत। सदा गाओ सुहागी
गीत। खोटी कदे ना होवे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया तेरी करे सीत। सच शब्द जगत धन्न। सच
शब्द भगत मन्न। सच शब्द रंगत तन। सच शब्द मंगत जन। सच शब्द भाण्डा भउ देवे भन्न। सच शब्द धर्म राए ना
देवे डन्न। सच शब्द गुरसिख बेड़ा देवे बन्न्ह। सच शब्द एका जोत जगाए तन। सच शब्द साची धुन उपजाए शब्द कन्न।
सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न्ह। सच शब्द संगत वधाई। सच शब्द हरि लिव
लाई। सच शब्द हरि पूरन बूझ बुझाई। सच शब्द हरि साचे रंग रंगाई। सच शब्द आत्म नंग कटाई। सच शब्द वरभण्ड
देवे वड्याई। सच शब्द नवखण्ड दे विच चलाई। सच शब्द ब्रह्मण्ड जैकार कराई। सच शब्द तीन लोक हरि देवे वंड,
आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। सच शब्द बेमुखां देवे डण्ड, सार किसे ना पाई। सच शब्द जो जन देवण कंड, तिन देवे
सख़त सजाई। सच शब्द चण्ड प्रचण्ड, प्रभ साचे हत्थ उठाई। सच शब्द बेमुख झूठे पायण डण्ड, कोए ना पार लँघाई।

सच शब्द आप कराए खण्ड खण्ड, प्रभ साचा रिहा लिखाई। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खी वड्याई। सच शब्द जगत दी धारा। सच शब्द देवे हरि निरँकारा। सच शब्द दूई द्वैत दे निवारा। सच शब्द आपणे रंग रंगे गिरधारा। सच शब्द गुरमुखां भरे भण्डारा। सच शब्द देवे देवणहार दातारा। सच शब्द गुरमुखां दिसाए साचा घर बाहरा। सच शब्द गुरमुख विरले कलि विचारा। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन पुरख अपारा। सच शब्द सच्ची धुन्कारी। सच शब्द हरि देवे आप निरँकारी। सच शब्द गुरमुख विरला बणे वपारी। सच शब्द एका जोत एका धारी। सच शब्द आत्म करे सर्ब अस्वारी। सच शब्द नाम निधान देवे जीव अधारी। सच शब्द गुरमुख विरले पायण आयण चल द्वारी। सच शब्द जूठे झूठे रहे झक्ख मारी। सच शब्द आत्म करे कारी। सच शब्द रात दिवस रहे इक्क खुमारी। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन निमस्कारी। सच शब्द नाम निधाना। सच शब्द आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। भगवान, जो जन निमस्कारी। सच शब्द नाम निधाना। सच शब्द आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सच शब्द बुध बबेक करे बिध नाना। सच शब्द सोहँ बंधे साचा गाना। सच शब्द सृष्ट सबाई डन्न लगाणा। सच शब्द आप चलाए हरि भगवाना। सच शब्द गुरसिख सुणाए काना। सच शब्द इक्क कराए मेल भगत भगवाना। सच शब्द आत्म जोती दीप जगाणा। सच
१५२ ०३ शब्द दर घर साचे काया महल्ल बणाना। सच शब्द गुर साचे दरसाणा। सच शब्द तीन लोक एका रंग रंगाणा। सच शब्द १५२ ०३
भुल्लयां रुल्लयां कलि मार्ग लाणा। सच शब्द आत्म डुलयां दे मति आप समझाणा। सच शब्द गुरमुख विरला जाणे चतुर सुजाना। सच शब्द अमृत फल साचा खाणा। सच शब्द चरन कँवल प्रीत निभाणा। सच शब्द तन गुर गुर रंगत आप रंगाणा। सच शब्द आत्म जन सर्ब कढाणा। सच शब्द पारब्रह्म हरि दर्शन पाणा। सच शब्द आपे देवे जिया दाना। सच शब्द मेल मिलाए हरि निरँजण, पहरया हरि दा बाणा। सच शब्द चार कुन्ट इक्क दिखाणा। सच शब्द चार वरन विच मात दे गाणा। सच शब्द सतिजुग साचे मिले माणा। सच शब्द सृष्ट सबाई एका आणा। सच शब्द दूसर दिसे ना कोई टिकाणा। सच शब्द रसना गावे, ऊँच नीच राजा राणा। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सच शब्द साची धार। सच शब्द आत्म सदा अस्वार। सच शब्द मारे काम क्रोध हँकार। सच शब्द आपे पाए सार। सच शब्द नाम निधान देवे करतार। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कर प्यार। सच शब्द गुर मेहरबान। सच शब्द झुल्ले जगत इक्क निशान। सच शब्द हरि आपणे रंग रंगान। सच शब्द एका मात रखाए साची शान। सच शब्द सोहँ देवे साचा दान। सच शब्द नाम निरँजण लए पछाण। साचा नाम देवे सोहँ दान। साचा नाम राउ रंक इक्क कर जाण।

साचा नाम साचा डंक विच जहान। साचा नाम हरि देवे सच बबान। साचा नाम गुरमुख विरले कलि चढ़ जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा नाम सच उडारी। साचा नाम सच घर बाहरी। साचा नाम आत्म देवे नाम ख़ुमारी। साचा नाम कट्टे तनों बिमारी। साचा नाम हरि देवे सूत्र धारी। साचा नाम एका रंग सच्चा करतारी। साचा नाम गुरमुख विरला लेवे जीव संसारी। साचा नाम हरि साचा वरतारी। साचा नाम देवणहार इक्क दातारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन निमस्कारी। सच नाम सच जगत दी दाता। सच नाम वड जगत करामाता। सच नाम चरन प्रीती साचा नाता। सच नाम आप पुच्छे गुरसिख तेरी वात चार वरन ऊँच नीच दा भेख मिटाता। साचा नाम कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता। साचा नाम गुरसिख पढ़ाए इक्क जमाता। साचा नाम आपे देवे साची दाता। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाता। साचा नाम सच शब्द आत्म घनघोर। साचा नाम पंजे बन्ह्रे चोर। साचा नाम चरन प्रीती देवे जोड़। साचा नाम एका वर लैणा लोड़। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती लए जोड़। साचा नाम सच कर माना। साचा नाम हरि देवे सच बबाना। साचा नाम राउ रंक विच समाना। साचा नाम गुर मति दे समझाणा। साचा नाम अन्तिम तत्ती वा ना लाणा। साचा नाम साचा जत्ती आप अख्वाणा। साचा नाम एका रत्ती जोत जगाणा। साचा नाम बहे बिध भांती हरि वरताणा। साचा नाम दिवस राती हरि लिखाणा । साचा नाम चरन प्रीती साची रीत दे मति आप समझाणा । साचा नाम गुरमुखां पुच्छे वाती, वेले अन्त आप छुडाणा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। साचा नाम खण्डा दो धार। साचा नाम गुरमुखां लाए पार। साचा नाम बेमुखां करे ख़ुआर। साचा नाम ठंडा दरबार। साचा नाम चण्ड प्रचण्ड करे जगत ख़ुआर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। साचा नाम साचा रंग। साचा नाम गुरमुख मंगे साची मंग। साचा नाम कदे ना होवे भंग। साचा नाम आत्म तृष्ना मिटाए आप कसाए साचा तंग। साचा नाम अमृत झिरना झिराए गंग। साचा नाम बेमुखां धर्म राए दर देवे टंग। साचा नाम माया नागण ना लाए डंग। साचा नाम रसना गाए होए सहाए अंग संग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर मंगी साची मंग। साचा नाम सच्चा गिरधारी। साचा नाम देवे हरि परवरदिगारी। साचा नाम एका सच उडारी। साचा नाम आत्म सच अस्वारी। साचा नाम पवण सरूपी इक्क हुलारी। साचा नाम आत्म साची बूझ बुझारी। साचा नाम जोत जगाए काया अन्ध अंध्यारी। साचा नाम साची देवे इक्क खुमारी। साचा नाम सुन्न मुन्न आप खुल्हारी। साचा नाम एका दीप उज्जयारी। साचा नाम आपे करे साची कारी। साचा नाम दिवस रैण एका धारी।

साचा नाम अनहद धुन सच्ची धुन्कारी। साचा नाम दस्म दुआरी सच खुल्हारी। साचा नाम एका जोत करे उज्जयारी। साचा नाम देवे मेल सच गिरधारी। साचा नाम देवणहार इक्क दातारी। साचा नाम गुरमुखां आत्म भरे भण्डारी। साचा नाम एका करे साची कारी। साचा नाम दिवस रैण रसन उचारी। साचा नाम मानस जन्म जाए संवारी। साचा नाम साचा धर्म विच संसारी। साचा नाम पूरन कर्म रिहा विचारी। साचा नाम मुक्त जुगत दा इक्क सिक्दारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत आए द्वारी। साचा नाम जगत वरतंत। साचा नाम मेल मिलावा साचे कन्त। साचा नाम आप दवाए, प्रभ साचा भगवन्त। साचा नाम माया पाए जगत बेअन्त। साचा नाम एका आप रखाए आदि अन्त। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। साचा नाम साची रीत। साचा नाम एका बख्शे चरन प्रीत। साचा नाम गुरमुख काया करे सीत। साचा नाम जप मानस जन्म जाणा जग जीत। साचा नाम एका राखो हरि हरि चीत। साचा नाम आपे परखे साची नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन प्रीत। चरन प्रीत साची आसा। चरन प्रीत आपे करे बन्द खलासा। चरन प्रीत हरि हिरदे वासा। चरन प्रीत गुरसिख रखाए जिउँ सोना पासा। साचा नाम झूठी खेड झूठी दुनियां झूठा जगत तमाशा। साचा नाम हरि पाओ शाहो शाबाशा। साचा नाम दुक्खां रोगां करे नासा।
१५४ ०३ साचा नाम बेमुखां हत्थ फड़ाए झूठा कासा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला हत्थ ना आए सृष्ट सबाई होए नासा। गुरमुख शब्द अधार है। बेमुख जगत ख्वार है । गुरमुख चरन प्यार है। बेमुख आत्म झूठी कार है। गुरमुख शब्द अस्वार है। बेमुख मूंह दे भार है। गुरमुख सच विहार है। बेमुख उलटी कार है। गुरमुख चरन कँवल कँवल चरन एका करे प्यार है। बेमुखां आत्म हँगता करे ख्वार है। गुरमुख आत्म सच्ची धुन्कार है। बेमुख आत्म लोभ माया भरमार है। गुरसिख एका रंग करतार है। बेमुख दर दर रहे झक्ख मार है। गुरसिख हत्थ फड़ी शब्द कटार है। बेमुख वैहन्दे लहिंदी धार है। गुरमुख जाए सच दरबार है। बेमुख झूठा पसर पसार है। गुरमुख हउमे तृष्ना मार है। बेमुख हिंसा रोग अपार है। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म रंग चढ़ाया अपर अपार है। गुरमुखां रंग रंगाया। बेमुखां नंग कराया। गुरमुखां संग रलाया। बेमुखां दर दुरकाया। गुरमुखां जोड़ जुड़ाया। बेमुखां मोड़ मुड़ाया। गुरमुखां काया कोढ़ दे हटाया। बेमुख झूठा चोर जगत रहण ना पाया। गुरमुख साचा शब्द घोड़े हरि आप चढ़ाया। बेमुख माया झूठी दौड़ आप लगाया। गुरमुख हरि के पोड़ हरि वखाया। कलिजुग जीव कौड़ा रीठ भन्न वखाया। गुर साचा विच मात हरि साचे लड़ लाया। बेमुख बाहों फड़ दर दरबारों बाहर धकाया। गुरमुख साचा एका घर जाए, प्रभ सोहँ साचा हरि सुणाया।

बेमुखां अंदर जाए वड़, शब्द डण्डा मगर लगाया। गुरमुख साचे आत्म फड़, प्रभ आपणी सरन लगाया। बेमुखां प्रभ उखाड़े जड़, नर्क निवास रखाया। गुरमुख साचा साचे अंदर जाए वड़, हरि जोती जोत समाया। बेमुख झूठे जायण झड़, प्रभ अबिनाशी दे सजाया। गुरमुख दर दुआरे खड़, प्रभ अबिनाशी देवे दरस रूप सवाया। बेमुख बहन्दे वहिण गए हड़, साचा राह नज़र ना आया। गुरमुख साचे साची शब्द घोड़ी गए चढ़, अस्व अस्वार आप बणाया। बेमुख झूठे धन्दे गए फड़, रसना भेड़ कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां माण दवाया। गुरमुखां हरि देवे नाम निशान है। बेमुख ना सके पछाण है। प्रभ दी महिंमा जगत महान है। गुरमुख विरले करे चतुर सुजान है। प्रभ अबिनाशी जिस दीआं चरन ध्यान है। एका शब्द सुणाया कान है। अनहद धुन सच्ची धुन्कान है। गुरमुख आत्म जाए मान है। प्रभ साचा देवे ब्रह्म ज्ञान है। एका जोत धरे महान है। शब्द सरूपी आप भगवान है। सच धर्म दा इक्क निशान है। बाकी झूठा सभ जहान है। मात जोत धरे वाली दो जहान है। आपणे रंग रंगे वड दाता मेहरबान है। सोहँ देवे सच करामात विच जहान है। गुरमुख साचे लक्ख चुरासी विच्चों छान है। आप चढ़ाए शब्द बबान है। साची दरगाह देवे माण है। जिथ्थे वसे हरि भगवान है। एका जोत जगे महान है। दूसर कोई ना होर अस्थान है। प्रभ अबिनाशी जोत प्रकाशी दिवस रैण सदा बिराजमान है। तेज कोटन भान है। क्या कोई करे पछाण है। कलिजुग जीव मूर्ख मुग्ध अज्याण है। प्रभ साचा एका जोती जोत मिलाण है। जो जन चरनी डिग्गे आण है। उज्जल मुख विच जहान है। मात कुक्ख सुफल करान है। बेमुख धक्के खान है। दरगाह किते ना मिले थान है। धर्म राए दे अग्गे लान है। करे कराए आप भगवान है। पुठ्ठे टंगे दर बहान है। देवे सज़ा आप सज़ावान है। मन्दे चंगे परख पछाण है। पापी गन्दे अधर्म दुकान है। आत्म अन्धे करे पछाण है। क्यों वज्जे आत्म जिंदे, ना मिल्या हरि भगवान है। हरि साचा रसन ना गाया बत्ती दन्दे, आत्म भरी सर्ब अभिमान है। पापां भार उठाया कंधे, लै जाणा बड़ा महान है। कलिजुग जीव कलिजुग झूठे धन्दे, अन्तिम कोई ना किसे छुडान है। आप बणाए साचे बन्दे, जिस देवे धर्म ध्यान है। सोहँ शब्द हरि साचा रंदे, दुरमति मैल उडान है। प्रभ अबिनाशी सदा बख्शिंदे, गुर चरन करे जो ध्यान है। आप बणाए साचे बन्दे, साचा देवे नाम निशान है। धर्म राए ना पाए फंदे, होए सहाई वेले अन्त आण है। आप चढ़ाए आप तुड़ाए आत्म जिंदे, एका जोत महान है। काया अन्धेरी डूंघी खड्डे, एका रंग रंगे हरि रंगान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां देवे शब्द ज्ञान है। शब्द भण्डारा देवे वंड। गुरमुखां पाए ठंड। आप बंधाए साची गंढु। बेमुखां आत्म होई रंड। घर घर भज्जे फिरन होयण खण्ड खण्ड। अन्तर झूठा रिहा घमंड। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, गुरमुखां एका शब्द दवाए साचे मार्ग पाए। सच सुच्च दा राह दिसाए। एका रंगत नाम चढ़ाए। दूजे दर ना मंगण जाए। अमृत आत्म सीर पिलाए। दस्म दुआरा आप खुल्हाए। जो जन चरनी आए। कर किरपा पार लँघाए। आपे फड़े साचा लड़। साची दरगाह लए बहाए। हरि की पौड़ी जाए चढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। दया कमाए दीन का दाता। प्रभ अबिनाशी पुरख बिधाता। सर्ब जीआं हरि आप पछाता। दिवस रैण रैण दिवस एका रंग राता। गुरमुख साचे आप बणाए साक सज्जण सैण, चरन प्रीती बख्शे साचा नाता। साचा लहणा प्रभ दर लैण, देवणहार इक्क रघुराता। दरस दिखाए तरस कमाए हरस मिटाए प्रगट होवे तीजे नैण, सर्ब गुणां गुण दाता। गुर संगत बणाए भाई भैण, चार वरन हरि इक्क कराता। राउ रंक इक्क थान बहिण, सतिजुग साचा लाता। बेमुख जूठे झूठे पायण वैण, प्रभ अबिनाशी ना किसे पछाता। गुरमुख गुरसिख तेरे दर सुहाई साची रैण, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाता। बेमुखां दिवस रैण रैण दिवस ना लैण देवे चैन, आत्म अट्ठे पहर भोख भुखाता। गुर संगत विच सके ना बहिण, एका शब्द हरि तीर चलाता। दरस ना पेखे हरि प्रभ ना देखे साचे नैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप करे सर्ब पछाण।
१५६ ०३ प्रभ अबिनाशी सर्ब पछाणे। सर्ब जीआं दी आपे जाणे। कलिजुग जीव ना भुल्ल निधाने। हरि का भेव क्या कोई जाणे। १५६ ०३
झूठा पढ़या गोद वखाणे। आत्म स्वाद ना रसना जाणे। अगाध बोध बोध अगाध हरि साचा लेख लिखाणे। गुरमुखां आत्म सोध, प्रभ साचा मार्ग पाणे। प्रभ अबिनाशी वड जोधन जोध तख्तों लाहे राजे राणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए आपणे भाणे। राजा राणा तख्तों लाहवणा। साचा शब्द लिख्त लेख लिखावणा। लिख्या शब्द ना किसे मिटावणा। वरते वरतावे जो प्रभ अबिनाशी साचा लेख लिखावणा। क्या कोई करे झूठे दाअवे, प्रभ अबिनाशी भेव किसे ना पावणा। आपे लावे साचे नांवें, जिस जन दया कमावणा। आपे पकड़े तरावे बाहीं, प्रभ आपणी सरन तरावणा। आत्म हँकारी दुष्ट दुराचारी ना आए विचारी बुद्धि मारी, आत्म सिद्धी ना पाए सारी, दर दवारिउँ बाहर कढावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त साचा वाक आप लिखाए। राजे राणे तख्तों लाहे। एका शब्द उखेड़ा लाए। एका गेड़ा आप दवाए। सृष्टी झूठा झेड़ा आप चुकाए। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा आप कराए। बेमुखां नेड़ा वेला आए। प्रभ साचा दे सजाए। गुरमुखां प्रभ बन्न्हे बेड़ा, आपणे कंध उठाए। आपे लाए साचे लेखे, प्रभ साचा डंक वजाए। वेला गया हत्थ ना आए। जूठे झूठे गए मुख भवाए। हरि साचा धाम सुहाए। जिस थान चरन छुहाए। सतिजुग साचे माण दवाए। साची लिख्त गया लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा माण दवाए। दरगाह साची सिख परवान। प्रभ अबिनाशी

देवे मान। क्या कोई करे जीव पछाण। मूर्ख मुग्ध ना होए अंञान। आप बणाए आत्म गोल्लया, जिस देवे चरन ध्यान। प्रभ अबिनाशी शाहो किसे पूरे तोल ना तोल्लया, ना कोई पावे थान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गाण। रसना गाओ गहर गम्भीर। तेरी आत्म करे शांत ठांडा सरीर। एका शब्द लगाए आत्म तीर। बज़र कपाटी देवे चीर। अमृत मुख पिलाए साचा सीर। बेमुखां दर घर घर साचे ना आवे धीर। आवण जावण घती वहीर। दर दर फिरन जिउँ मंगण जगत फकीर। बिन प्रभ पूरे कोई ना कट्टे हउमे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे लथ्थण ना देवे चीर। साचा चीरा शब्द बन्नाए। साची रंगण नाम चढ़ाए। साचा सगन मुख लगाए। प्रभ दर मंगी साची मंगण, आत्म जोती आप जगाए। आप आपणे रक्खे संगण, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। बेमुख भन्ने जिउँ काची वंग, वेला अन्त गया कलि आए। गुरमुखां निभाए साचा संग, जोत सरूपी जामा पाए। गुरमुख साचा प्रभ दर मंगे साची मंग, नाम दान हरि भिच्छया पाए। होए सहाए सदा अंग संग, दिवस रैण एका रंग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा संग निभाए। साचा संग सज्जण सुहेला। कलिजुग वेला अन्त कराया मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। कलिजुग जीव सोए गूढ़ी नींद प्रभ बेड़ा शौह दरया ठेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख एका रंग रंगाए साचा रंग नवेला। शब्द योग कलि सति है, रसना हरि गुण गाओ। शब्द योग कलि सति है, साचा धर्म मात रखाओ। शब्द योग कलि सति है, आत्म ब्रह्म बूझ बुझाओ। शब्द योग कलि सति है, एका दूज भेव चुकाओ। शब्द योग कलि सति है, गुरमुख गुर चरन झूज वखाओ। शब्द योग कलि सति है, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूपी प्रभ अबिनाशी दर्शन पाओ। स्वच्छ सरूपी दर्शन पावणा। बिन रंग रूपी हरि हिरदे विच वसावणा। आत्म होई अन्ध कूपी साचा दीपक जोत जगावणा। प्रगट होए सति सरूपी, अन्ध अन्धेर सर्ब मिटावणा। प्रभ अबिनाशी वड भूपन भूपी, लेखा सर्ब चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक आप अख्वावणा। निहकलंक हरि जामा धार। विच मात ल्या अवतार। जोत सरूपी खेल अपर अपार। गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन बख्शे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग करे अपार। मातलोक हरि जामा धारया। आवे जावे वारो वारया। सृष्ट सबाई भरम भुलेखे आप भुला रिहा। जो जन आए नेत्र पेखे प्रभ आत्म जोती आप जगा रिहा। चार वरन कराए एका गोती, सतिजुग साचा राह चला रिहा। गुरमुख बणाए माणक मोती, हरि आपणे गल लटका रिहा। सृष्ट सबाई रही सोती, प्रभ माया पर्दा पा रिहा। आत्म बुझी साची जोती, अज्ञान अन्धेर विच पसारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म साचा धर्म साचा ब्रह्म विच

१५८
०३

मात धरा रिहा। मातलोक हरि जामा धारे। पारब्रह्म पूरन अवतारे। तीन लोक एका जोत अधारे। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड सर्ब थांईं हरि पसारे। लक्ख चुरासी प्रभ अबिनाशी जोत अधारे। गुरमुखां करे बन्द खलासी, साचा देवे नाम अधारे। मानस जन्म कराए रहिरासे, जो जन करे चरन प्यारे। आपणा भेव सर्ब खलासी, ना कोई झूठा डंक डफारे। राजा राणा सभ चरनी लासी, ऊँच नीच ना कोई विचारे। शाह सुल्तान सभ दा माण गंवासी, एका शब्द उठाए खण्डा दो धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत तीन लोक चमत्कारे। एका जोत करे प्रकाश। सृष्ट सबाई जाए विनाश। प्रभ अबिनाशी सद अबिनाश। गुरमुखां सद वसे पास। बेमुख दर तों जायण नास। एका शब्द आप चलाए बाणी अकाश। गुरमुख साचे जोत जगाए, तेरी आत्म होए वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दासन दास। दासन दास साचा मीता। प्रभ अबिनाशी राखो चीता। एका शब्द माण दवाए। सोहँ अठारां ध्याए गीता। कलिजुग अन्त कराए, सतिजुग चलाए साची रीता। साचा नाम निधान गुरमुख विरले प्रभ दर प्रीता। साचा देवे इक्क निशान, जिस जन रसना चीता। कलिजुग तेरा वक्त अखीरी। प्रभ अबिनाशी आपे लाहे तेरी चीरी। कोए ना देवे तैनूं धीरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे देवे चीरी। सृष्ट सबाई चीर चिराए। शब्द सरूपी मार कराए। एका धार आप रखाए। विच संसार साची कार कराए। एका शब्द सच्ची धुन्कार हरि साचा आप उपजाए। चार कुन्ट कराए जै जैकार साचा डंक वजाए। सुणे शब्द जन अपर अपार। हउमे रोग गंवाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म चिन्ता सोग मिटाए। गुरमुखां आत्म दुःख मिटावणा। साचा सुख हरि आप उपजावणा। उज्जल मुख मात करावणा। हउमे दुःख रोग नष्ट करावणा। एका इष्ट आप रखावणा। साची दृष्ट आप खुल्हावणा। आत्म भृष्ट सर्ब मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक हरि जामा धारे जिउँ धारे रूप बावना। बावन रूप जिउँ हरि धरया। मंगण आया बल द्वारया। करे खेल अपर अपारया। आप भुलाए वड वड दरबारया। भेव कोई ना पाए ना किसे विचारया। एका रंग एका संग आदि जुगादी सर्ब विस्मादी आपणा आप वरता रिहा। आप आपणा करे वरतारा। क्या कोई जाणे जीव विचार। आपे पावे सर्ब सारा। आपे देवे नाम प्यारा। आपणा आप कर्म विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हत्थ उठाए विच मात दो धारा। सोहँ खण्डा शब्द दो धारी। करे खेल अपर अपारी। वेखे सृष्टी सारी। चार कुन्ट होए ख़ुआरी। भज्जे फिरन नर नारी। उजड़ी मातलोक कलिजुग तेरी अन्त किनारी। प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी इक्वी वढ्ढे हाढ़ी। बेमुखां कलिजुग अन्तिम अन्त ना दिसे पिच्छा अगाड़ी। प्रभ अबिनाशी आप चबाए आपणी दाढ़ीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तारे जो जन चरन

छुहाए दाढ़ी। चरन धूढ़ साचा इशनाना। आत्म जोत जगे महाना। हरि आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। हँकार विकार सर्ब मिटाना। एका धार सर्ब रखाना। एका एकँकार विच संसार चरन प्यार जिस कमाना। कर्म विचार हरि सरनी लाना। आत्म दर द्वार प्रभ साचे आप खुल्हाना। जोत सरूपी कर अकार, अन्ध अन्धेर मिटाना। एका शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद धुन उपजाना। गुरमुख विरला करे विचार जिस हरि साची बूझ बुझावना। बेमुख रहे दर घर साचे झक्ख मार, प्रभ अबिनाशी भेव ना जाना। क्या कोई करे जीव गंवारा, आपणे भाणे आप चलाना। शब्द सरूपी हरि फड़े कटार, पंच दूत हरि नष्ट करावणा। गुरसिक्खां हरि जाए तार, कलि साचे मार्ग लावना। जोत सरूपी शब्द प्यार, साचे मार्ग पावना। सतिजुग तेरा कर्म विचार, विच मात जन्म दवावना। कलिजुग अन्तिम कर ख्वार, प्रभ अबिनाशी नष्ट करावणा। सच सुच्च हरि कर वरतार, झूठ जूठ रहण ना पावणा। एका शब्द चले अपर अपार, चार वरन हरि सरनी लावणा। चार वरन हरि एका सरन, मरन डरन गेड़ चुकावणा। प्रभ अबिनाशी तारन तरन, आपणा भेव आप खुल्हावणा। बेमुख आपणा कीता आप भरन, वेले अन्त जिस बचावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा कलिजुग वरतावे भावना। कलिजुग वरते होए आत्म अन्ध। आत्म होई पापां कंध। अन्तिम काल बेमुखां होए भाग मन्द। प्रभ अबिनाशी ना गाया बत्ती दन्द। आप गंवाया आपणा निज़ानंद। हत्थ

१५६ ०३ ना आया गुरमुखां संग ना कमाया किसे परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर दुआरा कीना बन्द। आत्म १५६ ०३

द्वार बन्द करा के। इक्क अफारा तन रखा के। जीव हँकारा जगत जलाए। आए सच दुआरा अनन्द विनोद रसना गाए। गुरमुख विरले प्रभ ल्या लाध, चरन प्रीती सेव कमाए। साचा शब्द उपजाए वजाए साचा नाद, सुन समाधी खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बोध अगाधी साचा शब्द लिखाए। सुन समाधी देवे खोल्ह। गुरमुखां प्रभ वसे कोल। बेमुखां प्रभ साचा घर साचे कढ्ढे पोल। सोहँ शब्द धुन उपजाए दर घर हरि साचा पर्दा देवे खोल्ह। प्रभ अबिनाशी दूर ना जानो, हरि हिरदे वसे कोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा मवल। जोत सरूपी देस टिकाना। शब्द सरूपी नाम सरहाना। बिन रंग रूपी किसे दिस ना आणा। गुरमुखां आत्म कराए सति सरूपी प्रभ आपणा भेव खुल्हाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पकड़ उठाए राजा राणा। राजा राणा पकड़ ल्याणा। जोत सरूपी दरस दिखाणा। शब्द सरूपी आत्म आप समझाणा। मन उपजे धुन साची कन्न सुणाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा आप बन्न्हाणा। बेड़ा बन्न्हे बंनण योग। देवे दरस प्रभ अमोघ। हउमे कट्टे विच्चों रोग। सोहँ देवे साचा जोग। दर घर साचे रस साचा भोग। कलिजुग अन्तिम अन्त ना लग्गे कोई वियोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां लिख्या धुर संजोग। धुरदरगाही

साचा लेखा। ना कोई वेखो भरम भुलेखा। आप मिटाए पिछली लिखी रेखा। जोत सरूपी धारे भेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उतरे पार जिस जन नेत्र पेखा। लिख्त लेख लेख लिख्त हरि आप कराए। वाक भविख्त हरि रिहा जणाए। साची सिक्ख्त आप बताए। जो जन मंगे मंगत प्रभ सच दान भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर मंगण दर ना जाए। लेख लिख्त लिख्त लेख हरि आप लिखावणी। गुरमुख साचे वेख वेख प्रभ आत्म सोई आप जगावणी। दर घर साचे नेत्र पेख काया हिरस सर्ब मिटावणी। जोत सरूपी धर भेख, सृष्ट सबाई आप भुलावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए सति सरूप सर्ब पौवणी। शब्द पौण इक्क हुलारा। प्रभ अबिनाशी देवे साची धारा। गुणवन्त हरि गुण विचारा। साचा देवे नाम गुरमुखां कर प्यारा। आत्म बलोए साचा देवे जाम, दिवस रैण रहे खुमारा। पूरन होए काम जो जन आए चल दुआरा। आप बहाए साचे धाम, जिथ्थे वसे हरि गिरधारा। एका एक जपावे साचा नाम, दूसर दिसे ना कोई धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। आप चलाए एका धार। आप कराए साची कार। वरते वरतावे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए आपणी धार। आपणी कारे आपे लावणा। झगढ़ा झेड़ा सर्ब मिटावणा। गुरमुखां बेड़ा बन्ह्न वखावणा। सच नबेड़ा आप करावणा। एका मारे शब्द लफेड़ा, हँकार निवार प्रभ साचे धर्म धरावणा। आप दवाए एका गेड़ा, लक्ख चुरासी गेड़ कटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना भेड़ सर्ब मिटावणा। रसना रास आत्म वास। प्रभ होए दास करे बन्द खलास। शब्द चलाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन धीर धरे आप धरवास। उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग भुल्लया। उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग माया विच रुल्लया। उठ जीव जाग, क्यों झूठे तोल तुल्या। उठ जीव जाग, सच द्वार मात खुल्ल्हया। उठ जीव जाग, अमृत आदम अजे ना डुल्ल्हया। उठ जीव जाग कलिजुग वेला अन्तिम आ गया, जाए पहले बुल्ल्हया। उठ जीव जाग, हरि साचा शब्द लिखा गया। भाग लगाए आपणी कुलया। उठ जीव जाग अन्तिम अन्त कलि करावणा। किसे अग्गे ना दिसे चुल्ल्हया। उठ जीव जाग, भरम भुलेखे फिरे ऐवें भुल्लया। उठ जीव जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुलाए साचे तुल्लया। उठ जीव जाग, जगत अन्धेरा। उठ जीव जाग, ना कोई दिसे संञ सवेरा। उठ जीव जाग, हरि आप चुकाए तेरा मेरा। उठ जीव जाग, प्रभ कटाए चुरासी गेड़ा। उठ जीव जाग, कलिजुग झूठा झेड़ा। उठ जीव जाग, प्रभ शब्द सरूपी बन्ह्ने बेड़ा। उठ जीव जाग गुर बिन पार लँघावे केहड़ा। उठ जीव जाग धुर दरगाहों ना जाए फेड़ा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए शब्द सरूपी आत्म जेड़ा। उठ जीव जाग, वक्त

अखीर। उठ जीव जाग, क्यों टुट्टी आत्म धीर। उठ जीव जाग, पी अमृत साचा सीर। उठ जीव जाग, ना होए सहाई कोई पीर फकीर। उठ जीव जाग, प्रभ मिटाए औलीए दस्तगीर। उठ जीव जाग, राउ रंकां लथ्थे चीर। उठ जीव जाग, साचा शब्द चलाया तीर। उठ जीव जाग चार कुन्ट ना देवे कोई किसे धीर। उठ जीव जाग, आप मिटाए औलीए पीर। उठ जीव जाग, किसे हत्थ ना आवे नीर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे शब्द धीर। उठ जीव जाग, वक्त विचारना। उठ जीव जाग, मानस जन्म ना कलिजुग हारना। उठ जीव जाग हरि देवे शब्द उधारना। उठ जीव जाग, साचा नाम रसन उचारना। उठ जीव जाग, हउमे रोग सर्ब निवारना। उठ जीव जाग, साचा योग गुर दर कमावणा। उठ जीव जाग, आत्म भोग सच लगावणा। उठ जीव जाग, चिन्ता सोग सर्ब मिटावणा। उठ जीव जाग, दरस अमोघ हरि आप दिखावणा। उठ जीव जाग हउमे रोग सर्ब गवावणा। उठ जीव जाग, साचा योग हरि दवावणा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पूर कराए भावना। उठ जीव जाग, हरि वक्त सुहाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी विच मात दे फेरा पाया। उठ जीव जाग, सोहँ देवे साची दात। हरि साचा खेल रचाया। उठ जीव जाग, प्रभ पढ़ाए इक्क जमात, दूजा भेव सर्ब चुकाया। उठ जीव जाग, प्रभ आप मिटाए आत्म अन्धेर सुरत एका नाम ज्ञान दवाया। उठ जीव जाग, आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी लाए आपणे लेखे, क्यों आपणा मूल गंवाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखे, आत्म देवे जोत सवाया। उठ जीव जाग, प्रभ सोहँ देवे चोग चुगाया। उठ जीव जाग, क्यों हँगता रोग वधाया। उठ जीव जाग, क्यों दर दर फिराया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे सच द्वार आप खुल्हाया। उठ जीव जाग, गुरसिक्खां कर प्यार इक्क साचा नाम दान झोली पाया। उठ जीव जाग एका बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती देवे तोड़ निभाया। उठ जीव जाग, चरन धूढ़ कर इशनान, भाण्डा भरम दे भन्नाया। उठ जीव जाग, आत्म वज्जे साचा बाण, बज़र कपाटी चीर चिराया। उठ जीव जाग, साचा शब्द विके प्रभ हाटी मुल्ल कोई ना लाया। उठ जीव जाग, काया झूठी माटी अन्त देवे ख़ाक रलाया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी आप चढ़ावे औखी घाटी प्रभ दाता वड बली बलवान महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाया। उठ जीव जाग, कलिजुग अन्तिम राह अवल्लड़ा। उठ जीव जाग, वेले अन्त दर दुआरे हरि खलड़ा। उठ जीव जाग तेरा भारा होवे पलड़ा। उठ जीव जाग, क्यों बेमुखां संग रलड़ा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसे राह सुखल्लड़ा। उठ जीव जाग हरि मार्ग लाया। उठ जीव जाग, सारंगधर बीठला जोत जगाया। उठ जीव

जाग, रंग रंगीन माधव विच मात दे आया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म जोती दे जगाया। उठ जीव जाग, हरि दया धारे। उठ जीव जाग, प्रभ जोत जगाए तेरी काया महल मुनारे। उठ जीव जाग, क्यों भुल्ले जीव कलि गंवारे। उठ जीव जाग, क्यों रुल्ले विच संसारे। उठ जीव जाग, पूरे तोल तुलो मानस जन्म हरि सुधारे। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। उठ जीव जाग, क्यों माढ़े होए भाग। एका शब्द उपजाए साची धुन राग। एका जोत जगाए तेरी आत्म मिटाए सर्ब विवाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद अराध। उठ जीव जाग, कर सच विहारा। उठ जीव जाग, प्रभ साचा देवे नाम अपारा। उठ जीव जाग, मानस जन्म हरि कलि संवारा। उठ जीव जाग, लक्ख चुरासी हरि गेड़ निवारा। उठ जीव जाग, जम की फाँसी हरि कटारा। उठ जीव जाग आप बहाए दर दुआरा। उठ जीव जाग, जो जन करे चरन निमस्कारा। उठ जीव जाग, वेला अन्त क्यों बाजी हारा। उठ जीव जाग, प्रभ आप बंधाए जगत साची धारा। उठ जीव जाग, जोत सरूपी करे खेल अपर अपारा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग लाए साचा इक्क दरबारा। उठ जीव जाग, हरि जन्म संवारे। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी चरन निमस्कारे। उठ जीव जाग, आत्म दर हरि आप खुल्ह्रारे। उठ जीव जाग साची जोत जगाए तेरे काया महल मुनारे। उठ जीव जाग, साचा मंग इक्क दुआरे। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई रैण अंध्यारे। उठ जीव जाग, नाम निरँजण जोत अधारे। उठ जीव जाग, सर्ब दुःख भय भंजन। उठ जीव जाग, प्रभ चरन निमस्कारे, सोहँ देवे साचा अंजन। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पी अमृत दर गुरमुख साचे जन। उठ जीव जाग, अमृत रस पीओ। उठ जीव जाग सोहँ सच आत्म साचा बीओ। उठ जीव जाग, प्रभ आप रखाई सतिजुग साची नीओ। उठ जीव जाग, प्रभ दर माण दवईओ। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धीर धरईओ। उठ जीव जाग, प्रभ साची धीर धराना। सच्चा चले एका तीर कमाना। उठ जीव जाग, प्रभ आप उठाए वड सूरबीर बली बलवाना। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई प्रभ वेखे रंग जिउँ द्वापर कृष्ना काहना। उठ जीव जाग, प्रभ खेल रचाए सर्ब बंधाए हत्थ मौत गाना। उठ जीव जाग, आत्म हँकार दिसाए, शब्द कटार लगाए, बाहों पकड़ ल्याए विच मैदाना। उठ जीव जाग, चीन रूसा शाह अबनूस्सया। एक तन पहनाए काली सूसीआ। ना कोई दिसे ईसा मूसीआ। अन्तिम दए मिटाए उठ जीव जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग दए मिटाए, सतिजुग दए लगाए, गुरमुख साचे आप उपजाए, सचे मार्ग लाए, सतिजुग साचे देवे सोहँ नाम निशानीआं। ईसा मूसा आप मिटावणा। शब्द हदीसा इक्क रखावणा।

सृष्ट सबाई सभ पीसन पीसा, आपे आप गेड़ रखावना। क्या कोई करे प्रभ की रीसा, आपणा भेव हरि आप खुल्हावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणा भावणा। चार यारां वक्त चुकावणा। अहिमद मुहम्मद रहण ना पावणा। आप मिटाए अञ्जील कुरावना। ना कोई दिसे वेद पुराना। ना कोई दिसे शाह सुल्ताना। तख्तों लाहे सर्ब जहाना। राउ रंक हरि इक्क कराना। शब्द डंका हरि आप बजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। वेद पुरान आप मिटाए। कलिजुग रीत कोई रहण ना पाए। आपणा भेव प्रभ अबिनाशी आपणा आप खुल्हाए। वड वड देवी देव ना कोई सके अलाए। करोड़ तेतीस सद रहे सेव, सुरपति राजा इन्द हरि सेव कमाए। जोत सरूप वड सूरबीर जोधा मृगिन्द, क्या कोई वेखे वेख वखाए। हरि आपे पकड़ उठाए वाली हिन्द, आपणी सरन लगाए। जुगो जुग आदि जुगादि जन भगतां जै जै जैकार कराए। गुरमुख बणाए साची बिन्द, साचा नाम जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चिन्द सर्ब मिटाए। एका शब्द जगत चलावणा। साचा मार्ग मात धरावणा। सारंगधर भगवान बीठला अख्वावणा। कलिजुग कौड़ा रीठला भन्न वखावणा। एका रंग गुरमुख चढ़ाए आत्म मजीठला, प्रभ साचे रंग रंगावणा। प्रभ अबिनाशी साचा मीठला, राणा संगरूर बाहों पकड़ हरि आप उठावणा। प्रभ दर मंगे साची मंग, सोहँ दान प्रभ झोली पावणा। आप मिटाए पिछली

१६३
०३

रेखना, आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाए, आत्म हँकार विकार सर्ब नष्ट करावणा। जोत सरूपी धारे भेखना, क्या कोई किसे वखावणा। १६३ ०३

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा लेख लिखावणा। सृष्ट सबाई लेख लिखाए। प्रभ अबिनाशी मेट मिटाए। कलिजुग तेरी झूठी रेख मिटाए। सतिजुग साचा आप उपजाए। विच मात हरि जन्म दवाए। पहली माघ दे वड्याए। साचा राग हरि साचा झोली पाए। गुरमुखां आत्म धो दाग, इक्क वस्त हरि विच टिकाए। आपे पकड़े हत्थ आपणे वाग, ना कोई सके छुडाए। गुरमुख विरला कलिजुग रिहा जाग, बेमुख गूढ़ी नींद सवाए। गुरमुख विरले प्रभ आत्म शब्द लगाए जाग, बेमुखां आत्म हँकार विकार रखाए। पूरन होए गुरसिख भाग, प्रभ साचा मेल मिलाए। आप बुझाए आत्म तृष्ना आग, दूई द्वैत पर्दे लाहे। सोहँ पहनाए तन साचा ताग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए। एका लगाए शब्द अवाज़, गुरमुखां आप उठाए। आप सुणाए साचा राग, अनहद धुन उपजाए। गुरसिख बणाए हँस काग, प्रभ आपणी सरन बहाए। बेमुख दर तों जायण भाग, दर साचा मूल ना भाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरताए। हुक्म वरतणा वरतावणा। प्रभ साचे लेख लिखावणा। जूठ झूठ नष्ट करावणा। प्रभ साचे साचा राह चलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए आपणी भावना। साचा लेखा जगत लिखावणा। लिख्या लेख ना किसे मिटावणा। गुर संगत विच

हरि समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम रंगत इक्क चढ़ावणा। वरभण्ड पई डण्ड है। सृष्ट सबाई होई रंड है। टुट्टा सर्ब घमंड है। चमकणी चण्ड प्रचण्ड है। बेमुख होयण खण्ड खण्ड है। प्रभ साचा देवे वंड है। पल्ले किसे ना साचे नाम दी गंढु है। धर्म राए अग्गे देणा दण्ढ है। पुठ्ठे कर कर देणा टंग है। दर दुआरे अग्गे दिसण कुरंग है। दर दर घर घर वरतणी भुक्ख नंग है। प्रभ अबिनाशी तेरा साचा छड्डया संग है। सृष्ट सबाई होई बेरंग है। आत्म होई भंग है। गुरमुखां चाढ़े साचा रंग है। दर मंगी साची मंग है। ना आत्म होई तंग है। मानस जन्म ना होया भंग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरा सरबंग है। चण्ड प्रचण्ड, विच वरभण्ड, विच नवखण्ड। घर घर रोवण नार रंड। जूठे झूठे माया लूठे सभ दे जाण कन्ढु है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरताए, कलिजुग तेरा लेख चुकाए, एका अग्न जोत लगाए, चार कुन्ट कोई रहण ना पाए, दुखी होई सर्ब वरभण्ड। घर घर लग्गी एका अग्ग। किसे तन ना दिसे तग। आत्म सड़या सारा जग। धर्म राए दे अग्गे लाया वग। कलिजुग जीव होए हँस कग। एका लग्गी आत्म तृष्ना अग्ग। प्रभ अबिनाशी लेखा आप चुकाए बेमुखां पकड़ शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि बेमुखां दे सजाए कीने नंग। कलिजुग तेरा अन्त करावणा। झूठा भेख सर्ब मिटावणा। शाह सुल्तान कोई रहण ना पावणा। राज राजान ना कोई दिसावणा। माण ताण सर्ब गवावणा। वड वड शान ना किसे रखावणा। एका आन शब्द रखावणा। शब्द बाण हरि आप चलावणा। सृष्ट सबाई हरि माण गवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। शब्द बाण हरि आप चलाए। राज राजान आप अख्वाए। साजण साज खेल रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा रिहा लिखाए। लिखाई लिख्त अगम्म अपारे। वेख वेख करे विचारे। जो कुझ वरते विच संसारे। उप्पर धरत ना दिसण महल मुनारे। कलिजुग जीव आपणी बाज़ी गए हारे। आत्म भरया इक्क हँकारे। झूठी मारन ऐवें नाअरे। प्रभ अबिनाशी खेल अपारे। आपे भेड़े भेड़ भिड़ाए, सुरत शब्द दी मारे। एका गेड़ा आप गिड़ाए, उलटी लट्ठ गिड़ारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई भट्ठ कराए। सृष्ट सबाई कर्म विचार। प्रभ अबिनाशी आवे वारो वार। जुगा जुगन्त आदि अन्त प्रभ साचे दी साची कार। एका जोत एका शब्द एका धर्म एका कर्म एका ब्रह्म धरे विच संसार। गुरमुखां देवे सतिजुग साचे जरम प्रभ अबिनाशी बंधे धार। आप कराए आत्म दान सोहँ शब्द चलाए कलि अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई रिहा कर्म विचार। कर्म विचार ना कोई सके जीव छुपारे। चित्रगुप्त विच लेख लिखारे। साचा मित सच्ची सरकारे। धर्म राए खड़ा दरबारे। वेले अन्त सच करे कारे। बाहों पकड़ ल्याए दुआरे।

देवे लेखा जीव गंवारे। लेवणहार इक्क करतार, सच न्याउँ सच्ची सरकारे। साचा थाउँ ना कोई जूठ झूठ पसर पसारे। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो वेखे विगसे करे विचारे। दर घर साचा गुरमुख पाए, जिस आत्म तुटा सर्ब हँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि एका जोत निरँकारे। जोत निरँजण हरि गोबिन्दा। सृष्ट सबाई प्रभ आप मिटाए आत्म चिन्दा। आवे जावे जुगो जुग प्रभ अबिनाशी वड मृगिन्दा। सदा सदा सद जन भगतां हरि बख्शिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन रखाए सुरपति राजे इन्दा। इन्द इन्द्रायण खड़े द्वार। दोए जोड़ बणे भिखार। देवणहार इक्क दातार। जो जन आए सच्चे दरबार। आत्म भरे सर्ब भण्डार। कारज सरे जो चरन कँवल करे निमस्कार। सरनी पड़े कलिजुग उतरे पार मानस जन्म ना कलिजुग हरे, प्रभ किरपा करे अपार। गुर संगत रल गुरमुख विरला तरे, बेमुख दर रहे झक्ख मार। ना उह जन्मे ना उह मरे, जिस किया चरन प्यार। लक्ख चुरासी विच फेर ना वड़े, प्रभ साचा देवे तार। दर दुआरे हरि अग्गे खड़े, देवे दरस रूप अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका जोत करे अकार। जोत अकारया विच संसारया। भुलेखा पा रिहा लेखा चुका रिहा। गुरमुख जगा रिहा दुःख कटा रिहा। उज्जल मुख करा रिहा। चुरासी गेड़ गवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि आपणी खेल आप वरता रिहा। हरि हरि की कार हरि ही जाने। हरि हरि रंग गुरमुख विरला कलि पछाणे। हरि हरि रंग हरि साचा देवे साचा नाम रंग जिस किरपा करे आप महाने। हरि हरि हरि दर मंग साचा संग देवे दरस आत्म जोत धरे महाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। सच शब्द अस्वार है। पौण सरूप जीव अधार है। क्यों भुल्ला जीव गंवार है। आत्म पूरन कर विचार है। प्रभ अमृत आत्म बख्शे साची धार है। एका जोत होए अकार है। भरम भुलेखे दए निवार है। कर्म लेखा हरि लिखार है। कर कर भेखा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लीला अपर अपार है। अचरज खेल अपर अपारा। किसे ना आवण देवे सारा। भुल्ल भुलेखे जूठा झूठा देवे इक्क हुलारा। गुरमुख लाए साचे लेखे, देवे शब्द नाम अधारा। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखे, हउमे रोग जाए सारा। आत्म कढ्ढे भरम भुलेखे, चरन कँवल कँवल चरन करे निमस्कारा। मानस जन्म लाए लेखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। मानस जन्म लेखे जाए लग्ग। प्रभ अबिनाशी जो जन पकड़े पग। कलिजुग माया झूठे धन्दे विच ना जाए लग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द ज्ञान दे, एका चरन ध्यान दे, नाम सच बबाण दे, आत्म जोती जोत महान दे, आप निभाए आपणा संग। संगी साथी प्रभ रघुनाथी। जिस दर बांधे दिसण हाथी। त्रैलोकी नाथी, प्रभ दी महिंमा बड़ी अकाथी। अन्तिम अन्त प्रभ शब्द सरूपी पाए नाथी। गुरमुख चढ़ाए सोहँ साचे

राथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए आप आपणी गाथी। सतिजुग तेरी साची गाथा। सोहँ चले विच मात साचा राथा। आप चलाए साचा नाथा। गुरमुख रलाए चढ़ाए साचे साथा। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची गाथा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण अनाथ अनाथां। नाथ अनाथे, प्रभ सगला साथे। प्रभ चढ़ाए शब्द राथे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटी हरस गुरमुख तेरे किल विख पाप लाथे। लथ्थे पाप आत्म वसूरया। एका शब्द धुन उपजाई अनहद तूरया। आसा मनसा प्रभ साचा पूरया। आत्म सहिँसा होया दूरया। देवे वड्याई विच सहँसा, आत्म जोत जगे कोहतूरया। आप बणाए साचा बंसा, एका देवे नूर नूरो नूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ सर्ब कला भरपूरया। सर्ब कला समरथ, हरि गुर जन है। गुरमुख साचे आपणा मूल पछाण है। सोहँ शब्द सच्ची त्रसूल, आत्म बान है। अन्तिम अन्त ना कलिजुग भुल्ल, सोहँ शब्द सच निशान है। कलिजुग तेरे अन्तिम तुट्टी चूल, सतिजुग झुले इक्क निशान है। प्रभ अबिनाशी साचा एका बंधे रूल, वड दाता आप बली बलवान है। दूजा दर ना होए कबूल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान है। साचा दर ना गुरमुख भूलना। कलिजुग माया विच ना रुलना। प्रभ आप चुकाए तेरा पिछला मूलना। शब्द पंघूड़ा हरि घर साचे झूलना। हरि मेल मिलावा दर्शन देख हरि कन्त कन्तूहलना।
१६६ क्यों बद्धा झूठा दाअवा, कलिजुग हुण अन्त ना फलना फूलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए आपणे रूलना। १६६
०३ ०३
सच दरबार इक्क लगावणा। सच घर बाहर इक्क रखावणा। सच वरतारा इक्क करावणा। सच सरकार इक्क बनावणा। सच विहार प्रभ साचे लेख लिखावणा। साचे कर सिक्दार, प्रभ साचे तख्त बहावणा। साची कर विचार, धर्म राज दा दर खुल्हावणा। सच कर विचार, सतिजुग साचे तेरी लाज रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच रहावणा। सच वस्त सच धर्म है, हरि देवणहार। सच वस्त सच धर्म है, प्रभ अबिनाशी भरे भण्डार। सच वस्त सच धर्म है, गुणवन्त गुण विचार। सच वस्त सच धर्म है, देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नरायण नर अवतार। सच शब्द नाम निरँकार है। गुरमुखां देवे आप अधार है। आदि जुगादी साची तेरी कार है। अनाद अनादी वड ब्रह्मादी तेरी महिंमा अपर अपार है। गुरसिख बणाए साचे सम्बन्धी, आप चलाए आपणी धार है। सृष्ट सबाई आत्म अन्धी, ना कोई करे विचार है। कलिजुग पंड उठाई कंधे थक्के थक्क होए मांदी, ना मिल्या सच दरबार है। आत्म होई अन्धेर अन्धी, हत्थ वस्त सच ना आई है। झूठी माया पल्ले बांधी फिरे पान्धी, प्रभ अबिनाशी पाई ना सार है। संग ना चले तेरे वेले अन्त कोई क्यों झूठी झंजट पाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह बताई है। नाम निधान ना रसना गाया। शब्द निशान ना तीर चलाया।

हउमे जंजीर ना गलों कटाया। दूई द्वैत ना पर्दा लाहया। भाण्डा भरम ना भउ भन्नाया। आत्म चिन्ता ना हउ गंवाया। दर घर साचे विच्चों हरि पूरन ब्रह्म ना किसे पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाया। घर घर फिरे खोज खोजन्तया। घर साचे करे बेनन्तिया। होवे मेल मिलावा साचा कन्तया। आत्म दर द्वार रहन्तया। शब्द भण्डार सद वरतन्तया। जिस बणाई तेरी बणन्तया। सतिजुग भुल्ला जीव जन्तया। मेल मिलावा साचे कन्तया। आवे जावे जगत रहावे, जुगो जुग आदिन अन्तया। गुरमुख साचे आण तरावे, हरि सुणे सच बेनन्तिया। आप आपणे मार्ग पावे हरि साचा नाम दवन्तया। दर घर साचा आप दिखावे, विच वसे हरि भगवन्तया। आत्म साची जोत जगावे, अन्ध अन्धेर दूर करन्तया। अनहद साची धुंन उपजावे, शब्द खुजन्तया। आत्म सुन आप तुड़ावे, अमृत बूंद वसन्तया। सोहँ शब्द हरि कन्न सुणावे, भरम भुलेखा ना कोए रहन्तया। दरगाह साची माण दवाए, हरि जोती जोत मिलन्तया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगावे साचा रंग रगन्तया। साचा रंग हरि पछाणो। एका देवे नाम दानो। होवे मेल भगत भगवानो। दर घर साचे देवे मानो। पीड़ रोग हरि कटानो। अमृत साचा सीर पिलानो। बज़र कपाटी चीर वखानो। औखी घाटी आप चढ़ानो। काया झूठी माटी अन्त भन्न वखानो। दिवस रैण सद रसना गाई, दरगाह साची देवे मानो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जणो। जोत जगत इक्क विहार। जोत जगत इक्क आहार। जोत जगत इक्क सहार। जोत जगत प्रभ अबिनाशी साचा देवे गुरसिक्खां कर प्यार। जोत जगत आत्म प्रीत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द अधार । गुरमुख साचे प्रभ बख्शे चरन प्रीत । हरि साचा सज्जण सुहेला कर दरस मानस जन्म जाओ जग जीत। जुगो जुग आदि जुगादि प्रभ साचे दी साची रीत। सच सुहेला साचा मीता। अट्ठे पहर राखो चीता। प्रभ अबिनाशी पतित पुनीता। गुरमुख आत्म रक्खे अतीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द माण दवाए अठारां ध्याए गीता। गोहझ ज्ञान इक्क ध्यान। शब्द सरूपी देवे मेहरबान। गुरमुख विरला करे पछाण। जिस जन किरपा करे महान। देवणहार इक्क भगवान। मंगणहार सर्ब जहान। जोत सरूपी जोत हरि आपे जाणे आपणा भाणा। आपे जाणे आपणा बाणा। आपे जाणे आपणा भाणा। आपे जाणे आपणा सच टिकाणा। कलिजुग भेख सर्ब मिटाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे आत्म साचा ब्रह्म ज्ञाना। साचा नाम शब्द उडारी। साची देवे इक्क खुमारी। हउमे ममता हरि निवारी। साची बणत करे बनवारी। जीआं जन्तां जोत अधारी। साधां सन्तां एका देवे साचा शब्द पूरन ब्रह्म विचारी। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता, कर्म धर्म दोए रिहा विचारी। कलिजुग माया पाए बेअन्ता, खेल करे अपर अपारी। प्रभ अबिनाशी साचे कन्ता, विरले गुरमुख

बूझ बुझारी। एका शब्द धुन वजन्ता, शब्द सरूपी खेल न्यारी। सच धाम गुरमुख साचा सद रहंता, जिथ्थे जगे जोत प्रभ मुरारी। एका जोत जगे भगवन्ता, दिवस रैण दिवस रंगारी। रूप रेख ना कोई बणंता, कलिजुग जोत अपर अपारी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल अपर अपारी। आपणा खेल आपे करना। गुरमुख विरले कलिजुग वरना। चरन लाग गुर साचे तरना। आप चुकाए मरना डरना। आप खुल्हाए हरना फरना। प्रभ अबिनाशी धरनी धरना। गुरसिक्खां बेड़ा पार करना। अन्तिम अन्त कलि आप उधारे, जो जन आए सरना। गुरमुख साचे सन्त जनां आप बणाए साचा वरना। एका शब्द जिह्वा मंत कलि वरन चार प्रभ साचे वरना। एका शब्द माण सृष्ट सबाई सिर आपणे धरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे आप आपणा कर्म करना। सतिजुग तेरा खुल्ल्हे दुआरा। प्रभ अबिनाशी भरे तेरा भण्डारा। सर्ब घट वासी आपणा आप करे पसारा। घनकपुर वासी साचा शब्द लिखाए अपर अपारा। गुरमुखां मानस जन्म कराए रहिरासी हउमे रोग निवारा। गुरमुख साचे पार उतरासी, जिन मिल्या हरि गिरधारा। भरम भुलेखा दूर करासी, एका जोत करे उज्जयारा। साचा दाओ आप लगासी, सृष्ट सबाई जाए हारा। गुरमुख साचे बलि बलि जासी, जिस देवे शब्द अधारा। आपे कर बन्द ख़लासी, आदि अन्तन एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्तर इक्क वरतारा। मातलोक हरि जामा पाए। आप आपणा भेख वटाए। सतिजुग तेरे लेख लिखाए। गुरमुख विरले वेख वेख, प्रभ साचा आप जगाए। दर्शन पेख पेख प्रभ आपणे रंग रंगाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच रहाए। सतिजुग तेरी साची धारना। आप पूरन ब्रह्म विचारना। कलिजुग अन्तिम पार उतारना। वेला वक्त सभ विचारना। साचा शब्द चलाए खण्डा दो धारना। सृष्ट सबाई आप कराए मारना। आप कराए चीर चिराए करे दो फाड़ना। चार कुन्ट वहीर कराए ना किसे वक्त संभालणा। एका शब्द तीर चलाए, हाहाकार जगत करावणा। आत्म धीर सर्ब गंवाए, जीव जन्त सर्ब भुलावणा। फेर किसे हत्थ ना आए, साचा वेला गया वक्त हत्थ ना आवना। बालां छुट्टे माता सीर, भैणां तांईं ना भाईआं संभालणा। ना कोई कट्टे गलों जंजीर, माया धन्न ना किसे छुडावणा। चारों कुन्ट भज्जे फिरन फ़कीर, ना कोई होए सहाई दस्तगीर, प्रभ साचे लेख लिखावणा। जोती जोत सरूप निरँजण कलिजुग अन्तिम जाए मुक्क वेला नेड़े आवणा। वेला नेड़े आया ढुक्क। शब्द लिखाए चौथे जुग। तेरा दाणा पाणी विच मात गया मुक्क। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप आप कराए अन्त, बेमुखां मुख पाए थुक्क। कलिजुग तेरा अन्त कराए। गुरसिख सोया सन्त जगाए। जीव जन्त दे विच वड्याए। सतिजुग साची बणत बणाए। साचे कन्त मेल मिलाए। नाम रंगत इक्क चढ़ाए। साचा मंगत इक्क दर विरला विच मात दे आए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा

आपे जाणे आपे जाए जणाए। साचा दर इक्क खुलावणा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। मस्तूआणा धाम उपजावणा। जोत सरूपी दीप जगावणा। प्रभ अबिनाशी कर्म कमावणा। राणा संगरूर हरि दरस दिखावणा। तुट्टे गरूर हरि चरनी लावणा। शब्द हज़ूर घर साचे पावणा। जो जाणो दूर, वेला नेड़े आवणा। एका शब्द उपजावे साची तूर, आत्म साचा रंग रंगावणा। सर्ब कला हरि साचा भरपूर, गुरमुख भरपूर करावणा। वाली दो जहान, राणा संगरूर आपणी सरनी लगावणा। मस्तूआणा धाम उपजाए। राणा संगरूर संग रलाए। राणे राजे सरन लगाए। गुरमुख साचे सन्त बणाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे मस्तूआणे जाए। मस्तूआणा साचा धाम सुहावणा। राउ रंक सरन लगावणा। साचा डंक इक्क वजावणा। एका राजा एका राणा एका शाह एका सुल्ताना एका एक आप अख्वावणा। एका पहने जोत सरूपी बाणा, निहकलंक नाम धरावणा। साचा मेल भगत भगवाना। जोत सरूपी पहरे बाणा। सोहँ शब्द निशाना। गुरमुख साचे विंन्ने काना। गुरमुखां साचा नाम देवे दाना। मंगण जो दर साचे आणा। चार कुन्ट चार चुफेर हरि साचे घेर मस्तूआणे आपे लाणा। चार वरन इक्क दर। चार वरन इक्क सर। चार वरन इक्क घर। चार वरन गुर चरन लाग तरन। चार वरन गुर गोबिन्द देवे बचन हरि साचा देवे कर। चार वरन गुरमुख साचे सन्त, जन प्रभ अबिनाशी लैण वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप
१६९ निरँजण साची जोत देवे विच मात धर। साचे धाम मिले वड्याई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। राउ उमराउ वड शाहन १६९
०३ शाहो सरन लग जाई। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो, आपणा भेव दए खुलाई। जोती जोत सरूप हरि, साची बणत बणा, ०३
प्रभ दी महिंमा अगणत गणी ना जाई। कोई पावे भेव गुरमुख विरला सन्त, जिस हरि साचे बूझ बुझाई। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, जुगो जुग सद सदा विच मात दे आई। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ साचे अचरज खेल रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कलि आप वरताई। मस्तूआणा धाम सुहाए। राणा संगरूर संग रलाए। एका माण एका शान एका नाम दान प्रभ झोली पाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणे जाए चरन उठाए। आपणा चरन आप उठावणा। जमन किनारे डेरा लावणा। आपणा भेव आप खुलावणा। प्रगट होए जोत सरूप, आपणा भाणा आपणा बाणा आप उलटावणा। बिन रंग रूप प्रभ वड शाहो भूप किसे दिस ना आवणा। जोत सरूपी जोत हरि, जोती जोत खेल खलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाए, क्या कोई आखे क्या कोई जाणे, प्रभ आपणा भेव आप खुलावणा। प्रभ अबिनाशी करन प्रीख्या। ना जानण साचा भेख्या। बिन रंग रूपी, किसे ना देख्या। जोत सरूपी हरि एका रंग वसेख्या। साची मारे शब्द कटार आप चुकाउणा सारा लेख्या। जिस आत्म ब्रह्म विचार है, ना हउ जाणे वेखण वेख्या। साचा वक्त

रिहा विचार है, जिस वेले मेटे भरम भुलेख्या। अचरज रंग हरि करतार है, ना दिखावे दूजे तीजे नेतया। वेखे विगसे करे विचार है, एका आप अलख अलेख्या। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरले नेत्र पेख्या। ना एह गूंगा ना कवीशर। ना कोई तपिया ना तपीशर। ना एह जोगी ना जुगीशर। साचा प्रभ सर्ब पतिपरमेश्वर। जोत सरूप इक्क जगदीशर। जोत सरूपी जोत हरि, आपणा बिरद रखीशर। साचा करो इक्क ध्याना। करता पुरख पूरन भगवाना। मिटे हिरस चुक्के दिल की काना। हरि साचा अमृत मेघ रिहा बरस आत्म देवे नाम निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख करे बिधनाना। साची कविता जो जन जाणे। पूरन सिँघ ना वखाणे। ना उह पढ़या ना विद्वाने। ना उह ज्ञानी ना ध्याने। ना उह बाणी सके वखाणे। जप तप कोई नेम ना जाणे। इक्क विहार जगत कराणे। जोती जोत सरूप हरि, खेल करे महाने। अचरज खेल आप कराए, आपणा शब्द आप लिखाए, इक्क शब्द सच धार चलाए, आपणे रंग आप कराए, समें समें हरि पहरे बाणे। वक्त विचार भरम भुलेखे दूर कराने। साचा शब्द इक्क अस्वार, आपे घोड़े दौड़ दुड़ाने। प्रभ अबिनाशी जोत हरि, वेखे करे खेल महाने। खेल खिलावणा , जगत दिखावणा, शब्द चलावणा, सर्ब वरतावणा। घर घर दर दर जा प्रभ अबिनाशी आपणा खेल रचावणा। जोती जोत सरूप हरि, क्या कोई करे करावणा। इक्क विचार आत्म विचारी। वेखो अज़मत

१७० ०३ सारे भारी। क्या कोई करे खेल खिडारी। वेखे विगसे करे विचारी। प्रभ अबिनाशी साची कारी। आपे जाणे आपणी भारी। १७० ०३

जन भगतां हरि पैज सवारी। जोती जोत सरूप हरि, नरायण नर अवतारी। वेला अखीर जगत आवणा। साचा वक्त आप सुहावणा। प्रगट होए भरम चुकावणा। कच्चा वढु फेर पछतावणा। वेला अन्त ना एथे कुछ है जावणा। इक्क प्रभ साचे संग रल जावणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल रचावणा। साची परख करो गुर पूरे। एका मंगो शब्द हज़ूरे। आस मनसा हरि साचा पूरे। आत्म उपजे साची तूरे। देवे दरस प्रभ सदा हज़ूरे। जोती जोत सरूप हरि, दर आत्म वसे ना जाणो दूरे। प्रभ दर मंगे साची मंग। नाम रंगण विच जाए रंग। झूठी इच्छया होवे भंग। झूठा दिसे जगत कुसंग। जोती जोत सरूप हरि, आपे रहे आपणे रंग। इक्क दुआरा साचा मंगणा। साचा नाम हरि चाढ़े रंगणा। शब्द पहनाए आत्म साचा कंगणा। कहर करन दा ना साचा वेला साचे दर कदे ना मंगणा। वक्त विचारी सभे कट्टे वेदना। जोती जोत सरूप हरि, सद सद सदा बख्शिंदना। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे रोग गंवाए। सतिगुर पूरा जाणीए, चिन्ता सोग मिटाए। सतिगुर पूरा जाणीए, किल विख पाप गंवाए। सतिगुर पूरा जाणीए, दुरमति मैल धवाए। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमति दे सिख समझाए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म तत्त इक्क रखाए। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा जत्त धीर धिराए। सतिगुर पूरा

जाणीए, आत्म साचे वत, साचा बीज बिजाए। सतिगुर पूरा जाणीए, चरन प्रीती देवे साचा तत्त, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। सतिगुर पूरा जाणीए आपे दे समझाए मति, जन्म मरन दा गेड़ चुकाए। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा देवे शब्द ज्ञान आत्म धीर धराए। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे शब्द ज्ञान सच निशान, दर घर साचा पाईए। एका बख्शे चरन ध्यान, आत्म होए सर्ब ज्ञानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा बख्शे चरन धूढ़ इशनान, आत्म जगे जोत महानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, घर में घर वखाए एका घर स्याणीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म दर दए खुल्हाए, जिथ्थे वसे हरि भगवानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म सर सच नहावे कराए फड़ इशनानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तकाल बाहों फड़ कर किरपा पार लँघानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, दर घर साचे हरि साचा माण दवानीए। सतिगुर पूरा जाणीए गुरमुखां देवे साचा वर नाउँ सच जगत निशानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, नौ निधां वस करानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म बिधा तीर चलानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, कारज सिद्धां सभ करानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, तन मन विधा एका कानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, साची देवे जगत निशानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, नाम निधान देवे जगत महानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, बूझ बुझाए खाणी बाणीए। सतिगुर पूरा जाणीए, लक्ख चुरासी गेड़ कटानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, बन्द ख़लासी आप करानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, जम की फाँसी आप कटानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, धर्म राए ना दए सजाए आपणे रंग रंगानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, थिर घर वासी थिर घर निवास रखाए सच सुच्च पछानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम अन्त विच जोती जोत मिलानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे सति सन्तोख। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम देवे साची मोख। सतिगुर पूरा जाणीए, कट्टे तन दुःख रोग। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म रस भोगे साचा भोग। सतिगुर पूरा जाणीए, एका शब्द देवे साचा जोग। सतिगुर पूरा जाणीए, प्रगट होवे देवे दरस अमोघ। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिक्खां चुगाए साचा शब्द साची चोग। सतिगुर पूरा जाणीए, ना होए कदे विजोग। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिख निभाए सच संजोग। सतिगुर पूरा जाणीए, एका रंग रंगाए कट्टे हउमे रोग। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे धीर ध्याना। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म जगाए जोत महाना। सतिगुर पूरा जाणीए, मेल मिलाए हरि भगवाना। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा देवे नाम निशाना। सतिगुर पूरा जाणीए काम क्रोध हँकार जिस वस कराना। सतिगुर पूरा जाणीए, सच सुच्च दी बूझ बुझाणा। सतिगुर पूरा जाणीए, जोत सरूपी साचा मेल मिलाणा। सतिगुर पूरा जाणीए, जन दया धारे। सतिगुर पूरा जाणीए ,हरि देवे दरस अपारे। सतिगुर पूरा जाणीए, एके रंग रंगे करतारे। सतिगुर पूरा जाणीए, माया बंधन सर्ब निवारे। सतिगुर पूरा जाणीए, आप मिटाए अन्ध अंध्यारे। सतिगुर

पूरा जाणीए, साची जोत जगाए शब्द अधारे। सतिगुर पूरा जाणीए, जगाए जोत अगम्म अपारे। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क उपजाए साची धुन सची धुन्कारे। सतिगुर पूरा जाणीए, मुन सुन आप खुल्हारे। सतिगुर पूरा जाणीए आत्म तोड़े जिंदा हत्थ फड़ शब्द वदानीए। सतिगुर पूरा जाणीए , आपणे रंग रंगाए तोड़े सर्ब अभिमानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म जोत रखाए कोटन भानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, आवण जावण गेड़ मुकानीए। सतिगुर पूरा जाणीए काया कोट गढ़ हँकार तुड़ानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे रोग नष्ट करानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, एका शब्द साची धार वखानीए। सतिगुर साचा जाणीए, इक्क कराए साची कार धीर धरानीए। सतिगुर साचा जाणीए, आप दिसाए सच विहार साचा नाउँ रसन वखानीए। सतिगुर साचा जाणीए आत्म जोती करे उज्जयार बिन तेल बाती आप जगानीए। सतिगुर साचा जाणीए, कट्टे हउमे रोग ना फेर पछतानीए। सतिगुर साचा जाणीए ना विछड़े होए विजोग तोड़ निभानीए। सतिगुर साचा जाणीए, शब्द चढ़ाए घोड़ सचखण्ड राह दिसानीए। सतिगुर साचा जाणीए, ना बचन बोले कौड़ सांतक सांतक सति वरतानीए। सतिगुर साचा जाणीए, विछड़यां देवे जोड़, साचा जोड़ जुड़ानीए। सतिगुर साचा जाणीए, काया माया कट्टे कोढ़, एका रंग रंगानीए। सतिगुर साचा जाणीए ना होए कदे विछोड़, घर साचे दर स्यानीए। सतिगुर साचा जाणीए जोत सरूपी जोत हरि अन्त जोती जोत मिलानीए। सतिगुर साचा जाणीए, होए शब्द अधारी। सतिगुर साचा जाणीए, आत्म लाए शब्द कटारी। सतिगुर साचा जाणीए आत्म जोत करे उज्जयारी। सतिगुर साचा जाणीए, करे प्रकाश काया महल्ल मुनारी। सतिगुर साचा जाणीए, अज्ञान अन्धेर जाए विनास, मिटी धुंदकारी। सतिगुर साचा जाणीए, सच घर घर साचे रक्खे वास, एका दिसे आप मुरारी। सतिगुर साचा जाणीए आप बणाए गुरसिख तेरी रास दस्म दुआर खुल्हानीए। सतिगुर साचा जाणीए, एका देवे नाम अधार, जगत सुधार, सच विहार, एका कार करानीए। सतिगुर साचा जाणीए, कर किरपा देवे तार, साचा देवे शब्द अधार, आपे बख्शे बख्शणहार, एथे ओथे होए सहार, साचा लेखा आप लिखानीए। सतिगुर साचा माणीए दरगाह साची देवे माण, गुरसिख साचे कर पछाण, मुकाए आवण जावण साचा रंग हरि रंगाण, एका रंग रंगे भगवानीए। सतिगुर साचा जाणीए, जोत सरूपी जोत हरि अन्तिम जोती जोत मिलानीए। सतिगुर पूरा जाणीए जगत का दाता। सतिगुर पूरा जाणीए, पूरन होए ज्ञाता। सतिगुर साचा जाणीए, आत्म खोजे खोज खुजाता। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा बीज आप बिजाता। सतिगुर पूरा जाणीए, तन मन मैल सर्ब गंवाता। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुखां आत्म रीझ कराता। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुखां आत्म दर्द मिटाता। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म साची धीर धराता। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत आत्म साचा सीर पिलाता। सतिगुर पूरा जाणीए,

१७२
०३

जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोती मेल मिलाता। सतिगुर साचा जाणीए, जगत पित। सतिगुर साचा जाणीए दिवस रैण गुरमुख तेरे विच रक्खे साचा हित्त। सतिगुर साचा जाणीए प्रभ अबिनाशी साचा मित। सतिगुर साचा जाणीए, मात जोत प्रगटाए जुगो जुग भेख धारीए। सतिगुर साचा जाणीए, आपे लिखाए लेख, किसे दिस ना आए आपणी खेल करे करतारीए। सतिगुर साचा जाणीए, गुरमुख आत्म नेत्र पेख, मिटे हरस भगवानीए। सतिगुर पूरा जाणीए, जोत सरूपी हरि अन्तिम जोती जोत मिलानीए। सतिगुर साचा जाणीए, सर्ब गुणवन्ता। सतिगुर साचा जाणीए, रविआ विच सर्ब जीव जन्ता। सतिगुर पूरा जाणीए, करे मिलावे साचे कन्ता। सतिगुर पूरा जाणीए, आप बणाए गुरसिख साची बणता। सतिगुर पूरा जाणीए एका धाम सद रहंता। सतिगुर पूरा जाणीए, साची जोत हरि भगवन्ता। सतिगुर पूरा जाणीए एका नाम रंग रंगत। सतिगुर पूरा जाणीए, दूजा दर ना कोई मंगत। सतिगुर पूरा जाणीए, मानस जन्म ना होए भंगत। सतिगुर पूरा जाणीए, आप बणाए साची संगत। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि आप चढ़ाए साची रंगत। सतिगुर साचा जाणीए जिस दया धारी। सतिगुर साचा जाणीए जिस पैज सवारी। सतिगुर साचा जाणीए मात गर्भ करे रख्वारी। सतिगुर साचा जाणीए अन्धघोर लए उभारी। सतिगुर साचा जाणीए साची देवे नाम उडारी। सतिगुर पूरा जाणीए, दसवें दर खेले

१७३ ०३ खेल खिलारी। सतिगुर पूरा जाणीए, दर घर साचे करे सच सिक्दारी। सतिगुर पूरा जाणीए सृष्ट सबाई होए जिस पनिहारी। १७३ ०३

सतिगुर पूरा जाणीए, देवे दरस अपर अपारी, होए सहाई अन्तिम वारी, गुर पूरे सद सद निमस्कारी। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरमुख साचे चरन सरन बलिहारी। सतिगुर पूरा जाणीए, साची देवे नाम ख़ुमारी। सतिगुर पूरा जाणीए, राउ रंकां एका देवे जोत अकारी। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म मिटाए संग भाण्डा भरम भउ दए निवारी। सतिगुर साचा जाणीए, जोत सरूपी आत्म लाए तनक, खिच ल्याए चरन द्वारी। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे वड्याई जिउँ राजा जनक, एका देवे शब्द अधारी। सतिगुर साचा जाणीए, मानस जन्म जाए सवारी। जोत सरूपी जोत हरि आपणी खेल खलारी। सतिगुर पूरा जाणीए, सोभा गुण। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क उपजावे शब्द धुन। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे नाम गुन। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम पार कराए कलिजुग माया विच्चों चुण। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, कवण जाणे हरि तेरे गुण। सतिगुर पूरा जाणीए, सहज सुखदानी। सतिगुर साचा जाणीए हरि हिरदे सच वखानी। सतिगुर साचा जाणीए, साची देवे नाम शब्द जगत निशानी। जोती जोत सरूप हरि गुरमुखां विच मात कलिजुग अन्तिम अन्त करे आप वड वड मेहरबानी। गुर संगत मन वधाईआ। साचा रंग हरि रंगाया। अचरज खेल आप रचाईआ। वाह वाह तेरी बेपरवाहिया। मन मते गुर रते एका थां

बहाईआ। कोई ठंडे कोई तत्ते, साची हाण्डी आप चढ़ाईआ। गुरमुख विरला आत्म बीजे वते, हरि सोहँ साचा बीज बिजाईआ। हरि साचा लेखे साचे घते, जो चरन कँवल बिगसाईआ। आत्म देवे साची मते, चरन प्रीती जिस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि आपणे भाणे विच रहाईआ। साची खेल करी कराई। राहों कुराह दर बेमुख चलाई। इक्क गुरमुख तेरी वड्याई। दे मति मितां समझाई। झूठा भेड़ भिड़े क्यों भाई। औखा गेड़ा चुरासी गिड़ा ना राई। अन्तिम हार आई पिड़े गए पिढ्ढ दिखाई। थान निथाविआं बूझ कुझ ना आई। साचे भेख हरिनाम रिहा लुटाई। देवे हरि आप रघुराई। जोती जोत सरूप हरि, आपणे संग समाई। अचरज खेल हरि वरताए। गुरमुखां हरि माण दवाए। आत्म तृखा भुक्ख मिटाए। एका सुख घर साचे जाए उपजा के। उज्जल मुख आप करा के। बेमुखां जाए आत्म मार करा के। हाहाकार करन कुड़यार, बोलण बोल बोल बुला के। वेखे विचारे पावे सार, पार उतारे जो जन सरनी डिगे आ के। इक्क घर दो धड़ कराई। सच झूठ दी लड़े लड़ाई। ना उह पढ़या, गुरमुख एका पटी दे पढ़ाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच रहाई। गुरसिक्खां गुर सेव कमाई। बेमुखां हउमे रोग अग्न जलाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस प्रभ साचा सेवा लाई। गुरमुख गुरसिख प्रभ साचे रंग रंगाई। आत्म मंगण साची मंगत, नाम दान हरि भिच्छया पाई। साचे लेख कलि जाए लिख, विच मात मिले वड्याई। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग लए रंगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अचरज खेल आप वरताई।

✻ १३ जेठ २०१० बिक्रमी मास्टर सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड राम पुर ज़िला अमृतसर ✻

तन काया किल्ला कोट गढ़ अपार है। जिथ्थे वसे पांचो यार है। साचा लुट्टयां जीव घर बाहर है। लुट्टयां जाए सच्चा धन, ना बन्दे तैनूं कोई सार है। दिन दिहाड़े जायण लुट्टी, ना फड़े कोई सरकार है। गुरसिख साचे संत जनां शब्द डण्डे संग कुट्टयां, दर साचे जायण भाग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा रंग इक्क करतार है। पंज तत्त होयण सति, हउमे हँकार निवार है। मति मन बुद्धि विच रक्खी अपर अपार है। गुरमुख विरले किसे विचार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म कर्म रिहा विचार है। आत्म मती आप रखावंदा। मन मति हो कर्म करावंदा। बुद्धी बुध बबेक हरि रखावंदा। जो राखे टेक एक, हरि साचा माण रखावंदा। जन भगत उधारे अनेक, जुगो जुग जामा विच मात दे पांवदा। कलिजुग माया अग्न ना लागे सेक, शब्द झोली हरि तन पहनावंदा। जोत सरूपी धारे भेख, भेखा भरम भुलेखे जगत भुलावंदा। गुरमुख साचे तेरी आत्म वेख, कलि सोया आप जगावंदा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, साचे लेख

फेर लिखावंदा। ना कोई जाणे पीर फ़कीर शेख़, हरि बेड़ा आप रुढ़ावंदा। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, अन्त ना कोई पावंदा। गुरमुख साचे सन्त जन, हरि आपणी सरन लगावंदा। देवे साचा नाम हरि, हरि हिरदे वस समावंदा। साचा शब्द सुणाए कन्न, हरि आत्म नित धरावे मन, जिन्हां तुट्ठे बूझ बुझावंदा। गुरमुख साचे कलिजुग चुण प्रभ आत्म जोती दीप जगावंदा। इक्क लगाए शब्द धुन, दिवस रैण एका रंग रंगावंदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच रहावंदा। गुरसिख तेरे नाम वड्याई। गुरमति हरि दर ते पाई। झूठा तन रहण ना पाई। तेरी काया आत्म वत सोहँ बीज बिजाई। आपे रक्खे तेरी पत्ति, शब्द धीरज देवे जत्ति, एका शब्द लिखाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां दे समझाई। सच शब्द हरि धीर ध्याना। गुर चरन धूढ़ साचा इशनाना। कलिजुग मूढ़ होए चतुर सुजाना। एका रंग चढ़ाए गूढ़, हरि एका रंग रंगाना। जोत सरूपी पाए जूड़, जोती जोत सरूप हरि, एका रंग हरि रंगाए सच्चा भगवाना। सुरत शब्द हरि मेल मिलाए। गुरमुख साचे आप जगाए। आप आपणे मार्ग पाए। सोहँ साचा राग सुणाए। आत्म साची जाग लगाए। दुरमति मैल धो सच वस्त हरि आप रखाए। साचे गुरमुख तेरी पकड़े वाग, आप आपणे संग रखाए। कलिजुग माया डसणी नाग, तेरे अन्तिम नेड़ ना आए। आप बणाए हँस काग, सोहँ साची जोत जगाए। अन्तिम अन्त कलि आ गया, झूठे दिसण भैण
१७५ ०३ भ्राए। प्रभ मात जोत प्रगटा ल्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए। गुरसिख साचा वड वड भागा। १७५ ०३
कलिजुग अन्धेरी रैण विरला कोई जागा। साध संगत विच रल के बहिण प्रभ अबिनाशी सरनी लागा। दर्शन पेखे तीजे नैण, आत्म धोए दागा। बेमुख जीव झूठे वहिण वहण, हँसों बणे कागा। गुरमुख साचे प्रभ दर लहणा लैण, मात होए वड वड भागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे धोए पापां दागा। आत्म दाग हरि दए धोए। साचे धागे लए परोए। साचा शब्द इक्क अनरागे प्रभ आत्म दए वसोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे आत्म दर दुआरे सदा खलोए। आत्म दर सच द्वारया। प्रभ अबिनाशी वेख खेल अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग रंगे करतारया। साचा लेखा रिहा लिख, गुप्तचित्र संग रला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म लेखे सभ मुका रिहा। आत्म वेख करो विचारो। प्रभ अबिनाशी पावो सारो। आप खुल्हाए आत्म दर द्वारो। एका जोत करे अकारो। देवे दरस हरि हरि निरँकारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए दस्म दुआरो। सच द्वार आप खुल्हाए। गुरमुख साचे लए जगाए। आत्म जोती दए जगाए। एका गोती दे वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग रंगाए। आपणे रंग रंगे करतारा। गुरमुख साचा पावे सारा। साचा देवे नाम अधारा। नाम निधान हरिभगत भण्डारा। आपे होए हरि वरतारा। मंगण खड़े कोट दुआरा।

रहण भरे सद भण्डारा, सृष्ट सबाई इक्क दुआरा। चार वरन एका सरन, बरन वरन सभ मेट मिटारा। एका सरन नर अवतारा। डरन मरन हरि भरम निवारा। जन्म कर्म हरि दोए सवारा। पूरन ब्रह्म हरि विचारा। आप बंधाए साची धारा। सतिजुग तेरा राह अपारा। सोहँ चले शब्द अपारा। चार कुन्ट सच्ची कारा। सृष्ट सबाई एका रंग रंगे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा करे वरतारा। सृष्ट सबाई एका रंग। सतिजुग मंगी साची मंग। होए सहाई सदा अंग संग। आप कटाए सर्ब भुक्ख नंग। हत्थ ना होवे किसे तंग। कोई दर दर ना रिहा मंग। आत्म तन आप पहनाए सोहँ साची वंग। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग चाढ़े साचा रंग। सोहँ साचा रंग रंगावणा। एका नाम निधान, प्रभ साचे झोली पावणा। गुणवन्त गुण निधान, आपणा कर्म कमावणा। एका पहनण खाण, एका अंग रखावणा। ऊँच नीच नीच ऊँच प्रभ साचा भेव खुल्हावणा। राउ रंक रंक राउ एका थां बहावणा। सोहँ साचा डंक प्रभ साचे आप वजावणा। गुरमुख आत्म द्वार बंक प्रभ साचे आप सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत आप जगावणा। आप चुकावे मोर तोर, दूई द्वैत पर्दा लाहवणा। कलिजुग मिटाए अन्ध घोर, सतिजुग साचा लावणा। बेमुख जीव ऐवें पायन शोर, वेला गया हत्थ ना आवणा। पंजे लुट्टी जायण चोर, हरि बिन किसे ना बाहर कढावणा। धर्म राए घर जाए ढोर, गल संगल घत चलावणा।
१७६ ०३ गुरमुख चरन प्रीती जोड़, प्रभ अन्तिम अन्त छुडावणा। आपणे हत्थ प्रभ साचा पकड़े तेरी डोर, शब्द सरूपी सच पतंग उडावणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग रंगावणा। गुरमुख साचा सच घर वास। एका वसे हरि पुरख अबिनाश। जोत सरूपी साची रास। दूजी वस्त ना होवे पास। जोत सरूपी जोत हरि सद सद बलि बलि जास। गुरमुख साचे सच घर वेख। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख। आप लिखाए साचे तेरे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचे वेख। लक्ख चुरासी आप उपाए। उत्तम मानस देह रखाए। विच मात दे जन्म दवाए। आप आपणा जामा पाए। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ साचा लए जगाए। एका शब्द कन्न साचा राग सुणाए। महिंमा अपर अपार, हरि भेव कोई ना पाए। कलिजुग अन्तिम अवतार नर, जोत सरूपी खेल रचाए। आपणा किया लैण भर, कर्म जो जन रहे कमाए। गुरमुखां खुल्हाए आत्म दर, साची बूझ बुझाए। आप नुहाए अमृत साचे सर, दूई द्वैती मैल गंवाए। आप दिखाए घर विच घर, जिथ्थे बैठा ताड़ी लाए। आप चुकाए झूठा डर, जोत सरूपी डगमगाए। एका रंग हरि देवे कर, अज्ञान अन्धेर मिटाए। कँवल नाभ उलटा देवे कर, अमृत फुहार आप रखाए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे दस्म दुआर दी बूझ बुझाए। दर घर साचा आप विचारना। जीउ पिण्ड भाण्डा काचा तोड़ ना किसे चाढ़ना। गुरमुख साचे हरि दर वाचा, साचा शब्द

देवे साची धारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म आप सवारना। मानस जन्म आप संवारे। लक्ख चुरासी गेड़ निवारे। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ साचा पार उतारे। एका देवे नाम धना, साचा माल विच संसारे। चोरां ठग्गां दुरजनां करे बन्द दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग खेल करे अपारे। गुरमुख राम रमईआ पावना। आप आपणा भरम चुकावणा। सच धर्म इक्क कर्म कमावणा। कलिजुग अन्तिम शब्द उखेड़ इक्क लगावणा। सृष्ट सबाई भेड़ भेड़ प्रभ साचे कलिजुग अन्त करावणा। अन्तिम अन्त कलिजुग प्रभ साचा दए नबेड़, विचोला हो ना किसे छुडावणा। आपे देवे एका गेड़, सृष्ट सबाई पीड़ पिड़ावणा। आप मिटाए जगत झेड़, हड्डी रीड़ आप तुड़ावणा। जोत सरूपी जोत हरि साचा मार्ग लावणा। कलिजुग तेरा तुट्टे माण। मातलोक ना दिसे तेरी शान। आप चुकाए तेरी काण। सोहँ शब्द मारे बाण। चार कुन्ट होए हैरान। उठण वड वड बली बलवान। आयण चल विच मैदान। इक्क दूजे दा करन निशान। किसे ना आवे आत्म ज्ञान। भरम भुलेखे सर्ब मिट मर जाण। आप आपणी कार कमावे, हरि साचा श्री भगवान। सृष्ट सबाई आप खपावे, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। क्या कोई बन्ने झूठे दाअवे, आपणा आप ना सके पछाण। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग मिटाए, सतिजुग साचा लाया आण। कलिजुग तेरा अन्त करा के। गुरमुख साचे सन्त जगा के। साचा नाम कन्त बणा के। सतिजुग तेरी आपे जावे बणत बणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा अगणत ना जाए कोई गिणा के। कलिजुग तेरा मिटे भेख। आप मिटाए तेरी झूठी रेख। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख। जोत सरूपी हरि धारे भेख। सभ मिटाए मुलां मुसायक शेख़। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं विच रिहा वेख। मुला मुलाणा कोई रहण ना पाणा। आप मिटाए अंजील कुराना। सोहँ चलाए साचा बाणा। चार कुन्ट वहीर कराणा। राजा राणा तख्तों लाहणा। एका निशाना तीर शब्द चलाणा। आत्म ध्याना हरि भगवाना सर्ब जीआं दी आपे जाणा। भुल्ल भुलेखे ना किसे भुलाणा। गुरमुख साचे लेख हरि आप लिखाणा। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी पहरे बाणा। कलिजुग अन्तिम जाए मुक्क। वेला अन्त ना सके रुक। दाणा पाणी सर्ब दा गया चुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, बेमुखां मुख पाए थुक्क। कलिजुग तेरी झूठी वाड़ी। प्रभ अबिनाशी साचा वढ्ढे इक्की हाढ़ी। आप चबाए आपणी दाढ़ीं। अग्न लगाए बहत्तर नाड़ी। लुकदे फिरन जीव झाड़ झाड़ी। पिच्छे कराए काड़ काड़ी। चोरां यारां ठग्गां किस्मत माढ़ी। वेला अन्तिम अन्त कलि आ गया आप बणाए मौत लाड़ी। मौत लाड़ी जगत प्रनावणा। धर्म राए दे दर ल्यावणा। बेमुखां हरि नष्ट करावणा। अठाई नर्क कुण्ड दे विच फिरावणा। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेख मात लिखावणा। कलिजुग तेरा लेख लिखाईआ। आप

डुबाए तेरी नईआ। साचे तोल हरि तुलईआ। जूठा झूठा दर अन्त सभ रवईआ। दर दर मंगण, साची भिक्ख कितों ना पईआ। ना कोई दिसे भैणां भईआ। नारीआं छड्डण साचा पिया। बाल अञ्याणे ना मिले सीआ । सुघड़ स्याणयां प्रभ साचा राह भुलईआ । दूई द्वैत आत्म रखाणयां, झूठे धन्दे आप लगईआ। सच शब्द ना किसे पछाणयां, आपणा मूल कलि आप गंवईआ। साची एह रीत जगत चलाणयां, प्रभ चार वरन इक्क करईआ। ना कोई दिसे राजा राणयां, राउ रंक इक्क थां बहईआ। बेमुख भुंनाए जिउँ भठयाले दाणयां, बेमुख ना कोए छुडईआ। सर्ब जीआं दी आपे जाणयां, ना कोई भरम भुलेखा रहिया। गुरमुख साचे आत्म रंग साचा माणयां, जिस प्रभ साचे रंग रंगईआ। प्रभ अबिनाशी साचा जाणयां, आत्म जिंदा आप तुड़ईआ। होए मेल भगत भगवानयां, आपे साची जोत जगईआ। एका तीर चले वज्जे सच निशाना, बज़र कपाटी चीर चिरानयां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, विच मात जोत रखईआ। कलिजुग तेरा कर्म विचारया। वेले अन्त क्यों आपणा मूल गवा रिहा। सृष्ट सबाई आप भुलाई गुरमुख साचे सन्त शब्द सरूपी हरि मेल मिला रिहा। आप बणाए साची बणत, आत्म दीपक जोत जगा रिहा। इक्क लगाए आपणी तनक, कलिजुग सोया आप उठा रिहा। आप फिराए मन का मणक, गुरमुख साचे आप जगा रिहा। भगत उधारे जिउँ राजा जनक, दरगाह साची

१७८ ०३ माण दवा रिहा। आवे जावे जुगो जुग बार अनक, आपणे भाणे विच समा रिहा। कलिजुग अन्तिम अन्त चौथा जुग अन्त १७८ ०३

करा रिहा। कलिजुग अन्त होए भस्मंत प्रभ कन्त औध मुका रिहा। गुरमुखां गुरसिक्खां मिलावा हरि साचे कन्त, हरि आत्म साची बूझ बुझा रिहा। क्या कोई करे जीव जन्त, जिस प्रभ साचा पर्दा पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच समा रिहा। कलिजुग तेरी विगड़ी रास। अन्तिम अन्तकाल सच वस्त ना होवे किसे पास। दिवस रैण रैण दिवस खांदे फिरदे मदिरा मास। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि प्रभ रक्खे वास। देवे आत्म जोत सच धन्ना, आत्म जोत करे प्रकाश। निर्मल करे हरि तना, जिस जन हरि रक्खे वास। साचा शब्द धन धना, देवे पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म सर्ब घट वास। पुरख अबिनाशिआ वेख तमाशया। कलिजुग विनास्सया मातलोक विच्चों नास्सया। अन्तिम अन्त आया हार पास्सया। ना देवे कोई धीर धरास्सया। अन्तिम अन्तकाल ना करे कोई बन्द खुलास्सया। जोती जोत सरूप हरि कलि साचा खेल वरतास्सया। कलिजुग तेरी आत्म अन्ध। अंदर होई पापां कंध। दुखी होया बन्द बन्द। आत्म कोए ना तोड़े जंद। आप गंवाया परमानंद। मदिरा मास मुख रखाया, आप तजाया निजानंद। जोती जोत सरूप हरि गुरमुखां आण तराए, जोत सरूपी दरस दिखाए, आत्म चिन्ता सोग मिटाए, सोहँ साचा जोग दवाए पूरन भगवन्त। पूरन भगवन्त

सच कर मानणा। कलिजुग अन्तिम प्रभ साचे छानणा। किसे ना मिले थानणा। एका मार शब्द बानणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंगे रंग भगवानणा। भिन्नड़ी रैण वड वड राणीए। प्रभ साचा देवे माण वड वडाणीए। गुरमुख बाहों पकड़ आपणे लड़ लाणीए। आपे साचे लाड लडाए जिउँ माता बाल अञ्याणीए। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग सद रंगाणीए। गुरमुख साचा साचे रंग रंगावणा। प्रभ अबिनाशी आपणा भेव खुल्हावणा। जोती जोत सरूप हरि, आत्म दीपक जोत जगावणा। आत्म सति करे बुध बबेक करावणा। आत्म सोया आप जगाया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगावणा। आपणे रंग आप रंगाए। गुरमुख साचे संग निभाए। अंग संग आप हो जाए। वेले अन्त होए सहाई, जोत सरूपी मेल हरि जोत सरूपी मेल मिलाए। जोत सरूपी मिल्या हरि सच है। सृष्ट सबाई दिसे भाण्डा कच्च है। बेमुख जीव झूठे रहे नच्च है। गुरमुख विरले सन्त जनां पल्ले नाम सच है। कलिजुग जीव अन्तकाल कलि माया अग्न तृष्ना विच रहे मच्च है। गुरमुख विरले सन्त जनां प्रभ अबिनाशी हिरदे रिहा रच है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए सच्चो सच है। सचो सच सच लिखावणा। कच्चो कच्च कच्च नष्ट करावणा। गुरमुख साचे हिरदे रच बूझ बुझावणा। जो जन रहे अन्तिम बच, स्वच्छ सरूपी दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच विच जगत धरावणा। सच सुच्च हरि
१७६ ०३ करे वरतारा। आप खुल्हाए मात भण्डारा। आपे बणे हरि वरतार, सृष्ट सबाई बणे भिखारा। चार वरन इक्क घर बाहरा। १७६ ०३
सोहँ देवे नाम अधारा। आप वसाए साचे थाउँ, चरन प्रीती मोख दुआरा। चरन प्रीती साची रीत, मेल मिलावा कन्त प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम अधारा। साचा शब्द अधार विच वरभण्ड है। गुरमुखां देवे साचा नाम उतरे पार, प्रभ अबिनाशी देवे वंड है। वेले अन्तकाल कलिजुग गुरमुखां ना देवे कंड है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आत्म कीनी रंड है। सृष्ट सबाई आत्म रंडी। जीव जन्त सभ होए घमंडी। दर दर घर घर साधू फिरन पाखण्डी। कोए ना दिसे साची कन्ढी। झूठीआं पावण मात वंडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, आपणा भाणा हरि वरताए, सृष्ट सबाई होई रंडी। कलिजुग अन्तिम अन्त करावणा। कलिजुग झूठा भेख मिटावणा। मिले सुहाग ना किसे हंढावणा। हाहाकार जगत करावणा। चार यारां वक्त चुकावणा। अहिमद मुहम्मद रहण ना पावणा। ईसा मूसा संग रलावणा। काला सूसा तन पहनावणा। कलिजुग अन्तिम बन्न्ह अग्गे लावणा। जूठा झूठा माया लूठा प्रभ नष्ट करावणा। कलिजुग तेरे अन्तिम भाग विच मात रहण ना पावणा। आप मिटाए तेरी अन्धेरी रात, सोहँ साचा दीप जगावणा। गुरमुखां पुच्छे आपे वात, सतिजुग साचा मार्ग लावणा। आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी विच्चों पावणा। आपे पुच्छे

१८०
०३

तेरी वात, दिवस रैण रैण दिवस रसना गावणा। चरन प्रीती बख्शे साचा नात, मदिरा मास रसन ना लावणा। आप पढ़ाए इक्क जमात, चार वरन हरि जोत जगावणा। सतिजुग साची करे वंड साचा मार्ग लावणा। आपे बैठे विच इकांत, साचा लेखा आप करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह आप चलावणा। कलिजुग तेरी होए वंड। नौ खण्ड प्रभ कीनी चण्ड। चार कुन्ट चण्डी चमके वड चण्ड प्रचण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तोड़े सर्ब घमंड। चार कुन्ट चण्डी चमकावणी। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात मिटावणी। प्रभ अबिनाशी जोत जगाववी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए रसना खिच तीर कमानी। रसना तीर शब्द चलाया। चार कुन्ट वहीर कराया। पीर फकीर सर्ब उठाया। दस्तगीर ना होए कोए सहाया। कलिजुग अन्तिम कोए ना कट्टे तेरी भीड़, ना कोई धीर धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त अखीर कराया। अन्तिम अन्त होए अखीर। मातलोक हरि कट्टे जंज़ीर। कोई ना देवे धीर। कर्मां धर्मां होई अखीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लाए तीर। तीर निशाना जाए लग्ग। घर घर लग्गी दिसे अग्ग। सृष्ट सबाई जाए दग। आप मिटाए झूठा जग। गुरमुख साचे आप जगाए, आप बणाए, आप आपणी सरन लगाए, सोहँ साचा शब्द पहनाए तग। अन्तिम अन्त होए सहाए, हरि साचा अग्गे जाए लग्ग। आप बहाए साची थांए, जिथ्थे कोए ना सके लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग। गुरमति गुर दर पावणी। आत्म तृखा सर्ब बुझावणी। कलिजुग माया झूठा लेखा प्रभ दर तों मगरों लाहवणी। उज्जल होए मुख साची रुत्ता आप सुहावणी। सुफल करावे मात कुक्खा, प्रभ अबिनाशी चरनी सीस झुकावणी। आप मिटाए आत्म सोग दुक्खां, सोहँ दात झोली पावणी। तन रहे ना झूठी भुक्खा, प्रभ साची धीर धरावणी। आप उपजाए साचा सुक्खा, प्रभ आत्म शांत करावणी। उलटा मात गर्भ ना होए रुक्खा, प्रभ लक्ख चुरासी आप कटावणी। कलिजुग जीव ना होणा रुक्खा, प्रभ अमृत साचा मेघ वरसावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आसा मनसा पूर कराए भावनी। गुरमुख हरि प्रभ जानणा। प्रभ अबिनाशी मात पछानणा। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानणा। सोहँ देवे शब्द निशानणा। आत्म जोती देवे चानणा। काया सोती आप उठावणा। दुरमति मैल धोती भिन्नड़ी रैण जिस जन प्रभ अबिनाशी रसना गावणा। आप बणाए गुरसिख साचे मोती, प्रभ आपणे कंठ लटकावणा। आदि जुगादी एका जोती, जोत सरूप जामा विच मात दे पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार लँघावणा। गुरमति गुर दरबारे। प्रभ अबिनाशी शब्द लिखारे। गुरमुख विरला कलि विचारे। जिस प्रभ देवे किरपा धारे। आप रंगाए काया तन मुनारे। एका शब्द धुन सच्ची धुन्कारे। आप खुल्हाए आत्म सुन्न, प्रभ

१८०
०३

अबिनाशी काया महल्ल मुनारे। गुरमुख साचे कलिजुग चुण, प्रभ अबिनाशी खुल्हाए दस्म दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत करे चमत्कारे। एका जोत करे चमत्कारा। एका शब्द एका धारा। एका नाम इक्क मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पाए आपणी सारा। गुरमति गुर साची दीनी। गुरमुख साचे सदा हरि आप आपणे जिही कीनी। इक्क रंगत नाम चढ़ा ल्या सोहँ रसना भीन्नी। गुर संगत मेल मिला ल्या। आप आपणी दया कीनी। वेला वक्त सुहा ल्या फिर रैण ना आवे भीन्नी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची दात आप वरता रिहा। गुरमति गुर ज्ञान है। गुरमति प्रभ अबिनाशी चरन धूढ़ इशनान है। गुरमति देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान है। गुरमति आत्म जोत जगाए महान है। गुरमति संगत मेल मिलाण है। गुरमति दर साचा मंगत, एका शब्द मिले धन माल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे रक्खणी वस्त संभाल है। गुरमति प्रभ दर ते पाओ। प्रभ अबिनाशी रिदे वसाओ। सर्ब घट वासी दर्शन पाओ। एका जोत मात प्रकाशी, प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो। सृष्ट सबाई अन्त विनासी, आप मिटाए ऊँचे थाँउं। गुरमुख विरला कोई कोई रहि जासी, घर घर फिरन कांओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतासी, जोत सरूपी अगम्म अथाहो। गुरमति गुर चरन दुआरा। गुरमति गुर देवे नाम अधारा। गुरमति गुरमुख विरला पाए करे चरन निमस्कारा। गुरमति गुरमुख साचे आप दवाए सच शब्द साची धारा। हरि हिरदे विच्चों आप वजाए, आत्म जोती दीप जगाए अगम्म अपारा। अन्ध अन्धेर सर्ब मिटाए, संञ सवेर इक्क कराए, प्रभ अबिनाशी देर ना लाए जो जन करे चरन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार इक्क ओंकारा। देवणहार इक्क दातारी। वड संसारी वड भण्डारी। तीन लोक एक जोत करे अकारी। मातलोक आवे जावे वारो वारी। जुगो जुग प्रभ साचे दी अचरज खेल अपारी। कलिजुग चौथे युग प्रभ अबिनाशी आपणी कलि धारी। पंचम जेठ विच मात प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप बणाए चरन पनिहारी। सृष्ट सबाई चरन पनिहार। आपे बणे वड सिक्दार। सच कर्म सच धर्म दा कराए इक्क विहार। चार वरन इक्क ब्रह्म एका देवे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरतावे विच संसार। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा। प्रभ अबिनाशी लेख लिखाउणा। सच वस्त हरि झोली पाउणा। नाम वस्त हरि हत्थ फड़ाउणा। तन वस्तर गहणा शब्द पहनाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा राह चलाउणा। सतिजुग तेरी साची धारा। चार वरन आए इक्क दुआरा। एका सरन हरि करतारा। चुक्के मरन डरन, आप दवाए मोख दुआरा। आप खुल्हाए हरन फरन, आत्म जोत करे उज्जयारा। प्रभ अबिनाशी धरनी धरन करे विचारा। जो जन आए सरन, कर किरपा हरि पार

१८२ ०३

उतारा। आप चुकाए मरन डरन, लक्ख चुरासी गेड़ निवारा। बेमुख जीव दर तों डरन, ऐवें वेखण झूठा भेख भिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारा। नर अवतारया जामा धारया। पुरी घनक भाग लगा रिहा। पंचम जेठ जोत जगा रिहा। गुरमुखां आत्म चिन्ता सोग मिटा रिहा। आत्म सहिंसा हउमे सर्ब गवा रिहा। अमृत आत्म प्रभ साचा रक्ख, जोत सरूपी भोग लगा रिहा। गुरमुख कीने कलिजुग वक्ख, सच वस्त हरि नाम दवा रिहा। सृष्ट सबाई होए भक्ख, चार कुन्ट हरि अग्न लगा रिहा। घर घर सड़दे दिसण कक्ख, ना कोई किते बुझा रिहा। ना कोई किसे सके रक्ख, भाणा साचा हरि वरता रिहा। प्रभ अबिनाशी महिंमा अलक्खणा अलख, राजा राणा तख्तों ला रिहा। गुरमुख विरले प्रभ साचा लए रक्ख, सुघड़ स्याणे आप बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगा रिहा। आत्म जोत जगईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। चार वरन कराए भैणां भईआ। दूई द्वैत सर्ब मिटईआ। सोहँ चपू आप लगईआ। भव सागर तों पार करईआ। एका राह सच दसईआ। सतिजुग तेरा मार्ग लईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगईआ। सतिजुग चले साची नाए। गुरमुख विरले हरि आप चढ़ाए। कर किरपा पार लँघाए। मदिरा मास जो जन तजाए। आत्म जाए मन, प्रभ साची बूझ बुझाए। एका जोत जगाए तन, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाए। एका शब्द सुणाए कन्न, साची धुन उपजाए । गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न्ह, प्रभ अबिनाशी आपणे कंध उठाए । धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी होए आप सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अन्तिम अन्त जोती जोत मिलाए। आप आपणी जोत जगाए। वरन गोत सर्ब मिटाए। एका चोट शब्द लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रलाए। आप आपणे विच समईआ। जोत सरूपी खेल करईआ। वरते वरतावे जो विच संसारे, प्रभ साचा भेव खुल्लईआ। आपणा मूल ना जाणा हारे, साचा धन संग रखईआ। वेले अन्त ना आवे हार, मंझधार ना डोबे नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दे मति आप समझईआ। सच जोग शब्द ध्यान। अमृत रस आत्म भोग, रसना हरि वखाण। कदे ना होए जीव विजोग, प्रभ अबिनाशी सदा निशान। आपे कट्टे हउमे रोग, देवे दरस आप महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा पूरन पुरख प्रधान। पतिपरमेश्वर पूरन भगवाना। पारब्रह्म जोत महाना। एका साचा नाम सृष्ट सबाई आप चलाना। पूरन कराए काम वाली दो जहाना। राम रमईआ आप अख्वाए, जिउँ कृष्न काहना। महारज शेर सिँघ सतिजुग साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। सर्ब जीआं हरि साचा जाणता। वेला वक्त आप पछाणदा। सति सति सति वेला सति वरतांवदा। मति मति, मति दे आप समझांयदा। गति मितक मित गत सर्ब जीअ हरि आपे जाणदा। प्रभ अबिनाशी राखो

चित्त, मिटे झेड़ा आवण जाण दा। आप बणाओ साचा मित्त, हरि साचा आप पछाणदा। मानस जन्म कलि जाओ जित्त, ना आवे पासा हाणदा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, भण्डारा देवे शब्द निधान दा। शब्द निधान वड गुणवन्त। मेल मिलावा साचे कन्त। गुरमुख विरला प्रभ दर जाए दर घर आए रसना गाए साचा सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए गुरमुख साची बणत। गुरमुख साची बणत बणाए। महिंमा अगणत गणी ना जाए। आदि जुगादि एका रंग रंगाए। संध सन्त हरि साचा माण दवाए। आत्म धुन साचा नाद प्रभ अबिनाशी आप वजाए। शब्द लिखाए बोध अगाध भेव कोई ना पाए। बेमुखां आत्म जाए साध, सोहँ तीर चलाए। मात जोत धर हरि माधव माध, आपणा भाणा आपणा बाणा आप लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच समाए। आप आपणे विच समाना। जोत सरूपी पहरे बाणा। गुरमुख विरले कलि वखाना। सृष्ट सबाई भरम भुलेखे प्रभ अबिनाशी आप भुलाणा। आपे लाए गुरमुख साचे लेखे, प्रभ देवे साचा नाम निधाना। जो जन आए नेत्र पेखे, पाप कट्टे कोट कोटाना। जोत सरूपी धरे भेखे, अचरज खेल हरि खिलाना। कलिजुग झूठी रेखे, सतिजुग साची नींह रखाना। गुरमुख विरला अन्तिम अन्त वेखे, की वरते कलिजुग भाणा। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा इक्क दिसे शाह सुल्ताना। एका शाह इक्क सुल्तान। प्रभ अबिनाशी वाली दो जहान। सृष्ट सबाई
१८३ ०३ प्रभ साचे भेड़ भिड़ान। नगर खेड़े सर्ब मेट मिटान। झूठा झेड़ा सृष्ट मुकान। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा आप करान। १८३ ०३
एका गेड़ा आप दवान। भाईआं तांई भाई छड्ड जाण। माता सीर पुत्तर ना पाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट एक वहीर करान। चार कुन्ट एका धारी। आपे चीर करे दो फाड़ी। वड वड उठे रूसा लशकर भारी। ईस मूसा मुहम्मदी छुप जायण झाड़ी। जोती जोत सरूप हरि शब्द सरूपी खेल खलाड़ी। शब्द सरूपी खेल कराए। सृष्ट सबाई दो धड़ कराए। अंदर वड़ मति उपठी दे समझाए। ना कोई सके अग्गे अड़, कलिजुग जीव जायण झड़, राजा राणा ना कोई दिसाए। अंदरों कढ्ढण फड़ फड़, अंदर लुकया कोई रहण ना पाए। प्रभ अबिनाशी जो चरनी गए लग्ग, वेला अन्त लए छुडाए। जिस जन फड़या, वड़या साचे घरया, हरि की पौड़ी जाए चढ़। देवे दरस गुरमुख साचे तेरे दर दुआरे अग्गे खड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। आत्म वेख दर दुआरा। एका जोत हरि करतारा। दुरमति मैल धोत, काया लथ्थे सर्ब अफारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम अधारा। साचा नाम जगत गुर देवे। प्रभ अबिनाशी अलक्ख अभेवे। ना कोई जाणे देवी देवे। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिन्हां प्रभ अबिनाशी लाए आपणी सेवे। साचा नाम जाए मन, सोहँ मुख लगाए साचा मेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती आप निभाए

घाल पाए गुरसिख तेरी सेवे। चरन प्रीती चाढ़े तोड़। तुट्टी गंढे दर घर साचे देवे जोड़। वेला अन्तिम अन्तकाल प्रभ साचे दी साची लोड़। भाणा जाए ना टल, ना कोई सके मोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल वरताए शब्द सरूपी चढ़या घोड़। शब्द सरूपी पवण हुलारा। चार कुन्ट एका एक करे जैकारा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां लाए रंग साचा देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाए थान बंक, साची जोत करे अकारा। द्वार बंक आप सुहाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। रैण सबाई मंगल गाया। गुर संगत मन वधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत जगाया। गुर संगत मन वधाई। रैण सबाई ख़ुशी मनाई। हरि हरि साचा रसना गाई। जीउ पिण्ड काचा विच साची वस्त टिकाई। प्रभ अबिनाशी हिरदे वाचा, किल विख पाप गंवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाई। गुर संगत गुर दर परवान। आयां गयां लेखे देवे हरि भगवान। लहणा लहिणेदार देवणहार सर्ब जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भिन्नड़ी रैण सुहाई, गुर संगत मेल मिलाई, प्रभ अबिनाशी रहे रसन वखान। गुर संगत गुर चरन दुआरे। प्रभ अबिनाशी आत्म भरे शब्द भण्डारे। आप खुल्हाए दर दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे अकारे। गुर संगत गुर धाम सुहाए। राम रमईआ दरस दिखाए। काहन घनईआ नज़री आए। विच मात अन्तिम कलि जोत सरूपी हरि जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आयां साच माण दवाए। घर साचा साचा माण। घर साचा मेल करे भगत भगवान। हरि साचा आत्म तीर्थ करो इशनान। आप चढ़ाए साचा राथा, सतिजुग साचे सोहँ विच बबाण। आप चलाए आपणी काथा, प्रभ अबिनाशी वाली दो जहान। प्रगटाए जोत त्रैलोकी नाथा, गुरमुख चढ़ाए शब्द बबाण। सृष्ट सबाई सगला साथा, वेले अन्त हरि देवे दरस आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां करे कलि पछाण। गुर पूरा भोग लगावंदा। गुरमुखां चोग चुगावंदा। हउमे रोग गवावंदा। लिख्या धुर संजोग प्रभ साचा मेल मिलावंदा। कदे ना होए विजोग, प्रभ आपणी सरन रखावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समावंदा।

१८४
०३

१८४
०३

✻ १४ जेठ २०१० बिक्रमी बीबी सवरन कौर दे अन्त समें वास्ते बचन होए पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✻

दर्शन देख आत्म तृप्तावे। आत्म तीर्थ साचे नहावे। प्रभ अबिनाशी दया कमावे। साचा लेखा आपे लावे। जोत सरूपी जोत हरि, जोती जोत जगाए। आत्म जोत होए उज्जयारी। रोगां सोगां होए छुडारी। साचा शब्द इक्क उडारी। आत्म देवे सच खुमारी। रसना गाए पार उतारी। पूरी किरपा प्रभ साचे धारी। आवण जावण गेड़ निवारी। पतित पावन हरि

बनवारी। अमृत मेघ बरसे सवण, आत्म शांत हरि द्वारी। जिस जन होए आपे आप बहाए चरन द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल कलि वरतारी। साचा नाम हरि जस गाया। प्रभ अबिनाशी साचा पाया। सच वस्त हरि थार, प्रभ साची दे टिकाया। सच जोत निरँकार, साचा मेल मिलाया। आप बहाए सच दरबार, साचा लेख चुकाया। चरन प्रीती सच प्यार, प्रभ साची सेवा लाया। मानस जन्म ना आई हार, हरि साचे माण दवाया। बाहों पकड़ कलि जाए तार, बेड़ा बन्ने लाया। होया साचा हरि भतार, आपणे कंठ लगाया। जोत सरूपी जोत हरि साचा मेल मिलाया। मिल्या मेल सच गिरधारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। सच शब्द सच उडारी। जीव आत्म सदा अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तारी। किरपा करे हरि कृपाल। आपणा बिरध लए संभाल। चरन प्रीती निभे नाल। आत्म पुनीती सुरत संभाल। साची नीती सच नाम धन हरि देवे माल। मानस जन्म जाए कलि जीती जिस जन होए आप कृपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल। मानस जन्म हरि संवारना। कर किरपा पार उतारना। सोहँ साचा दान प्रभ साचे झोली पावना। चरन धूढ़ इशनान, साचा कर्म कमावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्ने वखावणा। बेड़ा बन्ने बन्दी तोड़। अद्धविचकार ना देवे छोड़ । आप निभाए चरन प्रीती तोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप
१८५
०३
लै जाए चढ़ाए शब्द सरूपी घोड़। शब्द सरूपी शब्द अधारी। सच शब्द हरि लेख लिखारी। वेखे विगसे करे विचारी। सो
१८५
०३
जन नेत्र पेखे, जिस जन किरपा धारी। आत्म कढ्ढे भरम भुलेखे, भुल्ले जीव संसारी। आप लगाए आपणे लेखे, निहकलंक नरायण नर अवतारी। आपणा लेखा आप चुकाउणा। लिख्या लेख ना किसे मिटाउणा। नेत्र पेख तृख बुझाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दुखड़ा सारा लौहुणा। आत्म लथ्थे सगल वसूरा। साचा प्रभ दिसे हज़ूरा। आसा मनसा हरि साचा पूरा। आत्म सहिँसा जो जन करे दूरा। आत्म हिस्सा दुःख वसूरा। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब कला आपे भरपूरा। प्रभ अबिनाशी वड वड्याई। जुगो जुग जन भगतां पैज रखाई। दिवस रैण जो रहे गाई। दर घर आए प्रभ साचा साचा दरस दिखाई। झूठी देह भाण्डा काचा, वेले अन्त भन्न वखाई। आत्म हरि हरि रसना साचा वाचा, देवे दरस आप रघुराई। आपे ढाले साचा ढांचा, सोहँ भट्ठी दयां चढ़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देव कन्या दे वड्याई। घर जाए चरन छुहाया। वेला अन्तिम आण सहाया। किसे साध सन्त हत्थ ना आया। पूरन भगवन्त वेले अन्त घर आए, आपणी हत्थीं मुख साची चोग चुगाया। आप बणाए साची बणत, विच जीव जन्त साचे धाम बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन सवरन चरन तेरी तोड़ निभाया। घर साचे आ हरि गोबिन्द, पूरन दरस दिखाया। आप मिटाई आत्म

चिन्दा, नेत्र परस कर दरस अन्तिम मिटी हरस, दर घर वर हरि साचा पाया। अमृत मेघ प्रभ साचा घर जाए आया बरस, काया अग्न दे बुझाया। सवरन निमाणी चरन परानी आपणे भाणे विच आप समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौदां जेठ वीह सौ दस बिक्रमी साचा हँस विच्चों आप उडाया। उडया हँस शब्द उडारी। पारब्रह्म गया तेरे चरन द्वारी। चरन सरन पड़ी आए सवरन कंवारी। मात पित भैण भ्रा विच मात जो रक्खे प्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए सोहँ देवे धीरज धारी। सवरन स्वर्ग माण साचा सुख। मातलोक विच उज्जल होए मुख। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख तेरी उतरी भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सुफल कराई मात कुक्ख। प्रभ दर मंगी साची मंग। शब्द रंग प्रभ देवे साचा रंग। होए सहाई सदा अंग संग। मानस जन्म ना होया भंग। साक सन्बंधीआं आत्म होए तंग। प्रभ साचे कट्टीआं फंदीआं, होया सुखाला बन्द बन्द। सोहँ शब्द दिवस रैण रैण दिवस गाया बत्ती दन्दीआं, प्रभ आप चढ़ाया साचा चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बख्शंद। सवरन सरन हरि साचे लाई। तारन तारन आप दया कमाई। दर घर साचे जाए दरस दिखाई। वेला अन्तिम अन्त सुहा ल्या, साचे लेख लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराई। पूरी आसा होई सवरन। आप चुकाया मरन डरन। सच पुरी विच सदा तरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन लगाई रखाई साची सरन। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। मात पित दे मति समझाए। रोणा कुरलाणा विरलाणा ना कोई कराए, साचा भाणा हरि वरताए। साचा बाणा हरि तन पहनाए। साचा घर दर हरि सच वखाना, साची दरगाह जाए वसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत गया मिलाए।

❊ १४ जेठ २०१० बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड राम पुर ज़िला अमृतसर ❊

सति सन्तोख धर्म हरि जति है। हक्क हलाल कमाई, साची हति है। सोहँ साचा शब्द सतिजुग साचा नति है। प्रभ अबिनाशी रसना गाए गुरमुखां देवे मति है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिजाए साचे वत्त है। आत्म नाम सच बिजावणा। प्रभ अबिनाशी रिदे वसावणा । सर्ब घट वासी भुल्ल ना जावणा। घनकपुर वासी सद संग रहावणा। आदि अन्त करे बन्द ख़लासी, वेला अन्तिम आप सुहावणा। मानस जन्म कराए रहिरासी, जोत सरूपी दरस दिखावणा। जो जन होए मदिरा मासी, प्रभ अबिनाशी ना आपणी सरन लगावणा। जो जन होए चरन दासी, स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखावणा। प्रभ साचे सद बलि बलि जासी, आत्म रंग मजीठ चढ़ावणा। हरि पाए साचा शाह शबासी, दरगाह साची माण दवावणा।

आत्म साची धीर धरासी, साचा दीपक जोत जगावणा। एका आत्म तृप्तासी, दीपक जोत आप जगावणा। झिरनां निझरों आप झिरावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग हरि रंगावणा। रंग रंगीला हरि गुर जाण। गुर पूरे कर पछाण। प्रभ अबिनाशी आप बणाए मात चतुर सुजाण। आत्म साचा दर खुल्हाए, दर घर साचे बूझ बुझान। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा, जीव जन्तां आदिन अन्ता, साचा कन्ता, पूरन भगवन्ता, साधां सन्तां माण दवन्ता, ताण रखंता, नाम जपंता, जाम पलंता, सच धाम बहंता, जोती जोत मिलंता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कर्म करंता। जोत मिलाए, कर्म कमाए, विच समाए, गेड़ कटाए, नेड़े नेड़ हो आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे हेर फेर चुकाए। आप चुकाए हेरा फेरा। मानस जन्म सुफल कराए तेरा। प्रभ साचे का बण साचा चेरा। आत्म ढाहे दु:ख ढेरा। साचा सुख प्रभ मिलण दा पाओ घेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखाए ना लाए देरा। आत्म वेख पुरख अबिनाश। साची करे जोत प्रकाश। हरि हिरदे रक्खे वास। हउमे रोग करे विनास। सोहँ गाओ स्वास स्वास। मानस जन्म होए रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दास। भगत वछल आप गिरधारा। अछल अछल्ल करे संसारा। वल छल छल वल कर भुलाए ना कोई पावे सारा। गुरमुख दर आए चल आपे पाए सारा।
१८७ ०३ शब्द सरूपी काया आत्म विच चलाए हल, सोहँ साचा बीज बिजारा। उत्तम लग्गे मानस देही फल, गुर चरन प्रीती साचा प्यारा। छत्तर साया हेठ प्रभ साचे दी पल, गुरमुख तेरा होए आप सहारा। कलिजुग वेला अन्त ना जाए टल, बेमुख उठायण दु:ख भारा। आप कराए जल ते थल, चार कुन्ट धुंदूकारा। ना लाए घड़ी पल, लैण ना देवे किसे सहारा। वेला जाए ना टल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणया लेख लिखारा। चरन धूढ़ जन मस्तक लाए। शब्द पंघूड़ा हरि झुलाए। आत्म गूढ़ा रंग चढ़ाए। काया जूड़ जगत जंजाल आप कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ जो जन आए नहाए। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना। मूर्ख मुग्धां बणाए चतुर सुजाना। चरन धूढ़ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। चरन धूढ़ मस्तक लाओ, साचा शब्द सुणो काना। चरन धूढ़ नेत्र लाओ, वेखो दरस हरि भगवाना। चरन धूढ़ जिह्वा लाओ, आत्म रस देवे रस साचा माना। चरन धूढ़ जे नक्क लगाओ, सति सुगंधी हरि वस कराना। चरन धूढ़ गुरसिख हत्थ लगाणा, अतुट्ट भण्डार हरि दर पाओ। चरन धूढ़ जिस जन तन लगाणा, साचा पहनाए प्रभ आपे बाना। साचा देवे थाँउं, चरन धूढ़ इशनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मजन गुर चरन नुहाओ। चरन धूढ़ गुर चरन दुआरे। गुरमुख विरला लाए मुख कलि उतरे पारे। कलिजुग जीव ना पावे सारे। भुल्ले रहे ना आए चल दुआरे। माया हँगता विच रुल्ले,

प्रभ अबिनाशी ना कोए विचारे। अन्तिम अन्त किसे अग्ग ना बले चुल्ले, बैठ भुल्ले घर बाहरे। ना उह फले ना उह फुले, कलिजुग भुल्ले जो हरि गिरधारे। गुरमुखां सद सदा भण्डारे खुल्ले, हरि बैठा आप वरतारे। चरन प्रीती आत्म घुल्ले, अन्तिम देवे मोख दुआरे। सोहँ कंडे साचे तुले, प्रभ साचा तोल तुलारे। सतिजुग साचे साचे झण्डे झुले, प्रभ अबिनाशी निशान बणाए अपर अपारे। जो जन दर आयण भुल्ले रुल्ले, कर किरपा पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। नर निरँजण, दर्द दुःख भय भञ्जणा। आत्म गुरसिख तेरी कज्जणा। पी अमृत दर साचे रज्जणा। काया भाण्डा अन्तकाल कलि भज्जणा। ना कोई दीसे भैण भाई मात पित साक सैण सज्जणा। अन्तिम अन्त अन्तकाल सभ किछ विच मात दे तजणा। गुरमुख विरले सन्त जन साचा नाम रस पी साचे दर रज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फेर किसे नहीं लज्जणा। अमृत पीणा निर्मल जीणा। शांत कराए सीना सोहँ देवे नाम वड प्रबीना। एका रंग रंगाए हरि साचा भीन्ना। प्रभ अबिनाशी जिस रसना चीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप आपणे जिहा कीना। रंगण नाम आप चढ़ाए। मंगण दर ना किसे जाए। साचे घर हरि सद समाए। दर घर साचे बैठा देवे वर, जो जन मंगण आए। खाली भण्डारे प्रभ देवे भर, सच नाम हरि भिच्छया पाए। जोत सरूपी विच जोत मात धर, पूरन इच्छया आप
१८८
०३ कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची भिच्छया गुरसिक्खां आप पाए। साची भिख्या गुर दर पाई। आत्म तन १८८
०३
वज्जी वधाई। हरि साचा वस्सया मन, दुःख रिहा ना काई। धर्म राए ना लाए डन्न, हरि होया आप सहाई। साचा शब्द सुणाया कन्न, साची धुन उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी साची पत्त रखाई। पतिपरमेश्वर पत पतवन्ता। होए सहाई गुरमुख साचे सन्ता। देवे वड्याई विच जीव जन्ता। आप बणाए विच मात साची बणता। महिंमा प्रभ बड़ी अगणता। गुरमुखां मिल्या प्रभ साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आप सँघारे दुष्ट दुराचारे वड वड हँकारे देव दंता। वड वड हँकारीआं प्रभ साचा पाए ख्वारीआं। धीआं भैणां रंडीआं घर रोवण नारीआं। कौडी मूल ना पल्ले फिरे विच मंडीआं, ना पुच्छे कोई वपारीआ। आपी पावे साची वंडीआं, सुहाग रात ना किसे सुहा रिहा। साचा शब्द देवे डण्डीआं वल पखण्डीआं घर घर फिरन दुष्ट दुराचारीआ। मूंड मुंडाए चण्डीआं प्रचण्डीआं, नाल बन्नाए जंडीआं, तन सड़ाए कुण्ड कुण्डीआं। कच्चे भन्नाए अण्डयां ना होए कोई सहारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग साचा खेल खिला रिहा। दुरमति दुराचारियां, प्रभ साचा करे ख्वारीआं, अग्न जोत आप लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर पुआड़े पाए अचरज खेल आप वरता रिहा। माझा देस होए दिन माढ़े। घर घर पैण पवाड़े। इक्क इक्क

होए दो फाड़े। आप बणाए चंगे माढ़े। गुरमुख साचे प्रभ आप बणाए साचे लाड़े। बेमुख जीव झूठे आप चढ़ाए घोड़ी मौत लाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वरताए खेल आप बैठा वेखे खेल अखाड़े। सच तीर्थ धाम सर। सोहण सिँघ तेरा साचा घर। प्रभ अबिनाशी देवे वर। सतिजुग साचे आपे दए उसारी कर। चार वरन चल आयण दर। अमृत साचा प्रभ देवे भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। अमृत साचा प्रभ साचे भरना। चार वरन दर घर साचे आए तरना। जुगो जुग जगत जुग तेरा नाम विच मात दे धरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आपणी सरना। साचा सर हरि आप कराए। निर्मल नीर हरि आप धराए। दुःख रोग कट्ट सरीर, प्रभ साचा सुख उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त विच दे टिकाए। सतिजुग साचा धाम उपजावणा। गुरमुख साचे तेरा नाम रखावणा। जन्म कर्म हरि साचे वाचे पूर्ब फल दवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाउँ डंक वजावणा। गुर सतिगुर साचा पाया। गुर संगत संग मिलाया। गुर सतिगुर साचा पाया, जिस आपणे रंग रंगाया। गुर सतिगुर साचा पाया, जिस साचा नाम रंग चढ़ाया। सतिगुर साचा पाया जिस साचा संग निभाया। सतिगुर साचा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दान साची भिच्छया पाया। सोहँ दान सच्ची दात विच मात वड करामात, गुर चरन बणाए साचा नात। अन्धेरी मिटाए काली रात। साची जोत जगाए आत्म वेख मार झात। गुरमुख साचे प्रभ साचा लेख लिखाए हत्थ फड़ाए कलम दवात। लिख्या लेख ना कोई मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचा लेख लिखात। साचा लेखा जिस जन लिखावणा। बेड़ा बन्न्ह हरि आप वखावणा। मन तन तन मन हरा करावणा। आत्म जन सर्ब कढावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आपणी सरन लगावणा। साचे प्रभ सच सरनाया। हरि हरि साचा नाम दवाया। घर घर साचे दए वखाया। दर दुआरा दे खुल्ह्या। आत्म साचे सर तीर्थ नुहाया। आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाया। आत्म जोती जोत धर अज्ञान अन्धेर मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाया। माण दवाया हरि भगवान्या। पार लँघानया कर मेहरबानीआं। जीव निधानयां समझ अञ्याणयां सतिजुग मिले सच निशानीआं। सोहँ देवे प्रभ साचा कानीआं। बेमुख मारन मिहणे ताहनयां। गुरमुख चलणा प्रभ के भाणयां। प्रभ अबिनाशी आपे आप सर्ब पछाणयां। वेले अन्तकाल कलि भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां। अन्तिम होण ना स्वास सुखाले, औखे वेले ना किसे छुडाणयां। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद संग रहाणयां। सदा संग हरि साचा वसे। प्रगट जोत राह साचा दसे। गुरमुख साचा दर घर आए हस्से। बेमुख दर तों जायण नस्से। आत्म अन्धेरी होई जिउँ चन्द मस्से। गुरमुख आत्म जोत अकार कोट

रवि सस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निशाना एका कस्से। शब्द तीर सच निशाना। गुरसिख कर गुर चरन ध्याना। होए मेल भगत भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्ने हत्थीं गाना। सोहँ गाना बंधणा हत्थ। आप चढ़ाए साचे रथ। आत्म देवे प्रभ साचा साची वथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटे हरस क्यों रहे तरस सगल वसूरे जायण लथ्थ। आत्म सूरया जगत गरूरया। क्यों गंवाया आत्म नूरया । साचा दर छड हट्ट गियों दूरया। वेला अन्तिम अन्त काल आया चल आओ हरि हज़ूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे सर्ब गरूरया।

❋ १४ जेठ २०१० बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❋

सतिगुर साचा शाहो, सहज सुभाया। सतिगुर साचा शाहो, वड बेप्रवाहया। सतिगुर साचा शाहो, गुरमुखां नाम जपाया। सतिगुर साचा शाहो एका मार्ग लाया। सतिगुर साचा शाहो, चार वरन माण दवाया। सतिगुर साचा शाहो, सोहँ साचा प्रभ साचे झोली पाया। सतिगुर साचा नाम निधान आत्म बाण लगाया। सतिगुर साचा साचा चरन ध्यान आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाया। सतिगुर साचा साचा शब्द तीर निशान रसना खिच चलाया। सतिगुर साचा गुरमुखां आत्म बंध बंधाए दूई द्वैत जिंदा आप तुड़ाया। सतिगुर साचा शब्द धुन आप उपजावे, सच धुन्कार सुणाया। सतिगुर साचा मुन्न सुन्न आप खुल्लाए, अमृत झिरना आप झिराया। सतिगुर साचा गुरमुख विरले कलिजुग चुण आपणी सरन लगाया। सतिगुर साचा बेमुख जीव कलिजुग पुण अन्तकाल मिटाया। सतिगुर साचा गुरमुख साचे सन्त जन चुण हरि साचे लेख लिखाया। सतिगुर साचा जूठी झूठी रेख दे मिटाया। सतिगुर साचा वेख वेख जो रहे पाप कमाया । सतिगुर साचा विच मात रहण ना पाया । सतिगुर साचा अन्तकाल कलिजुग बेमुखां दे सजाया। सतिगुर साचा धर्म राए दे हत्थ दए फड़ाया। सतिगुर साचा अठाई कुण्ड नर्क निवास रखाया। सतिगुर साचा बेमुख विच मात लक्ख चुरासी विच फिराया। सतिगुर साचा गुरमुखां सच नाम जपाया। सतिगुर साचा साचे शब्द कन्न सुणाया। सतिगुर साचा एका ध्यान चरन लगाया। सतिगुर साचा एका माण जगत रखाया। सतिगुर साचा आत्म जोत जगाए महान बली बलवाना। सतिगुर साचा अज्ञान अन्धेर मिटाए चुक्के काना। सतिगुर साचा कलिजुग मिटाए धुंदूकार सतिगुर साचा विच मात हरि लाना। सतिगुर साचा सोहँ शब्द सच वस्त खोल्ले सच दुकाना। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे जगत महाना। सतिगुर साचा चरन बलिहारा। सतिगुर साचा जन्म मरन जिस आण सवारा। सतिगुर साचा भुक्ख पाप विच मात उतारा। सतिगुर साचा सोहँ साचा जाप जिस आत्म धारा। सतिगुर साचा

कर्म जरम धर्म जिस सवारा। सतिगुर साचा आत्म हउमे भरम निवारा। सतिगुर साचा एका देवे सरन दुआरा। सतिगुर साचा हरन फरन हरि दए खुलारा। सतिगुर साचा धरनी धर, गुरसिख उतरे पारा। सतिगुर साचा अन्तकाल ना जाए मर, प्रभ साचा मेल मिलारा। सतिगुर साचा आप चुकाए जम का डर, साचा देवे शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सतिगुर साचा सर्ब का ज्ञाता। सतिगुर साचा सर्ब जीआं का एका दाता। सतिगुर चरन प्रीती बख्शे साचा नाता। सतिगुर साचा भैण भाईआं आपे बणे पित माता। सतिगुर साचा चार वरन कराए भैण भ्राता। सतिगुर साचा सोहँ देवे विच मात साची दाता। सतिगुर साचा गुरमुख विरले कलि पछाता। सतिगुर साचा गुरमुख आप मिटाए गुरसिख तेरी आत्म अन्धेरी राता। सतिगुर साचा गुरमुख साचे दर घर आए आप प्याए अमृत बूंद सवाता। सतिगुर साचा दया कमाए मार्ग लाए सारंगधर भगवान बीठला आपणे रंग रंगाता। सतिगुर साचा गुरमुख साचे सन्त जनां एका रंगण चढ़ाता है। सतिगुर साचा गुरसिख दूसर दर मंगण ना जाता है। सतिगुर साचा पूरन पुरख बिधाता है। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी विच वास है। सतिगुर साचा घनकपुर वासीआ। सतिगुर साचा सृष्ट सबाई करे उदासीआ। सतिगुर साचा गुरमुखां करे बन्द खलासीआ। सतिगुर साचा आप मिटाए कलिजुग अन्तिम अन्त मदिरा मासीआ। सतिगुर साचा गुरमुखां सोहँ नाम जपासीआ। सतिगुर साचा बेमुखां अन्तिम मार करासीआ। सतिगुर साचा गुरमुखां शब्द धार कर पार बेड़ा आप बंधासीआ। सतिगुर साचा बेमुखां नर्क निवास रखासीआ। सतिगुर साचा गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ आपणी गोद उठासीआ। सतिगुर साचा बेमुखां लक्ख चुरासी विच भवासीआ। सतिगुर साचा गुरसिक्खां हरि जोती जोत मिलासीआ। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पासीआ। सतिगुर साचा शब्द धारा। सतिगुर साचा गिरवर गिरधारा। सतिगुर साचा मात जामा धरे कृष्न मुरारा। सतिगुर साचा जोत सरूप करे खेल अपारा। सतिगुर साचा आदि जुगादि जुगो जुग आवे जावे वारो वारा। सतिगुर साचा एका शब्द वजाए नाद चार कुन्ट कराए जै जै जैकारा। सतिगुर साचा कलिजुग तेरा मिटाए। सतिगुर साचा सतिजुग तेरा करे सति सति करे वरतारा। सतिगुर साचा जन भगतां देवे नाम अधारा। सतिगुर साचा गुरमुख साचे आत्म जोती दीप करे उज्जयारा। सतिगुर साचा साची बख्शे शब्द धुन्कारा। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रंगाए एका रंग करतारा। सतिगुर साचा जगत हित्त। सतिगुर साचा जोत प्रगटाए नित्त नवित्त। सतिगुर साचा गुरमुख साचे कीना हित्त। सतिगुर साचा प्रभ अबिनाशी साचा मित्त। सतिगुर साचा दिवस रैण सद राखो चित्त। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचा मित्त। मीत मुरारा राम अवतारा, कृष्न मुरारा, जोत

सरूपी जामा धार। खेल अपारा ना कोई पाए सारा। गुरमुख विरला बूझे, कलि कर्म विचारा। दर घर सूझे, आए करे चरन निमस्कारा। बेमुख दर ते हरि ना बूझे, आत्म हँगता रोग भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त विच मात लए अवतारा। जोत सरूपी जामा धारया। अचरज खेल किया करतारया। तीन लोक सच्ची सरकारया। अचरज खेल ना कोई पावे सारया। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत विच मात टिका रिहा। अन्तिम अन्तकाल निहकलंक नरायण नर अवतार आपणा नाम धरा ल्या। मातलोक हरि जामा धारया। निहकलंक नरायण नर अवतारया। बिन रंग रूप गुरमुख साचे विच समा रिहा। ना कोई लए वेख गुरमुख साचा नेत्र लए पेख, तीजा लोचण आप प्रभ खुल्हा रिहा। आपे कढ्ढे भरम भुलेखे जिस जन चरनी सीस निवा ल्या। जोत सरूपी हरि धारे भेख, कलिजुग मिटाए लिखे लेख, सतिजुग साचे लेख लिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा आप चुका रिहा। पंचम जेठ प्रभ जामा धारा। मातलोक ल्या अवतारा। जोत सरूपी भेख अपारा। करे खेल हरि गिरधारा। शब्द धुन धुन एका धुन्कारा। सृष्ट सबाई रही सुन, गुरमुख विरला करे विचारा। लक्ख चुरासी विच्चों पुण, एका देवे दरस अपारा। गुरमुख साचे विच मात चुण, खिच्च ल्याए चरन दुआरा। एका प्रभ उपजाए साची धुन, दिवस रैण रहे एका धुन्कारा। एका शब्द जणाए एका गुण, गुरमुख साचे लए सुण उतरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। पंचम जेठ जोत प्रगटाई। सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सवाई। गुरमुख साचे सन्त जनां एका दीआ साचा नाम धना, संन्ह लग्गे ना राई। साचा रंग रंगाए मन तन भिन्ना, आत्म शांत कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल विच मात जामा पाई। अन्तिम अन्त कलि विचारया। प्रभ अबिनाशी जामा धारया। कलिजुग जीआं आपणा कर्म धर्म हारया। धीआं भैणां करन वपारया। झूठे धन्दे मानस लग मानस जन्म हारया। दर दरबारे गुर चरन दुआरे धीआं भैणां करन ख्वारया। आत्म हँकारे दुष्ट दुराचारे, दिवस रैण करन विचारे, आत्म भुल्ला हरि गिरधारया। जोती जोत सरूप हरि, जीव जन्तां करे सर्ब विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात ल्या अवतारया। जीव जन्त हरि आप विचारदा। कर्म विचार आपे तारदा। बेमुखां आदि जुगादि नर्क निवारदा। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ साचा बाहों पकड़ पार उतारे, शब्द घोड़ी आप चाढ़दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग वेला अन्त आप संभालदा। जीव जन्त हरि देवे दाना। जे कोई मंगे नाम निधाना। साचा देवे जगत निशाना। सोहँ शब्द हरि भगवाना। उपजे धुन सुणे जन काना। आत्म सुन हरि खोल्ह खुल्हाणा। रिख मुन ना किसे पछाना। गुरमुख साचे प्रभ किरपा करे महाना। आप मिटाए

आत्म तृख आत्म जोत जगाए वाली दो जहानां। प्रभ दर मंगे साची भिक्ख, देवे दरस आप वड बली बलवाना। साचे लेख प्रभ जाए लिख, लोकमात हरि पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तिम अन्त कराना। कलिजुग तेरा अन्त करावणा। साचा लेखा आप चुकावणा। जोत सरूपी जामा पावणा। भेख धार एह कर्म कमावणा। वेख विचार प्रभ आप करावणा। कर्म धर्म कलि गए हार, किसे ना आण छुडावणा। बेड़ा डुब्बा विच मंझधार, किसे ना पार करावणा। सृष्ट सबाई आपणा मूल गई हार, प्रभ अबिनाशी विच मात दे आवणा। आप बंधाए आपणी धार, सोहँ साचा शब्द चलावणा। जूठ झूठ करे ख्वार, सच सुच्च मार्ग लावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निरँजण नरायण नर सतिजुग साचा लावणा। कलिजुग वेखे हरि कर्म विचारी। सृष्ट सबाई होए ख्वारी। साची लिख्त लिखाए, प्रभ साचा बण लिखारी। चार कुन्ट होए हाहाकारी। घर घर रोवण नर नारी। किसे ना बणे कोई सहारी। प्रभ अबिनाशी गए विसारी। दहि दिशा गए पासा हारी। जोती जोत सरूप निरँजण कलि अचरज खेल करे करतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक हरि जामा धारी। चार कुन्ट होए वहीरा। साचा शब्द चलाए तीरा। सृष्ट सबाई तुट्टा धीरा। कवण कट्टे कलिजुग तेरीआं भीड़ां। प्रभ अबिनाशी आपणे हत्थ उठाए सोहँ साचा बीड़ा। सृष्ट सबाई प्रभ साचा जाए पीड़ा। चार कुन्ट पै जाए दुहाई,
१६३ ०३ किसे हत्थ ना आए लीड़ा। सृष्ट सबाई सर्ब बिल्लाई, जीव जन्त हरि चित चिउँटी कीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, १६३ ०३
साचा करे आप नबेड़ा। कलिजुग तेरा होए नबेड़ा। प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई देवे एका बैठा गेड़ा। शब्द सरूपी शब्द हरि इक्क लगावे उखेड़ा। जूठे झूठे दुष्ट दुराचारीआं, प्रभ आप नबेड़े झेड़ा। धरत मात तेरी रक्खे पति, प्रभ अबिनाशी तेरा खुल्ला कराए वेहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सृष्ट सबाई भेड़ भेड़ा। सृष्ट सबाई छेड़ छिड़ावे। विच मैदान दे घेर ल्यावे। उखेड़ उखेड़ प्रभ साचा सारे नष्ट करावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठे झेड़े सारे सर्ब मिटावे। आप वरतावे आपणा भाणा। आप उठाए वड वड जोधा बली बलवाना। विच बिठाए अग्न लगाए बबाणा। अग्न मेघ हरि बरसाए, सृष्ट सबाई सर्ब जलाणा। जीव जन्त सर्ब पिसाए, किसे पाणी हत्थ ना आणा। बिरध बाल ना कोई पछाणे, आपणा आप किसे ना जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग झूठा भेख मिटाणा। कलिजुग तेरा होया अन्त। माया पाया प्रभ साचा सृष्ट सबाई आप बेअन्त। नज़र ना आए विच मात हरि साचा कन्त। दिवस रैण फड़ बेमुखां कुठे प्रभ अबिनाशी आप उधारे साचे सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत अगणत। सच सच सच हरि रिहा लिखाए। निहकलंक कलि जामा पाए। माझे देस मिले वधाए। पुरी घनक हरि जोत

१६४
०३

जगाए। साचा वज्जे डंक सुणे लोकाए। इक्क कराए राउ रंक, राजा राणा कोई रहण ना पाए। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा बंक, ऊँच नीच हरि भेव मिटाए। गुरमुख साचे प्रभ लगाए शब्द तनक, सुरत शब्द हरि मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाक भविख्त रिहा लिखाए। माझा देस वेख विचार। अन्तिम कलिजुग आवे हार। मिट्टी तेरी ख़ुआर। दर दर घर घर फिरन भिखार। जूठे झूठे माया लूठे डाहढी खायण मार। राम दास गुर तेरे दर जो बैठे धीआं भैणां करन वपार। पाउण रेशम पहनण पट, माया धारी चोर यार। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत कर सभ ख़ुआर। दर गुर गुर दर होए ख़ुआरी। धरत मात हरि दर पुकारी। विच मात मेरी पति लथ्थी सारी। कलिजुग जीआं मेरी करी बड़ी ख़ुआरी। अठसठ उप्पर तीर्थां धीआं भैणा होए ख़ुआरी। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप वेखे विगसे करे विचारी। कलिजुग कर्म विचार हरि, विच मात लए अवतारी। बेमुखां अन्त ख़ुआर कर, प्रभ साचा जाए पछाड़ी। सोहँ शब्द विच मात साची धार धर, सतिजुग साचे देवे सच्ची सिक्दारी। सतिजुग साचा कर्म विचार कर, साचा शब्द देवे हरि भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन सतिजुग लाए सच्ची फुलवाड़ी । सतिजुग साचा सति वरतावणा । गुरमुख साचे सन्त जनां विच मात जन्म दवावणा। सच सुच्च धर्म कर्म साचा जत रखावणा। चार वरन हरि सचे सरन एका रंग रंगावणा। ऊँच नीच प्रभ साचे भेख मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका रंग रंगावणा। सतिजुग साचे एका रंग रंगावणा। अंग संग संग अंग, प्रभ साचे हो जावणा। गुरमुखां मंगी साची मंग, साचा देवे नाम निधाना। बेमुखां होए भाग मन्द, मदिरा मास मुख रखाणा। रसना लायण गन्द, ना मिल्या हरि भगवाना। प्रभ अबिनाशी ना गाया बत्ती दन्द, सौं सौं रैण विहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक हरि पहरया बाणा। सतिजुग तेरे नाम वधाई। मातलोक हरि जन्म दवाई। पहली माघी होए रुशनाई। सृष्ट सबाई साचा वागी आपे बणे रथवाही। आपे धोए तेरी दुरमति मैल दागी, आत्म साची जाग लगाई। आप बणाए हँस कागी, सोहँ साचा नाम जपाई। गुरमुखां गुरसिक्खां भाग होए वड वड भागी, जिन्हां मिल्या हरि रघुराई। कलिजुग माया तन ना लागी, शब्द कार हरि आप लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे विच मात देवे वड्याई। सतिजुग तेरा माण रखाणा। सृष्ट सबाई एका बाणा। सृष्ट सबाई एका ताणा। सृष्ट सबाई एका राणा। सृष्ट सबाई एका खाणा। सृष्ट सबाई ऊँच नीच हरि भेव चुकाणा। सृष्ट सबाई राउ रंक इक्क थां बहाणा। सृष्ट सबाई सोहँ साचा शब्द चलाणा। सृष्ट सबाई चार कुन्ट साचा डंक वजाणा। सृष्ट सबाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जै जैकार कराणा। सतिजुग तेरा सति वरतार। चार कुन्ट होए जै जैकार।

१६४
०३

सोहँ वरते विच संसार। देवणहार इक्क दातार। निखुट्ट ना जावे ना आए हार। आप अतुट्ट सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लेख लिखार। सतिजुग साचे तेरा लेख लिखावणा। सच दात प्रभ साचे तेरे आत्म तन रखावणा। सतिगुर साचा सृष्ट सबाई माण अभिमाण प्रभ साचे आप गवावणा। गुरमुख साचे तेरा नाम सच निशान विच मात रहि जावणा। वाली दो जहान अन्तिम अन्तकाल साचा लेख लिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सारा भेव खुल्हावणा। सतिजुग तेरा सच जन्म। सतिजुग तेरा सच धर्म। सतिजुग तेरा सच वरम। सतिजुग तेरा सच कर्म। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे तेरा जरम। सतिजुग तेरी सच्ची अरदास। हरिभगतां सद होए वास। साचा नाम जपाए स्वास स्वास। तत्ती वा ना पोहे शब्द चलाए साची रास। दुरमति मैल सर्ब दी धोए, एका जोत करे प्रकाश। आत्म साचा दीप बलोए, अज्ञान अन्धेर जाए विनास। आत्म बीज साचा बोए, फल लाए दसवें मास। गुरमुख साचे बणत बणाए आपणी माला लए परोए, आत्म शब्द देवे धरवास। गुरमुख साचे सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सतिजुग साचे देवे धरवास। सतिजुग तेरा सच भरवासा। प्रभ अबिनाशी सच किया वासा। सच जोत हरि प्रगटाए, विच मात करे प्रकाशा। नाम निधान हरि संग रलाए, गुरमुख करे भारा पासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग कराए सच्ची तेरी रहिरासा। सच्ची रहिरास ना होए उदास। हरि वसे पास। करे बन्द खलास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन गाए रसन स्वास स्वास। रसना रस आत्म रस पावणा। सोहँ साचा गुरसिख गावणा। लक्ख चुरासी गेड़ कटावणा। जन्म मरन विच फेर ना आवणा। हउमे सहिंसा रोग गवावणा। चिन्ता सोग मिटावणा। दरस अमोघ हरि आप दिखावणा। पूरन योग हरि हिरदे विच वसावणा। कलिजुग माया ना लग्गे रोग, जिस जन चरनी सीस झुकावणा। अन्तिम अन्त ना होए कदे वियोग, प्रभ साचा लेख लिखावणा। आप मिलाया साचा मेल, गुरमुख साचे रस साचा भोग, सोहँ चोग हरि आप चुगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त विच जोती जोत मिलावणा। सतिजुग तेरी सति कमाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। सच वस्त हरि नाम तेरी झोली पाई। साचा दीआ दान विच मात मिले वड्याई। साचा शब्द सुणाए कान, जन भगतां लए उपजाई। चरन धूढ़ बख्शे इशनान, मानस जन्म सुफल कराई। होया मेल भगत भगवान, पूर्ब लहणा हरि आप दवाई। साचा देवे नाम निशान, वेले अन्त होए सहाई। आप चढ़ाए शब्द बबाण, तीन भवन हरि बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच जोती जोत मिलाई। शब्द बबाण गुरसिख चाड़्हया। सचखण्ड निवास घर साचे वाड़या। आप बणाए घर साचे दा साचा लाड़या। एका रंग रंगाया संग निभाया,

अंग संग रहाया, कलिजुग माया मूल ना साड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आप जगाए, आप आपणी सरन लाए, सोहँ साचा नाम जपाए, आत्म साची जोत जगाए, करे रुशनाए विच बहत्तर नाड़या। नाड़ी बहत्तर करे रुशनाए। इक्क इकत्तर आप रहाए। साचे वत्तर हरि सोहँ साचा बीज बिजाए। फले फुले लग्न पत्र, सतिजुग साचा फल लगाए। बेमुख वेख वेख बितर बितर, वेला गया हत्थ ना आए। वेला अन्तकाल कोई ना दिसे मित्र, झूठे दिसण भैण भ्राए। धुरदरगाहे बेमुखां पैंदे छित्तर, ना कोई लए छुडाए। गुरमुख साचे सन्त जन वेले अन्त जायण नित्तर, धर्म राए जाए मुख छुपाए। प्रभ अबिनाशी तेरा साचा मित्र, आपणी गोद उठाए। अचरज खेल करे हरि आप चलित्तर, शब्द बबाणे आप चढ़ाए। ना दरवाज़ा ना कोई भित्तर, सच दरबारे आप लै जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, अन्त जोती मेल मिलाए। जोती जोत हरि मेल मिलईआ। गुरमुखां चढ़ाए साची नईआ। सोहँ चप्पू लाए पार करईआ। बेमुख डोबे विच मंझधार, लेखा सर्ब मुकाईआ। प्रभ अबिनाशी भुल्ला सर्ब संसार, ईसा मूसा मेट मिटईआ। जीव जन्त होए सर्ब ख्वार, दूई द्वैत आप हटईआ। प्रभ अबिनाशी दए पछाड़, सोहँ खण्डा हत्थ उठईआ। चार कुन्ट कराए उजाड़, नगर खेड़ा कोई रहण ना दईआ। ना कोई छुपे किसे झाड़, कढ्ढ कढ्ढ आप झटकईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल सृष्ट सबाई डोबे झूठी नईआ। झूठी नईआ आप डुबाए। झूठी मईआ आप रवाए। झूठी सईआ आप मिटाए। आप पुच्छे तेरी वात, तेरे उत्ते कोई गुरसिख ना कहर कमाए। सतिजुग साचे सन्त जन इक्क पढ़ाए जमात, सोहँ साचा नाम जपाए। चार वरन बणाए भैण भ्रात, हरि एका रंग रंगाए। वरन बरन ना कोई ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोई आख सुणाए। एका ब्रह्म आत्म नात, दूसर कोई नाहे। जोत जगाए दिवस रात, अन्धेर कदे ना आए । कलिजुग अन्तिम सिर पाई ख़ाक, अंदर बाहर कढाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलिजुग आपणा भाणा हरि वरताए। भाणा वरते हरि वरतावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। साचा लेखा आप लिखावणा। लिख्या लेख ना किसे मिटावणा। दर घर साचे ना किसे पुचावणा। बेमुख जीवां अन्तकाल कलि कुरलावणा। बिन गुर पूरे किसे ना पार लँघावणा। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ साचे आण छुडावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वक्त आप सुहावणा। उठ जीव जाग वक्त सुहावणा। उठ जीव जाग प्रभ अबिनाशी पूरा भालणा। उठ जीव जाग मानस जन्म ना जगत रुलावणा। उठ जीव जाग हरि वेख साचा कर ध्यानणा। उठ जीव जाग तेरे जागे भाग, हरि पूरन देवे ज्ञानणा। उठ जीव जाग, हरि लक्ख चुरासी गेड़ चुकावणा। उठ जीव जाग क्यों हँस होया काग, प्रभ आत्म साचे सर इशनान करावणा। उठ जीव जाग प्रभ धोए तेरे पापां दाग,

देवे सच ज्ञानणा। उठ जीव जाग प्रभ आप पहनाए शब्द ताग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ावणा। आप सुणाए शब्द साचा राग, साची धुन उपजाए अनहद धुन कानणा। उठ जीव जाग प्रभ आत्म साची जोत जगाए, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए, दर घर साचा बूझ बुझाए, प्रभ सच पंघूड़ा आप झुलावणा। उठ जीव जाग प्रभ अबिनाशी तेरी पकड़े वाग, सचखण्ड दुआरे आप बहावणा। उठ जीव जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवावणा। उठ जीव जाग क्यों कलिजुग सोया। उठ जीव जाग, क्यों बीज झूठा बोया। उठ जीव जाग , अन्तकाल कलि जाए रोया। उठ जीव जाग वेले अन्त ना खाली हत्थ धोया। उठ जीव जाग, प्रभ साचा तेरे दर द्वार खलोया। उठ जीव जाग सोहँ धागे लए परोए, प्रभ साचा भेव ना जाणे कोया। उठ जीव जाग प्रभ गुरसिख उठाए सोया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे पापां दाग धोया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे सोहँ शब्द लै आया सच्चा ढोया। सच शब्द हरि दए ढोए। गुरमुख साचा हिरदे लए परोए। हरन फरन आप खुल्हारे तीजा लोए। जो जन लग्गे चरन प्रभ अबिनाशी आपे जाणे साची सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि घर दर सर साचा गुरमुख विरला मैल पापां धोए। उठ जीव जाग, होई अखीर है। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी लाए आत्म तीर है। उठ जीव जाग, हरि साचा मुख चुआए अमृत जिउँ बालक
१६७ ०३ माता सीर है। प्रभ अबिनाशी तेरे गलों कट्टे जगत जंजीर है। उठ जीव जाग, सोहँ देवे हरि साची धीर है। उठ जीव १६७ ०३
जाग, हउमे कट्टे विच्चों पीड़ है। उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग लथ्थे चीर है। उठ जीव जाग, हिरदा ठांडा शांत करे सरीर है। उठ जीव जाग, साचा नाम धन्न पल्ले बन्नृ गंढु सद रहे अमीर है। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे साची धीर है। उठ जीव जाग, कलिजुग अन्धयारा। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी दीपक जोत किया उज्जयारा। उठ जीव जाग हरि साचे दा विच मात सच्चा भण्डारा। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दा विच मात सच्चा दरबारा। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई हरि बणया आप वरतारा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे तेरी सारा। उठ जीव जाग, आओ साचे घर। उठ जीव जाग चरन लाग जाओ तर। उठ जीव जाग, प्रभ आप खुल्हाए आत्म दर। उठ जीव जाग, आप चुकाए जम का डर। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी किरपा कर वखाए घर में घर। उठ जीव जाग, प्रभ नुहाए आत्म साचे सर। उठ जीव जाग, आपे खोल्हे तेरा खोल्ह वखाए आत्म दस्म दुआर। दस्म दुआर आप खुल्हावणा। पवण सरूपी शब्द चलावणा। जोत सरूपी दीप जगावणा। एका धार मेघ वरसावणा। कँवल नाभ आप खुल्हावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झिरना अपर अपार तेरे आत्म सर झिरावणा। अमृत झिरना

झिरे अपार। किरपा करे हरि गिरधारा। देवणहार वड दातारा। गुरमुखां प्रभ जाए तारा। जो जन मंगे हरि नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। गुरमुख साचे माण दवाया। सुहाया थान हरि साचे चरन टिकाया। गुर संगत संग गुर एका थान बहाया। दर घर आए, साचे बंक आप चढ़ाए, नाम रंगत रंग मजीठ उत्तर ना जाया। प्रभ अबिनाशी साचा डीठ, कलिजुग जीव कौड़े रीठ, अन्तिम भन्न वखाया। दर दरबारा साचा डीठ, हरि रंगा रंग बसीठ, करोड़ तेतीस राजा सुरपति इन्द प्रभ सरनी आया। ब्रह्मा विष्न महेश गणपत गणेश गल आए बशक तशक लटकाया। मात जोत सरूपी हरि का भेस, भेव गुरमुख विरले पाया। आदि जुगादि जुगादि आदि आवण जाण जाण आवण प्रभ साचे खेल वरताया। सतिजुग साचे सच कर्म कर कर, गुरमुख साचे धर्म धर, बावन भेख हरि वटाया। त्रेता तरया रावण हरया, राम रूप अख्वाया। द्वापर कृष्ना करनी कर, संग पाडवां आप रहाया। एका अर्जन आत्म धीरज ध्यान धर, अठारां ध्याए गीता दे अलाया। साचा भाणा हरि वरताणा, करे कराए जो रिहा कर, माण अभिमाण सर्ब चुकाया। जोत सरूपी जोत हरि, आवण जावण विच मात खेल रचाया। कलिजुग अन्तिम अन्त विचारया। जुग चौथे आई हारया। बेमुख जीव भुल्ले गंवारया। प्रभ अबिनाशी भुल्ले नर नारीआं। सभ भोगण विषे विकारीआं। प्रभ साचा मनों विसारया। होई काया कुरंग, पिंजर झूठा देह मुनारया। जोत सरूपी साचा हँस, विच्चों गया मार उडारीआ। मातलोक कलिजुग तेरा झूठा बंस, अन्तिम अन्तकाल प्रभ साचा करे ख्वारया। दुष्ट सँघारे आप हरि जिउँ काहना कंस, ना कोई होए किसे सहारया। प्रगट जोत निहकलंक अचरज खेल करे अपारया। शब्द सरूपी लाए डंक, चार कुन्ट उठाए वड वड वड बलकारया। सौण ना देवे किसे राउ रंक, एका अग्नी जोत प्रभ साचा ला रिहा। कलिजुग अन्त होए भस्मंत, जोत प्रगटाए प्रभ साचा कन्त, भुल्ले सर्ब जीव जन्त, भाईआं तांईं भाई मरवा रिहा। कलिजुग तेरा वेख कुकर्मा। प्रभ अबिनाशी घर साचे वेख वेख आए शरमा। सृष्ट सबाई सच्चा नाता तुट्टा धर्मां। भरम भुलेखे पए विच ज़ातां, आत्म जोती इक्क ब्रह्मा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए चार वरन लिखाए कर्मा। चार वरन इक्क कर्म लिखावणा। चार वरन इक्क धर्म चलावणा। चार वरन इक्क सरन लगावणा। चार वरन इक्क चरन छुहावणा। चार वरन इक्क दर बहावणा। चार वरन इक्क घर वसावणा। चार वरन एका सर नुहावणा। चार वरन एका माण एका ताण एका शान रखावणा। चार वरन एका साचा शब्द ज्ञान दवावणा। चार वरन प्रभ आत्म साचा ब्रह्म आप समझावणा। चार वरन प्रभ साचे भाई भैण बणावणा। चार वरन ऊँच नीच राउ रंक सभ नष्ट करावणा। चार वरन इक्क दुआरा। चार वरन इक्क घर बाहरा। चार वरन इक्क करतारा। चार

वरन इक्क सरकारा। चार वरन इक्क सिक्दारा। चार वरन इक्क विहारा। चार वरन इक्क प्यारा। चार वरन प्रभ अबिनाशी दा इक्क दीदारा। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सर्ब भण्डारा। चार वरन एका दात। चार वरन एका पात। चार वरन एका नात। चार वरन सोहँ देवे प्रभ साचा वड करामात। चार वरन आप पढ़ाए प्रभ अबिनाशी इक्क जमात। चार वरन लागे सरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए अन्धेरी रात। आत्म अन्धेरा प्रभ देवे कट्ट। दूई द्वैती मेटे प्रभ साचा फट्ट। आत्म विच रहण ना देवे झूठी रत्त। जोत जगावे लट लट। प्रभ अबिनाशी वसे घट घट। गुरमुख साचे साचा लाहा लैणा खट्ट। बेमुख दर आए जायण जिउँ बाज़ीगर नट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ गहणा तन पहनाए आत्म साचा पट। साचा शब्द साचा गहणा। प्रभ दर घर साचे लैणा। प्रभ दरस दिखाए तीजे नैणां। आपे आप बण जाए तेरा साक सज्जण सैणां। अन्तिम अन्त अन्त हरि तेरे आत्म दर दुआरे अग्गे जाए बहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे साचा लहणा देणा। लहणा देणा आप चुकावणा। सोहँ गहणा तन पहनावणा। गुरमुख साचे भरम चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बूंद स्वांती आप पिलावणा। आत्म शांत बूंद स्वांती। देवे दरस सुत्या रातीं। आत्म साची जोत जगाती। करे रुशनाई बिन तेल बाती। गुरमुख विरले बूझ बुझाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन जणाए सो जन जाती। जाणे वखाणे पछाणे, चलाए आपणे भाणे, जगाए जोत महाने। आत्म अन्धेर गंवाए मेर तेर चुकाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे ब्रह्म ज्ञाने। ब्रह्म ज्ञान देवे ब्रह्म ज्ञानीआं। आत्म ध्यान देवे आत्म ध्यानीआं। गुर चरन धूढ़ इशनान देवे गुरसिक्खां मात इशनानीआं। सोहँ साचा आत्म देवे मेवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर वड मेहरबानीआं। सोहँ जिह्वा देवे वड देवी देवा। गुरसिक्खां तेरी घाल पाए सेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन जपया जिह्वा। भाग होए गुर भोग लगाया। दर घर सभ रोग गंवाया। दरस अमोघ घर आए दिखाया। साचा जोग नाम दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाया। दया धारी कृपानिध। कारज कीने गुरसिख सिद्ध। आप बणाए आपणे मिलण दी साची बिध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे उपजाए नौ निध। नौ निध चरन पनिहार। प्रभ अबिनाशी वड सिक्दार। गुरमुखां देवे कर प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए जाए तार। भूत प्रेत बीर बेताले। प्रभ अबिनाशी करे सर्ब बेहाले। शब्द सरूपी मार कर घर साचे करे मूंह काले। शब्द खण्डा दो धार फड़, आप खपाए डूंघी डाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आप करे प्रितपाले। भूत प्रेत जिन खवीस। सोहँ शब्द प्रभ पढ़ाए इक्क हदीस। दर घर आए जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

१६६ ०३

दर घर आए कटाए सर्ब सीस। राम नाम सच दुआरा है। वणज करे कोई वपारा है। बाज़ी शतरंज जिउँ पासा हारा है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे गिरधारा है। साचा शब्द सोहँ सुहाग। गुरमुखां मिटाए तन लग्गी आग। प्रभ साचा राह दिसाए मन भए वैराग। अनहद धुन उपजाए नाउँ निरँजण जो जन गाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले पुरख अबिनाश। सच नाम हरि देवे सहज सुभाए। सच नाम गुरमुख विरला पाए। सच नाम गुरमुख आपणे भाणे विच रहाए। सच नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां झोली पाए। सच नाम पवन पूता। सच नाम गुरमुख हिरदे धागा सूता। सच नाम गुरसिख उठाए कलिजुग मिटाए अन्धेरी रात। आत्म मैल सच्ची धोए दरस खुमारी देवे दिवस रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बूझ बुझाए गुरमुख साचे आत्म दर खुल्हात। आत्म दर हरि साचे खोल्हणा। साचा शब्द हरि साचे बोलणा। गुरमुख साचा हरि पूरे तोल तोलणा। जोत सरूपी सृष्ट सबाई पोल, प्रभ साचे आपे खोल्हणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले तन मन आपणा घोलणा। तन घोलणा सच बोलणा। आत्म भेव प्रभ साचे खोल्हणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात गुरसिख तेरा ना डोलणा। गुरसिख ना डोले, पूरे तोल प्रभ साचा तोले। कलिजुग जीव क्या कोई मारे बोले। अन्तिम अन्त आप भुन्नाए जिउँ भठयाले छोले। आत्म हँकारी दर दुरकारी धुर

२०० ०३ दरगाहों होए गोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मौत अन्धेरे गोर सवाए आपे दए झकोले। बेमुख बेमुर्शद मुरीद है। २०० ०३

प्रभ अबिनाशी ना कीनी साची दीद है। सृष्ट सबाई बंधी एका झूठी रीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साची हत्थीं साची नीत है। साचा देवे हरि नाम परवाना। साचे दर ना किसे अटकाना। धुरदरगाही साचे मन्दिर अंदर गुरसिख आपे जाना। बैठा बेपरवाही जोत सरूप एका जोत डगमगाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। सर्ब जीआं हरि साचा जाणदा। चोरां यारां ठग्गां कुड़यारां प्रभ साचा आप पछाणदा। गुरमुखां देवे चरन प्यारा, हरि नामा हरि हरि रसन उचारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे चीर चिराए करे दो फाड़दा। सच तख्त शाह सुल्तानयां। सतिजुग साची दस्से देवे इक्क निशानियां। तिन्न कूटां चूर करानीआं। चौथी कूटे आपणा चरन छुहानयां। दूरो दूर सद ल्याए, आत्म शक्ती देवे इक्क रुहानीआं। आत्म साची जोत जगाए, होए प्रकाश कोटन भानयां। अचरज खेल हरि वरताई, आपणा भेव ना किसे जणाई, क्या कोई जाणे वेद पुरानयां। सुघड़ स्याणे आप भुलाए, गुरसिख बाल अञ्याणे आप जगाए, सोहँ शब्द नाम जपाए, हत्थ बंधाए साचा गानयां। चरन धूढ़ इशनान कराए, चतुर सुजान मूढ़ कराए, काया चोर सर्ब कढानयां। साचा रंग मजीठ हरि गूढ़ो गूढ़ चढ़ानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे कराए

२०१
०३

विच जहानयां। झूठा जग जहाना। प्रभ अबिनाशी लभ्भे इक्क बहाना। आपे खिच्चे शब्द तीर निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना किसे धीर धराना। खिच्चे शब्द तीर तरंग। आप मिटाए सर्ब फरंग। इक्क चढ़ाए उलटी कंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई कराए भंग। भंग भंगणा, नाम साचे गुरमुख मंगणा। साचा संग हरि आप रखणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अलख अलक्खणा। अलक्ख अलक्ख अदेश। जोत सरूपी हरि धारे वेस। भाग लगाया माझे देश। कर के आया हरि साचा वेस। गुरमुख साचे विच प्रवेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची कलि वरताए, आप मिटाए वड वड नरेश। नर नरेशा, आप भुलाए रुलाए हमेशा। देवे माण सच्चे दरवेशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए, सृष्ट सबाई एका वेसा। साचा कर्म सच दी कार। साचा धर्म सच विहार। साचा जरम विच संसार। साचा भरम हरि दए निवार। साचा वरम हरि ब्रह्म विचार। मानस जन्म ना आवे हार। झूठा भरम जीव निवार। साचा कर्म हरि लिख्त लिखार। महाराज शेर सिँघ लक्ख चुरासी कीनी पार। लक्ख चुरासी जम की फाँसी, ना कोई करे बन्द खलासी। बेमुख झूठे करन हासी। दर घर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी। घनकपुर वासीआ, पूरन पुरख अबिनाशीआ। साची जोत मात प्रकाशीआ। सृष्ट सबाई बणाए दासन दासीआ। साचा शब्द चलाए पवण स्वासीआ। साचे मार्ग पाए जूठे झूठे सभ नष्ट करासीआ। पूरे काज आप कराए गुरमुखां साचा मेल मिलासीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख करे बन्द खलासीआ। बन्द खलासी बन्दी तोड़। चरन प्रीती देवे जोड़। लग्गी प्रीत निभाए तोड़। कलिजुग जीव ना सके कोई विछोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा प्रभ साचे दी साची लोड़। साचा गुर शब्द सिर ताज। प्रभ अबिनाशी गुरसिक्खां दित्ता साचा नाम मात विच साचा राज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे गुरमुख काज। गुरसिख हरि काज संवारे। आत्म दुःख सर्ब निवारे। साचा सुख हरि चरन प्यारे। उज्जल मुख कर दरस गुर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क दातारे। सर्ब जीआं हरि दाता एक। सर्ब जीआं हरि एका टेक। सर्ब जीआं हरि करे बुध बबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए तिस तन ना लागे सेक। सर्ब कला समरथ, जिस जन निमस्कारया। आप चढ़ाए साचे रथ, कलिजुग बेड़ा पार उतारया। आप चलाए सोहँ साची गाथ, सतिजुग साचा राह चला रिहा। बेमुखां प्रभ साचा पाए नत्थ, दर दर भिक्ख मंगा रिहा। गुरमुखां सगल वसूरे जायण लथ्थ, प्रभ अबिनाशी दरस दिखा रिहा। सृष्ट सबाई जाए मथ्थ, उलटा गेड़ आप दवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिउँ रामा दसरथ जोत प्रगटा रिहा। गुर पूरा शब्द भण्डारा है। गुर पूरा धर्म दुआरा है। गुर

२०१
०३

पूरा सदा सदा कर्म कर्म विचारा है। गुर पुरा देवे साचा नाउँ जो जन आए मंगण दुआरा है। गुर पूरा बहाए साचा थाउँ, चरन कँवल धाम न्यारा है। प्रभ अबिनाशी बेपरवाहो, क्या कोई जाणे जीव गंवारा है। हरि हरि हरि वसे सभनी थाँउं, जोत सरूपी इक्क अकारा है। रूप रंग रेख ना किसे जणाए, एका शब्द सच्ची धुन्कारा है। जोत सरूपी धारे भेख, सृष्ट सबाई रिहा वेख, आपे बणया लेख लिखारा है। गुरमुख साचे नेत्र पेख, आप लिखाए तेरे लेख, मातलोक प्रभ चरन एका सच दुआरा है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे, जो जन आए चरन निमस्कारा है। निमस्कार पूरे गुर चरन। आप निवारे जम का डरन। कर किरपा पार उतारे, जो जन आए प्रभ साचे दी साची सरन। हउमे रोग सोग हँगता सभ उतारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो मंगण आए नाम भण्डारा है। नाम भण्डारा हरि वरतारा। गुरमुख विरला पाए आए चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं पाए सारा। सर्ब जीआं हरि सार समाले। भगत वछल अछल छल करे खेल निराले। वल छल कर सर्ब सृष्ट भुला ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणया साचा पाली। गुरसिख तेरा सच्चा पाली। दो जहानां वाली, दिवस रैण रैण दिवस तेरी करे रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी करे प्रितपाली। प्रितपाल प्रितपाल गुरदेव। जो जन कमाए चरनी सेव। आप दवाए सोहँ साचा मेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे शब्द अलख अभेव। अलख अभेदा, अछल अछेदा, ना जाणे चारे वेदा। ना मिले किसे विच कतेबा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे भेदा। गऊ गरीब निमाणयां प्रभ चरन लगावणा। कलिजुग चतुर सुघड़ स्याणयां हरि आप भुलावणा। गऊ गरीब दर घर साचे हरि माण दवाणया। गऊ गरीब निमाणयां हरि अमृत साचा जाम आप पिलावणा। गऊ गरीब निमाणयां एका रंग सच आप चढ़ावणा। गऊ गरीब निमाणयां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ कंठ लगावणा। गऊ गरीबां सुणी पुकारी। मात आया जामा धारी। वड वड हँकारी लए सुधार, जूए बाज़ी जिन्हां हारी। साची दरगाह खायण मार, मानस जन्म प्रभ गुरमुखां जाए सुधारी। जो जन करन चरन निमस्कार, प्रभ अबिनशी पावे सारी। पूरी कर विचार कलिजुग रैण अन्ध अंध्यारी। सृष्ट सबाई डिगी मूंह दे भार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए धरत मात तेरी सुणी पुकारी। गऊ गरीब देण दुहाई। दिवस रैण हरि साचे नींद ना आई। सुणे पुकार हरि दातारा, विच मात जोत प्रगटाई। कलिजुग अन्तिम अन्त करे झूठा राज काज ताज सभ देवे नष्ट कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सांतक दे वरताई। गऊ गरीब मारे धाह, प्रभ अबिनाशी पकड़े बांह। दूसर कोई दीसे नांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत जगाए, एका शब्द सुणाए सोहँ

साचा नां। सोहँ शब्द सच जगदीश। सृष्ट सबाई प्रभ साचा जाए पीस। एका झुलाए छत्र आपणे सीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव चुकाए बीस इकीस। भेव चुक्के बीस इकीस ना रहण राग छतीस। साचा नाँउं प्रभ साचा देवे, ना कोई मंगे फीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे तेरी रीस। गुर पूरे तेरी वड्याईआ। दुःख रोग सर्ब मिटाईआ। पवण मसाण रहण ना पाईआ। दर साचे देण दुहाईआ। शब्द बाण हरि लगाईआ। गुरमुखां अचरज खेल कराईआ। भूत प्रेतां प्रभ साचे दे कढाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे शब्द विच वड्याईआ। शब्द तीर सच निशाना। रसना खिच्चे गुर संगत तीर कमाना। ठहर ना सके कोई पीर फकीर इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत बेताला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द देवे सुखाला सर्ब रखवाला। सोहँ शब्द सिर रक्ख हत्थ। बीर बेताल्यां प्रभ पाए नत्थ। कर कर बेहाल्या विच शब्द जाए मथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर फेर चढ़ाए सोहँ साचे रथ। शब्द वज्जे आत्म तीर। आप चुकाए बध्धी धीर। नेत्र नेत्र नेत्र आप वहाए नीर। झूठी काया झूठा खेतर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द देवे हर अमृत पिलाए साचा सीर। गुर शब्द जो जन कमावे। गुर शब्द मन तन हरा करावे। गुर शब्द साचा घर आप दिखावे। गुर शब्द आत्म दर साचा सर आप नुहावे। गुर शब्द गुरमुख विरला पावे। सच शब्द भागी भरा, जिस जन दया कमावे। सच शब्द रसना जप गुरमुख विरला तरा, जिस हरि पूरन बूझ बुझावे। गुर शब्द गुरमुख विरले कलिजुग वरा, जिस नाम दान हरि भिच्छया पावे। सच शब्द रसना जप, ना उह जन्मा ना उह मरा, अमरापद हरि आप दवावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरा अन्तिम अन्त कलिजुग आपे सद घर लै जावे। गुर शब्द गुर विचार है। गुर शब्द गुरमुख बख्शे चरन प्यार है। गुर शब्द गुरमुख इक्क बहाए साची धार है। गुर शब्द गुरमुख हरि देवे पारब्रह्म अवतार है। गुर शब्द गुरमुख विरला लेवे जिस देवे नाम अधार है। गुर शब्द जो जन रसना सेवे, प्रभ साचा पार उतारनहार है। गुर शब्द इस हत्थ लेवे इस हत्थ देवे, ना हुंदा कोई उधार है। गुर शब्द गुरमुख आत्म रस मेवे, साचा करना वणज वपार है। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे, आपे पावे गुरमुखां साची सार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देवे, एका एक सच करतार है। गुर शब्द गुर दी चाल है। गुर शब्द सच्चा धन माल है। गुर शब्द गुरसिक्खां कट्टे जगत जंजाल है। गुर शब्द सच वस्त हरि साचा देवे, रक्खणी मात संभाल है। सच वस्त आत्म बख्शे हरि साचा लाल है। गुर शब्द गुरमुख साचे विच मात देवे भाल है। गुर शब्द साची मति सच घर दए वखाल है। गुर शब्द आत्म दीपक जोती देवे बाल है। गुर शब्द कलिजुग अन्तिम अन्त बेमुख लाहुंदा खाल है। गुर

शब्द चार कुन्ट बेमुख कराए, नाम धन ना पल्ले जीव झूठे कंगाल है। गुर शब्द बेमुखां पीड़ पिड़ाए, करे दोफाड़ा दाल है। गुर शब्द बेमुख कच्चे फल्ल तोड़े डाल है। गुर शब्द बेमुखां मारे साची मार, ना सके कोई झाल है। गुर शब्द आत्म अन्धेर मिटाए सुहावा ताल है। गुर शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचा रिहा वखाल है। साचा राह जगत न्यारा। बेमुखां ना दिसे कोई किनारा। ना आर ना पार भज्जे फिरन वैहन्दे वहिण, बेड़ा खड़या विच मंझधारा। बिन गुर पूरे ना कोई चुकावे लैण देण, मंझधार ना उतरे पारा। गुरमुख साचे सन्त जन गुर चरन आयण करन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म शब्द ज्ञान दे, चरन प्रीती सच ध्यान दे, साचा शब्द जगत बिबाण दे, आप कराए पार गुरसिख तेरा बण सच सहारा। सच सहारा सहज सुभाए। जो जन रसना सोहँ गाए। मदिरा मास दे तजाए। निज घर वास आप रखाए। दासन दास आप हो जाए। स्वास स्वास सच नाम जपाए। पूरन पुरख प्रभ अबिनाशी आपणी सेवा लाए। सगल वसूरे जायण नास, एका रंग हरि विच समाए। मानस जन्म कराए रास, आप आपणी दया कमाए। गुरसिख कराए बन्द खलास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए। बन्द खलासी बन्द कटावणा। आत्म अज्ञान अन्धेर चुकावणा। गुरमुख साचे प्रभ साचे तेरा आत्म जन कढावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परमानंद दे विच समावणा। परमानंद देवे पुरख पुरखोती। आप जगाए तेरी आत्म साची जोती। विच मात बणाए राजहँस गुरसिक्खां चुगाए सोहँ चोग सुच्चे मोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म आप जगाए कलिजुग सोती। कलिजुग सोया रैण अंध्यारी। सृष्ट सबाई होई हैँस्सयारी। गरीब निमाणे लुट्टण माया धारी। फड़ फड़ कुट्टण, ना कोई पावे सारी। धुर दरगाहे ना छुट्टण, प्रभ साचे लेखा लेवणहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए इक्क कटारी।

✻ १५ जेठ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

चरन कँवल प्रभ लईं रक्ख। वेले अन्त ना होएं वक्ख। उत्तम पाई मानस देही विच्चों चुरासी लक्ख। सृष्ट सबाई वेले अन्तिम कलिजुग होई भक्ख। बेमुख हँकारी विकारी दुष्ट दुराचारी दर दर मारन झक्ख। सुंञे दिसण महल्ल अटारी बिन हरि नामे होए सक्ख। मन्दिर दुआरे गुरदुआरे शिवदवाले गऊ ग्वाले धीआं भैणां पति गवायण कलिजुग होया अन्त हर मनुख। आत्म कंगाले बीर बेताले भर भर पींदे मधिर प्याले, वेले अन्त कौण लए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई गुरमुखां सरन लगाई, तत्ती वा ना लग्गे राई, अंग संग आप हौ जाई, बाहों पकड़ कलिजुग कीने वक्ख।

सरन गुर सच्ची सरनाई, वेले अन्त लए छुडाई, जिथ्थे कोए ना होए सहाई, प्रभ अबिनाशी पार कराए फड़ दोवें बाहीं। विछड़यां कलि मेल मिलाया, आपे फड़ फड़ पाए राहीं। आप आपणा खेल रचाया, बेमुखां दूर रखाई। गुरमुख साचा सज्जण सुहेल अख्वाया, दिवस रैण रैण दिवस आपणे रंग रिहा रंगाई। धन्न धन्न महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा बणत बणाई। गुर चरन नाता। मेल पुरख बिधाता। आपे पुछे वातां। बणे पित माता। जिस जन सच पछाता। सच देवे दातां। नाम निधान चतुर सुजान ब्रह्म ज्ञान हिरदे ध्यान प्रभ रखाता। मूर्ख मुग्ध अञ्याण चतुर सुजान हो मेहरबान प्रभ साचा आप बणाता। चरन धूढ़ इशनान दरस महान आत्म देवे जोत महान करे प्रकाश कोटन भान जिस जन दया कमाता। शब्द सुणाए कान आत्म दीप लगाए बाण, आप बहाए चरन साचे अस्थान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा सगला साथ निभाता। गुर चरन सरन सच्ची दरगाह। गुरमुख साचे दर घर साचे वेख बैठा प्रभ बेपरवाह। एथे ओथे रंग साचा संग दूसर कोई नाह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई लए बचाई, जिस जन साची सरन तकाई , एका रक्खी ओट रखाई, सिर आपणा हत्थ टिकाई, प्रभ साचा सभनी थां। गुर चरन सच द्वारया। गुर चरन भुक्ख निवारया। गुर चरन सुख उपजा रिहा। गुर चरन मुख उज्जल करा रिहा। गुर चरन मरन गेड़ चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणे लड़ ला रिहा। गुर चरन राज जोग साचा भोग। गुर चरन कर दरस हरि अमोघ। गुर चरन ना रहे चिन्ता सोग। गुर चरन प्रभ साचे दी साची सरन उतरे सर्ब विजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे कट्टे हउमे रोग। गुर चरन गुर दुआर। गुर चरन सच्चा घर बाहर। गुर चरन परस प्रभ देवे दरस खोल्ह दस्म दुआर। गुर चरन हरि साची सरना। गुरमुख विरले लाग तरना। जागण भाग ना कलिजुग डरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सहिंसा रोग निवारना। आप मिटाए आप बुझाए तृष्ना लग्गी आग। सच तख्त सच सरकारया। सच सिँघासण हरि डेरा ला रिहा। सृष्ट सबाई करे दासन दास, हरि अचरज खेल वरता रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा पूरन कर्म आप कमा रिहा। सिँघआसण हरि आप सुहाया। पारब्रह्म हरि शब्द जोत जोत सरूपी जोत जगाया। दुष्ट दुराचार वड वड हँकार, प्रभ साचा आदि जुगादि नष्ट करदा आया। सतिजुग साचे कैंटब दैंत सुधार विच्चों पाताल प्रभ धरती उप्पर फेर ल्याया। अचरज खेल हरि बनवारी। दूतां दुष्टां करे सँघारी । जिउँ सुंभ निशुंभ होए हँकारी। अष्टभुज हरि जोत धर, आए सिँघ अस्वारी। रण भूमी हरि आप बणाए, चरन गदा खण्डा चक्र सुदर्शन हत्थ घुंमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुग दूतां दुष्टां करे ख्वारी। सच सिँघासण हरि आप सुहाए। साची जोती प्रकाशना साचा रंग

विच मात दे लाए। साचा शब्द सर्ब थांई हरि रक्खे वासना मार जगत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर दुष्टां जाए सँघार जिउँ रामा रावण घाए। वेला अन्त हरि आप विचारदा। मात लोक विच जामा धारदा। जिउँ रामा सपुत्र दसरथ सच्ची सरकार दा। जोती जोत सरूप हरि, दूतां दुष्टां आण सँघारदा। जामा धार राम अवतार। अचरज खेल करे करतार। विच संसार अन्तिम अन्त करे रावण दुष्ट सँघार। जोती जोत सरूप हरि, विच मात जोत धर, त्रेता जुग कराए पार। त्रेता जुग त्रिया कराए। साचा पिया एह बणत बणाए। आपणा हिया आप कराए। बेमुख रावण बीज जो बिया, आपणी हत्थीं हरि दे सजाए। फड़ फड़ जाए नत्थी खण्ड खण्ड हरि आप कराए। जोती जोत सरूप हरि, राम अवतार सच तख्त ताज ताज भबीखण आप दवाए। त्रेता अन्त निखुट्टे भाग। द्वापर विच मात उठया जाग। अन्तिम जुग जीआं जन्तां तन लग्गी आग। किसे ना धोए पापां दाग। रिक्ख मुन जपी तपी हठी सती सारे गए भाग। जोती जोत सरूप हरि, काहना कृष्ना माधव माध विच मातलोक लगाए भाग। जामा धारे मात घनईआ। द्वापर आप डुबाए अन्तिम नईआ। करे खेल बण सज्जण सुहेल, आप बणाए सर्ब सईआं। जोती जोत सरूप हरि, पंजे पांडों भेव खुल्लईआ। प्रभ अबिनाशी तेरी माया। तेरा भेव आदि जुगादि किसे ना पाया। भाईआं संग भाई हत्थीं आपणी आण लड़ाया। इकना मति पाए उपद्वी,
२०६ ०३ इकना आपणे लड़ लाया। धर्म पुत्त किसे बणाया। आत्म हँकार किसे रखाया। साचा शब्द निशान खण्डा दो धार आप २०६ ०३
चलाया। पांचो पांडो दे ज्ञान, दुर्योधन बेमुख आप कराया। प्रभ अबिनाशी तेरी महिंमा महान, द्वापर अन्तिम अन्त करन दा, आपणी हत्थीं खेल रचाया। वाह वाह वाह तेरा रंग कृष्न भगवान, आप अर्जन रथ चलाया। महांसार्थी आप अख्वाया। महांसार्थी हो रथ चलाए। आपणे हत्थ ना कटार उठाए। एका साचा हत्थ भगतां सिर रखाए। भीखम दरोना करन सैनापत दुर्योधन वड वड हँकार रखाए। आपे जाए मथ, मारे पा पा नत्थ ना किसे बूझ बुझाए। अछल छल आप कराए। खाली हत्थ चलाए रथ, भरम भुलेखे बचन सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, जोत निरँजण अन्तिम अन्त जुग आपणे हत्थ रक्खे वड्याए। दस अठारां एह खेल रचा के। सत्त ग्यारां आप पढ़ा के। सर्ब हँकारा जगत गवा के। दुष्ट दुराचारां नष्ट करा के। जन भगत अधारा पंचम विच मात जै जै जैकार करा के। साचे दर दा साचा राज, हत्थ युधिष्टर देवे साचा तिलक लगाए। त्रैलोकी नाथ सगला साथ, आपणा आप निभाए। जोत सरूपी जोत हरि, विच विचोला बण आप मरवाए। दोवें धड़ हेरा फेरा बणा के महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका रूप, क्या कोई जाणे क्या कोई पछाणे, कलिजुग जीव अन्ध अंध्याणे, आपणी खेल जाए वरता के। द्वापर अन्त कराया। जादव बंस भेड़ भिड़ाया। अन्तिम अन्त उह वी

नष्ट कराया। एका इष्ट आपणा नाउँ रखाया। सृष्ट सबाई अठारां ध्याए गीता रसन अलाया। मोहण मुरारी कृष्न गिरधारी आपणा कर्म कमाया। जुगो जुग हरि साचा विच मात जामा धार प्रगट होए आया। द्वापर अन्तिम अन्त विच मात कराया। कलिजुग जूठे झूठे जामा विच मात दे धरया। जूठा झूठा साचा वर वरया। अन्तिम अन्त प्रभ साचा कुठ बेड़ा डोबे भरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मातलोक दे धरया। जामा विच मातलोक हरि धार। अचरज वरते वरतावे खेल करतार। गुरसिख दे मति समझावे, आत्म साची बूझ बुझावे गुर दर ल्यावे चढ़ाए भेट इक्क कटार। साचा दिवस आण सुहाए, सिँघ आसण प्रभ साचा डेरा लाए। सृष्ट सबाई गुर प्रशादी गुर प्रसाद कर कच्ची कक्ड़ी भेट चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह साचे लेखे लाए। चार कक्ड़ी भेट चढ़ाई। जिउँ दल मक्कड़ी, प्रभ साचा चार कुन्ट दे उठाई। आपणे हत्थ फड़े सोहँ साची तक्कड़ी, सिँघ आसण बैठा देवे तुलाई। किसे हत्थ ना आवे मुड्ड मुड्ड लकड़ी, खाली तन एह देवे जलाई। शब्द अन्धेरी झक्ख झक्खड़ी, अन्ध अन्धेर हो जाई। कोई ना दीसे किसे बांह पकड़ी, सृष्ट सबाई एका भेड़ भिड़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण बैठ सृष्ट सबाई आप हिलाई। उत्तर दिशा हरि वेख विचारे। आप उठाए एका धाड़े। चढ़े धाड़ जिउँ दरयाए हाढ़े। ना कोई वेखे चंगे माढ़े। कट्टे वढ्ढ फटे आपे पाड़े। कलिजुग जीआं दिन आए माढ़े। ना कोई सके संभाल, लाड़ीआं छड्डुण लाड़े। घर घर फिरन कंगाल, ना पल्ले किसे भाड़े। किसे फल ना लभ्भे डार, प्रभ शब्द अन्धेरी सारे झाड़े। प्रभ अबिनाशी तेरी कोई ना झल्ले झाल, सिँघ आसण बैठा आप चबाए आपणी दाढ़े। सृष्ट सबाई आर पार। चौथी कूट होई ख्वार। मूंड मुंडाए ना कोई दीसे सिख सरदार। सृष्ट सबाई आई हार। गल गल लटकण घर घर टंगण लथ्थे सीस कोई ना सके संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह तेरी वरते की वरतार। बेमुखां सीस आप कटाया। धरत मात तेरी गोद विच आप संवाया। कलिजुग मिटाए अन्धेरी रात, बेमुख कोई रहण ना पाया। गुरमुख साचे वेख मार झात, सोहँ तेरे विच टिकाया। आप रखाए आपणा बिरद दिवस रैण पहरेदार आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सच्ची सरनाया। उत्तर दिशा उठे दल। वैहन्दे वहिण वांगू आए चल। कोई ना रोके ना कोई सके ठल। ना कोई मार सके झल्ल। एका शब्द होए खण्डा दो धारी आप कटाए कटे कट कट फट फट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण सके वक्त संभाल। किस वक्त संभालणा किस गोद उठालणा। सृष्ट सबाई आपणा मूल गवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे आप सच्ची पालणा। पच्छिम दिशा वेख विचार। आपणे हत्थ फड़े कटार। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ करे ख्वार। एका शब्द कटाए जिउँ साबण तार। आपणा भाणा

२०७ ०३

हरि वरताए ना कोई सके सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लँघाए एका धार। आपणी कार आप कराए। पच्छिम दिशा मार कराए। चिट रंगीआं फरंगीआं प्रभ साचे दे सजाए। फिरन पैरीं नंगीआं कुरलायण ना होए कोई सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी भाणा आप वरताए। भाणा हरि वरतावणा। तख्त ताज राज सभ नष्ट करावणा। साज बाज किसे रहण ना पावणा। झूठ काज नष्ट हो जावणा। साचा राज प्रभ साचे आपणे चरन दवावणा। धन्न धन्न धन्न देस माझा प्रभ अबिनाशी जोत तेरे विच जगावणा। गुरमुख साचे सन्त जनां सिर उप्पर हत्थ टिकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां शब्द सरूपी अवाज़ आप लगावणा। पूर्ब तेरा पूरा होया लहणा। औखा होया अग्गे देणा। कलिजुग अन्तिम अन्त विच मात ना रहणा। वेख वेख वेख प्रभ बणाए साची बणत सिर धड़ धड़ सीस इक्ट्ठा ना रहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पत झड़ झड़ पत आप करावणा। धड़ां उप्पर लथ्थे सीस। करे कराए आप जगदीश। सृष्ट सबाई जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई करे तेरी रीस। तीजी कूट वेख विचारी। अन्तिम करे प्रभ ख्वारी। चीना तेरी सच सिक्दारी। प्रभ अबिनाशी रसना चीना घर साचा माण द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेख करे करतारी। दक्खणा दिशा दुःख ना लागे। प्रभ पूरी करे इच्छया पूरन भागे। हरि साची पाए भिच्छया जो जन सोए जागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे कराए दिवस रैण सद जागे। चार कुन्ट चोर यारी। प्रभ अबिनाशी वेख विचारी। आपे करे सर्ब ख्वारी। नौ खण्ड पृथ्मी प्रभ साचा खेल खलारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूए बाजी हारी। अछल छल हरि आप करावणा। आपणा भेव हरि छुपावणा। गुरमुख साचे कलिजुग विरले सेव लगावणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जिन जन साचे सतिजुग माण दवावणा। खिच कटार किया विहारा। जो कुछ वरते विच संसारा। लिखाए लेख आप गिरधारा। सिँघ आसण बैठा रिहा वेख, तीन लोक हरि करे विचारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा साचा शब्द आप चलाए नौ खण्ड पृथ्मी खण्डा दो धारा। खण्डा दो धार धर्म दी धुज। प्रभ अबिनाशी राह साचा गया सुझ। कलिजुग गया बीत अग्गे रिहा ना कुझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे चरन कँवल हरि गया लुझ। चण्डी चमके चमक डरावणी। कलिजुग तेरी पूर कराए प्रभ साचा भावनी। वेले अन्तिम अन्तकाल ना कोई छुडावे ना कोई देवे जामनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सरन चरन लाग तेरी पूर कराए भावनी। लग्गो चरन कट्टे फंद। वेला अन्तकाल होए अन्ध। कलिजुग तुटा रसना कच्चा तन्द। सतिजुग चढ़ाए सतिगुर साचा विच मात साचा चन्द। गुरमुखां ख़ुशी वखाए साचा नाम जपाए, दिवस रैण हरि दरस दिखाए, आप रखाए विच परमानंद। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि जन भगतां सदा बख्शिंद। बख्शे हरि हरि भगवन्ता। सदा सहाई साधां सन्तां। मात जोत प्रगटाई, गुरमुखां मन वधाई, प्रभ साचा लए छुडाई आदिन अन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी आप बणाए साची बणता। सच बणत हरि दए बणाई। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त गुरमुखां होए सहाई। आप पछाड़े चबाए आपणी दाढ़े वड वड देव दंत, कोई विच मात रहण ना पाई। भुल्ले सर्ब जीव जन्त, ना कोई अन्त छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अन्त लए बचाई। शब्द अन्धेर कूड़ तुफान। एका आप कराए बली बलवान। अन्ध अन्धेर सृष्ट हो जाए नेत्र ना कोई वेखे ना कोई सुणे कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म करे वाली दो जहान। आपे बणे अमाम मैहन्दी वड मुलाना। गल पाई मणका तसबी, बगल पकड़े आप कुराना। आपे बणे शेख़ मुसायक, आपे पहने मुहम्मदी बाणा। सृष्ट सबाई एका साचा नायक, अचरज रंग हरि वरताणा। भेव ना पाए कोई शेख़ मुसायक, पीर फ़कीरां दस्तगीरां ना कोई करे पछाणा । चार यार संग मुहम्मद चुकया पीणा खाणा । वेला अन्तिम आण ढुकया, मात जोत प्रगटाए हरि दाना बीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांतक सांत करे सीना। हत्थ मुसल्ला बगल कुरान। भेख धारे श्री भगवान। एका सजदा चार कुन्ट कराए लगाए आपणी सरन चरन ध्यान। रोज़ा निमाज़ बांग झूठा सांग प्रभ साचा दए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड स्वांगी स्वांग आपणा स्वांग रिहा रचाए। स्वांगी स्वांग वड शैतानीआं। गल फूलण माला पाए जिउँ मुल्ला मणके गानीआं। बेमुखां आप खपाए कलिजुग करदे रहे बद दिआनीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई कलिजुग तेरीआं आईआं अन्त निशानीआं। पीर दस्तगीरां होण वहीरां। अहिमद मुहम्मद ना कोई देवे धीरा। कुतब गौंस ना कोई मारे धौंस सभ फिरन वांग हकीरां। अयास अबलीस ऐलीशाह सभ दे लथ्थे चीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण बैठ खिच्च चलाया तीरा। रसना तीर चलाया खिच्च। लग्गा मक्के मदीने विच। बेमुख पकड़े पकड़ पछाड़े दर दर फिराए जिउँ कलंदर हत्थ रिछ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह दर दुरकारे खाण पीण ना देवे किछ। साची बिध करे बिधनाना। उम्मत नबी रसूल दी हत्थ बद्धा गाना। अन्तिम अन्त अन्तकाल आ गया, बांहो पकड़ आप कराए इशनाना। गोद मौत सवाल के, प्रभ साचा कर्म कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर फेर अख्वाणा। चार यारी जाए मुक्क। जगत ख्वारी जाए रुक। सच सच्यारी नेड़े आवे ढुक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मुख पाए थुक। बेमुखां सिर पाई शार। झूठा किया जगत विहार। सच कर मंनयां जो घर बाहर । वेले अन्त प्रभ साचे भाण्डा भंनया, जिस संग करे प्यार। धर्म राए दर जाए बंध्या, ना

कोई सके खुल्लार। बेमुख चराग अंध्या क्यों रिहा हरि विसार। तेरे घर रहणा ना थाली छंनयां, क्यों रिहा वस्त संभाल। भार चुकणा ना मिले बन्न्यां, प्रभ मारे शब्द हुलार। उखड़े जड़ जिउँ गन्ना भन्नया, प्रभ एका दए हुलार। बेमुख जीव प्रभ साचे डंनया, ना किया किसे उधार। गुरमुख तेरी वड्याई धन्न धन्न धन्नया, गुर चरन किया प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल कलिजुग तेरी आपे पाए सार। बेमुख जीव बेमुहाणिउँ। क्यों भुल्ले जीव निधानिउँ। कलि बण गए बाल अंञाणिउँ। वेला ना जाए टल, हरि भुन्ने जिउँ भठ्याले दाणिउँ। आप भुलाए कर वल छल वड वड सुघड़ स्याणिओ। नींवदिआं हरि देवे नाम साचा फल, तोड़े आप सर्ब अभिमानया। प्रभ अबिनाशी सद जाओ बलि बलि, जिस दा दित्ता पीणा खाणया। जोती जोत सरूप हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। विष्नूं भगवान भगत उधारना। देवे नाम निधान, जन्म सवारना। आत्म बख्शे सच ध्यान, जो जन प्रभ चरन निमस्कारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा बेड़ा बन्न् कर किरपा पार उतारना। प्रभ अबिनाशी वेद कतेबां बाहरा। सर्ब घट वासी कदे गुप्त कदे जाहरा। घनकपुर वासी सोहँ शब्द लगाए एका नाअरा। साची जोत मात प्रकाशी आपे बणया गुर पूरा शाइरा। मातलोक प्रभ खेल रचासी,
२१० ०३ सृष्ट सबाई आप बहाए घर विच इक्क दाइरा। लाड़ी मौत गोद धरत मात सुलासी, झूठे जूठे सभ बणाए काइरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज अचरज अचरज खेल वरताइरा। अचरज खेल हरि वरताए। दर दर घर घर वड वड ०३ २१०
आप लटकाए। फड़ फड़ चढ़ चढ़ धड़ धड़ कड़ कड़ घर घर इट्ट नाल इट्ट रहण ना पाए। धड़ा धड़ गोला गढ़ आए हड़ कलिजुग कांग गई चढ़, बेमुख जीव सर्ब रुढ़ाए। गुरमुखां लड़ लए फड़, ना जायण हड़, सच मन्दिर जायण वड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सहाए। राम पुरख कृपाल सर्ब दयाल है। सोहँ देवे वस्त साचा लाल, रक्खणी सद संभाल है। गुरमुख तेरी आत्म माला माल, मातलोक ना होए कंगाल है। गुर पूरा कट्टे गलों जगत जंजाल, साचे ढांचे प्रभ लैणा ढाल है। सच वस्त विच रक्खे काया थाल, दीपक जोती देणी बाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं एका रखवाल है। एका राखा धुरदरगाही। सगला साथी हरि रथवाही। दिवस रैण रैण दिवस रिहा एका रंग रंगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत आप बणाई। बणत बणाई जगत गुर। मेल मिलाया लिख्या धुर। प्रभ दर्शन के लोचन सुर। गुर संगत हरि साचा संग रला के। चरन छुहाए सिँघ पाल तेरे घर जा के। साचे दरबार जाए बैठे जोत जगा के। जो बणाया विच मात आपणी देह तजा के। जोत धराई प्रभ अबिनाशी सिँघ पूरन विच जा के। साध संगत हुक्म सुणाए प्रभ आया जोत सरूपी भेख वटा के। गुर संगत बलि बलि जाई दर दरबार बणाया वीह सौ इक्क बिक्रमी

२११
०३

साची नींह रखा के। प्रभ साचा धाम बणाया दिवस सतारां सेव करा के। प्रीतम सिँघ सिँघ आत्म नाल रलया जीवण सिँघ आ के। सोहण सिँघ चक्क छब्बी विच्चों सेवा कीती आ के। पाल सिँघ तेरे सुत सपूत प्रभ दर मंगी मंग चरन कँवल सीस झुका के। गुरबख्श सिँघ हरनाम सेवा कीती मनो लगा के। पूरन विच परमेश्वर बैठा आसण ला के। सिँघ गुरबख्श पिण्ड वरयां चन्दोआ चढ़ाया सिर पड़दा पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई दया कमा के। पंज रुपए गया भेट चढ़ा के, चक्क सताई देवे वड्याई आपणा धाम फेर प्रगटा के। आपणा धाम फेर प्रगटावणा। जोत सरूपी साचा चरन छुहावणा। साचा वेला वक्त फेर ल्यावणा। साचा रंग हरि साचे लावणा। जिउँ वीह सौ इक्क बिक्रमी सतारां हाढ़ साचा खेल रचावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचे पुर लायल साचा धाम फेर सुहावणा। सच धाम प्रभ सुखदाई। सच तीर्थ हरि दे बणाई। अमृत साचा सीरथ प्रभ भर घर आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात देवे वड्याई। आपे दे वडयाईआ। ना पुछे किसे सलाहिया। सद आपणे रंग रंगाईआ। संञ सवेर ना कोई बणाईआ। मेर तेर सर्ब चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा एका एक संग निभाईआ। एका एक रंग रंगावणया। साचा सच करे भेख विच मात आवण जावणया। चार वरन बणाए भैण भ्रात, ऊँच नीच भेख मिटावणया। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत साचा मेघ वरसावणया। विच आत्म बैठा इक्क इकांत, दीपक जोती सच जगावणया। गुरमुख साचे वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी सद तेरा राह तकावणया। क्यों भुल्ला डुल्ला रुल्ला कलिजुग अन्धेरी रात, वेले अन्त किथे मूंह छुपावणया। कौण पुच्छे बेमुख तेरी बात, प्रभ घर आए मती दे समझावणया। सच वस्त हरि देवे सोहँ साची दात, घर झोली भर लै जावणया। बिन गुर पूरे अग्गे कोई ना पुच्छे बात, धर्म राए दर अग्गे फाँसी बण लटकावणया। कलिजुग जीव झूठे धन्दे आत्म अन्धे बिन हरि साचे ना कोई पार लँघावणया। मदिरा मासी पापी गन्दे वेले अन्त खाए सजावणया। गुरमुख साचे आप बणाए साचे बन्दे, सोहँ साचा नाम जपावणया। आप कटाए धर्म राए दे फंदे, हरि आपणे रंग रंगावणया। प्रभ अबिनाशी सद रसना गाओ बत्ती दन्दे, प्रभ लक्ख चुरासी गेड़ कटावणया। आप तुड़ाए आत्म वज्जे जिंदे, आत्म साचा दीपक जोत जगावणया। आप उठाए अन्तकाल आपणे कंधे, दरगाह साची साचे धाम बहावणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आदि अन्त जोती जोत मिलावणया। हरि जोती जोत मिलाणा है। जिस जन साचे रसना गाणा है। जिस आत्म विच वसावणा है। सोहँ वज्जा तीर निशाना है। बज़र कपाटी चीर वखाना है। हउमे पीड़ा आप कढाणा है। अमृत साचा सीर पिलाणा है। बेमुख भुल्ला मूर्ख मुग्ध अञ्याणा है। प्रभ अबिनाशी साचे मार्ग लाए देवे ब्रह्म ज्ञाना है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे सच्चा नाम

२११
०३

निधाना है। नाम निधान नौ निध घर पाओ। गुरमुख गुर घर कारज सिद्ध कराओ। प्रभ मिलण दा साचा वेला, साची बिध सोहँ साची रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटाओ हरस आत्म तृष्ना अग्न बुझाओ। आत्म तृष्ना अग्न आप बुझईआ। जो जन आए चरन सीस निवईआ। साचा शब्द छत्तर सीस झुलईआ। बाल अञ्याण जवान सत्तर बहत्तर पार कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए गुरमुखां एका साचा नईआ। साची नौका जाणा चढ़। कलिजुग वहिण विच ना जाणा हड़्। झूठी काया झूठा धड़। जोत सरूपी विच बैठा हरि। हरि साचा सद हिरदे वसे, प्रभ साचे दा फड़या लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आत्म दर दुआरे अग्गे सद रहे खड़। सोहँ साचा रसना बोलणा। साचे तोल हरि साचे तोलणा। आत्म दर आपणा खुल्ल्णा। प्रभ अबिनाशी आपे अग्गों बोलणा। चरन प्रीती तन मन घोलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्म दुआर तेरा आपे खोल्णा।

✻ १६ जेठ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ✻

२१२ हरि सुख दाता मिलदा सहज सुभाए है। हरि हरि जो जन रसना गाए है। हउमे रोग मिटदा सहज सुभाए, नेत्र पेख दरस गुर पाए। सच संजोग सहज सुभाए, झूठ जूठ मदिरा मास रसना रस तजाए। साचा योग सहज सुभाए, चरन प्रीती जो जन कमाए। दरस अमोघ सहज सुभाए, निज घर वास जीव रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा संग निभाए। गुर मिलावा सहज सुभाए। वर लोड़ींदा जन साचा पाए। सच घोड़ी शब्द आप चढ़ाए। लग्गी प्रीत तोड़ निभाए। ना कोई तोड़े ना तोड़ तुड़ाए। मात जन्म फेर ना पाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। जन हरि हरि हरि सद रसना गाए। काया कोढ़ हरि दए मिटाए। काया लोभ लग्गा दुःख जोड़ जोड़ वख कराए। किरपा कर दुःख देवे हरि सरन पड़े दी लाज रखाए। जो जन आए साचे दर, हरि का नाम ल्या वर, सच घर दए बहाए। जो जन आए तन मन हँकार धर, आत्म बुद्धि जीव गंवार कर प्रभ देवे सख्त सजाए। दिवस रैण रैण दिवस पहर अठ्ठ नेत्र नींद ना आए। तड़प तड़प बिल्लाए। ना कोई आत्म शांत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा भेख सर्ब मिटाए। प्रभ साचा सभ किछ जाणदा। अंदरे अंदर ही जीव पछाणदा। भेव ना गुज्झा किसे बिरध बाल जवान दा। आपे राह प्रभ साचे सुझा, पर्दा फोले ना किसे निधान दा। भेव रखावे क्या कोई गुज्झा, सर्ब जीआं प्रभ आपे आप जाणदा। आत्म दीवा जिस दा बुझा, ना मिटे रंग अज्ञान दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन बचन आप कराए जो गुर संगत विच वखाणदा।

०३

निन्दक चुगल दुष्ट दुराचार कम्बख्त बखील। प्रभ अबिनाशी सार ना पायण उलटी रहे दलील। वेले अन्तिम अन्त बणे कोए ना विच वकील। बिन प्रभ पूरे कलिजुग जीव धुरदरगाहे तेरी सुणे ना कोई अपील। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कोरट आप बैठा कलील। रसना फिक्का बोले कढ़े बचन कठोर। शब्द मार प्रभ मारदा, मानस देही ना चढ़ाई तोड़। साचा शब्द खण्डा दो धार दा, हँस काया किया अजोड़। मिल्या फल दर साचे हँकार दा, पुट्टया दरक्ख्त जो लग्गा बोहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई करे संग तेरे अजोड़। रसन विकारी बोले। दिवस रैण कूड़ कुड़यार प्रभ तोले। प्रभ अबिनाशी मानस देही कौडी मुल ना पाया जिउँ भो छोले। शब्द सरूपी सच्चा हँस उडाया। झूठी माटी मूल ना बोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे पिता पूत दुःख हरे, चरन बिनन्ती आए करे, जन्म मरन दे कटाया। पिता करे पूत अरदास। प्रभ अबिनाशी कर बन्द खलास। किरपा कर साचे हरि आप चुकाए जम की फास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच्चों कीना पास। हरि जोत धरी विच संसार है। एका शब्द साची धार है। दूजा करना चरन प्यार है। तीजे हउमे रोग देणा निवार है। चौथे ऊँच नीच भरम गंवार है। पंजवें सभ तों उत्तम आप हरि वड सरदार है। छेवां इक्क वेखण आत्म सच्चा यार है। सतवां परखणहार इक्क दातार है। अठवां अट्ठां दा सरदार है। नौ निध जिस द्वार है। दसवां देवे आप खुल्ह़ार है। जिथ्थे वसे हरि करतार है। ना दूजी वस्त कोई नाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क सरदार है। दस इक्क ग्यारां प्रभ चरन निमस्कार है। दस दो बारां खिड़ी प्रभ सचे दी गुलज़ार है। दस तिन्न तेरां आप चुकाए लक्ख चुरासी गेड़ार है। दस चार चौदां चौदां लोक कराए सच्चा सौदा इक्क वपार है। दस पंज पंदरां प्रभ अबिनाशी सोलां कला पवण जोत विच पसार है। दस सत सतरां सोहँ खण्डा हत्थ उठाए जिस दीआं तिखीआं दोवें धार है। अट्ठ अठारां गऊ गरीबां प्रभ रच्छया करे, ना कोई जाणे चूड़्ह़ा चम्यार है। दस नौ उन्नी भुक्खयां नंगयां प्रभ देवे सोहँ चुन्नी, पर्दा पाए आप निरँकार है। दस दस बीस चरन प्रभ छत्तर झुलाए सीस, सोहे तख्त सच्ची सरकार है। बीस इक्क इकीस सृष्ट सबाई विच रविआ साचा जगदीश है। क्या कोई करे प्रभ साचे दी रीस है। जिस जन देवे माण तिस छत्तर झुलाए सीस। ना कोई चतुर सुघड़ स्याण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जाए पीस। प्रभ अबिनाशी हरि गिरधारी। सतिजुग साची करे कारी। सच धर्म दी नींह उसारी। चार वरन बणाए चार दीवारी। चारों पासा एका भारी। एका नाम शब्द उडारी। सच शब्द सच अटारी। जिस तन वसे हरि मुरारी। भुल्ले जीव क्यों गंवारी। ऊँच नीच दा भेव निवारी। आत्म होए ना जीव हँकारी। प्रभ अबिनाशी पाए सारी। आत्म रहे सद खुमारी। प्रभ

अबिनाशी दिवस रैण रैण दिवस बणया रहे लिखारी। गुरमुख साचे जिन प्रभ बूझ बुझारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा देवे निवारी। ऊँच नीच ना जात पात। सर्ब जीआं दा हरि एका पित मात। सोहँ शब्द प्रभ देवे साची दात। चार वरन सरन लगाए, आप बणाए भैण भ्रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्धेरी आप मिटाए रात। आत्म अन्धेरा देणा कढ्ढ। भरम भुलेखा जाणा छड्ड। एका रूप हरि साचा वसे काया अन्धेरी खड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि सर्ब जीआं आप लडाए लड। सर्ब जीआं हरि लाड लडाए। आप आपणा कर्म कमाए। धन्न धन्न धन्न गुरमुख जो हरि साचा रसना गाए। आप मिटाए आत्म दुःख, सिर आपणा हत्थ टिकाए। खेल कराए मात कुक्ख, सोहँ जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द अधार सर्ब रखाए। इक्क शब्द सर्ब अधारी। इक्क शब्द नाम खुमारी। इक्क शब्द हरि देवे वड सिकदरी। इक्क शब्द गुरमुख साचे बण जाओ वपारी। इक्क शब्द हउमे रोग दए निवारी। इक्क शब्द बन्द बन्द कट्टे बिमारी। इक्क शब्द आप दस्से साची धारी। इक्क शब्द आत्म मिटाए सर्ब हँकारी। इक्क शब्द आत्म करे जोत उज्जयारी। इक्क शब्द हरि दस्से नैण मुँधारी। इक्क शब्द मेल मिलावा हरि निराधारी। इक्क शब्द साचा निभाए संग ना आत्म होए हारी। इक्क शब्द मानस जन्म ना होए भंग, जिस जन पूरन पूरन बूझ बुझारी। इक्क शब्द आप रंगाए एका रंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन लग्गे तेरे चरन द्वारी। इक्क शब्द जगत उधार है। इक्क शब्द मातलोक सच्चा सरदार है। इक्क शब्द सृष्ट सबाई देवे आप दातार है। इक्क शब्द चार वरन करना सच वपार है। इक्क शब्द राजा राणा सभ फड़ना जगत बणाउणी साची धार है। इक्क शब्द वड वड जोध सूरबीर कोई ना अग्गे अड़ना, खायण सभे मार है। इक्क शब्द राउ उमराउ वड शाहो अग्गे हो ना लड़ना, प्रभ कर दुखिआर है। इक्क शब्द गुरमुख साचे तेरे अंदर वड़ना, एका करना चरन प्यार है। इक्क शब्द कलिजुग माया विच ना सड़ना, झूठी दुनियां विच ना वड़ना, पंजां चोरां नाल ना लड़ना, एका देवे शब्द कटार है। इक्क शब्द जिस दरगाह साची खड़ना, धर्म राए ना अग्गे फड़ना, घर साचे जाए वड़ना, जिथ्थे लग्गा सच्चा दरबार है। इक्क शब्द रसना जपणा, उतारे पपणा कलिजुग माया विच ना तपणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे ठांडे घर बाहर है। इक्क शब्द हरि साचा देवे जगत अमोल। इक्क शब्द गुरमुख साचे अन्तकाल कलिजुग जाए तोल। इक्क शब्द आत्म सच ज्ञान दवाए, जो जन आप रहे अनडोल। इक्क शब्द प्रभ अबिनाशी रसन उचारे बोल, कूक वजावे ढोल। इक्क शब्द चल्ले उप्पर धवल, ना समझे कोई मखौल। इक्क शब्द सृष्ट सबाई जाए मवल, खिड़े वांग कँवल सच्ची गुलज़ार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां

कर्म रिहा विचार है। इक्क शब्द जगत निशान है। इक्क शब्द साची प्रीत गुर चरन ध्यान है। इक्क शब्द हरि देवे वस्त दस्त बिरध बाल अञ्याण जवान है। इक्क शब्द साचा बख़्शे गुरमुखां प्रभ ज्ञान है। इक्क शब्द बख़्शे प्रभ अबिनाशी लैणा रसन वखान है। इक्क शब्द कट्टे काया रोग जिस देवे हो मेहरवान है। इक्क शब्द धुर दरगाही सच संजोग ना कोई विछोड़े ना विछड़ियान है। इक्क शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां मिल्या हरि दाता पुरख सुजान है। इक्क शब्द सुरत ध्यान है। इक्क शब्द मेल भगत भगवान है। इक्क शब्द दर घर साचे मिलदा साचा दान है। इक्क शब्द आप उपजाए साची धुन सुणाए कान है। इक्क शब्द जीव तेरी काया विच इक्क ख़ान है। इक्क शब्द रसना जप जप कर आपणा आप पछाण है। इक्क शब्द जिउँ वक्त लँघाए छुप छुप अन्त आवणा हत्थ ना ओथे कोई छुडाण है। इक्क शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच बख़्शे आत्म ब्रह्म ज्ञान है। सच तीर्थ तेरी यात्रा। चरन धूढ़ इशनान, गूढ़ी प्रीत गात्रा। एका सोहँ शब्द सरदार, साची शरअ शरायत इक्क हदीसा गुर संगत गुर चरन करना प्यार। आत्म विकार ना करो माण, रोग हँगता ना रहणा सच दरबार। गुरमुख गुरसिख बणाए साची संगत जिस आत्म ना होए हँकार। प्रभ दर मंगी साची मंग, दूजा तीजा भरम दए निवार। भुक्खयां नंगयां प्रभ आप बणाई साची संगत, साचा शब्द भरे भण्डार। राजे राणे फिरन मंगत, दर साचे साची वस्त ना मिले भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा साचा देवे नाम अधार। सच गुण हरि नाम धनवन्त। लैणा कन्न सुण, होए मेल भगवन्त। गुरसिख साचे नाम विचारे गुण अवगुण देवे वड्याई विच जीव जन्त। कोटन कोट पापी साचा प्रभ करे पुनीत जो जन रसना गाए सोहँ साचा मंत। झूठी काया लग्गे ना कलिजुग घुण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। बणत बणाए आत्म बंधे धीर। गुरमुख साचे सन्त बणाए, आत्म अमृत पिलाए सीर। साचा कन्त आप अख्वाए, गुरमुखां करे शांत सरीर। जीव जन्त हरि विच समाए, क्या कोई जाणे प्रभ की करे अखीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराई सृष्ट सबाई दो फाड़ी चीर। दो फाड़ा दलना। एका गेड़ा शब्द हलना। झूठा झेड़ा जगत खलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सद करे पालना। पाल पोस हरि आप समझाए। सच नाम सच काम सच राम घर दे वधाए। सोहँ पीणा साचा जाम, आत्म तृष्ना दे बुझाए। पूरन होयण गुरसिख काम, जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत फल साचा हरि आप खवाए। हरि हरि हरि कन्त सुहेलड़ा, जिस जन रावणा। प्रभ अबिनाशी साचा मेलड़ा, सहजे सहज करावणा। आत्म तन निमाणी सेजड़ा हरि आसण आप लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा दरस दिखावणा। कलि मेल सहज सुभाए। जो

जन रसना हरि साचा गाए। कौडी मुल्ल ना लग्गे, प्रभ साचा दए सुणाए। एका आत्म आपणी बंधे, साचे मार्ग आए। प्रभ आप लगाए बेड़ा बन्ने ना कोई विच डुबाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि साचा मेल मिलाए। मिल्या मेल हरि कन्त प्यारया। विछड़ ना जाए सन्त गुरमुख ,प्रभ साचा तोड़ चढ़ा रिहा। कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त, हरि आपणा आप छुपा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हरि रंग विच आप समा रिहा। चार जेठ हरि दया कमाई। आप आपणा विच सिख टिकाई। जोत सरूपी एह रचन रचाई। पंचम जेठ मिले वड्याई। छिछम सप्तम हरि रंग रंगाई। अष्टम जेठूवाल हरिसंगत विदा कराई । आप आपणा संग रक्ख पिण्ड चुभाल डेरा लाई । रैण सबाई होया हरि जस, घर इन्द्र सिँघ भाग लगाई। अमृत वेले उठ गुर संगत कीती अग्गे धाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गग्गो बूए चरन छुहाई। गगो बूए दिवस लँघाई। देवे भुच्चर जा वड्याई। भागां भरी रात सुहाई। नौ जेठ हरि दए लिखाई। घर सिँघ तेजा भाग लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आपणी गोद लए उठाई। रैण सबाई मंगलाचार। दसवां दिन आया विच्चों संसार। गुर संगत प्रभ साचे करी त्यार। अमी शाह आए पधार। अचरज खेल करी करतार। भुल्लड़ा रुल्लड़ा हरि लाया पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे तेरी सार। दसवें दस दस नर नरेश, माझे देस विच कर जोत प्रवेश, रैण सबाई दिया उपदेश, प्रभ अबिनाशी साचा वेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणो झूठा भेस। ग्यारां जेठ हरि रंग रंगाया। गुर संगत बेड़ा बन्नू वखाया। आप आपणा संग निभाया। कल्सीं डेरा आण लाया। भरम भुलेखा सर्ब कढाया। आपे मति दे समझाया। दूई द्वैत पर्दा लाहया। हँकार विकार सर्ब गंवाया। एका धार आप बंधाया। एका बूंद चरन कँवलार, हरि आप पिलाया। एका बख्शे आत्म प्यार, दूई द्वैती ना रहे काया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। ग्यारां जेठ मिले वड्याई। भिन्नड़ी रैण हरि साचे खेल कराई। उलटी लट्ठ सृष्ट सबाई फिराई। चार कुन्ट दहि दिशा प्रभ बैठा दे फिराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। गुरसिक्खां गुरमुखां प्रभ साचा शब्द जणाई। आत्म मिटाए दुक्खां भुक्खां हरि साचा सेव लगाई। सुफल कराए मात कुक्खा, मानस जन्म सुफल कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बारां जेठ सिँघ चेत घर आसण लाई। चेत सिँघ घर आसण लाया। साचा लेख आप लिखाया। सिँघ सवरन माण दवाया। आप आपणी सरन रखाया। चरन प्रीती तोड़ निभाया। साची नीती प्रभ करे विच मात रुशनाया। साची धीरज प्रभ साचे दीती, सुरजीत आप समझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अतीत सद रखाया। साची मति आप समझाए। इक्क धरवास सर्ब परिवार दवाए। पूरन आस गुर आप कराए। चेत सिँघ

तेरे दर घर प्रभ आप सपूत तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शंघारा सिँघ एका रक्खे आपणे शब्द बंध बंधा के। बारां जेठ दिन आण ढलया। प्रभ अबिनाशी साचा चल्लया। खालड़े आए चिर थोड़ा जिहा खड़या। सृष्ट सबाई वेखे बाहर प्रभ अबिनाशी फेरे पल्लया। जोती धार ना जावे झलया। गुर संगत शब्द रसना गाए वाह वाह रंग सुहलया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे बण गया वलया छलया। वल छल आप करा के। सृष्ट सबाई भरम विच पा के। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ साचा धर्म रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए माया बंधन आप कटा के। बारां जेठ हरि शाम घनईआ। डेरा लाए उप्पर जा रईआ। साचे शब्द दी इक्क चलाई साची नईआ। वेख आए सुणे लुकाईआ। प्रभ अबिनाशी भेव ना पईआ। कौण झूले कवण झुलईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच आप समईआ। साचा धाम हरि भाग लगाए। गुर संगत साचा माण दवाए। गुरमुख सिँघ अगों मिल्या आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे घर लै चल्लया संग रलाए। गुर पूरा घोड़ चढ़ाया। वाह वाह सुहणा वक्त सुहाया। राह जांदा हरि साचा नाम दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप वरताया। घत्ती गए सर्ब वहीर। वाहो दाही पैंडा चीर। एका शब्द चलाया प्रभ साचे तीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तुड़ाई आत्म धीर। शब्द तीर इक्क चला के। आत्म अग्न एका ला के। आप आपणा भेव छुपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग कराए नग्न मारे पुट्ठे टंगा के। वड संसारी खेल अपारया। आप रखाए वड वड हंकारया। सभ बणाए दुष्ट दुराचारया। आत्म बुद्धि सभ होई भृष्ट, विष्टा रक्खया मुख जीव गंवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप बैठ अडोल रिहा निरंकारया। दिवस रैण रिहा बोल बुलारा। बेमुखां तन रिहा अफारा। आवण जावण बोलण वारो वारा। एका दर दरवेश पुकारन हज़ारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर तों सभ दुरकारा। ऊँचे कूकण कूक पुकारन। साचे प्रभ दरस आपणी धारन। आत्म होई सभ हँकारन। अचरज वेखण खेल प्रभ का की वरतावे कारन। महाराज शेर सिँघ उलटी देवे मति, दुध्ध पुत्त दी मारे मारन। रसना विकार जिस चलाया। शब्द बुखार आप रखाया। बत्ती धार विच आप वहाया। पुठ्ठा मुरदार मुख रखाया। कूड़ कुड़यार थुक्कां मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूतां दुष्टां देवे आप सजाया। दूत दुष्ट जीव दुराचारी। अट्ठे पहर रहण हँकारी। मूर्ख मुग्ध ना समझे जीव गंवारी। ना कोई जाणे भाणा हरि की रिहा कर, क्यों बैठा मोनधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दर दुरकाए ना देवे दरस मुरारी। हरि दरस जो जन पावे। निव निव गुर चरन आवे। खिवण खिवण हरि खिवण कर साची दात हरि झोली पावे। आत्म हरि

साची जोत जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां निताणयां गले लगावे। हंकारया दुराचारया, आए द्वारया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी मारे मारया। गरीब निमाणयां बाल अञ्याणयां प्रभ आपणा संग निभाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद आपणे रंग रंगाणयां। साचे खेल हरि खिलारी। क्या कोई जाणे जीव गंवारी। भुल्ले भुलाए ना कोई पावे सारी। गुरमुख साचे प्रभ साचा जाए तारी। गिला गुस्सा रोसा ना कोई मन विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए आपे आप जीव जन्तां करे विचारी। तेरां जेठ हरि साचा गुर। आण पहुंचया राम पुर। मेल मिलाया गुरमुख मिल्या धुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी घनक पुर। घर घर दर दर सच्चे हरि साचा वस्सया। जोत सरूपी खेल कराए वरताए साचे चन्द चढ़ाए मिटाए अन्धेर मस्सया। एका शब्द लगाए बाण वाली दो जहान सृष्ट सबाई कस्सया। धुर फ़रमाण जोत सरूपी विच मात आण सतिजुग साचा दस्सया। जेठ चौदां रक्खणा याद। प्रभ डेरा लाया नौरंगाबाद। भूत प्रेतां दवे दैतां आपे वेले प्रभ जिउँ वेलणे विच कमाद। आप मिटाए तन मन काया पीड़ा, एका दवाए रसना सोहँ साचा स्वाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घर फेर करे अबाद। पंदरां जेठ दिवस भागी भरया। प्रभ अबिनाशी कर्म साचा करया। पिण्ड बुग्घे घर आए वड़या। गुर संगत माण दवाए सिँघ सिँघासण उप्पर खड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
२१८ ०३ जो जन सरनी परया। सिँघआसण हरि डेरा लाए। गुर संगत सारी संग रलाए। आपणा अंग संग संग अंग आप निभाए। २१८ ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जगत ज़ंजीर फंद कटाए। हरि का भाणा हरि समझाया। आपणा बाणा आप वखाया। जो वरते भाणा सो रिहा लिखाया। हत्थ कटार उठावणा आप अख्वाया। कट्ट कट्ट कट्ट हरि कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झट्ट पट पट झट्ट एह खेल रचाया। अचरज स्वांग वरते जिउँ बाज़ीगर नट, पुट्ठी सिध्धी छाल लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार करावना। खै खै खै सर्ब संसार मिटावणा। रहि रहि रहि विच मात गुरमुख विरला रहि जावणा। भाणा सहि सहि प्रभ साचे सिर हत्थ टिकावणा। कलिजुग उलटी नईआ हरि आप चलावणा। बेमुख कलिजुग वहे वहे ना किसे अटकावणा। गुरमुख साचे दर दुआरे अग्गे रहि रहि प्रभ साचा होए सहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां फड़ाए आपणा दामना। आप फड़ाए आपणा दामना। वेले अन्त होए जामना। एका संग आप निभावणा। पूर कराए सर्ब साचा गुर गुरसिक्खां भावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग रखाए जिउँ बरसे मेघ सावणा। जिउँ सावण मेघ बरसदा। पपईआ बूंद स्वांती नूं तरसदा। तिउँ कलिजुग जीव अन्तिम अन्त बिन गुर पूरे रहे भटकदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरमुख सन्त प्यारे कदे ना दर तों झिड़कदा। खिमा गरीबी नीचो नीचा।

प्रभ अबिनाशी सर्ब जीआं देवे दान, हरि आत्म सूचो सूचा। साचा शब्द वज्जे धुन्कान, आप सुणाए गली गली कूचो कूचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहज धुन अति उत्तम ऊँचा। सोलां जेठ सहज धुन गावणा। प्रभ अबिनाशी पूर कराए भावना। गुर संगत तेरा आवणा जावणा लेखे लावणा। बारां दिवस बारां रास प्रभ एका रंग रंगावणा। हरि साचा शाहो शाबाश, सद हिरदे विच वसावणा। करे अन्तिम बन्द खलास, दरगाह साची आप बहावणा। कर्म धर्म सच कमावणा। झूठा ठूठा प्रभ साचे भन्न वखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच्चों लक्ख चुरासी आप कढावणा। गुर संगत सति कमाई है। चरन प्रीती जिस कमाई है। प्रभ साचा दिन्दा वधाई है। औखी दिसे करनी जुदाई है। आदि जुगादि एह बणत बणी आई है। मेल विछोड़ा इक्क अचरज खेल रचाई है। आत्म होए ना कदे अजोड़ा, ना जीव होए दुःखदाई है। शब्द सरूपी प्रभ देवे साचा घोड़ा, गुरसिख तेरी विच मात अट्ठे पहर चढ़ाई है। पंचां चोरां संग इक्क शब्द कराए लड़ाई है। सोहँ इक्क जमायत सच पढ़ाई है। ऊँच नीच जात पात सर्ब मिटाई है। आत्म कीनी अन्धेरी रात, सोहँ साची भट्ठी आप चढ़ाई है। अंदर वेख मार झात, गुरमुख साचे तेरे अंदर सति सरूपी इक्क रुशनाई है। चरन प्रीती हरि देवे साचा नाउँ जिस जन भुल्ल बख्शाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह तेरी सच वड्याई है। जिस चरन प्रीती तोड़ निभाई है। हरी हरि जन घर सच सुहावंदे। हरी हरि जन इक्क रंग रंगावंदे। हरी हरि जन इक्क जोत अख्वावंदे। हरी हरि जन इक्क गोत बणजावंदे। हरी हरि जन दुरमति मैल प्रभ दर धुआवंदे। हरी हरि जन नर हरि नर हरि विच समावंदे। हरी हरि जन लिख्या धुर प्रभ दर ते पावंदे। हरी हरि जन हरि हरि हरि इक्क जोत जगावंदे। हरी हरि जन हरि दरस कर आत्म तृखा भुक्ख गवावंदे। हरी हरि जन हरया करन मन तन शब्द लैण साचा धन, दिवस रैण रसना गांवंदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग मिलावंदे। हरि जन हरि का रूप है, क्या कोई करे विचार। हरि जन हरि का रूप है, हरि देवे जोत अकार। हरि जन हरि का रूप है, हरि देवे शब्द सच भण्डार। हरि जन हरि का रूप है, देवणहार इक्क दातार। हरि जन हरि का रूप है, आप चलाया सतिजुग साची कार है। हरि जन हरि का रूप है, नीचो ऊँच ऊँचों नीच प्रभ साचे दी साची कार है। हरि जन हरि का रूप है, आत्म सूचा सौदा दूजा सारा जगत विहार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां निताणयां देवे माण आपणी रसना शब्द उचार है। हरि जन हरि का रूप है, हरी जन अपारी। किरपा कर हरि गिरवर गिरधर देवे माण मुरारी। दर घर हरि साचा देवे वर, साचा नाम भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर सर्ब देवे सच्ची सरदारी। ओअं इक्क आकार है। जोत सरूपी सर्ब पसार

२१६
०३

है। सोहँ शब्द सृष्ट अधार है। वरते सतिजुग आपणी साची धार है। सच ब्रह्म हरि रिहा विचार है। पूरन कर्म सच करे विहार है। साचा धर्म विच संसार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर अवतार है। हरि साचा भगत अधार है। सृष्ट सबाई तीन लोक इक्क सिक्दार है। सच्चा तख्त सच्चा सुल्तान, आपे वड फौजदार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा दिया ताज पहनाए सिर बंधे आपणे दस्तार है। सच दस्तार हरि सीस टिकाए। सच जगदीश आप कर्म कमाए। सच धर्म विच जगत धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाणा आप पहनाए। किरपा करे हरि निरँकारा। देवे दान अपर अपारा। सतिगुर मनी सिँघ मंगया सच इक्क दुआरा। साचे प्रभ रंगया भरया शब्द सच्चा भण्डारा। सिरों कदे ना होए नंगया, दूजा सिर बंधे आप तेरे दस्तारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा सच वरताए जगत विहारा। किरपा निध हरि किरपा करी। आपणी बिध आपणे अग्गे धरी। जगत निमाणयां प्रभ दरगाह ऊँची करी। लंगर सेवा घर साचे घाह खुताणया, प्रभ साचा आए देवे सच वरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजी दस्तार गुज्जर सिँघ तेरे सीस धरी। सेव करी हरि मन भाई। दिवस रैण दर इक्क कराई। तन मन धन गुर लेखे लाई। कोई ना आया जन लोक लज्जया सर्ब तजाई। वेला अन्तिम अन्त अन्त आया हरि साचे पैज रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत विच साध संगत दित्ती वड्याई। सेवक तेरी सेवा घाल। चरन प्रीती निभ गई नाल। तेरी काया सांतक सीतल कीती आप होयो कृपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे कट्टे जगत जंजाल। जगत जंजाला तेरा कटाने। साचा हँस विच्चों आप उडाने। आप आपणी अंस बणाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहिँसा विच्चों उज्जल कराने। खिमा गरीबी चाकरी प्रभ साचे मन भाई। जिस दा कोई साक सज्जण ना भैण भ्रा माई। उस दा होया आप सहाई। जल थल बण तृण सर्ब घट रविआ, सर्ब थाईं रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां निताणयां निलज्जयां लज्ज आप रखाई। रक्खे लाज लाज गुर पूरा। चरन प्रीती घर साचे कीनी सेवा। साचा फल हरि आप दवाए मुख लगाए सोहँ साचे मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम माण दवाए आप बहाए देवे वड्याए वड देवी देवा। गुरसिख तेरा अग्गा नेड़ा। आप उजाड़े तेरा काया खेड़ा। चुक्क जाए तेरा जगत झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी तेरा किया नबेड़ा। किरपा करे हरि हरि निरँकारी। साची बख्शे चरन सेव प्यारी। जगत लिख्त सेव कमाए। वाक भविख्त हरि आप लिखाए। दिवस रैण रिहा कलम चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जोत धर आप अकार कराए। आप कराए जोत अकारा। साचा देवे शब्द अधारा। चरन प्रीती हरि देवे दिवस रैण अपारा। महाराज शेर

२२० ०३

सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर चौथी भेट करे दस्तारा। परषोतम पूरन पुरख अवतारा। परषोतम आप बंधाए साची धारा। आप आपणा साचा करे सद विहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल जाओ बलिहारा। जाओ बलिहार गुर पूरया। साची दिसे धार खड़ दर हज़ूरया। पूर्ब कर्म विचार हरि साचा देवे नाम सरूरया। गुरमुखां जन्म सवार हरि आसा मनसा पूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला हरि साचा भरपूरया। साची किरत कर्म गुर कीना। आपणे रंग विच आपे लीना। धन्न धन्न गुरसिख साचे प्रभ अबिनाशी रसना चीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण वड दाता भगवान वड दाता बीना। वड दातार गऊ गरीबां सुणे पुकार। मातलोक विच जामा धार। किरपा करे आप बनवारया। दर घर आए जाए तार। हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं प्रभ साचा दए सँघार। जन भगतां जन्म सुधारया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब कर्म रिहा विचार। दर्शन सिँघ सिर धरी चौथी दस्तार। प्रभ अबिनाशी साची धार। पूरा किया जगत विहार। प्रीतम सिँघ पंजवी बन्ने सिर तेरे दस्तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे करे आप विहार। जगत विहारा आप कराया। सच दस्तारा सिर बन्नाया। सच दातारा आप अख्वाया। गुर गोबिन्द दोए बाहर रखाया। गुरमुख तैनूं एका रंग रंगाया। तीन लोक दी बूझ बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विहार पहला आप कराया। पंचम बणाई हरि इक्क पंचायत। गुर गुर गरीब इक्क शरायत। जात पात मिटे कुरायत। एका सोहँ शब्द साची हदायत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणाए बणत। साची बणत आप बणाए। सर्ब जीआं हरि रिहा जणाए। कोई भन्न ना सके राए। हरि देवे डन्न दरगाह साची कोए ना थांए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख ना कोए मिटाए। लिख्या लेखा ना किसे मिटावणा। सोया नाग ना किसे जगावणा। आत्म डंग हरि इक्क चलावणा। लक्ख चुरासी तंग प्रभ गर्भवास रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए क्यों कृष्ना ग्वालड़ा। गोपाल ग्वालड़ा अञ्याणा बालड़ा। भरम भुलेखा ना मन विच डालड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ लालड़ा। सोहँ लाल सच्चा धन माल। गुरमुख साची वस्त रखणी मात संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे हरि ना होणा कदे कंगाल। गुर पूरे वड वडयाईआ। गुर संगत लक्ख लक्ख वधाईआ। प्रभ साचे दी साची सेव कमाईआ। दिवस रैण रैण दिवस तन मन सेवा लाईआ। साची धुन शब्द रस लैण, आलस निंदरा मगरों लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर पंचम जेठ वीह सौ दस बिक्रमी गुर संगत तेरे सीस दो हत्थीं छत्र झुलाईआ। सतिजुग तेरी साची नींह रखाईआ। गुरसिख विच्चों मात सवरन इट्ट इक्क इक्क चुक लगाईआ। अमृत आत्म प्रभ साचे सिंच प्रेमी छिट इक्क इक्क गारा कर मंग रलाईआ।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाडी आप बण आपणी हत्थीं डओढ रखाईआ। आप करे सतिजुग तेरी उसारी। दिवस रैण रैण दिवस होए विच मात दे भारी। चढ़दी आए आपे आपणी वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे धरत मात तेरी इक्क बणाए सच्ची सच अटारी। धरत मात सच मन्दिर बनाणा। जोत सरूपी हरि साचा दीप जगावणा। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ साचा माण दवावणा। आपे वसे विच हरि जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन मन मन्दिर विच साचा रंग नाम रंगावणा। साचा नाम रंग चढ़ाए। गुरमुख साचे विच बहाए। जो मात लए लड़ लाए। हरि अबिनाश माण दवाए। होए आप सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी वड वड वडयाईआ। गुर संगत दिवस रैण रैण दिवस गुण हरि गाईआ। गुण गायण गुर विचार है। प्रभ साचा पावे सर्ब दी सार है। दु:ख भुक्ख देवे सर्ब निवार है। चार कुन्ट गुरमुख तेरे सीस छत्र झुलार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम बद्धी सिर दस्तार है। सच दस्तार आपे बन्नूया। जगत विहारा झूठा धंदया। सचा ताणा प्रभ साचे तणया, ऊँच नीच राउ रंक अन्नूा काणा प्रभ एका संग साचा सन्गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन सेव कमाई मानस जन्म ना होवे भन्गया। हरि सच्ची तेरी सरदारी। गुर संगत तेरी प्यारी। चरन कँवल रक्ख मुरारी। उप्पर धवल ना होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाई है। होई काया अन्त प्रानीआं। आया काल अन्त निशानीआं। हत्थां पैरां अक्खां ना सर्ब संभालीआं। सर्ब गुणां भरपूर प्रभ देवे सर्ब वत्थां आपणे रंग रंगानीआं। साचा लेख लिखाया प्रभ साचे विच मथ्था साची जोत विच ललाट जगानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं धर दस्तार, कर प्यार गरीब निमाणा औखी घाटी आप चढ़ाणीआं। सच पंघूड़ा आपणा झूल। आप झुलाए प्रभ अबिनाशी ना जाए भूल। आपणी हत्थीं गोद उठा ल्या तेरी कटाई सूली आप बणाई सूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाया तेरा मूल।

❊ १७ जेठ २०१० बिक्रमी माई दे गृह पिण्ड तरन तारन ज़िला अमृतसर ❊

सति सन्तोख शब्द भण्डारा। प्रभ साचा देवे नाम आधारा। गुरमति साचा तत्त, बुध मति विच विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आए चल घर बाहरा। घर बाहर हरि चरन छुहाया। घर साचा आण सुहाया। पूरन आसा प्रभ आप कराया। दिवस रैण जिस आत्म प्यासा दे दर्शन शांत कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रखाया। किरपा करी आप भगवान। दर्शन दिया सच घर आण। आपे कट्टे जम की कान। लक्ख चुरासी गेड़ मिटाण।

घनकपुर वासी किरपा करे आप महान। प्रभ साचा करे अन्तिम बन्द खलासी, साचे शब्द बिठाए विच बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आदि जुगादि जोती जोत मिलाण। हरि मिलण दी सद आस रखाई। दिवस रैण रैण दिवस मन तृखा बंधाई। प्रभ अबिनाशी साक सैण आप इक्क बण जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर सतिगुर पूरा विच मात देवे वड्याई। जिउँ भैण नानकी आण तराई। मात वडयाईआ, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। स्वास स्वास स्वास रसना गाईआ। बिरथा स्वास कोई ना जाईआ। मन मन मन गुरसिख आत्म धीर धिराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपे होया आप सहाईआ। अन्त सहाई होया आण। आप चुकाए जम की कान। आप उठाए बिठाए विच शब्द बबाण। चरन लगाए पार कराए गेड़ चुरासी। आप कटाए बन्द खलासी। आप कराए घनकपुर वासी। सचखण्ड निवास रखाए पुरी घनकवासी। करे बन्द खलासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासी। मानस जन्म हरि आप सुधारया। देवे दरस आए चल द्वारया। लहणा देणा प्रभ सर्ब चुका रिहा। साचा गहणा शब्द तन पहना रिहा। गुर संगत सद सद सद मिल बणया सचखण्ड, सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत बन्द खलासी आप करा रिहा। जम की फाँसी हरि देवे तोड़। चरन प्रीती निभाए ना रहे अजोड़। आप चढ़ाए सोहँ शब्द साचे घोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नरायण नर जन खड़े दोवें हत्थ जोड़। दोए जोड़ करे अरदास। प्रभ अबिनाशी सद वसे पास। अंतम अन्त प्रभ साचा पूरी करे आस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत करे प्रकाश। आत्म जोत प्रकाश कर। एका आपणा दास कर। सोहँ शब्द सच्चा धरवास धर। कलिजुग दुखड़ा नास कर। अन्तिम आपणा दासन दास कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस हरि हिरदे एका वास कर। दासन दास आप अख्वाया। बिरध अवस्था हरि दया कमाया। इक्क इक्क इक्क कर बीत बिताया। दूआ संग रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा आप सुहाया। शब्द नईआ हरि आप चढ़ाया। भव सागर तों पार कराया। माटी काया काची गागर, आत्म साची जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त होए सहाए आपणी जोती जोत मिलाया। जोती जोत हरि आप मिलाए। आप आपणे रंग रंगाए। साचा संग विच मात निभाए। प्रभ दर मंगी पूरी जाए कराए। मानस जन्म ना होया भंग दरस दिखाया प्रभ किरपा कीनी प्रभ दर घर साचे आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा पार कराए आपणे कंध उठाए। गुर पूरे सद बलहारया। दर घर आए काज संवारया। प्रभ अबिनाशी गुरमुखां साची बणत बणा रिहा। सच शब्द साची धुन हरि आप उपजा रिहा। प्रभ

आप तुड़ाए आत्म सुन्न मुन्न आप खुल्हा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण दीपक जोती आप जगा रिहा। एका बख्शे चरन ध्यान। किरपा करे हरि भगवान। देवे दरस मिटाए हरस वाली दो जहान। अमृत मेघ जाए बरस, आत्म तृखा सर्ब मिटाण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृखा आप मिटाए। साची सिख्या आप दवाए। सोहँ साची भिक्खा हरि नाम झोली पाए। धुरदरगाहों लेख जो लिख्या, प्रभ साचा दए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। आप आपणे रंग रंगाए। गुरमुख गुरसिख तेरा साचा संग निभाए। अंग अंग संग संग प्रभ अबिनाशी साचा हो जाए। जिस जन मंगी दर साची मंग, वेले अन्त होए सहाए। मानस जन्म ना होया भंग, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग, वेले अन्तिम अन्त जोती जोत मिलाए। जोती जोत मिलईआ। किरपा कर पार करईआ। दूई द्वैत रोग गंवईआ। साचा शब्द इक्क सुणईआ। आपणा भाणा हरि इक्क वरतईआ। ना कोई मेटे मेट मिटईआ। गुरमुख साचा वेख तरईआ। दर घर आए दरस दिखईआ। दरगाह साची लेख लखईआ। धर्म राए ना दे सजईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए तेरी सरनईआ। हरि सरनाई मिले वड्याई। वेले अन्त होए सहाई। जम जमदूत नेड़ ना आई। लक्ख चुरासी गेड़ कटाई। मानस जन्म हरि रास कराई। सोहँ साचा शब्द हरि हिरदे वास रखाई। रसना जप स्वास स्वास प्रगट जोत घनकपुर वासी अचरज खेल वरताई। जन भगतां होए दासन दासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। वड्डी वड्याईआ, हरि साचे सच तेरी सरनाईआ। चरन लाग जागे भाग, हरि साचे घर मिली वधाईआ। उपजे राग वज्जे नाद, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धोया पापां दाग, बुझी तृष्ना आग प्रभ अमृत मेघ बरसाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाईआ। गुरमुख विच मात अमरा पद पाईआ। दिवस रैण हरि साचा गाया। सज्जणा साक सैण हो आया। ना कोई राखे मात पित भैणां आपे होए सहाया। सर्ब जीआं देवणहार माण इक्क रघुराईआ। चरन प्रीती साची जोत सच्ची दरगाह माण दवाईआ। दिंदयां तोट ना आईआ। एह सच्ची वडयाईआ। बन्दी छोड़ आप रघुराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती जोत मिलाईआ। अनाथ अनाथां हरि होए सहाया। सगला साथ आप निभाया। आत्म दुखड़ा सारा लाथा, दिवस रैण जिस रसना गाया। आप चढ़ाए सतिजुग साचे राथा, संसार सागर पार कराया। सतिजुग चलाए साची गाथा, साचा लेख हरि दए लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथा आपणा भेव दए खुल्हाया।

✲ १७ जेठ २०१० बिक्रमी आत्मा सिँघ दे गृह पिण्ड पट्टी ज़िला अमृतसर ✲

गुर चरन छुहाया पट्टी। गुरमुख साचे लाही जाण खट्टी। बेमुख भरदे रहण चट्टी। शब्द सरूप प्रभ साचे पट्टी पट्टी। किसे घर ना दिसे पूणी अट्टी। आपणे तोल तोलणहार, ना धड़ी ना वट्टी। ना कोई दिसे सेठ सिठाणा, ना कोई जट्ट जट्टी। ना कोई दिसे राम राउ, ना कोई दिसे भट्टी। कलिजुग जीव झूठी काया वखाए झूठी हट्टी। गुरमुख साचे सच नाउँ, दिवस रैण आत्म रस चट्टी। प्रभ दरस देवे घर आए गुरसिख पेखे नैण साचा शब्द लगाए गुर चरन साची हट्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द मार कर ख़ुआर अन्तिम कलि कराए चौड़ चपट्टी। पट्टी पुट्टी जाए जड़। पहले हढ़ जाए हढ़। ना कोई दीसे किल्हा गढ़। ना कोई बैठे अंदर वड़। मुगल पठानी आए चढ़। सत्तर लक्ख ना सके कोई लड़। चारों तरफ दिसण धड़। दिवस रैण अट्ठे पहर होए कड़ कड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां आप मरवाए, शब्द सरूपी बाहों फड़ फड़। पट्टी पट्ट पटआणीआं। घर घर रोवण खतराणीआं। वैण पायण वड वड राणीआं। फिरे दरोही पठाणीआं। ना कोई दीसे कोई शैतानीआं। प्रभ साचे सच एह तेरी निशानीआं। लेख लिख्त लिखाए लिखे लेख ना कोई मिटानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धकेल आप लगानीआं। पट्टी प्रभ देवे पुट्ट। आपे देवे शौह दरयाए सुट्ट। आप पछाड़े बेमुख कुट्ट कुट्ट। गुरमुखां अमृत प्याए एका घुट्ट। भरे भण्डार सदा अतुट। आदि जुगादि ना जाए कदे निखुट्ट। जोती जोत सरूप हरि, बेमुखां ऐसी पावे फुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरताए ना कोई बद्धा सके छुट्ट। पट्टी पटवारनी अन्तिम कलिजुग अन्तिम हारनी। सतिजुग साचे प्रभ लिखाई गंवारनी। वेले अन्त होए हँकारनी। गुरमुख साचे सन्त दर घर आए गुर संगत बणाए तारनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी महिंमा अपर अपारनी। पट्टी बिध नाती। वरते खेल अचन अचानक राती। आपे मेट मिटाए जूठीआं झूठीआं जाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट अंदर वस्सया वेखो मार झाती। आत्म वेखे जन विचारे। प्रभ अबिनाशी विच पसारे। एका जोत करे अकारे। जगे जोत अगम्म अपारे। गुरसिख साचे कन्न सुण मिटे अन्धेर काया महल मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आप खुल्हाए दस्म दुआरे। साची देवे शब्द धुन्कारे। आपे खोल्ह दर दुआरे। तुट्टे मन प्रभ किरपा धारे। जोती जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर नरायण आप खुल्हाए बन्द कवाड़े। दस्म दुआरा जाए खुल्ल। अमृत आत्म प्रभ अबिनाशी आप अनमुल्ल। कँवल नाभ आप उलटाए उलटा करे कँवल फुल्ल। जोती जोत सरूप हरि नर नरायण सृष्ट सबाई रिहा मवल। मवल मौलाणयां खेल खिलाणयां। जोत जगाणयां वक्त सुहाणयां। भगत तराणयां बेमुख खपाणयां। कलिजुग

२२६
०३

मिटाणयां सतिजुग लगानयां। सोहँ साचा शब्द चलाणयां। चार कुन्ट जै जै जैकार कराणयां। घर घर हाहाकार वरताणयां। बेमुखां कर ख़ुआर दर दर फिरानयां। माझे देस अवतार ना बूझ बुझानयां। बेमुख रहे झक्ख मार, ना आत्म सूझ वड वड ज्ञानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल कलि करे खेल खलानयां। गुरमुखां देवे दरस कर कर वड मेहरबानीआं। आत्म साची जोत धर, करे रुशनाई बिन बाती बिन तेल जगानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि एका रंग रंगानीआं। रंग रंगाए संग निभाए। गुरमुख दर मंगण साची मंग, प्रभ अबिनाशी भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आए पूरन इच्छया आप कराए। पूरन इच्छया पूरन आस। गुरमुख उपजाए जिउँ चन्दन प्रभास। सोहँ साचा नाम दवाए, आप आपणा विच रक्खे वास। कलिजुग साचे मार्ग लाए, अज्ञान अन्धेर जाए विनास। सतिजुग साचा राह दिसाए, सोहँ वस्त सद रक्खे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण एका पुरख अबिनाश। पुरख अबिनाशया, जोत प्रकाशया, सर्ब घट वास्सया, घनकपुर वास्सया। गुरमुख साचा राह बताया, बेमुखां करे नास्सया। आप खपाए जो रसना लायण मदिरा मास्सया। सो जन उधरे पार जो जन जपे स्वास स्वासया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे बन्द खलास्सया। बन्द खलासी देवे कर। चरन प्रीती साची नीती हरि बख्शे साचे दर। आत्म अतीती चुक्के जम का डर। बख्शे भुल्ल जो कीती, चरन सरन जो जन जायण पड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। किरपा करे गुण निधाना। जो जन रक्खे चरन ध्याना। कलिजुग वेखे हरि आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। गुरमुख आत्म कदे ना होए भुक्खे, सोहँ देवे वड ख़ज़ाना। गुरमुख साचा प्रभ विच मात लए रक्ख, दूती दुष्ट सभ मेट मिटाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाना। जोत सरूपी हरि जामा धरया। गुरसिख साचा जिस खुल्ह्रावे आत्म दरया। साची जोत विच हरि साचा धरया। एका दीपक जोत प्रकाश हरि साचे करया। अज्ञान अन्धेर जाए विनास, घट घट चानण धरया। प्रभ पाया पुरख अबिनाश, सोहँ जिस जन रसना गाया। कदे ना होए उदास, प्रभ साचा सद सहाया। हरि हिरदे रक्खे वास, गुरमुखां दया कमाया। आत्म साची जोत करे प्रकाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन चरनी सीस झुकाया। चरन कँवल प्रीत जिस जन कमाई। कलिजुग जीव भुल्ल भुल्ल कलिजुग माया विच भुल्ल ना जाई। रुल रुल मदिरा मास ना रसन लगाई। झूठे तोल ना जाणा तुल, धर्म राए दे सजाई। सोहँ नाम देवे हरि साचा अनमुल्ल, गुरमुख साचे झोली पाई। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल, वेले अन्त ना पछताई। सच भण्डारा विच मात गया खुल्ह्, सच भिच्छया हरि साचे पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आप सदा अडोल अतोल अतुल सृष्ट सबाई दए तुलाई। सृष्ट सबाई तोल तुलाए, आप अतुल रहि जाए। सृष्ट सबाई रोल रुलाए, आप रुल ना जाए। सृष्ट सबाई भुल्ल भुलाए, आप अभुल्ल इक्क रहि जाए। सृष्ट सबाई हिल हिलाए, आप अटल इक्क रहि जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात जामा पाए।

❋ १७ जेठ २०१० बिक्रमी गुरमेज सिँघ दे गृह पट्टी ज़िला अमृतसर ❋

गऊ गरीब सुण दोए बेनन्तीआ। पूरन जोत धरे विच मात प्रभ साचा भगत भगवन्तीआ। गुरमुख आत्म रंग रंगाए, साचा विच मात हरि बसन्तीआ। साचा शब्द आप सुणाए, ढोल मृदंग कन्न वजंतिआ। साचा राह आप दिखाए, सोहँ शब्द सुणाए धुन धुनवंतिआ। कलिजुग सोया लए जगाए, हरि देवे साचा नाम गुणां गुणवंतिआ। हरि आपणे कंठ लए लगाए, आत्म सेज विछाई फूल बसंतिआ। हरि आपणे रंग रंगाए, एका घर वसाए, मेल मिलावा साचा कंतिआ। आत्म साची जोत जगाए, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए, करे प्रकाश भाण्डा भरम भउ गवंतिआ। जो जन रसना सोहँ गाए, प्रभ अबिनाशी रिदे वसाए, कारज सिध्ध हरि आप कराए, हरि साजण साचा खोज खुजंतिआ। दर घर साचे नौ निध उपजाए, हरि मिलण दी साची बिध हरि साचा आप लिखाए, तन मन आत्म विध, सोहँ तीर चलाए खिच कन्नतिआ। अनहद राग उपजाए, वाद विवाद सर्ब मिटाए, शब्द बोध अगाध अगाध बोध हरि आप लिखाए, पूरन हरि नर अवतार भगवंतिआ। शब्द पट्टी आप पढ़ाईआ। गुरसिख तन आत्म हट्टी आप खुल्लाईआ। हरि अबिनाशी दिसे घट घट्टी, सद वेखो हर थांईंआ। बेमुख जीव अन्ध अंध्यारे भरदे रहण चट्टी, धर्म राए दे सजाईआ। गुरमुख साचे आत्म जोत जगाई बत्ती, आत्म साचा दीप जोत जगाईआ। बेमुख जीव कलिजुग ना चढ़े औखी घाटी, विषे विकारां मति गवाईआ। गुरमुख साचे दिवस रैण सद रसना राटी, हरि हिरदे वास रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग तेरा बेड़ा पार कराईआ। साची पट्टी आप पढ़ानी। बेमुख जीवां चट्टी आप भरानी। कलिजुग झूठा लाहा जाए खट्टी, साचा रंग मूल ना लाईआ। वेले अन्त प्रभ जाए फट्टी, सोहँ शब्द तीर चलाईआ। कलिजुग काया भन्ने झूठी माटी ना देवे कोई छुडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे सच तेरी वडयाईआ। सच नाम हरि गुण गावणा। सच नाम दर घर साचे गुरसिख साचे पावणा। सच नाम हँकारी जिंदा आप तुड़ावणा। सच नाम भण्डारी दात आप मिलावणा। सच नाम संसारी ज्ञाता दरस दिखावणा। सच नाम पुरख बिधाता होए सुहावणा। सच नाम आप मिटाए जातां पातां मातलोक सच करामात सोहँ साचा जाप जपावणा। होए

सहाई मात गर्भ जो जन रसना वखावणा। सच नाम देवे वड्याई तीन लोक गुर चरन प्रीत बंधाए साचा नाता। साचा नाम दरगाह साची माण दवाए, ना कोई जाणे भैण भ्रात पित माता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुख दाता। सर्ब सुख गुर दुआरे। कर दरस उतरे भुक्ख, आत्म भारे। ना तरस प्रभ अमृत बूंद आप पिलारे। मिटाए हरस कर तरस दर घर आए देवे दरस प्रभ अबिनाशी अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि पूज पुजारे। सर्ब जीआं हरि इक्क पुजारी। तीन लोक हरि इक्क पुजारी। तीन लोक नैण मुँधारी। जोत सरूपी करे खेल अपर अपारी। गुरमुखां कराए मेल वेखे विगसे करे विचारी। बेमुखां बेड़ा जाए ठेल, प्रभ अबिनाशी ना पाए सारी। आप धकाए धर्म राए दी जेल, प्रभ अबिनाशी साचा नाता गुर चरन बहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए वक्त सुहाए गुरसिख घर भाग लगाए आप मुकाए लहणा। पिछला लहणा आप चुकाया। देवणहार इक्क रघुराया। अग्गे हरि साचे साचे मार्ग पाया। मदिरा मास जन दे तजाया। स्वास स्वास स्वास रास रास रास प्रकाश प्रकाश प्रकाश आत्म जोती प्रकाश रखाया। अज्ञान अन्धेर जाए विनास विनास विनास आत्म दीपक जोती आप जगाया। हउमे दुखड़ा जाए नास नास नास साचा शब्द तन लगाया। भरम भुलेखा ना होए जीव उदास, साची धीर आप धराया। आपे करे अन्तिम अन्त तेरी बन्द खलास, प्रगट होए हरि दरस दिखाया। प्रभ अबिनाशी सद बलि बलि जास, दरगाह साची देवे माण सवाया। मानस जन्म कराए रास, वेले अन्त बैकुण्ठ निवास रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त जोती जोत मिलाया। सच्चा शब्द सच्चा हथियार। तन मन धन दिवस रैण होए रख्वार। जो जन पहने तन दुःख ना लागे भार। आत्म जाए मन हउमे रोग देवे निवार। बेड़ा देवे बन्नू विच संसार। साचा शब्द सुणाया कन्न, साची धुंन देवे धुन्कार। भरम भुलेखा देवे भन्न, जम दी ना खाए मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कर किरपा लाए पार। कर किरपा हरि पार लाए। जो जन सरनाई आए। सरन चरन जिस जन तकाई प्रभ साचा कलिजुग बेड़ा पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पैज रखाए। हरि गुण गुरसिख उचारना। आपणा मूल ना कलिजुग हारना। भरम भुल्लया झूठा लेख विच संसारना। वेखी वेख ना मानस जन्म हारना। साचा लेख घर साचे प्रभ अबिनाशी वड अपाराना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कर किरपा पार उतारना। गुरसिक्खां हरि पार उतारे। जो जन करे चरन निमस्कारे। भव जल हरि पार उतारे। कलिजुग अग्न विच ना जाए जल रक्खे आप करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे शब्द धरे प्यारे। सच शब्द सच ध्यान। प्रभ अबिनाशी आत्म देवे सच ज्ञान। मिले मात वड्याई देवे वाली दो जहान। होए

अन्त सहाई जन भगतां करे पछाण। नव निध घर उपजाई, दु:ख भुक्ख सर्ब मिट जाण। साची बिध आप कराई, किरपा कर हरि भगवान। आत्म भेव खुल्हाए गूझे, देवे शब्द हरि बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप महान। किरपा करे अपर अपारी। गुरमुख साचे जाए तारी। साचा देवे नाम अधारी। सोहँ देवे नाम खुमारी। एका जोत जगे राम दूजा कोए ना रसन उचारी। एक वखाए साचा धाम, जिथ्थे वसे हरि मुरारी। एका नाम दवाए साचा शाम, मिले मेल हरि हरि निरँकारी। निरँकार निरँजणा। सर्ब सुख भंजना। गुर चरन मजना। कर दरस आत्म अमृत पी रज्जना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा आपे होए साक सज्जणा। सज्जण तेरा साचा सद वसे पास। कलिजुग जीव काया कच्ची कच्च है क्यों होए उदास। हरि साचा रसना रच होए सहाई करे बन्द खलास। बेमुख जीव क्यों रहे नच्च, ना मिल्या प्रभ अबिनाश। कलिजुग माया अग्न विच तपे ना होए कोई देवे धरवास। गुरमुखां हरि हिरदे गया वस, सोहँ देवे सच धरवास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नर नरायण सर्ब गुण तास। हरि तीर जगत वहीर है। सृष्ट सबाई लथ्थे चीर है। चार कुन्ट होए वहीर है। मिटे सर्ब पीर फ़कीर है। ना कोई औलीआ ना दस्तगीर है। ना कोई मौलीआ ना आलमगीर है। ना कोई गौंस कुतब ना कोई शमशुल दीन है। ना कोई हुज़रा ना कोई शजरा सर्ब मेट मलीन है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कराए मुहम्मदी दीन है। मुहम्मदी दीन अन्त प्रभ कीना। संग रूसा रले चीना। ऐसी खेल करे प्रभ साचा सृष्ट सबाई पाड़े सीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल सच कीना। सतिगुर साचा सर्ब सुख दात है। सतिगुर साचा सभ थांईं सहाई आप है। सतिगुर साचा सृष्ट सबाई माई बाप है। सतिगुर साचा सतिगुर सोहँ देवे साचा जाप है। सृष्ट सबाई हउमे मारे वड वड ताप है। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कलिजुग रिहा जाच है। सतिगुर साचा साची धारा। सतिगुर साचा सभ परखे नारी नारा। सतिगुर साचा लक्ख चुरासी विच एका जोत अधारा। सतिगुर साचा जीव जन्त ऊँच नीच कीट पतंग विच सर्ब पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग अनूप सरूप अपारा। रंग अनूप सति सरूपया। जिस विच हरि राउ उमराउ रंग रंग रंगाणा वड वड भूपया। ना कोई सके पछाण प्रभ अबिनाशी ना कोई रंग ना कोई रूपया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाण जिस देवे दरस हरि सति सरूपया। दरस सति तरस सति अमृत मेघ बरस सति, आप मिटाए हरि हरस सति। चिन्ता सोग गंवाए सति। काया हरी कराए सति। तन मन वज्जी वधाई सति। अनहद शब्द राग सुणाई सति। अबिनाशी वाग उठाई आपणे हत्थ सति। सृष्ट सबाई भेड़ भिड़ाए करे कराए ना कोई छुडाई वेखे

खेल हरि सति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सर्ब जीआं का एका दाता, सतिगुर साचा साचो सति। सच सुख सहज सुख एक देवे प्रभ अबिनाशी हरि साचा नायक। गुरमुख साचे सन्त जन आप उपजाए सच मुसायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हिरदे दरस दिखाए खोल्हो तायक। हरि हिरदे हरि साचा वस्सया। कलिजुग जीव राह साचा दस्सया। शब्द तीर हरि साचे कस्सया। बज़र कपाटी चीर दुआर दसवां दस्सया। अमृत बहाए साचा नीर पी अमृत रस रस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे धीर, कर दरस गुरमुख पूरी होए समस्सया। पूरन धीर देवे हरि भगवान। अमृत साचा सीर पिलाए किरपा करे हरि भगवान। कलिजुग पाटे चीर लुहाए, सोहँ गहणा तन पहनान। साचे हाटे साचा गहणा आप विकाए गुरमुख साचे घर लै जाण। हउमे मैल दुबदा काटे, जो जन रसना गाण। प्रभ अबिनाशी राह नेड़े वाटी, कलिजुग जीव ना भुल्ल निधान। हरि साचा वेख आपणी काया झूठी माटी विच बैठा बली बलवान। एका जोत जगे लट लाटी, कर दरस होए सुघड़ स्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन ध्यान। सच प्रीत गुर चरन ध्याना। सच प्रीत गुरचरन सेव कमाना। सच प्रीत हरि हिरदे सच वसाना। मानस जन्म जाओ जग जीत, लक्ख चुरासी विच ना आना। गुरमुख रक्ख आत्म सदा अतीत, भरम भुलेखे भुल्ल ना जाणा। प्रभ अबिनाशी साचा मीत, दरगाह साची जिस संग निभाना। झूठी वेख मात विच प्रीत, संग किसे ना जाणा। कलिजुग औध रही बीत, वेला गया हत्थ ना आणा। कर दरस काया होए सीत, शांत सीतला हरि वरताणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म ठांडे दर बहाना। गुर सेवा सुफल कराई है। गुरमुख विरले कलि कमाई है। घर साचे मिले वड्याई है। जिथ्थे वसे हरि रघुराई है। हरि साचे लेखे लाई है। आत्म कढ्ढे भरम भुलेखे, हरि पूरन बूझ बुझाई है। जो जन आए दर नेत्र पेखे, आत्म जोत जगाई है। जो जन रहे कलिजुग वेखां वेखे, अन्तिम अन्त प्रभ जमदूतां वस कराई है। गुरमुख साचे हरि लाए लेखे, जिस जन दया कमाई है। आप लिखाए साचे लेखे, अचरज खेल रचाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हत्थ सर्ब वड्याई है। गुरचरन सेवा पूरन घाल। गुरमुख प्रीती निभे नाल। साची नीती प्रभ साचा देवे आत्म बख्शे सोहँ साचा लाल। मानस जन्म जाओ जग जीती ना होए कदे कंगाल। दर घर आए प्रभ साचे काया सीतल कीती, साचा दीआं धन माल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होया आप कृपाल। प्रभ भए दयाल गुरमुख सोया लए उठाल। आत्म जोती देवे बाल। आपणा बिरध हरि साचा लए संभाल। गुरमुख साचे सन्त जनां आपे बणे रखवाल। सोहँ देवे साचा नाम धना, साचा धन माल। एका शब्द वसाए मना, घर साचा दर साचा हरि दए वखाल। भाण्डा भरम भउ भन्नया दिया

दरस आप गोपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई गुरमुखां सद प्रितपाल। गुरमुख साचे हरि दर्शन पावणा। भरम भुलेखा सर्ब गवावणा। आत्म लेखा सर्ब लिखावणा। पिछला लेखा हरि चुकावणा। अग्गे मार्ग पावणा। सतिजुग साचा राह आप दिसावणा। साचा थान आप सुहावणा। एका नाम हरि जपावणा। सोहँ खण्डा आप चमकावणा। राउ रंक राहे पावणा। थाउँ बंक आप सुहावणा। गुरमुखां पूर कराए भावना। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे माण दवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां साचा कर्म कमावणा। गुरमुख हरि रंग मानणा। प्रभ अबिनाशी साचा जानणा। जोत सरूपी खेल वरतावणा। बिन रंग रूपी दिस ना आवणा। आदि अन्त जुगा जुगन्त प्रभ आपणे भाणे विच रहावणा। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ आपणी सेवा लावणा। साचा शब्द सुणाए कन्नां, अनहद धुन उपजावणा। मिटाए चिन्ता रोग गुरसिक्खां, धीरज सति सन्तोख रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण आपणा भेव आप खुल्हावणा। आपणे भाणे आप रहाए। अचरज खेल हरि वरताए। मातलोक सद आवे जाए। जुगा जुगन्तर प्रभ साचा जामा पाए। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी आपे पकड़ उठावणा। धर्म राए दे सजाए, वेले अन्त होए सहाए गुरमुख साचे तेरा बेड़ा बन्न्हु वखावणा। प्रभ किरपा कर आपणे कंध उठाए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची हरि साचा माण दवाए। साची दरगाह सद दा लेखा। एथे ओथे ना कोई भरम भुलेखा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी धारे भेखा। अछल छल आप कराए कलिजुग मिटाए झूठी रेखा। सोहँ साचा शब्द सतिजुग लगाई साची मेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कलिजुग तेरा लेखा। कलिजुग तेरा मेट मिटईआ। कोए ना होए तेरा सहईआ। जीव जन्त सभ झूठ झुठईआ। झूठे जगत धन्दे आप मिटईआ। पापी बन्दे मदिरा मास मुख रखईआ। आत्म गन्दे प्रभ अबिनाशी ना रसन रसईआ। दिवस रैण रैण दिवस ना गाया बत्ती दन्दे, दर घर साचे रहे भुलईआ। आत्म वज्जे सर्ब दे जिंदे, सोहँ चाबी ना किसे लगाया। पापां होई विच आत्म कंधे, दूई द्वैत ना पर्दा लाहया। काया अन्धेरी डूंघी खड्डे, दीपक जोती ना किसे जगाया। गुरमुख साचे सन्त जनां आप तुड़ाए आत्म जिंदे, सोहँ नाम विच वस्त टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे माण सवाया। कलिजुग तेरा अन्त कराए। कलिजुग तेरा लेख लिखाए। लहणा देणा आप चुकाए। सतिजुग साचा मात धराए। पहली माघी जन्म दवाए। साचा लेखा आपे दए लिखाए। सोहँ साची वस्त हरि जाए झोली पाए। चार वरन आए सरन चुक्के डरन, उतरे पार रसना गाए। खुल्ले हरन फरन दरस कर तरन, देवे दरस आप हरि आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण मात जोत प्रगटाए। सतिजुग

तेरा साचा वादा। शब्द लिखाए बोध अगाधा। आत्म साधा जीव जन्त एका शब्द अराधा। आदिन अन्त सोहँ वजाए साचा नादा। साधां सन्तां प्रभ साचा होए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता। इक्क दातार सर्ब भिखार। सोहँ शब्द हरि वरतार। सृष्ट सबाई आई गुर दरबार। सतिजुग तेरा सच विहार। जूठ झूठ दए निवार। एका एक रंग अनूठा चढ़ाए गुरमुख साचे कलि विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धराए कर्म कराए आपणी किरपा धार। सतिजुग साचा मात धरईआ। सतिजुग साचे लेख लिखईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां आप चढ़ईआ। बेमुख कलिजुग वहन्दी धार वहईआ। गुरमुखां बेड़ा पार करईआ। सोहँ चप्पू आप लगईआ। प्रभ वसाए साचे थाउँ, आपणे संग आप रखईआ। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो भेव खुल्लईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए आपणे भाणे सृष्ट सबाई वेख वखईआ। आप उठाए पकड़े बाहों, आपणा लेख लिखईआ। सोहँ देवे साचा नांउँ, आत्म साची जोत जगईआ। दरगाह देवे साचा थाउँ, जन्म मरन लक्ख चुरासी गेड़ कटईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरमुख साचे मेल मिलईआ। हरि जोती जोत मिलावंदा। वेले अन्तिम अन्त दर घर आए दरस दिखावंदा। हरि जोती जोत मिलावंदा। गुरमुखां कर तरस आपणा संग निभावंदा। अमृत मेघ देवे बरस, प्रभ सुक्के हरे करावंदा। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी तेरे चरन हरस, कलिजुग बेड़ा पार करावंदा। आप मिटाए आत्म सर्ब हरस, जोत सरूपी दरस दिखावन्दा। बेमुख कलिजुग रहे तरस, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आवंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा आपणे भाणे विच रहावंदा। हरि भाणा वरते गुरमुख जानना। सो जन होया सुघड़ स्यानणा। जिस दिया नाम निधानना। आत्म धरे धीर धराना। हरि साची बूझ बुझाना। एका रंग गुरमुख साचे आप रंगाना। मानस जन्म ना होए भंग, साचा राह दिखाणा। होए सहाई सदा अंग संग, दु:ख रोग चिन्ता सर्ब मिटाणा। बेमुख भन्ने वांग कच्ची वंग, प्रभ साचे भन्न वखाणा। धर्म राए दर देवे टंग, लिख्या साचा लेख किसे ना जाए छुडावणा। शब्द सरूपी कस्सया तंग, पवण रूप चार कुन्ट दुड़ावणा। सृष्ट सबाई करे भंग, सोहँ साचा तीर चलावणा। चार कुन्ट दिसण पए करंग, कलिजुग जीआं मास किसे ना खावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त वरते जगत आपणा भावणा। भाणा हरि वरतावणा। राउ उमराउ सर्ब ख़ाक मिलावणा। वड वड पकड़ शाहो, प्रभ गलीआं विच फिरावणा। साचा शब्द चलाए साचा नांउँ, कलिजुग भेख सर्ब मिटावणा। राउ रंक ऊँच नीच कोई रहण ना पावणा। सतिजुग चलाए साचा राहो, राजा राणा तख्तों लाहवणा। सच घर वासी सच घर वसाए साचा थांउँ, हरि एका जोत जगावणा। बैठा रहे अडोल सदा बेपरवाहो, जोत सरूप डगमगावणा।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नरायण नर एका रंग सृष्ट सबाई आप रंगावणा। चरन प्रीत गुर दर कमावणी। प्रभ साचा परखे नीत, गुरमुखां आत्म तृखा आप बुझावणी। तन काया करे सीत, हरि अमृत शांतक बूंद आप बरसावणी। सतिजुग चलाए साची रीत कूड़ कुड़यारी सर्ब मेट मिटावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची नींह रखावणी। सतिजुग साचा हरि साचा जन्म दवाए। हरि हिरदे वाचा सच वस्त हरि झोली पाए। चरन प्रीती साचा नाता, इक्क मात रखाए। कर किरपा हरि पुरख बिधाता, सोहँ दान हरि झोली पाए। आप मिटाए ऊँच नीच जातां पातां, एका ज्ञान सर्ब दवाए। चार वरन बंधाए एका नाता, भरम भुलेखा रहण ना पाए। कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाए। आप पुच्छे गुरसिक्खां वाता, दर घर आपणे लए उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे लए लड़ लाए। आप आपणे लाए लड़। गुरमुख साचा विच मात बाहों फड़। बेमुख अन्तकाल कलि जायण झड़। गुरमुख साचे सन्त जन दर घर साचे जायण वड़। सोहँ साची आवाज़ लगाए दर दरबारे आत्म खड़। आप आपणी दया कमाए, काया किल्ला तुड़ावे हँकारी गढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती तोड़ निभाए, गुरमुख साचे हरि की पौड़ी जाए चढ़। हर घर हरि रंग महाना। आत्म दर वेख जीव जन सुघड़ स्याणा। क्यों धरया कलिजुग झूठा
२३३ ०३ भेख, फिरे अन्ध अंध्याना। हरि सज्जण साचा नेत्र पेख, किल विख पाप सर्ब गवाना। भरम भुलेखे क्यों रिहा वेखी २३३ ०३
वेखे, वेला गया हत्थ ना आणा। दर घर साचे गुरमुख साचे लगाए साचे लेखे, आप विष्नूं भगवाना। जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण, सर्ब जीआं दा दाना बीना। धन्न सो वेला हरि दया कमाया। जुगां जुगन्तर विछड़यां हरि साचा मेल मिलाया। प्रभ अबिनाशी साचे कन्त, सोहँ साचा नाम जपाया। आप बणाए साची बणत, साचे मार्ग लाया। महिंमा प्रभ दी बड़ी अगणत, भेव किसे ना पाया। क्या कोई जाणे जीव जन्त, डाहढी माया पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त अन्त आदि एका जात हरि रघुराया। हरि रघुराया हरि रघुराई। सच्ची बिध नौ निधां पाई। कारज सिद्ध कराई। आत्म विध सोहँ तीर चलाई। प्रभ मिलण दी साची बिधी प्रभ साचे आप बताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दे वड्याई। गुरमुख तेरा माण रखाणा। गुरसिख चलाए आपणे भाणा। गुरमुखां देवे नाम निधाना। गुरमुखां देवे धूढ़ चरन अशनाना। गुरमुखां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। गुरमुखां आत्म साची शब्द धुन उपजाना। गुरमुखां दूई द्वैती हरि पर्दा लाहणा। गुरमुखां आत्म सुन्न मुन्न हरि आप खुल्लाणा। गुरमुखां दीपक जोती आप जगाणा। गुरमुखां द्वार दस्म हरि बूझ बुझाणा। गुरमुखां हरि एका रंग दिवस रैण रैण दिवस रंगाना। गुरमुखां साचा साक सज्जण आप अख्वाना। गुरमुखां मात पित भाई

भैण आप बण जाणा। गुरमुखां दर साचे देवे माणा। गुरमुखां दरगाह साची देवे सच टिकाना। गुरमुखां अन्तिम अन्त प्रगट जोत हरि साचे दरस दिखाणा। गुरमुखां हरि परस जन्म मरन गेड़ मिटाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां अन्तिम अन्त जोती जोत मिलाणा। गुर प्रशादि दिया गुर पूरे। दु:ख रोग गंवाए आत्म उतरे सगल वसूरे। सच शब्द हरि देवे साचा योग, रसना गाए कारज पूरे। अमृत आत्म रस सोहँ साचा भोग, प्रभ अबिनाशी देवे विच संगत सद हज़ूरे। आप चुगाए गुरमुख साची चोग, दिवस रैण सद रहे सरूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराए जो जन आए दूरो दूरे। चरन कँवल जिस आस रखाई। प्रभ दर आए चरन सीस झुकाई। पूरन होए भाग प्रभ साचे दी वड्याई। सोहँ शब्द लगाए साची जाग दूई द्वैत हरि पड़दा लाही। साची धुन उपजाए अनहद साचा राग मुन्न सुन्न आप खुल्हाई। आप वजाए सोहँ साचा नाद, चार कुन्ट हरि दे सुणाई। वसे सद विच ब्रह्माद, सर्ब थाईं होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरे आई गुर संगत हरि साचा माण दवाई। जो जन आए गुर द्वारया। प्रभ अबिनाशी चरन निमस्कारया। काया रोग सर्ब निवारया। दु:ख भुक्ख सर्ब गंवा रिहा। आत्म सुख इक्क उपजा रिहा। मात कुक्ख सुफल करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत लेखे आप लगा रिहा। गुर संगत आई दर परवान। देवे दरस हरि भगवान। गुरमुख साचे सन्त जन साचा लाहा खट्ट लै जाण। बेमुख कलिजुग जीव खाली हत्थ गुर दर मुड़ जाण। गुरमुख गुरसिख प्रभ साचा लए पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे आत्म साचा दान। सोहँ दान प्रभ साचा देवे। गुरमुख विरला रसना सेवे। सोहँ फल लगाए आत्म साचे मेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख अभेवे।

२३४
०३

✻ २४ जेठ २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरिजन मेल सच दुआरे। देवे दरस हरि अगम्म अपारे। मिटाए हरस कर तरस, जो जन आए चल घर सच्चे दरबारे। अमृत आत्म मेघ देवे बरस झिरना झिरे अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच धारे। मातलोक हरि जामा धार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। अचरज खेल करे करतार। गुरमुख साचे लाए पार। सर्ब घट वासी कर्म विचार। भरम भुलेखे दए निवार। आदि अन्त साची कार। सच शब्द धरे संसार। घनकपुर वासी मातलोक विच जामा धार। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाया। वेद अथर्बण अन्त कराया। आत्म अन्ध अन्धेर मिटाया। गुरमुख साचे सन्त जन सच सेवा आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि विच मात जामा पाया। कलिजुग तेरा मिटे अन्धेरा। जोत सरूपी प्रभ

विच मात पाया फेरा। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, जुगां जुगन्त आदि अन्त सृष्ट सबाई भुलाए कर कर हेरा फेरा। गुरमुख साचे सन्त आप जगाए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे नबेड़ा। अन्तिम अन्त आप कराए। जोत सरूपी हरि रघुराए। सृष्ट सबाई मेट मिटाए। कलिजुग जीव आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाए। बेमुख होए भुल्ले, सच कर्म ना किसे विचारया। गुरमुख पूरे तोल तुले, गुर पूरे सद बलिहारया। चरन कँवल कँवल चरन सद सद निमस्कारया। धरे जोत उप्पर धवल, करे खेल अपर अपारया। सृष्ट सबाई रिहा मवल, आत्म दीपक सर्ब उज्जयारया। गुरसिख खिले वांग फुल्ल कँवल, सिर रक्खे हत्थ आप बनवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे वड वड भण्डारया। गुर पूरा वड भण्डारी। गुर पूरा वड वरतारी। गुर पूरा आदि अन्त एका जोत करे अकारी। गुर पूरा जोत सरूपी जोत हरि आवे जावे वारो वारी। गुर पूरा खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड सर्ब पसारी। गुर पूरा विच नव खण्ड अचरज खेल करे अपारी। गुर पूरा बेमुखां लाए डन्न, चार कुन्ट कराए चण्ड प्रचण्ड एका खेल करे अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नर अवतारी। गुर पूरा भेख वटांयदा। गुर पूरा गुरमुख वेख वेख आपणी सरन लगांयदा। गुर पूरा लेख लेख दर घर साचे लेख लिखांयदा। गुर पूरा गुरसिख नेत्र पेख, ना कोई भरम भुलेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती जोत मिलांयदा। गुर पूरा सद समरथ। गुर पूरा गुरमुखां सिर रक्खे हत्थ। गुर पूरा शब्द चढ़ाए साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि बेमुखां पाए नत्थ। गुर पूरा रोग मिटांयदा। गुर पूरा कर दरस ना होए वियोग आदि अन्त जन भगतां पार करांयदा। गुर पूरा धुर लिख्या संयोग, गुरमुखां मेल मिलांयदा। गुर पूरा सोहँ साचा नाम मात धरांयदा। गुर पूरा सतिजुग चलाए साची नईआ। गुर पूरा चार वरन कराए भैणां भईआ। गुर पूरा राउ रंक रंक राउ इक्क करईआ। गुर पूरा राजे राणे तख्तों लहईआ। गुर पूरा एका भिच्छया नाम पाए, जात पात सभ मिटाईआ। पूरन इच्छया आप कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्धेरी रात मिटईआ। चार वरन इक्क सिक्दारा। चार वरन इक्क घर बाहरा। चार वरन इक्क अकारा। चार वरन निहकलंक दर करे निमस्कारा। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे सोहँ नाम अधारा। निरँकार निरँकार है। आदि अन्त जोत अधार है। साचा शब्द जोत धुन्कार है। गुरमुखां सद प्यार है। आत्म दुक्खां भुक्खां दए निवार है। सहज सुभाए मिल्या हरि भतार है। सुफल कराई मात कुक्खा निहकलंक नर अवतार है। मात गर्भ होए उलटा रुखा, आत्म रक्खे जो हँकार है। जो जन आए दर्शन भुक्खा, देवे दरस आप दातार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि वड गुणवन्त,

एका जोत अधार सर्ब जीव जन्त है। एका शब्द धुन्कार, लक्ख चुरासी विच वरतंत है। एका सच घर बाहर, जिथ्थे वसे आप भगवन्त है। गुरमुख विरला पाए सार, जिस मिल्या हरि साचा कन्त प्यार है। बेमुखां करे ख्वार, कलिजुग माया पाए बेअन्त है। गुरसिक्खां देवे सोहँ साचा नाम अपार जुगां जुगन्त है। बेमुखां देवे दुरकार, अन्तिम अन्त करे भस्मंत है। गुरमुखां देवे आत्म जोत, विच आत्म दीपक जोत जगंत है। बेमुखां कर ख़ुआर, सदा सदा मुख भवन्त है। गुरमुखां करे विचार, अनहद शब्द धुन वजन्त है। बेमुख मानस जन्म गए कलि हार, भुल्लया हरि साचा कन्त है। गुरमुख सोहण हरि चरन दवार, बैठा आप पूरन भगवन्त है। बेमुख धक्के बाहर, लक्ख चुरासी विच भवन्त है। गुरमुख गुरसिख कर दरस कलिजुग उतरे पार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मातलोक ल्या अवतार है। अचरज खेल हरि वरतानया। चले चलाए आपणे भाणया। क्या कोई जाणे जीव निधानया। आपणा आप ना समझे फेर पछतानयां। जोत सरूपी हरि हरि साचा घनकपुरी जोत जगानयां। सन्त मनी सिँघ आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानयां। शब्द धुन इक्क उपजानयां। विच मात कलिजुग चुण प्रभ देवे साचा मानयां। कवण जाणे हरि तेरे गुण, ना कोई जाणे वेद पुरानयां। गुरमुख विरले कलिजुग लैण कन्न सुण, जो अन्तिम वरते भाणयां। सृष्ट सबाई प्रभ जाए पुण, तख्तों लाहे राजे राणयां। अन्तिम अन्त कलिजुग चुण, मेट

२३६ ०३ मिटाए सेठ सिठाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरताए, साचा शब्द लिखाए ना कोई मेटे मेट मिटाए, २३६ ०३

आप उठाए सत्तर लक्ख पठाणया। सोहँ शब्द प्रभ मारया बाणा। कोई ना बूझे राजा राणा। हरि वरताए आपणा भाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त विच मात लिखाणा। सत्तर लक्ख पठाण चढ़ाए। कक्ख कक्ख कक्ख उडाए। वक्ख वक्ख वक्ख कर वक्ख बहाए। भक्ख भक्ख भक्ख माझा देश हो जाए। दस दस दस हरि लेख लिखाए। किसे ना चले कोई वस, वाली हिन्द संभल ना पाए। शब्द बाण हरि साचा लाए कस, भरम भुलेखा सर्ब मिटाए। गुरमुख साचे प्रभ लए रक्ख, आप आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाए। माझे देस होए ख्वारी। ना कोई दीसे महल्ल अटारी। भज्जे फिरन नर नारी। अन्तिम पासा आया हारी। जीव जन्त क्या करे विचारी। शब्द मार प्रभ साचे मारी । आपणा मूल गए हारी। शब्द त्रसूल करे ख्वारी। बेमुख ना भूल साचा दर सच्चा दरबारी। अन्तिम कलिजुग तुट्ट गए फूल गुरमुखां मिल्या प्रभ साचा कन्त कन्तूहल जिउँ अर्जन कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आपे पावे सारी। गुर गोबिन्द एह लेख लिखाया। आपणा बाणा आपे पाया। सोहँ राणा शब्द बणाया। वड वड देवी देव करोड़ तेतीस सरन बहाया। क्या कोई जाणे प्रभ साचे दा भेव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख

२३७ ०३

विरले आपणा भेव खुल्हाया। अमृत मेघ हरि वरसांयदा। आत्म तृखा सभ मिटांयदा। दसवीं दिशा आप खुल्लांयदा। रस रस अमृत झिरना आप झिरांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जिंदा आप तुड़ांयदा। अमृत साचा मुख चवाया। काया दुःख सर्ब मिटाया। एका बख्शे आत्म सुक्ख, सोहँ दान प्रभ झोली पाया। दिवस रैण रैण दिवस सद सुक्खणा सुक्ख, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाया। कलिजुग मिटाए दुपहर कहर गुरमुखां आत्म शांत कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ इकांत खेल रचाया। इक्क इकांती बूंद स्वांती। गुरमुखां मुख चवांती। आप बंधाए चरन नाती। देवे दरस घर सुत्या राती। गुरमुख साचे अंदर वेख मार झाती। जोत सरूप हरि बैठा रहे इकांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार कराए प्रगट जोत कलिजुग विच लोकमाती। अमृत बरखे किरपा निध। दर आयां कीने कारज सिद्व। सोहँ शब्द तीर चलाया, मन तन आत्म जाए विध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणे मिलण दी बिध। आप बणाए आपणी बिध। चरन रखाए सर्ब रिद्ध सिद्व। गुरमुख उपजाए घर नौ निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर कारज कीने सिद्व। दर साचा घर साचा वर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार साचा, नाम साचा राम साचा शाम साचा काम साचा धाम साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार साचा। सच राज सच ताज सच काज, सच गुरमुख साचे चरन बहाए, बेमुख आत्म भए भाज। सोहँ साचा नाम जपाए, दरगाह साचा दाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आप संवारे आपणे काज। गुण अवगुण हरि जाणदा। बेमुखां सदा पछाणदा। आपणा खेल आपे जाणे ना जीव किसे वखाणदा। जिस चलाए आपणे भाणे, सो रंग हरि साचा माणदा। जिस जन देवे हरि चरन ध्याने, रसना हरि हरि उचारदा। जिस जन आत्म जोत जगाए महाने, भाण्डा भरम भर ब्रह्म ज्ञान दा। सो जन होए सुघड़ स्याणे, जिस आपणी सरन लगावंदा। जोत सरूपी जोत हरि, विच बैठा लेख लिखावंदा। लेखा लिखे कर्म विचारे। सच धर्म दी करे जन कारे। हरि हरि नाम शब्द रसन उचारे। प्रभ अबिनाशी पकड़े बाहों, अन्तिम अन्त पार उतारे। आप बहाए साचे थाओ, जिथ्थे वसे हरि निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरमुखां सद लेख लिखारे। गुरमुखां हरि लेख लिखाया। जुगो जुग वेख वेख हरि आपणी सरन लगाया। आवे जावे धार भेख, गुरमुखां भेव खुल्हाया। आप लिखाए साचे लेख, सच शब्द हरि दात दवाया। बेमुख रहे वेखा वेख, प्रभ अबिनाशी सार ना पाया। गुरमुखां आत्म लगाए शब्द मेख, बज़र कपाटी चीर चिराया। हरिजन जन हरि नेत्र पेख, औखी घाटी आप चढ़ाया। ना कोई जाणे पीर पैगम्बर शेख़, गुरमुख साचा किस धाम बहाया। जोती जोत सरूप हरि, जुगो

जुग जन भगतां माण दवाया। आप चुकाए जम का डर, आप आपणी गोद उठाया। गुरमुख साचा ना जाए मर, अन्तिम जोती जोत मिलाया। प्रभ अबिनाशी साचा दर, सद रहे खुल्लया, आपणे चरन लए बहाया। साचा घर एका जोती रहे रुशनाया। आपे देवे साचा दरस, जिस जन सरन लगाया। आत्म भण्डारे देवे भर, अमृत झिरना आप झिराया। बेमुख जीव की रिहा कर, आप आपणा ना किसे जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरमुख चढ़ाए साची नईआ। गुरसिक्खां दस्से साचा राह। बेमुखां ना दीसे कोई राह। गुरमुखां पकड़े प्रभ साचा बांह। बेमुखां दरगाह साची ना कोई मिले थां। गुरसिक्खां जपावे आपणा साचा नां। बेमुख भवाए जिउँ सुंञे घर कां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए दूसर कोई ना। बेमुख जीव सद विचारना। हउमे हँगता रोग निवारना। माया ममता विच ना जन्म गवावणा। बिन हरि साचे किसे ना पार लँघावणा। जो जन होए आत्म हँकारी दुराचारी प्रभ साचे दर दुरकारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पार उतारना। सच शब्द हरि देवे दान। जो जन रक्खे चरन ध्यान। देवे जोत अलक्खणा अलक्ख किरपा करे आप भगवान। सच वस्त किसे हरि देवे, गुरमुख विरले प्रभ दर पायन। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सोहँ देवे साचा दान। सच शब्द हरि देवे दान। दर घर आए होए परवान। साचे लेख हरि आप लिखाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आप चढ़ाए शब्द बबाण। सोहँ देवे शब्द बबाणा। गुरमुख सद रसना गाणा। उज्जल मुख जगत रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे मार्ग पाणा। सच राह प्रभ जाए दस्स। आत्म अन्धेर मिटाए जिउँ चन्द मस। दिवस रैण सद रसना गाए, प्रभ अबिनाशी होए वस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गोद बिठाए हस्स। रक्खे वास होवे दास प्रभ पुरख अबिनाश। जो जन गाए सोहँ स्वास। अन्तिम अन्त प्रभ साचा करे बन्द खलास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। जन्म मानस होया रासा। मिल्या हरि पुरख अबिनाशा। जो जन होवे दासन दासा। देवे दरस हरि सर्ब घट वासा। अज्ञान अन्धेर आत्म दर तों नासा। संञ सवेर इक्क साची जोत कराए वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सद रक्खे वासा।

२६ जेठ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर

गुर गोबिन्द गुर गहर गम्भीरा । गुर गोबिन्द आत्म शांत करे सरीरा। गुर गोबिन्द गुरमुखां देवे शब्द धीरा। गुर गोबिन्द अमृत आत्म देवे साचा नीरा। गुर गोबिन्द हउमे कट्टे विच्चों पीड़ा। गुर गोबिन्द कर दरस होए सच नबेड़ा। गुर

गोबिन्द सोहँ शब्द विच मात उठाया साचा बीड़ा। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तोड़े हड्डी रीड़ा। गुर गोबिन्द गहर गुर सागर। गुर गोबिन्द गुरमुखां कर्म कराए निर्मल उजागर। गुर गोबिन्द अमृत आत्म टिकाए झूठी गागर। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाए गुरमुख साचे आप कराए नाम रत्नागर। गुर गोबिन्द गुर कर्म विचारया । गुर गोबिन्द कलि जामा विच मात दे धारया । गुर गोबिन्द गुरमुखां मेल घर सच मिला रिहा । गुर गोबिन्द बेमुखां कलिजुग अन्तिम अन्त भुला रिहा। गुर गोबिन्द गुरमुख साचे सन्त सोए आप जगा रिहा। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख रोग सोग सर्ब मिटा रिहा । गुर गोबिन्द साची कार । गुर गोबिन्द साची धार । गुर गोबिन्द जोत सरूपी लोक तिन्न अकार। गुर गोबिन्द वड शाहो भूपन भूपी आदि जुगादि शब्द अधार। गुर गोबिन्द बिन रंग रूपी, गुरमुख साचे विच रिहा पसार । गुर गोबिन्द सृष्ट सबाई करे अन्ध कूपी, गुरमुख साचे देवे तार । गुर गोबिन्द सति सति सरूपी, एका जोत हरि निरँकार । गुर गोबिन्द महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि पावे सार । गुर गोबिन्द गुणां गुणवन्त। गुर गोबिन्द दरस दर पायण विच मात पूरन सन्त। गुर गोबिन्द नेत्र पेख हरस मिटायण मेल मिलावा साचा कन्त । गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे सर्ब जीव जन्त । गुर गोबिन्द जीआं गुर दाता। गुर गोबिन्द सर्ब घट घट होए ज्ञाता। गुर गोबिन्द खट खटा रंग रंगाता। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाता। गुर गोबिन्द सहिज धुन पायन। गुर गोबिन्द गुरमुख विरले दरस पायन। गुर गोबिन्द घर दर हरि साचे लेख लिखाइन। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लेखे आपे लाइन। गुर गोबिन्द लेख लिखारे। गुर गोबिन्द भेख धारे। गुर गोबिन्द वेख वेख वेख भुल्ले संसारे। गुर गोबिन्द लेख लेख गुरमुखां लेख लिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी धारे। गुर गोबिन्द जगत पित मात। गुर गोबिन्द बख्शे सोहँ देवे साची दात। गुर गोबिन्द बख्शे एका चरन प्रीती साचा नात । गुर गोबिन्द गुरसिख पढ़ाए इक्क जमात। गुर गोबिन्द आत्म साची जोत जगाए, मिटाए अन्धेरी रात। गुर गोबिन्द जन दर्शन पाए, अंदर वेख मार झात। गुर गोबिन्द एका एक रहि जाए, जोत सरूपी सदा इकांत । गुर गोबिन्द जो दर मंगण आए, सच शब्द देवे वड करामात । गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती बख्शे साची दात।

❊ २८ जेठ २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❊

हरिभगत हरि रंग जाण। आपणा आप कलि जीव पछाण। झूठी माया विच ना भुल्ल निधान। वेले अन्तिम अन्त कर प्रभ साचा तोड़े सर्ब अभिमान। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ बख्शे चरन ध्यान। मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म जोत धरे भगवान। बेमुखां माया पाए बेअन्त, दर दर फिरन धक्के खाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे विच मात कलिजुग आण। मातलोक आ जामा धारया। बेमुख जीव सर्ब मिटा रिहा। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे आपणी सेवा ला रिहा। देवे वड्याई विच देवी देवा, साचा नाम झोली पा रिहा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवा, सच शब्द लिखा रिहा। अमृत आत्म देवे सोहँ साचा मेवा आत्म साची चोग चुगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख काग हँस बणा रिहा। गुरमुख बणाए काग हँस। आप बणाए आपणा बंस। देवे वड्याई विच सहँस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन बणाए एका बंस। चार वरन एक अकारा। चार वरन इक्क करतारा। चार वरन एका शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन करे इक्क भण्डारा। चार वरन एका गोती। चार वरन एका जोती। चार वरन प्रभ आप बणाए गुरमुख सुच्चे मोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग गुरमुखां मैल आत्म धोती। आत्म मैल गुरमुखां धोए। सोहँ बीज साचा बोए। इक्क शरायत सतिगुर साचा गुरमुख हिरदे लए परोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगां जुगन्त गुरमुख साचे सोहँ धागे लए परोए। साचा नाम रिदे वसावणा। पूरन काम हरि आप करावणा। साचा जाम शब्द पिलावणा। घनईआ शाम दरस दिखावणा। गुर साचे दिवस रैण रैण दिवस एका रंग रंगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए पूरन इच्छया आप कराए। पूरन इच्छया होए गुरसिख। प्रभ दर मंगे साची भिख। साचे लेख प्रभ देवे लिख। देवे वड्याई विष्नूं भगवान, देवे वड्याई विच मुन रिख। रिख मुन मुन रिख होए गुरमुख। जूठे झूठे होए बेमुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे साची सिख्या लैण सिख। कलिजुग झूठा जगत विहारा । दर घर साचे वेख लेख लिखारा । कलिजुग भाण्डे कच्चे अन्तकाल कलि भन्ने साचा मारे शब्द कटारा। बेमुख दर ते आए नाचे, प्रभ अबिनाशी भेव अपारा। गुरमुख विरला आपे ढाले साचे ढांचे, सोहँ देवे नाम हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नर अवतारा। नरायण नरया, दर घर साचे वरया। मानस जन्म कलि सुफल करया। गुरमुख साचा ना जन्मे ना कदे मरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन लाग भव जल तरया। सरन लाग सच्ची सरनाया। वेला अन्तिम कलिजुग आया। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त क्यों मनों

भुलाया। सर्ब घट सर्ब जीव जन्त बेमुख होए क्यों मुख भवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। बेमुख होए ना जाणा भुल्ल । कलिजुग माया विच ना जाणा रुल्ल । मानस जन्म फेर ना आवणा वड अनमुल्ल। झूठे बन्दे कलिजुग जीव अन्त जाण तुल। सोहँ शब्द प्रभ साचा वंडे, साचा दर ना जाणा भुल्ल। जोत जगाई विच वरभण्डे, गुरसिख उपजाए कँवल फुल्ल। बेमुखां आत्म होई रंडे, अमृत आत्म गया डुल्ल। गुरमुखां प्रभ तुट्टी गंढ्ढे, सच दुआरा विच मात गया खुल्ल। सोहँ शब्द वड वड प्रचण्डे, कोए ना उसदे तुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप उधारे जो दर आयण भुल्ल। गुरसिक्खा देवे गुर चरन ध्यान। गुरसिक्खा देवे गुर सोहँ साचा दान। गुरसिक्खां देवे गुर साचा आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुरसिक्खां देवे गुर साचा आत्म जोती शक्त महान। गुरसिक्खा देवे गुर साचा साचा शब्द मात बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। गुरसिक्खां देवे नाउँ निरँकारा। करे खेल अपर अपारा। कर्म धर्म जरम कलि विचारा। भरम शर्म प्रभ आत्म सर्ब निवारा। एका वरम सोहँ शब्द तीर प्रभ मारा। पूरन ब्रह्म साची जोत शब्द धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अगम्म अपारा। शब्द बाण हरि आप चलाया। आण बाण पर्दा लाहया। सच निशान शब्द झुलाया। जोत महान विच देह टिकाया। गुण निधान हरि दया कमाया। चतुर सुजान गुरसिख

२४१ ०३ बणाया। बली बलवान आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप, गुरसिक्खां जोती मेल मिलाया। २४१ ०३

आत्म जोत होए चमत्कारा। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कारा। गुरमुख वेखे कर विचारा। रुण झुण झुण रुण दिवस रैण एका धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे सच सच सच वरतारा। एका जोत आत्म प्रकाशे। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासे। गुरसिख मानस जन्म होए रासे। प्रभ अबिनाशी तेरा होए दासे। दिवस रैण रैण दिवस तेरे आत्म रक्खे वासे। गुरसिक्खां तीजा नैण, सोहँ शब्द चलाए स्वास स्वासे। गुरमुख साचे प्रभ दर साचा लहणा लैण, प्रभ साचा करे बन्द खुलासे। आत्म पहनाए साचा गहिण, सोहँ देवे सच धरवासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कराए कारज रासे। गुरसिख तेरी पूरन काज। सोहँ शब्द तेरी आत्म लगाए साची आवाज़। सच शब्द धुरदरगाही देवे साचा ताज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी रक्खे लाज। शब्द आवाज़ हरि आप लगाए। सोहँ तागा हरि तन पहनाए। अनहद साचा राग गुरसिख उपजाए। आपणे हत्थ तेरी पकड़े वाग, वेले अन्त घर सच बहाए। आपे धोए तेरे पापां दाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर नाही कोए। पापां दाग आपे धोया। गुरसिख उठाया कलिजुग सोया। सोहँ बीज आत्म साचा बोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार दूसर नाहे कोया। आत्म बीज शब्द बिजईआ। आप चढ़ाए

साची नईआ। सतिजुग साची नींह रखईआ। कलिजुग कच्ची जड़ पुटईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल विच मात करईआ। अचरज खेल करे करतारा। गुरमुखां मेल आत्म दीप करे उज्जयारा। बेमुखां बेड़ा जाए ठेल, ना दीसे कोई सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप करे वरतारा। आपणा आप करे वरतार। कलिजुग अन्तिम आए हार। वेले अन्त होए ख्वार। घर घर फिरन सर्ब भिखार। शब्द सरूपी प्रभ मारे मार। चार कुन्ट होए हाहाकार। गुरमुख साचे दर घर साचे सोहँ शब्द कराए जै जैकार। प्रभ अबिनाशी जो जन वाचे, देवे दरस अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत हुलार। जोत सरूपी जोत हुलारा। तीन लोक इक्क पसारा। खण्ड ब्रह्मण्ड एका रंग रंगे करतारा। विच मात सच्चखण्ड निहकलंक तेरे चरन दुआरा। बेमुखां प्रभ देवे डन्न, सोहँ शब्द उठाए खण्डा दो धारा। कलिजुग अन्तिम आई कंड, ना दिसे पासा हारा। सृष्ट सबाई होई रंड, ना कोई दीसे सच भतारा। झूठी पौंदे डण्ड, प्रभ अबिनाशी खेल अपारा। चार वरन प्रभ देवे एका गंढु, सोहँ शब्द धीरज धारा। शब्द सरूपी आत्म पावे ठंड, अमृत चले सच फुहारा। एका नाम प्रभ सृष्ट सबाई जाए वंड, एका दीसे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारा। इक्क दुआर जगत दिसाना। वेख वेख गुरसिख जगाना। अमृत साचा नाम प्याना। पूरन काम आप कराना। कोटन भान नाम जोत जगाना। दिवस रैण रैण दिवस अनहद शब्द धुंन उपजावना। गुरमुख साचे मिटा हरस आपणी सरन लगावणा। प्रभ अबिनाशी विच मात आपणा कर्म कमावणा। बेमुख जीव चुण अन्तिम अन्त नष्ट करावणा। निहकलंक कवण जाणे तेरे गुण, जोत सरूपी जामा पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुलावणा। आप आपणा भेव खुल्हाया। सतिजुग साचा राह चलाया। सोहँ साचा विच मात धराया। हिरदे वाचा हरि आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाया। दया धारे दरस गुरदेव। अपर अपार करे गुरदेव। भगत उधारे सोहँ देवे साचा मेव। जो जन आए चरन दुआरे, देवे वड्याई विच देवी देव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरथा जाए ना कलिजुग तेरी सेव। सेवक सेवा पूरन घाल। चरन प्रीती निभे नाल। आत्म अतीती स्वास सुखाल। मानस जन्म जाओ जग जीती, साचा शब्द देवे धन माल। बख्शे भुल्ल जो पिछली कीती, अगला वक्त लैणा संभाल। प्रभ अबिनाशी परखे नीती, गलों कट्टे जगत जंजाल। कर दरस होए काया सीतल सीती, सच वस्त रक्खणी संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। चरन प्रीती निभे तोड़। गुरसिख ना होए कदे अजोड़। गुर पूरा वड सूरा जोती नूरा ना होए कदे अमोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी साची लोड़। प्रभ साचा पूरन भगवन्त। देवे वड्याई

गुरमुख साचे सन्त। आप बणाए गुरसिक्खां बणाए साची बणत । भेव ना पाए कोई जीव जन्त । प्रभ दी महिंमा बड़ी बेअन्त। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस मिल्या हरि साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जिह्वा देवे साचा मंत। जिह्वा मंत सच गुण गाओ। प्रभ अबिनाशी रिदे वसाओ। सर्ब घट वासी नित दर्शन पाओ। करे बन्द खलास जन्म फंद कटाओ। कलिजुग ना लेण मदिरा मासी, वेले अन्त फेर पछतावणा। सोहँ जपणा स्वास स्वासी, प्रभ अबिनाशी दर्शन पावणा। आप कटाए लक्ख चुरासी, जन्म मरन विच फेर ना आवणा। किरपा करे घनकपुर वासी, हरन फरन आप खुल्हावणा। जो जन होए दासन दासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गावणा। सद सद रसना गावणा। प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। आत्म साचा दीप जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां भुलयां सतिजुग मार्ग लावणा। गुरमति गुर दर ते पाईए। आत्म साचा तत्त रखाईए। सोहँ साचे वत्त बीज बिजाईए। प्रभ अबिनाशी रक्खे पत्त, दिवस रैण सद रसना गाईए। आपे दे समझावे मति, गुर दर आए चरन सीस झुकाईए। गुरमति गुर आप दिसाए। साचे मार्ग हरि आप लगाए। सारंगधर भगवान बीठला, एका एक आप अख्वाए। कलिजुग जीव कौड़ा रीठला, अन्तिम अन्त कलि भन्न वखाए। सोहँ शब्द विच मात धराए मीठला, गुरमुख विरला रसना गाए। प्रभ अबिनाशी साचा डीठला,
२४३ ०३ कर दरस हरस मिट जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग मजीठला, गुरसिख तेरी आत्म दए चढ़ाए। आत्म २४३ ०३
रंग सच रंगाउणा। प्रभ अबिनाशी साचा संग विच निभाउणा। प्रभ दर मंगे साची मंग, सोहँ शब्द प्रभ झोली पाउणा। कलिजुग जीव अन्तिम जाणा भज्ज जिउँ काची वंग, भैण भाई ना किसे छुडाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम, दरगाह साची माण दवाउण। साची दरगाह देवे माण। जन भगतां करे कलि पछाण। सोहँ देवे शब्द बबाण। आप चढ़ाए वाली दो जहान। गुरमुख बहाए एका एक अस्थान। जिथ्थे वसे आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी एका रंग रंगान। प्रभ अबिनाशी सदा सदा बख्शिंद। गुरमुखां उपजाए आत्म परमानंद। जो जन रसना गायण विच बत्ती दन्द। प्रभ अबिनाशी साचा पायण, रसन तजायण मदिरा मास गन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कटाए जम का फंद। जम का फंद हरि देवे कट्ट। सोहँ शब्द खुल्हाया विच मात साचा हट्ट। गुरमुख साचे घर साचे लाहा लैण खट्ट। बेमुख जीव वेहन्दे करे खेल जुगो जुग जिउँ बाज़ीगर नट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे घट घट। सर्ब घटा घट घट पसारा। लक्ख चुरासी जोत अकारा। जोत सरूपी इक्क पसारा। वेखे विगसे सृष्ट सबाई इक्क दातारा। तीन लोक एका एक अगम्म अपारा। सच शब्द विच भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप बणे वरतारा।

शब्द भण्डारा आप वरतंत। किरपा कर हरि भगवन्त। गुरमुखां गुरसिक्खां देवे साचा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक चढ़ाए रंगत। अमृत बूंद अपार है। गुरमुखां देवे तार है। दुःख रोग देवे निवार है। जो जन आए सच दरबार है। हउमे मैल देवे उतार है। प्रभ अबिनाशी पाए सार है। जन भगतां बख्शे चरन प्यार है। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार है। गुरमुख सोहँ शब्द अधार है। रसना जप जप जप आत्म बेड़ा पार है। आप उतारे तीनों तप, हउमे रोग निवार है। दर आयां उतारे पिछले पप्प, साचा देवे शब्द खुमार है। दिवस रैण सद रसना जप, ना होवे जगत ख़ुआर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अगम्म अपार है। अमृत बूंद मुख चवाओ। तन कलेश सर्ब गंवाओ। इक्क दरवेश घर साचे बण जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म तृप्ताओ। अमृत बूंद गुर दर सुहावणी। गुरमुखां मुख प्रभ आप चुआवणी। उज्जल मुख मात कुक्ख सुफल करावणी। एका उपजे साचा सुख दर आयां प्रभ पूर करे भावनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे आपणी जामनी। गुरसिक्खां करे आप जामन। पूर कराए साचे कामन। अमृत मेघ आप बरसाए जिउँ बरसे सावण। आत्म साची जोत जगाए जिउँ चमके दामन। बेमुख प्रभ आप खपाए जिउँ रामा रावण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जोत प्रगटाई भेख धारया जिउँ रूप बावन। अमृत आत्म
२४४ ०३ गुरसिख लागे। कलिजुग भाग तेरे जागे। आत्म धोए दागे। हँस बणाए गुर पूरा कागे। जो जन सरनी प्रभ साचे दी २४४ ०३
लागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कदे सोए दिवस रैण सद जागे। ना कोई मोया ना कदे सोया। गुरमुख तेरे दर खलोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव चुकाया एका दोया। एका दूआ जाए चुक्क। पिछला लेखा जाए मुक्क। अग्गे दी सुक्खणा सुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मेट मिटाए तेरे काया लग्गे दुःख। काया दुःख अग्न डन्न। दिवस रैण ना बज्झे मन। शब्द सरूपी साचा देवे डन्न। सोहँ शब्द सुणाए कन्न। गुरमुख आत्म जाए मन्न। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्नू। अन्तिम कलिजुग आप उठाए गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुक्खों कहे धन्न धन्न। धन्न धन्न धन्न गुर दाता। सर्ब जीआं का आपे ज्ञाता। सोहँ शब्द देवे वड करामाता। गुरसिख पढ़ाए इक्क जमाता। चरन प्रीती बख्शे आपे बणे गुरसिख तेरा पित माता। आदि अन्त साध सन्त प्रभ साचा भैण भ्राता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता। सर्ब जीआं इक्क दातार। गुरमुखां देवे नाम अधार। मानस जन्म देवे सुधार। गुरमुख ना डुब्बे विच मंझधार। बाहों फड़ गुर जाए तार। आप बिठाए साचे दर दरबार। साचा दर धुर दरगाह। जित्थे वसे बेपरवाह। प्रभ दी महिंमा अगम्म अथाह। जोती जोत सरूप हरि, दूसर कोए ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बहाए

साचे थां। साचा धाम इक्क इकल्लड़ा। जोत सरूपी खेल अवल्लड़ा। गुरसिक्खां कराए भारा पलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द छत्र सीस गुरसिक्खां झुलड़ा। गुर पूरा भोग लगावंदा। गुरमुखां चोग चुगावंदा। आत्म तृखा सर्ब मिटावंदा। बेमुखां दर दुरकावंदा। गुरमुखां चरन लगावंदा। सोहँ साचा नाम जपावंदा। वाली दो जहान आप अख्वावंदा। कलिजुग अन्तिम अन्त नष्ट करावन्ता। सच सच सच वस्त हरि विच मात धरावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप करावंदा। साचा कर्म आप करावणा। सोहँ साचा नाम जपावणा। चार वरन इक्क थां बहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पावणा। रूप अगम्म अनूप क्या कोई पावे सार है। वड शाहो वड भूप आत्म नीती रिहा विचार है। जो जन पए औजड़ राहे, काया बीती दए उचार है। भरम भुलेखे सारे लाहे, हरि हरि रंग रंग कई हज़ार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे सद लिखार है। बिरध बाल जवानां। पूरन करे सर्ब पछाणा। शब्द छड्डे तीर कमाना। अंदर वड़े वाली दो जहानां। झूठा भेख जे कोई करे, आप परखे वल छल छल वल कलि कमाना। पुत्तर धीआं सर्ब जीआं आपे करे आपणा हिया, करे खेल बहु बिधनाना। दुखी पापी होया जिया, आत्म तृष्ना अग्न महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बहु बिध आपे करे पछाना। सर्ब जीव हरि साचा वस्सया। आत्म दीप कोट रवि सस्सया।
२४५ ०३ क्यों भुल्ला जीव होया अंध्यार जिउँ चन्न मस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा वक्त पछाणा, खेल ख़िलाणा, आपणा भेव किसे देवी देव ना दस्सया। राती रुत्ती रातड़ी रात, काया सुत्तड़ी प्रभ जगात। क्या कोई करे आप पुत्तड़ी, क्या कोई मारे लात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जाणे सर्ब वखाणे आपे वेखे मार झात। काम क्रोधी लोभी हँकारी। वेखे विगसे करे विचारी। सर्ब जीआं विच हरि पसारी। आत्म तुट्टे धीर धीरज हरि जिस सिर देवे हत्थ देवे नाम अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं विच रिहा पसारी। आत्म धीरज जाए टुट्ट। प्रभ अबिनाशी वेखे खुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख धर, आपे करे उलट पुलट। भेख धारे जीव विचारे ना पायण सारे। आत्म जिया आपे धारे। पुत्तर धीआं संग मलारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगारे। अंग अंग वेख संग। क्या करे जीव भुयन्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे झूठे लेखे वेखा वेखे करे सर्ब भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द निभाए साचा संग। अन्धेरी रैण झूठे वहिण। प्रभ अबिनाशी ना सके कहण। सर्ब घट वासी लहणा देणा सर्ब चुकैण। घनकपुर वासी तेरे भाणे विच गुरमुख विरले रहण। जिस जन आत्म होए उदासी, वेखे कर कर तिरछे नैण। करे कराए जो मन भासी, आपणे रंग सद रखैण। आपे परखे आत्म नीती, क्या कोई करे

जीव अजीती, सर्ब कला समरथ सर्ब घट जाणे जो जो रहे बीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जोत सरूप सदा रहे अतीती। आत्म भुल्लया जीव रुल्लया झूठे धन्दे लुज्झया। ना कोई तेरा मुलया। काया झूठी आत्म भुल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सदा सद एका रंग अतुल्या। आत्म डोले जिया बोले हरि वेखे कोले ना कोई रक्खे ओहले सच पर्दा ना पूरा फोले। झूठी काया तन मन डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुलाए साचे तोले। मन मूर्ख जिस जाए डुल्ल। विच मात हो जाए वड्डी भुल्ल। टाहणीउँ टुट्टा जाए साचा फुल्ल। पाणी पै जाए काया चुल्ल्ह। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी क्या कोई समझावे कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप सदा अभुल्ल। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहिर। वड दाता वड शायर। वड दाता वड नायर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पकड़े पछाड़े झूठे कायर। जूठे झूठे काया लूठे कपटी मूरे धुर दरगाहों मूठे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कर्म ना दर कमायण। झूठे दिसण काया सच दवार सच कर मन्नणा। आत्म धीरज सभ ने बन्न्हणा। साचे दर ना लागे सन्न्हणा। भाणा प्रभ दा सच कर मन्नणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द पहनाए साचा कंगणा। संसा जगत अन्धेर है। अन्ध अज्ञानी फिरदा चार चुफेर है। विच आत्म माया कंध ना दीसे संञ सवेर है। आत्म वजा जंद गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरन लगाए घेर है। करे बन्द बन्द बंधन बन्दी तोड़ आप अखवांयदा। गुरसिख चरन प्रीत, प्रभ साचा तोड़ निभांयदा। अमृत बूंद स्वांती जिस जन पीती, कँवल नाभ खुल्लांयदा। हरि काया सीतल कीती, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे साचा माण दवांयदा। दरगाह साची पावे माण। एका रक्खे चरन ध्यान। आप चुकाए जम की काण। सोहँ देवे शब्द बबाण। वेले अन्त होए सहाई, किरपा करे महान। गुरमुख साचे दे वड्याई, अन्तिम जोती मेल मिलान। दर घर साचे वज्जी वधाई, दरगाह साची होवे परवान। उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई, करे दरस दिवस रैण जोत सरूपी विष्नूं भगवान। जोत सरूपी रंग अपारया। बिन रंग रूप सर्ब अकारया। सति सरूप सर्ब पसारया। महिंमा अनूप ना किसे विचारया। वड वड भूप खड़े रहण द्वारया। सृष्ट सबाई होए अन्ध कूप, प्रभ अबिनाशी मनों विसारया। बिन रंग रूप जोत सरूप गुरमुख साचे विच समा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरत रिहा। जोत सरूप हरि वरतारा। करे खेल अपर अपारा। मिलाए मेल जन भगत चरन दुआरा। बिन बाती बिन तेल आत्म दीप करे उज्जयारा। बण साचा सज्जण सुहेल, दिवस रैण रहे रख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। आदि अन्त ना पारावारया। साध सन्त ना किसे विचारया। जीव जन्त सर्ब भुला रिहा। माया पाए जगत बेअन्त, आपणा

आप छुपा बिहा। गुरसिक्खां बणाए साची बणत, आत्म जोती दीप जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कन्त घर साचे मेल मिला रिहा।

❋ ३० जेठ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

कलिजुग अन्त विचारना। मिल हरि साचे कन्त, जन्म सवारना। जिस बणाई जीव तेरी बणत, सो क्यों मनों विसारना। देवे वड्याई विच जीव जन्त, दिवस रैण सद रसन उचारना। प्रभ दी महिंमा बड़ी अगणत, जोत सरूपी हरि भेखी भेख धारना। कलिजुग माया पाए बेअन्त, गुरमुख विरले कलि विचारना। आप बणाए साचे सन्त, सोहँ शब्द जिस जन रसन उचारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारना। कर किरपा पार उतारे। जो जन आए चरन दुआरे। साचा देवे नाम अधारे। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कारे। दिवस रैण रैण दिवस एका शब्द पवण हुलारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा खड़ा रहे तेरे आत्म दर दुआरे। दर हरि खुल्हाया। गुरसिख जगाया सोया। भाग लगाया सोहँ बीज आत्म बोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दूसर नाही कोया। नरायण नर नर निरँजणा। गुरसिक्खां हरि पाया आदि जुगादि वड वड दु:ख भंजना। सोहँ साचा नाम इक्क चढ़ाया रंगणा। चरन धूढ़ देवे साचा मजना। गुरसिख गुर पूरा पाया, प्रभ अबिनाशी साचा साक सैण सज्जणा। साक सज्जण आप सुहेला। गुरमुखां आप मिलाया साचा मेला। अन्तिम अन्त काल आ गया, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि दीपक जोत जगा ल्या। बेमुखां करे वक्त दुहेला, गुरमुख सोया कलि आप जगा गया। जोत सरूपी सद वसे अकेला, बाहों पकड़ आपणी सरन लगा ल्या। आप सुहाया साचा वेला सोहँ साचा नाम पिला ल्या। रसन लगाया अमृत फल सच केला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्तर विछड़यां कलि कराया मेला। आपणा मेल आप मिलावे। गुरमुख साचे तेरी आत्म जोती बिन बाती बिन तेल जगाए। हरि हिरदे सद वसाए, क्या कोई जीव भेव छुपाए। बेमुख जीव दर ते आए। सच नाम ना कोई भिच्छया पाए। गुरमुख साचे हरि हिरदे वाचे, सोहँ धागे प्रभ लए परोए। बेमुख जीव भाण्डे काचे, मदिरा मासी अन्तिम रोए। गुरमुख ढाले प्रभ साचे ढांचे, दूई द्वैत ना रहे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपे सोए। सच घर सच कर जानणा। सच घर वास भगवानणा। सच घर प्रकाश कोटन भानणा । सच घर विनास अन्ध अध्यानणा। सच घर आत्म कंध हरि कटानणा। सच घर बन्द बन्द हरि छुडावणा। सच घर सतिगुर साचा

चन्द चढ़ावणा। सतिगुर साचा सच घर गुरसिख प्रमानंद विच रखावणा। सच घर हरि दिखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए प्रकाश कोटन भानणा। सच घर वेख विचार। सच घर जोत अकार। सच घर शब्द अधार। सच घर अमृत धार। सच घर दसवां दर खुल्हार। सच घर अनहद धुन सच्ची धुन्कार। सच घर सुन्न मुन्न दे निवार। सच घर सच रंग इक्क करतार। सच घर एका बिन्द इक्क बिन्दार। सच घर एका एक साची तार। सच घर एका गुर चरन प्यार। सच घर एका एक शब्द बिधार। सच घर एका एक मेल निरँकार। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दिखाए सच शब्द सच्ची धुन्कार। सच घर सच अस्थान। सच घर जोत महान। सच घर वसे भगवान। सच घर साचा राह दस्से वड बली बलवान। सच घर गुरमुख साचा सच घर वसे, जिस किरपा करे महान। सच घर बैठा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सच घर सच दवारा। सच घर वसे हरि निराधारा। सच घर गुरमुख वेख एका रूप अपारा। सच घर एका एक एक हरि गिरधारा। सच घर जाए गुरसिख साचा देवे नाम अधारा। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप वसे नरायण नर अवतारा। सच घर सच संदेश। सच घर साचा वेस। सच घर एका एक वेख, प्रभ साचे दा साचा भेस। सच घर साचे दर वसे हरि वड नरेश। साचे घर आत्म सर गुरसिख तर प्रभ चरनी पड़ ना जाए मर,
२४८ ०३ चुक्के डर वस साचे दर, जोती सरूप हरि प्रवेश। सच घर वेख दर दसवां, भस्म पर्दा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं २४८ ०३
भगवान, दिवस रैण सद दर्शन कर। सच घर सच प्यार। सच घर गुरसिख पछाण। सच घर विच मात सोहँ देवे शब्द बबाण। सच घर गुरमुख विरले कलि चढ़ जाण। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए रहाए टिकाए समाए वखाए जगाए गुरसिक्खां वाली दो जहान। सच घर सच द्वारी। सच घर काया कोट रिहा हरि उसारी। सच घर साची जोत सोहँ शब्द वड खुमारी। सच घर आत्म कढ्ढे खोट, गुरसिख तेरी हउमे जाए तन बिमारी। सच घर पाप उतारे कोटन कोट, जो जन करे चरन निमस्कारी। अन्तिम अन्तिम ना होए झूठ, देवे दरस अगम्म अपारी। कलिजुग जीव अल्हिणिउँ डिग्गे बोट, मदिरा मास रहे खुमारी। सच घर बेमुखां अजे ना भरी पोट, दिवस रैण रहे झक्ख मारी। गुरसिख कदे ना आवे तोट, सोहँ देवे साचा वड भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे करे सच्ची सिक्दारी। सच घर सच सिक्दारा। सच घर जोत सरूपी खेल अपारा। सच घर वसे हरि नरायण नर एका एकँकारा। सच घर जोती जोत हरि पसर पसारा। सच घर ना वरन ना गोत, एका जोत तीन लोक अधारा। सच घर गुरसिक्खां मैल दुरमति धोत, अमृत देवे नाम भण्डारा। सच घर इक्क निर्मल प्रकाश जोत, गुरसिख वेखे अपारा। आप खुल्हाए गुरसिख तेरे सोत, आत्म दीप

होए उज्जयारा। बेमुख दर ते रहण रोत, ना कोई मिटावे अन्ध अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा गुरसिक्खां पार उतारा। सच घर सच धर्मसाल। सच घर सोहँ वस्त अनमुल्लड़ा लाल। सच घर गुरमुख साचा पलड़ा साचा फल लग्गा डाल। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरमुख साचे दए वखाल। सच घर धाम अवल्लड़ा। सच घर एका एक वसे इकल्लड़ा। सच घर गुरमुख साचे वेख कर चरन निमस्कार गल पा पलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे आए दर दवार दिवस रैण रहे सद खलड़ा। सच घर सच्चा सचखण्ड है। सच घर गुरसिख तेरी आत्म ब्रह्मण्ड है। सच घर तेरा दसवां दवार तेरा विच वरभण्ड है। सच घर कलिजुग जीव आई कंड है। जूठे झूठे माया लूठे पाउँदे ऐवें डण्ड है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दर बहाए घर वसाए माण दवाए विच नवखण्ड है। नौ खण्ड नौ दरवाजे। दसवें वसे गरीब निवाजे। ना रोए ना हस्से, सच प्रकाश कोट रवि सस्से, अनहद शब्द अनाहद वाजे। शब्द तीर साचा कसे, सृष्ट सबाई कलि अन्तिम गाजे। अग्न मेघ विच धरती बरसे, ना कोई कलिजुग रक्खे लाजे। चार कुन्ट बेमुख नस्से, अन्तिम अन्त ना कोई पर्दा कज्जे। गुरसिख साचा सच घर वसे, गुर चरन सरन पी अमृत आत्म रज्जे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द नगारा विच मात चार कुन्ट तेरा सद वज्जे। शब्द

२४६ ०३ नगारा साचा वज्जणा। जोत सरूपी हरि विच मात दे गज्जणा। गुरसिक्खां आपे हरि साचा लज्जणा। आत्म जिंदा हँकारी भज्जणा। गुरसिख बणाए आपणी बिन्दा, साचा घाड़न घड़े, ना विच मात दे भज्जणा। बेमुखां पुटाई जड़े, घर साचा ना कलिजुग लभ्भणा। गुरसिख सोहँ शब्द जमायत साची पढ़े, दर घर साचे जाए शब्द सरूपी आत्म बज्झणा। दरगाह साची माण दवाए सच न्याउँ आपे करे ना कोई करे अजना पजना। अन्तिम जोती जोत हरि मेल मिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा हरि साचा साक सैण सज्जणा। पूरा गुर सद वडयाईआ। आसा मनसा पूर कराईआ। घर साचे वज्जी वधाईआ। नौ निध गुरसिख घर उपजाईआ। साची बिधा आप बताईआ। आत्म विध सोहँ शब्द तीर चलाया, रिद्ध सिद्ध प्रभ सच्चे वस कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांईं होए सहाईआ। प्रभ अबिनाशी साचा नांएं। होए सहाए सभनी थाँएँ। पार उतारे फड़ के बाहें। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई एथे ओथे दोए थाँएँ। होए सहाई सर्ब सुख दाता। गुरमुख कलि आप पछाता। सच वस्त हरि देवे, सोहँ नाम सच शब्द ज्ञाता। पूरन होए काम जो जन दर आए साचा नाम मंग मंगाता। मेल मिलाया साचे राम, एका नाम अंग जुड़ाता। ना कोई ओथे लग्गे दाम, चरन प्रीती जो जन कमाता। सुक्का हरया होए चाम, आत्म जोत जगे अन्धेरी राता। आप पिलाए साचा जाम, सोहँ शब्द

वड वड गुण ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणे आपे पिता माता। मात पित पूत सूत। आप बणाए गुरमुख साचे पूत। आत्म साची जोत जगाए रंग चढ़ाए इक्क अनूप। शब्द धुन हरि उपजाए, चरन प्रीती सति सरूप। मुन्न सुन्न आप खुल्हाए, विच काया अन्ध कूप। गुरमुख साचे जन जगाए, आप दिखाए आपणा सच सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगो जुग महिंमा जगत अनूप। नाम निधान गुणां गुणवन्त है। प्रभ भेव जणाए विरले सन्त है। गुरमुख साचे मेल मिलावे आप बणाए साची बणत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नरायण नर पूरन भगवन्त है। सच शब्द सोहँ उचारना। सोहँ शब्द साची धारना। लक्ख चुरासी गेड़ निवारना। बन्द खलासी करे करतारना। कट्टे गलों सिलक जम फाँसी, धर्म राए डर निवारना। जो जन होए मदिरा मासी, प्रभ साचे दर दुरकारना। गुरमुखां आत्म रहिरासी, सच शब्द रसन उचारना। किरपा करे घनकपुर वासी, आत्म जोत करे उजारना। अन्तिम अन्त करे बन्द खलासी, गुरमुखां होए आप सहारना। सोहँ शब्द जपावे स्वास स्वासी, सच मिलावा सच भतारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद सद रसन उचारना। गुरमुख साचे साची नीत। प्रभ अबिनाशी बख्शे चरन प्रीत। कलिजुग मिल्या हरि साचा मीत। कर दरस होए काया आत्म सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म रक्खे
२५० ०३ सद अतीत। गुरसिख गुर पूरा जाण। आपणा मूल कलि पछाण। बेमुखां आवे हाण। धर्म राए दे जम सताण। गुरसिख ०३ २५०
चले साचे थाएँ, प्रभ देवे शब्द बबाण। आप चलाए साचे राहे, सोहँ शब्द जन रसना गायण। पार कराए पकड़े बांहे वाली दो जहान। आप बहाए साचे थाएँ, जिथ्थे वसे आप भगवान। एका जपणा साचा नाउँ, गुरमुख अन्तिम अन्त जोती जोत मिल जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा दरगाह साची देवे माण। कलिजुग अन्धेर शब्द ढंडोरा। शब्द सरूपी चार कुंन हरि साचा फिराए साचा घोड़ा। गुरसिक्खां मेल मिलावे विछड़यां कलि कराए जोड़ा। अन्तिम अन्त आ गया वक्त रहि गया थोड़ा। हरि साचा शब्द लिखा गया, पैरी पाउणा ना मिले किसे जोड़ा। सोहँ साचा तीर चला गया, कलिजुग हँकारी प्रभ भन्ने फोड़ा। गुरमुखां आत्म साचा सीर पिला गया, ना होए कदे विछोड़ा। आत्म साची धीर धरा गया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर पूरे दी साची लोड़ा। गुर पूरा शब्द निशान है। सोहँ शब्द नाम निधान है। गुरमुख विरले प्रभ दर ते पाण है। किरपा करे जिस महान है। सो जन होए चतुर सुघड़ स्याण है। जिन मिल्या हरि मेहरवान है। सोहँ दिया साचा दान है। हिया किया वाली दो जहान है। निर्मल किया जिया, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान है। नाम रस प्रभ दर ते पिया, काया मिटे अन्ध अंध्यान है। आप रखाई आपणी नीहां, प्रभ पूरी करे पछाण है। साढे तिन्न हत्थ मिले सीआं,

क्यों भुल्ला जीव निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अवतार सर्ब जीआं दा जाणी जाण है। नाम निधान प्रभ दर पावणा। भरम भुलेखा सर्ब गंवावणा। साचा लेखा आप लिखावणा। वेखी वेखा ना मनों भुलावणा। जोत सरूपी धारया भेखा, जिउँ धारे रूप बल बावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरसिक्खां दे मति आप समझावणा। गुरसिख गुर मति है। एका शब्द सोहँ तत्त है। आत्म देवे धीरज जत्त है। आपे रक्खे तेरी पति है। प्रभ बीजे आत्म वत्त है। चरन प्रीती देवे साचा तत्त है। सोहँ शब्द साचा धागा रसना लैणा कत्त है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी जाणे आपे मित गत्त है। मित गत हरि जाणदा। गुरसिख साचे विच मात आप पछाणदा। जात पात ना कोई वखाणदा। एका शब्द देवे सोहँ भण्डारा ज्ञान दा। भेव मिटाए दोआ दोअं, साचा देवे नाम गुणवन्त निधान दा। इक्क अकार ओअं रूप रंग कोई ना पछाणदा। साचा जाप सदा सोहँ सतिजुग साचे सच सद वखाणदा। हँस सहँस सांस सवास साची अंस आप आपणी जाणदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जुगो जुग गुरमुख साचे सद पछाणदा। गुरसिख देवे नाम अधारे। सच शब्द सच धुन्कारे। गुण अवगुण हरि आप विचारे। गुरमुख साचे जन आत्म भरे भण्डारे। सच शब्द उपजावे साची धुन, जो जन सोहँ रसन उचारे। कवण जाणे हरि तेरे गुण, महिंमा अपर अपारे। सच शब्द कन्न लैणा सुण, आत्म जोत होए चमत्कारे। झूठी माया तन लग्गा घुण, दिवस रैण रैण दिवस हड्ड खारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा गुरसिख पैज संवारे। सच शब्द सच धुन्कारी। गुरसिख बण साचा पुजारी। सोहँ साचा नाम आत्म देवे धुन सच्ची खुमारी। आप पिलाए साचा जाम, हउमे कट्टे गलों बिमारी। आप कराए पूरन काम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। गुरसिख आत्म लग्गे भाग। जो जन सोया गया जाग। शब्द उपजाए साचा राग। हँस बणाए गुरसिख काग। आपे पकड़े तेरी वाग। प्रभ साचे दी चरनी लाग। आत्म धोए पापां दाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रिहा जाग। सच शब्द जन मंगे मंग। आत्म चाढ़े प्रभ साचा रंग। मानस जन्म ना होए भंग। होए सहाई सदा अंग संग। शब्द सरूपी कसे तंग। सोहँ वज्जे सच्चा मृदंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कट्टे भुक्ख नंग।

२५१
०३

❊ ४ हाढ़ २०१० बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ❊

दर घर सच सुख दवंतया। किरपा करे हरि भगवंतया। गुर साचे दिवस रैण, साची खोज खुजंतया। प्रभ साचा

देवे लहण देण, साचा नाम हरि साचा कंतया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख गुर चरनी बहिण, मेल मिलावा साचे कंतया। साचा कन्त सर्ब सुखदाई। गुरमुखां देवे आप वड्याई। आदि जुगादि सच सच सच मार्ग लाई। शब्द नाउँ आत्म ब्रह्माद, बोध अगाध लेख लिखाई। दिवस रैण रैण दिवस सद रसन अराध प्रभ साचा देवे भेव खुलाई। आप मिटावे कलिजुग विवाद, जो जन आए सरनाई। सोहँ देवे साची दात, आत्म धीर धराई। गुरमुख विरले कलिजुग ल्या लाध, बेमुख गए जन्म गंवाई। प्रभ अबिनाशी माधव माध, जोत सरूपी खेल रचाई। गुरमुख साचे आत्म साध, चरन कँवल प्रीत लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। प्रभ अबिनाशी गुरमुखां देवे आप वधाईआ। सर्ब घट वासी एका जोत सच जगाईआ। घनकपुर वासी बूझ बुझाईआ। साचा शब्द जपाए स्वास स्वासी, आत्म भेव गूझ खुल्लाईआ। गुरमुख साचे आत्म रहिरासी, प्रभ देवे दरस भेख वटाईआ। जो जन होए मदिरा मासी, प्रभ साचे दर दुरकाईआ। दर घर साचे करन जो हासी, जमदूतां हत्थ फड़ाए ना कोई दे छुडाया। वेले अन्त होए नासी, धर्म राए दे सजाया। गुरमुख साचे सद सद बलि बलि जासी, प्रभ साचे दरस दिखाया। साची जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच टिकाया। जोत जगाए जगत विहारी। करे खेल अपर अपारी। वेखे विगसे करे विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। नरायण अवतारा, रूप अपारा, जोत अधारा, शब्द हुलारा, गुरसिख दुआरा, सोहँ जैकारा, आत्म भरे भण्डारा। साचा नाम वणज वपारा। आपे पावे गुरमुख साचे सारा। आप चलाए साची धारा। अमृत आत्म मेघ बरसाए गुरमुख आत्म ठारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे चरन प्यारा। चरन प्यार गुरसिख विचार। मानस जन्म ना हार। फेर ना आवे दूजी वार। सोहँ साचा रसन उचार। नेत्र वेख दरस करतार। आप लिखाए लेख बण साचा लेख लिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म दोए रिहा विचार। कर्म विचारे गुरसिख तारे। बेमुख दुरकारे भगत अधारे। धरे जोत अपर अपारे। एका नाम एका काम एका देवे शब्द अधारे। एका जाम एका दाम एका धाम एका रंग अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे विच संसारे। अचरज खेल हरि संसारया। क्या कोई जाणे जीव गंवारया। प्रभ अबिनाशी साची धारया। आदि जुगादि जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा कन्त सृष्ट सबाई नारीआ। सृष्ट सबाई एका नार। एका शब्द सर्ब भतार। लक्ख चुरासी पावे सार। एका जोत इक्क अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पसर पसार। पसर पसार सृष्ट सबाई। लक्ख चुरासी विच समाई। वेखे विगसे आप रथवाही। जीव जन्तां गुरमुख साचे सन्तां

प्रभ रिहा जगाई। बेमुखां माया पाई बेअन्ता, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सवाई। देवे वड्याई गुरसिख विच जीव जन्त प्रभ आपणी गोद उठाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां आपे दे मति समझाई। देवे मति शब्द अधारा। सोहँ शब्द देवे अपारा। आपणे रंग रंगे करतारा। दिवस रैण इक्क हुलारा। एका देवे चरन प्यारा। देवे दरस अगम्म अपारा। जोत सरूपी खेल न्यारा। बिन बाती तेल गुरसिख दीपक होए उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक नर अवतारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त नैण मुँधारा। नैण मूंध नैण मुँधारी। बाशक सेज हरि सवारी। सिँघ आसण बैठा नर अवतारी। ब्रह्मा विष्न महेश लक्ष्मी खड़े चरन द्वारी। चतरभुज शब्द धुज फड़े आप वड बलकारी। सृष्ट सबाई कुट्टे एका हुज, चार कुन्ट होए हाहाकारी। आप खुल्हाए भेव गूझ, करे खेल अपर अपारी। गुरमुखां जाए राह साचा सूझ, बेमुख झक्ख रहे मारी। हरि बिन ना कोई छुडाए तुझ, क्यों होया आत्म हँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरयण ना भुल्ल जीव गंवारी। जीव गंवारा ना भुल्ल संसारा। कर विचारा वेख करतारा। दरस अपारा शब्द अधारा। गुरसिख पसारा खुल्हाए दवारा। दूई द्वैत चिराए प्रभ आप रखाए सिर सोहँ आरा। आप पढ़ाए चलाए वरताए इक्क कराए चार वरन आए इक्क दुआरा। कोई ना दीसे किसे हमायत एका एक निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरमुखां देवे प्रभ साचा साची

२५३ ०३

हमायत, साची प्रीत गुर चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरसिक्खां पाए आपे सारा। साचा शब्द हरि गुण गावणा। भरम झूठा लेखा, जगत गंवावणा। वेखी वेखा ना वक्त लँघावणा। प्रभ मेटे भरम भुलेखा, जिस चरनी सीस निवावणा। आप लिखाए साची लेखा, जिस पकड़े प्रभ साचा दामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, जिउँ धरे भेख हरि बावना। धरया भेख ना भेव जणाए। वड वड देवी देव दिस ना आए। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ अबिनाशी आपणी सेवा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक आप अख्वाए। गुरमुख सिँघ सिँघ पाल साचे लाल प्रभ अबिनाशी लए उठाल। विच मात साचा प्रभ बणया आप दलाल। सोहँ शब्द सति कमाई, आपे कट्टे माया जाल। आपे देवे जगत वड्याई, आपे देवे सुरत संभाल। सच वस्त हरि झोली पाए ना होए कदे कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे सच्चा धन माल। सच धन माल सच ख़ज़ीना। देवे हरि वल प्रबीना। उतरे पार जिस रसना चीना। होए सहार शांत कराए सीन। गुरमुखां बेड़ा कर जाए पार, प्रभ अबिनाशी दाना बीना। अमृत अन्तिम बरखे सच फुहार, प्रभ अबिनाशी करे मन तन तन मन भीन्ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे जिहा कीना। आप आपणे रंग रंगाया। साचा रंग आप निभाया। प्रभ दर मंगे साची मंग, सच सच वस्त हरि झोली पाया। एका चाढ़े

साचा रंग, फिर उत्तर ना जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गाया। पुर भलाई वज्जे वधाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। चार हाढ़ लेख लिखाई। शब्द वाड़ गुरसिख कराई। बहत्तर नाड़ जोत जगाई। झूठी धाड़ परे हटाई। प्रभ साचे आपणी दाढ़ हेठ आप चबाई। गुरमुख शब्द घोड़ी चाढ़, तीन लोक बूझ बुझाई। सतिजुग बणाए साचे लाड़, सोहँ शब्द मुख सगन लगाई। बेमुखां प्रभ देवे झाड़, एका जोत अग्न लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे आप वड्याई। दर घर साचा आप सुहाया। हरि हिरदे वाचा नाम ध्याया। जीव भाण्डा काचा, प्रभ साचे रंग चढ़ाया। बेमुख दर ते आए नाचा, प्रभ अबिनाशी भेव ना पाया। गुरमुख साजण साचो साचा, जिस जन दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाया। जोत सरूपी दरस कर। बिन रंग रूपी वेख हरि। सति सरूपी तेरे आया दर। भाग लगाया तेरे साचे घर। गुरसिख जाग ना कलिजुग डर। प्रभ अबिनाशी चरनी लाग, प्रभ देवे साचा वर। प्रभ अबिनाशी चरनी लाग, जाए साचे घर। कलिजुग माया डसणा नाग, दर घर साचे आवे डर। कलिजुग बणे हँस काग, मानस जन्म गए हर। प्रभ अबिनाशी गुरसिक्खां धोए आत्म दाग, जो जन लग्गे साचे लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दिसाए एक राह चलाए, एका जोत जगाए सृष्ट सबाई अंदर वड़। सच घर

२५४
०३

हरि भाग लगाया। आत्म दर आप खुल्हाया। साचा सर गुर चरन छुहाया। गुरसिख जायण तर, चार हाढ़ प्रभ दर्शन पाया। आप चुकाए जम का डर, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। जोती सरूप हरि धरनी धर, अचरज खेल मात वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सरन पढ़ वेले अन्त लए छुडाया। वेले अन्त होए सहाई। देवे दरस आप रघुराई। करे तरस हरि सभनीं थाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सेव जिस जन कमाई। चरन सेव साची घाल। सच प्रीती निभे नाल। साची रीती जगत संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शाहो धुर दरगाहो, अगम्म अथाहो, बेपरवाहो, होए सहाई सभनी थांउँ, कट्टे जगत जंजाल। आपे कट्टे जगत जंजाल। सच वस्त गुरसिख संभाल। साचा हित सोहँ शब्द कमाल। देवे वस्त बण आप दलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ना होए कंगाल। शब्द भण्डार ना जाए कदे निखुट्ट। विच मात ना कोई जाए लुट्ट। आदि जुगादि सदा अतुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जड़ देवे पुट्ट। बेमुखां जड़ आप उखाड़े। लेख लिखाए चौथे हाढ़े। आप चबाए आपणी दाढ़े। नग्न फिराए विच उजाड़े। पल्ले होए ना किसे भाड़े। ना किसे दिसे पिछा अगाड़े। चार कुन्ट पैण झाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मौत घोड़ी सारे चाढ़े। मौत घोड़ी जायण चढ़। वहन्दे वहिण जाए हड़। आपणा कीता पायण मरन लड़

लड़। प्रभ का भाणा सिर ते सहिण जिन्नां छड्डुया लड़। ना कोई दीसे मां पिउ भैण भ्रा साक सज्जण सैण सभ अंदर बैठे वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दे सजाई वेले अन्त बाहों फड़ फड़। गुरसिख हरि माण दवईआ। एका शब्द नाम जपईआ। साचा राह जगत दिसईआ। साची दरगाह लेख लिखईआ। साचे थान आप बहईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ साची नईआ। सोहँ नईआ आप चढ़ाए। गुरमुख साचे पार लँघाए। शब्द मुहाणा वंञ रखाए। ना कोई सवेर ना संञ जणाए। विच धार मंझ होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दया कमाए, दया नित्त करे। गुरमुख साचे सन्त जन साचा पित हरे। देवे दरस कर तरस भाग लगाए आए साचे घरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस सिँघ गुरमुख पाल सिँघ दोवें तरे। सच नाउँ रसन ध्याया। सच थाउँ हरि आप दवाया। पकड़ बाहों हरि गोद उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाया। दरगाह साची आप बहाए। गुर संगत प्रभ संग रलाए। प्रभ दर आई साची संगत साची भिच्छया हरि नाम पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जोती जोत मिलाए। जोती जोत आप मिलाया। वेला वक्त आण सुहाया। आदि जुगादि जुगो जुग पैज जन भगतां रक्खदा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाया। आप

२५५ ०३ आपणा सिर हत्थ टिका के। सोहँ साचे रथ चढ़ा के। अकत्थ कथा कथ आप करा के। साची वथ हरि झोली पा के। २५५ ०३

काया दुखड़े साचे मथ्था, आप लै जाए शब्द घोड़ चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पाल तेरी रक्खे लाज दर घर साचे आके। सच घर होया विचोला। सोहँ शब्द सुणाया ढोला। उतरे पार जिस जन रसना बोला। प्रभ अबिनाशी साचा शाहो नाही गोला। जोत सरूपी जोत हरि, बेमुखां खोल्हे पोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संपूरन कला सोलां। विच विचोला आप बणाया। आपणा उहला भेव खुल्हाया। साचा सोहला शब्द सुणाया। सवरन उतरी पार रसना बोला, प्रभ अबिनाशी सरन लगाया। मानस जन्म गई सुधार, काया छडया झूठा चोला। फेर जन्म पाए ना दूजी वार, चरन प्रीती आत्म घोला। आप बहाए सच दरबार, दिवस रैण रैण दिवस चल्ले शब्द अमोला। आपणे रंग रंगे करतार जोत सरूपी तोल तोला। झूठा छडया सभ संसार, गुर चरन सोहे जिउँ जल उप्पर कँवला। प्रभ साचे तेरी साची कार, क्या कोई जाणे जीव भोला। सद सदा तेरा सच विहार, सृष्ट सबाई तैनूं कहे कमला। एका तेरी साची धार उप्पर धवला। गुरमुखां करे विचार जोत सरूपी जिउँ काहना सँवला। आप बहाए सचखण्ड द्वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई सदा सदा सदा सद मवला। सवरन सर आत्म दर। सरन पड़ गई तर। मिल्या हरि सचा हरि। ना दीसे दूजा घर।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई आप रखावे साचे घर। सच घर हरि दुआरा। साचा वर कन्त प्यारा। साचा सर जीवां जन्तां सोहँ शब्द रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई ना कोई जाणे कलिजुग जीव भेखी सन्त गंवारा। सवरन सरन आई हरि। साची तरनी गई तर। प्रभ अबिनाशी आप बहाई साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि आत्म मेल मिलाया आप खुल्हाया दसवां दर। पूरन सार हरि साचे पाई। एका शब्द धार रसना गाई। प्रभ अबिनाशी किरपा कर अपार, आपणी सरन लगाई। पूरन कर्म विचार विच मात देवे वड्याई। लक्ख चुरासी गेड़ निवार विच जोती मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दिवस विचार, चौदां जेठ देह छुडाई।

❊ ४ हाढ़ २०१० बिक्रमी धर्मबीर दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ❊

नरायण नर नर हरी। लोकमात जोत धरी। अचरज खेल प्रभ आप करी। दर घर साचे देवे दरस मिटाए हरस कर तरस कर पूरन आस प्रभ आप करी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी वड ब्रह्मादी बोध अगाधी शब्द अनादी देवे माण जगत तान जन भगतां किरपा आप करी। किरपा करे गुणां गुणवन्त। प्रभ अबिनाशी पूरन भगवन्त। गुरमुख साचे आप जगाए देवे माण विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचा दरगाह साची साचा कन्त। साचा कन्त सच सुहेलड़ा। गुरमुखां कराए कलिजुग मेलड़ा। आप सुहाए साचा वेलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण ना दिसे इक्क इकेलड़ा। इक्क इकल्लड़ा आपे वस्सया। गुरमुखां राह साचा दस्सया। आत्म जोत करे प्रकाश कोट रवि सस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण जन भगतां सद हिरदे वस्सया। हिरदे वस्सया हरि हरि रंगा। देवे दरस जोत सरूपी साचा सच सच अणमंगा। गुरमुखां देवे दरस नाम वड्याई होए सहाई जोत जगाई देवे दान भगत, भगत भगवान किरपा कर महान वड दानी दान निहकलंक बली बलवान सोहँ शब्द अनरंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा संग संगा। संगी साथी प्रभ रघुनाथी। त्रिलोकी नाथी गुरमुख साचे लेख लिखाए प्रभ अबिनाशी विच मस्तक माथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ साचे राथी। सोहँ साचा रथ चलाया। गुरमुख साचा आप चढ़ाईआ। कलिजुग बेड़ा बन्न्हे लाया। लक्ख चुरासी गेड़ा आप चुकाया। आवण जावण झूठा झेड़ा आप चुकाया। पतित पावण गुरसिक्खां पकड़े दामन गुरसिक्खां होए जामण वेले अन्त लए छुडाया। बेमुख सँघारे जिउँ रामा रावण, शब्द बाण हरि आप चलाया। गुरमुख साचे आप तराए अमृत मेघ बरसाए जिउँ बरसे सावण,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार लँघाया। कर किरपा पार उतारया। जन भगत भगत जन चरन निमस्कारया। धन्न धन्न धन्न गुरमुख साचा धन्न प्रभ साचा माण दवा रिहा। आत्म जाए मन झूठा चुकाए जन, धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्, सोहँ साचा शब्द सुणा रिहा। गुरसिख सुणे लाए कन्न, हरया होवे मन तन, झूठा भाण्डा देवे भन्न, सोहँ देवे सच वस्त ना लग्गे संन्, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा राह दिखा रिहा। सतिजुग साचे मार्ग पाउणा। सोहँ साचा नाम जपाउणा। कलिजुग भेख सर्ब मिटाउणा। सृष्ट सबाई एका रंग हरि साचे आप रंगाउणा। साचा वरन चरन प्रीती साचा संग प्रभ विच मात दिसाउणा। आपे परखे साची नीती, गुरमुख सोया आप जगाउणा। कलिजुग अवध अन्तकाल कलि बीती, सतिजुग साचा बीज बिजाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्त आप चलाए साची रीती, निहकलंक नरायण नर अवतार आप अखवाउणा। सतिजुग साचा मात धर। प्रभ अबिनाशी देवे वर। चार वरन खुल्हाए एका दर। गुर चरन बणाए साचा सर। ऊँच नीच सभ जायण तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक रंक राउ आप बहाए एका घर। एका घर इक्क विहारा। एका दर इक्क दुआरा। प्रभ साचे दी साची कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जन भगतां होए आप सहारा। भगत उधारी जोत निरँकारी। आवे जावे वारो वारी। करे खेल अपर अपारी। गुरमुख साचे जाए तारी। सृष्ट सबाई रही झक्ख मारी। मदिरा मासी होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म करे कारी। आत्म अकारी शब्द अधारी जोत निरँकारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर वर हरि नर साचा जन भगतां जाए पैज सवारी। धर्मबीर धर्म दी दात। सोहँ शब्द सच करामात। चरन प्रीती साचा नात। झूठे दिसण भैण भ्रात। वेले अन्त कोए ना साथ। होए सहाई आप रघुनाथ। देवे वड्याई त्रिलोकी नाथ। विच जोती जोत मिलानी आवण जावण गेड़ चुकाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निभाए सगला साथ। झूठा धन्दा जगत विहारा। लक्ख चुरासी खेल अपारा। वरते वरतावे प्रभ गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगो जुग करे खेल अपर अपारा। करे कराए आप गिरधार। पूर्ब कर्म लए विचार। आपे पाए गुरमुखां सार। कलिजुग सोए आप जगाए खिच ल्याए चरन द्वार। दुरमति मैल पापां धोए सोहँ चाढ़े रंग अपार। आत्म बीज साचा बोए, अन्तिम खिड़े सच्ची गुलज़ार। प्रभ बिन अवर ना दीसे कोए, वेले अन्त पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। साची देवे घर साचे सीख्या। गुरमुख मंगे साची भीख्या। धुर दरगाहों साचा लेख प्रभ साचे लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए दया कमाए बिधना लिखी जो रेख्या। रेख रेख हरि रेख मिटाए। लेख लेख हरि

साचे लेख लिखाए। भेख भेख भेख कर हरि जगत भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सोए आप जगाए। गुरमुख सोया आप जगाया। आप आपणी सरनी लाया। सोहँ साचा नाम जपाया। स्वास स्वास स्वास हो दास दास दास हिरदे रक्ख वास वास वास आत्म रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा संग निभाया। संग सुहेला जुगां जुगां विछड़यां प्रभ साचे कलि कराया मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सज्जण साक सैण सुहेला। सज्जण साक सैण साचा मित्त। आपे बणे मात पित। गुरमुखां करे साचा हित्त। जोत प्रगटाए नित नवित्त। होए सहाए जो राखे चित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी रीत। मीत मीतला साचा सीतला। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची रीतला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे परखे आपे वेखे कढ्ढे भरम भुलेखे, साची दरगाह लाए लेखे, गुरमुख विरला दर घर साचा पेखे, जिथ्थे गसे हरि हरि साचा बीठला। हरि हरि साचा वेख विचारो। जूए जन्म ना आपणा हारो। मानस जन्म ना आए दूजी वारो। झूठा दिसे सभ परिवारो। वेले अन्त होए सहाई एका इक्क करतारो। जोत सरूपी दरस दिखाई हरस मिटाई देवे नाम अधारो। प्रभ अबिनाशी दया कमाई देवे वड्याई, आपणी गोद सवरन उठाई पारब्रह्म रूप अपारो। मात पिता देवे वधाई। मात कुक्ख सुफल कराई। आत्म दुःख रहे ना राई। चिन्ता भुक्ख प्रभ दे मिटाई। एका सुख हरि दे उपजाई। उज्जल मुख जगत रहि जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सदा सदा निमस्कारो। साचे धाम सवरन बहाई। एका जोत जगे रघुराई। दूसर कोई दिसे नाही। आप अपरम्पर अपर अपार एह बणत बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी बैकुण्ठ निवासी, आप बणाए चरन दासी , सोहँ शब्द चलाए स्वास स्वासी, मानस जन्म कराया रासी, अन्तिम जोती जोत मिलाई। जोती जोत मिलईआ मेल। जगया दीपक बिन बाती बिन तेल। आप वसाए घर साचे दिसे रंग नवेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते वरतावे करे करावे आपे जाणे आपणा खेल। आपणा खेल हरि करंता। जुगो जुग भगत भगवन्ता। माण दवाए साचे सन्तां। खेल रचाए आदिन अन्ता। बेमुखां माया पाए बेअन्ता। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन मिल्या हरि साजन साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणता। साची बणत जाए बण। दुःख रोग ना लग्गे तन। सहिँसा रोग चुक्के मन। भाण्डा भरम देणा भन्न। झूठयां जूठयां शब्द ना सुणना कन्न। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्। धर्म राए न लावे डन्न। गुरसिख उठाए आपणे कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कढाए भरम भुलेखा झूठा कलिजुग जन।

❊ ६ हाढ़ २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ जी दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अतसर ❊

मन मता आत्म तत्तया। धीरज धरवास ना होए रत्तया। झूठा तुटा जगत नत्तया। साचा नाउँ ना रसना कत्तया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना गाया बत्ती दंदया। बत्ती दन्द ना हरि जस गाया। आत्म अन्ध अन्धेर रखाया। झूठी कंध ना पर्दा लाहया। मन तन बद्धा बधना ना किसे छुडाया। मुख रखाए विष्टा गोद अमृत जाम ना किसे प्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप रघुराया। किरपा करे आप नर हरा आप रघुराए। आप रघुबंस काया कीट विकार मुकाए। आप बणाए साचा बंस, सोहँ साचा नाम जपाए। आप बणाए साची अंस, जमदूतां मार भजाए। सोहँ शब्द जिउँ काहना कंस, भूत प्रेत कोई नेड़ ना अए। बण जाए हरि साचे दी साची अंस, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। धर्म राए ना दए सजाए। बाहों पकड़ पार लँघाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात देवे वड्याई विच सहँस, सहिँसा सहस सहँस सुखदाई। साचा बंस सिक्ख आप बणाई। आपणी अंस आप जगाई। शब्द बाण साचा धनुष चिल्ला नाउँ तीर चढ़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूतां दुष्टां दे सजाई। दूई दुष्ट जीव दुराचार। वेला अन्तिम आपणा गए हार। झूठी रहे पसर पसार। प्रभ अबिनाशी साचा घनईआ सर्ब जीआं गुण रिहा विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। रोग सोग चिन्ता दुःख। कर दरस उतरे भुक्ख। सुफल कराए साची कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए मदिरा मास तजाए गुर चरनी सीस निवाए उज्जल कराए मुख। उज्जल मुख होए संसारा। उतरे भुक्ख दरस अपारा। साचा सुख नाम अधारा। सुफल कुक्ख अमृत धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि बूझ बुझारा। बूझ बुझाए कर्म विचारे। दर घर आवे साचे नहावे। ख़ाली भरे आप भण्डारे। जो जन आए मंगण दर दुआरे। प्रभ अबिनाशी नाम अधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे शब्द अपारे। शब्द अपार सोहँ धार, गुरमुख उचार ना जाणा बचन हार। वेले अन्त ना होणा ख्वार। प्रभ साचा मारे डाहढी मार। ना कोई दिसे अन्त सहार। झूठी काया दिसे जगत प्यार। एका नाउँ रिदे वसावे वेले अन्त कराए पार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरचरन सच सरन चुकाए जम का डरन जाओ चरन बलिहार। बलिहार जाओ, दरस गुर पाओ। दर्द दुःख मिटाओ। रसना भुक्ख गवाओ। आत्म सुख इक्क उपजाओ। सोहँ साचा रसना गाओ। हिरदे वसणा राह साचा दस्सणा ना कदे भुलाओ। जमदूतां हरि साचे नस्सणा, मानस जन्म लेखे लाओ। शब्द तीर हरि साचे कसणा, पशू प्रेत ना बण जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म तृखा सर्ब बुझाओ। आत्म तृखा दरस प्यास। प्रभ अबिनाशी कीने नास। सोहँ चीना स्वास स्वास। मानस

जन्म कराए गुरसिख रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड शाहो शाबाश। शाहो शाबासे जोत प्रकाशे। अन्धेर विनासे, गुरसिक्खां होए दासन दासे। गुरमुखां देवे शब्द भरवासे। सोहँ जपाए स्वास स्वासे। एका साची वस्त टिकाए साचा नाउँ काया झूठे कासे। प्रभ अबिनाशी बलि बलि जाओ, करे बन्द खलासे। वल छल छल वल ना कर भुल्ल जाओ, प्रभ साचा वेख रंग तमाशे। वेले अन्तकाल ना डुल जाओ, मानस जन्म ना जाए हासे। आपणी भुल्ल आप बख्शाओ, रसन ना लाओ, मदिरा मासे। पूरे तोल गुरसिख तुल जाओ, मानस जन्म कराओ रासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाई साचा सुख दे उपजाई। आत्म देवे शब्द धरवासे। शब्द धीर सच धीरना। अमृत देवे साचा सीरना। रोगां सोगां जिस ने चीरना। ना कोई जाणे पीर फ़कीरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए तीरना। तीर तलवार शब्द कटार, खण्डा दो धार, दुष्टां दए सँघार। गुरमुखां बेड़ा लावे पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुतर जाए पार। दुतर तारे गेड़ निवारे। सच दरबारे लेख लिखावे पवण जोत इक्क हुलारे। दुरमति मैल पापां धोए, अमृत रंग चढ़ाए अपर अपारे। प्रभ अबिनाशी साची जोत जामा विच मात दे धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सोहण चरन दुआरे। चरन द्वार चरन गुर सेवा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवा। साचा देवे अमृत मेवा। कोई ना जाणे देवी देवा। गुरसिख साच शब्द वखाणे जिह्वा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरथा ना जाए चरन प्रीती सेवा। शब्द अस्व कस तंग। मन मनुआ हरि साचा रंग। ऐका चाढ़े हरि आत्म रंग। हीणा बणे ना कोई अंग। दुःख रोग प्रभ कीनो भंग। प्रभ दर मंगी साची मंग। होए सहाई अंग संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जिया एका हिया, साचा पिया सोहँ बीज साचा बिया, साची देवे शब्द उमंग।

✳ २०१० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड टांगरा ज़िला अमृतसर ✳

सहिज सुख मन भए अनन्दा। हरि पाया पूरा गुर गोबिन्दा। दर घर साचे दरस दिखाया, आप तजाया जम का जिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरी सरन चरन आस रखंदा। चरन आस सच धरवास। शब्द वास जो जन हिरदे रक्खे वास। प्रभ साचा होए दास। मानस जन्म कराए रास। रोग सोग प्रभ दर्द दुःख करे विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे गुर सद वसणा चरन कँवल कँवल चरन पास। चरन कँवल जिस घर टिकाया। उप्पर धवल माण दवाया। काहना सँवल जोत सरूपी भेख वटाया। सृष्ट सवाई रिहा मवल, गुरमुख विरले भेव खुल्हाया। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा प्रभ आपणी सेवा लगाया। धरत धवल विच अकाश। जोत सरूपी हरि प्रकाश। विच अन्ध कूपी सति सरूपी साचा करे वास। बिन रंग रूपी गुरमुखां सद वसे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देव पुरी मवकल दर घर साचे कीने नास। नासन नास करे भगवन्त। आप बणाए साची बणत। होए सहाई वेले अन्त। जिस जन मिल्या साचा कन्त। सोहँ शब्द सुणाए साचा छंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रगंत। आत्म रंग मजीठी चाढ़। सोहँ जगाए बहत्तर नाड़। गुरसिख बणाए सतिजुग साचे लाड़। बेमुख चबाए आपणी दाढ़। अन्तिम अन्त कलिजुग जूठे झूठे प्रभ देवे झाड़। बेमुखां हत्थ फड़ाए ठूठे दर दर फिरन भिखार। गुरमुख साचे प्रभ दर लूठे, आत्म देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धार। किरपा धारे हरि काज संवारे। गुरमुख साचा पार उतारे। जिस जन आए चल दुआरे। सच्चा घर सच्चा दर सच्चा हरि जगे जोत इक्क निरँकारे। गुरमुखां देवे साचा वर, सोहँ शब्द वड भण्डारे। कर दरस कलि जायण तर, वेले अन्त पार उतारे। आप चुकाए जम का डर, करे किरपा आप करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आए दर दुआरे। गुर दर सच दुआरा। जोत सरूपी जामा धारा। कर्म धर्म जरम गुरसिख विचारा। आत्म भरम सर्ब निवारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यारा। चरन प्यार जगत रीत। गुरमुख बख्शे सच प्रीत। आपे बख्शे साची नीत। कलि कर किरपा काया करे पतित पुनीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लागे मानस जन्म जाए जग जीत। आप तरे कुल उधारना। सोहँ शब्द रसन उचारना। पिता पूत हरि काज संवारना। एका दूजा भेव निवारना। भेव गूझ हरि आप खुल्ावणा। गुरमुख साचे सूझ प्रभ पहली माघ दवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा आप लिखावणा। साचा लेख आप लिखाउणा। पिता पूत हरि भेव खुल्ाउणा। एका धागा एका सूत एका नाम पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाउणा। रंगे रंग सच्चा हरि। आप खुल्ाए सच्चा दर। भाग लगाए साचे घर। सहिँसा रोग गंवाए ना आए डर। आप चलाए आपणे राहे ना कोई रहे अड़। गुरसिख साचे आप तराए कलिजुग बाहों फड़। साचे मार्ग आप लाए, प्रभ अबिनाशी अंदर वड़। साची दस्से इक्क सरनाए, निहकलंक कलि चरन फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सचखण्ड लगावे साची जड़। सचखण्ड साचा धाम, जगे जोत एका राम। पूरन होए गुरसिख काम। साचा नाउँ गुरसिख पल्ले साचा दाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ पिलावे साचा जाम। जाम नाम पीओ सदा जग जीओ। सोहँ बीज आत्म साचा बीओ। आप जगाओ बुझी दियो। सोहँ पाओ साची वट्टी घीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए

गुरमुख साचे तेरी मात साची नीओ। मातलोक हरि दे वड्याई। चरन सेव जिस जन कमाई। साचे घर मिले वधाई। धर्म राए जम नेड़ ना आई। वेले अन्त होए आप सहाई। प्रगट जोत हरि साचा गुरसिक्खां दरस दिखाई। आदि जुगादि जुगां जुगन्त जन भगतां दे वड्याई। आप बणाए साचे सन्त आत्म साची जोत जगाई। बेमुखां माया पाए बेअन्त दर घर सचे सूझ ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। वड्डी वड्याई हरि साचे हत्थ। सर्ब कला आपे समरथ। गुरमुखां देवे सोहँ साची वथ। गुरमुखां अन्तिम अन्त कलिजुग प्रभ साचा पाए नत्थ। गुरमुख साचे आप जगाए सन्त चढ़ाए साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द बबाण गुण निधान गुरसिक्खां देवे साची वत्थ। शब्द बबाण देवे गुण निधाना। किरपा करे आप भगवाना। सोहँ देवे नाम निशाना। प्रभ अबिनाशी वाली दो जहानां। सर्ब घट वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रंग रंगाना। आत्म रंग इक्क चढ़ाउणा। गुरमुख सोया, साचा आप जगाउणा। आत्म बीज साचा बोया, साची वस्त इक्क टिकाउणा। दुरमति मैल पापां धोया, मार्ग साचा लाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार लँघाउणा। किरप करे आप गिरधार। गुरमुख विरले कलि विचार। दे दरस कलि कर जाए पार। उतरे हरस ना होए ख्वार। करे तरस गुरसिख तेरे आत्म कर्म विचार। अमृत मेघ हरि देवे बरस, आत्म तृखा दे निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झिरना झिराए अपर अपार। अमृत झिरना आप झिराए। झिरना झिरे मेघ वरसाए। हरना फरना आप खुल्हाए। मरना डरना भेव चुकाए। साची सरना इक्क रघुराए। प्रभ का भाणा साचा जरना, दे मति आप समझाए। साची तारी गुरसिख तरना, कलिजुग वैहन्दे वहिण डुब्ब ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आप आपणा हत्थ टिकाउणा। गुरसिख सचा मार्ग लाउणा। दु:ख दर्द दलिद्र प्रभ साचे सर्ब कटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दु:ख भुक्ख मिटा आपणे रंग रंगाउणा। दु:ख भुक्ख हरि आप मिटाए। साचा सुख इक्क उपजाए। उज्जल मुख विच मात कराए। मात कुक्ख हरि सुफल कराए। उतरे भुक्ख हरि दर्शन पाए। सुफल होए देही मनुक्ख, जमदूत ना कोए सताए। मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहिंसा रोग सर्ब मिटाए। सहिंसा रोग सगल वसूरा। आप मिटाए सतिगुर पूरा। शब्द सुणाए अनहद अनाहत साची तूरा। दूई द्वैत पर्दा लाहे हउमे रोग करे दूरा। आत्म साची जोत जगाए जगे जोत जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला सदा सदा भरपूरा। सर्ब कला आपे भरपूर। गुरमुखां सद खड़ा हजूर। ना नेड़े ना दिसे दूर। जोत सरूपी आत्म देवे साचा सति सरूर। साची जोत सच थां रहाए, साचा बख्शे आत्म नूर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए पार लँघाए ना देर लगाए आप चढ़ाए पहले पूर। पहले पूर गुरसिख चढ़ाए। देवे वड्याई मुन रिख उपजाए। सोहँ सहाई साचा नाम भिख दर पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृष्ना भुक्ख सभ दे बुझाए। आत्म तृष्ना हउमे रोग। दिवस रैण दुःख रिहा भोग। आत्म चिन्ता सदा विजोग। कोई ना देवे साचा शब्द साचा जोग। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, गुरमुख साचे देवे दरस अमोघ। सोहँ शब्द देवे वड्याई। आप चुगाए आत्म साची चोग। गुरमुख साचे सद बलि बलि जाई, प्रभ मिलाया धुर संजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हत्थ वड्याई आप मिटाए चिन्ता सोग। चिन्ता सोग उतरे दुःख। आप मिटाए आत्म भुक्ख। सोहँ शब्द जपाए सचा सुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे भाग लगाए, आप आपणा दरस दिखाए, गुरमुख साचे आण तराए, भूत प्रेतों देव बणाए, जिन्न ख्वीस कोई रहण ना पाए। हाकण डाकण सिर मुंडवाए। वलीए छलीए सर्ब मिटाए। माया इन्द्र जाल आप तुड़ाए। माई गौरजां ना मृदंग वजाए। किंगरे किंगरे हरि टंग वखाए। आप आपणा संग निभाए। दुध्ध पुत्त हरि रंग रंगाए। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, साचा लेख आप लिखाए। आप बणाए साचे सुत्त, मात गर्भ होए सहाए। आप बणाए साचे पुत्त, पिता मात आप अख्वाए। आप सुहाए साची रुत्त, गुरमुख साचे हरि साचा घर तेरे भाग लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द हरि देवे साचा वर, कलिजुग जाणा तर, वसणा साचे घर, देवे दरस अवतार नर, जो जन शरन गए पर। आत्म दर दुआरे हरि साचा रिहा वड़। गुरमुख साचे सच धाम बहाए आत्म बाहों फड़। अन्तिम जोती मेल मिलाए, जिस हरि साचे तेरा फड़या लड़। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भवजल पार कराए हरि की पौड़ी जाए चढ़। साचे लोयण दरस गुर पेखो। आप मिटाए आत्म भरम भुलेखो। दर घर साचे आओ हरि फेर लिखाए लेखो। मदिरा मास हत्थ ना लाओ, प्रभ अबिनाशी साचा वेखो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस दरस सद पाओ, सोहँ शब्द आत्म लगाओ साची मेखो। नेत्र नैण साचा नूर। अज्ञान अन्धेर होए दूर। किरपा करे आप हरि सर्ब गुण भरपूर। मदिरा मास गुरसिख जाणो जिउँ हिन्दू गांए मुस्लिम सूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हिरदे वसे जिस जन जाणो दूर। साचा शब्द साचा गहणा। साचा लहणा प्रभ दर लैणा। साचा प्रभ अबिनाशी पेखो तीजे नैणा। झूठे दिसण मात पित भाई भैण भाई साक सज्जण सैणां। वेले अन्तिम अन्त एका नाम साचा पास तेरे रहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होए आप साक सज्जण सैण। साक सज्जण आप सुहेला। जुगा जुगन्त विछड़यां कलि आप कराया मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि विच मात दे खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, गुरमुख साचे आपणे रंग रंगाए वसे आप सद अकेला। अमृत आत्म साची धारा। दुक्खां रोगां करे ख्वारा। जो जन पाए प्रभ की सारा। आत्म शब्द देवे साची धारा। सोहँ गाओ नाम प्यारा। एथे ओथे होए सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए अगम्म अपारा। अगम्म अपार दरस गुरदेव। बिरथा जाए ना गुरसिख तेरी सेव। सोहँ शब्द देवे आत्म साचा मेव। विच मात देवे वड्याई विच करोड़ तेतीस देवी देव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि अलख अभेव। अलख अभेव अछल अछल्ल अछेदा। भेव ना पायण चारे वेदा। क्या कोई जाणे विच कतेबा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण गुरमुख साचा दिवस रैण सद गाए जिह्वा। रसना गाओ गुण गहर गम्भीर। आत्म शांत ठांडा सरीर। हउमे विच्चों निकले पीर। सच शब्द हरि देवे धीर। जम की फाँसी कट्टे जंजीर। सोहँ बन्द खलासी अमृत देवे साचा सीर। घनकपुर वासी किरपा करे ना देवे लथ्थण चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई होई दासी, ना कोई दिसे पीर फ़कीर।

❋ ७ मग्घर २०१० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

गुर पाया हरि हरि गोबिन्द है। अमृत आत्म साचा नीर वहाए जिउँ सागर सिंध है। सोहँ साचा शब्द तीर चलाए चरन बहाए करोड़ तेतीस सुरपति राजा इन्द है। जोती जोत सरूप हरि सृष्ट सबाई प्रभ साचे दी एका साची बिन्द है। एक पित एका माता। ऐका हित्त देवे दाता। एका चित्त साचा मित नित नवित्त सोहँ देखे साची दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए निहकलंक नरायण नर पुरख बिधाता। हरि रस हरि गुण जानणा। होया मेल भगत भगवानना। आत्म मिटे अन्धेर होए कोटन कोट भान चानना। जोत सरूपी ना लावे देर, एका सोहँ नाम गुरसिक्खां देवे ब्रह्म ज्ञानना। करे कराए हेर फेर, वड दाता शाह सुल्ताना। सृष्ट सबाई ढाह करे ढेर ना किसे छुडावणा। आप चुकाए मेर तेर, गुरसिख साचे दर घर दरगाह साची हरि आपणी गोद उठावणा। साच नाउँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट सतिजुग साचे आप वखानना। साचा शब्द चले जुग सति। सृष्ट सबाई प्रभ देवे इक्क मति। ऐका शब्द विच रखाए साचा तत्त। एका सूत्र धागा प्रभ अबिनाशी आत्म बैठा रिहा कत्त। एका शब्द एका रागा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग गुरसिक्खां दे समझावे मति। दे मति आप समझांयदा। अचरज खेल हरि कलि करांयदा। साचा सज्जण सुहेल आपणे गले लगांयदा। जुगां जुगां दे विछड़यां कर किरपा मेल मिलांयदा। बिन बाती बिन तेल दीपक जोती आप जगांयदा।

अचरज पारब्रह्म कलि खेल, भेव कोई ना पांयदा। बेमुखां बेड़ा जाए ठेल, शब्द इक्क धकेल लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरतांयदा। सृष्ट सबाई आप धकाए विच धर्म राए दी जेल्, घोर कुण्डां विच फिरांयदा। किसे हत्थ ना आवे वेल, मल हत्थ नेत्र नीर वहांयदा। आप रंग वसे सद नवेल, रूप रंग कोई दिस ना आंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत अन्तिम अन्त गुरसिख दे मती आप समझांयदा । गुरसिक्खां ना भुलणा। प्रभ साचा कन्त कन्तूहलना। सोहँ शब्द सच पंघूड़ा झूलना। प्रभ आप पहनाए गल तेरे माला फूलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मस्तक लाए धूढ़ना। चरन धूढ़ करे इशनान। आत्म मूढ़ होए चतुर सुजान। आप कटाए काया जूड़। लक्ख चुरासी विच ना आण। एका रंग चढ़ाए गूढ़, जो जन रसना गाण। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, एका सच श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी वड बली बलवान। बली बलवानना, दो जहानना, सोहँ तीर खिच ल्याए सच निशानना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त आप मिटानना। आपणी गति मितक हरि आप जाणदा। एका साचा राह सतिजुग वखाणदा। साचा नाउँ प्रभ अबिनाशी दूजा नाही को थाउँ, वेला आया बेमुखां अन्तिम पछताणदा। ना कोई पकड़े जगत जीव तेरी बांह, ना माणे ना जाणे खेल भगवान दा। मातलोक फिरे जिउँ सुंञे घर कांओ, ना कोई दिसे सहाई ना कोई पछाणदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक टेक वाली दो जहान दा। वाली दो जहान खेल रचांयदा। सोहँ साचा शब्द बाण रसना तीर खिच चलांयदा। कलिजुग तेरा मिटे अन्त निशान, सतिजुग साचा मात धरांयदा। खाणी बाणी वेद पुरान कुरान अञ्जील रहण ना पांयदा। सोहँ साचा जाप मारे तीनों ताप, प्रगट होवे आप जो जन रसना गांयदा। आप होए माई बाप, पाए झोली साची दात, सोहँ वड करामात, सतिजुग साचा राह वखांयदा। चरन प्रीती बख्शे साचा नात, चार वरन भैण भ्रा बणांयदा। आप पढ़ाए शब्द इक्क जमायत, आत्म रंग मजीठ चढ़ांयदा। मेट मिटाए जात पात, आपे पुच्छे सभना बात, जोत सरूपी जोत जगांयदा। अंदर बैठ वेख जीव मार झात, दिवस रैण रैण दिवस डगमगांयदा। बैठा रहे विच इकांत आप वेखे दिस ना आंयदा। अन्तिम अन्त कलिजुग निहकलंक हरि जामा पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाउँ रखांयदा। निहकलंकी जामा पावे। शब्द सरूपी डंक वजावे। द्वार बंक आप सुहावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां साचा माण दवावे। लैणा नाम शब्द उपदेश। जोत सरूपी हरि प्रवेश। भाग लग्गा माझे देस। सृष्ट सबाई झूठा वेस। प्रभ पकड़ पछाड़े बेमुखां जिउँ काहना कंसा केस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं आपणी हत्थीं सीस कटाए जिउँ पार्बती सुत्त गणेश। आपणी हत्थीं हरि काज कराना। साचा राज

साचा ताज एका एक जगदीश आपणे सीस टिकाना। जगत साज अन्तिम अन्त कलिजुग प्रभ साचे नष्ट कराना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख संग संगत पुत्तर धीआं अन्तिम वार तेरां मग्घर आप समझाणा। तीजा बचन बचन अख़ीर। ना मिटे ना मेट मिटाए जिउँ पत्थर उप्पर लकीर। जिउँ दुध्ध छिट कांजी फिटे निर्मल सीर। बेमुखां जड़ आपे पुट्टे, ना कोई देवे धीर। दरगाह साची प्रभ साचा कुट्टे, राह औखा दिसे भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक शब्द लिखाए सुणाए अन्त अखीर । एका शब्द अन्त लिखाउणा । साध सन्त जीव जन्त भरम चुकाउणा। बणाए बणत साचा कन्त, अन्तिम अन्त भेव छुपाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वाक भविख्त तेरां मग्घर गुर संगत पुत्तर धीआं आप सुणाउणा। पुत्तर धीआं आप समझाए। साचा बिया आप बिजाए। एका हिया जगत कराए। साची नईआ तन बणाए। साचा पिया अमृत मेघ बरसाए। सति सन्तोख सरम पत्त फल फुल्ल लगाए। आत्म धीरज साचा जति प्रभ साचा फल लगाए। सोहँ शब्द रखाए साचा तत्त, ज्ञान गोझ गोझ ज्ञान भेव चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुत्तर धीआं गुरसिख संगत तेरां मग्घर आप समझाए। पुत्तर धीआं छड्ड सन्बंध। कलिजुग अन्तिम होया अन्ध। दूई द्वैती आत्म ढाहो कंध। एका शरअ इक्क शरायती प्रभ सर्ब लिखाए बत्ती दन्द। ना कोई दिसे जगत हमाइती, कलिजुग झूठा दिसे चन्द। गुर संगत दस्से सच पंचायती, साचा शब्द सुणाए साचा छन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सदा बख्शंद। साचा शब्द शब्द सलोक। आप संवारे लोक परलोक। जोत सरूपी पसर पसारे कलिजुग भुल्ले जीव मातलोक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणाए, ब्रह्मा ब्रह्म लोक तजाए, कौण सके रोक। साची सिख्या हरि साचे भाखी। आपे देवे अलक्खणा अलाखी। क्या कोई जाणे कलिजुग जीव भरे प्याला पीवे साकी। चोरी यारी ठग्गी हुंदयां ना कोई करे राखी। चित्रगुप्त हरि लेखा लेवे, रहण ना देवे कुछ बाकी। जोती जोत सरूप हरि एका पाकन पाकी। सच तख्त सच सुल्तान अंदर बैठा वेखो खोल्ह ताकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द अमृत साचा सीर प्याए गुरसिक्खां बणयां साचा साकी। तेरां मग्घर तेरां दिन। शब्द सरूपी प्रभ देवे विंन। आप लिखाए वखाए साचे चन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुरकारे बेमुख गिण गिण। साची सिख्या सच शब्द पछाननी। ना कोई जाणे वेद पुराननी। ना कोई किसे जीव जन्त वखानी। बुझ ना सके कोई ब्रह्म ज्ञानी। सो जन जाणे जिस बख्शे चरन ध्यानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द लिखाए कोई रहण ना पाए ना भुल्ले गुरसिख बण निधानी। गुरसिख ना जाणा भुल्ल। ना जाणा रुल्ल ना जाणा डुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक गुरमुख साचे विच मात बणाई साची कुल। सिँघ आसण सिर छत्र जगदीश।

वेखे विचारे सदी बीस। दर दुआरा आप खुल्हाए, ना कोई लाए फीस। एका शब्द सोहँ साचा नाम जपाए, माण दवाए राग छतीस। नारद मुन सुगंधी चुण, फुल्ल बरखायण करोड़ तेतीस। शब्द धुन कवण जाणे हरि तेरे गुण, सृष्ट सबाई आप कटाए झूठे सीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जगत पित नित्त नवित्त सच्चा जगदीश। सिँघ सिँघासण सीस उठाया। धरत धवल पताल गगन हिलाया। सतिजुग तेरा पहला सगन, प्रभ अबिनाशी गुरसिक्खां पहली माघ मुख लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धन्न धन्न धन्न गुरसिख आत्म सहिंसा रोग मिटाया। सिँघ सिँघासण सीस हुलार। करे खेल हरि करतार। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। करे करावे ना कोई पावे सार। गुरमुख साचे आण तरावे, बेमुख होए दुखिआर। धरत मात हरि दर पुकारे, ना झल्लया जाए कलिजुग भार। प्रगट जोत चरन कँवलारे आपे लए सहार। दूत दुष्ट प्रभ साचा मारे, एक फड़े शब्द कटार। वाह वाह वाह गुरसिख सोहण गुर चरन दुआरे। नेत्र पेखण सच भतार, मानस जन्म कलि आप संवारे। प्रभ पार उतारनहार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर एका एक वसे निरँकारे। वाह वाह वाह निरंकारया। कलिजुग खेल अपर अपारया। गुरसिख विरला बणे वपारया। जिस किरपा आपणी धारया। बेमुखां कर ख्वारया। आत्म दुःख इक्क हंकारया। प्रभ सोहँ खण्डा फड़े दो धारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारा वारया। कँवल चरन चरन कँवल गुर पूरे सेव। मेल मिलावा साचा प्रभ अबिनाशी अलख अभेव। दरगाह साची साचा नावां, बच ना सके देवी देव। देवे माण जगत ताण कलिजुग पछाण निथावयां थान आप भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणी गुणवन्त गुण गुणी निधान। गुण निधान सच अस्थान धुर दी बाण गुरसिख जगाण कर्म निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई देवे पीण खाण। पीवणा खावणा खावणा पीवणा। गुर चरन प्रीती साचा जीवणा। घर साचे दी साची रीती, सदा सदा विच मात नीवणा। बख्शे भुल्ल जो पिछे कीती, अग्गे मार्ग साचे प्रभ आप लगावणा। मानस जन्म जाणा जग जीती, साचा नाम ना मनों भुलावणा। नाउँ निरँकार सद रसना चीती, प्रभ करे वक्त सुहावणा। होए काया सीतल सीती, प्रभ अमृत मेघ बरसावणा। गुरसिख सिक्ख होए पतित पुनीती, प्रभ साची रीत चलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे गुरसिक्खां पूर कराए भावना। पूरी भावना बली बलवानना जिउँ बल बावना। भरम चुकावना दरस दिखावणा। बेमुख खपावणा, जिउँ रामा रावणा। गुरसिख तरावणा, जिउँ सिला चरन छुहावणा। विच बबाण बिठावणा। सचखण्ड निवास रखावणा। दासन दास आप हो जावणा। वड शाहो शाह शबाश भेव किसे ना पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप वरतावणा। आपे खेले खेल खिलाड़ी। आपे बणे

लाड़ा लाड़ी। किसे ना दिसे पिछा अगाड़ी। पकड़ पिछाड़े फड़ फड़ दाढ़ी। चार कुन्ट होए उजाड़ी। अन्तिम उजड़ी कर्मां वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई अंदर बैठा वेखे लाई ताड़ी। अंदर वेखे नैण मुँधारया। किरपा कीनी तिस जन जिन जिस आपणे चरन लगा रिहा। कलिजुग जीआं दिस ना आ रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल सद सद बलिहारया। सद बलिहार हरि ब्रह्माद। प्रभ अबिनाशी आदि जुगादि। शब्द लिखाए बोध अगाध। गुर साचे वेख सोहँ देवे साची दाद। जोत सरूपी धारे भेस, इक्क शब्द वजावे नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण गुरमुख साचे सद रसन अराध। गुरसिख तीर्थ यात्रा गूढ़ी गायत्रा विच मात्रा छे शास्त्रां साचा लेखा रसन लिख भोज पात्रा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होए सहाई सुत्तयां रात्रा। तीर्थ तट्ट दान गुर आप जणावे। तेरां मग्घर लेख लिखावे। अमृत आत्म सर प्रभ सच अशनान करावे। आप खुल्हावे साचा दर, जोत सरूपी नज़री आवे। गुरसिक्खां देवे साचा वर, पहली माघ प्रगट करावे। साची वस्त गुरसिख साचा घर साचे लै जावे। निन्दक दुष्ट दुराचार घर साचे मूल ना भावे। प्रभ अबिनाशी तेरा साचा सच विहार, उहला कोई रहण ना पावे। जुगो जुग तेरी साची कार, एका कंडा आपणे हत्थ तुलावे। एका रुत्त इक्क बहार, इक्क गुलज़ार गुर संगत चरन बहावे। बेमुखां देवे दर दुरकार। साची लिख्त तेरां
२६८ मग्घर लेख लिखावे। जो कुछ वरते हरि वरतार, गुरसिक्खां आख सुणावे। गुरसिख लै जाणा इक्क गुर संगत वार साचा २६८
०३ कर्म कमावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा दगा ना जगत कमावे। हरि देवे जोग अवल्लड़ा। जिथ्थे वसे हरि ०३
इकल्लड़ा। गुरसिख तेरे आत्म दर दुआरे अग्गे खलड़ा। गुरसिख तेरा विच लोकमात होवे भारा पलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बोध। ब्रह्म विचारया हिरदा सोध, हरि गुण निधान शब्द बोध, वड दाता वड जोधन जोध, सृष्ट सबाई आपणा भेव खोल्ह, तोड़े माण सर्ब ताण सृष्ट सबाई जाए सोध, फड़या हत्थ खण्डा दो धारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए शब्द कटारया। दो धार विच संसर। वेख विचार मारे मार ना कोई सके सहार। सृष्ट सबाई आर पार, जीव जन्त होए ख्वार। साध संगत दर दर भिख्या मंगण नार। ना कोई जाणे हरि की कार। करे कराए विच संसार। लक्ख चुरासी पसर पसार। प्रगट होए घनकपुर वासी, चार कुन्ट कराए जै जैकार। जन भगतां हरि मेल मिलासी, एका देवे शब्द हुलार। सतिजुग साची धार बणासी, चार वरन इक्क प्यार। आप आपणा विच टिकासी, एका देवे दरस अपार। मानस जन्म कराए रहिरासी, एका जोत जगाए अगम्म अपार। जन भगतां होए दासन दासी, बज़र कपाटी आप खुल्हार। कलिजुग जीव करन हासी, प्रभ साचे दी ना कोई पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह खेल

करे करतार। अन्तिम अन्त बेमुखां नष्ट करावणा, सृष्ट सबाई होए भिखार। दर दर घर घर हरि आप फिरावणा, दर साचे देवे दुरकार। साचा नाम ना किसे भिच्छया पावणा, कलिजुग जीव कुलक्खणी नार। होए रंड ना सुहागण किसे अख्वावणा, कलिजुग अन्तिम विच वरभण्ड सोहँ डण्डा प्रभ सिर लगावणा, आपे करे खण्ड खण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतार। वरते भाणा ना कोई जाणे राजा राणा, क्या कोई जाणे सुघड़ स्याणा। कलिजुग जीव माया ममता विच भुल्लया अञ्याणा। आत्म अन्धा झूठे हट्ट विकाणा। लोभी गन्द मुख रखाणा। जगत विहार झूठा धन्दा, प्रभ अबिनाशी मनों भुलाणा। कोई ना तोड़े आत्म जिंदा, साचा नाम ना चाबी लाणा। दूई द्वैत विच रखंदा, बिन गुर पूरे पर्दा किसे ना लाहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे एका संग चरन सच टिकाणा। चरन टेक सरन गुर पूरे। प्रगट होए हाजर हजूरे। आत्म साची जोत जगाए शब्द अनाहद अनहद तूरे। दस्म दुआरे सोत खुल्हाए, इक्क दिसावे साचा नूरे। दुरमति मैल धोत वखावे, साचा देवे नाम सरूरे। गुरसिख सोए कलि आप उठाए चरन लगाए देर ना लाए जोत जगाए दर घर हरि सरन रखाए आसा मनसा पूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुगां दे विछड़े कलिजुग मेल मिलारे। मेल मिलाया पूरे गुर। होया संजोग लिख्या धुर। साचा जोग गुर चरन जुड़। गुर दर्शन को लोचण सुर।
२६६ ०३ प्रगटी जोत घनकपुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार सच्चा सतिगुर। जीव ना भुल्ल भरम भुलेखा। प्रभ धारे जोत सरूपी भेखा। अंदर बैठा लिखे लेखा। मेट मिटाई बिधना लिखी रेखा। प्रभ दरस जिस जन आए नेत्र पेखा। कोई ना जाणे पीर फ़कीर गौस शेख़ा। जीव जन्त साध सन्त कलिजुग बेअन्त ना जाणे कोई अन्त सभ रहे वेखी वेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म दर दुआरे सच्चे घर बाहरे हरि निरँकारे देखा। हरि निरँकार घर साचे अकार। गुरमुख विरला करे विचार। जिस बख्शे चरन प्यार। आत्म देवे शब्द जोत जोत शब्द अधार। अमृत आत्म सिंच सोहँ खिड़े सच्ची गुलज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई गल पाए पापां हार। सृष्ट सबाई पाप कमायण। धरत मात अन्तिम अन्त खपाए होए डायण। जूठे झूठे माया लूठे रहण ना पायण कलिजुग पायण वैण। गुरसिख सचे प्रभ चरन लूठे, दरस दिखावे तीजे नैण। कलिजुग मनाए द्वापर रूठे, मिल साध संगत गुर चरनी बहिण। बेमुखां हत्थ फड़ाए ठूठे, पी पी मदिरा नारी कहण भैण। धर्म राए दर लग्गे अंगूठे, कोई अन्त ना छुडायण। फड़ फड़ टंगाए पुठ्ठे, अठाई कुण्ड विच फिरायण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पकड़ उठाए कंठ, लगाए, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए, सच प्रीती जोड़ जुड़ाए, दरगाह साची घर साचे बहिण। दरगाह साची सच घर वास। एका वसे

हरि पुरख अबिनाश। तीन लोक प्रभ चरन दास। एका जोत सर्ब प्रकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दासन दास। दासन दास विच वसंदा। ना भेव खुलंदा, ना तोड़े आत्म जिंदा। क्या करे जीव गंवारी बन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी दूई द्वैत मिटाए सोहँ शब्द लगाए रंदा। सोहँ रंदा देवे रंद। आप मिटाए द्वैती कंध। मैल उतारे पापां गन्द। प्रभ अबिनाशी सदा बख्शंद। गुरसिख सदा सदा जप बत्ती दन्द। आप उपजावे परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए दया कमाए, जो जन तजाए मदिरा मास गन्द। गुर संगत मंगल गाया हरि गोबिन्दा। देवे माण प्रभ जगत वड्याई, जिउँ राजा सुरपति इन्दा। दर आत्म वज्जी वधाई, हरि साची बूझ बुझाई, अन्धेर मिटाई तोड़े आत्म जिंदा। प्रभ चरन सीस झुकाई। कलिजुग जीव भुल्ल ना जाई। मानस जन्म ना मूल गंवाई। सोहँ साचा नाम नित्त रसना गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सद बख्शिंदा। सच प्रीत गुर चरन है। चाढ़े साची रंगत, चुक्कदा मरन डरन है। आप बणाए गुरसिख रलाए सच्ची संगत, खुल्ले हरन फरन है। आप पाए साचा नाउँ भिख ना होणा मंगत, इक्क दिसाए साची सरन है। गुरसिक्खां सहाई जिउँ नानक अंगद, जोती जोत हरि जगाई है। साध संगत तेरे मन वधाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलिजुग अन्तिम जामा पाई है।

२७०
०३

कलिजुग अन्तिम जामा पाया। जिउँ रामा विच त्रेता आया। कृष्ना काहना भेस वटाया। जिउँ जादव बंस भाग लगाया। कलिजुग अन्तिम अन्त, प्रभ स्वांगी स्वांग रचाया। जिन प्रभ मिलण दा चाउ, प्रगट होए सभ दरस दिखाया। हरि पाया सहिज सुभाउ, विच विचोला सोहँ नाम धराया। साची दरगाह मिले थाउँ, घर दर हरि साचे माण दवाया। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो, भेव किसे ना पाया। आदि अन्त जुगा जुगन्त आप अटल अचल्ल रघुराया। वसे जल थल गुरसिख वेख घड़ी घड़ी पल पल, तेरे अंदर आसण लाया। प्रभ अबिनाशी तेरी काया विच महल्ल, सिँघआसण डेरा लाया। आप भुलाए कर कर वल छल, भरम भुलेखा वड्डा पाया। गुरसिख साचे जाओ बलि बलि, कर किरपा जिस साचा मेल मिलाया। आप चलाए शब्द सरूपी हल्ल, तेरी आत्म सोहँ साचा बीज बिजाया। अमृत आत्म लावे साचा फल, रसना रस किसे विरले गुरमुख पाया। कलिजुग जीव दले दो फाड़ी दाल, शब्द खरास आप चलाया। कलिजुग भाणा ना जाए टल, साचा लेखा हरि आप लिखाया। आप कटाए धड़ गल, इक्ठा दोवें रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह आपणे भाणे विच आप समाया। आपणा भाणा आपणा बाणा आपे जाणदा। आपणा तख्त साचा राणा, आपे आप पछाणदा। ना कोई दिसे शाह सुल्ताना, एका छत्र झुले सीस हरि वाली दो जहान दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा

मार्ग लाए, कलिजुग तेरा पन्ध मुकाए, सोहँ साचा शब्द वखाणदा। प्रभ चरन सच्ची सरनाई। दुरमति मैल प्रभ दर धवाई। गुरमति लैण हरि सरन तकाई। साचा तत्त ना मनों भुलाई। धीरज जति इक्क रखाई। आत्म वत्त साचा बीज बिजाई। आपणी पत आपणे हत्थ रखाई। प्रभ साचा दस्से मति, भुल्ल रुल ना जन्म गवाईं। कलिजुग रैण अन्धेरी तत्त, हेठां आण ना अंग भन्नाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांई ध्याई।

* ११ मग्घर २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर *

आत्म वसूरा सगला लाथया, प्रभ पाया सर्ब समरथ है। महिंमा जगत अकथ्थना अकथ्थ है। आप चढ़ाए शब्द सोहँ साचे रथ है। जुगो जुग प्रभ साचे दी गाथ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जोत प्रगटाए त्रैलोकी नाथ है। दु:ख दर्द हरि देवे कढ्ढ। कर सुखाले दुखियां हड्ड। साची जोत जगाए विच अन्धेरी खड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर द्वार जेहा बीजो लैणा वढ्ढ। कर्मां सेतड़ी साचा बीज। नाम रस हरि अंग अंग तन साचा सीज। आत्म कर दरस मिटे हरस अमृत मेघ प्रभ देवे बरस बैठा आत्म दर दहिलीज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मन तन आत्म सदा गुरसिख पीज़। मन भए अनन्दा, मिल हरि गोबिन्दा। चुक्के मन की चिन्दा। आप बणाए साचा बन्दा। जोत सरूपी जोत हरि वड दाता गुणी गहिंदा। मातलोक खुल्हावे साचा दर, भरम भुलेखा रहण ना दिन्दा। गुर चरन साचा सर, गुरसिख अशनान करंदा। आत्म भण्डारे देवे भर, तोट रहण ना दिन्दा। एका एक राखो टेक, हरि लक्ख चुरासी तोड़ वखंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नरायण नर, कर दरस जाणा तर, आदि जुगादि विच ब्रह्माद शब्द नाद साची धुन उपजंदा। साची धुन काया कोट। एका शब्द सच दमामा आत्म सोहँ लाए चोट। दिस ना आए जोत सरूपी पहरे बाणा, गुरमुखां कढ्ढे काया खोट। पूर कराए साचा कामा, रहण ना देवे तोट। बेमुख पछाड़े साचा धामा, डिग्गे आल्हणिउँ कलि बोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका राख, प्रभ साचे दी चरन टेक। सच वणज हरि वणजारा। सोहँ शब्द रत्न अपारा। गुरमुख साचे रसन कत्तण, एका सूत्र एका तारा। आप लँघाए आत्म रसर, एका वंञ इक्क मुहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरसिक्खां होए आप रख्वारा। आत्म वेख प्रभ अबिनाशी नित्त नवित्त जन भगतां हित्त। विच मात धारे भेख हरि साचा चरन लाग मानस जन्म कलि जित्त। पशू प्रेत करे देवत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता नेतन नित। नेत न्यारड़ा, हरि सज्जण प्यारड़ा। देवे नाम अधारड़ा। सोहँ जाम अपर अपारड़ा। ना

लागे कोई दाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिल सज्जण मीत साचे यारड़ा। सज्जण मीता परखे नीता, बख्शे चरन प्रीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए पतित पुनीता। पतित पुनीत करे अतीत। हरि साचा मीत, अमृत आत्म बख्शे काया करे सीतल सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जागे भाग धोए दाग, अन्तिम पकड़े तेरी वाग दिवस रैण सदा राखो चीत। राखो चीत हरि साचा कन्ता। बणत बणाई जिस जीव जन्ता। होए सहाई आदिन अन्ता। देवे वड्याई सभ साधन सन्ता। साचा शब्द विच मात धराई, सोहँ जाप जपंता। चार वरन इक्क सरनाई, होए सहाई पुरख भगवन्ता। दुरमति मैल प्रभ देवे गंवाई, निर्मल देही हरि कराई, साची खोज जो जन खुजन्ता। आत्म भिच्छया प्रभ साचे पाई, दर घर घर गेड़ हरि कटंता। जो आए जन सरनाई साचा ढोल मृदंग शब्द वजन्ता। साची जोत हरि दे जगाई, मेल मिलावा साचे कन्ता। फिर विछड़ ना जाई, दरगाह साची हरि माण दवन्ता। लक्ख चुरासी गेड़ कटाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलंदा। सतिगुर साचा सदा अटल है। ना करदा वल छल है। आदि अन्त सदा अडोल, जिउँ सागर जल है। ना कोई सके तोल, ना कोई कथन सके साची गल्ल है। एका शब्द चार कुन्ट प्रभ आप वजाए ढोल, गुरसिक्खां सुणाए घड़ी घड़ी पल पल है। जूठयां झूठयां प्रभ खोल्ह वखाए पोल, दर घर साचे लाहुंदा खल्ल है। काया झूठी झूठा खोल, जिउँ अन्धेरी डल है। प्रभ अबिनाशी सद वसे कोल, आत्म निहचल धाम अटल है। क्या कोई मारे बोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सदा अचल है। एका दर गुर चरन है। गुरमुख साचे विच मात साचा धर्म है। दूजा चुक्के मरन डरन है। प्रभ साचा करनी करन है। गुरसिक्खां आत्म भरनी भरन है। जो जन राखे टेक साची सरन है। हरि आप खुल्हाए हरन फरन है। धरे जोत एका करन है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेअन्त बेअन्त साचा कन्त धरनी धरन है। हरि चरन सुख साचा जाण। हरि चरन उज्जल मुख विच जहान। हरि चरन आत्म दु:ख सर्ब मिट जाण। हरि चरन तृष्ना भुक्ख किल विख पाप सन्ताप सर्ब मिट जाण। हरि चरन साची सरन नाम साची भिक्ख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान। चरन धूढ़ मस्तक लाओ। आत्म जूड़ गुर चरन कटाओ। मूर्ख मुग्ध चतुर सुजान, हरि दर बण जाओ। गुर चरन सच ध्यान, आत्म सर तीर्थ नहाओ। आप खुल्हाए दसवां दर जिथ्थे वसे अगम्म अथाहो। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना दीसे थाउँ। गुर चरन जोध बल सूर। गुर चरन सर्ब कला भरपूर। गुर चरन अट्ठ सठ एका देवे शब्द सरूर। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया नाद वजाए सोहँ साची तूर। काया नाद शब्द फुंकारया। ना करना जीव मात हंकारया। प्रभ साचे दी खेल अपारया।

तीन लोक जीव जन्त विच एका जोत टिका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच आपे आप समा रिहा। गुर चरन शब्द धुन बाण। गुर चरन साचा देवे शब्द बबाण। गुर चरन आत्म अन्धेर चार चुफेर सर्ब मिट जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सर्ब जीआं दा जाणी जाण। जाणी जाण जीआं का दाता। सृष्ट सबाई आपे ज्ञाता। आपे पित आपे माता। आप बंधाए गुरसिक्खां चरनी नाता। दर घर साचे कोई ना पुच्छे किसे जाता। सो जन होए पार, आत्म मिल्या पुरख बिधाता। दर घर साचे सोहँ शब्द मिले सच सुगाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता। सच्चा दाता वड दातारा। आदि अन्त अतुट भण्डारा। वरते विच संसारा। आपे वसे सर्ब थाएँ, इक्क रखाए शब्द अपारा। चार कुन्ट कराए जै जैकारा। चार वरन आए सरन निहकलंक तेरे दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द विच मात आप बणे वरतारा। हरि मंगल रसना गाया। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। घनकपुर वासी तेरी अचरज माया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत समाया। जोत सरूपी जोत अधार है। जोत सरूपी आप निरँकार है। जोत सरूपी सर्ब वरतार है। जोत सरूपी एका वस्त, दिसे हरि थार है। जोत सरूप सोहँ देवे वस्त बण वरतार है। जोत सरूप सोहँ देवे शब्द हस्त गुरसिख होणा अस्वार है। जोत सरूप दिवस रैण रखावे मस्त, साचा देवे नाम अपार है। ना कोई भन्ने ना कोई मारे शस्त्र, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन किरपा धार है। ना कोई शस्त्र ना कोई ढाला। ना कोई बस्त्र ना कोई माला। एका शब्द देवे नाम सुखाला। गुरमुख साचे सन्त जनां आप तोड़े जंजाला। चरन प्रीती साची जोड़े, ना होवे कदे कंगाला। सृष्ट सबाई अन्तिम सवाउणी, उत्ते पाए चिट्टा इक्क दुशाला। शब्द सरूपी चढ़या घोड़े, कलिजुग किया खेल निराला। अन्त काल दिन रहि गए थोड़े, वेखो सृष्ट सबाई की होवे हाला। बेमुख जीव फिरन दौड़े, ना कोई देवे बाहला। गुरसिख जड़ जिउँ बिरख बोहड़े, प्रभ अबिनाशी होए आप रखवाला। बेमुखां भन्ने हँकारी फोड़े, आत्म उठया छाला। गुरसिख प्रभ चरन आयण दौड़े, बाहों पकड़ प्रभ पाए कंठ सच्ची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जन भगतां होए आप रखवाला। आओ दर सहज सुख माणो। जाओ घर प्रभ विच बिठाए बबाणो। सदा खुल्ले रहण दर, प्रभ अबिनाशी इक्क भगवानो। गुरसिख साचे अंदर जायण वड़, बेमुख दर तों दुरकानो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, निहकलंक कलि नाम रखाए, साचा डंक शब्द वजाए, गुरसिक्खां देवे सच निशानो। सच निशानीआं, देवे कर कर वड मेहरबानीआं। साची लिख्त प्रभ आप लिखानीआं। भेद ना जाणे कोई वेद पुरानीआं। क्या कोई वखाणे जीव निधानीआं। प्रभ वसे बाहर ना विच कुरानीआं। कदे प्रगट होवे मात जाहिर, कलिजुग

आईआं तेरीआं अन्त निशानीआं। जगत दाता आपे बणया शायर, सतिजुग तेरे लेख लिखानीआं। कलिजुग जीव होए कायर, अन्त पिट्टां सर्ब वढानीआं। गुरमुखां पाए साचा नाम खैर, सोहँ झोली भर घर लै जानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे नाम निधान, आत्म करे ब्रह्म ज्ञानीआं। ब्रह्म ज्ञान हरि चरन ध्यान। पवण मसाण इक्क हो जाण। तीन लोकां विच फिराण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा अन्तर आत्म वेखे सृष्ट सबाई इक्क ध्यान।

✳ १२ मग्घर २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✳

झूठी माया जगत कंगाल है। सोहँ शब्द सच्चा धन माल है। गुरसिक्खां हरि देवे साचा लाल है। एका रंग अवल्लड़ा, दिवस रैण सच गुलाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साचा नांउँ, बहाए साचे थांउँ, साची वस्त रक्खणी संभाल है। जगत माया झूठी प्रीत है। गुर चरन एका साची रीत है। प्रभ अबिनाशी होए आप सहाई, बण जाए साचा मीत है। आत्म दर वज्जे वधाई गुरसिख साचा होए पतित पुनीत है। हरि हरि गुण रसना गाई, प्रभ काया करे सीत है। घर साचा भुल्ल ना जाई, काया झूठी जिउँ बालू भीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका साचा मीत है। जगत माया कलि अन्धेर है। सृष्ट सबाई कर रही हेर फेर है। गुरसिख जगाए हरि ना लाए देर है। साची पाए भिक्ख हरि साचा नाउँ ना मंगे कोई दूजी वेर है। दरगाह साची देवे थाउँ, आवण जावण देवे नबेड़ है। प्रभ मिलण दा राखो चाउ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए ना लाए देर है। ना दूर ना हरि दुराडा। आपे आप लडाए गुरसिक्खां लाडा। आपे आप चलाए काया देही गाडा। सहिँसा रोग सर्ब चुकाए, सुफल कराए हाडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे बाडी आपे बाडा। कलिजुग माया जगत अन्ध। आत्म होई पापां कंध। बेमुख फसे झूठे फंद। ना कोई छुडाए जोड़े बन्द बन्द। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्द। मदिरा मासी दर दुरकाए विच संगत रहण ना देवे गन्द। गुरसिख साचे गायण बत्ती दन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा बख्शंद। कलिजुग माया जगत हुलारा। क्या कोई जाणे जीव गंवारा। झूठे वहिण झूठी धारा। एका साचा गुर चरन दुआरा। जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। जोत सरूपी खेल अपारा। बिन रंग रूपी विच गुरसिख पसारा। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी ना कोई पावे सारा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी, गुरसिक्खां बूझ बुझारा। भेव ना पाए कोई शाहो वड भूपी, अचरज खेल करे करतारा। एका दिसे सति सरूपी जिन आत्म देवे जोत उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा घर करन वणज वपारा।

कलिजुग माया जगत जलावे। आत्म तृष्ना अग्न रखावे। ब्रह्मा विष्ना सभ खेल रचावे। ना किसे दिसना प्रभ विच समावे। आत्म उतारे झूठी विसना, जो जन लग्गे सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पार उतारे पकड़े दोवें बाहें। जगत माया वहन्दी धार। भरम भुलेखे डुब्बा संसार। साचे लेखे गुर दरबार। होए ना एथे कदे उधार। सच्चा सौदा हरि चरन प्यार। बिन गुर पूरे सृष्ट सबाई रही झक्ख मार। ना कोई देवे आत्म शब्द सच्चा अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा करे जगत विहार। कलिजुग माया झूठा वहिण। बेमुखां जीव सर्ब रुढ़ जाण। गुरमुख साचे प्रभ चरन डिग्गण आण। आप उठाए विच बैठाए शब्द बबाण। त्रैलोकी नाथ, सगला साथ, हरि रघुनाथ, लेख लिखाए माथ। पिछला लेखा दए चुकाए। आप चढ़ाए शब्द साचे राथ, कलिजुग बेड़ा पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म जरम सृष्ट सबाई आपणे रक्ख रखाए। कलिजुग माया कूड़ कुड़यारी। जीव अन्धे जिउँ रैण अंध्यारी। झूठा पाप उठाणा कंधे, अग्गे जाणा होया भारी। वेला अन्तिम, समझ मूर्ख बन्दे, ना आवे पासा हारी। जगत विहारी झूठे धन्दे, साचा हरि रसन उचारी। मदिरा मासी पापी गन्दे, धर्म राए दे लाए अगाड़ी। कलजुग होए भाग मन्दे, जकड़े जाण फड़ के दाढ़ी। हत्थीं पैरीं वज्जण जंदे, जमदूत मौत बण जाए लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुरकारे ना दिसे किसे पिच्छा अगाड़ी। अग्गे पिच्छे ना मिले ढोई। प्रभ बिन अवर ना दीसे कोई। सृष्ट सबाई रही सोई। गुरमुख साचे दुरमति मैल प्रभ दर धोई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एको एक पूजो हरि सोई। हरि साचा पुरख अपारया। गुरसिख साचे तेरा आत्म ब्रह्म विचारया। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, एका भरया विच हंकारया। दर घर साचे आए नाचे, ना कोई मिले सच द्वारया। गुरमुख साचे प्रभ ढाले साचे ढांचे। सोहँ मोहर उप्पर लगा रिहा। प्रभ अबिनाशी बैठा हिरदे वाचे, चित्र गुप्त बण लेखे सर्ब लिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लोक परलोक मात पताल अकाश सर्ब थांईं एका जोत जगा रिहा। काया सागर नीर अमृत ताल है। गुरसिख विरला कलिजुग मारे विच छाल है। प्रभ आत्म चाढ़े एका साचा रंग लाल है। दूजा वसे साचा संग चरन प्रीती निभे नाल है। तीजा दर ना कोई मंग, प्रभ हिरदे बैठा जगाए जोत मसाल है। घर चौथे जाईं लँघ, ब्रह्म ज्ञानीआं पौंदा जाल है। पंचम होए अंग संग, गुरसिक्खां लए सुरत संभाल है। छे शास्त्र होइण भंग, जिस सिर हत्थ धरे दीना का दयाल है। सतवां देवे सति सन्तोख, शब्द कुठाली देवे गाल है। अठवां उठे देवे मति, रक्खे यति ना लथ्थे पत, आपणी गोद उठाए जिउँ माता बाल है। नौवां नावें घर विषे विकारी सारे डरन, ना दिसे किसे हरि तोड़े जगत जंजाल है। दसवां दहि दिस चुकाए डर, भाणा प्रभ का लैणा जर, सोहँ नाम

२७५
०३

रसन उचार, आप खुल्हाए दस्म दुआर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिथ्थे वसे इक्क अकाल है। इक्क इक्क इक्क अकारया। दूजा सृष्ट सबाई आप उपा रिहा। तीजा तीनों लोक वसा रिहा। चौथे चार कुन्ट चारे चक्क एका रंग रंगा रिहा। पंजवां छेवां दस्से शरअ शरायत, सोहँ साचा नाम जपा रिहा। सप्तम देवे सच हदायत। मदिरा मास रसना रोग गवा रिहा। अठवां दिसे एका नायक, जीव जन्तां साची बणत बणा रिहा। नौवां नर नरायण एका नौ दर प्रगट कर, दसवां गुप्त रखा रिहा। आप खुल्हाए गुरसिख दसवां दर, निज घर आसण प्रभ साचा ला रिहा। एका इक्क सच्ची हरि कार है। दूजा कोई ना जगत विहार है। तीजे दस्से साची धार है। चौथे फड़े हत्थ शब्द कटार है। पंचम बणे सच्ची सरकार है। छेवें हरि अस्व अस्वार है। सतवें देवे जोत अधार है। अष्टम उलटी लट्ठ, सृष्ट सबाई आप गिड़ार है। नावें पाए नत्थ, ना कोई दिसे जगत हँकार है। राह साचा दसवां जाए दस्स, जगे जोत अगम्म अपार है। एका इक्क ओंकारया। दूजा बल बली बलकारया। तीजा बणे आप तीन लोक सिक्दारया। चौथे चारे वेद आपणा भेव छुपा रिहा। पंचम इक्क रखाए साची सेध, साचे मार्ग लगा रिहा। छेवां ना छुप्या विच क्तेब, झूठीआं पोथीआं ऐंवें फुला रिहा। सतवें सदा सदा अभेद, भेव ना किसे जणा रिहा। अठवें अट्ठ अठारां अछल अछेद है। नौवें नौ फुंकरे ना कोई दिसे विच छेद है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दसवें दर साचे घर आप खुल्हाए गुरसिख तेरा आत्म भेद है।

२७६ ०३

✻ १३ मग्घर २०१० बिक्रमी हरिसंगत दा इक्ठ कीता गया
सचखण्ड निवासी मनजीत सिँघ पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सच्च किल्हा धर्म कोट उसारया। अमृत बूंद स्वांती काया मिटी गारा आप बणा रिहा। करे खेल हरि बहु भांती, साची जुगत आप प्रभ बणा रिहा। कलिजुग अन्धेरी राती, दीपक जोती आप जगा रिहा। गुरसिक्खां पुच्छे वाती, बाहों पकड़ विच बहा रिहा। होए सहाई विच लोकमाती, सोहँ शब्द पहरेदार बणा रिहा। आपे खोल्हे आत्म ताकी, सच सरूपी वस्तू विच आप टिका रिहा। कलिजुग जीवां काया चोली पाटी, गुरमुखां साचा चोला शब्द पहना रिहा। अग्गे दिसे औखी घाटी, धर्म राए अद्धविचकार अटका रिहा। साची वस्त ना किसे हाटी, झूठे वणज जगत करा रिहा। एका रस गुर चरन चाटी, भाण्डा भरम हरि आप भन्ना रिहा। साच लाहा प्रभ दर खाटी, शब्द जनेऊ बस्त्र तन पहना रिहा। झूठी खेल जगत जिउँ बज़ीगर नाटी, स्वांगी स्वांग वरता रिहा। ना कोई सहाए तीर्थ ताटी, एका आपणी ओट रखा रिहा। आप चढ़ाए औखी

घाटी, चरन जोड़ गुर पार लँघा रिहा। देवे जोत विच ललाटी, पिछला घाटा पूर करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा मेल मिला रिहा। काया कोट कोट दुआरे। एका शब्द एका जोत वजाए सच नगारे। आपे कढे हउमे खोट, आप उतारे पापां भारे। कलिजुग जीव आलूणिउँ डिगे बोट, कवण पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए मात आपणे सच दुलारे। काया कोट गढ़ हँकार दा। गुरमुख विरला जाणे रंग करतार दा। सो जन जाणे जिस मारे प्रेम शब्द बाण दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपे सभ किछ जाणदा। साचा राह सच्चे दरबार दा। साचा थां सच्ची सरकार दा। ओथे कोई पहुंचे ना, जो कोई मात भेख धार दा। गुरमुखां पकड़े बांह, भुक्खयां नंगयां पार उतारदा। आपे रक्खे आपणी छाँ, कलिजुग अग्न विच ना साड़दा। आपणी गोद उठाए जिउँ बालक मां, अमृत देवे प्यार दा। साची दरगाह लिखावे साचा नां, गेड़ चुकाए आवण जाण दा। ना हां ना नांह आपणा रंग हरि आपे ही जाणदा। कलिजुग जीव जिउँ सुंञे घर कां, गुरसिख साचा प्रभ चरन रंग माणदा। हरि देवे निथावयां थां, वाली होवे दो जहान दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आप पछाणदा। भेख धारे भरम कलि भुल्ले। दरगाह साची ना कोई मुले। झूठे तोल ऐवें तुले। चिट्टे बाणे अन्धे काणे ना फले ना फुल्ले। साचा नाम ना मिल्या वंञ मुहाणे, पाणी

२७७ ०३ पया काया चुल्ले। ना सुघड़ ना स्याणे, प्रभ अबिनाशी साचा भुल्ले। गुरसिख साचे बाल अञ्याणे, अमृत आत्म कदे ना डुल्ले। पी ना सकण राजे राणे, जन भगतां दुआरे सदा खुल्ले। आपणे रंग हरि आपे जाणे, देवे साचा नाउँ, गुरमुखां लाल अनमुल्ले। साध संगत मन चढ़ाए चाउ, भाग लगाए साची कुले महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप आदि अन्त सदा अतोल अतुल्ले। भेख धारया मन हंकारया। ना हरि विचारया, जिस पार पसारया। ना मिल्या साचा दर, ना गुर चरन निमस्कारया। आपणा किया लैण भर, वक्त चुकाए वारो वारया। आपे करे चीर दो फाड़, आरा सीस धरा रिहा। ना देवे किसे सहारा, आए वक्त मुख छुपा रिहा । प्रभ अबिनाशी हत्थ फड़ाए कटारा, एका एक सर्ब करा रिहा । किसे कोई ना चले चारा, अन्तिम अन्त पन्ध मुका रिहा। भाणा मन्नणा दिसे भारा, बेमुख आपणे हत्थ वढा रिहा। आप कटाए शब्द सरूपी जिउँ साबण तारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा जगत वरता रिहा। हरि शब्द सच संयोग। हरि शब्द साचा रस भोग। हरि शब्द जन भगतां चुगाए आत्म साची चोग। हरि शब्द कट्टे हउमे रोग। दुरमति मैल पापां धोग। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सोहँ साचा योग। हरि शब्द साचा निशान है। हरि शब्द एका माण एका ताण बली बलवान है। हरि शब्द वड शाहो दाता वड सुल्तान है। हरि शब्द वड्डा राजा राजान है। हरि शब्द २७७ ०३

एका देवे जन भगतां ब्रह्म ज्ञान है। हरि शब्द सुरत शब्द मेल मिलान है। हरि शब्द दसवां दर कर किरपा आप खुल्हाण है। हरि शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे आत्म वसे सच अस्थान है। हरि रंग हरि शब्द जाण। हरि शब्द मिलाए मेल हरि भगवान। हरि शब्द मूर्ख मुग्ध कराए चतुर सुजान। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत वाली दो जहान है। हरि शब्द हरि का रूप है। हरि शब्द आदि अन्त जुगां जुगन्त सति सरूप है। हरि शब्द महिंमा जगत अनूप है। हरि शब्द गुरमुख विरला जाणे ना किसे दिसे कोई रंग रूप है। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका वड्डा भूप है। हरि शब्द गुरमुख जानणा। होए मेल भगत भगवानणा। मिटे अन्धेर होए चानणा। मिटे हेर फेर, एका देवे नाम निधानणा। ना लाए कोई देर जिस किरपा करे विष्नूं भगवानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा शब्द सतिजुग झुल्ले सच निशानणा। हरि शब्द हरि का भेख है। हरि शब्द हरि हरि वेख है। हरि शब्द प्रभ लाए आत्म साची मेख है। हरि शब्द कलिजुग जीआं कढे भरम भुलेख है। हरि शब्द गुरसिख साचे दर साचे नेत्र लैणा पेख है। हरि शब्द जन भगतां देवे जिन्नां लिखाए धुरों साचे लेख है। हरि शब्द ना बेमुख जाणे, कलिजुग रहे वेखा वेख है। हरि शब्द हरि रसन वखाणे, ना कोई जाणे औल्या पीर शेख़ है। हरि शब्द गुरमुख तेरे आत्म बद्धे गाने, महाराज

२७८ ०३ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच्चों वेख है। हरि शब्द जगत न्यारड़ा। मिलाए मेल यार प्यारड़ा। दस्से राह २७८ ०३

जगत न्यारड़ा। बेमुख हस्स ना पावे सारड़ा। गुरसिक्खां हरि हिरदे वसे, देवे दरस न्यारड़ा। करे प्रकाश कोट रवि सस्से, मिटाए अन्ध अंध्यारड़ा। बेमुखां आत्म अन्धेर जिउँ चन्द मस्से, ना दिसे सज्जण मीत प्यारड़ा। साचा शब्द तीर प्रभ साचा कस्से, सृष्ट सबाई पार करारड़ा। जोत सरूपी राह साचा दस्से, निहकलंक लै अवतारड़ा। बेमुख कलिजुग जीव पैर हेठां झस्से, ना कोई पावे सारड़ा। मौत नागनी एका डस्से, ना कोई बणे किसे सहारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारड़ा। हरि शब्द सच धन माल। हरि शब्द गुरमुख साचे रक्ख संभाल। अन्तिम अन्त तेरे निभे नाल। कलिजुग जीव होए कंगाल। झूठा लग्गा जगत ज़ंजाल। मायाधारी होए ख़ुआरी, ना कोई पावे सारी, कलिजुग अन्तिम तुट्टा डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप दलाए जिउँ दो फाड़ी दाल। हरि शब्द गहर गम्भीर। हरि शब्द आत्म वज्जे साचा तीर। हरि शब्द आत्म झिरनां दे झिराए, अमृत प्याए साचा सीर। हरि शब्द हरिजन जाणे, जिन देवे आत्म धीर। हरि शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पिलाए विच मात साचा सीर। हरि शब्द जगत वड्याई। पतिपरमेश्वर दया कमाई। हरि शब्द देवे दात आप रघुराई। वड करामात भुल्ल ना जाई। साचा नात गुर चरन जुड़ाई।

अन्तिम मिटे अन्धेरी रात, दीपक जोती दे जगाई। गुरमुख साचे वेख मार झात, आत्म बैठा डेरा लाई। ना दिवस ना होवे रात, एका रंग डगमगाई। बैठा रहे सद इकांत। गुरमुख साचे दे समझाई। अमृत देवे बूंद स्वांत, कँवल नाभ आप उलटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे नाम वड्याई। हरि शब्द सति सन्तोख। हरि शब्द कट्टे काया दोख। हरि शब्द उज्जल कराए जगत मुख। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुक्ख। हरि शब्द हरि की बणत। गुरमुख विरला जाणे सन्त। कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त। आपे जाणे जाण पछाणे गुरमुख जगाए हरि हरि हरि भगवन्त। दर घर साचे आप दिखाए, मेल मिलावा साचे कन्त। बेमुख बन्नण झूठे दाअवे, लक्ख चुरासी विच भवन्त। अठसठ तीर्थ झूठे नहावे, ना कोई छुडावे अन्त। गुरसिख साचा गुर चरन धूढ़ी मस्तक लावे, देवे वड्याई विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नरायण नर जन भगतां होए सहाई आदि अन्त। हरि शब्द हरि भण्डारया। हरि शब्द हरि वरतारया। हरि शब्द हरि देवे विच संसारया। हरि शब्द आप चलाए जुगो जुग अपर अपारया। हरि शब्द हरि सुणाए, सोहँ डंक सच वजा रिहा। हरि शब्द हरि रसना गाए कलिजुग झेड़ा आप चुका रिहा। हरि शब्द मैल पापां धोए, आत्म तीर्थ सच इशनान करा रिहा। हरि शब्द हरि साचा बोए, अमृत फल इक्क लगा रिहा। हरि शब्द गुरसिख विरला जाणे कोए, जिस बज़र कपाटी चीर वखा रिहा। हरि शब्द रसना लए परोए, दसवां दर आप खुल्हा रिहा। हरि शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपक जोती आप जगा रिहा। हरि शब्द साचा राग। हरि शब्द रसना जप, धोणां पापां झूठा दाग। हरि शब्द गुरमुख पछाणे, बुझाए आत्म तृष्ना आग। हरि शब्द देवे हरि तेरी अन्तिम पकड़े वाग। हरि शब्द लैणा वर साचे घर खुल्ले दर देवे वडी वड्याई प्रभ पहली माघ। गुर चरन सर जाणा तर। आत्म भण्डारे प्रभ देवे भर। सुक्के रुखड़े हरे कर। गुरसिख बणाए हँस काग, दर घर साचे जाण वड़। प्रभ अबिनाशी फड़ना लड़। बेमुख जीव जायन झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द लगाए आग। हरि शब्द घर सच विचोला। हरि शब्द कलिजुग जीव क्यों भुल्लया गोला। मानस जन्म विच मात रोला। बिन गुर ना कोई गावे घर साचे दा साचा सोहला। मात जोत प्रगटाए वज्जे वधाए, प्रगट जोत सृष्ट सबाई दे हिलाई, प्रभ अबिनाशी संपूरन कला सोलां। राजे राणे दए उठाए, आपे पाए उजाड़ राहे। तख्त ताज कोई रहण ना पाए। साज बाज सर्ब मिट जाए। एका ताज हरि आपणे सिर टिकाए। सिँघ सिँघासण डेरा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द बाहों पकड़ आपणी सरन लगाए। एक दीसे हरि जगदीश। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस। कलिजुग जीव झूठी करन रीस। एका

राग सोहँ शब्द मिटाए राग छतीस। नारद मुन दे मति समझाए, मिटाया भेव बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा शब्द इक्क पढ़ाए, ना कोई लगाए फीस। वड ज़रवाणयां शाह सुल्तानयां, मेट मिटाणयां, वाली दो जहानयां। जोत सरूपी पहरे बाणयां। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणया। प्रभ अन्तिम अन्त सृष्ट सबाई मेट मिटाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त आपे चले आपणे भाणयां। हरि शब्द हरि तीर चलावणा। कलिजुग जीवां धीर गवावणा। चार कुन्ट वहीर करावणा। बालक माता सीर हत्थ ना आवणा। कलिजुग जीवां ना नीर किसे मुख चुआवणा। ना कोए सहाए पीर फ़कीर, ना कोई पकड़े दामना। धर्म राए दे वंझे जंज़ीर, अग्गे होए ना किसे छुडावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन, अन्तिम अन्त आपणी सरन लगावणा। हरि शब्द सच कटार है। सोहँ शब्द खण्डा दो धार है। प्रभ साचे दी साची कार है। जुगो जुग करे आपणा आप विहार है। तीन लोक सच्चा इक्क सिक्दार है। लोकमात जोत प्रगटाए, आवे जावे वारो वार है। कलिजुग औध गई बीत, प्रभ वहाए वैहन्दी धार है। गुरमुख साचे मानस जनस गए कलि जीत, आए सच दरबार है। प्रभ काया करे सीतल सीत, अमृत चलाए सच फुहार है। सतिजुग चलाए साची रीत, ऊँच नीच भरम निवार है। प्रभ अबिनाशी साचा मीत, वाह वाह एका

इक्क प्यार है। दूजा कोई ना राखो चीत, निहकलंक सच्चा अवतार है। सोहँ शब्द गाओ सुहागी गीत, बेड़ा होवे अन्तिम पार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात ल्या अवतार है। हरि शब्द सच निशाना। हरि शब्द सच टिकाणा। हरि शब्द अनहद धुन उपजाणा। गुरमुख साचे चुण प्रभ साचे कन्न सुणाणा। हरि शब्द हरि के गुण, मेल मिलाए तीर बिधनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। हरि शब्द हरि ज्ञान है। हरि शब्द हरि चरन ध्यान है। हरि शब्द एका एक, साची टेक गुरसिख साचे भुल्ल ना जाण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत देवे साचा दान है। सच शब्द हरि भण्डारया। कर किरपा देवे निरंकारया। जन्म कर्म धर्म गुरसिख संवारया। भाण्डा भरम हरि आप निवारया। पूरन ब्रह्म हरि बूझ बुझा रिहा। वरन बरन सर्ब मिटा रिहे। एका सरन निहकलंक रखा रिहा। हरन फरन आप खुल्हा रिहा। धरनी धरन दया कमा रिहा। गुरमुख साचे सरनी पड़न, प्रभ बाहों पकड़ गले लगा रिहा। आप चुकाए मरन डरन, लक्ख चुरासी गेड़ कटा रिहा। बेमुख जीव आपणा किया भरन, लहणा देणा सच चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटा रिहा। हरि शब्द हरि संग मेल। जगे जोत बिन बाती बिन तेल। गुरमुख साचे अचरज वेख पारब्रह्म दा खेल। हरि शब्द हिरदे वाचे बण जाए साचा सज्जण सुहेल। बेमुख दर

ते आए नाचे, बेड़ा शौह दरयाए देवे ठेल। प्रभ अबिनाशी साचो साचे, ना कोई नट बाज़ीगर खेल। बेमुख हरि आप धकाए, धर्म राए दी जेल्। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाड़ी बहत्तर अग्न लगाए, दरगाह साची ना होवे मेल। मेल विछोड़ा हरि दे हत्थ। सर्ब कला हरि आप समरथ। जुगा जुगन्त महिंमा अकथ्थ। बेमुखां हरि पाए नत्थ। अन्तिम अन्त जाए मथ्था। गुरसिख साचे आप चढ़ाए सोहँ साचे रथ। कर दरस साचे हरि सगल वसूरे गए लथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए जिउँ रामा घर दसरथ। राम अवतारया, जोत निरंकारया। त्रेता उधारया, खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे विच समा रिहा। त्रेता त्रीया कराए अन्त। भेव ना जाणे कोई जीव जन्त। एका एक पछाणे जिस देवे नाम गुण दाता गुणवन्त। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग आप बणाए आपणी साची बणत। हरि शब्द साची सिख्या। प्रभ देवे साची भिख्या। साचा लेख धुरदरगाही लिख्या। प्रभ अबिनाशी क्या कोई करे तेरी प्रिख्या। भुल्ल रुल्ल दर साचे आए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दए मिटाए बिधना लिखी रेख्या। हरि शब्द जगत ढंडोरा। प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी चार कुन्ट फिराए साचा घोड़ा। कलिजुग अन्तिम अन्त ल्याए, पैरीं पाउण ना देवे किसे जोड़ा। प्रभ अबिनाशी तेरी साची कार, क्या कोई विच अटकाए रोड़ा। बेमुख जीवां आपे भन्न वखाए, जिउँ नाई नशतर फोड़ा। एका जोत डगमगाए,
२८१ ०३ कलिजुग अन्धेर सर्ब मिट जाए, गुरमुख विरला जगत रहि जाए, साची भुगत हरि चरन सेव कमाए। सतिजुग बिरख लगाए २८१ ०३
साचे बोहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आप चढ़ाए दरगाह साची साचे पौड़ा। हरि शब्द आस पुजास्सया। चलाए प्रभ पुरख अबिनाशया। सृष्ट सबाई करे दागया। गुरमुखां हिरदे सद रक्खे वास्सया। अज्ञान अन्धेर दर साचे तों नास्सया। सतिजुग साचा विच मात दीप प्रगास्सया। अचरज खेल जन भगतां मेल प्रगट होए घनकपुर वासीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे बन्द खुलासीआ। हरि शब्द नाम निरँजणा। हरि शब्द दु:ख भय भञ्जणा। हरि शब्द घनकपुर वासी इक्क कराए चरन धूढ़ साजा मजना। कलिजुग जीव अन्तकाल कलि भज्जणा । वेले अन्तिम ना कोई होए सहाई ना कोई साक सैण सज्जणा । गुरमुख साचे सन्त जनां पी अमृत दर ते रज्जणा। वेले अन्तिम अन्त कलि प्रभ साचे पर्दा कज्जणा। जोत सरूपी प्रगट जोत विच मात दे गज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटा हरस, अमृत मेघ प्रभ देवे बरस, गुरमुख साचे कर तरस, वेला फिर मात नहीं लज्झणा। क्या कोई जाणे भेव हरि बनवारया। तेरा खेल अपर अपारया। जन भगत देवे शब्द अधारया। देवे मात जन्म सच संवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवे जावे वारो वारया। हरि खेल हरि आपे जाणदा। आपणा रंग आपे माणदा। वेला अन्तिम अन्त सर्ब पछाणदा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, कलिजुग बणत बणाए वाली दो जहान दा। वाली दो जहानयां, जन देवें सन्तां सच फ़रमानयां। साची देवे दात नाम निशानियां। एका एक वड करामात प्रभ चरन ध्यानियां। आप मिटाए अन्धेरी रात, मार भजाए सर्ब शैतानियां। अमृत प्याए बूंद स्वांत, दूई द्वैत मेट मिटानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम निधानयां। आपणी बणत प्रभ लए बणा। गुरमुख साचे सन्त उपजा। साचा शब्द दए जणा। एका ताणा एका पेटा लए बणा। एका माता एका पिता, गुरसिख बेटा लए बणा। साचे सूत्र विच लपेटा, साची भट्ठी दए चढ़ा। आपे खेवट आपे खेटा, वंञ मुहाणा देवे नाम फड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात देवे झोली पा। सच दात हरि झोली पाई। मातलोक हरि जन्म दवाई। साचा कर्म आप लिखाई। सच धर्म विच जगत चलाई। माया भरम विच ना भुल्ल जाई। हत्थ ना आवे मानस जन्म, दाग कुल ना लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति समझाए, साचा नाम सृष्ट जपाई। साचा नाम जगत जपाउणा। हरि का राह सच वखाउणा। झूठा वणज ना किसे कराउणा। फड़ फड़ बाहों गुर चरन लाउणा। साचा नाउँ घर साचे आप लिखाउणा। आपे दस्से साचा थां जिथ्थे आपणा आप वसाउणा। क्यों
२८२ ०३ भुल्ले फिरदे कलिजुग जीव कां, दूजा थां किसे हत्थ ना आउणा। ना पुच्छे वात पुत्तां मां, भेखाधारी कोई दिस ना आउणा। २८२ ०३
आप सुहाए साचा थां, निहकलंक जिस थां जाए चरन छुहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां भुल्लयां, माया दे विच रुलयां, फड़ फड़ बाहों साचे राह पाउणा। साचा राह सच टिकाणा। क्यों भुल्ला जीव कलि अञ्याणा। ना कर झूठा बाणा। एको एक रंग भगवाना। एका जगे जोत महाना। दूसर कोई ना ओथे जाणा। ना कोई पहुंचे ओथे राजा राणा। एका जगे जोत महाना। बैठा वड शाह सुल्ताना। जोत सरूपी पहरे बाणा। पवण सरूपी छत्र झुलाणा। पवण उनन्जा विच समाणा। करोड़ तेतीस दर साचे मंगल गाणा। राग छतीस प्रभ साचे संग रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई बाल अञ्याणा। हरि शब्द साचा संग। होए सहाई सदा अंग संग। साची दात प्रभ दर मंग। प्रभ अबिनाशी कट्टे भुक्ख नंग। कलिजुग अन्तिम जाए पार लँघ। दर घर साचा गुरसिख साचे मूल ना संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मानस जन्म ना होवे भंग। हरि शब्द हरि का खण्डा। बेमुखां सिर लागे डण्डा। शब्द सरूपी चण्ड प्रचण्डा। सृष्ट सबाई कराए वंडा। आपे तोले तोलणहारा, सोहँ फड़या हत्थ विच कंडा। ना कोई पावे जीव सारा, आप कराए खण्ड खण्डा। सोहँ शब्द तिखी धारा, बेमुखां वंडाए कंडां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा भेख जगत मिटाए, ना कोई पूजे करीर जंडां। जंड करीर पीर फ़कीर। औलीए गौंस शाह दस्तगीर। अबनूस क्यानूस

किसे कोई ना देवे धीर। हज़रत ऐली शाह प्रभ लाहे सभ दे चीर। अहिमद मुहम्मद संग चार यार हत्थ ना आवे सीर। प्रभ अबिनाशी करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए तीर। हरि शब्द रसना खिच तीर कमाना। मेट मिटाए वड वड बली बलवाना। नगर खेड़ा कोई दिस ना आवे कलिजुग तेरा मिटे निशाना। खुल्हा कराए धरत मात तेरा वेहड़ा, साचा झण्डा धर्म झुलाणा। आप दुआए एका गेड़ा, झूठा झेड़ा जगत मिटाना। करे खेल पहली छेड़ वाघे आप छिड़ाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लिख्या लेख ना किसे मिटाना। लिखाए लेख बण लिखारी। ना कोई जाणे हरि जुआरी। साची वरते जगत कारी। घर घर रोवे नर नारी। मौत लाड़ी सभ थाईं फेरे आप बहारी। बेमुखां पकड़ दाढ़ी, आप लगाए आपणे अगाड़ी। कलिजुग जीव कोई छुप ना जाए, फड़ फड़ कढाए विच्चों जंगल जूह पहाड़ी। वेले अन्त ना कोई छुडाए, कर्मां उजड़ी वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न जोत सृष्ट सबाई साड़ी। हरि शब्द तीर तफंगा। हरि शब्द चार कुन्ट कराए एका दंगा। हरि शब्द कलिजुग जीवां खून वहाए जिउँ वहन्दी गंगा। हरि शब्द बेमुख जीव मौत लाड़ी नाल प्रनाए, आप लगाए हत्थ खूनी रंगा। करदे जायण हाए हाए, कवण छुडाए मेरी माए, झूठे दिसण साथी संगा। धर्म राए दर दए पुजाए, एथे ओथे दे सजाए, भरम भुलेखे सर्ब गंवाए, वेखा वेखी जो रहे शरमाए, प्रभ दरस ना दर साचे मंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, वड सूरा सरबंगा। हरि सन्तां हुक्म सुणांयदा। विच मात जन्म दवांयदा। पूर्ब लहणा झोली पांयदा। शब्द गहणा तन पहनांयदा। सज्जण साक सैणां आप अखवांयदा। मात पित भाई भैणां, सर्ब थाईं आप बण जांयदा। आप चुकाए लहणा देणा, साचे मार्ग लांयदा। प्रभ साचे दा साचा कहणा, गुरमुख साचा भुल्ल ना जांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप साचा शब्द हुक्म सुणांयदा। सच शब्द हरि हुक्म सुणाए। सन्त जनां हरि दए वड्याए। साची बणत आप बणाए। साचा कन्त सिर हत्थ टिकाए। देव दंत सर्ब वस कराए। बेअन्त बेअन्त आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त साचे सन्त दे मति आप समझाए। देवे मति शब्द ज्ञान। एका रक्खणा चरन ध्यान। आत्म तोड़ो सारा मान। बैठो विच शब्द बबान। तीन लोक हरि उडान। शब्द सरूपी पवन मसाण। ना कोई जाणे जीव अंञान। गुरमुख साचे रंग साचा मान। नेत्र पेख आत्म जगे जोत महान। ना कोई जाणे झूठा भेख, जोत धरे श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब जीआं दा जाणी जाण, एका देवे नाम निधान। नाम निधान सर्ब गुणवन्त। वेखो हरि पूरन भगवन्त। जोत जगाए विच जीव जन्त। आपणा आप छुपाए, बैठा रहे सदा इकन्त। गुरमुख साचे आप जगाए, देवे वड्याई साचे सन्त। आत्म दर आप खुल्हाए होए मिलावा साचे कन्त।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण दाता गुणी गुणवन्त। साचे सन्त सदा उपदेश है। जोत सरूपी हरि का भेस है। महिंमा जगत अलक्खणा लेख है। प्रभ पूरन करे आसा। साचा देवे चरन भरवासा। शब्द चलाए स्वास स्वासा। जोत जगाए पृथ्मी अकाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटा घट रक्खे वासा। वास वसेरा, ना दूर ना नेड़ा। आप भुलाए कर कर हेरा फेरा। कलिजुग माया विच रुलाए, लोभी पापी जीवड़ा। गुरमुख साचे आप जगाए, करे अन्त नबेड़ा। शब्द नईआ आप चढ़ाए, पार लँघाए बेड़ा। गुर संगत बणाए भैणां भईआ, ना कोई रहे दो फाड़ा। साचे लेख आप लिखाए एका वईआ, आप मुकाए झूठा झेड़ा। सच दरबार इक्क लगईआ, गुर चरन दस्से एका साचा खेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध जेवड अवर दिसे केहड़ा। अवर ना दीसे कोए। बिन गुर पूरे गुरमुख साचा दूसर कोई ना सेओ। हरि हरि हरि रंग वेख गुरमुख जाण प्रभ अबिनाशी अलख अभेउ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बरसे मेओ। अमृत मींह बरसांयदा। तन काया हरा करांयदा। शब्द सरूपी हल्ल चलांयदा। नाम रूपी बीज बिजांयदा। सच सुच्च दा बिरख लगांयदा। सति धर्म कर्म फल फुल्ल लगांयदा, गुरसिक्खां करे साचा जन्म बण मालण तन माला आप पहनांयदा। आप मिटाए मन का भरम, तोड़ फुल्ल झोली आप भरांयदा। कोई ना लग्गे मुल, प्रेम सूत्र सति धागा वट चढ़ांयदा। गुरसिख
२८४ ०३ तुध जेवड ना कोई दीसे तेरे तुल, शब्द सरूपी सूई हत्थ फड़ांयदा। एका देवे शब्द नाम अनमुल्ल आप उलटाए कँवल नाभ ०३ २८४
फुल्ल, गुरमुख साचे लए चुण फूलणहार आप परइन्दा। सच दुआरा जाए खुल, दर घर जो जन आए भुल, भाग लगावे कुल, साची किरपा आप करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे वड्याई फूलणहार सच दातार कर विहार अपर अपार गल आपणे विच पांयदा। एका हार गले लटकाए। साची कार आप कराए। दूजी धार कोई रहण ना पाए। सच सच संसार इक्क हो जाए। एका धीरज धर्म जैकार आप कराए। दूई द्वैत मार भाण्डा भरम भन्नाए। सतिजुग वरते तेरी साची कार, प्रभ अबिनाशी होए सहाए। बेमुखां मारे डाहढी मार, घर साचे रहण ना पाए। गुरसिक्खां देवे चरन प्यार, पूर्ब कर्म विचार, आप बणाए आपणे गल दे हार, विच मात लटकाए। पहला हार हरि उपदेस। धरे जोत प्रभ माझे देस। जोत सरूपी धारे भेस। दुष्ट दुराचारीआं वड हँकारीआं प्रभ पकड़ पछाड़े केस। गुरसिख बलिहारया, जो चरन आए निमस्कारया। आया सच दरबारया, मिल्या हरि निरंकारया। भरम भुलेखा दए निवारया। सोहँ फड़ी हत्थ कटारया। सृष्ट सबाई आर पारया। कर्म धर्म दोए विचारया। गुरसिख साचे विच प्रवेश, फूलणहार गल लटकाए। द्वार बंक बंक द्वार आप सुहाए। राउ रंक रंक राउ इक्क थां बहाए। मिटाए शंक रहे अटंक भुल्ल कोई रहण ना पाए। एका चलाए

शब्द साचा अंक, दूसर कोई रहण ना पाए। गुरसिख वड्याए विच चरन बहाए जिउँ राजा जनक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाए। फूलणहार कलि विचारा। सोहँ शब्द चलाए चार कुन्ट साचा नाअरा। पवण सरूपी शब्द अस्वारा। चिट्टे अस्व हरि दातारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सच हार गल पाया। गुरसिख साचे भेंट चढ़ाया। दूजा फेर लए उठाया। सृष्ट सबाई ढहि होवे ढेर, गुरसिख रक्खे हेठ आपणी साया। कलिजुग जीव मारे घेर घेर, किसे राह हत्थ ना आया। ना कोई जाणे संञ सवेर, प्रभ का भेव किसे ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देव आपणी सरन रखाया। देवी देवत जगत पुजारी। साचे दर देण बहारी। चरन धूढ़ मंगण वारो वारी। चाढ़े रंग गूढ़, प्रभ चरन निमस्कारी। जीव आत्म सदा मूढ़, भरया रिहा विच हँकारी। बिन गुर पूरे कौण कट्टे जूड़, पापां पेट रहे अफारी। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, जाणा पैणा आपणी वारी। गुरसिख साचे प्रभ रंग चढ़ाए मजीठी गूढ़, ना कोई रंगे रंग ललारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे आपणी कारी। दूजा दोअं आप उठाए। सोहँ जाप जपाए। ओअं सोहँ इक्क हो जाए। सो पुरख निरँजण रघुराए। सोहँ जीव जगे दीव, आत्म साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा गुण ना जाणे कोए। दूजा हार दूजा घर। जिथ्थे चुक्के जम का डर। अग्गे लभ्भे साचा दर। प्रभ अबिनाशी किरपा देवे कर। जो जन मंगे साचा वर। आत्म भण्डारे देवे भर। अमृत बूंद प्यावे, अमृत तीर्थ आत्म साचे सर। मुन सुन हरि आप तुड़ाए जोती दीपक देवे धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे किरपा कर। किरपा करे कृपानिध। गुरसिक्खां कारज कीने सिद्ध। आप मिलाए कर कर बिध। शब्द तीर चलाए आत्म जाए विध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात हरि झोली पाए, सच घर उपजाए नौ निध। दूजा हार दुःख मिटावणा। प्रभ अबिनाशी आपणे गल विच पावणा। धारे भेख जिउँ बल बावना। कलिजुग लैणा वेख दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावणा। आप लिखाए साचे लेख, गुरमुखां होए आपे जामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, द्वार बंक सुहाए जिस थांए चरन छुहाणा। तीन लोक तत्त काल। गुरमुख साचे सुरत संभाल। प्रभ अबिनाशी आत्म देवे अनमुल्लड़ा लाल। आपे कट्टे कलिजुग जगत जंजाल। साची वस्त हरि साचा देवे, निभे तेरे नाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। तीजा हार हत्थ उठाया। गुर संगत हरि वर घर साचा पाया। आत्म दर दे खुल्हाया। आपणी किरपा कर, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। ना जन्मे ना जाए मरे, एका एक आदि अन्त इक्क रघुराया। गुरमुख साचे तेरे आत्म दर, प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। कलिजुग जीव भुल्ला साचा घर, घर घर दर दर क्यों फिरे हलकाया। जोत

सरूपी विच वसे हरि, पापी गन्दे भागां मन्दे आत्म अन्धे ना दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर नरायण सुख आसण डेरा लाया। सुख आसण डेरा हरि जी लाए। कर किरपा हरि दया कमाए। जन भगतां आपणा भेव आप खुल्हाए। जीवां जन्तां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे जन्म दवाए। सतिजुग साचे जन्म दवाया। पहरेदार आप हो आया। वेला वक्त आण सुहाया। भगवान भगत मेल मिलाया। जुगत जगत करदा आया। साची शक्त जन भगत आपणे अंग संग रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुक्त जुगत संवारे भुगत, सोहँ साचा नाम दवाया। नाम जपाए जगत गुरदेवा। माण चुकाए सर्ब देवी देवा। सृष्ट सबाई लगाए एका सेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चार कुन्ट जपाए रसना जिह्वा। तीजी धार जगत ख्वार। ईसा मूसा होयण पार। काला सूसा तन पहनार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गल आपणे पहने तीजा हार। तीजा हार तीर्थ यात्रा। प्रभ चरन गूढ़ी गात्रा। ना कोई जाणे भेव वेद शास्त्रां। कलिजुग मिटे अन्धेरी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तन पहनाए साचा गात्रा। साचा शब्द तन पहनाए। सच चगदीश सिर छत्र झुलाए। सृष्ट सबाई एका एक पढ़ाए शब्द हदीस, कुरान अञ्जील कोई रहण ना पाए। ना कोई दिसे मसीत, रोज़ा बांग ना कोई सुणाए। आपे परखे सर्ब नीत, अन्तिम अन्त दे मिटाए। मात चढ़ी सदी बीस, भाणा आपणा हरि वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथा हार आपणे दस्त उठाए। चौथा हार चारे कूट। शब्द सरूपी हरि रिहा झूट। गुरमुख साचे साचा लाहा लैण लूट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख दर दुरकारे, सच दरबारे बाहर कढ्ढे कूट। चार कुन्ट चारे जुग। प्रभ भाग लगाए विच पिण्ड बुघ। सृष्ट सबाई होए उग्घ। गुरमुख विरले विच मात रहि जाण इक्क मुढ्ढ इक्क रुग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पकड़ पछाड़े फड़ चुग चुग। चार कुन्ट चार दीवारी। किल्हा कोट हरि रिहा उसारी। शब्द सरूपी पहरेदारी। सृष्ट सबाई होए हँकारी। फड़ फड़ उठावे रलावे मारे शब्द फुकारी। गुरमुख साचे चरन लगावे खिच ल्यावे चरन द्वारी। बेमुख दर हरि आप दुरकावे पासा दिसे हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक साचा कन्त, जिस बणाई बणत सृष्ट सबाई सच सुहागण नारी। चौथा हार चारे वेद। प्रभ अबिनाशी सदा अभेद। आपे करे विच मात अछल अछेद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारे, ना किसे लभ्भे विच कतेब। वेद कतेबां वसे बाहर। कदे गुप्त कदे ज़ाहिर। सतिजुग तोबा बणया साचा शायर। सोहँ शब्द चलाए साची लहर। सृष्ट वरते कहर। पंचम जेठ लग्गे इक्क दुपहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे वरताए, आपणे भाणे विच समाए इक्क लगाए सवा पहर। सवा पहर शब्द

भबूती। सोहँ शब्द साचा दूती। सृष्ट सबाई जिउँ कच्चे सूती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप कटाए कलिजुग जीआं फसल कुरूती। चौथे हार चौथे घर। गुरमुख विरला अंदर वेखे वड़। बेमुखां दर साचे आवे डर। बाहर भज्जे फिरन नारी नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग उपजे राग, धोए दाग, पकड़े वाग कलि जाओ तर। चौथा हार जगत गुर दाता। गुरसिक्खां देवे दात आप बणाए ब्रह्म ज्ञाता। चरनी जोड़े साचा नाता। किरपा करे पुरख बिधाता। आपे बणे पित माता। पिता पूत मेल मिलाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता। एका दात जगत भिखार। मंगण खड़े कोट द्वार। गुरमुख साचा अग्गे धरे, प्रभ हत्थ आपणे पकड़े हार। साध संगत तेरे कारज सरे, प्रभ आपणे गले लए डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग चौथा जुग आप कराए आर पार। चौथा जुग आप मुकाया। आपे बणे दाई दाया। सतिजुग साचा मात उपजाया। सच सुच्च दा राह चलाया। पंचम हार प्रभ हत्थ फड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा सिक्दार आप अख्वाया। पंचम हार पंचम कटार। पंचां दूतां देवे मार। तन काया विच्चों कढ्ढे बाहर। नेड़ ना आए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। प्रभ अबिनाशी किरपा करे अपर अपार। सतिजुग तेरा वरते सच वरतार। प्रभ अबिनाशी आपणे सिर रक्खे दस्तार। पंचम जेठ किया विहार। सृष्ट दब्बी पापां भार। दर साचे करे पुकार। जोत धरे आप निरँकार। करे खेल विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार। जामा धारे हरि बलवन्ता। आप उठाए साचे सन्ता। साचा शब्द कन्न सुणंता। अनहद धुन हरि मृदंग वजन्ता। हरि पर्दे देवे खोल्ह दरस दिखंता। गुरसिक्खां संग करे चोहल, निज घर वखंता। बेमुखां कढ्ढे पोल, दर दर फिरंता। साचा शब्द सुणावे वजावे विच मात साचा ढोल, ना कोई उहला भेव रखंता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान चतुर सुजाण आवण जावण गुरसिक्खां गेड़ कटंता। सतिजुग तेरा जन्म दवाया। पहली माघ लेख लिखाया। प्रभ अबिनाशी साची भाखी, कलिजुग झूठा भेख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप करे कराए, जो मन भाया। सतिजुग तेरा सति दुआरा। सोहँ भरे हरि भण्डारा। आपे बणे जगत वरतारा। गुरमुख विरला करे वणज वपारा। जो जन आए चरन दुआरा। दर घर साचे टुट्टे माण हँकारा। मानस जन्म ना चोग निखुट्टे, हरि पाया सच भतारा। कलिजुग पींघ ना अद्ध विच टुट्टे, प्रभ देवे शब्द हुलारा। बेमुखां जड़ आपे पुट्टे, जिउँ गंना इक्क हुलारा। साचा लाहा गुरमुख साचा प्रभ दर लुट्टे, प्रभ लाए पार किनारा। पी अमृत एका घुट्टे, मानस जन्म ना होए दूजी वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे धाम बहाए आपणे चरन दुआरा। चरन दुआरा सच्चा घर बाहरा। वसे निरँकारा जोत पसारा दीप उज्जयारा, महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जोत सरूप वसे निरँकारा। निरँकार सच घर वास। प्रभ अबिनाशी पुरख अबिनाश। जन भगतां होए दासन दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। मानस जन्म रास करावणा। सोहँ शब्द स्वास स्वास जपावणा। गुरमुख साचा बिरख विच कलिजुग लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात माण दवावणा। पंचम हार गुर दर परवान। पावे सार हरि भगवान। शब्द धार हरि एका देवे, दूई द्वैत सर्ब मिट जाण। सोहँ शब्द फल साचा मेवे, गुरमुख विरले खाण। पुरख सुजाण कर किरपा जिस जन देवे, सो जन होए चतुर सुजाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, इक्क कराए रंक राजान। रंक राजान इक्क दुआरे। ऊँच नीच प्रभ भरम निवारे। सतिजुग साची इक्क बहारे। सृष्ट सबाई एका कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच द्वार इक्क दवारे। सच दुआरा इक्क खुल्हाउणा। सतिजुग साचा राह चलाउणा। वेद पुरान कोई रहण ना पाउणा। खाणी बाणी मेट मिटाउणा। गगन पताली जीवां जन्तां विच आप समाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा कर्म कमाउणा। सतिजुग साचा सच वरतंत । एका मार्ग सर्ब जीव जन्त । मेल मिलाए फड़ फड़ उठाए सरन ल्याए साचे सन्त। शब्द जणाए तनक लगाए, मन का मणक फिराए कलिजुग वेले अन्त। जमन किनारे डेरा लाए। हेरा फेरा सर्ब चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाए । जमन किनारे चरन धर। अचरज़ खेल जाए कर। वाली हिन्द आए दर। राजा राणा सरनी जाए पढ़। प्रगट होए दरस दिखाए, कल्गीधर अग्गे खड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार लँघाए जिन्हां फड़या तेरा लड़। पंचम हार प्रभ मेटे प्रपंच। गुरमुखां काया आत्म देवे सिंच। जोती जोत सरूप हरि, साचा नाम वणज कराए ना कोई विहाजे कंच। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा माण दवाए, साची शरअ शरायत बणाए देवे वड्याई पंच। पंचम पंचम मिले वड्याई। प्रभ साचे तेरी सच सरनाई। सतिजुग वरते हरि हरि हरि गुण रसना गाई। कादर करते उप्पर धरते एह खेल रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम हार आपणे तन लगाई। पंचम हार तन लगाया। गुर संगत दर मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी साचे भाया। तेरां मग्घर दया कमाया। साचा जोड़ आप जुड़ाया। ना सके कोई तोड़ ना छोड़ छुड़ाया। प्रभ साचे दी साची लोड़, वेले अन्त होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां विच सद समाया। पंचम हार हट्ट हटानी। ना कोई पावे सार, जीव परानी। जोत सरूपी जोत हरि, प्रगट होया सृष्ट सबाई बानी। मात जोत लई धर, गुरसिख ना देवे कोए कुरबानी। साचा राह दिसाए चरन तीर्थ सर कराए धूढ़ सच इशनानी। सच सुच्च ना दिसे किसे घर, पढ़ पढ़ थक्के वड वड ज्ञानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सृष्ट आपे आप जोत

सरूपी ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञान जीव पछाण। कर गुर चरन ध्यान। दरस देवे तेरे घर साचे आण। दिवस रैण आप बिठाए उडाए शब्द बिबाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। शब्द उडारी जाणा उड। प्रभ अबिनाशी वसे तेरी काया अन्धेरी खुड। दिवस रैण रैण दिवस सद सद रहन्दा तेरे मुड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सर्ब टेक, करे बुध बबेक, सिमरन जगत अनेक, गुरसिख साचे कोए ना दीसे जेवड तुध। हरि साचा सच विहारा। हरि साचा साची धारा। हरि साचा सच कराए वणज वपारा। हरि साचा जन भगतां देवे नाम प्यारा। हरि साचा कर्म धर्म रिहा विचारा। हरि साचा दरगाह साची वसे धाम न्यारा। हरि साचा आपे वेखे विगसे करे विचारा। हरि साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात लए अवतारा। हरि साचा मात जोत प्रगटांयदा। उनीं सौ अठताली बिक्रमी लेख लिखांयदा। मंगलवार पंचम जेठ दीपक जोत आप जगांयदा। कलिजुग जीव कौड़े रीठ, शब्द हथौड़ा हत्थ उठांयदा। आप पछाड़े वड वड सेठ, वेला नेड़े आप लिआंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक विच जामा पांयदा। पुरी घनक हरि जामा पाई। उनीं सौ सदी अठताली बिक्रमी भाग लगाई। माता पिता मिली वधाई। नर नरायण विच मात जोत धराई। ना कोई कहण ना कोई जाणे मात पिता भैण भाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप रचाई। जामा धार ल्या अवतारा। मात पिता

२८६
०३

ना पावे सारा। साचा हित्ता सुत्त दुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप खुल्हारा। अचरज़ वरते की कार। बाल अवस्था खेल अपार। ना कोई जाणे ना कोई पछाणे की वरते वरतार। एका जानण बाल अञ्याणा, जिस संग किया सर्ब प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए सच आपणे दुलार। बाल अवस्था बाल अञ्याणा। ना कोई करे हरि पछाणा। प्रभ अबिनाशी पहरया बाणा। कलिजुग अन्तिम जिस मुकाणा। सतिजुग साचा मार्ग लाणा। सारिंग धर भगवान बीठला आप अख्वाणा। कलिजुग जीव कौड़ रीठला भन्न वखाणा। एका रंग मजीठला गुरसिक्खां आप चढ़ाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए वरताए आपणा भाणा। बाल अवस्था बाली बुध। कोए ना जाणे हरि की सुध। आप बणाए आपणी बिध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका करे घर मापयां रो रो जिद। रोवे रो रो पुकारे। सन्त जनां नूं वाजां मारे। आओ चल सच दुआरे। प्रभ अबिनाशी जामा धारे। क्यों सुत्ते पैर पसारे। कलिजुग होई रैण अंध्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक वसे धाम न्यारे । रोणा कुरलावणा सन्त जनां नूं आप जगावणा। माता ताबो लोरीआं दे चुप करावणा। जवंद सिँघ दे हत्थ फड़ावणा। पित पूत भेव ना पावणा। दे बाजीआं बाल वरचावणा। जन भगतां प्रभ साचे ओअँ ओअँ सोहँ साचा गीत सुनावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन सन्तां पकड़ गले लगावणा।

२८६
०३

माता ताबो गल लगाए। लोरीआं दे पूत समझाए। ना रो मेरी कुक्ख दे जाए। प्रभ अबिनाशी मुख भवाए। सन्तां वल निगाह रखाए। आओ सन्तो मिलो हरि गल लगाए। झूठी माया पई कुरलाए। गुरसिख साचे पूत पिता आप बण जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव कोई ना पाए। बाल अवस्था निक्का बाला। क्या कोई जाणे क्या पछाणे, प्रभ की चले मात चाला। आपणी खेल आपे जाणे, विंगीआं टेडीआं मारे छालां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर सुत्तयां सुरत संभाला। सोया उठाया, शब्द सुणाया। क्यों सौं के वक्त गंवाया। प्रभ अबिनाशी फेरा पाया। घनकपुरी विच डेरा लाया। पिता जवंद सिँघ नाम अख्वाया। माता ताबो जिस गोद उठाया। पूरन भागो उठो सन्तो, प्रभ अबिनाशी विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पाए गल सोहँ माला। बाल अवस्था बाल बाली। प्रगट होया सृष्ट सबाई आपे वाली। साची घाल जन भगतां घाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर सुत्तयां सुरत संभाली। घनकपुर विच डेरा लाया। पिता जवंद सिँघ नाम अख्वाया। माता ताबो जिस गोद उठाया। पूरन भागो उठो सन्तो प्रभ अबिनाशी विच मात दे आया। सुणो साचा रागो दिवस रैण रैण दिवस एका राग उपजाया। प्रभ अबिनाशी चरनी लागो, माण ताण जगत गंवाया। प्रभ हँस बणाए कागो, छीवें महीने चरन टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन

२६० ०३ सन्तां बैठा राह तकाया। जन भगतां वाजां मारदा। ना आवे पासा हार दा। दर खुल्लया सच्ची सरकार दा। ओथे कोई ना किसे दुरकारदा। पाप पुंन सर्ब विचारदा। छाण पुण सभ दे भरम निवारदा। आप विचारे गुण अवगुण, भाण्डा भन्ने वड हँकार दा। इक्क उपजाए शब्द धुन, साचा शब्द हरि रसन उचारदा। गुरसिख साचे कन्न सुण, प्रभ लक्ख चुरासी गेड़ निवारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था जन भगतां वाजां मारदा। वाजां मारे दे दुहाई। आओ चल के पान्धी राही। प्रभ अबिनाशी पकड़ गले लगाए दोवें बाहीं। आप बहाए दरगाह साची साचे थांईं। गुरसिख साचे दूजे दर ना सीस झुकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाली बाल अवस्था दे मति रिहा समझाई। दे मती आप समझांयदा। गुरमुख सोया आप उठांयदा। शब्द जकड़ बन्नृ लिआंयदा। शब्द तकड़ आप तुलांयदा। कलिजुग अन्धेरी झक्खड़ परे हटांयदा। सोहँ साचा रुक्खड़ तन पहनांयदा। कलिजुग कीना वक्खर, नवां राह बतांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाली बाल अवस्था सन्त मनी सिँघ सोया आप जगांयदा। उठ उठ सन्त उठ उठ जाग। प्रभ दर साचे उठ उठ भाग। चढ़या आवे महीना माघ। लग्गा देस माझे भाग। कर दरस धो पिछला दाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझाए तेरी तृष्ना आग। आसी आवाज़ शब्द धुन्कारी। प्रभ अबिनाशी शब्द फुंकारी। सन्त मनी सिँघ तन लग्गी इक्क अन्गयारी। २६० ०३

महाराज शेर सिँघ आप उठाए गुरसिख सोया जाए द्वारी। वक्त सुहाया मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी रसन अलाया। वाह वाह साचा राह पुछाया। सन्त जना वड दाता बेपरवाह बण विचोला आप मिलाया। आपे वसे हरि हर थां, पर्दा उहला इक्क खेल रचाया। जोती जोत सरूप गुरमुख साचे तेरे आत्म दर द्वार बैठा आसण लाया। आसण लाए सतिगुर पूरा। जोत सरूपी साचा नूरा। शब्द धुन साची तूरा। गुरमुख साचे लए चुण, देवे नाम सति सरूरा। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब गुणां भरपूरा। रसना रस गुरसिख विखाणयां। उज्जल मुख विच जहानयां। अन्तिम अन्त ना लागे दु:ख देवे दरस आप भगवानयां। निज घर वखाए साचा सुक्ख, प्रभ जोती जोत मिलानयां। आपे कट्टे दु:ख भुक्ख, मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख, बहाए साचे दर मिटाए आवण जाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए साचे करे परवानयां। आए दर दरगाह परवान। प्रभ देवे अन्तिम साचा सच अस्थान। आप उठाए लै जाए बिठाए विच बबाण। शब्द सरूपी शब्द जणाए आपणे कंध उठाए गुरसिख साचे सच पछाण। गगन पाताली पन्ध मुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख राग रंग सुख माण। साचा संग इक्क भगवान। नाम रंगण हरि देवे रंग, आत्म जोत जगे महान। शब्द सरूपी कसे तंग, तीन लोक दे विच फिरान। होए सहाई सदा अंग संग, जोत सरूपी गुण निधान। गुण निधान गुण विचारदा। मानस जन्म कलि सवारदा। आप बणाए वसाए लै जाए साचे घर, एका एक रंग वखाणदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटा घट आपे जाणदा। उत्तम आत्म आप विचारे। गुरमुख साचे आए चल दुआरे। आप वसाए निहचल धाम अटल ना ढठ्ठण कदे चुबारे। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, जगे जोत काया महल्ल मुनारे। अन्तिम लाए साचा फल, फले फुल्ले विच संसारे। प्रभ अबिनाशी जाओ बलि बलि, जन भगतां पैज संवारे। जन भगतां पैज संवारदा। राह दस्से जित्थे वसे हरि हरि गिरधार दा। शब्द सरूपी तीर साचा कसे, मारे तोड़े किल्हा कोट हँकार दा। जन भगतां हरि हिरदे वसे, साचा नाउँ जो जन रसन उचारदा। जोती जोत सरूप हरि लहणा देणा सच चुकाए ना वेला रिहा उधार दा। गुरमुखां लेखा सच चुकाउणा। बेमुखां बेड़ा शौह दरयाए आप डुबाउणा । गुरसिक्खां प्रगट होए दरस दिखाउणा । बेमुखां भरम भुलेखे विच भुलाउणा। गुरसिक्खां राती सुत्या दरस दिखाउणा। बेमुखां मंगयां भिख ना दाणा हत्थ आउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त ऐसा ल्याउणा। देवे शब्द ज्ञान ब्रह्म ज्ञानीआं। देवे चरन ध्यान वड ध्यानीआं। देवे सोहँ साचा दान, सतिजुग साची सच निशानीआं। होए आप मेहरवान, करे कराए वड मेहरवानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाणा आप उलटाए, वेखे खेल कलि दो जहानीआं। साचा बाणा आप उलटाउणा। राजा राणा सरन लगाउणा।

२६१
०३

गरीब निमाणा आप उठाउणा। बाहों पकड़ गले लगाउणा। चार वरन इक्क कराउणा। दस अट्ठ अठारां रहण ना पाउणा। सठ अट्ठ तीर्थ वक्त चुकाउणा। उलटी लट्ठ आप गिढ़ाउणा। सृष्ट सबाई भट्ठ, झूठे जीवां आप झुकाउणा। शब्द सरूपी तपाए मट्ठ, बेमुखां भस्म कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रलाउणा। गुरमुखां हरि संग रलाए। राणा संगरूर सेव कमाए। चरन धूढ़ मस्तक लाए। प्रभ अबिनाशी संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिल्ली जाए चरन छुहाए। दिल्ली जा के चरन छुहाउणा। साधां सन्तां शब्द जणाउणा। आदि अन्त भेव खुल्हाउणा। चलो आओ चल साचे कन्ता, सीस गंज हरि डेरा लाउणा। फेर बणाए साची बणता, वाली हिन्द प्रगट होए भय भयानक दरस दिखाउणा। भय भयानक दरस दिखाए। सोया राणा आप उठाए। ऊबड़ वाहया रिहा बरड़ाए। कवण छुडाए मेरी माए। पहरेदार रहे तकाए। जोत सरूपी दिस ना आए। छाती उप्पर चरन टिकाए। क्यों कलिजुग सोया धरत मात दे जाए। जीव जन्त दुखी हो हो विच भारत कुरलाए। साधां सन्तां कोई ना देवे थांए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आया जामा पाए। छाती उप्पर चरन धर। मौत वाला देवे डर। कोई ना दीसे खुल्हा दर। होए बन्द सभ कवाड़। किथों आया चोर अंदर वड़। पहरेदार आपस विच रहे लड़। किसे ने तोड़या साचा गढ़। चारों तरफ़ रहे खड़। उप्पर वेखण ना कोई लग्गा पड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप शब्द सरूपी रिहा लड़। छाती उप्पर चरन हरि टिकाया। शब्द सरूपी हुक्म सुणाया। बण वड शाहो भूपी, प्रभ अबिनाशी मनों भुलाया। ना कोई दीसे रंग रूपी, तेरे उप्पर बैठा डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी उखेड़ा इक्क लगाया। शब्द सरूपी लाए इक्क उखेड़ा। पुच्छे दस एथे कवण छुडाए दीसे बेली केहड़ा। छिन्न भंगर एह खेल वरता के, शब्द सरूपी मारे इक्क लफेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाए खेल रचाए गऊ गरीब निमाणयां आप बन्न्हाए साचा बेड़ा। चुक्के चरन आप जगदीश्र। नज़री आवे सच्चा ईश्र। चरनी डिग्गे वड तपीश्र। रक्ख्या करे वड रखीश्र। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, जगत पित जगदीश्र। वाली हिन्द उठ विचारे। चारों तरफ निगाह मारे। उप्पर वेखे नैण उग्घाड़े। जोत सरूपी हरि चमत्कारे। होए अधीन डिग्गे दुआरे। प्रगट होए कृष्न मुरारे। मोर मुकट प्रभ साचा सिर धारे। बाहों पकड़ उठाए उठ, धरत मात दे सच दुलारे। आया द्वार काहन घनईआ। आप चलाए साची नईआ। सृष्ट सबाई आप बणाए भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिक्ख मति दे आप समझईआ। साची मति आप समझावे। आपणी मित गत आप जणावे। गऊ गरीबां करना हित्त, मायाधारी कोई रहण ना पावे। सर्ब जीआं हरि आपे साचा पित, जिस दा

२६३
०३

दित्ता पीवे खावे। जोत प्रगटावे नित नवित्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पैज रखावे। गुर संगत मन वधाई। रसना रस हरि साचा गाई। आत्म तृखा सर्ब मिटाई। इक्ठे होए भैणां भाई। दरगाह साची विछड़ ना जाई। गुर संगत साची बणत बणाई। साचा तत्त इक्क रघुराई। धीरज जत्त किसे तुट ना जाई। आत्म वत्त सोहँ साचा बीज बिजाई। आपे दे समझावे मति, गुर संगत बणना भैण भाई। गुर संगत गुर एका राह। गुर संगत गुर वसे एका थां। गुर संगत प्रभ साचा शब्द सरूपी रक्खे छाँ। गुर संगत प्रभ गोद उठाए जिउँ बालक छोटा मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गरीब निमाणयां जगत निताणयां चरन देवे साचे थां। गुर संगत सच राह बणांयदा। दूजा दर मंगण कोए ना जांयदा। आत्म सर आप खुल्लांयदा। चौथे घर सद वसांयदा। पंचम जोत धर साचा मार्ग लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां एका थां बहांयदा। गुर संगत वडी वडभागी। चरन प्रीती साची लागी। सोई आत्म कलिजुग जागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा भेव खुल्हाए पहली माघी। गुर संगत धन्न धन्न धन्नवादी। प्रभ शब्द लिखाए गुरसिक्खां लेख बोध अगाधी। एका नाद धुन शब्द वजाए अनादी। आदि जुगादि सद संगत रहाए, ब्रह्म सरूप वड ब्रह्मादी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत एका धागे शब्द बांधी। गुर संगत मेल मिलाया। कर किरपा दरस दिखाया। दर घर आए साचा माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैत पर्दा आप कटाया। दूई द्वैत पर्दा वड। करे सुखाले गुरसिख हड्ड। जोत जगाए काया अन्धेरी खड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा बीज बिजाए दरगाह साची लैणा वड। दरगाह साची साचा धाम। जगे जोत एका राम। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी रसना जप, ना कोई लग्गे दाम। कोटन कोट उतारे पाप, सुक्का हरया होवे चाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द पिलाए साचा जाम। साचा जाम गुर दर पीओ। निर्मल कराओ आत्म जीओ। प्रभ मिलण दा कर साचा हीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ सतिजुग बणाए साची नीओ। संगत साध साध संगत। इक्क चढ़ाओ नाम रंगत। प्रभ होए सहाई जिउँ नानक अंगद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए साची संगत। गुर संगत सति सन्तोख आत्म धार। प्रभ अबिनाशी रिहा कर्म विचार। झूठे भरम ना भुल्ल, ना देणा हरि वसार। अमृत आत्म ना जाए डुल्ह। ना बणना जीव गंवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बन्न्हाए एका धार। एका धार देवे बन्न्ह। आत्म मिटाए आत्म जन। एका शब्द सुणाए कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आत्म अन्न्ह। आत्म अंध्या झूठे बन्दया। मदिरा मासी गन्दया। फसया जगत जंजाली फन्दया। प्रभ अबिनाशी ना रसना गाया बत्ती दंदया। भरम भुल्ला झूठे धंध्या। वेले अन्त चार भाई उठावण

२६४
०३

कंध्या। दर घर साचा कोई ना दिसे होए भाग मंदया। धर्म राए दर अग्गे हस्से, कवण तुड़ावे जंदया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा सोहँ रंदे आपे रंदया। गुर संगत इक्क राखो टेक। तन काया ना लागे सेक। प्रभ अबिनाशी करे बुध बबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आदि अन्त जुगा जुगन्त एका एक। एका ओंकार। जोत सरूपी खेल अपार। तीन लोक रिहा पसर पसार। मातलोक आवे जामा धार। जीवां जन्तां कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वार।

✻ १४ मग्घर २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ✻

कर चरन ध्यान, वेख रंग अपारया। एका हरि चतुर सुजान, दूजा दिसे ना पारावारया। तीजे होए आप मेहरवान, चौथे घर जिस आप वसा रहा। पंचम देवे साचा दान, जिस साची सरन लगा रिहा। छेवां करे शब्द उपदेश, सिखर चोटी आप चढ़ा रिहा। सतवां वेख प्रभ साचे दा साचा वेस, डंक डफार सृष्ट सबाई आप लगा रिहा। अठवां अट्ठे पहर गुरमुख साचे विच प्रवेश, थां ना कोई होर तका रिहा। नावां निज घर वसे हरि वसेख, आतम बैठा ताड़ी ला रिहा। दसवां दस दस दसन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा जोत जगा रिहा। इक्क इकल्लड़ा थांउँ अचल है। दूजा दिसे ना राह सुखल्लड़ा, जिथ्थे होवे सच निआउँ है। तीजे होवे गुरसिक्खां भारा पल्लड़ा, दरगाह साची देवे थाउँ है। चौथे आत्म दर दुआरे अग्गे खलड़ा, आपे पकड़े बाहों है। पंचम हरि हरि हरि एका राह अवल्लड़ा, ना कोई जाणे किथे हरि की जड़्ह है। छेवां छे घर हरि साचा वेख, काया माटी खाली घड़ा है। सतवां प्रभ साचे को कर आदेस, जन सरन साची पड़ा है। अठवां उठ कर गुरसिख वेख, साचा हरि ना कोई जादू जड़ा है। नावें नावां दर रेख, प्रभ अबिनाशी किस दर वड़ा है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्म घर तेरे आत्म दर खड़ा है। इक्क इक्क अकाल हरि। दूजा तोड़े जगत जंजाल दर। तीजे देवे वस्त नाम, घर रक्खणी संभाल कर। चौथे आप फड़ाए दस्त काया लपेट रुमाल रक्खणी आत्म घर। पंचम कराए इशनान, वेख मार ध्यान, ना बण निधान आत्म साचे सर। छेवां छे शास्त्र वक्त चुकाए, साचा शब्द चलाए, सोहँ नाउँ रखाए, आपणी कार जाए कर। सतवें सति सतिवाद। शब्द वजाए साचा नाद। गुरमुख जगाए साचे साध, प्रभ अबिनाशी लए मात लाध, आप चुकाए जम का डर। अठवें दस अट्ठ अठारां, चुक्के वक्त संग मुहम्मद चार यारां, इक्क बणाए सृष्ट सबाई साची धारा, दूजा दिसे ना किसे कोई किनारा। आपे बैठा आरा पारा। जोत सरूपी सर्ब पसारा। आपणा

करे सच विहारा। नौवां नौ निध गुरसिख जाण। प्रभ मिलण दी साची बिध, सोहँ शब्द रसन वखाण। आपे करे कारज सिद्ध, जिस दित्ता जीआं दान। आपणे भाणे वसे हरि। दसवें दहि दिश धावणा। साचा राह किसे हत्थ ना आवणा। कलिजुग भुल्लयां जीवां चार कुन्ट भवावणा। जो जन होए आत्म नीवां, प्रभ खिच आपणी सरन बहावणा। साढे तिन्न हत्थ मिले सीआं, मालक मुल्क ना किसे अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दर घर दसवां बूझ बुझावणा। दसवां दर गुर दए दिखाए। गुरसिख पूरन आस कराए। शब्द तूरन वड दाता सूरन आप वजाए, सर्ब कला भरपूरन, कर किरपा दए दिखाए। जिस जन जानणा प्रभ प्रगट विच्चों आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर वास आप रखाए। निज घर वेखो हरि का मूल। ना भूलो प्रभ साचा कन्त कन्तूहल। सिँघ आसण बैठा आत्म सेजा, जिस दी कोई ना भन्ने चूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द सृष्ट सबाई लाए त्रसूल। शब्द त्रसूल देवे ला। शिव शंकर रहे चरनी सीस झुका। कंकर कंकर सोहँ शब्द प्रभ देवे मृदंग वजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी साचा नाद रिहा सुणा। दसवें घर वेख विचारना। मानस जन्म आप सवारना। भरम भुल्ल ना जीव जन्म हारना। दाग लाउणा ना आपणी कुल, प्रभ साची दस्से सतिजुग सौखी धारना। गुरसिख बणाए कँवल फुल्ल, मदिरा मासी दर दुरकारना।

२६५ ०३ वेला अन्त ना जाणा भुल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दसवें दर घर नित वास रखावणा। दसवें दर बूझ बुझावे। २६५ ०३

जिथ्थे वसे आसण लावे। माया रूपी पर्दा पावे। कलिजुग जीव होए अन्ध कूपी, दरस कोई ना पावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमावे। सच तख्त सच सुल्तान। आत्म वसे हरि भगवान। गुरमुख साचे एका रक्खणा चरन ध्यान। लोभ हँकार विच संसार बड़े बलवान। करन ख्वार जीव होए विभचार ना सके हरि पछाण। एका साची धार। दूजी क्रिया सर्ब विसार। एका पिया सृष्ट सबाई साची त्रिया, आपे बणे सच भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जगदीश एका आपणे सिर रक्खे दस्तार। इक्क जगदीश एका धरते। दूसर कोई रीस ना करते। खप खप मरे मर मरते, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भाणा शब्द बाणा, बाल अञ्याणा आप समझाणा, गुरमुख विरले जरते। दसवें घर दूज निवारदा। तोड़े किल्ला झूठ हँकार दा। साचा छिला बख्शे आपणे चरन प्यार दा। बेमुख जूह्वा झूह्वा बिल्ला सीर पीवे कुफर कुफार दा। गुरमुख साचे प्रभ साचा मिला, दूजे दर ना जाए निमस्कार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाण्डा भरम दर साचे निवारदा। भाण्डा भरम भय भउ भज्जणा। शब्द सरूपी शब्द कुठाली गुरसिख साचे रिंनणा। हरि शब्द जो जन वाचे, देही जाणे माटी काचे, एका हरि का नाउँ साचो साचे, प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, सुरत लैण ना देवे सुरपति राजे इन्दना। सुरपति राजा इन्द सिँघ सिँघासणा। करोड़ तेतीस जिस रक्खे दासन दास, राग छतीस दिवस रैण सद रसना वासना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना आपणा भेव जणाए दिवस रैण रैण दिवस बैठा रहे आत्म सच सिँघासणा। हरि सिँघासण साचा धाम। दूसर कोए ना करे बिसराम। झूठी माटी काया चाम। आए रैण अंध्यारी हो जाए शाम। माया ममता जीव हँकारी, प्रभ प्याए साचा जाम। बेमुखां तन मन दु:ख लग्गे भारी, पूरन होए ना काम। जो जन सरन चरन करन निमस्कारी, प्रभ आप सुहाए काया आत्म साचा धाम। मेल मिलावा सच बनवारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ करे प्रनाम। चरन प्रनाम पती प्यारया। आत्म सती रक्ख, किरपा कर निरंकारया। दे मती कर वख, कलिजुग अन्तिम सर्ब हंकारया। सृष्ट सबाई लाउँदे दिसण भक्खी, गुरमुख प्रभ मिलण दी आस नित तका रिहा। घर घर बलदे दिसण कक्खी, अमृत मेघ बरस ना कोई बुझा रिहा। गुरसिख प्रभ साचा लए रक्खी, जिस आपणे लड़ लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी कांग हड़ इक्क जगत चढ़ा रिहा। शब्द कांग आवे चढ़। सृष्ट सबाई जाए हड़। ना कोई दिसे किल्ला गढ़। बेमुख झूठे जायण झड़। दर दर मंगण हत्थीं ठूठे फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप जगाए, जोत सरूपी अंदर वड़। अंदर आए दिस ना आए, शब्द जणाए गुरसिख जगाए, दे मति समझाए, प्रभ साचे दी सच सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पार कराए। भरम भुलणा, जगत रुलणा। घर साचे पवे ना कोई मुलना। सोहँ कंडे साचे तुलना। शब्द पंघूड़ा साचा झूलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती घोल घुलना। चरन प्रीती घोल घुमाओ। आपणे सिर ना चवर झुलाओ। सो क्यों भुल्ले जिस दा दित्ता पीओ खाओ। सच शब्द इक्क ना निकले मुक्खे, मस्त मस्ताना ना सीस झुकाओ। दर घर साचा गुरमुख जिथ्थे फले फुल्ले साची जड़ गुर दर लगाओ। सच शब्द हरि उचारे। जन भगत होयण नाम अधारे। दिवस रैण दोए जोड़ करन निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़, कर किरपा आ साचे सच दुआरे। वेले अन्तिम कलिजुग तेरी साची लोड़, साध सन्त सर्ब पुकारे। पाप अपराध बेमुखां बैठा जोड़ जोड़, शब्द खण्डा मार दो धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे धारे। देवे मस्ती करे मस्त दीवाना। ना कोई जाणे हरि श्री भगवाना। आपणा खेल आप कराना। शब्द सरूपी हरि डंक वजाणा। छिन्न भंगर एका अंक तनक लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिउँ दाणा कणक जोती विच टिकाणा। एका जोती विच टिकाए। मस्त मस्ताना दे दुहाए। आओ वेखो हरि जी आए। कलिजुग जीव होए बउराने, भेव कोई ना पाए। आत्म जीव होए दीवाने, हरि जी खेल रचाए। आप जपाए सोहँ शब्द झुलाए सच निशाने, गुरसिक्खां

माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई जन भुल्ल ना जाए। सच निशाना जाए झुल्ल। प्रभ साचे दा साचा दर जाए खुल्ल्ह। कलिजुग दीवा होए गुल्ल। सतिजुग फुलवाड़ी गुरसिख उपजाए फुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी करे वाड़ी, गुरसिख ना जाणा डुल्ल। गुरसिख आत्म मूल ना डोले। प्रभ अबिनाशी तेरे अंदर आत्म बोले। शब्द सरूपी तोड़े जंदर, ना कोई रक्खे ओहले। बेमुख आप फिराए दर दर घर घर जिउँ बन्दर, हत्थ कलंदर भिक्ख कोई ना पाए। प्रभ वसे काया अन्धेरी कंधर, गुरसिख मंगण कोई ना जाए। ना कोई पूजे गोरख मच्छन्दर, प्रभ चरन सभ ध्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सर्ब वखाए। गोरख मच्छन्दर जलंधर गोपी नाथ। तीना बणया एका साथ। उच्चा टिल्ला साचा किल्ल्हा किसे ना पुज्जे हाथ। शब्द सरूपी प्रभ रसना तीर चढ़ाया चिल्ल्हा, आप उलटाए त्रैलोकी नाथ। जत्त दा धागा होया ढिल्ला, पिछली पूरी होई गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरमुखां बणाए साचा साथ। गोरख मच्छन्दर वक्त चुकाए। मानस जन्म फेर दवाए। गुरसिख साचे आप बणाए। संग भ्रथरी दे रलाए। अंग संग आप हो जाए। गोपी राज साचा ताज फिर दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप पिछला लहणा सतिजुग साचे आप दवाए। गोरख गुरू संग नौ नाथ। गुर संगत बणाए साचा साथ। सिँघ आसण बैठ साचा लेख लिखाए गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव कोई ना जाणे एका एक त्रैलोकी नाथ। साचा संग जाए बण। आप मिटाए रहण ना पाए वड वड गुण। एका आपणा नाम जपाए सृष्ट सबाई साचे मन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई भेव रखाए। हत्थी देवे आप सजाए, माण ताण सर्ब गंवाए जिउँ शिव जी लाया डन्न। शिव जी डंनया, भाण्डा भंनयां। कामी होया आत्म अन्नयां। ना भेव जाणे स्वामी ना भाणा साचा मन्नया। जोती जोत सरूप हरि आपणा खेल आप वखन्नयां। खेल वखाया, मोहणी रूप हरि वखाया। आत्म धीरज जति गंवाया। आपणा धीरज ना आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, छल वल वल छल कर आप भुलाया। आत्म धीरज ना होए धीरा। कामी होया सर्ब सरीरा। जगत नामी वड गहर गम्भीरा। जोती जोत सरूप हरि, माया रूपी उप्पर देवे चीरा। माया रूपी माया जाल। ना सक्कया आपणी सुरत संभाल। जोत सरूपी हरि पाया आत्म जाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जन भगतां चरन प्रीती निभाए नाल। कामी कपट ना झल्ले झपट काया तपे जिउँ वैद हकीम देवे सम्पट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीआं अन्तिम बाज़ी हारी जिउँ पासा चमपट। पासा चमपट खेल खिलारी। मानस जन्म ना बूझ विचारी। झूठे धन्दे लग्गे दाओ, आया पासा हारी। ना कोई मिले किते थाउँ, बेमुखां मत गई मारी। गुरमुख साचे माणो प्रभ साचे

दी साची छाउँ, सिर रक्खे छत्र खिलारी। दरगाह साची देवे निथावयां थांउँ, जो जन आए चरन दरबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी नरायण नर अवतारी। खुल्लड़े केस, दर दरवेश। मंगण चढ़या माझे देस। गुरमुख साचे कर्म धर्म लए वेख। दर दुआरे साचे जाए आपणी झोली अग्गे डाहे, जिथ्थे पैंदी प्रेम भीख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां अन्तिम अन्त टंगे उप्पर सीख। खुल्ले केस जटा जूट धार। जन सन्त बैठे हेठ सीतला धार। जिथ्थे करया तप दसवें गुर हरि अवतार। पंजे पांडो गए जिस द्वार। किसे ना खुल्हाया ना पड़दा लाहया जिथ्थे लग्गा सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी देवे इक्क हुलार। वड शाह शाबाशीआ। आवण अबासीआं। होवण उदासीआं। दस्सण साथीआं। आया विच मात त्रैलोकी नाथीआ। जिस चलाए साची गाथीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा रथ चलाए बणे आप वड रथवाहिया। सन्त बैरागी, कलिजुग माया जाण त्यागी। सुणाए शब्द पहली माघी। भज्जे आवण कहण सोई किस्मत साडी जागी। प्रभ अबिनाशी वक्त सुहाया, शब्द सुणाया साचा रागी। मातलोक हरि जामा पाया, सन्त जनां दा सच्चा वागी। निहकलंक कलि नाउँ धराया, हँस बणाए कागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोट जन्म दे धोवे पाप दागी। मन बैरागी होए बैरागीआ। चरन प्रीत हरि साचे लागीआ। देवे हरि कलि माण आओ दर वड वड भागीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बुझाए तृष्ना आगीआ। अगर तप करन तपीसर। ना मिल्या हरि सच्चा जगदीशर। क्या कोई करे वड वड ईश्र। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए दरस दिखाए दया कमाए चरन धूढ़ी गुरसिख मस्तक लाए साचा केसर। केसर तिलक लागे चन्दन। आपे तोड़े झूठे बंधन। आत्म सुख उपजाए, परम पुरख परमानंदन। गुर गोबिन्द इक्क थां बहाए, सदा सदा बखशिंदना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दासन दास सर्ब घाट वास आपणा आप रखंदना। खुल्ले केस वेख ना झूरना। प्रभ अबिनाशी वड दाता सूरना। घनकपुर वासी आपणे लाहे चीरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां शब्द वेलने विच पीड़ना। शब्द वेलणे आप पिड़ाए। कलिजुग जीव अन्तिम अन्त रुलाए। लहू मिझ घाण रस बणाए। कलिजुग कलजोगणा हत्थ खप्पर आप फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलू काल आपणी कल वरताए। कलू काल हरि वरतारा। देवां दंतां शब्द बुलारा। साधां सन्तां नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट शब्द डंक कराए जै जै जैकारा। देव दंत दर बुलाए। हाकन डाकन संग रलाए। माई गौरजां डंक वजाए। कलिजुग भुक्खे तिहाए किरपा कर जिउँ कृष्ना काहना आत्म तृखा साडी बुझाए। सृष्ट सबाई हत्थ बन्न्हृ मौत गाना, जांञी लाड़े असीं आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीर बेतालया जगत बेहालया भर

प्याले आप प्याए। बीर बैताले पीण प्याले, कलिजुग जीव होए बेहाले। प्रभ आप दले दो फाड़े दाले। कलिजुग टुट्टे फल डाले। कोई ना किसे सुरत संभाले। मावां पुत्तरां ना निभे नाले। भैणां भाई ना होयण रखवाले। थांउँ थांईं निकले सर्ब दवाले। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ अबिनाशी रक्खे चरन मतवाले। साचा देवे नाम जगत धन्ना ना होण कदे कंगाले। अमृत नाम रस भिन्ना, गुरमुख साचे प्रभ दर पीओ भर प्याले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे गले लगाए गुरसिख अञ्याणे बाले। खुल्ले केस धुरदरगाही। कलिजुग आया सच्चा माही। साची गाथ जिस सुणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रथ दे चढ़ाई। खुल्ले केस रहण हमेश। प्रभ साचे दा क्या कोई वेखे भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी गुरमुख साचे विच प्रवेश। खुल्ले केस जगत भुलेखा। एथे मुका साचा लेखा। गुरसिख ना रहणा वेखी वेखा। सो जन उधरे पार आए दुआर मिल निरँकार नेत्र दरस पेखा। गुर चरन जाओ बलिहार। प्रभ जाए साचा तार। दोए जोड़ कलि करो चरन निमस्कार। झूठे दिसे सर्ब संसार। मात पित भैण भाई नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। सर्ब जीआं दा इक्क अधार। इक्क अधार विच मंझधार। साचा तरनी गुरसिख साचा तरे, प्रभ देवे शब्द हुलार। ना जन्मे ना मरे, आप बणाए सच दुआर। पूरन इच्छया प्रभ साचा करे, जो जन चल आया सच दरबार। साची भिच्छया पाए हरे, देवे नाम वस्त सच भण्डार। आपणी किरपा आपे करे, ना करे किसे उधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे साचा नाम अधार। गुरसिख बणे वणजारा वणज वणजारया, हरि प्यारया। कर दरस अगम्म अपारया। कर तरस आया गुरसिक्खां दर द्वारया। अमृत मेघ जाए बरस, प्रभ साचे लेख आप लिखा रिहा। कर दरस मिटाओ हरस, वेला गया पुरी अनन्द गुर गोबिन्द फेर पछता रिहा। गुर गोबिन्द हरि हरि वखाणू। आपे बणे जगत पछाणू। गरीबा बणय वंञ महाणू। मेट मिटाए झूठा माणू। शब्द चलाए साचा बाणू। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई भुल्ले ना भुलाए ना कोए जाणू जीव अञ्याणू। गुर गोबिन्द हरि हुक्म सुणाए। दुष्ट दमन नूं आप उठाए। जगत थम्मण विच मात बणाए। गुरमुख साचे सन्त तेरे चरन साचा छत्र सीस झुलाए। दुष्ट दूत सभ कम्बण, चण्ड प्रचण्ड प्रभ हत्थ फड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, साचा हवन आपणा आप कराए। हवन किया दस मास। प्रगट होए पुरख अबिनाश। आप बणाया आपणा दास। एका दित्ता साचा वर जोती जोत सरूप हरि बेमुखां कराए नास। साचा हवन हरि का किया। साची वस्त दात हरि साचे दिया। एका वस्त फड़ाए दस्त चण्डी देवे कर कर साचा हिया। जोती जोत सरूप हरि साचा रंग एका एक आपणा आप किया। साचा रंग हरि रंगाया। कमर तंग आप कसाया। विच मात होए भुयंग अचरज खेल

वरताया। जोती जोत सरूप हरि धुर फ़रमाण आपणा आप सुणाया। एका नेत्र वगे नीर। गुरसिक्खां प्रभ कट्टे भीड़। अमृत प्याए साचा सीर। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, माण गंवाए पीर फ़कीर। नेत्र नीर आप वहाया। कलिजुग जीआं सर्ब रवाया। सिंँघ सिंँघासण बैठ हरि जी साचा खेल आप वरताया। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दासी दासन आप अख्वाया। वगे नीर नेत्र वैहन्दी धार। कलिजुग वरते विच संसार। सीस धड़ तुटा आपस विच प्यार। दाणा पाणी जगत निखुट्टा, रुढ़दे जाण आपो आपणे भार। कलिजुग तेरी प्रभ आपे आप होए जड़ पुट्टा, ना कोई सके सहार। मात नाता तेरा तुट्टा, चल सच्चे दरबार। कलिजुग जीव भुन्न खाह आपणी हत्थीं भुट्टा, अन्तिम मारीं इक्क डकार। साचा शब्द तीर विच अस्मानों छुट्टा, आप चलाए हरि दातार। दो धड़ कराए आपे पाए फुट्टां, देवे बलि आप बलकार। शब्द नगारे वजाए चोटां, उठे रूसा दल भार। कलिजुग जीव तेरी आपे करे परख वेखे खरा खोटा, विच मात आया सच्चा सुन्यार। गुरसिक्खां औण देवे कदे ना तोटां, खड़ा रहे हरि आत्म द्वार। प्रभ ना पतला ना कदे मोटा, एका रंग आदि जुगादि एका इक्क सच्चा विस्थार। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां कलिजुग जाए तार। नेत्र नीर वगे जल। आप कराए जल थल। प्रभ का भाणा ना जाए टल। कलिजुग जीव जायण खुर जिउँ लूण डल। गुरमुख साचे जायण तर, दर

३०० ०३ दुआरे आयण चल। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप भुलाए कर कर वल छल। सुध बुध किसे रहण ना पाए, नेत्र नीर चले अमुल। प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई तोले एका तुल। गुरसिख साचे सन्त जन पकड़ कढ्ढे विच्चों वाल। मन जाए जिस साचा मन, प्रभ देवे दरस सुत्यां अनभोल। साचा शब्द सुणाए कन्न अट्ठे पहर वजदे रहण ढोल। गुरमुखां बेड़ा देवे बन्नृ महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा मवल। नेत्र नीर नीर निराला। साचा सीर पिलाए गऊ गरीब अञ्याणे बाला। आत्म बख्शे साचा लाला। जमदूतां हड्डां लग्गे पाला। चरन प्रीती दस्से साची घला। सोहँ शब्द पहनाए साची माला। गुरसिख साचे घर साचा होए माल माला। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कढ्ढ आप दवाला। साचा नीर नेत्र मोती। गुरसिख जगाए तेरी आत्म जोती। चार वरन कराए गोती। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, शब्द तीर चलाए सृष्ट सबाई रही सोती। नेत्र नीर नीर निरलेप। गुरमुख साचे नेत्र लैणा पेख। दूजी वार सरन चरन गुरचरन ना आउणा जे झूठा दिसे भेख। मरन जन्म जन्म मरन जिस कटाउणा, आए चल जन साचे घर दर दरवेश। जोत सरूपी हरि जोत महाना, खड़े रहण दर ब्रह्मा विष्न महेश। महाराज शेर सिंँघ विष्नूं भगवान, लोकमात विच जामा धारे गुरमुख साचे विच प्रवेश। नेत्र नीर वगे निरालम। वज्जे तीर जगत सभ आलम। शब्द लकीर हरि आप फिराई गुरसिख हत्थ फड़ाई

कालम। पै जाए वहीर प्रभ मेट मिटाए दूती दुष्ट ज़ालम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होए सहाए, बण बण साचा बालम। झूठा संग ना छड्डुण चोर। रैण सबाई भौंदे रहण और। गुरमुख साचे किरपा निध गौर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कढ्ढे हड्ड हड्ड वढ्ढे, बैठे अन्धेरी खड्डे, आप चुकाए मोर तोर। साथ संग सहेलीआं। मिलण आए साचे बेलीआं। पिंजण वांग रूं, जिउँ ताड़ा तेलीआं। क्या कोई करे हां हूं, साचा खेल आप प्रभ खेलया। आत्म चुल्ल्हे धुख्दा रहे धूं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे साचा बेलया। सति संग होया कुसंग। दिवस रैण करदे रहण तंग। फड़ मरोड़न अंग अंग। हड्डीआं तोड़न मारन डंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सहाई गुरसिख वसे तेरे अंग संग। झूठे साध झुंड झबेला। गुरमुख समझया इक्क अकेला। सौणा कीता जगत दुहेला। प्रभ आप मिलाए साचा मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा गुरसिख बणाए साचा चेला। सति संगी देण तंगी। भज्जे जाण जिउँ जाण फरंगी। पगड़ी रहि जाए अद्ध विच टंगी। मिले भिक्ख ना किसे मंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा साचा सति सति संगी। संग सबाया, घर विच आया। पवण सरूपी डेरा लाया। मसाण पवण पवण मसाण किसे दिस ना आया। शब्द बाण हरि इक्क लगाया। गुरसिख तेरी चरन पाहनी दूतां सिर लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हत्थ तेरे सिर टिकाया। माणक मोती रोल जगत वणजारया। ना बैठा रहे अनभोल सच्चा सौदा हरि इक्क विका रिहा। चार कुन्ट वज्जे ढोल, साचे तोल आप तुला रिहा। क्या कोई सके प्रभ साचे अग्गे बोल, आपणा आप ना जीव पछाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत आवण ना देवे वड वड सुघड़ स्याणयां। वड वड सुघड़ स्याणे करन चतुराईआ। साची वस्त किसे हत्थ ना आईआ। रसना ढोले झूठे गायण ना मिल्या साचा मांहिया। ऐवें गायण झूठे गायण, राग ताल ना सुरत शब्द किसे दवाईआ। वैहन्दे जाण झूठे वहिण, साची बेड़ी ना किसे वखाईआ। आपणा किया आपे लैण भर प्रभ साचा हिसाब किताब आप चुकाईआ। गुर संगत बण जाए भाई भैण, दूई द्वैत प्रभ पर्हे हटाईआ। आपे बणे साक सज्जण सैण, आपे बणे मात पिता भाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग गुरसिख साचे लाईआ। मार्ग साचे जाणा लग्ग। दूजा फेर उठाउणा पग। कलिजुग अग्न विच ना जाणा दग। प्रभ पकड़ पछाड़े बेमुखां शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जगत विरोले जिउँ सागर झग्ग। सागर लहर जिउँ दए उछाल। बाहर कढ्ढे अनमुल्लड़े लाल। जूठे झूठे आपणी गोद लए बिठाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचा दीप जगाए धरे गगन सरूपी मस्तक थाल। मिली दात गुर दरबारे। मिटे अन्धेरी रात होए उज्जयारे। ना कोई पुच्छे ज़ात पात

एका रंग रंगे करतारे। तुटे कदे ना तेरा नात, बंधन पाया सच्ची सरकारे। साची देवे दात कर बहुभांत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण दर सच्चा दरबारे। गुरसिक्खी खिड़ी गुलज़ार, जग मालण सच्ची आई है। फड़ फड़ फुल्ल तोड़े सच्चे डाल, सिर खारी आप उठाई है। जन सन्तां दीपक जोती देवे बाल, बेमुखां करन ख्वार, गुरसिख साचे इक्क इक्क पत्ती, साची महक महकाई है। साचा बीज बीजे इक्क रत्ती, सतिजुग साचे दूण सवाई है। कोई विरला दिसे जती, प्रभ आपणी माया आप फैलाई है। गुरसिक्खां दे समझावे मती, कलिजुग वा ना लग्गे तत्ती, प्रभ आपणी गोद उठाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे हरि हरि थाँईं है। गुरसिख फूल हरि साचा माली। दिवस रैण करे रखवाली चार कुन्ट दहि दिशा जन भगत विकावे साची डाली। आत्म साची जोत धरे, गुरसिख कोई ना रहे ख़ाली। किरपा करे नर हरि रहे बण आया साचा पाली। गुरमुखां पूरे कारज आप करे, घर साचे आप लुआए छाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत रक्खे जुगो जुग चाल निराली। हरि साची मालण, साची पालण, साची रखवालण। गुरसिख तोड़े फुल्ल लाल गुलानन। सोहँ धागे साचे जोड़े, प्रभ चरन लगाए साचे डालन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटां होए रखवालन। गुरसिख क्यारी, साचे हरि प्यारी। कलिजुग खिड़े अन्तिम वारी। हरि साचा उठाए सिर आपणे खारी। फड़ लै जाण धुर दरबारी। धुर दरबार घर करे निमस्कारी। धन्न धन्न धन्न गुरसिख आए घर सच्चे दरबारी। जोती जोत सरूप हरि सिँघ आसण बैठा लाए ताड़ी। एका एक अवतार नर, जीवां जन्तां विच रिहा पसारी। जिथ्थे वसे साचा हरि, ना कोई इट्ट ना कोई महल्ल अटारी। खुल्ले रहण सदा दर, ना कोई भिट ना कोई सूत्र धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप समाए रूप रंग ना कोई रेख न्यारी। गुरसिख फूल आप खिलाया। कलिजुग अन्तिम आप महिकाया। महक महक जिस जन रसना गाया। पाए साचा नायक आपे होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म भाग लगाया। सच खारी सिर उठाई है। देवे शब्द नाम दुहाई है। गुरमुख साचे लै जगाई है। बेमुख गूढ़ी नींद सवाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी वड्याई है। सिर रक्खे फूलां खारी। गुरसिख नेत्र वेखो वारी वारी। मात जोत धरे नैण मुँधारी। लछमी चरन झस्से खड़े रहण दर द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां दरगाह सच्ची देवे सच्ची सिक्दारी। सच सिक्दार आप अख्वांयदा। तीनां लोक राज करांयदा। साचा काज गुरमुख विरले आप करांयदा। शब्द बाज़ इक्क उडांयदा। बेमुख चिड़ीआं वांग आप खपांयदा। कल्गीधर आप अखवांयदा। अवतार नर नाउँ रखांयदा। पुरख पुरखोतम आपणा बिरद आप रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अन्तिम मार्ग एका साचे जगत

चलांयदा। साचा मार्ग चलाए। वल छल ना कोई रखाए। आओ चल, दे मति आप समझाए। ना वेखो अज कल्ह, वेला गया हत्थ ना आए। बेमुखां लाहे खल्ल्ह, ना सके कोई छुडाए। वसो निहचल धाम अटल, गुर चरन प्रीती सेव कमाए। आत्म लाए साचा फल्ल, सच सुच्च फल डाल लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म वासना होए दासना सिर आपणे आप उठाए। आत्म वासना फूलणहार। महके टहके विच संसार। जिस गल पावे आप दातार। किरपा करे अपर अपार। आपे चुक्के गुरसिख गुरसिक्खां भर। धर्म राए ना करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सोहँ वस्त सच्ची थार। गुर संगत गुर चरन प्यासी। देवे दरस पुरख अबिनाशी। करे कराए हरि तरस, जो दर आए मदिरा मासी। फिर रसन ना लैणा वर, ना होए बन्द खलासी। घर साचे जाओ तर, गलों कट्टो जम की फाँसी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रहिरासी। मदिरा मास देणा तज। ना कोई करना अज पज्ज। प्रभ पर्दे लवे कज्ज। बेमुखां सिर बन्न्हे छज्ज। घर घर दर दर मरन भज्ज भज्ज। गुर पूरे जोत प्रगटाई दरस करो रज्ज रज्ज। दरस करना साचा गुरदेवा। बिरथा जाए ना गुरसिख सेवा। लगाए फल अमृत आत्म साचा मेवा। गुरसिख तेरी चरनी सेव कराए करोड़ तेतीस देवी देवा। गुरमुख साचे विच हरि आप समाए, ना कोई विष्नूं ना कोई शिव शंकर ना कोई भरम भुलेवा। देवी देवतयां उलटी कार। क्या जाणे जीव गुआर। भोगण अपच्छरां नार। प्रभ अबिनाशी सदा सदा एका रंग रहे करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि अक्लों वसे सारयां बाहर। अकल दानाई ना किसे चल्ले। भूमी बैठे भूमिका मल्ले। जो आए प्रभ साचे दे घल्ले। अन्तिम जाण कल्लम कल्ले। पल्ले किसे ना दीसे कुछ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई भेख धार आपे छले। देवी देवत अनकां फिर फिर आवण एका साचे थां। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए ना। जोत सरूपी जोत हरि, आपणा भाणा किसे जणावे ना। देवी देवत हरि पुकारदे। मानस जन्म विच संसार दे। आपणी चरन प्रीती कार दे। साडा जन्म तिन्न लोकां विच सवार दे। भरम भुलेखा सर्ब निवार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग सच्ची सरकार दे। देवी देवता कोई ना जाणना। सिँघ पूरन विच वसे आप भगवानना। क्यों भुल्ला जीव निधानना। आपणा आप जगत पछानणा। झूठा घट्टा ना जगत छानणा। जोत सरूपी हरि धरया भेख, जिउँ बल दुआरे बावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म मेघ बरसाए, जिउँ बरसे सावना। सावण बरखा साची रुत्त। प्रभ अबिनाशी एका विच रहाए चलाए बिन नाड़ी दे बुत्त। गुरमुख साचे आप बणाए साचे सुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म सदा अचुत्त। देवी देवता ना हरि घलदा। माया रूपी जगत नूं छलदा। लेखा

करे मंगे घड़ी घड़ी पल पल दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे विच मात दे घलदा। देवी देवत दीर्घ रोग । ना देवे कदे दरस अमोघ। अट्ठे पहर रहे चिन्ता सोग। ना मिल्या साचा योग। झूठे भोगण इन्दलोक विच भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां इक्क सुणाए सोहँ शब्द साचा सलोक। इन्द्र लोक भोगण भोग। झूठी चुगण ओथे चोग। प्रभ साचे दा होया विजोग। गुरसिख साचे सन्त जनां, धुरों लिख्या हरि साचा संयोग । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां देवे सोहँ साचा जोग । इन्दलोक गुरसिख तजाए। ब्रह्मलोक विच ठहर ना पाए। शिवलोक ना रक्खे अटकाए। भज्जा जाए जिथ्थे वसे आप रघुराए। दोए जोड़ जोड़ प्रभ चरनी सीस टिकाए। मात पताल अकाशीं बाहरा, प्रभ आपणी जोत आप जगाए। एका भगत सच्चे दर पहरा, दूजा ना कोई अटकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आपणे चरन बहाए। इन्द्रलोक सुणना राग। सुत्ते रहण सदा भाग। अन्तिम जुग इक्क वारी आवे जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जोत सरूपी जिस वेले वरते सांग। ना कोई पुत्तर ना कोई धी। गुरसिख साचे साचा बी। निर्मल कराए जगत जी। बेमुख कलिजुग जीव जाणे की। गुरमुख साचे गुर संगत विच रलाए जिउँ शक्र घी। मति तत्त इक्क रखाए प्रभ दर लैणा पी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया पाटा चोला दोवें हत्थीं सीं। दोवें हत्थीं पावे सीण। प्रभ चरन आए जो होवे अधीन। प्रभ अबिनाशी वड प्रबीन। शब्द सरूपी फेर वजाए बीन। चरन प्रीती ना कोई लवे छीन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन सरन जगत साचा दीन। गुरमुख दर पुकारया। तीन लोक सुणे हाहाकारया। ना कोई सके रोक, शब्द तीर आप चला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन दर तेरे नेत्र नीर वहा रिहा। नेत्र वहिण जाए वग। प्रभ चरनां ते धरो पग्ग। किरपा करे वड दाता सूरा सरबग्ग। रक्खे निशानी विच सारे जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनी गए लग्ग। गुर पूरे जाउ बलिहारी। आपणा करे आप विहार, दूजी मति ना किसे धारी। आप बणाए नाम रखाए सच्ची सरकार, बहाए सच दरबारी। गुरमुख उठो गल पाओ फूलणहार, आओ दर द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी कारी। उठो सिक्खो सर्ब सूरबीर। दर्शन पावो गुणी गहीर। आप पहनाए तन साचे चीर। लथ्थण ना देवे कलिजुग अखीर। मातलोक ना होवे गुरसिख भीड़। एका सुख वखाए काया कढ्ढे पीड़। उज्जल मुख मात कराए बेमुखां रिहा पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे बन्नाए साची बीड़। गुरसिख उठ उठ बल धार। आओ चल सच्चे सच दरबार। गुर पूरे गल पाओ फूलणहार। जिस दा पहरेदार आप निरँकार। एथे ओथे सदा रख्वार। गुरसिक्खां चुक्के आपणे कंधे भार। मातलोक विच्चों प्रभ लाए पार।

किरपा कर आप बिठाए सच सच्चे दरबार। गुरमुख साचे सन्त जनां एका राग सुणाए मल्हार। गुर संगत मन तन धन धना, हरि पाया अलख अपार। झूठा कढाए जगत जना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए आप दातार। सिक्ख सदकड़े, गुर चरन बलिहारी। तुल्लो साचे तकड़े, पासा होए भारी। गुर चरन जो जन अकड़े, शब्द मार प्रभ साचे मारी। ढहि ढेर चरन गुर पकड़े, दरगाह साची पावे सारी। शब्द सरूपी आत्म जकड़े, खिच ल्याए चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा करे सच विहारी। सच विहार सिर साचा ताज। आप दवाए सतिगुर साचे राज। जन भगतां विच उडाए शब्द सरूपी बाज़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रिहा साजण साज। पूरे गुर दिया गुर दान । गुरमुख जाओ चरन कुरबान। प्रभ अबिनाशी होया आप मेहरबान। सर्ब घट वासी आपणी करे आप पछाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, क्या कोई सके गुण वखाण। गुण वखाणे क्या कोई जाणे। प्रभ अबिनाशी चले चलाए आपणे भाणे। एका साचा सच दरबार, ना कोई बणाए तहिसील थाणे। आप बिठाए संगत विचकार, खड़ा रहे आप सराहणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे। साची बणत हरि बणाई। सतिगुर साचे दे वड्याई। फूलन माला प्रभ भेंट चढ़ाई। गुरसिक्खां जो सेव कराई। साची सेव प्रभ गुरदेव विच मात झोली पाई। ना कोई जाणे देवी देव, अचरज खेल हरि रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग ढेरी बैठा ढाही। कलिजुग ढेरी जाए ढठ्ठ। उलटी गिड़ जाए जगत लठ्ठ। झेड़ा मुक्क जाए अठ्ठ सठ्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आपणी हत्थीं तपाए भठ्ठ। आपणी हत्थीं भठ्ठ तपाउणा। कलिजुग जीआं विच झुकाउणा। सन्त मनी सिँघ तेरा लिख्या लेख, प्रभ साचे पूर कराउणा। जोत सरूपी धारे भेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा हरि वरताउणा। सतिगुर मनी सिँघ सति कर जानणा। देवे माण आप भगवानणा। ना भुल्लणा बण निदानणा। सोहँ देवे नाम निधानणा। साचा छत्र सीस झुलाए, वाली दो जहानणा। होए सहाई सभनी थांईं, आपे करे पालणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फूलण खारी आपणे सिर उठाई, बण गई फूलन मालना। फूल मालन जगत विच आई। जोत सरूपी भेख वटाई। गुरसिख साचे संग ल्याई। पत डाली डाली हरि फुल्ल लगाई। गुरसिख साचा कोई खाली दिस ना आई। जिस बणया साचा पाली, देवे शब्द नाम वड्याई। आपे बणया साचा हाली, गुर गोबिन्द जोग बणाई। गुरसिख साचे सच वस्त टिकाए तेरी काया थाली, रसना भोग आप लगाई। बेमुख जीव कढुण गाली, भेव कोई ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति तेरी वड्याई। सति सति सति वडयाईआ। गति मितक मित गति ना किसे जणाईआ। गुरमुखां कर हित्त, मात जोत प्रगटाईआ। प्रभ अबिनाशी राखो चित्त, विच जगत मिले वडयाईआ।

ना कोई जाणे दर भित्त, ना दिवस किसे जणाईआ। आपे जाणे मात पित, सृष्ट सबाई जिस उपाईआ। ना कोई भीतर ना कोई भित, ना दर द्वार रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत लोक परलोक गुरसिक्खां होए सहाईआ। गुर पूरा राग रंग। प्रभ अबिनाशी आप निभाए आपणा संग। झुठा रहण ना देवे विच संगत कुसंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम रंगण विच देवे रंग। नाम रंगण हरि रंगाए। साचा कंगण तन पहनाए। गुरसिख मंगण प्रभ साचा दर, साची भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ साचा माण दवाए। साचा माण साचा माल फुल्ल फूल। संगत गुर गुर संगत ना जाणा भूल। जोती जोत सरूप हरि आप चुकाए पिछला मूल। गुरमुखां साची किरपा कर, आप बणाए सूली सूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा सच पंघूड़ा रिहा झुल। सच पंघूड़ा इक्क हुलारा। आप कराए आरा पारा। इक्क दिसाए सच किनारा। अमृत वहन्दी साची धारा। गुरसिक्खां हत्थ रंगाए, चरन सेव कराए चाढ़े रंग अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द एका इक्क दुआरा। इक्क दुआरा जगत दरवेश। प्रभ अबिनाशी धारे भेस। वेख वखाणे सर्ब जाणे किसे पछाणे किसे रुलावे किसे दिसाए वखाए जिस हरि वसे देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका नर नरेश। नर नरेशया, सदा सदा करो अदेस्सया। जुगा जुग प्रभ विच मात धारे भेस्सया। कलिजुग अन्तिम अन्त बेमुखां पकड़ पछाड़े जिउँ काहना कंसा केस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच प्रवेशया। गुर पूरे करो प्रनाम। एथे कोई ना लग्गे दाम। सुक्का हरया होवे चाम। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम। पीउ अमृत साचा जाम। पूरे होए मात काम। दरगाह साची सच घर वखाए, दस्से साचा राम। ज्ञानी ध्यानी जगत इशनानी कोई बूझ ना पाए, प्रभ साचे दा केहड़ा धाम। गुरमुख साचे आप वखाए, सिँघआसण बैठ जिथ्थे आप करे बिसराम। हरि का घर हरि ही जाणे। दूसर कोई ना आख वखाणे। उच्चा लम्भा चौड़ा ना कोई बूझ बुझाणे। मिट्ठा कौड़ा ना कोई रसन वखाणे। साचा पौड़ा चढ़ चढ़ थक्के ज्ञानी, डिगे नैण मुंधाणे। कर तपस्सया तपस्सवी थक्के, ना कोई दिस्सया सच टिकाणे। गुरमुख साचा प्रभ अबिनाशी तेरे दर दुआरे दिसे, करो दरस विष्नूं भगवाने। कर दरस दया गुर धारे। गुरसिक्खां होया पहरेदारे। सोया सिक्ख विच मात, हरि वाजां मारे। पूर्ब कर्म बीज जो बोया, आओ लओ चल दुआरे। गुर चरन मन तन जिस जन छोहया, उतरे पापां भारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाही लै आया साचा ढोआ, सोहँ शब्द लगाओ साचे जै जै जैकारे। साचा ढोआ हरि लै आया। गुरसिख तेरा चन्दन चन्द चन्दोआ आपे बण खलोआ। कलिजुग अन्त ना रहे कोई सोया। प्रभ भेव मुकाए दोअं दोआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत रथवाही आपे होया, साचा

शब्द घोड़ा अग्गे जोया। शब्द घोड़ा आप दुड़ाए। गुरसिख अजोड़ा कोई रहण ना पाए। गुर पूरे जिस बचन मोड़ा, साची दरगाह दे सजाए। चरन प्रीती आप निभाए गुरसिख तोड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। दया धारे हरि भगवान। गुर पूरे देवे वड्याई विच जहान। आपणी दस्तार सिर टिकाई, दूई द्वैत पड़दे सभ मिट जाण। शब्द रथ प्रभ दे चढ़ाई, अट्ठे पहर उडदा रहे विच बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे साचे सन्त पछाण। हरि सन्त पछाणयां, विच जहानयां दित्ता माणयां। सिर ताज पहनाया, साचा राज दिवानयां। सतिजुग साची लाज रखानयां। कलिजुग तेरा अन्तिम मिटे निशानयां। गुरसिक्खां शब्द जणाए दे वखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानयां। शब्द जणाई देवे कर। गुरमुख सोया उठे घर। आपे आए साचे दर। मिलदे रहण जिथ्थे साचे वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ साचा ताज सीस तेरे देवे धर। सन्त मनी सिँघ सति वरतावणा। सतिगुर पूरा बण हँकार गवावणा। ना होए बचन अधूरा, रसना शब्द ना तीर चलावणा। प्रभ अबिनाशी करे पूरा, जिस सीस हत्थ टिकावणा। आपे दाता वड वड सूरा, सज्जे खब्बे आप हो आवणा। गुरसिख साचे खड़े हज़ुरा, साचा हुक्म आप फरमावणा। सन्त मनी सिँघ सतिगुर पूरा, दीपक जोती प्रभ आप जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण गुर संगत रसना गावणा। हरि साचा आप समझांयदा। गुर संगत संगत गुर उचे धाम आप बहांयदा। जिस दर नूं तरसण सुर, सच धाम वास रखांयदा। किरपा कर वासी घनकपुर, नीवां नीवां आप अखवांयदा। जोत सरूपी जोत धर, गुरसिक्खां विच समांयदा। गुरसिख तेरे सिर बद्धी दस्तार, खिच खिच पेच आप लगांयदा। प्रभ अबिनाशी वसे तेरे घर, पता ना लग्गे किस रस्ते बाहर जांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे गुरमुख साचे आप उपजांयदा । कोई ना मंगो दुःख भुक्ख, एका मंगो नाम देवे सुख । पल्ले बन्ने साचे दाम, उज्जल होवे मुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सुक्खणा रिहा सुक्ख। सुक्खणा सुक्खे दिवस रैण। गुरमुख साचे सन्त जन, मिल चरनी तेरी बहिण। आपे देवे साचा नाम धन, साचा लहणा गुर दर लैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां होए साक सैण। सज्जण सुहेला अंगीकार है। साचा संगी विच संसार है। ना दरगाह आवे तंगी, जिस मिले नाम भण्डार है। काया कोठी ना माढ़ी ना चंगी, जिस विच वसे हरि दातार है। कर्मां वाड़ी होई मन्दी, जो कर्म करे गंवार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे गुरसिक्खां लाहुंदा पापां भार है। पापां भार लए चुक्क। गुर चरन जो जन आए झुक। साची सरन ना कोई पाए मुख थुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए, ना कोई रक्खे उहला लुक। ना उहला ना अन्धेरा। ना कोई करदा हेरा

३०७
०३

फेरा। उठ सिक्ख साचे गुर पूरे जामा पाया विच मात हरि वसेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लाया साचा डेरा। दोवें भुजा हरि फैलाए। गुरसिख साचे सन्त सुहेलेड़िओ, आओ मिलो प्रभ गल लाए। धुरदरगाही साचे चेलड़िओ, क्यों बैठे मुख भवाए। हरि साचे दे लाल अल्बेलड़िओ, आओ प्रभ आपणी गोद उठाए। ना रहो मात अकेलड़िओ, शब्द लोरी दे हरि आप वरचाए। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेलड़िओ, बण जाओ भैण भ्राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाए। गुर पूरा सदा अराधना। एका वज्जे सच्चा नादना। दरगाह साची देवे दादना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तन आदिना। आदि अन्त सच विस्थार है। ना कोई जाणे प्रभ साचे दा साचा केहड़ा अकार है। गुरमुख साचे सन्त जनां, प्रभ बख्शे चरन प्यार है। धन्न धन्न जणेंदी मां, जिस जम्मे लाल दुलार है। गुर चरन मिले साचा थांउँ, एका दिसे सच दरबार है। आपे पकड़े बाहों, फड़ फड़ लाउँदे रहे पार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना अक्के ना थक्के, ना मदीने ना मक्के, गंगा गोदावरी भाल थक्के, अठसठ तीर्थ भौंदे साध सन्त अक्के, चारों कुन्ट अन्त कलिजुग पैंदे धक्के। भैण भाई ना बणदे सके। दूजा भार ना कोई किसे दा चक्के। कलिजुग जीव होए ख्वार ना कोई पर्दा ढके। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कर प्यार देवे शब्द अधार चुक्के सर्ब धक्क धक्के। सच माला हत्थ फड़ी है। ३०८ गुर संगत दर साचे खड़ी है। आप परोए एका लड़ी है। ना कोई जाए विच गोर मढ़ी है। प्रभ साचे डोर आपणे हत्थ फड़ी है। शब्द सरूपी गुरसिक्खां लाई बैठा दोवें हत्थ हत्थकड़ी है। साची जेलॣ आप रखाए, जिस दी ना कोई तत्त ना कड़ी है। साचा मेल आप मिलाए, गुर संगत विच सद वड़ी है। वल छल ना कोई कराए, शब्द सरूपी लाउँदा रहे झड़ी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां किरपा करे बड़ी है। गुरसिख साचे तोल तुलणा, ना कोई वट्टा ना रक्खया सेर धड़ी है। विच मात फलना फुलना, साची मालण हार परोए गुर संगत विच खड़ी है। दुरमति मैल पापां धोए, ना कोई चले जादू जड़ी है। कलिजुग माया झूठी छाया प्रभ दर बैठी दड़ी है। साचा तीर्थ गुरसिख नुहाया, अमृत फल हरि आप ख़वाया, गुरसिख साचा तोड़े प्रभ हत्थ फड़ाई सोहँ छड़ी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरे साचे घर, जिथ्थे वसे हरि निरँकार वेले अन्तिम वड़ी है। साची देवे हत्थीं गंढु। गुरसिख तेरी आत्म पावे ठंड। जन भगत सदा सुहागण नार ना मात होए रंड। कलिजुग बेमुख जीव पाउँदे फिरन डण्ड । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त तोड़े सर्ब घमंड। गुर संगत जगत वधाई है। चल आए प्रभ सरनाई है। प्रभ साचा माण दवाई है। लेखा देवे सर्ब चुकाई है। ना कोई बाल बिरध ना कोई बाकी रहे माई है। एका वस्त गुर साचे गुर संगत आप वरताई है। आपे

धोए देही भाण्डे काचे, साची वस्त विच इक्क टिकाई है। आपे तोले आपे जांचे, वड्डे छोटे इक्क थां बहाई है। सर्ब जीआं हरि हिरदे वाचे, ना कोई रक्खे भेव लुकाई है। आपे ढाले गुरसिख साचे ढाचे, उप्पर सोहँ मोहर लगाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हत्थ तेरे वड्याई है। गुर संगत सोए पैर पसार। प्रभ खड़ा होए पहरेदार। नेड़ ना आवे कोई ठग्ग चोर यार। शब्द सरूपी मारे इक्क चपेड़, देवे दर दुरकार। विच्चों मात देवे जड़ उखाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे मात झाड़। हरि शब्द मण्डल रास है। सर्ब दुःख दर्द खण्डन पुरख अबिनाश हे। जूठे झूठे भेख पखण्डन, प्रभ करदा आया नास है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी इक्क प्रकाश है। जोत सरूपी इक्क प्रकाशया। दोए जोड़ करो अरदास्सया। आप वखाए अन्तिम कलि तमास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए पवाए जगत झूठी रास्सया। आपणा बेड़ा ल्या चुक्क। गुर संगत राह भीड़ा गया मुक्क। वट्टो इक्क दन्दीड़ा, वेला नेड़े आया ढुक। ना कोई दीसे चिउँटी कीड़ा, गुरसिख साचा मात रहि जाए जो चरन आए झुक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई कलिजुग जीआं दाणा पाणी गया मुक्क। कलिजुग मुक्कया दाणा पाणी। होए ना मेला किसे हाणीआं हाणी। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेले, सुरत लए ना पती सवाणी। प्रभ साचे दा साचा चेला, सोहँ शब्द रसना गाए धुरदरगाही साची बाणी। विछड़यां प्रभ आप कराया मेला, हरि घर चल चल थक्के कोटन पान्धी राही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां गले लगाए पकड़े बांही। कलिजुग अन्तिम अन्त मिटणा कूड़ है। गुरसिक्खां मिलणी चरन धूढ़ है। प्रभ आपणी हत्थीं पाई बैठा जूड़ है। अजे कोई ना समझे, जन होए मूर्ख मूढ़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पिड़ाए शब्द सरूपी बूड़ है। शब्द बूड़ आप पिड़ाए। ताड़ ताड़ गुर पूरा बेमुख जीव रवाए। गुरमुख साचे शब्द घोड़ी आप चढ़ाए। आपणे संग रलाए सतिजुग बणाए साचे लाड़, फूलन बरखा साचा पित आप बरखाए। सच सुच्च धर्म जति नारी गुरसिख साचा व्याह घर लै आए। करे दरस पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, साची सेजा पिर नारी आप सुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सिक्ख गुर दोवें वसे एका थाएँ। हत्थीं लाई आप हत्थकड़ी है। सृष्ट सबाई औखी होई बड़ी है। सदी चौधवीं कलिजुग अन्तिम चढ़ी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द एका सबक पढ़ाए, साची पट्टी गुरसिख पढ़ी है। साची पट्टी इक्क पढ़ाए। गुरमुख चट्टी देण किसे ना जाए। साचा लाहा प्रभ दर खटी, अगला लेखा सर्ब मुकाए। गुर चरन साची हट्टी, सच वस्त गुरसिक्खां झोली पाए। गुरसिख टिकाए काया झूठी मिट्टी, जोत सरूपी अग्गे डगमगाए। जगे जोत लटा लटी, गुर पूरा करे रुशनाए। वस रिहा सर्ब घट घटी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

३०६ ०३

खाली ना दिसे कोई थांए। दोए भुजां हरि बन्नू वखाए। गुरसिक्खां लेखा आप चुकाए। कलिजुग झूठी लग्गी मेखा, आपणी हत्थीं आप पुटाए। सर्ब कला प्रभ साचा समरत्था, दोवीं हत्थीं हत्थकड़ी आप लगाए। सृष्ट सबाई जाए मथी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त रिहा लिखाए। हत्थकड़ी हत्थ हरि लग्गे। आपे चल्ले अग्गे अग्गे। साचा दीपक विच मात दे जगे। शब्द अन्धेरी एका वगे। कलिजुग जीव विच अग्न दे दगे। गुरमुख साचे सन्त जन, दर आए चरन प्रभ लग्गे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा हरि परोए एका धगे। साचे धागे आप बंधाए। गुरमुख साचे जागे प्रभ आप उठाए। प्रभ अबिनाशी चरन लागे गुर पूरा होए सहाए। शब्द लिखाए पहली माघी, चले चलाए आपणे भाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दाउ हेठ ना आए। ना कोई ठग्गे ठग्ग ठगोरी। ना कोई पाए जाल माया रूपी बोरी। आपे करे ख्याल गुरसिख चरन जाए जोड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचे फूल बणाए आपे बणया रहे भंवरी। खुल्ले केस रखाए हरि, गुरसिक्खां उप्पर करे चवरी। साचा चवर केस कराए। जगत भंवर विच्चों पार कराए। मानस जन्म जाए संवर, देवे सच सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गवर, कोई भेव ना पाए। गुणवन्त गुणी गहीर है। सतिगुर मनी सिँघ तेरा हरि साचा होए सहाई अन्त अखीर है। शब्द लखाए भेव चुकाए जन भगतां कट्टदा आया भीड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग सर्ब समाए क्या हस्त कीड़ है। इक्क इक्क फुल्ल हरि आप वरताउणा। गुरसिख सेवा इक्क लगाउणा। गुरमुख सोया आप जगाउणा। आत्म भवर विच्चों उडाउणा। मानस जन्म जाए सवर, एका महक गुरसिख वखाउणा। कलिजुग वहिण डूंघी भवर, प्रभ साचे पार लगाउणा। ना कोई जाए किसे विच कबर, साची दरगाह आप वसाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुहाग गुर संगत आप हंढाउणा। सच सुहाग हरि साचा कन्त। गुरसिक्खां मेल मिलाए, बणाए साची बणत। कलिजुग जीवां विच मात माया पाए बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जुगां जुगन्त। जुग जुग गुरसिख साचे जीवणा। साचा बीज प्रभ साचे विच मात दे बीवणा। माया रूपी पाटा तन, शब्द धागे प्रभ आपे सीवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे सदा सदा जग सीवणा। निव निव गुर चरन आओ। अमृत फल साचा खाओ। एका एक इक्क इक्क वरते हरि अनेक साचे महल बूझ बुझाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुर संगत घर आपणे सुखी जाओ। सुख देवे सहज सुभाए। आपणी हत्थीं फुल्ल वरताए। गुरसिख साचा कोई भुल्ल ना जाए। कलिजुग झूठा तोल कोई तुल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल फुल्ल गुरसिक्खां साचे आप वरताए। सच समाधी हरि लगाई है। सृष्ट सबाई आप हिलाई है।

३१० ०३

तीन लोक वज्जी वधाई है। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक मंगल गाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात प्रगटाई है। नेत्र लपेटे नैण मुँधारे। वसे हस्त कीटे विच संसारे। गुरमुख साचे कलिजुग जीते, आए सच दुआरे। पिछले अवगुण जो जन कीते, आप कटाए पापां भारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाया सच दरबारे। सच दरबार आप लगाया। विच अकार जोत रखाया। साची धारा शब्द चलाया। विच संसारा खेल अपारा हरि वरतारा, करे कराए जो मन भाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जंगल जूह पहाड़ां अंदर आपे आप समाया। जंगल जूह विच पहाड़ां। जो जन लाई बैठे दिवस रैण ताड़ा। जो जन बैठे विच उजाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेटे दूई द्वैत पाड़ा। दूर दुराडे वसण ओहले। प्रभ अबिनाशी करदा चोहल`। आत्म गंढ्ढां सर्ब दीआं खोले। विच वरभण्डां आपे बोले। जन सन्तां आत्म पाए ठंडां, आत्म जिंदा आपे खोले। सच शब्द हरि जाए वंड, गाउँदे जाओ राहीं ढोले। नंगी होए ना गुरसिख कंड, ना कोई तेरा पर्दा फोले। कलिजुग अन्तिम पैणी वंड, होण रोल घचोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे आत्म अंदर साचे मन्दिर दिवस रैण सद बोले। दिवस रैण हरि साचा बोलदा। सर्ब जीआं हरि आपे तोलदा। बेमुखां वड मनुक्खां जूठे झूठे पर्दे फोलदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख चरन प्रीती घोलदा। चरन प्रीती घोल घुमाओ।
३११ ०३ साचा मीत सद घर लै आओ। साची रीत मात भुल्ल ना जाओ। कलिजुग अन्तिम जाणा बीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं ३११ ०३
भगवान, रसना गाओ। सुण साची पुकार, गुरसिख पुकारदे। कर किरपा आप दातार, दुःख काया सर्ब निवार दे। साचा बख्श चरन प्यार, अमृत साची धार दे। ना कोई सके मार, साची शब्द हत्थ कटार दे। मानस जन्म ना आवे हार, सोहँ साचा गल विच हार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा दर आयां तार दे। दातार वड दातारया। कलि मिल्या सच दरबारया। साची खिड़ी इक्क गुलज़ारया। गुर संगत फुल्ल साचे आप महका रिहा। कलिजुग सुक्के डाल गुरसिख साचे आप टहका रिहा। रंग नवेली चल्लया चाल, आपणा खेल आप वरतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता रोग सोग सर्ब मिटा रिहा। रोगी चरन दुआरे। पाए सोझी हरि निरँकारे। भेव गोझी आप विचारे। पापां भार होया बोझी, चुक्कणा होया भारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पावे सारे। पापां भार सिर बंधाया। आई हार ना किसे लुहाया। सिर पई छार, साचा हत्थ किसे ना सीस टिकाया। प्रभ साचे दी साची कार, पैज जन भगतां रखदा आया। रैण सबाई चरन दुआरे। सेवा करो लाल दुलारे। लग्गे रोग प्रभ सर्ब निवारे। चुगो चोग प्रभ चुगाए सोहँ शब्द अपारे। साचा भोगो भोग, रसना गाओ हरि निरँकारे। प्रभ अबिनाशी सच संजोग, गुरसिख साचा साची नारे। देवे दरस हरि अमोघ,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मिटाए अन्ध अंध्यारे। दुखी जीव दुःख ना झल्लण। काया हड्ड वांग तन्दूरी जलण। दुःख दर्द प्रभ देवे वढ्ढ, साचे ढांचे जो जन ढलण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड छल्या करदा रहे छलण। काया दुःख अट्ठे पहर। वरतया रहे सदा कहर। लग्गी रहे जेठ दुपहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आत्म वगा अमृत नहर। अमृत नहर हरि आप वगाए। दुःख रोग सर्ब रुढ़ाए। साचा सुख इक्क उपजाए। साची सरन जो जन सेव कमाए। साचा मेवा हरि आप दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मिले लए गल लाए। आपणे गल आप लगा के। आत्म जोती आप जगा के। दस्म दुआरी ताक खुल्हा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरी चरनी डिग्गे आ के। आत्म ताक आप खुल्हाया। तन होए ढेरी खाक, जिस संग झूठा मोह वधाया। प्रभ अबिनाशी पाकी पाक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पित माया। तन काया दुखी रहण। अट्ठे पहर ना मिलदा बहिण। मन्दे लग्गण भाई भैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आयां आप चुकाए लहिण देण। लहणा देणा आप चुकाउणा। काया दुखड़ा सारा लाहुणा। प्रेमी भुक्खड़ा शब्द रजाउणा। उज्जल मुक्खड़ा आप कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात कुक्खड़ा सुफल कराउणा। सुफल होए कुक्ख माउँ। एका गाओ हरि का नाउँ। दुःख दर्द सर्ब गवाओ। आपे बैठे साचे थाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा हरि एका वसे थाउँ। एका वसे हरि पीत पितम्बर। जुगो जुग विच मात रचाए इक्क सवम्बर। बेमुख जीव आप डुबाए वहन्दी धार डूंघी घुंमर। झूठे ताल आप नचाए, घर घर पैंदी झुंमर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपणे आप बणाए जिउँ राजयां राणयां घर कुंवर। राज नीती राज नीत है। जिस राजन गुर चरनां विच प्रीत है। प्रभ साचा जिस दा मीत है। अट्ठे पहर काया रक्खे सीत है। कलिजुग जीव झूठे कूकां मारन जिउँ मुल्ला देवे बांग मसीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा गुरसिक्खां रक्खे काया सीत है। मुल्ला मुलाणे देण दुहाई। रोजा बांग किसे कम्म ना आई। बत्ती सपारे ना होयण सहाई। साची धारा इक्क रखाई। सोहँ शब्द तेरी वड्याई। सृष्ट सबाई जिस नत्थ वखाई। आत्म उत्ते बैठा काया तन बणया रथ रथवाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख होए सहाई सभनीं थांईं। साचा बाणा गुरसिक्खां ताज है। गुरसिक्खां मात रक्खे आपे लाज है। सृष्ट सबाई अन्तिम पैणी भाज है। शब्द सरूपी मारे झपट एका बाज है। आपे कढ्ढे कामी क्रोधी कपट, करदा रहे साची काट है। गुरसिख तेरी आत्म रिहा लपट, अंदर वेख मार झात है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर रक्खे साचा ताज है। साचा ताज हरि सुल्तान। साचे तख्त बैठे भगवान। गुर संगत रक्खे चरन ध्यान। करे खेल हरि महान। महाराज

शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप सुहाए साचा थान। साचा ताज हरि सिर धर। प्रगट होवे अवतार नर। साचा शब्द डंक वजाए, सुणाए घर घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग गुरसिख साचे तर। सच ताज सच्ची सिक्दारी। सृष्ट सबाई करे चरन पनिहारी। राजे राणे वड महांराणे खिच ल्याए चरन द्वारी। आप पहनाए चिट्टे बाणे, काया महल्ल हरि दे उतारी। मातलोक आप पुण छाणे, करे छाछ दुध्ध न्यारी। आपे बैठे पैंद सरहाणे, क्या कोई जाणे जीव प्राणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रचना आप रचाणी। साची रचना जग रचाए। साचो साच सच कर हरि वखाए। झूठा काच शब्द आंच प्रभ दे जलाए। गुरमुख साचे सन्त जन आपणी सरन रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए। सिर रक्खे ताज वड बलकारया। तोड़े माण सर्ब हंकारया। एका दिसे सच्चा शान, सच दर दरबारया। कोए ना झुल्ले होर निशान विच संसारया। एका शब्द रसना गायण, चार वरन इक्क द्वारया। आपे देवे नाम निधान, सोहँ दात झोली पा रिहा। गुरमुख साचे प्रभ दर पाण, आए दर चरन गुर निमस्कारया। आत्म सच सुहाए थान, आसण लाए हरि बनवारीआ। आप चुकाए जम की कान, देवे दरस अगम्म अपारीआ। साची नाम वखाए खाण, ना कोई लुट्टे जीव जगत जवारीआ। साचा देवे पीण गुण निधान, आपणा नाम निरंकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पैज संवारया।
३१३ ०३ सिर ताज सर्ब गुण भरपूरे। गुरमुख साचे सन्त जन, प्रभ आसा मनसा पूरे। साचा देवे नाम धन, एका शब्द साची तूरे। ३१३ ०३
आत्म कढ्ढे सर्ब जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नाता चरन हज़ूर दे। चरन हज़ूरी मिले सच मज़ूरी। गुरसिक्खां घाल होए पूरी। किसे तन ना दिसे काली भूरी। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ सोहँ शब्द कुट्ट खवाए चूरी। आत्म तन होए भिन्न भिन्ना, काया होए नूरो नूरी। ना कोई दीसे रेख ना कोई दीसे चिन चिना, प्रभ देवे साची सिदक सबूरी। प्रगट होवे छिन छिना, जिस जाणो दूरी। गुरसिख रसना गाओ किस गुणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता वड सूरी। वड दाता दात दवांयदा। साचा शब्द वड करामात, विच मात चलांयदा। मिटाए ज़ात पात, इक्क बंधाए चरन नात, सतिजुग साचा राह चलांयदा। बैठ इक्क इकांत, दिवस रैण रहे शांत, लक्ख चुरासी लेखा आप गिणांयदा। भाण्डे घड़े बहु बहु भांत, दीपक आपणी जोती विच टिकांयदा। ना कोई पित ना कोई मात, झूठे धन्दे जगत मोह माया विच फसांयदा। बिन गुर पूरे अन्धे, घर साचा ना कोई वखांयदा। झूठे दिसण घर दे धन्दे, अन्तिम खाली हत्थीं जांयदा। अजे समझ कलिजुग जीव पापी बन्दे, प्रभ मतीं दे आप समझांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ अग्गे खड़ साचे राहे पांयदा। साचे राहे जाणा पै। आप लै जाए जिथ्थे वसे इक्क हरि थैं। सृष्ट सबाई कर जाए खै। गुरमुख

विरला विच मात रहि जाए, नाल किसे कोई ना जाए शै। गुरमुख सोहँ सुगात प्रभ साचा दे, वेले अन्तिम रक्खे पात गुरमुख साचे सन्त जनां गोदी आपणी विच लै के बहि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे एका थैं। सिर ताज कल्गी तोड़ है। प्रभ टुट्टी रिहा जोड़ है। शब्द सरूपी छड्डया घोड़ है। चार चुफेरे रिहा दौड़ है। ना सके कोई मोड़ है। गुरसिक्खां आत्म लग्गी औड़ है। प्रभ अबिनाशी छेती बौहड़ है। कलिजुग अन्तिम होया चौड़ है। बेमुखां रसना होई कौड़ है। ना कोई चढ़दा हरि के पौड़ है। ऐंवें झूठे मारन भेखधारी गपौड़ है। ना कोई जाणे राग गौड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राह औखा दिसे अग्गे सौड़ है। छोटा राह अग्गे सौड़ा। ना लम्भा ना चौड़ा। जिथ्थे चढ़ना चौथा पौड़ा। प्रभ अबिनाशी अग्गे लई खलोता चिट्टा घोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां विच प्रगट जोत विच मात दे बौहड़ा। चिट्टा घोड़ा हरि संग ल्याए। शब्द सरूपी तंग कसाए। नाम वंग गुरसिख तेरी हत्थीं पहनाए। ना जाणा संग साचा दूहला गुरसिख दुल्हन व्याह घर लै जाए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी अन्तिम इक्क रात सुहागण आए। नारी पिया नर साचा हित्त, सचखण्ड एका सेजा आसण लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म रस भोग चिन्ता सोग सर्ब मिटाए। पिया नारी एका थांए। गुरसिख गुर दोए मिल जाए। लिख्या धुर ना कोई मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कन्त सन्तां मेल मिलाए। एका सन्त नार सुहागण। सृष्ट सबाई नार दुहागण। धन्न धन्न गुरसिख जो विच मात दे जागण। प्रभ दर मंगण साची भिख, होए वड वड भागण। आत्म मिटाए तृष्ना तृख, कलिजुग माया ना डस्से नागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द सुणाए साचा सोहँ रागण। साचा राग सोहँ जाना। दूआ कोए ना होए विच जहाना। ओअँ सोहँ एका माना। हँ जीव सो भगवाना। गुरमुख साचे जोत सरूपी ना सके पछाणा। जोत सरूपी पवण मसाना। ना किसे दिसे अवण जाणा। जिथ्थे वसे हरि ना दिसे किसे सच टिकाणा। काया वेखे साचा हरि, गुर चरन होए निमाणा। जोत सरूपी हरि हिरदे वस्सया, बैठा पावे चिट्टा बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा गुरसिख तेरा आत्म घर वसाणा। वसे घर चढ़े चाउ। झूठा मुक्के चुक्के जगत भउ। एका दिसे साचा नाउँ। दूसर कोई ना दिसे थाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आप बिठाए आपणी करे उप्पर छाउँ। करे छाउँ रक्खे हित्त। वेले अन्तिम ना लथ्थे पति। ना गुर पूरे तेरा तुटे जति। सति सन्तोख धर्म गुर पूरा देवे मति। साचा कर्म हरि जाए कर देवे साची मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपे जाणे मित गत। होए कुड़माई विच संसार। खेल कराए आप करतार। इक्क घर देवे धीआं दूजे बख्शे पूत प्यार। कलिजुग अन्तिम गुरसिख सारे कलिजुग तेरीआं धीआं, पूर्ब कर्म विचार। सतिजुग

बीज साचा बिया, लाल बख्शे इक्क करतार। कलिजुग वेख वेख हरि साचे आपे पाए साची सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाया अपर अपार। कलिजुग कूड़म कूड़ कुड़यारा। धीआं भैणां करे वपारा। साचा भुल्लया हरि दुआरा। झूठा जाणे वक्त विहारा। प्रभ साचे दी एका साची धारा। गुरमुख साचे सन्त जनो, कलिजुग अन्तिम वेखो की वरते वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी गुरसिख साचे धी सुलक्खणी व्यावण आवे नारा। सतिजुग साचा छैल छबीला। प्रभ आप बणाए आपणा करके हीला। ना किसे जणावे ना कोई आख सुणाए जिथ्थे वसे आप बैठा उचे टीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, ना रंग सूहा ना काला ना पीला। सतिजुग सुत्त होए बलवान। पिता उप्पर पूत करे ध्यान। आत्म वेखे इक्क ज्ञान। जगत रीती जाणे विरला गुरसिख चतुर सुजाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आपे जाणे श्री भगवान। सतिजुग कुड़म सच्चा सुचिआरा। आप बणाए हरि दुलारा। क्या कोई जाणे जीव सारा। आपणा रंग हरि आपे वरते आपे करे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम अधारा। सतिजुग साचे चढ़या चाउ। पुत्तर व्याहो साचे थाउँ। जो रसना गाए नारी हरि का नाउँ। सो नारी लागे सुत्त साचे पाउँ। दुहागण नार किते ना मिले थाउँ। गुरमुख साचे सन्त जन सदा सुहागण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए सच चाउ। सतिजुग होया मात जवान। साचा सुत्त बली बलवान। पारब्रह्म अचुत, करे खेल आप महान। गुरसिक्खां पकड़ आपणी हत्थीं गुंदे गुत्त, ना कोई खोल्हे खोल्ह खुल्हाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाणी जाण। आपणी आण आपे जाणे। मेल मिलाया हरि भगवाने। दोवें हत्थीं बद्धे गाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच तेल पाए शब्द सरूपी काने। गुरसिख तेरी रत्त साचा तेल। जोत सरूपी साचा मेल। एका फल लग्गे, तेरी काया वेल। बण मालण हत्थीं आपणी तोड़े गुंद ल्यावे चम्बा मरूआ रवेल। साचा धागा सोहँ तेरे विच पुराए, आपणे हत्थ फड़े नकेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो की वरताए खेल। साचा खेल हरि वरतावणा। कलिजुग सतिजुग दोहां मेल मिलावणा। सतिजुग दित्ता साचा ताज, आपणी हत्थीं सीस टिकावणा। कलिजुग दित्ता साचा दाज, सोहँ शब्द गुरसिख साची धी लै घर जावणा। दूज जाणे की जो करे हरि भगवानणा। ना कोए डराए सप्प सींह भय भयानक सर्ब मिट जावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे ब्रह्म ज्ञानणा। शब्द दाज गुर पूरे दिया। कलिजुग अन्तिम होया व्याह, जवान गुरसिख तेरी धीआ। सतिजुग साचे आप व्याहवण आवे, प्रभ अबिनाशी बण के साचा पिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपे किया। शब्द विचोला विच मारे फेरे, साची भेजे इक्क सुगात। उठो सिक्खो वेले प्रभात। कलिजुग मुकदी जांदी रात। करो दरस जिस

नूं रहे तरस, प्रभ तुहाडी इक्क बणाए आप बरात। गुरमुख साचे सन्त जनां मिल हरि साचे होए सुहंझणी रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर आपणीआं अंक सहेलड़ीआं वटणा मजन लगाए बैठ इक्क इकांत। वटणा मजन तन लगाओ। गीत सुहागी सारे गाओ। चिट्टे बाणे सारे पाओ। सुघड़ स्याणे सारे बण जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग इक्क निभाओ। वटणा तेल हरि लगाया। गुरसिक्खां साचा मेल मिलाया। अचरज खेल आप रचाया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचे सति सन्तोख धर्म सति जति तत्त साची मति दे सीस दस्तार माया लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा चीरा साचा हीरा गुरसिक्खां देवे धीरा आपणे सिर टिकाया। साचा दस्तार हरि सीस टिकाए। सन्त जनां हरि हुक्म सुणाए। उठो जांञी धुर दरगाह दे सांञी आपणे नाल रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घोड़ चढ़न दी बणत बणाए। सन्त जांञी संग सुहेला। दरगाह साची लग्गा मेला। विछड़यां प्रभ साचे आप कराया आपणा मेला। साचे सन्त हरि दर पुकारन, हरि दरस निमस्कारन, खाली हत्थीं तेरे दर आए ना कोई पल्ले पैसा धेला। पैसे किसे ना पल्ले बद्धे दाम। याद तेरी विच सुक्के चाम। धन्न सुभाग अज्ज आए तेरे काम। सच थान वखाया जिथ्थे सन्त जनां मंगल गाया पाया इक्क बिसराम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिया साचा नाम। साचा नाम पल्ले बन्न्। शब्द सुणाए साचा कन्न। रसना कहणा धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जंञ लई आपे बन्न्। साचे जांञी सन्त रलाए। शब्द फुल्ल जेवड कोए ना तुल, तीन लोक विच कोई ना पाए मुल्ल। शब्द सिहरा गुंद लै आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आपणे अंग संग रखाए। साचा सिहरा गुरसिख गुंदाया। प्रभ अबिनाशी दे सिर बंधाया। शब्द घोड़ा हरि आप मंगवाया। चिट्टा अस्व इक्क रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा साचा रंग वरताया। साचा घोड़ा हरि मंगा के। सन्त जनां हरि संग रखा के। जगत विहारी सर्ब करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी मातलोक विच आए धाई पा के। मातलोक हरि साचा आया। साचा सिहरा सीस बंधाया। सच नारी व्याहवण आया। सच दरबारी डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा थान आप सुहाया। साचा थान आप सुहाए। साध संगत साची सेवा चरन कराए। क्या कोई जाणे देवी देवा, क्या करे हरि राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलावा आप कराए। मेल मिलावा कुड़म कुड़माई। प्रभ अबिनाशी हरि साचा खेवट खेटईआ। दोवें हत्थीं आप उठाए सतिजुग कलिजुग पित धीआं बेटियां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण बैठा खटिया। उठे दोवें मेल मिलाया। साची रीती आप कराया। कलिजुग नीवां होए सतिजुग तेरी गोडीं हत्थ लगाया। मेरा वेला बित्तया, अग्गे तेरा वक्त सुहाया। रक्खीं

लाज गुरसिख कन्यां दित्ता दाज, सिर आपणा हत्थ टिकाया। मेरा अन्तिम पूरा होए काज, किरपा करी आप महाराज, झूठा टुट्टया साज़ बाज़, कलिजुग लुट्टया गया राज, सारे साथी गए भाज, इक्क दूजे नूं मारन अवाज़, कोई लंगढ़ा कोई अपहाज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप लिखाया। कलिजुग पुत्तरी आप प्रनाई। साची मैहन्दी हत्थ लगाई। सच कलीरे हरि गुरसिक्खां हत्थ दे लटकाई। गुरसिख साचे सन्त जनो, साचे पित पड़ो सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग चौथे जुग चौथी लांव अन्तिम ख़त्म कराई। चौथी लांव चौथा फेरा। कलिजुग तेरा किया हरि आप नबेड़ा। जुगो जुग चलदा रहे प्रभ साचे दा साचा गेड़ा। कदे बणाए कदे ढाहे कदे मुकाए झेड़ा। कदे खपाए कदे मराए कदे डुबाए कदे बन्न्ह वखाए बेड़ा। कदे उजाड़े कदे साड़े कदे आप वसाए गुरसिक्खां नगर खेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा उठाए बेड़ा। सारी रैण ख़ुशी मनाई। फुल्ल फूलन हरि बरखा लाई। सच फुल्ल हरि दात बख़्शाई। कँवल नाभ जिउँ बन्द रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख घर जाए कोई भुल्ल ना जाई। साचा फूल हरि वरताया। जिस दा मूल ना किसे चुकाया। सच पंघूड़ा लैणा झूल, गुरसिख गुर पिर नारी एका थां बहाया। महाराज शेर सिँघ साचा झूल आप झुलाया। रैण किया सच विहारा। गुरसिख सुहागी वड वडभागी दिन चढ़या मिल्या सच भतारा। साचा शब्द
३१७ ०३ राग वड रागी, साचा देवे नाम अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बख्शे साचा चरन प्यारा। साचे हारा ३१७ ०३
लग्गे सोलां शिंगारा। सोलां शिंगार गुरसिख शिंगारया। सोलां कला भरपूर आया चल द्वारया। गुर संगत बैठी हज़ूर, प्रभ साचा लेख लिखा रिहा। सर्ब गुणां भरपूर, साचा नाम हरि वरता रिहा। साचा पल्लू हरि आप फड़ाया, आपणे लड़ हरि आप जुड़ा रिहा। कलिजुग झूठा किल्ला गढ़, प्रभ आप तुड़ा रिहा। सन्त जनां दी फौज लै विच मात चढ़ के आया। गुरसिख तेरे अंदर वड़, झूठा माल धन जगत बाहर कढाया। आप आपणी हत्थीं फड़, लड़ आपणे नाल बंधाया। साची पौड़ी जाणा चढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर हरि आप वयाहवण आया। होया विवाह रच्चया काज। साचा शब्द लै जाणा दाज। मिले धुर दरगाही साचा राज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे गुरसिक्खां लाज। रक्खे लाज पती प्यारा। गुरसिख सुहागण जती नारा। ना लग्गे वा तत्ती, ना होए तन अफारा। एका राग सुणो कलि माण गंवाए राग छतीस दिवस रैण रहे धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर जाए व्याह लै जाए गुरसिख साची नारा। साची नार हरि विहाए। सच भतार आप हो जाए। कलिजुग इक्ट्ठा होए परिवार, अन्तिम विदा कराए। शब्द सरूपी मार उडार, घर साचे विच जाए। गुरसिक्खां जाए तार, सच्ची सरकार कर्म विचार संग आपणे लै जाए। जाए दर घर सच्ची

दरगाह। गुरसिख तैनूं चल वेखण आए तेरी धरती मां। आपणी हत्थीं अमृत वारे, बहाए सच्चे सुच्चे थां। वेखण आवण चल सहेलीआं, बिन गुर पूरे माया रूपी घुँड कोई चुक्के ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए सुहाए साचे थां। साचे घर पलँघ रंगीला। जिथ्थे सुत्ता हरि छैल छबीला। गुरसिख कर लओ अन्तिम प्रभ मिलण दा हीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ फड़ी बैठा जोत सरूपी तीला। आपे पाए बाणा मुहम्मदी नीला। सच घर गुरसिख वसंदया। आप उठाए लै जाए आपणे कंध्या। भुल्ल ना जाणा आत्म अंध्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए झूठे धंदया। साचे घर बैठी सिक्ख नारी। करोड़ तेतीस करन आए चरन निमस्कारी। शिव शंकर गुरसिख जायण तैंथों बलिहारी। ब्रह्मा विष्न गणेश महेश फुल्ल बरसायण वारो वारी। गुरसिख वस्सया साचे देस, साची मिली इक्क सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां मेल मिलाए चौथा जुग मिटाए सतिजुग सुत्तयां सन्तां मिले रैण भैण प्यारी। भैण तांईं मिले भैण। पा गलवकड़ी पावण वैण। तूं किथे जा सुत्तड़ी, कलिजुग अन्धेरी रैण। पापां भरी अजे ना मुक्कड़ी, ना मिल्या हो के इक्ट्ठा बहिण। प्रभ आपणे हत्थ फड़ी तक्कड़ी, गुरसिक्खां नीवें हो हो बहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी महिंमा क्या कोई सके कहण। मिली भैण संग भैण प्यारी। कलिजुग छड गई सच द्वारी। झूठा मोह बेमुखां अड़या रहे मात झक्ख मारी। अग्गे पार ना जाणा मिले झूठी दिसे सर्ब सरदारी। गुरसिख साचा प्रभ घर आपणे विच सद्दया लै जाए वारो वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग फेर लगाए तेरी सच फुलवाड़ी। गुर साचे सच बहार। खिड़ी रहे सदा गुलज़ार। गुर चरन प्रीती ना मिले आत्म तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए साची सार। धरती माता पाणी वारया। ख़ुशी होई विच परवारया। सतिजुग आया तेरा सच द्वारया। साचा जन्म हरि आप विच मात उपजा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे संग रला रिहा। साचा जन्म मात दवाए। गुरमुख साचे संग रलाए। धरत मात दी गोद बिठाए। उप्पर आपणा हत्थ टिकाए। सर्ब कला समरथ, कथना कथी ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची वस्त हरि झोली पाए। सिदकी सिक्ख हरि इक्क थां बहाए। कर इक्ट्ठ इक्के मुट्ठे, सन्त मनी सिँघ तेरे सिर टिकाए। लुकया रहे ना कोई गुट्ठे, जो रहे हरि ध्याए। दिवस रैण लटके रहण पुट्ठे, प्रभ आपे बन्द कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा चन्द एका नाम चढ़ाए। साचा बेड़ा आप बन्न्हाया। सन्त मनी सिँघ तेरे सिर टिकाया। सृष्ट सबाई लग्गे उखेड़ा, ना अटके किसे अटकाया। तेरे विच ना रहे तेड़ा चार वरन तेरी सरनाया। प्रभ फड़ फड़ उठावे शब्द सरूपी सुत्या मारे लफेड़ा, साचा शब्द हरि मगर लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे

ਜੁਗ ਗੇੜਾ आपणी हत्थीं आप दवाया। गुरसिक्खां बेड़ा सिर तेरे रक्ख। भार लग्गण ना देवे कक्ख। सृष्ट सबाई विच्चों कीने वख। लज पति प्रभ साचे आपे लए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। बेड़ा चुकया ना लग्गे भार। निहकलंक तेरे किया चरन प्यार। साचा लहणा विच मात चुकाया, ना किया कोई हुदार। तेरी हत्थीं तेरा लेख लिखाया, प्रभ आप वरताए सच वरतार। जोत सरूपी भेख वटाया, सन्त मनी सिँघ तेरी आप बणाए सच्ची सरकार। ना कोई खाली ना कोई खाया, कर कर वेखे जगत विचार। आपे दाई आपे दाया, जिस उत्पत किया संसार। ना धुप्प ना लग्गे छाया, जिस सिर हत्थ धरे करतार। कलिजुग माया पोह ना सके, दिया नाम अधार। ज्ञानी विद्वानी पढ़ पढ़ थक्के, ना मिल्या सच भतार। दिवस रैण गिण गिण गिटीआं अके, वारो वारी दर दर रहे पुकार। काया टुट्टे ना अजे छिक्के, जो प्रभ अबिनाशी लटकाए अद्ध विचकार। कालयां बूरयां कक्कयां पैंदे धक्के, ना होए कोई रख्वार। ना मिले हरि साचा विच मक्के, उम्मत नबी रसूल दी अन्तिम होए बेहाल। दाणा पाणी सभ दा चुक्के हत्थों खुल्ले अनमुल्लड़ा लाल। किसे अग्ग ना दिसे हुक्के, अन्तिम कलिजुग सारे मुक्के, प्रभ साचा गुरसिक्खां दए वखाल। बेमुखां मूंह पाए थुक्के, वेला नेड़े आए ढुक्के, दर दर बेमुख भौंदे फिरन वांग कुत्ते, ना होई कोई रखवाल। गुरसिख साचे पैर पसार, गूढ़ी नींद प्रभ दर सुत्ते, आपे बणयां सर्ब दा पाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया तोड़े जगत जंजाल। सच बेड़ा हरि सीस रखाया। दसे मति विच संगत आप समझाया। गुरसिख साचे तेरी काया दी रत्त, दूजा अंग ना दुःख रखाया। आपे बीजे साचे वत, आपणी हत्थीं हल चलाया। बाल अञ्याणे लग्गे साचे पत्त, साची डालीआं फल लगाया। आपणी झोली प्रभ साचा लए घत, जिउँ फूल मालण तोड़ आपणी खारी पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुर एका जोड़ जुड़ाया। चुक्क भार चल्लणा विच संसार। करदे जाणा सर्ब प्यार। नीच ऊँच ना करनी मात विचार। सूचो सूच आप दातार। होए कूच ना सके कोई खिलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आप उठाई फिरे सिर भार। तेरा भार उठाउणा। जोत सरूपी दिस ना आउणा। तेरा नाम निशाना साचा सच वखाउणा। धन्न धन्न धन्न मनी सिँघ तेरा बचन पूरा कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वाक आप लिखाउणा। पूरा बचन हरि आप कराए। विच संगरूर जो बैठ सुणाए। मैं नहीं भुलदा क्यों रिहा भुलाए। पूरे तोल मैं साचे तुलदा, मेरी रसना तेरा नाम गाए। चरन प्रीती घोल घुलदा, राजे राणे की मैनूं रहे धमकाए। सच द्वार तेरा विच मात दे खुल्लदा, जां वेला चौथे जुग दा आए। तूं जन्म संवारे मेरी कुल दा, तेरा नाम मेरा काम विच जगत रहि जाए। गुरसिख तेरा फलदा फुलदा, ना कोई मारे मार

मिटाए। राजा संगरूर ऐंवें भुल्लदा, तख्त ताज रहण ना पाए। कलिजुग माया दे विच रुलदा, लिखी लिख्त कौण मिटाए। झूठा बिरख अन्तिम हुलदा, ना फल कोई लगाए। मिटे वाक ना निकलया बुल्ल दा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच बैठा आप लिखाए। विच बैठा आप निरँकार। वजाए इक्क सच्ची सितार। सन्त मनी सिँघ जाए चरन सरन बलिहार। कर किरपा गुर पूरे मेरी सेवा लाई पार। खाणा पीणा पहनणा ना मेरे मन विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी रक्खी पति ना लथ्थे सिर मेरे तों दस्तार। सच पुकार करी गुर अग्गे। ना परोणा मैंनूं काचे धग्गे। शब्द अन्धेरी अन्तिम वग`। निहकलंक तेरी जोत विच मात दे जगे । झूठे धन्दे बेमुख लग्गे । वेले अन्तिम कलिजुग पकड़े पकड़ पछाड़े शाह रगे। साचा शब्द खण्डा दो धारी राजे राणे लाए अग्गे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधारे जो जन तेरी चरनी लग्गे। सन्त मनी सिँघ दए दुहाई। राणे संगरूर भुल्ल ना जाई। निहकलंक मात जोत प्रगटाई। अन्तिम औणा पए एहदी सरनाई। झूठी मिटणी तेरी शाही। ना कोई पावे तैनूं पान्धी राही। एका उठे मेरा साथी गांधी, खाक देवे सर्ब उडाई। जो लुकाई छुपाई बैठा सोना चांदी गरीबां दए लुटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई सके मैनूं भुलाई। सन्त मनी सिँघ उठे विच दरबार। उच्ची कूके कूक पुकारे सुणे सच्ची सरकार। जूठ झूठ रस रसन त्यागी, एका जाणा हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजे दिसण सारे छार। राउ उमराउ जामा ख़ाकी। देणी पए सर्ब नूं बाकी। वेले अन्त ना होए रहे आकी। प्रभ अबिनाशी कर किरपा खोल्ह मेरी ताकी। दिवस रैण रैण दिवस, एका बख्शीं चरन झाकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सच पिलावे सन्त मनी सिँघ बण के तेरा साकी। भर प्याला आप प्याया। अमृत आत्म विच टिकाया। जोती दीपक आप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए साची नाया। साची नईआ आप चढ़ा के। साचा शब्द आप जपा के। एका राह सच वखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आया आपे गया सन्त मनी सिँघ आपणा लड़ फड़ा के। साची गंढु सिर उठाई। विच वरभण्ड गुरसिक्खां फड़ फड़ बाहीं। फिरे विच नव खण्ड छिन्न भंगर खेल कराई। देंदा रहे बेमुखां दंड, गुरसिक्खां सदा वड्याई। आवण ना देवे कंड, सन्मुख रक्खे आप रघुराई। चरन प्रीती जाए हंढ, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाई। आत्म बन्न्हे साची गंढु, ना कोई खोल्हे खोल्ह वखाई। गुरसिक्खां पाए ठंड, अमृत बूंद प्याई। एका हिस्सा देवे वंड, कँवल नाभ गुरसिख तेरे हिस्से आई। अज्ञान अन्धेरा विच्चों देवे वढु, दीपक जोती दे जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सन्त मनी सिँघ वाग तेरे हत्थ फड़ाई। फड़ वाग रथ चलावणा। सिध्धा राह इक्क वखावणा। चारां कूटां विच हरि लै जावणा। फड़ बांह तीन लोक विच फिरावणा।

कोई ना छड्डे थां, जिथ्थे हरि जोत जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द बबाणा आप उडावणा। शब्द बबाण सच उडारी। आप चढ़ाए चढ़ जाए साचे महल्ल हरि दर अटारी। साचे सन्त हरि सेव कमाई। प्रभ जन्म दवाई, आपणी हत्थीं देवे फेर सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करे कारी। साचा रथ जगत चलाया। डोर तेरे हत्थ फड़ाया। जोड़ा घोड़ा इक्क रलाया। खब्बे कलिजुग सज्जे सतिजुग दोवें बन्नृ वखाया। कलिजुग जाए विच्चों मात भज्जा, सतिजुग खिच हेठां ल्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप जणाया। गल बगली भीख हरि मंगदा। गुरसिक्खां कोलों मूल ना संगदा। नाम तन झूठा चाम काया चोली रंगदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सदा सदा संग अंग अंग संग रक्खदा। प्रभ मंगण आया भिच्छया। पूरी कर के जाए इच्छया। आपे कर गुरसिक्खां रच्छया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा प्रेम गुरसिक्खो पाओ झोली प्रभ लै के जाए साची भिच्छया। प्रभ मंगे इक्क दान। गुरसिख छोटा बाल निधान। रसना गाओ हरि भगवान। दूजा झूठा सर्ब निशान। वेले अन्त सर्ब मिट जाण। गुरमुख साचे सन्त जन बैठण विच बबान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आपे लै जाए सच अस्थान। सच विहारा जगत गुर रीत है। गुर पूरे करनी गुर संगत संग प्रीत है। बण जाणा साचा मीत है। ना कोई रहि जाए बाकी झीत है। बैठा वेखे सर्ब दी नीत है। रहे अटल सदा अतीत है। ना कोई भुलाए कर कर वल छल, सृष्ट सबाई आपे जीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी आप कराए चरन प्रीत है। साची सिख्या सुणो कन्न खोलृ। गुर संगत विच निकले कोई ना बोल। अट्ठे पहर रिहा पर्दे फोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुणाए उप्पर धरत धौल। गुरसिख पूरे भेंट चढ़ाई है। प्रभ किरपान गात्रे पाई है। मुट्ठ आपणे हत्थ रखाई है। बाहर खिच हरि चमकाई है। चार कुन्ट पै जाए दुहाई है। वेखो सृष्ट सबाई छिड़े किवें लड़ाई है। भैणां तांईं मारन भाई है। नारां रोंदीआं देण दुहाई है। पान्धीआं भुल्ले साचे राही है। बेमुख जीवां प्रभ आपे जांदा गाही है। शब्द सरूपी चलाए पवण, दोवें हत्थीं जांदा उडाई है। प्रभ तेरी महिंमा जाणे कवण, गुरसिख साचे दाणे माणक मोती वक्ख कराई है। बेमुख फड़ फड़ मारे धौण झूठी पिठ पंजां उंगलां अग्गे टिकाई है। जो बन्नृी फिरन लक्ख लक्ख, किसे कौडी हत्थ ना आई है। गुरसिख प्रभ दर अमृत रहे चक्ख, प्रभ तृष्ना भुक्ख गंवाई है। वेले अन्त लए रक्ख, सोहँ पहरेदार आप खड़ाई है। फड़े हत्थ मुठ कटारा। कलिजुग होवे धुंदूकारा। लहू मिझ दा बणे सच्चा गारा। सतिजुग तेरा आप उसारे सच्चा घर बाहरा। बेमुखां उप्पर पाए डाहढा भारा। आपे बण के साचा बाडी, रक्खे विउँत इक्क अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट शब्द सरूपी करे खड़ी चार दिवारा।

खण्डे हत्थ कल्गी धर। सृष्ट सबाई करदा जाए सर। बेमुख कलिजुग जीव अग्गे लए धर। गुरसिख साचे सन्त जन बैठे रहण आपणे घर। वेले अन्तिम अन्त प्रभ, आपे ल्याए आपणे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वेखो की कलिजुग रिहा कर। हत्थ खड़ग सतिगुर पूरे। चार कुन्ट मारे दूरे दूरे। राजे राणे सर्ब जरवाणे वड सूरबीरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा इक्क निशान रखाए रसन चलाए शब्द तीरे। खण्डा डण्डा लग्गे जग। विच वरभण्डां लग्गे अग्ग। विच नवखण्डां तुट्टे तग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधारे जो चरनी जायण लग्ग। गुरसिख सेवा परवान। साचा मेवा देवे हरि नाम भगवान। दिवस रैण रसना सेवो साचा फल हरि आप खवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। इक्क रुमाला इक्क दोषाला। इक्क गुर इक्क गोपाला। दोए जुड़ बण गए दीन दयाला। साची देवे जगत विच वड्याई। गुरसिख साचे पाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी भेट किया रुमाला। किया भेट इक्क रुमाल। देवे वस्त विच लपेट सोहँ साचा लाल। गुरसिख साचे सच घर मिली वस्त सच्चा धन्न माल। काया तन बस्त्र साचा शब्द तेरी सच्ची ढाल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा रखवाल। दूजा रुमाला दूई वड्ढे। पंजां चोरां घरों कड्ढे। हरि दा फड़या कोई ना छड्डे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आपे लडाए लड्डे। आपे मुकाए इक्क भउ दूजा। आत्म भेव खुल्हाए गूझा। सच विहार गुरसिख सूझा। चरन प्रीती गुर दर झूजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म वस्त टिकाए, एका मिठत रखाए जिउँ मिश्री कूजा। मिसरी कूजा कँवल नाभ। अमृत रूपी भरे आप। झल्ल ना सके कोई ताब। दर घर साचे साचा मिले इक्क जवाब। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची बैठा इक्क नवाब। इक्क नवाब सच्चा निरधार है। खाण पीण तों सदा बाहर है। बस्त्र गहिणे नाल ना कोई विहार है। गुरसिख तेरा लहणा देणा रिहा विचार है। रसना गाओ प्रभ सिर कर्ज चढ़ाओ, आपे देवे लहणा लहिणेदार है। काया आपणी गहिणे पाओ, बाकी कुछ ना वख कराओ, तीनां लोकां देवे सच्चा राज है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रिहा साजन साज है। आपणा आप गहिणे धर। लहिणेदार जाओ बण। प्रभ अबिनाशी भज्जा आवे गुरसिक्खां घर। आपे दए छुडाए, नाम निधान सति सवरन दे के हरि। सति सवरनी सच्ची दात। नाम बिना ना कोई पुच्छे वात। जगत झूठी दिसे रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती जोड़ो साचा नात। साचा नाता जोड़ जुड़ा के। पुरख बिधाता दया कमा के। सर्ब ज्ञाता गुरसिख बणा के। ज़ाता पातां सर्ब मिटा के। पुछे वातां हरि जामा पा के। करे गल्लां बातां गुर संगत दर अग्गे बहा के। बैठा रहे सदा इकांत इकातां, निज घर आसण ला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दर पाओ आत्म हँकार जीव

गवा के। धर्म राए बैठा करे विचार। प्रभ अबिनाशी मेरे भर भण्डार। अठाई कुण्डां खुल्ले होए द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दिवस रैण रहे पुकार। दिवस रैण धर्म राए पुकारे। लाड़ी मौत नूं वाजां मारे। उठ सुलक्खणी आ दुआरे। मातलोक विच जामा प्रभ अबिनाशी धारे। जा के दस्स आपणा नां, दस्से साची कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं सुणे पुकारे। दे सिख्या विदा कराई। धर्म राए वल्लों मिल हरि पूरे अग्गे इक्क बेनन्ती जाणा चल सरनाई। अग्गा पिच्छा कोई ना वेखणा जाणा वाहो दाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ के तेरीआं दोवें बाहीं। जाए डिगे चरन दुआरे। भुक्खे होए राजे जदों कृष्न जामा धारे। भुक्खयां भुक्ख ना उतरी दिवस रैण रहे पुकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चल आई तेरे चरन दुआरे। तेरा चरन सच्चा द्वार है। मैं जाणदा करदा सच प्यार है। तेरा सच्चा जगत विहार है। धर्म राए करे पुकार है। निहकलंक मेरे खाली होए भण्डार है। मौत लाड़ी आए तेरे दरबार है। लाड़े मंगे कोटन कोट अपार है। बिन हरि तेरे कोई ना पाउँदा मेरी सार है। सारे डरदे फिरदे विच संसार है। मौत अन्धेरी ना कोई करदा मेरे संग प्यार है। सतिगुर पूरे सुण मेरी इक्क पुकार है। सुणीं पुकार सच दे मालका। मैं मंगण दर तेरे ते आई, सृष्ट सबाई एका बालका। वल छल ना कोई कराई, ना लाईं मथ्थो कालका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपे होए घालका। चरनी डिगे रो रो पुकारे। कलिजुग जीव बणा मेरे साचे लाड़े। मैं आई चल पार करे जल थल करके टट्टू भाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दातार बैठा साचे इक्क अखाड़े। साची दात इक्क दर मंगी। लाड़ी मौत आई भुक्खी नंगी। कलिजुग जीव इक्क वस्त मैंनूं लग्गे चंगी। सतिगुर साचे मेरी झोली पा, मेरी कट्टी जाए तंगी। मैं पै जावां आपणे राह, पकड़ उठावां शाह फरंगी। सभ थाईं दिआं खेल वरता, नौ खण्ड पृथ्मी चार कुन्ट लगाऊँ जंगी। किरपा कर मेरे साचे हरि, बेमुखां सिर फेरां कंघी। जिन्नां भुल्लया तेरा दर साचे हरि, फड़ फड़ के धर्म राए दर जावां टंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर वेले अन्तिम कलिजुग एह गल लग्गे मैंनूं चंगी। सुण धर्म राए दी दुलारी। तेरे हत्थ फड़ावां इक्क बहारी। चारों कुन्ट जावीं मारी। फेरी जावीं वारो वारी। शाह सुल्तान सुट्टीं मूंह दे भारी। इक्क दोहत्थड़ उत्तों मारीं। पिटीं कोल खलो के, गल स्यापा पावीं भारी। एका देवे चादर चिट्टी, सारयां उप्पर पाउँदी जावीं। अन्तिम होवण मिटी, झाड़ू नाल उडाउँदी जावीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाउँदी जावीं चाईं चाईं। साचा वर हरि दर पाया। रसना हुक्म आप सुणाया। उठ उठ वड बलकारन, मारे वड वड हँकारन, एका डण्डा हत्थ फड़ाया। ना कोई दीसे नारी नारन, पसू प्रेत सर्ब मिट जाया। पंखी बंसी तरवर सरोवर सर्ब मिट जाया।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म लाड़ी मौत आप सुणाया। साची लाड़ी चढ़या चाउ। पहलां जावां केहड़े थाउं। फड़ के बाहां राहे पा। कोई ना खाली सुंञा छड्डां थां। घर घर काग दिआं उडा। आपणा सांग दिआं वरता। पहली माघ सांग वरता। गुरसिक्खां मन भाग लगा। आत्म साची जाग लगा। झूठा दाग सर्ब मिटा। आत्म तृष्ना आग बुझा। प्रभ दर भरया सच सरोवर, झोली भर के लैंदी जा। जिथ्थे मिले गुरसिख मेरा, मूंह उहदे विच पाउँदी जा। गीत सुहागी गाउँदी जा। सच सुनेहड़ा सुणाउँदी जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई, हत्थीं मैहन्दी लाउँदी जा। हत्थीं मैहन्दी ला रंग मजीठला। कलिजुग भन्नदी जाईं जीव कौड़ा रीठला। प्रभ आपणी हत्थीं आपे पीसन पीठला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धुर दरगाही होए सभनी थांई आप सहाई हरि बसीठला। लाड़ी मौत करे चरन निमस्कारे। सुनेहड़ा तेरा साचा देवां उठ लाल प्यारे। सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा, आओ चल दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आपे वाजे मारे। वाजां मार आप उठालदा। जोती दीवा एका बालदा। करे कम्म आप मिसाली साची मिसाल दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आदि अन्त आपे पालदा। लाड़ी मौत उठ उठ जा। कोई ना सके तैनूं अटका। पहला फेरा मक्के मदीने पा। इट्ट नाल इट्ट दईं खड़का। दूजा दस्सां फेर थां। भज्जी जाईं ना लैणा साह। कलिजुग अन्तिम ना करीं तरस, जे कोई तेरे अग्गे पा वैण रोवे मां। देवणहार सदा एक है। मंगदे रहण सदा अनेक है। गुरमुख साचे प्रभ आपे लैणे वेख है। धर धर जोत सरूपी साचा भेख है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां लिखाए धुरदरगाही लेख है। साची करे आप पछाण। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण। गुरमुख गुर आपे वेखे, गुणवन्त गुणी निधान। गुरसिख साचा तीजे लोयण पेखे दिसे हरि भगवान। आप चुकाए अगले पिछले लेखे, बाकी हिसाब ना कोई रहि जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती देवे साचा दान। चरन प्रीती देवे जगत गुर। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरन जायण जुड़। धन्न धन्न जणेंदी मांए जिस लेख लिखाए धुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो थान सुहाए जिथ्थे गुर संगत बहे जुड़। गुर संगत मन वधाई, प्रभ साचा रसना गाया जिस बणत बणाई, सहिँसा रोग चुकाया। दरस अमोघ पाया, आया हरि सरनाई। चिन्ता सोग गंवाया, प्रभ साचा भोग लगाया, गुर प्रसादि आप वरताया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज्ञान जोत जोत ज्ञान हिरदे विच रखाया। ज्ञान जोत एका घर। कराए इशनान साचे सर। त्रैकुटी खोल्हे तिन्ने दर। आपे आए अंदर वड़। दर दुआरे गुरसिख तेरे जाए खड़। माया रूपी तोड़े किल्हा गढ़। झूठे परद जायन झड़। पंजे चोर जायण दड़। कढ्ढे बाहर बाहों फड़। साची बणत बणाए तेरी गुरसिख घड़ घड़। मात पताल गगन अकाश

ना कोई उखाड़े तेरी जड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप फड़ाया साचा लड़। साचा लड़ हत्थ फड़ाया। साची वत्थ हरि झोली पाया। सोहँ साचे रथ चढ़ाया। सगल वसूरे गए लथ्थ, प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। गुरसिक्खां सिर रक्खे हत्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाया। सरनी सरन ढहि पए दुआरे। वसाए साचे इक्क घर अस्थल चुबारे। दूजा नाही कोई दर, एका एक हरि निरँकारे। एका जाणो साचा सर, प्रभ चरन कँवल अमृत आत्म लैणा भर, अमृत बूंद टपके कँवल नाभ उलटारे। साची तरनी जाणा तर, आत्म जोत होए उज्जयारे। प्रभ सरनी जाणा पड़, मिटे अन्धेर धुंदूकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे। उतरे पार हरि के दुआरे। ना कोई डोबे विच मंझधारे। संसार सागर हरि आप लगाए पार किनारे। काया गागर विच भरया अमृत अपारे। निर्मल होवे जीव उजागर, रसना चख इक्क इक्क वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे वसे काया महल्ल महल मुनारे। काया महल्ल मनार है। जिथ्थे वसे हरि करतार है। जन सन्तां दस्से राह अपर अपार है। साचा कन्ता जिथ्थे सुत्ता पैर पसार है। जूठे झूठे रहे जगत झक्ख मार है। ना आत्म दर दुआरा खुल्लया, दर दर फिरन भिखार है। अमृत आत्म आपणी डुल्ह्या, किते ना मिलदी साची धार है। पाणी पया विच काया चुल्लया, ठंडा होया जोत सरूपी इक्क अन्गयार है। क्यों फिरे बेमुख भुल्लया, प्रभ वसे दस्म दुआर है। गुरमुख साचा फलया फुलया, जिस देवे दरस हरि किरपा धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच रिहा पसार है।

३२५ ०३ ३२५ ०३

*१५ मग्घर २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर हरिसंगत समेत काका मनजीत सिँघ दी देह छुडाउण दे नवित्त इक्ठ कीता अते जोत सरूप सच्चे पातशाह ने ओस दे अन्त वास्ते लिख्त कराई *

लाड़ी मौत वर पाउँदी जा। प्रभ अबिनाशी दे गुण गाउँदी जा। शब्द सरूपी बीन वजाउँदी जा। मुहम्मदी दीन आप उठाउँदी जा। प्रभ अबिनाशी साचा सच प्रबीन, साचा हुक्म सुणाउँदी जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस आपणी रसना सद ध्याउँदी जा। रसना गाईं हरि के गीत। घर घर ढाही जाए मसीत। एक राखी हरि चीत। पहले कूटें आई जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी काया रक्खे सीत। काया सीतल पाए ठंड। पल्ले बन्ह्ही नाम गंढु। नाल तेरे जाए हंढ। गुरमुख मेरे सच्चयां, घर घर जाईं वंड। कलिजुग जीवां कच्चयां, करदी जाईं खण्ड खण्ड। तेरे अग्गे कोई ना बचया, सृष्ट सबाई कर जाईं रंड। झूठा पाप किसे ना पच्चया, फिरे विच ब्रह्मण्ड नव खण्ड।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हत्थ फड़ाए सच्ची चण्ड प्रचण्ड। साची चण्डी हत्थ फड़ाई। साची डण्डी आपे पाई। पहली कूट प्रभ साचे वंडी पहले जा मुकाई। ना कोई दीसे जगत पखण्डी, पी लहू आपणी तृखा बुझाई। भज्ज भज्ज पिच्छों वढ्ढी कंडी ना कोई सके मुख छुपाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे अंग संग होए सहाई। लाड़ी मौत उठ उठ भज्ज। लहू पी लै जा के रज्ज। कलिजुग जीव लाउँदे पज। गुरसिक्खां पर्दे आपे कज्ज। विच मैदान जाए गज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण बैठा रिहा सज। लाड़ी मौत हरि आप दुड़ावे। सृष्ट सबाई भरे हावे। फड़ फड़ बन्ने सारे पावे। कलिजुग लेखे सर्ब चुकावे। गुरमुख साचे देखे प्रभ अबिनाशी जो रसना गावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची हिक्मत हकूमत आपणे हत्थ रखावे। ल्या वर सच्चे दरबार। छड्डी जाए आपणा घर बाहर। हड्डी हड्डी तोड़ संसार। साची गड्डी लैणे चाढ़। दोवें हत्थ बैठा अड्डी, धर्म रिहा पुकार। ना किसे तों लैणी वढ्ढी, शब्द सरूपी हरि होवे पहरेदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप फिराए तैनूं विच संसार। फिरी जाए सर्ब संसार। खाली छड्डीं ना कोई घर बाहर। लुकया रहे ना कोई विच उजाड़। पकड़ ल्यावीं उत्तों पहाड़। इक्क बणाईं सच अखाड़। आप उठाईं आपणी धाड़। गोले मारीं अगम्म दे, वज्जण काड़ काड़। बेमुख निज मावां घर जम्मदे, अन्तिम होए भाग माढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए, अग्न मग्न विच देवे साड़। सुण मौत लाड़ी सच दुलारीए। कलिजुग अन्तिम ना होवीं किसे प्यारीए। घर घर पाउँदी जाईं सर्ब ख्वारीए। शब्द फड़ाया हत्थ तेरे आरीए। दोवें हत्थीं चीर चीराईं करीं जगत दो फाड़ीए। इक्क सज्जे इक्क खब्बे आप रहीं पिच्छे अगाड़ीए। ना कोई लुकया रहे विच डब्बीं आपणी हत्थीं झूठा चोला पाड़ीए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुण बेमुखां दी साची लाड़ीए। साची लाड़ी कर प्यार। बेमुख बणा सच भतार। वर घर लै आपणे जाईं, दस्सीं सच्चा इक्क दरबार। सच सुनेहड़ा देंदी जाईं, मातलोक ल्या अवतार। भज्जी जांदी चारों तरफ वेहंदी जाईं, किथे लुकया सिक्ख मेरा सरदार। झूठी नींद ना सौंदी जाईं, प्रभ होए तेरा पहरेदार। सोए सिक्ख फड़ फड़ बाहों आप उठाउँदी जाईं, करदी जाईं खबरदार। अमृत कुंगू अतर चम्बेली, गुरसिक्खां मुख चवाउँदी जाईं, कर जाईं छिटकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दस्से जगत विहार। सच घरों विदा हो जाणा। सिध्धा राह इक्क तकाणा। जगत राह इक्क रखाणा। दूजा ना कोई थां ना होर वखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए एका धुर फ़रमाणा। धुर फ़रमाण हरि आप सुणाया। जोत सरूपी जामा पाया। निहकलंक कलि बण के आया। साचा शब्द नाल ल्याया। एका डंक तेरे हत्थ फड़ाया। राउ रंकां तांईं सुणाया। दुआर बंकां विच वसाया। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्त कराए दिवस रैण तेरी ढलदी जाए छाया। हुक्म मन्न कर परवान। चल उठा बली बलवान। हत्थ फड़ा तीर कमान। गात्रियों खिच इक्क किरपान। ल्या विच सच्चे मैदान। कलिजुग ना कोई वेला सके पछाण। सुंञी धरती देणी सिंच, लहू मिझ वगाई घाण। खाली किते थां ना दिसे इंच, जिथ्थे ना झुल्ले प्रभ साचे दा इक्क निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे आप फरमाण। मन्न फ़रमाण जा जवाने। धर्म राए दीए सच रकाने। हत्थीं बन्नूदी जा मौती गाने। गुरमुख साचे सन्त जनां, प्रभ अबिनाशी आप पछाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणे भाणे। जाण दौड़ छाल मार। आपणी हत्थीं खिची एका शब्द कटार। सीस धड़ धड़ सीस, इक्क इक्क कर उतार। आपे होए विच लड़, मत उपट्ठी देवे डार। बेमुख जीव जायण झड़, कलिजुग अग्न तपा बणा विच अन्गयार। झूठी माया विच जाण सड़, जो बन्नी बैठे भार। विच मैदान जा खड़ तोड़ सर्ब हँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए आप सहार। लै जाईं नाम सच निशाना। सृष्ट सबाई साचा तीर चलाणा। आपणी हत्थीं चिल्ला चढ़ाए, ना रस्ते विच किसे अटकाना। जोत सरूपी करदा जाए खेल जो विच जगत वरताना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बिठाए विच बबाणा। बिठाए विच बबाण अकाश उडांयदा। करे खेल अपार, सृष्ट सबाई नास करांयदा। पूर्ब कर्म विचार लेखा सर्ब चुकांयदा। धर्म राए दी सुण पुकार, अचरज खेल हरि वरतांयदा। खाली भरे तेरे भण्डार, क्यों निउँ निउँ सीस झुकांयदा। खुल्ले रक्ख कवाड़, प्रभ धक्क धक्क अग्गे सुटांयदा। अग्गे करीं जाईं वाड़, पिछा मुड़ कोई ना आंयदा। प्रभ आपे चबाए आपणी दाड़, ना कोई किसे छुडांयदा। मौत घोड़ी साची चाढ़, घर तेरे बहांयदा। सारे विच संसार जोड़ी किते ना कोई इक्ली रहण पांयदा। वेखे विगसे करे विचार, जल थल विच आप रहांयदा। ना कोई जाणे अन्ध अंध्यार, जंगल जूह पहाड़ां सभे फोल फुलांयदा। ना कोई अंदर ना कोई बाहर, प्रभ साचा सभ थांईं वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जीव भेव छुपांयदा। छुप्या रहण ना देवे ओहले। घर घर कुण्डे आपे खोल्हे। कलिजुग जीव लंगढ़े लूले टुंडे, फड़ फड़ पाए आपणे डोले। गुरमुख साचे सच सुहागण मुंडे, सोहँ शब्द गाउँदे सच्चे बोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव अन्तिम मिटाए बणाए धर्म राए दे गोले। हरि का हुक्म अपार अटल रहावदा। हरि का शब्द अधार धीर धरांवदा। हरि का नाम विचार वणज करांयदा। हरि का नाम साचा यार संग रलावदा। हरि का नाम पल्ले बन्ने साचे दाम, साचा राह दिखांयदा। हरि का जाम गुरसिख साचे पी, आत्म तृखा बुझांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछले घाटे पूर करांवदा। पिछला घाटा पूरा करे। अग्गे वधे नाम धरे। आपे परखे खोटे खरे। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा विच सच दरे। सच दरबार बैठा हरि। साचा लेखा रिहा कर। जोत सरूपी भेख धर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दए चुकाए जीव जो करनी रिहा कर। करनी करे विच संसार। कलिजुग तेरा झूठा होया प्यार। जीवां जन्तां मति दित्ती मार। साचा जति साचा तत्त कोई रक्खे नर नार। आपे जाणे मित गति, पूर्ब कर्म रिहा विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी पावे सार। कलिजुग तेरा कर्म विचारया। अक्खीं आपणी वेख, की वरते वरतारया। प्रभ जोत सरूपी धारे भेख, निहकलंक नरायण नर अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लेखा सर्ब चुका रिहा। तेरा लेखा दए चुका। सज्जी टंग दए भन्नाए। इक्क टंग दे उप्पर खड़ा कराए। डाहढी देवे अन्त सजाए। लक्ख चुरासी ना कोई छुडाए। गल विच फाँसी ना हरि कटाए। लग्गी उदासी रिहा बिल्लाए। छेती कर घनकपुर वासी, दूजी टंग तोड़ वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे अंग अंग भन्नाए। अंग अंग हरि आपे तोड़े। शब्द सरूपी लाए कोड़े। तेरे दिन रहि गए थोड़े। पी लै घुट्ट पापां कौड़े। तेरी थाएँ सतिजुग बौहड़े। गुरसिख साचे सन्त जन, प्रभ चरनी आयण दौड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ के दोवें बाहीं चढ़ाए साचे पौड़े। कलिजुग तेरा टुट्टा लक्क। सतिजुग दूरों रिहा तक्क। अन्तिम अन्त हुण जाईं थक्क। तेरा पिछला फल गया पक्क। आपणी हत्थीं आपे छक। बेमुख झुठे जीवां धर्म राए दे अंदर डक्क। साथी तेरा कोई ना होए आपे लै जाईं हक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा राह रिहा तक्क। कलिजुग तेरी टुट्टी हड्डी रीढ़। अट्ठे पहर रहे पीड़। चार कुन्ट पै जाए भीड़। प्रभ अबिनाशी रिहा पीड़। क्या हस्त क्या कीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे जाए एका साचा गीत। कलिजुग तेरी टुट्टी बांह। विच मात तेरा मिट जाए नां। तेरी जग्गा सतिजुग मल्ले तेरा थां। प्रभ अबिनाशी सन्त जनां सिर हेठां रक्खे बांह। आपणी गोद आप उठाए जिउँ बालक उठाए मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभना थां। कलिजुग तेरे टुट्टे हत्थ। किरपा करे आप समरथ। दोईं हत्थीं रिड़के सृष्ट सबाई जाए मथ्था। कलिजुग जीव छाछ निकाले, गुरसिख मक्खण लए रक्ख। गुरमुख मुख सोहँ शब्द सगन लगाए, बेमुख खांदे फिरन भक्ख। चार कुन्ट अग्न लगाए, गुरसिख साचे लए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच्चों कीने वक्ख। कलिजुग तेरी टुट्टी गंढु। बिरध बाल जवानी गई हंढ। अन्तिम पै जाए तेरी वंड। हो जाए रंडी सर्ब वरभण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा भेख मिटाए सर्ब पाखण्ड। कलिजुग तेरा वढुआ गल। आप कराए जल थल। सिँघ सिँघासण उप्पर खल। चढ़े लहर वांग कहर घड़ी घड़ी पल्ल पल। कोई ना सके अग्गे ठहर, एका आए जगत उछल। ना कोई दिसे नगर खेड़ा,

पिण्ड शहर वांग सिके जायण ढल। एका लग्गे जेठ दुपहर, फल सुक्क जाण लग्गे डल्ल। वरते कहर सवा पहर, ना भाणा जाए टल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां आपणी हत्थीं लाहे खल्ल। कलिजुग तेरा लथ्था सीस। सृष्ट सबाई रिहा पीस। चुक्के भेव बीस इकीस। करे खेल आप जगदीश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई करे रीस। कलिजुग तेरा डिग्गा धड़। प्रभ अबिनाशी वेखे खड़। चार चुफेर ना कोई दीसे किल्ला गढ़। किथे वसे कोई अंदर वड़। प्रभ अबिनाशी आप मिटाए तेरी जड़। पापां वहिण विच जाए हड़। सतिजुग साचा धरती मात तेरी गोद विच जाए वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आप ल्याए बाहों फड़। सिर धड़ दोवें वक्ख। कलिजुग जीव तेरे लई इक्ट्ठे करदे फिरन कक्ख। जिध्धर जाण किछ हत्थ ना आवे, मुड़ घर आवण सक्ख। कर्मा वाड़ी अन्तिम उजड़ी, कौण लए तैनूं रक्ख। झूठा करया जगत विहारा, मारदा रिहा झक्ख। प्रभ अबिनाशी ना पाई सार, उलटा रिहा राह दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ शब्द खण्डा दो धार सीस धड़ तेरे कीने वक्ख। सीस धड़ वसण दूरो दूर। एका मंगण दरस हज़ूर। पिछले औगुण बख्श, सर्ब कला भरपूर। महाराज शेर सिँघ वड दाता सूरबीर। सीस धड़ मिहणे मारन। इक्क दूजे नूं कहण गंवारन। क्यों मात आए हँकारन। प्रभ साचे दा की वरतया कारन। राज गया, ताज गया, साज गया, ना खड़े दिसण चार चुफेर कोई दरबारन। मातलोक विच्चों भाज गया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थीं फड़ी कटारन। सीस धड़ करन विचार। चलो हरि साचे दे साचे दरबार। गुण अवगुण जो रिहा विचार। निरगुण सरगुण दोवें रंगां विच पसार। साडी बेनन्ती सुण करदे बेड़ा पार। दाणा पीणा साडा चुकया, लै जाए चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। धड़ सीस दोए रोवण। पिछले पाप प्रभ अग्गे धोवण। साडे दुखड़े दूर होवण। फड़ फड़ वाल सिर दे खोहवण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर तेरे आए दर, अमृत मेघ बरस जिउँ बरसे सावण। साचा हरि आख सुणाए। भगत जनां दी जा सरनाए। मेरे कोल ना कोई थांए, जन भगत तेरे राज बैठे मुख छुपाए। दिवस रैण रैण दिवस दु:ख भुक्ख मिटाए। सच्चे घर ना देवे बहिण, कलिजुग जीव फिरन हलकाए। साची तैनूं इक्क मिले सजाए। गुरमुख साचे सन्त जन विच मात सुणाए। सुण पुकार हरि दातार किरपा धार जामा विच मात दे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तिम अन्त आपणी हत्थीं आप कराए। कलिजुग उठ जा सन्त जना दे घर। एक नाम मंग मुठ मुठ, तेरी झोली देण भर। गुरसिख साचे जाण तुठ, फेर प्रभ किरपा देवे कर। जे गए तैथों रुठ, फेर ना आवे मेरे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वसाए एका साचा घर। कलिजुग उठे कर निमस्कार।

रक्खीं पति मेरे सिरजणहार। मैं चल्लया मंगण भिख, तेरे सिक्खां दे दरबार। धन्न धन्न धन्न तेरे गुरसिख, जिन्हां तेरा नाम रसना ल्या उचार। पाओ झोली कलिजुग मंगदा फिरे भिखार। दोए जोड़ करदा फेर निमस्कार। चार चुफेरे वेखे उठ, किथे वसे प्रभ साचे दा सच्चा दुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां उप्पर किरपा करे अपार। घर घर भिच्छया मंगदा आया। पूरन इच्छया करदा आया। प्रभ दर मिली साची सिख्या, आपणी झोली भर घर लै आया। प्रभ अबिनाशी तेरी सच प्रीख्या, वेले अन्त ना होए कोई सहाया। कलिजुग कूड़ा कुड़यार बणया अन्त भिखार। गुरसिक्खां जाए दुआर। साचा मंगे नाम करे वणज वपार। मुड़ के फेरा पाया, आया निहकलंक तेरे सच्चे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ चरन सरन करे निमस्कार। आया सरन सच्ची सरनाई। प्रभ पकड़ उठावे फड़ के बाहीं। कलिजुग वेखीं फेर भुल्ल ना जाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मती आप समझाई। कलिजुग बोले रसन उचारे। पिछले अवगुण हरि ना विचारे। भुल्ले रहे विच संसारे। हरि ना, जाणया ना वक्त पछाणयां झूठे रहे करदे कारे। चरन लाग बुझी आग जागे भाग रक्खीं चरन दुआरे। तीन जुग सुआ ना मैनूं कोई अवाज़ मारे । खाली पया मेरा तख्त, उत्ते सतिजुग आपणी हत्थीं बिठाल दे। सिर धर दे साचा मुकट, गुरमुख साचे सन्त जन नाल साचे पहरेदारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन सच्चा अस्थान दे। छड्डया राज झूठा शाही। एका मिल्या साचा माही। जिस ने फड़ीआं दोवें बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए सभनां थाँउं थांईं। सतिजुग साचा तख्त बिठा। साचा तिलक प्रभ देवे ला। सोहँ चन्दन उंगल लगाओ। शब्द मंगल सन्तो गाओ। जति धीरज दा संगल पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म रसना दए सुणाओ। सतिजुग बणा सच्चा सुल्तान। किरपा करे आप मेहरवान। दुआए जन्म विच जहान। तेरी वध जाए शान। गुरसिख सोहँ रसना गान। एका रहे चरन ध्यान। बैठा रहणा विच बबाण। उप्पर झुलदे रहण निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना रहे वखान। सतिजुग सच्चा तेरा तख्त तेरा ताज। सच्चा करन विच मात दे राज। प्रभ सोहँ दित्ता तैनूं इक्क दाज। जन भगतां मारी रक्खीं वाज़। प्रभ दर आवण सारे भाज। आपे रक्खे प्रभ तेरी लाज। अट्ठे पहर संवारे काज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रिहा साजण साज। गुरसिख सुखी वसंदयो, हरि नाम सदा ध्याओ। घर साचे थान बहंदयो, चरन कँवल प्रीत रखाओ। बेमुख करदे फिरन जो निन्दया, कन्नी सुण ख़ुशी मनाओ। प्रभ आप मुकाए आत्म अन्न्हया, ना किसे दे मति आप समझाओ। ना कोई मनावे मंनयां, ना तुसीं सानूं वड्डिआओ। जिस घड़या तिस भंनया , रक्खे थाँईं थाँउं। प्रभ अद्धविचकार बद्धा बन्न्हया, दूजा कोई लागे रक्ख ना पाओ। जो घड़या सो

भंनयां, नीवें हो फल साचा खाओ। प्रभ होए गुरसिख तेरे दर दा पाली जिउँ माल चराए धंनया, प्रभ वेखो हर हर थांउँ। आपे बण जाए तेरा हाली, साचा सुच्च नाम लै जाओ। अन्तिम अन्त ना जाणा हत्थ खाली, सच वस्त नाल रखाओ। धुर दरगाहों चुक ल्याया डाली गुरसिक्खां माली, सोहँ शब्द रसना गाओ। घर साचे विच साची चाली, धर्म राए दे बन्द कटाओ। गुरसिख तेरी आत्म चढ़ जाए लाली, दर आए दर्शन पाओ। खेलो होली लाल गुलाली, चरन धूढ़ आपणे उप्पर छिणकाओ। प्रभ अबिनाशी गुरसिख जगाए जिउँ दीपक विच थाली, विच मात करे रुशनाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गाओ। गुरसिख दर साचे सच्ची सलाह है। बण जावे तेरा अन्तिम मलाह है। साची जोत पार कराए, फड़ के तेरी बांह है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभनी थां है। गुरसिख सच कमाई जा। सोहँ साचा नाँउ रसना गाई जा। आपणा वाधा जगत वधाई जा। साधां सन्तां आप समझाई जा। राह एका सच वखाई जा। नाल आप नठ्ठा वाहो दाही जा। पैंडा मुक्के गुरसिक्खां इक्क इक्वा साचे माही दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा नर अवतार जिथ्थे जोती मेल मिलाईदा। गुरसिख गुर उपदेशना। रक्खो लाज आपणे केसना। जन जाए वसणा साचे देसना। चरन कँवल मंगदे रहणा हमेशना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी जोत मिलाए श्री गुर दस्मेसना। सिक्खी बाणा जिस बणाया। विच मात साचा जाना, गुरसिक्खां तन पहनाया। झुल्ले तेरा इक्क निशाना, सोहँ उप्पर मोहर लगाया। चार वरन तेरी साया हेठ रखाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना।

३३१ ०३

❋ १६ मग्घर २०१० बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर सवेरे अठ्ठ वजे काका मनजीत सिँघ दे अन्तिम संस्कार दे नवित्त विहार होया ❋

प्रभ साचा सहज धार है। करे खेल अपर अपार है। ख़ुशी होई अज्ज साची सरकार है। आपणा आप गुरसिक्खां उत्तों दित्ता वार, है। जन्म जन्म दा चुकया भार सिरां उत्तों दित्ता उतार है। किया आपणा सच विहार, अग्गे लाया भुयंग कुमार है । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी लिख्त अपर अपार है । उठ कुँवर कर त्यारी। मात छड्ड दे माता प्यारी। सकयां भाईआं तेरी टुट्टी यारी। भैणां ना फड़ी तेरी वाग आपणी हत्थीं इक्क वारी। प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं घोड़ चढ़ाया, व्याहवण जाईं साची नारी। दरगाह साची तेरी साची लोड़, सिँघ पाल कोल कर त्यारी। दरों वेखे अवाज़ां मारे दादा तेरा रिहा पुकारी। आ पोतरे मेरे लाडले, देवां तैनूं इक्क सच्ची सरदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा

कर पुर इन्द्र करोड़ तेतीस तेरे चरन करन निमस्कारी। करोड़ तेतीस रहे तेरी सरन। देवी देवते पाणी तेरा भरन। चार जुग तैथों डरदे रहण। निव निव दोए जोड़ तेरी चरनी बहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तेरा साक सज्जण सैण। उठया पूत जगत पधारे। अचरज खेल करे गिरधारे। आए वेखे मातलोक की वरते कारे। इक्क सुणाए प्रभ साचा शब्द सलोक, मात गर्भ उलटा लटकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा पार उतारे। उठ मनजीत मन जाईं जित्त। पंजां तत्तां नाल ना करना हित्त। झूठे दिसण साक कुटम्बी, एका प्रभ अबिनाशी तेरा साचा मित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गोद उठाई बैठा तेरा साचा पित। साचा पित गोद उठाए । ना कोई तेरी दूजी माए। जेहड़ी तैनूं गोद उठाए। प्रभ अबिनाशी आपणी बाहां उप्पर आप टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी इन्द्र विच जा बहाए। इन्द्रपुरी विच जा के बैठ। सृष्ट सबाई भन्ने जिउँ कौड़े रेठ। उप्पर तेरे छत्र झुलदा तूं रहीं शाया हेठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम धन तेरे पल्ले पाए, बण जा पुरी साची दा साचा सेठ। साचा सेठ बण के शाह। सोहँ माल धन नाल लै के जा। मातलोक विच आपणा साचा चन्न, गुरसिक्खां साहमणे चढ़ के जा। मात पित भैण भ्रा करन हित, सारयां नाल लड़ के जा। तेरा फेर लिखाऊँ सारा भेत, साधां सन्तां फड़ के ल्या। वेखो वरतार जो वरते चेत,
३३२ सिँघ मनजीत तूं आपे आपणी जा थां। वेख थां सच्चा अस्थान। बख्शे आप हरि भगवान। दित्ता साचा जाप, करोड़ तेतीस ३३२
०३ देवे साचा दान। मोर मुकट तेरे सिर टिकाए, बण के जाईं साचा काहन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सच ०३
रखाए निशान। तेरा निशान जगत विच झुलणा। गुरसिख तेरी चरन प्रीती घोल घुलणा। प्रभ साचे दी साची रीती, गुरसिख कदे ना भुल्लणा। घर साचे दी मंगो एका चरन प्रीती, झूठे मातलोक विच ना रुलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अज्ज काया कीनी सीतल सीती, सोया पूत विच मात फेर ना हिलणा। मातलोक छड्ड के जावीं। सिक्खां तांईं समझा के जावीं। दरगाह साची साचा राह आपणी हत्थीं पा के जावीं। अञ्याणा बाला तोड़ ज़ंजाला खाली हत्थीं नट्ठा जावीं। अग्गे खड़ा सिँघ पाला, घुट के जफ्फी पाउँदा जावीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द देवे सुनेहड़ा मेरे लाल, राह विच जांदा सभनां तांईं सुणाउँदा जावीं। अग्गे आवण तेरे चौदां लोक। उप्पर फिर दिसे परलोक। पढ़दा जाईं सोहँ सच सलोक। ना कोई सके तैनूं रोक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई तेरे पिछे देवे झोक। उठ उठ शेर बण दलेर, मातलोक ना आवणा फेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करोड़ तेतीस तेरी सरन लगाए घेर घेर। इन्द इन्द्रासण जाए तज। सिँघ मनजीत उठ चढ़ जा भज्ज। साचा वक्त तेरा आप सुहाया प्रभ अबिनाशी अज्ज। विच मात महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे पर्दे लए कज्ज। मातलोक तेरा तुट्टा नाता। छड्ड दे भैण भाई पित माता। चरन लगाए प्रभ साचा दाता। सोहँ शब्द तेरी झोली पाए लै जाईं सच सुगाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण आप वखाए पाड़ गगन दीआं छाता। उप्पर गगन आप चढ़ाए। रंगण साची इक्क रंगाए। सच दरबार इक्क वखाए। सिँघ आसण बैठा प्रभ उप्पर डेरा लाए। गुरसिख साचा घर साचे विच जाए। प्रभ अबिनाशी वेख हरि, गुरसिख साचे तेरी चरनी सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोवें बाहीं फड़ के आपणी गोद उठाए। आपणी गोद विच बिठा के। अगाध बोध शब्द लिखा के। दादे नाल मेल मिला के। सिँघ पाल हत्थ चवर फड़ा के। सिँघ माहणा ल्या नाल ख़ुशी ख़ुशी आए, जाए फुल्ल बरसा के। सिँघ सवरन होया निहाल, भाईआं तांईं भाई मिल्या आ के। चेत सिँघ चेहरा होया लालो लाल, जां दर्शन पाए आ के। बुद्ध सिँघ तेरे सीस बन्ने रुमाल, साचा लाड लडा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द झूले आप झुलाए आपणी गोद उठा के। मात, पिता घर जन्म दवाया। जन्म कर्म आपणे हत्थ रखाया। साचा भरम अज्ज चुकाया। पूरन कर्म हरि कराया। मानस जन्म अञ्याणे बाले साचे लाले, तेरा सुफल कराया। सुफल होया तेरा आवणा जावणा, दे थापीआं गुर पूरे तैनूं आपणी गोद सवाया। आपणी गोद हरि आप सवाउणा। मानस जन्म तेरा लेखे लाउणा। कलिजुग विच मात ना तैनूं किसे जगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोया शेर वेले आपणे आप उठाउणा। आए वक्त लए उठाल। साची शक्त विच टिकाए। पंचम जेठ राज तिलक तेरे मस्तक लाए। तेरी काया ना लग्गे सेक, प्रभ रक्खे गोद उठाए। साध संगत एका राखो प्रभ चरन टेक, नेत्र नीर ना कोई वहाए। मात कुक्ख होई बबेक, साचा सीर जो रसन प्याए। मानस जन्म पाया वार एक, दूजी वार विच मात ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रखाए। साचा संग आप निभाउणा। दर घर साचे माण दवाउणा। पाल सिँघ दी उंगली लाउणा। सिक्खां दे घर घर फिराउणा। सुत्या रातीं दरस दिखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रसना गाउणा। साची उंगली हत्थ फड़ाए। सचखण्ड दे विच फिराए। आपे पाए साची वंड तेरे हिस्से इन्द्रलोक इक्क आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच जगत तेरी साची बणत बणाए। साची तेरी बणत बणाउणी। पत्थर उप्पर लकीर खिचाउणी। बारां माह तेरी पक्की रहे हाढ़ी साउणी। हरि वसे तेरे नाल सभनी थांईं, ना अग्गे पाए कोई अड़ाउणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे जो मन भाउणी। मन भाया सोई कराया। तिन्न दिन खेल वरताया। फूलन बरखा हरि जी लाया। इक्क इक्क फुल्ल गुरसिक्खां तांईं वरताया। एह रक्खणा सांभ प्रभ साचे हुक्म सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल

आप रचाया। इक्क इक्क फुल्ल गुरसिख रखाए। माघीउँ पहलों एह कम्म तुहाढ्ढे आए। सच सुनेहड़ा गुरसिक्खां आपे आप सुणाए। तुहाढ्ढा कुट्टे जम का जेवड़ा, इक्क बाला अग्गे लाए। अग्गे राह दिसे भीवड़ा, पहलों छोटयां तांईं लँघाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करता धरता आपणा भाणा आप वरताए। अग्गे लग्गा छोटा बाला। गुरसिख मारो पिछे छालां। कलिजुग पईआं अन्त तरकालां। बेमुख कढ्ढण मावां गालां। साचा वक्त ना किसे संभाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई विच्चों लभ्भा इक्क सच्चा लाला। साचा लाल ल्या चुण। सृष्ट सबाई छाण पुण। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण। सृष्ट सबाई अन्तिम लए कन्न सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आपणी गोद उठाए चुण चुण। साचा लाल बाल अवल्लड़ा। अज्ज चल्लया इक्क इकल्लड़ा। प्रभ अबिनाशी जिस दे दर अग्गे खलड़ा। आपे बन्ह्रे तेरे संग आपणा साचा पलड़ा। दरगाह साची सच दर दुआरे तेरे अग्गे खलड़ा। मातलोक रहणा झूठे लारे, प्रभ साचे दी छत्र छाया हेठ पलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खड़ साचे घर दे के वर, पुरी इन्द्र विच घलणा। इन्द्र पुरी जा के वेख। प्रभ अबिनाशी की कर रिहा भेख। धन्न धन्न तेरी कमाई वड्याई लिखाई धुर दरगाहों लेख। धन्न धन्न तेरी जणेंदी माई, जांदी वार तैनूं नेत्र लए पेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं लिखे तेरी साची रेख। लिखे रेख बण लिखारी।
३३४
०३
तिन्न दिन मंगदा रिहा भिक्ख, बण बण भिखारी। किसे ना पाई साची सारी। प्रभ अबिनाशी की वरते कारी। क्यों बणे मालण सिर उठाई फिरदा फूलां खारी। क्यों बन्ह्रे सिर सिहरे, कलि दवाए फेरे। अक्खीं वेखो वेला आया नेड़े। आपणी हत्थीं चार दवाए गेड़े। झूठे जगत मुकाए झेड़े। जा पुत्त साचे सुत्त वस जाईं खुल्ले वेहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आपे करे नबेड़े। आपे किया कलि स्यापा। प्रभ का खेल किसे ना जाता। ना कोई पीड़ ना कोई तापा। जो कुछ करे सो आपे आपा। ना कोई माई ना कोई बापा। ना कोई भाई ना कोई भैण ना कोई साका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे घर लै चल्लया आपणी गोद उठाए छोटा काका। छोटा काका लाल दुलारा। सर्ब जीआं नूं लग्गे प्यारा। मात पिता भैण भाईआं हित्त अपर अपारा। ना कोई विछोड़ा सके इक्क दूजे दा चित्त, बंधन बद्धा जगत गंवारा। प्रभ अबिनाशी एका साचा मित्त, जेहड़ा चले संग धुर दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। उठ लाल जगत प्यारया। आपणी माता दे नेत्र चन्द सितारया। प्रभ अबिनाशी तैनूं साचे झूले आप झुला रिहा। कलिजुग जीव रहे भुल्ले, अन्तिम कोई ना किसे अटका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे राह पा रिहा। उठ चढ़ साची घोड़ी। मात पिता अजे ना वंडी तेरी साची लोहड़ी। सिँघ पाल कोल छेती बौहड़ीं। रस्ते पै जाईं जाईं दौड़ी दौड़ी। महाराज

३३५
०३

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खिच्च चढ़ाए साची पौड़ी। उठ लाल मां दे जाए। दरगाह साची तेरे लग्गी नाएं। प्रभ आप बहाए साचे थाएँ। जिथ्थे कोई जाए नाहें। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी अगम्म अथाहे। सच पूत हरि घोड़ी चाढ़ा। आप बणाया साचा लाड़ा। तेरीआं अंक सहेलड़ीआं लाया सच अखाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेल मिलाए, ज़िमीं अस्मान खुल्हा पाड़ा। उठ लाल कर निमस्कारा। जांदी वार लै जा मां आपणी दा दो हत्थां दा प्यारा। पिछा मुड़ ना वेखण आवीं, जावीं सच दरबारा। साची संगत आपणे संग रलावीं, तेरे मगरे आवे वारो वारा। अग्गों मिलीं चाईं चाईं लम्मीआं बाहीं पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा देवे कर करीं चरन निमस्कारा। उठ लाल कर सच प्रीत। साधो सन्तो गाओ सुहागी गीत। सिँघ मनजीत चल्लया अज्ज जग नूं जीत। गुरसिक्खां सदा रखणा चीत। गुर गोबिन्द एह चलाई रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सुत्त भेंट चढ़ाए, गुरसिक्खां काया करे ठंडी सीत। साचे दर चढ़ गई भेंटा। गुरसिख दा साचा बेटा। दु:ख दर्द ना आवे किसे पेटा। प्रभ अबिनाशी सेज विछाई, उप्पर लाल साचा लपेटा। साध संगत मिल मंगल गाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणया खेवट खेटा। मंगल गाओ साची नारी। प्रभ अबिनाशी किया खेल पहली वारी। वेखो की वरते संसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वणज कराए कोई बणे सच वपारी। साचा वपार आप कराया। इक्क चुबारा नां लगाया। राजा इन्द्र बाहर कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सिक्ख आपणी हत्थीं उप्पर तख्त बहाया। तख्त बैठ राज दुलारा। भगत जनां संग करे प्यारा। कलिजुग वेखो की वरते कारा। धन्न धन्न धन्न भाग मेरे, मैं चल्लया सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाया सच्चा घर बाहरा। झूठी छड्डी महल्ल अटारी। मारी इक्को शब्द उडारी। होया तिन्न लोकां तों बाहरी। जिथ्थे वस्सया आप निरँकारी। जाए चरन सरन निमस्कारी। प्रभ अबिनाशी तेरे चरन तों बलिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां जाए तारी। आपे तारे तारनहारा। दिवस रैण जो साची कारा। गुरसिख साचे खिच्च ल्याए चरन दुआरा। दे मति समझावे सभ नारी नारा। नारी नर करो विचार। नेत्र वगे ना किसे दे धार। दोए जोड़ करो चरन निमस्कार। जिस दा व्याह किया करतार। उठ माता सुलक्खणी, उत्तों पाणी वार। मेरी भैण ना रहे सक्खणी, प्रभ देवे साचे हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लै जाए साचे दरबार। मनजीत सिँघ मन गया मन्न। मातलोक विच चढ़या साचा चन्न। जूठयां झूठयां निकले जन। प्रभ आपे घड़े आपे लए भन्न। ना कोई अग्गे अड़े, प्रभ लैंदा रहे डन्न। गुरसिख तेरे दर दुआरे अग्गे खड़े बेड़ा लए बन्नू। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना कहण धन्न धन्न धन्न।

३३६
०३

सोया पूत सिँघ मनजीत। ना रोए मां कौर रणजीत। प्रभ बख्शे चरन साची प्रीत। साचा लाल गया जग नूं जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीतल सीत। सीतल धार हरि करतार। गुरसिक्खां आत्म जाए तार। साचे सुत्त किया प्यार। ल्या चुक्क सच्चे दरबार। खाणा पीणा पहनणा गया मुक्क, मिले जोत सच भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं वरताए सच वरतार। सोलां मग्घर सोलां कला संपूरा। लिखाए बचन ना करे फेर हदूरा। सतिजुग आउँदे जांदे लछण, कलिजुग वैहन्दे जांदे पूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अंञानड़ा विच मात बणाया सूरा। बणया सूर वड सूरबीर। प्रभ चलाई जाए नाम तेरा इक्क तीर। मनजीत सृष्ट सबाई पैंदी जाए वहीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहीं हत्थीं रिहा चीर। उठ लाल सिर बन्नॢ चीरा। मातलोक दा बण साचा हीरा। इक्क जैकारा नाम बुलाईं, मिलण आए तेरे वीरा। धीरज मति सन्तोख दे के जाईं, ना कोई वहाए नेत्र नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं तेरे सिर बन्नॢाए साचा चीरा। वेला वक्त आप विचारे। आपणा खेल करे करतारे। साची लाए वेल, खिड़े गुलज़ारे विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणे वरतारे। दुक्खी जीव सर्ब पुकारन। कलिजुग अन्तिम गरीबां निमाणयां वड्ड धक्के मारन। ना कोई दिसे सच टिकाणयां, साचे दर दरकारन। झूठे होए तहसीलां थाणयां, वढ्ढी खोर सर्ब सरकारन। सारा जगत प्रभ साचे छाणयां, लभ्भां विच्चों इक्क लाल बाल निधानन। प्रभ आपणी हत्थीं आप उठा ल्या, मातलोक विच करदा जाए चानण। सिँघ सिँघासण उप्पर टिका ल्या, गुरसिख फूल बरसाउणे बण बण मालण। साचा लाड़ा आप सजा ल्या, शब्द सरूपी वज्जे तालण। जन भगतां खाड़ा ला ल्या, जगी जोत इक्क अकालण। वटणा गाड़ॢा प्रभ साचे तेरे उत्ते ला ल्या, उत्ते देवे चिट्टा दुशालण। साचा रंग तेरी हत्थीं चढ़ा ल्या। फूल माला तेरी हत्थीं बद्धे गानण। साची नारी नाल व्याह ल्या, छोटा बाला अंञानण। प्रभ सच डोली विच पा ल्या, आप चुक्क बण कहारन । चवीं कंधी आप उठा ल्या, प्रभ आया तरनी तारन । राह साचा इक्क रखा ल्या, अमृत भाण्डा भन्ने भण्डारन। गुरसिक्खां मुख वखा ल्या, ना किया कोई उधारन। प्रभ साचे मार्ग पा ल्या, आप बणाए साची चालण। गुरसिख साचा सेजा सिड़ी टिका ल्या, गुरसिख फुल्ल इक्क इक्क चुक्क ल्यावण बालण। जोती लम्बू आप लगा ल्या, निकले लाट चले अस्मानन। धूंआंधार विच रखा ल्या, गुरसिक्खां देवे ब्रह्म ज्ञानन। दिन चौथे आपणा सच विहार करा ल्या, ना कोई हड्डीआं जाए उठालन। प्रभ सनदेही सच धाम बहा ल्या, जगत चले चाल निरालन। साचे लाल तेरी साची ख़ाक बेमुखां सिर पा गया, उडाए धूढ़ आप पंखीआं आलॢण। सभ कूड़ो कूड़ समझा गया, एका हरि तेरा बणया सच्चा पालन। उज्जल मुख विच जगत रखा गया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

तेरा बण के आपे जामन। आपे देवे सच्ची जामनी। पूर कराए गुर संगत भावनी। कलिजुग वरते कहर चण्डी चमके दामनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अज्ज बणाई रुत्त सुहावणी। उठ लाल इक्क लै अंगड़ाई। मिलण आई तेरी चाची ताई। भाईआं नाल हत्थ मिलाईं। भैणां तांईं सीस झुकाई। लज्जया रक्खणी दे मति समझाई। बुढ्ढी दादी आंढणां गवांढणां सद्द लै आई। आओ वेखो मेरा लाल चल्लया करन कुड़माई। मिल मिल सईओ मंगल गाओ, देवो प्रभ पूरे नूं वधाई। नेत्र सुरमा साचे पाए, उठे तेरी भरजाई। वाग गुंदण तेरी आए मां तेरी दी जाई। लागीआं बाहमणां लै लै लाग, साचा तेल तेरी मात चोवण आई। नीवां हो के लै प्यार, प्रभ उची घोड़ी दित्ता चढ़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां मग्घर तेरी पूरन आस कराई। सोलां शिंगार तेरे तन पहनाए। गुरसिक्खां कोलों सोहँ कंगण मंग लै आए। प्रेम रंगण तेरी हत्थीं मैहन्दी लाए। आपणी हत्थीं तेरा कस्से तंगण, बाहों पकड़ आपणी हत्थीं उत्ते आप चढ़ाए। गरीब निमाणे तेरे दर ते मंगण, नाम भिच्छया पाउँदा जाईं। तूतीआं नगारे तेरे वज्जण, सोहँ गीत गाउँदा जावीं। बेमुखां गल पईआं फाहीआं नूं आपणी हत्थीं आप कटाउँदा जावीं। मातलोक दीआं झूठीआं छाहीआं नूं सचे दाग आप मिटाउँदा जावीं। लाग लैण दर आयां लागीआं नाईआं नूं गुरसिख नाई आपणे आप बणाउँदा जावीं। साचा सिहरा बन्नृ दस्तार, इक्क इक्क लड़ी इक्क दूजी नाल गुंदाउँदा
३३७ जावीं। साची करीं इक्क विचार, गुरसिक्खां तांईं गुरसिख मिलाउँदा जावीं। आप चुक्क लै जावीं आपणा सारा भार, गुर ३३७
०३ संगत हौले भार रखाउँदा जावीं। आपे जाईं सच दरबार, साची रीत जगत चलाउँदा जावीं। दर्शन कर जा निरँकार, विच ०३
जोती जोत मिलाउँदा जावीं। मातलोक ना आउणा दूजी वार, लक्ख चुरासी फंद कटाउँदा जावीं। एका दिसे पार किनार, आपणा पन्ध आपे आप मुकाउँदा जावीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सेव घर साचे सच कमाउँदा जावीं। उठ लाल तेरे साथी आए। सोहँ रथ साची वत्थ संग ल्याए। सभनां तांईं टेक मथ, मातलोक दी भुल्ल बख्शाईं। वेखो जांदा खाली दोवें हत्थ, नाल कुछ ना जाए, एका नाम प्रभ पल्ले बन्नृे साची वथ, दात दूसर कोई नाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए साचे थाईं। मां लाडली लाड लडाउणा। लोरीआं दे दे चुप्प कराउणा। फड़ फड़ हत्थीं दुध्ध प्याउणा। रोज सवेरे उठ जगाउणा। उठ मनजीत कर काया सीत, तैनूं किधरों सुझे सौणा। महाराज शेर सिँघ सच चलाई रीत, सोया लाल ना फेर किसे उठाउणा। गूढ़ी नींद आप सवाया। साचा भौर विच्चों उडाया। मिरतक लोथ आप बणाया। सिँघ आसण प्रभ उप्पर टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा राह इक्क चलाया। प्रभ करे खेल न्यारी। पई वेख मां प्यारी। बैठी अग्गे सच दरबारी। बैठा लाल ला आसण भारी। सिँघ सिँघासण मिली सच्ची सरदारी।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लपेटे शब्द सरूपी विच पटारी। शब्द सरूपी देवे चादर। किरपा करे हरि करता कादर। घर लै जाए कर कर आदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका उप्पर रखाए विच मात चिट्टी चादर। चिट्टी चादर सच सुगात। दिने बणाई मात रात। काया तुट्टा झूठा नात। विच्चों उडया जो बैठा रहे विच इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब देवे आत्म शांत। साची जुगत हरि बणाए। वीह सौ दस बिक्रमी नाम लिखाए। तेरां विसाख दया कमाए। गुरमुख साचे जन्म दवाए। मात कुक्ख सुफल कराए। उतरे भुक्ख जो दर्शन पाए। सृष्ट सबाई तेरे सारे दुःख, प्रभ साचे झोली पाए। कदे हरया कदे जाए सुक्क, गुरमुख बेमुख दोवें रंग वखाए। सत्त महीने ना माणयां सुक्ख, उप्पर दिन तिन्न रखाए। सत्त दीप तेरा नाउँ लए रक्ख, तिन्नां लोकां विच जपाए। सोला मग्घर कीना वक्ख वीह सौ दस बिक्रमी वार मंगल आप लिखाए। सिँघ पूरन तेरा साचा जन्म दिन प्रभ ख़ुशीआं नाल मनाए। साध संगत इक्ठ्ठ कर आपणे दर बहाए। साचा तेरा इक्क लाल फड़ के आपणी हत्थीं भेट चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरी सेवा अज्ज कराए। सत्तां दीपां होए प्रकाश। प्रभ आप बणाए तेरी रास। लेखे लाए तेरा इक्क इक्क स्वास। आउणा जाणा तेरा सुफल कराए, पुठ्ठा लटकया जो दस मास। दरगाह साची आपणी हत्थीं कुफल खुल्हाए, विच रखाए तेरा वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी जोत विच जगत करे प्रकाश। मनजीत मन वज्जी वधाई। सेजे आया चाईं चाईं। बापू मैनूं गोद उठाईं। ख़ाक विच ना चरन छुहाईं। साची दरगाह लै के जाईं। ओथे आपणा आप दिखाईं। केहड़ा घर केहड़ा दर केहड़ा हरि जेहड़ा मिलदा अग्गों लम्मीआं कर के बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द भण्डारा तैनूं दित्ता सदा सदा पीवीं खाईं। दाणा पाणी जगत मुकाया। सिद्धे राहे आपे पाया। गिला पीरण ना कोई रखाया। कलिजुग जीव तेरा भेख बाहर कढ्ढ वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी गेड़ा आप दवाया। आपे गेड़े तेरी जीवण चक्की। पींहदा जाए गिली मक्की। पिछा भौं के फेर ना तकीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर प्याए, घर साचे विच जा के छकीं। माता दा हुण छड्डया सीर। घत्ती जाईं इक्क वहीर। इक्को इक्क निशाना सिद्धा चले तीर। उथ्थे कोई ना पुज्जे पीर फ़कीर। राह विच बझ जांदे दो हत्थीं जंजीर। धर्म राए अग्गे बैठा मंगे लेखा अख़ीर। गुरसिख साचे अञ्याणे बाले, जाईं पैंडा चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे बैठा भरी प्याले अमृत सीर। अमृत पीणा प्रभ दर जा के। सदा जीवणा लेख लिखा के। तन पाटा सीवणा, शब्द सरूपी सूई चला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी काया साची चोली आपणे तन पहन तिन्न लोक विच जाए जोत सरूपी जामा पा के। काया चोली सत्त लड़। आप

३३८
०३

टपाए छेवें घर। मेल मिलाए साचे हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करनी रिहा कर। काका मनजीत खेडण चल्लया। भज्जा जाए कल्लम कल्लया। टप्पदा जाए जंगल जूह पहाड़ डूंघी डल्लया। पार कराए जल थलया। घर साचे जाए डेरा मलया। खिलाए खेल वल छलया। विच संसार लोकमात फलया फुल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं घर साचे घल्लया। साचे घर बैठा जा। सुहणा लग्गा साचा थां। देवे सुनहुड़ा देंदी पवण हवा। मेरी माता नूं जा छेती समझा। नेत्र नीर वेखीं ना दईं वगा। दोईं दोईं हत्थीं चुक्क प्रभ झोली देईं पा। मां प्यारी मैं अगल वाढी जा के बणावां तेरी थां। साचा पुत्तर जंमिआं तूं माणी एहदी छाँ। उथ्थे अमृत फल लगदा, ना कोई खावे चिड़ी कां। अमृत सोमा एका वगदा, तेरा बच्चा रिहा तारीआं ला। झूठा जहान वांग अग्न दे तपदा, कीता शुकर जे छुट्टी मेरी बांह। बाल अञ्याणे मिले बदला ना कोई पाप दा, ना कीता कोई गुनांह। दोवें पासे वेख लउ, काली छाही किते दिसे ना। प्रभ अबिनाशी धारे भेख, गुर गोबिन्द मेरे सरहाणे बैठे आ। गुर संगत नेत्र पेख लउ, पूरन सिँघ साचा पिता रणजीत कौर मेरी मां। हरि घर साचे साचा वेख लउ, दोहां फड़ी बैठा बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध जेवड दूसर कोई ना। गया घर वेखे सच अटारीआं। प्रभ अबिनाशी तूं किवें एह उसारीआं। जन भगतां विच बहाए ना लाए बूहे बारीआं।
३३६ ०३ अट्ठे पहर एका ताक खुल्हाए ना कोई दीवा होर जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा तेरा सर्ब चुका ३३६ ०३
रिहा। लहणा देणा तेरा आप चुकाउणा। कारज साचा आपणी हत्थीं आप कराउणा। तेरा सच निशान, विच मात रखाउणा। साढे तिन्न तिन्न हत्थ चारों तरफ बणाउणा। विच तैनूं देवे रक्ख, फिर आपणा कर्म कमाउणा। ओथे बणे तेरा रथ, प्रभ साचे आप चलाउणा। तेरी जगत गाए गथ, नाम शहीदां विच रखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ सच समाधी विच बठाउणा। सच समाधी दए बणाए। गुर संगत तेरी सेव कमाए। साचा नाम मेव लगाए। भुक्खयां दुखियां देवे दुःख मिटाए। कराए उज्जल मुखीआं जो आवण तेरी सरनाए। नारां होवण सुक्कीआं, कुक्खीआं कुक्खीं भाग लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वर विच मात तेरी झोली पाए। साचा वर दे दातारा। आप बणाए तेरा इक्क छोटा घर बाहरा। चढ़दे मुख रखाए सूरज देवता तेरे चरन करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। आप बणाए इक्क समाध। रक्खे नाम आदि जुगादि। लिखाए शब्द बोध अगाध। साची देवे नाम दाद। गुर संगत सारी रक्खणा याद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आप वजाए साचा नाद। साचा नाद आप वजाउणा। भुक्खयां नंगयां आख सुणाउणा। कर दरस आपणी तृखा भुक्ख मिटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद रसना गाउणा।

गुरमति सर्ब सुखदाई है। गुरमति आत्म दुखड़ा देवे लाही है। गुरमति उज्जल मुक्खड़ा जगत कराई है। गुरमति साचे दर देवे वड्याई है। गुरमति गुर संगत आप सुणाई है। गुरमति सति सन्तोख सर्ब रखाई है। गुरमति आत्म दोख सर्ब मिटाई है। गुरमति साचा जोग चरन कमाई है। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भुल्ल ना जाई है। गुरमति हरि आप दवाए। दर घर साचे आए आप समझाए। वैण कीरना कोई ना पाए। आत्म धीरना सर्ब रखाए। साचा निक्का वीरना जगत बणाए। अमृत प्याए साचा सीरना, सदा जीत साचा संग रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उहला लुक ना कोई रखाए। गुरमति हरि का घर है। जिथ्थे आवे कोई ना डर है। गुरमुख साचे सुण पल्ले बन्नू लै जाणा साचा घर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाया साचा दर है। गुरमति जगत पछाण। गुरमति देवे हरि कलि चरन ध्यान। गुरमति गुरसिख ना बण जगत निधान। प्रभ दर एका मिलदी नाम भिख, दूजा कोई ना होर निशान। आप मिटाए आत्म तृष्ना तृखा झूठी चुक्के कान। साचा लेख प्रभ जाए लिख, सिँघ मनजीत बिठाए विच बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोवें उड घर साचे विच जाण। गुर चेला दोवें उडया। जिउँ चढ़ी अकाशे गुडिया। ना कोई रोवे बाल जवान माई बुढिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लडाए आपणे लडया। आप आपणा लाड लडाया। पहला प्रेम एह दिखाया। विच मात आपणा नात गुरसिख साचे चरन बंधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बख्शे जो पिछला पिया खाया। आपे बख्शे बत्ती धार। मां पिलाए जो कर प्यार। लहणा सर्ब चुकाए ना बाकी रिहा कोई हुदार। साचा तन प्रभ दर गहिणे पा ल्या, लहणा लवे सच्चे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणा ल्या, भाणा मन्नणा पए करतार। भाणा मन्नो इक्क करतार। सर्ब जाणा आपो आपणी वार। कोई ना रोके अग्गे किल्हा कोट द्वार। कच्ची काया तुटे धागे, मारे बाज़ इक्क उडार। खाली पाए रहि जाण झग्गे, ना विच दिसे कोई फूं फुंकार। विच मात दाग ना लग्गे तेरी पग्गे, निर्मल होए काया धोए जाए हरि के द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे बैठा भुजा पसार। सच सिदक गुर देवे, साचा वक्त संभालणा। गुरसिख साचे सुण कन्न, ना हरि कदे भुलावणा। सतिगुर आए घर, भरम सर्ब चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए साची भावना। पूरी होए आत्म आस। शब्द सरूपी पैंदी वेखे साची रास। गोपीआं काहन इक्ट्ठे नच्चण, आपे होए दासन दास । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे धीरज धरवास । धीर धराए, सति सन्तोखी सीर पिलाए। अन्तिम मोखी आप दवाए। जगत दोखी कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा दए लिखाए। हरि का भाणा हरि ही जाणे। जीव जन्त ना कोई

पछाणे। साध सन्त आसण लाए बैठे चरन ध्याने। वेखण साचा कन्त किथे वसे हरि भगवाने। बाल अवस्था बण गई साची बणत, प्रभ अबिनाशी आप पहनाए चिट्टे बाणे। बलि बलि जाण तैथों साचे सन्त, तेरा नाउँ सुणन जो काने। गाओ इक्क सुहागी तत्त, रोवण धोवण ना प्रभ मन भाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गति मितक आपे ही जाणे। आपे जाणे आपणी रीता। ना मरे सदा सद प्रभ जग साचे जीता। साची तरनी गुरसिख तरे, हरि बणे साचा मीता। ना जन्मे ना मरे, ना तत्ता ना ठंडा सीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सदा सदा जग जीता। साची बाज़ी लग जग। दाग ना लाउणा चिट्टी पग्ग। मुख साचा सगन लगाउणा सोहँ शब्द खाओ रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पड़दा तेरा रिहा कज्ज। पड़दा कज्जे रक्खे लाज। सिर धरे इक्क तेरे ताज। साचा देवे विच मात दे राज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रचाया तेरा काज। तेरा काज आप रचाया। प्रभ जोती दे नाल प्रनाया। दोए जोती इक्क थांए मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वखाया। दोवें जोती मेल मिलाए। साची गोती इक्क बणाए। गुरसिख माणक मोती आप लिखाए। माला हार इक्क परोती, गल आपणे लटकाए। राह तक्के घर मां खलोती, मुड़ घर आ मेरी कुक्ख दे जाए। अग्गों हुंदी ना ना, मैथों दुःख ना झल्लया जाए। मैं बैठा सच्चे थां, जिथ्थे पवण चवर झुलाए। अट्ठे पहर ठंडी छाँ, तत्ती वा कोई ना लाए। ना कुछ पीआं ना कुछ खां, सति सरूपी रिहा समाए। दिवस रैण जपदा रहां सच्चा नां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत रिहा बणत बणाए। दिवस रैण रसना गावणा। ना कुछ पीणा ना कुछ खावणा। शब्द आधार इक्क रखावणा। अमृत धार मुख चवावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गोद उठाए सिर हेठां दे के बांह सरहाणा। साची मिली हरि सरनाई। भुक्ख तेह ना लग्गे राई। साचा सुख हरि रिहा वखाई। उतरी भुक्ख जां दर्शन पाई। सुक्खणा रिहा सुक्ख छेती मेल मिलाई। चुक्क चुक्क वेंहदा रहां मुक्ख, पैंडा दूर दिसे नाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभनी थांईं। होए सहाई सभनी थाउं। चिट्टा बाणा इक्क बणाओ। मनजीत सिँघ दे गल पहनाओ। जगत रीत पूर कराओ। शब्द गीत साचे गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा प्रभ साचे दी झोली पाओ। साची वस्त लैणी उठाल। प्रभ अबिनाशी चले नाल नाल। जगत अवल्लड़ी चले चाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे सर्ब जीआं सुरत संभाल। सुरती सुरत हरि विचारदा। बणत बणाई गुर साचे पूरे। कारज करे गुर संगत खड़ हज़ूरे। अञ्याणे बाले हरि दर तेरे उतरे सगल वसूरे। ना जन्मे ना एह मरे, गया चरन हज़ूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर आयां जाए कर के कारज पूरे। बाल अञ्याणा लाल बणाया। विच बबाण

आप बिठाया। शब्द उडाण इक्क लगाया। विच लोकमात जहान साचा खेल रचाया। करे कराए सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, जीवां जन्तां भेव ना पाया। मनजीत सिँघ तेरे नाम दा बणे इक्क निशान, सतिजुग झण्डा इक्क लहराया। सन्त जनां नूं वज्जे बाण, आवण चल तेरी सरनाया। सभ नूं भुल्ले पीवण खाण, शब्द सरूपी तीर चलाया। झूठे रहे ख़ाक छाण, कलिजुग जीवां साचा लाल हत्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा साचा चन्द चढ़ाया। सतिजुग चढ़े चन्द चांदना । किरपा करे हरि भगवानणा । मात पिता तांईं आप समझावणा। रो रो वैण किसे ना पावणा। आपणी हत्थीं प्रभ साचे दी साची गोद विच बिठावणा। दरगाह साची एथे ओथे आपे होए जामना। प्रगट होए जोत सरूप धारे भेख जिउँ बल दुआरे बावना। बाल अञ्याणे चुकया पीवणा खावणा। धुर दरगाहे लिखे साचे लेख, सत्त महीने तिन्न दिन विच जगत जीवणा। झूठया जाणया जगत भेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि लै जा साचे दर, जिथ्थे वसे हरि भगवानणा। हरि भगवान हरि ही जाण। जोत सरूपी पवण मसाण। दोहां मेल मिलाए आण। इक्ठे होए भगत भगवान। किरपा करी वाली दो जहान। आप चुकाए जम की कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आप उठाए चढ़ाए विच शब्द बबाण। शब्द बबाण आप चढ़ाया। विच्चों मात बाहर कढाया। कलिजुग अन्धेरी रात साचा राह
३४२ ०३ किसे हत्थ ना आया। कलिजुग जीव वेख अंदर मार झात, प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी डेरा लाया। बैठा रहे इक्क इकांत, ३४२ ०३
प्याउँदा रहे अमृत बूंद स्वांत, कलिजुग अग्न ना लागे माया। आप बणाया चरन नात, गुरसिख बाल अञ्याणा आपणी गोद उठाया। आपणी गोद उठाए देवे लोरी। गुर संगत तेरे नाल जावे तोरी। गुरमुख साचे सन्त जनां तेरा मेल जावे जोड़ी। वेला अन्तिम अन्त काल आण चुकया, प्रभ अबिनाशी साचे बौहड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरी घर साचे विच इक्का सोहँ शब्द लगाई साची पौड़ी। घर साचे विच जाणा चढ़। राह विच ना जाणा अड़। प्रभ अबिनाशी फड़ना लड़। तोड़ी जाईं किले़ गढ़। धर्म राए अंदर वड़ जाए दड़। कोई ना तैनूं लवे फड़। प्रभ अबिनाशी तेरा तक्के राह, दर दुआरे अग्गे खड़। आपणी हत्थीं आप लगाए मातलोकी सति सन्तोखी साचा बूटा विच अकाश जड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल वरताए बहत्तर नाड़। जोत खिचाई चार दिवस जो लिख्त कराई। पूरन अज्ज कराई। सतिजुग तैनूं दिआं वधाई। तेरा साचा राह बणाई। जन भगतां कन्न सुणाई। भाणा मन्नणा हरि का भाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध सन्त रक्खे आपणी सरनाई। आपणी सरन हरि रखाया। धरनी धरन आप अख्वाया। साची तरनी गुरसिख तरन, सोहँ नईआ उप्पर आप चढ़ाया। बेमुख कलिजुग जीव आपणा किया आपणी

करनी भरन, बेड़ा विच शौह दरया रुढ़ाया। बाल अञ्याणा गया गुर चरन, पूरा लेखा मात कराया। खुल्लया हरन फरन, तीन लोक गेड़ ल्वाया। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। सतिजुग तेरा चढ़े चन्द। सन्त जनां वेख आत्म होए अनन्द। रातीं सुत्तयां दरस दिखाए, आत्म तोड़े हँकारी कंध। प्रभ अबिनाशी साची जोत विच टिकाए, ख़ुशी रखाए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक राखो टेक ना लागे सेक सदा सदा बख़्शंद। आपे बख़्शे बख़्शण योग। रसना लाए साचा भोग। गुरसिख तेरा होए सच संजोग। दरगाह साची ना होए विजोग। साचा नाम सोहँ शब्द दिआं सच्चा जोग। गुरमुख साचे सन्त जनां चुगाउँदा जावे साची चोग। उचे टिल्ले समेरू पर्बतां मिटउँदा जाए सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सुणाए शब्द सच्चा सलोक। उचे टिब्बे औखा राह। अग्गे जाणा सौखा ना। वंञ मुहाणा कोई सके ना अटका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे वखाए जिस वसे साचे थां। साचा धाम सच अस्थान है। जिथ्थे वसे हरि भगवान है। ना कोई किल्ला ना कोई मकान है। ना कोई शब्द ना ज्ञान है। एका जोत जगे बली बलवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाउँ सच्चा इक्क निशान है। रक्खो पलँघ अद्धविचकार। भन्ने प्रभ साचा भण्डार। चल्ले अमृत साची धार। वगे विच सारे संसार। गुरसिख साचे सन्त जनां प्रभ आत्म तृखा देवे निवार। सोलां मग्घर पूरा किया विहार। वेखो की वरते कलिजुग वरतार। चारों तरफ पैंदी जाए मार। गुरसिख तेरे घर, खिड़े गुलज़ार। फल लग्गा साचे दर, तोड़े सर्ब जगत जंजाल। आपणी गोदी आप उठाया इक्क अञ्याण बाल। दरस दिखाया जोत सरूपी दिया दीपक बाल। सतिजुग साचा राह चलाया, कलिजुग तेरा अन्धेर मिटाया, भेटा किया साचा लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होया आप सदा रखवाल। भेटा दिया एका जिया। सतिजुग साचा बीज बिया। प्रभ अबिनाशी किया आपणा हिया। साढे तिन्न हत्थ रखाई तेरी सीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणा किया। आपे किया सच विहारा। आपे बणया रिहा लिखारा। तेरी साची बनाए सतिजुग धारा। सतिजुग वरते की कुछ वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी भेंटा इक्क चढ़ाए गुरसिख दुलारा। सच दुलारा किया दान। किरपा करी श्री भगवान। सतिजुग साचे तेरा झुल्ले इक्क सच्चा निशान। गुरमुख साचे सन्त जन मनजीत सिँघ जग जीत रसना सारे गाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए वड बली बलवान। वड बली बलवान। देवे माण आप चुक्कण आया घर श्री भगवान। आपणा भाणा आप वरताया, ना सके कोई उलटान। तिन्न दिन शब्द लिखाया, फेर बणाया इक्क बबाण। चौथा दिन साचा आया, उत्ते चढ़या नौजवान। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। उठ जवाना कर सवारी। तेरी आई

कलिजुग वारी। चुक्क पंड सिर आपणे भारी। जा सच्चे दरबारी। गुरसिक्खां दी सुण पुकारी। घर घर बैठे करन हाहाकारी। कोई ना बणदा सच्चा साईं, कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अवतार नरे किरपा करे जोत धरे कारज पूरे आप करे आया सच घरे। सच घर हरि साचा जाणया। गुरसिख साचा आण पछाणयां। बाहों पकड़ आप उठाए उठ अञ्याणे बालया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रखा ल्या। आप उठाया अञ्याणा बाला। गोदी विच लपेटयां सच्चा लाला। आप होया प्रभ रखवाला। सच पहनाए गल तेरे विच माला। सोहँ शब्द तेरे तन पहनाए, उप्पर पाए चिट्टा बाणा। तेरी रीस ना कोई कराए, वड्डे वड्डे शाह सुल्ताना। अन्तिम अन्त जुगा जुगन्त प्रभ अबिनाशी विच ख़ाक रुलाना। गुरमुख साचे सन्त तैनूं बन्नृण आए गाना। उठ बली बीर जवान, कर सच्चा इशनाना। देवी देवते अमृत ल्याए, करोड़ तेतीस संग राज राजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी इन्द्र तैनूं आप बिठाना। इन्द्रपुरी आई हिस्से। दूजा कोई ना मंगीं दर जाईं किसे। करोड़ तेतीस संग राग छतीस तेरे चरन पीसना पिसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत हरि, ना विच मात दे दिसे। मातलोक होया अन्धेरा। प्रभ अबिनाशी पाया फेरा। बाहों पकड़या आपणा चेरा। ना कोई किया हेरा फेरा। ना एह मिटी ना एह ढेरा। सूरबीर उठे इक्क बहादर शेरा। चार कुन्ट शब्द सरूपी आपे पाए घेरा। जीव जन्तां साधां सन्तां करदा जाए नबेड़ा। आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता तेरा सच वसाए खेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर बहाए जिथ्थे चारों तरफ खुल्ला वेहड़ा। साचे घर हरि बहावणा। दीपक जोती तेरी आप जगावणा। माणक मोती गुरसिख तेरा नाम रखावणा। सृष्ट सबाई रही सोती, भेव किसे ना पावणा। ना कोई वरन ना कोई गोती, जोत सरूपी साचा खेल वखावणा। दुरमति मैल तेरी धोती, अग्गे पिछे दाग कोई रहण ना पावणा। प्रभ साचे दा बण जा गोती, जोती जोत आप मिलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं तेरा पकड़े साचा दामना। दामन पकड़े बाल अञ्याणे। वेंहदे रहि जाण सुघड़ स्याणे। कलिजुग वरतण की की भाणे। ज्ञानी विद्वानी ध्यानी ना कोई जाणे। ना कोई जाणे वेद पुरानी सके पछाणी खाणी बाणी प्रभ वसे बाहरे। करे खेल गुर संगत दुआरे। आए चल नरायण नर अवतारे। भगत जनां दे काज संवारे। आप चढ़ाए साचे शब्द सीतल करे इक्क रुशनारे। रसना गाउणा बत्ती दन्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारे। अपर अपार खेल खलांयदा। अञ्याणे बाल माण दवांयदा। शब्द दुशाले उप्पर आप चढ़ांयदा। फूलन माला गल विच पांयदा। बण साची मालण गुरसिख फुलवाड़ी विच्चों तोड़ लिआंयदा। सोहँ धागा नाम सूई आपणी हत्थीं पुरांयदा। आपे धोए तेरे दाग, गल तेरे विच माला साची पांयदा। साची

देवे जगत वड्याई, लेख तेरा सच लिखांयदा। सतिजुग होवे तेरी जोत सवाई, साधां सन्तां तेरा दरस करांयदा। आपणे हत्थ रक्खा वड्याई, तेरे सीस मुकट टिकांयदा। तूं जाईं चाईं चाईं, वाली हिन्द तेरी राह तकांयदा। प्रभ अबिनाशी सद बखशिंदा, साची दात तेरी झोली पांयदा। मोहण माधव छोटे लाल उठ मार इक्क छाल, सारे कट्ट जा जगत जंजाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी जोती आप टिकाए जिउँ गगन दीपक विच थाल। उठो काहनी कंध उठाओ। साची सेवा गुर दर कमाओ। साचा मेवे अमृत फल घर साचे विच खाओ। घर बैठा वड देवी देवा सुरपति राजा इन्द इस दा नाम रखाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर इन्द्रलोक विच देवे धर, करोड़ तेतीस लागे पांओ। सच सिँघासण आप उठाओ। बेमुख काहनी कोई ना लाओ। शब्द निशानी रसना गाओ। सच्चा चरन अग्गे उठाओ। पहुंचे जाए आपणी थांउँ। जिथ्थे चुणया इक्क चुणाओ। उप्पर जाए शेर बहाओ। चारों तरफ बन्द कराओ। सोहँ गीत सुहागी तत्त रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बलि जाओ। प्रभ अबिनाशी तेरी माया। कल्लर विच कँवल लगाया। आपणी हत्थीं जड़ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंदर वड़ आपणा मन्दिर आपे ढाहया । कलर विच लग्गे कँवल। सतिजुग सचे मवल। होए रुशनाई उप्पर धवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आप लगाए जिउँ सागर विच कँवल। साची सेवा आप कमाए। गुरसिख तेरी चरनी फूल चढ़ाए। साध संगत सच्ची मिल रल, साचा दूहला वेखण आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रिहा कार वरताए। इक्क इक्क फुल्ल हरि वरताए। गुरसिख साचा भेट चढ़ाए। आउँदा जाए आपणी थांएँ। अग्गे वध कोई हत्थ ना पाए। औखा आउणा ऐसी थांए। जिथ्थे कोई ना होए सहाए। टुट्टा नाता भैणां भाए। माता पिता विदा कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिध्धा राह इक्क दिखाए। कूड़ कुटम्ब झूठ पसारा। झूठा करन हाहाकारा। ना कोई जाए तेरे नाल सच्चे दुआरा। झूठीआं करन जगत विचारां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए लाड़ा खारा। उप्पर खारे आप चढ़ाए। साची छाल इक्क लवाए। बेमुखां सिर तेरे चरनां हेठ भन्नाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे सिर साचा ताज पहनाए। सच आसण तेरा डेरा लाया। गुर संगत तैनूं घेर पाया। कलिजुग वेखो वेला नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी अञ्याणे बाले चुरासी गेड़ा आप कटाया। झूठे जगत चुकया झेड़ा, प्रभ जोती मेल मिलाया। वसदा रहे एह तेरा नगर खेड़ा, सतिजुग साचा प्रभ साचे माण दवाया। खुल्ला रहे तेरा वेहड़ा, सौ सौ कर्म गेड़ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नबेड़ा आप कराया। तेरा बणे इक्क दरबार। वेखे आप सच्ची सरकार। भौंदा रहे बण के पहरेदार। गुरसिख साचे रहणा खबरदार। एथे पैंदे कलिजुग चोर

यार। ठग्गां कोलों तैनूं कीता बाहर। आप बहाया सच दरबार। जिथ्थे वस्सया हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पाउँदा रहे सार। तेरा धाम आप बणाए। आपणी हत्थीं इट्ट लगाए। अमृत बूंद सिट वखाए। एका उप्पर चादर चिट विछाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुर संगत सिर हत्थ धर, तेरी भेंटा फूल चढ़ाए। मनजीत मन्न ल्या कहणा। झूठा दिस्सया बाल अञ्याणे, विच जगत दे रहणा। चारों तरफ उठ उठ वेख्या झूठे दिसण भाई भैणां। कोई वड़िआउँदा दरगाह साची अलख्या, ना कोई बणे साक सज्जण सैणा। मात झूठा वेख्या पेख्या, आपणी हत्थीं बाहर कढ्ढ फिर अंदर बहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करे प्रीख्या तेरा महल्ल अटल विच जगत दे रहणा। तेरी बणे महल्ल अटारी। प्रभ अबिनाशी हत्थीं लए उसारी। चार दरवाजे अट्ठ बारी। विच वसे इक्क सच्चा घर बाहरी। चार वरन संग करे प्यारी। दूरों नेड़िउँ आवण चल तेरे चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं तैनूं आप दित्ती सच्ची सिक्दारी। सच सिक्दार आप बणाया। गुरसिक्खां दा ताज रखाया। पूरन काज आप कराया। मार अवाज़ गुरसिख उठाया। शब्द दूत तैनूं दित्ता दाज, पल्ले बन्नॢ घर साचे दे पुजाया। कोई आवे अज्ज कोई कलॣ, एथे रहण ना कोई पाया। झूठा दिसे जगत साज बाज, एका एक आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं साचा पूत गूढ़ी नींद सवाया। गूढ़ी नींदे जावीं सौं। ना वेखीं पिच्छा भौं। जा माणीं ठंडी छाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पकड़े तेरी बाहों। सौं जा सिक्ख प्यारया। धरत मात दे सच दुलारया। साची गोदी विच थापड़, प्रभ आपणी हत्थीं तैनूं सवा रिहा। सृष्ट सबाई झूठे वेले पापड़, ना कोई पूत भेट चढ़ा रिहा। बेमुखां भन्नी आकड़, सच सबूत सोहँ नाउँ तेरे नाल रखा रिहा। झूठा छड्ड जाईं एथे कलबूत, तेरी ख़ाक प्रभ अबिनाशी दोईं हत्थीं बेमुखां सिर पा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा अन्तिम वारी तैनूं इक्क सुणा रिहा। सच सुनेहड़ा सुण के जा। मां आपणी समझा के जा। सच दलासा दे के जा। पूरन भरवासा झोली पा। करदी हासा घर नूं जा। प्रभ दर जा के सीस झुका। चार जुग तेरा रहि जाए नां। जिस ने जम्मया सो भागण होई मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं रक्खे सिर तेरे उत्ते छाँ। मां आपणी नूं दे जा मत। एका रक्खीं धीरज यति। फेर ना लभ्भणा ऐसा वत। साचा बीज प्रभ रिहा घत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन बलिहारी जिस रख्या मेरा जति। तेरे तन ना लग्गे सेक। रक्खी इक्क चरन प्रभ टेक। होई काया तेरी बबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचा सिमरो एका एक। एका एक रसन चितारना। प्रभ अबिनाशी ना मनों विसारना। सभ आए दर द्वारना। लेखा हरि मात विचारना। ना कराए किसे हुदारना। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरसिक्खां पार उतारना। करन कारन जोग सर्ब समरथ है। सोलां मग्घर महिंमा जगत अकथ्थ है। गुरसिख साचे सिर रक्खे हत्थ है। साध संगत रलाए नाल ल्याया सोहँ रथ है। गुरसिख साचा आपणी हत्थीं उठाए, विच रखाए साची वथ है। सति संगत अग्गे लाए, आपणे हत्थ फड़ी प्रभ नत्थ है। साध संगत हरि दरस कराए, सगल वसूरे गए लथ्थ है। साकां सन्बंधीआं हरस मिटाए, ना वेला आउणा फिर हत्थ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे क्या कोई सके कथ है। भाणा हरि का सच परवान। मातलोक विच रहे निशान। सतिजुग साचे बाल अञ्याण। देवे वड्याई वाली दो जहान। किरपा कर साचा हरि आया घर दित्ता वर, करी खेल जगत महान। ना जाणा डर बणे साचा सर, सौ सौ कर्म गेड़ रिहा आप वखान। वेखो प्रभ साचा की रिहा कर। कलिजुग अन्तिम गया हर। सतिजुग साचा आया प्रभ साचे दे साचे दर। गुरसिख तेरी झोली पा, मैं मातलोक जावां फेर उठ, कलिजुग जीवां भुल्लयां सतिजुग साचे राहे देवां पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे सिर ते रक्खी आपणी बांह। बाल अञ्याणा जगत विचोला। गाउँदा जाए सोहँ ढोला। जीव जन्त क्या मारे बोला। बणयां घर साचे दा साचा गोला। जिथ्थे जगे जोत अमोला। ना पर्दा ना कोई उहला। ना कोई महल्ल अटारी ना कोई दीसे खोला। एका निकले जोत सरूपी ललाट शोला। जोती जोत सरूप हरि, एका बैठा पहने चिट्टा चोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे तोल गुरसिख साचा तोला। साचा तोल हरि तोलणहारा। सोहँ कंडा हत्थ फड़ अपारा। विच नवखण्डां हरि रिहा विचारा। सच ब्रह्मण्ड दा आप प्यारा। आपे पाउँदा जाए वंडां, तीन लोक दा इक्क दातारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत तेरा बणे आप सहारा। होया सहाई घर साचे आण। आप चुकाए जम की काण। गुरमुख साचा ल्या पछाण। आप बिठाए विच बबाण। गुरसिख काहनी तेरे लग्ग जाण। मदिरा मासी तैनूं हत्थ ना लाण। सतिजुग तेरा सच्चा एह निशान। साधां सन्तां घर चलदी रहे दुकान। सोहँ साचा शब्द साचा वजण कर घर लै जाण। बेमुखां देणा कर्ज़, धर्म राए अद्ध विच अटकाण। प्रभ अबिनाशी कलिजुग जीवां रिहा वरज, ना भुल्लो जीव निधान। ना कोई राग ना तर्ज़, सोहँ साचा रसना गाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दर्शन देणे आण। देवे दरस दीन का दाता। सर्ब जीआं का आपे ज्ञाता। आपे होए पित माता। ना कोई भैण ना भ्राता। इक्क सहाई हरि रघुराई, सर्ब जीआं का पुरख बिधाता। गुरसिक्खां लै आपणे गल लाई, ना कोई पछाणे जाता पातां। गुर संगत मिल दिओ वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख चरन निभाया नाता। चरन नाता दिआ बन्न्। प्रभ अबिनाशी सतिजुग चढ़ाया साचा चन्न। हरया होया सुक्का विच मात दे तन। मनजीत मन गया मन्न। गुरसिख

साचे सन्त जन, उठ उठ वेखण कहण धन्न धन्न। विच गगन आप टिकाए, ना छपरी ना छन्न। पहरेदार आप हो जाए, तेरे घर कोई ना लावे संन्। होका देवे सोहँ अवाज़ लगाए, सुण लउ सन्तो खोल्हो कन्न। पिछले पापां दाग धवाए, अग्गे धर्म राए ना लाए डन्न। आपणे हत्थ वाग रखाए, कोई रक्खे ना मन विच जन। दरगाह साची आप पुजाए, चौदां लोक पैरां थल्ले भन्न। गुरसिख तेरा उप्पर आसण लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिथ्थे ना कोई वसाए गंधरब गन। गण गंधरब ना कोई जाए। करोड़ तेतीस रहे बिल्लाए। शिव शंकर बैठे हेठां ताड़ी लाए। ब्रह्मा उप्पर मुख उठाए। दोए जोड़ करे प्रनाए। चार वेद जिस लिखाए। पहले नारद मुन सुणाए। फेर विच मात टिकाए। छतीस राग संग ल्याए। चौंहु जुगां दा भेव प्रभ अबिनाशी आपे आप खुल्हाए। कलिजुग अन्तिम अन्त आ गया, प्रभ फेर दए मिटाए। हरि साचा वक्त सुहा गया, निहकलंक कलि जामा पाए। सोहँ साचा डंक वजा गया, चार कुन्ट दे सुणाए। राउ रंक रंक राजान वड सुल्तान तख्त ताज सर्ब मिटाए। ना किसे दिसे साज बाज, ना कोई मारे दर दरबान अवाज़, पै जाए चारों तरफ भाज, ना कोई रक्खे किसे लाज, आपणा भाणा हरि वरताए। कलिजुग तेरी मिट्टी आपणी हत्थीं आप उडाए। आप उडाए तेरी धूढ़। मारी जाए बेमुख मूढ़। राजयां राणयां तांईं पाउँदा जाए जूड़। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। गुरसिख साचे सन्त जनां आत्म रंग चढ़ाई जांदा गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए शब्द सरूपी एका बूड़। एका गेड़ा आप गिढ़ाउणा। साचा लेखा हरि लिखाउणा। औल्या पीर शेख़ सर्ब मिटाउणा। वेख वेख प्रभ सर्ब उठाउणा। कलिजुग झूठा करदे भेख, प्रभ अबिनाशी नष्ट कराउणा। गुरसिख नेत्र लैणा पेख, प्रभ अक्खीं आप वखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताउणा। वरते भाणा चले तीर। चारों कुन्ट होए वहीर। रोंदे फिरन औलीए गौंस वड पीर। ना कोई होए सहाई दस्तगीर। चार यारां संग मुहम्मद ना कोई देवे धीर। ईसा मूसा होए ख्वारी, प्रभ अबिनाशी तोड़ी हड्डी रीड़। सभ दे लथ्थे तन दे चीर। उत्ते लिख्त आई भारी, भैणां छड्डुण वीर। ना कोई किसे करे कारी, प्रभ सोहँ आरे नाल रिहा चीर। ना कोई दारा शाह शिकारी, ना कोई दीसे अमीर वज़ीर। भाणा वरते कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, किसे हत्थ ना आउणा नीर। लुकदे फिरन बेमुख झाड़ीं, गुरमुखां प्याए प्रभ अमृत साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे धीर। देवे धीर भगत भगवान। भुल्ल ना जाणा विच जहान। नाम शब्द सची खाण। ना कोई लुट्टे ना एह मुक्के सन्त जनां दा साचा धान। दोईं जहानी ना चोग निखुट्टे, एथे ओथे बैठे खाण। बेमुख जीव जायण लुट्टे, पुट्टी जाए जड़् जहान। धर्म राए फड़े फड़ कुट्टे, ना कोई आवे उथ्थे छुडान। अन्धी डूंघर वैहन्दी धार फड़ फड़

विच सुट्टे, अठाई कुण्ड फिर फिर सर्ब पछताण। गुरसिख साचे पी अमृत पहली घुट्टे, जमदूत तेरे नेड़े ना आण। कलिजुग जीव पैर पसार सुत्ते, जामा धारे श्री भगवान। मदिरा मासीआं मूंह चट्टदे रहण कुत्ते, प्रभ देवे दर दुरकान। रंडी नार जिउँ खुल्ले गुत्ते, ना होए सुहागण फेर विच जहान। प्रभ अबिनाशी पुरख अचुत्ते, आत्म भुल्ल ना जीव निधान। हँस ना रहणा इस झूठे बुत्ते, अन्त जोती जोत हरि मेल मिलाण। सचे हल्ल प्रभ साचे जुत्ते, कलिजुग सतिजुग दोवें बैल बण जाण। महाराज शेर सिँघ सतिजुग साचा हाली बण जाए आण। कलिजुग सतिजुग दोवें रलाए। आप आपणा हल बणाए। जोत सरूपी हाली बण के आए। चार कुन्ट दे विच फिराए। जिन्हां लग्गी पाताली जड़, आपणी हत्थीं आप उखड़ाए। कढदे फिरन जो प्रभ साचे नूं गाली, डीले वांग मार ठुडा परे हटाए। अग्गे दिसे डूंघी खाली, धर्म राए जिथ्थे सवाए। ना रोटी मिलदी किसे विच थाली, दाणा अन्न हत्थ ना आए। मात पिता नूं कढ्ढण गालीं, क्यों ना सिध्धे रस्ते पाए। धर्म राए घर होई साडी चाली, होए वकील ना कोई छुडाए। सुंञे रहि गए मन्दिर खाली, जेहड़े आपणी हत्थीं बणाए। ना कोई धन ना चल्लया माल माली, सारे पल्ले आपणे आप छुडाए। साचा नाम ना मिल्या साची डाली, जो दरगाह भेट चढ़ाए। रिहा भुल्ला विच्चों जगत ज़ंजाली, धर्म राए फड़ बहाए। अग्गे जाण नहीं देंदा दो जहान वाली, पहला लेखा एथे आप चुकाए। गुरसिख साचे मारन छाली, प्रभ अबिनाशी विच बबाण आप बिठाए। आपे बण जाए साचा पाली, सज्जे खब्बे पिच्छे अग्गे आप हो जाए। ना कोई मंगे किसे दलाली, जो जन सोहँ रसना गाए। आपे होए प्रभ रखवाली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धागे लए परोए। गुरसिख तेरा प्रभ आप रख्वारा। आपे लै जाए गोद उठाए विच चरन दुआरा। साचे धाम जा बहाए, जिथ्थे रहे अट्ठे पहर रुशनाए, उनन्जा पवण तेरे सीस छत्र झुलारा। दूसर उथ्थे कोई ना जाए, इक्क कबीर बैठा दर आए। दूजा मंगण गया नानक दर ते, जिस नूं भिच्छया सति नाम हरि झोली पाए। साचा नाम वस्त संभाल विच मात दे आए। आपे बणया जगत कंगाल, सच्चा माल धन्न ख़ज़ाना, विच देही आप टिकाए। लै, के इक्क रबाब सितार संग मरदाना, चारे कुन्ट सुणाउँदा जाए। वड्डयां वड्डयां शाह सुल्तानां, फड़ फड़ राहे पाउँदा जाए। कलिजुग जीवां भुक्खयां नंगयां, अमृत घुट प्याउँदा जाए। आपे करे खेल जगत बहु रंगिया, पीसन आपणी हत्थीं आप पिसाउँदा जाए। तूंही तूंही चारों तरफ गाउँदा जाए। इक्क वजाए नाल सितार, निरँकार निरँकार ध्याउँदा जाए। सिँघ मनजीत तेरी ओहो धार, चुताली बरस गुर नानक जो कंधे नाल उठाउँदा जाए। राजा जनक त्रेता दरबार दी साची नार। गुर नानक दी साची सितार। मातलोक आई जामा धार। निहकलंक लए अवतार। आपे पाए तेरी सार। ना कोई किल्ली ना कोई तार। ना कदे होए ढिल्ली,

ना सद्दीए कोई सुन्यार। गुर संगत तेरी आत्म एहदी वजदी रहे सितार। दिवस रैण अट्ठे पहर करदे रहण विचार। रसना सके ना किसे कहण, प्रभ की वरते वरतार। आपे वेखे वेख विचारे करनहार दातार। भव सागर तों पार उतारे, किरपा कर हरि निरँकार। आपे लै जाए सच दुआरे, वसाए सच सच्चे घर बाहर। जोत सरूपी मेल मिलाए, फेर ना आवे दूजी वार। साचा हुक्म फेर सुणाए, उठ मनजीत हो त्यार। वेला अन्तिम कलिजुग आण चुक्कया, इन्द्र होया इन्द्रपुरी विच्चों बाहर। जुग चौथे दाणा पाणी उहदा मुक्कया, भोगी अपच्छरां कई हज़ार। वेला अन्तिम आण ढुकया, ना होए कोई सहार। गौतम रिखी जो मूंहों थुक्क थुकया, पूरा करे करतार। ना किसे सके रोक रुकया, रसना चली तेज कटार। बाल अञ्याणा आपणी हत्थीं चुकया, लै जाणा विच इन्द्र दरबार। उठ उठ जाग अनभोल सुत्या, प्रभ रिहा कर्म विचार। छड्ड कलिजुग अन्तिम आपणा घर बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच मात आया जामा धार। जामा धार ल्या अवतारा। आपणा करे सच विहारा। प्रभ साचे दी साची कारा। जुगो जुग आवे जावे वारो वारा। नरायण नर निहकलंक अन्तिम आवे कलिजुग, तिन्न जुग ना पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणा वरतारा। सच सिँघासण इन्द्र छड्ड। इन्द्रापुरी विच्चों हो जा अड्ड। चौथे जुग अन्तिम अन्त प्रभ सारयां देवे बाहर कढ्ढ। गुरमुख साचे सन्त जनां, आपणी हत्थीं हरि जाए छड्ड। अट्ठे पहर संग रहाए, आप लडाए साचा लड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अवतार नर किरपा कर जोत धर साचे दर देवे वर ना जाणा डर, कलिजुग जाणा तर, जोत सरूपी लडाए साचा लड। सच तख्त बहाया सच सुल्ताना। आप बन्नाया आपणी हत्थीं गाना। सत्त महीने तिन्न दिन मातलोक दा सच निशाना। लँघाए दिन गिण गिण, वेला आए जल्द जहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। सच दरबार धरे सिर ताज। पूर कराए आपणे काज। गुरसिख साचा इन्द्रपुरी बैठा तेरी प्रीत गुर चरन जुड़ी करदा रहे राज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे सिँघ मनजीत तेरी लाज। तेरी लाज रक्खे गुरदेवा। करोड़ तेतीस तेरी सेवा। सोहँ फल खवाया साचा मेवा। दिवस रैण जपाईं रसना जिह्वा। झूठी काया विच लगाई आत्म साचा थेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण दवाए, आण शान रखाए, विच बबाण बिठाए, बिरथा जाए ना तेरी सेवा। साचा कर्म हरि साचे किया। निर्मल कराए गुरसिख जिया। साचा बीज धुर दरगाही बिया। कर आपणा आपे हिया। सतिजुग तेरी रखाई साची निया। ना कोई रोवे ना कोई कुरलावे, ना कोई पावे हावे दर दर पुत्तर धीआं। ना रोवण करन स्यापे, अग्गे खलोता प्रभ अबिनाशी आपे, जिस कारन साचा किया। मारे तीनो तापे साची थापना आपे थापे, सोहँ जपाए साचे जापे, साचा मेल अन्तिम किया। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल संगत मेल विच मात आपे किया। गुरसिख दिया बलीदान। वरते कहर विच जहान। सत्त दीप नौ खण्ड विच वरभण्ड सर्ब कुरलान। आत्म खुल्ली एका गंढु, साची वस्त आपणी आप गवान। एका चमके चण्ड प्रचण्ड, प्रभ पाए आपणी वंड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चण्डी चमके विच संसार। सोहँ शब्द खण्डा दो धार। पै जाए इक्क वंड सारे संसार। शब्द डण्डा प्रभ मगर लगाया भार। रोदियां फिरन नारां रंडां, ना कोई दिसे सुहागण ना मिले कोई भतार। बेमुख वढाउँदे जाण कंडां, छड्ड जाण घर बाहर। गुरमुख साचे सन्त जन आत्म पाउँदे जाण ठंडां, प्रभ अमृत बख्शे आत्म साची धार। कलिजुग अन्तिम जो करदे रहे पखण्डा, भोगदे रहे वेसवा नार। अन्तिम होए खण्ड खण्डा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चीर करे दो फाड़। आपे चीरे चीर चिराए। सृष्ट सबाई वहीर कराए। जगत धीर ना कोई रहाए। देवियां देवत पीर फ़कीर रहे ध्याए। वेद पुरान शास्त्र सिमरत कुरान अंजील ना होए सहाए। खाणी बाणी गगन पताली जीआं जन्तां साची राणी ना लेवे अन्त बचाए। अट्ठ सट्ठ तीर्थ मढ़ी मसाणी सभ गए मुख भवाए। शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेश गणेश मिटे निशानी। जोत सरूपी प्रभ जामा धारे माझे देसा, एहो मात सच टिकानी। घनकपुर वासी हरि करे वेसा, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणी। माझे देस जामा धारया।
३५१ ०३ प्रगट होया नर अवतारया। गुरसिख सोए आप जगा रिहा। बेमुख गूढ़ी नींद सुआ रिहा। दुःख भुक्ख रोग सर्ब मिटा रिहा। ३५१ ०३
आत्म सुख आप उपजा रिहा। अमृत साचा मुख चवा रिहा। कँवल नाभ आप उलटा रिहा। बूंद स्वांती विच टिका रिहा। बैठा विच इकांती, आपणा भेव आप खुल्हा रिहा। वेखो अंदर मार झाती, ताकी आपणी हत्थीं लाह रिहा। गुरसिख लेखा रहे ना बाकी, लहणा आप चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ गहणा गुरसिक्खां तन पहना रिहा।

✻ १७ मग्घर २०१० बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै। सतिजुग वाली सतिगुर शब्द दी जै। काका मनजीत सिँघ दोआं दे चरनां हेठां बैठा रहि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत माण साचा दए। साचा माण चरन गुर देणा। गुर संगत मन्नणा प्रभ साचे दा साचा कहणा। भरम भुलेखा विच ना रहणा। अंदर वड़ मार दड़ किसे ना बहिणा। बाल अञ्याणे तन मन साचा धन धरया गहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुकाए लहणा देणा। लहणा देणा आप चुकाए। सच हिसाब विच मात कराए। सच्ची कताब विच रिहा लिखाए। ना कोई अज़ाब ना दुःख उठाए। पूर कराए काज, तेरे

नावें साचा धाम लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि मन्दिर दे विच टिकाए। तेरा रूप अगम्म कर्म अपार है। सच तेरा धर्म विच संसार है। सृष्ट सबाई रही झक्ख मार है। कलिजुग जीव भुल्ले सर्ब गंवार है। भरया आत्म इक्क हँकार है। घर साचे विच्चों होए बाहर है। ना कोई दर ना द्वार है। भौंदे फिरन करन हाहाकार है। बिन गुर पूरे कवण पावे सार है। ना होवण कारज पूरे, दरगाह पैंदी साची मार है। साचे कम्म रहण हदूरे, पल्ले नाम ना इक्क करतार है। धर्म राए दर जायण जूड़े, अग्गे लँघणा बड़ा भार है। गुरसिख साचे सन्त जन झूलण नाम पंघूड़े, गुरसिख तेरे गल फूलण माला एका राह कलीरे लटकार है। मुख लाया शब्द साचा सग्न, आपणी हत्थीं अमृत दित्ता उत्तों वार है। तेरे नाम दीपक घर घर जगण, रसना गाउँदा रहे संसार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा खड़ा रहे तेरे दर द्वार है। जगत दुआरा इक्को रक्ख। सृष्ट सबाई कीनी वक्ख। मुल्ल कोई ना पाए, ना कोई चुकाए करोड़ लक्ख। पूरन आस सर्ब कराए तेरे दर आए नीवां होए भेट चढ़ाए फुल्ल कक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे लए रक्ख। एथे ओथे तेरा सहारा। आप बणाए तेरा इक्क सच्चा दरबारा। खर्च लगाए उप्पर पंजाह हज़ारा। आपणी हत्थीं नींह रखाए सिँघ मनजीत तेरी भस्म लगाए गारा। साचा कर्म आप कमाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक बणाए तेरा सच सच्चा घर बाहरा। सच घर बाहर आप बणाउणा। जोत सरूपी दीप जगाउणा। साचा सुत्त पारब्रह्म अचुत आपणी हत्थीं विच टिकाउणा। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, दर दर फिराउणा। साचे दर तों कढ्ढे कुट्ट, पिछे मूल ना किसे परताउणा। साचा लाहा गुरसिख साचे लैण लुट्ट, अमृत प्रभ साचे आपणी हत्थीं आप पिलाउंणा। शब्द तीर ज़बानो गया छुट्ट, राजे राणे ना किसे अटकाउणा। आपे पावे घर घर फुट्ट, भाणा विच संसार वरताउणा। गुरमुख तेरे भण्डारे सदा अतुट, चार वरन तेरे दर ते आउणा। दाणा पाणी विच्चों मात गया निखुट्ट, साची दरगाह विच बहाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सदा सुरजीत विच संसार रखाउणा। विच संसार तेरा नां। गाउँदे फिरन थां थां। सीस निवाए कलिजुग खाली गोद जिस मां। जिन्हां घर ना होवे बाल, उन्हां मिले तेरी छाँ। साचा दान दिया गुर पूरे। बाल अञ्याणे वड सूरबीरे। पूर कराए धीरे धीरे। सर बणाए अमृत साचे नीरे। चारों तरफ जत्त तत्त दी आप लगाए लकीरे। एका चिट्टा बाणा सिर साचा शब्द बन्हाए सिर ते चीरे। ना कोई मारे अस्त्र शस्त्र, पी अमृत साचा सीरे। क्या कोई पछाणे सुघड़ चतुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए गुरसिख इक्क दूजे दे साचे वीरे। ना सिख्या देवे बाल, नाम वस्त रक्खणी संभाल। कलिजुग अन्तिम ना होया कंगाल। तिन्नां जुगां दी निभ गई नाल। त्रेता राजे जनक घर अज्ज पूरी होई घाल। वस्सया

आपणे साचे घर, होया स्वास सुखाल। खुल्लया मेरा साचा दर, टुट्टया जगत जंजाल। प्रभ अबिनाशी ल्या वर, पहली मारी इक्को छाल। अमृत नाता साचे सर, आप सुहाया आत्म साचा ताल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभ गई नाल। चरन प्रीती सेव कमाई। साची रीती जगत चलाई। आत्म अतीती इक्क रखाई। काया होई सीतल सीती, तृखा अग्न बुझाई। मनजीत सिँघ गया जग जीत, विच जोती मेल मिलाई। सारे रल मिल सन्त जनो, पूरे गुर नूं दियो वधाई। रसना गाओ धन्न धन्नो, सतिजुग साची बणत बणाई। झूठा मोह जाल जगत त्यागो मन तनो, राखो गुर चरन सरनाई। साचा सुणो शब्द कन्नो, सिक्ख दे रिहा समझाई। आपणा बेड़ा आपे बन्नो, सोहँ रसना गाई। सतिजुग दे साचे चन्न चन्नो, करो मात रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। किसे जीव भेव ना पाया। करे कराए जुगो जुग आपे आप रघुराया। आपे तोड़े आपे जोड़े, आप चढ़ाए शब्द घोड़े, वाग आपणे हत्थ रखाया। गुरमुख साचा घर साचा लोड़े, नार सुहागण हरि जी साचा घर व्याहवण आया। सन्त जनां मिल मंगल गाया। सोलां मग्घर काज रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे रल मिल दिओ वधाया। साचे घर वजदी रहे वधाई। गुरसिख गाउँदे रहण चाईं चाईं। सिँघ मनजीत जोत सरूप जाईं सभनी थांईं। पाल सिँघ नूं संग रलाईं। उंगली फड़ के भज्जा जाईं।
३५३ गुर तेग बहादर दी तृखा बुझाईं। पाल सिँघ नां रखा के कलिजुग फेरा पाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां ३५३
०३ एका धाम रिहा साचा मेल मिलाईं। गुर पूरा मेल मिलांयदा। जोत सरूपी खेल रचांयदा। जोत सरूपी दरस दिखांयदा। ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतांयदा। वरते चाल जगत निराली। कोए कुन्ट ना रहे खाली। किसे फल ना रहे डाली । किसे मुख ना रहे लाली । किसे कुक्ख ना रहे बाली । कलिजुग होणा भक्ख ना कोई रहे खाली । अन्तिम कलि आप दलाए जिउँ दोफाड़ी दाली। गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म जोत जगाए जिउँ दीपक जगे दीवाली। आत्म अन्धेर सर्ब मिटाए, मिट जाए कलिजुग तेरी घटा काली। गुरसिक्खां हरि जोत सरूपी तनक लगाए, ना कोई मंगे विच दलाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबार निहकलंक नरायण नर अवतार कोई ना रहे खाली। खाली कोई ना रहणा। मिल संगत विच जिस बहिणा। झूठे तजदे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैणा। प्रभ आपे पर्दे कज्ज दए, सोहँ शब्द पहनाए गहणा। जो गजदे कदे ना वरदे, झूठा भेख विच जगत ना रहणा। गुरसिख गुर संगत मिल गुर चरन ते सजदे, साची सिख्या भाई बण बण बहिणा। जेहड़े घड़े सो अन्तिम भज्जदे, साबत कोई मात ना रहणा। ताल दोवीं हत्थीं वज्जदे, गुरसिख गुर दूर दूर ना रहणा। कोटन कोट सन्त जन पए लभ्भदे, प्रभ वेखण चार चुफेरे केहड़ी

गुट्टे बहिणा। कई सिर पैरां हेठ रक्खदे, अट्ठे पहर मूंह दे भार रहणा। गुरसिख पाओ हरि सजदे, सोहँ रसना कहणा। एका रंग चढ़ाए तन डब्ब ते, ललारी होर संसार विच कोई ना रहणा। बेमुख बह जाण वांग झग्ग दे, सोहँ शब्द जदों वहिणा। तन्दूर तप जाण काया अग्ग दे, भाणा औखा हो जाए सहणा। वेखो कलिजुग जीव दगदे, प्रभ वखाए साचे नैणां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची साचे दर ते मिल मिल बहणा। सारे मिल के जाणा बह। आपस विच ना मरना खेह खेह। सृष्ट सबाई प्रभ आपे गाहे एका गेह। गुरमुख विरला विच मात दे रहि। जोत सरूपी जोत हरि, सदा सदा निर्भय। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां साचे सन्त जनां चार कुन्ट कराए जै जै जै। सन्त जनां होए जैकारा। सोहँ शब्द चले अपर अपारा। जिस दीआं तिखीआं दोवें धारां। गुरमुखां लाए पार, बेमुखां करदा जाए ख्वारा। सृष्ट सबाई होए दो फाड़, सिर धरया साचा आरा। कलिजुग सतिजुग दोवें खिचण वारो वारा। कलिजुग पापी होया हौला, सतिजुग रहि गया भारा। अग्गों खिच्चे उत्तों मारे, कलिजुग डिग्गे मूंह दे भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारा। कलिजुग डिग्गा मूंह दे भार। ना कोए उठाए ना देवे कोई सहार। सतिजुग साचा उप्पर मारे छाल। आपणी करनी आपे भर, हुण क्यों होयउँ सृष्ट बेहाल। धुरदरगाही मैनूं मिल्या वर, तेरा तोड़ां जगत जंजाल।
३५४ ०३ हुण ना कोई जाए छलया, ना तेरी गलणी दाल। सूरज तेरा कलिजुग अन्तिम ढलया, ना रिहा सच रवाल। जूठे झूठे ३५४ ०३
माया लूठे लूण दे डलया, खर खर हड्ड मास होया विच्चों खाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त कराया आपणी हत्थीं काल। कलिजुग हेठां पया पुकारे। उत्तों सतिजुग धक्के मारे। निकल मातलोक विच्चों बाहरे। तूं कीते लक्ख चुरासी बड़े ख्वारे। गऊ गरीब मेरे दर आ आ सर्ब पुकारे। कलिजुग वरतया हरि विच मात संसारे। मायाधारी गरीबां निमाणयां दु:ख देवण भारे। तेरे दर होए निताणयां, पावीं साडी सारे। टुट्टी धीरज राजे राणयां, झूठे दसण सर्ब दरबारे। कलिजुग जीव होए रहे काणयां, साची जोत विच्चों गई मार उडारी। भुजदे जाण वांग दाणयां, घर घर पए बिमारी। समझ ना आवे वैद हकीम स्याणयां, की वरते प्रभ कारी। कलिजुग बेमुख मुहाणयां, क्यों भुल्लया हरि निरँकारी। तेरे भन्ना झूठे डाहणयां, जो बैठे बलधारी। आप उजाड़ां तहसीलां थाणयां , ना दीसे कोई बन्दा सरकारी। साचा तीर चलाया शब्द बाणयां, तत्त सभ दी जाए पाड़ी। गुरमुख विरले जाणयां, प्रभ सोहँ बीजे साची हाढ़ी। सतिजुग साचा राह चला ल्या, गुरसिक्खां करदा जाए वाड़ी। वेखो की वरतावे भाणयां, सतिजुग कलिजुग पकड़े दाढ़ी। पहलां पैरां हेठ लताड़या, फेर फड़ के चारों कुन्ट भवाए आपे लग्गे रहे अगाड़ी। वेखो सन्त जनों साचे लाड़यो, जूठा झूठा मारदा रिहा धाड़ी। सिर पाहनी एहदे विच

मारयो, इक्क इक्क पुट्टो वाल दाढ़ी। इस दा वसदा घर उजाड़यो, विच मात लाई बैठा फुलवाड़ी। ना कोई जीव जन्त रिहा पहाड़यो, लेखा देणा पए अगाड़ी। आपणी हत्थीं गुरसिख एहनूं साड़यो, हरि आप आए बण के मौत लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी सन्त जन लाए साची फुलवाड़ी। सहिंसा सागर गहर है । गुर दर वरते कदे ना कहर है। गुरसिख मंगदा रहे मेहर है। उत्थे ना कोई मेर तेर है। ना कोई घोड़ा ना कोई शेर है। गुरसिख आत्म तेरी दलेर है। जेहड़ी पापां नाल करदी रहन्दी भेड़ है। गुर पूरे दे वसे सच्चे घर, कर लैंदे आपणा नबेड़ है। ना मरन कलिजुग पापां अग्गे, आप मुकाउँदे चुरासी गेड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध जेवड अवर केहड़ है। सहिंसा रोग वड्डा दुःख। अट्ठे पहर लैण ना देंदा सुख। हड्ड मास नाड़ी पिंजर रिहा धुख। दिवस रैण रसन पुकारे, कर दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उतरे तेरी भुक्ख। गुर पूरे दर दर्शन करना। बेमुखां कोलों सदा डरना। साचा बचन कदे ना हरना। झूठी मौते पैणा मरना। बिन गुर पूरे औखा हो जाए तरना। ना कोई बहावे खिच्च सरना। ना कोई समझावे उठ मार छाल मेरे भलवाना हरना। आपे रक्खे आपणी छावें, कलिजुग धुप्प विच ना सड़ना। क्यों होयउँ निथाविउँ
३५५
०३
निथावां, प्रभ साचे हत्थ सिर तेरे ते धरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम बाहों तेरी फड़ना। इक्क दर इक्क दुआरा। इक्क घर इक्क घर बाहरा। हेठां कोठा उप्पर चुबारा। थल्ले वसे मोता सिँघ उत्ते सन्त मनी सिँघ तेरा मुनारा। क्या कोई घर साचे वजावे झूठी किंग, प्रभ साचा राग ताल सुणने वाला। मातलोक जामा धारे विच घविंड, पिण्ड सारा कढ्ढदा रहे गाल्हां। वेखो सारयां मूधी होई टिंड, अक्खीं वेखदयां निकलया दवाला। किसे अक्खीं वेखणा मिले ना पिण्ड, बाकी तारन वाला रहि गया हाला। चारों तरफ गए खिण्ड खिण्ड, इक्ठे होए ना भनोईए कोल साला। सारयां पाया इक्को वार चाला। दूजी चाली फेर कराउणी। माझे वाली हद्द टपाउणी। सतिजुग तेरी कंध लँघाउणी। ब्यासा अद्धविचकार रखाउणी। मस्तूआणे छाउणी पाउणी। गुर संगत साची फौज रखाउणी। सोहँ शब्द दी तीर कमान चलाउणी। सृष्ट सबाई इक्को नाम सच्ची अड़ाउनी। गुरसिक्खां प्रभ कर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं साची दात आप फड़ाउणी।

अज्ज आई दूजी राती। उत्तों बैठा मारे थल्ले झाती। की करदे विच मात सन्त मेरे राती। साचा लेखा ठीक कराया, कुछ रहि गया ना बाकी। सच महल्ल आसण लाया, इक्को दिसे ताकी। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, सवाई बैठा उप्पर छाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर त्रिलोकी नाथी। उत्ते छाती हरि सवाया। लोकमात नाम रखाया।

ना गल्लीं बातीं हरि खेल वरताया। ना कोई बूझे बूझ बुझाती, आपणा भेव हरि आप छुपाया। आप बणाए साचा नाती, चरन दुआरे खिच्च लै आया। मातलोक दी सच सुगाती, विच सचखण्ड आप बहाया। जन भगतां पुच्छे आपे वाती, जुगो जुग खेल करदा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाया। खेल किया जगत अपार। सतिजुग तेरी बध्धी साची धार। किया आपणा सच विहार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। गुरसिख साचा लेखे लाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी आप अपार। साची तेरी धार, जगत विहार है। साची तेरी कार, कर्म रिहा हरि विचार है। साची तेरी सरकार, लेखा लिखे अपर अपार है। साची तेरी सिक्दार, साचा शब्द पहरेदार है। साची तेरी तार, छेती करे मेल कोटन कोट पन्ध कर के पार है। साची तेरी एका नार, गुरसिक्खां संग करे प्यार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका सच्चा भतार है। सच्चा तेरा रंग इक्क मजीठ है। सच्चा तेरा संग, गुर संगत ल्या डीठ है। वसे अंग संग बेमुख भन्ने जिउँ कौड़े रीठ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे पीसणे रिहा पीठ है। साचा पीसना आप पिठाए। साचा सीसना विच टिकाए। सच जगदीशना साची चक्की आपणे हत्थ चलाए। गुरसिख तेरी कोई करे रीस ना, चारों कुन्ट प्रभ दए हिलाए। दर साचे लग्गे कोई फीस ना, सोहँ शब्द जन रसना गाए। ना कोई शरअ ना हदीसना, बत्ती सपारे ना किसे पढ़ाए। ना कोई वेद पुरान ना गीतना, एका शब्द कन्न सुणाए। ना कोई खाणी ना कोई बाणी ना कोई जगत भगत अतीतला, साचे सन्त आप उपजाए। गुरसिक्खां बणया साचा मीतला, अचरज खेल कलि वरताए। रसना गाओ सुहागी गीतला, प्रभ साचा साचे दिन फेर ल्याए। कलिजुग अन्तिम होया भय भीतला, मातलोक विच्चों बाहर कढाए। सतिजुग आए साचा सीतला, जन भगतां आत्म ठंडां पाए। जो वरते सतिजुग साची रीतला, पहली माघ सर्ब लिखाए। सभ दी परखी जांदा नीतला, ना भेव कोई छुपाए। गुरमुख विरला प्रभ दर आए करदा दीदना, बेमुख जांदे मुख भवाए। गुरमुखां चढ़या चन्द साचा ईदना, अज्याणा बाला सिँघ मनजीत भेट चढ़ाए। सारे गाओ सुहागी गीतला, सतिजुग साचे दए वखाए। लहणा देवे जो पिच्छे कीतला, सच आप हिसाब मुकाए। गुरसिख मानस जन्म जग जीतला, प्रभ अबिनाशी चरनी सीस झुकाए। जन भगतां राखो चीतला। थिर रहण कोई ना पाए। ना कोई करे काया सीतला, कलिजुग अग्नी हरि तपाए। किसे घर ना बलदा दीपला, जोती सभ दी आप खिचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच आप समाए। आपणा भाणा हरि चुकाउणा। कलिजुग तेरा भेख वेख नेत्र पेख तेरा झूठा राज मुकाउणा। बण बण बैठे जो औलीए पीर शेख़, बगल कुरान किसे रहण ना पाउणा। एका दिसे हरि साचा एक, ईसा मूसा नष्ट कराउणा। एका राखो गुर चरन

टेक, रूसा चीना सभ नष्ट कराउणा। गुरसिख तेरे तन ना लागे सेक, शब्द वाड़ हरि आप कराउणा। कराए करे हरि एका एक, मक्का मदीना पहले ढाउणा। आपणी हत्थीं करे छेक, पताल नगरी अमरीका रहण ना पाउणा। आपणी अक्खीं लैणा वेख, चिट्टा फरंगी विच ख़ाक रलाउणा। प्रभ जोत धारया भेख, पहली माघे तंग कसाउणा। सृष्ट सबाई लिखाए लेख, पंचम जेठ सच्चा चरन विच रकाब आप टिकाउणा। प्रभ अबिनाशी करदा जाए लेख, सेठ सिठाणयां वड महाराणयां सोयां आप उठाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए जो विच मात वरताउणा। लेखा लिखावे साचा हरि। आपणी करनी जाए कर। सिर ना रक्खे किसे दा डर। मंगण ना जाए किसे कोलों कोई वर। करोड़ तेतीस देवी देवत रहे चरन पड़। शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेश गणेश, प्रभ साचे दे सिर चवर रहे कर। कबीर ध्रू होए दरबान, दर दुआरे अग्गे रहे खड़। प्रभ अबिनाशी अग्गे बैठा सच अस्थान, कोई ना जाए अंदर वड़। गुरसिख साचा बैठे विच बबाण, प्रभ छाती उत्ते जाए चढ़। पवण सरूपी जोत समाण, छड झूठा गई किला काया गढ़। जांदी वार ना दिस्सया कोई निशान। किसे ना खड़या बाहों फड़, क्यों ना रोवे बाल निधान। किधर उडया जेहड़ा अंदर बैठा वड़, झूठी काया होई सुञ मसाण। सिँघ मनजीत सुत्ता मार दड़, प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी ल्याया सच बबाण। उठ सपूत उत्ते चाढ़ तेरा झुलदा जाए नाम निशान। सच घर जाए आपे वड़, निहकलंक तेरा बणाए सच अस्थान। चारों कुन्ट आपे खड़, आप सुहाए भूमिका थान। जिथ्थे लगाए विच मात तेरी जड़, सृष्ट सबाई सुणाए कान। आप समझाए अंदर वड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा पार लँघाया, आप फड़ाया आपणा लड़। आपणा लड़ हत्थ फड़ाया। साचा लाड़ा जगत बणाया । शब्द घोड़ी चाढ़ वखाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन बहाया । सरन बहाए सर्ब गुणवन्त। माण दवाए विच जीवां जन्तां। ताण रखाए हरि साचा कन्ता। निशान बणाए बण जाए साची बणता। साचे रंग रंगाण आप रंगाए आपे जाणे गुणी गुणवन्ता। सत्त रंग दए लिखाए, तीन लेख उप्पर लिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता। सच निशान आप बणाउणा। सति धर्म झण्डा आप झुलाउणा। तीजा लेख नाल रखाउणा। सच सच हरि वेख शब्द धागे नाल सिवाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी बणत आप बणाउणा। चार कुन्ट चार चक्के। चारों तरफ पैण धक्के। पहले जाए मदीने मक्के। पीर औलीए शमस गौंस बाहर हक्के। फेर वज्जे शब्द धौंस मारे बूरे कक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ भाणा मात वरताए ना कोई रोक सके। आपे जाए मक्के मदीने। आप मिटाए मुहम्मदी दीने। शब्द तीर मारे खिच विच सीने। साचा कर्म आप कराए, रूस रुलाए नाल चीने। दूजा कदम फेर उठाए, कलिजुग

जीव मरन ध्याए, रहे कुरलाए ना लभ्भे जल धार, ना कोई करे प्यार ना पाए ठंड सीने। पहली कूट दूर दुराडी। पंचम जेठ पैणी वाढ्डी। प्रभ अबिनाशी बणना गाडी। साचा भार उठाए चुक चुक इक्क इक्क हाडी। बेमुखां सार आपे पाए, फड़ फड़ बाहर बाहों जाए काढी। वहन्दी धार इक्क वहाए, बेमुख पिछे रहि गए फाडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट आप चुकाए वारो वारी आडो आडी। दूजी कुन्ट डेरा लाउणा। हेरा फेरा हरि कराउणा। शब्द घेरा गिर्द रखाउणा। बाल बिरध सर्ब उठाउणा। जोती जोत सरूप हरि बली बलवान सौण ना देणा। अचरज खेल मात कर, एका अग्न सीने आप लगाउणा। उत्ते अग्नी तेल धर, शब्द फुंकारा आप लगाउणा। दोहां धिरां दा मेल कर, विच बबान आप बिठाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न मेघ साची तेग इक्क वार वरसाउणा। तीजी कूट तीर तुफंग। सृष्ट सबाई होए नंग। शब्द सरूपी प्रभ मारे डंग। करनी करे हरि सूरा सरबंग। भरनी भरे कलिजुग जीव झूठा वजायण मृदंग। बीर बेताली आए दरे, आपणे हत्थ लैण रंग। खाली प्याले प्रभ साचा भरे, शुरू कराए साचा जंग। अड्डो अड्डी होण सिर धड़, वक्ख वक्ख दिसण अंग। उच्चे टिब्बे कोई रिड़े, कोई वहे जल धारा गंग। उलटी लट्ठ एका गिड़े, पीड़ी जाए करीर जंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजी कूट नार सबाई कराए रंड। घर घर रोवण रंडीआं नारां। मूंह चुक्क चुक्क वेखण डण्डीआं, किथे आवण साडे भतारा। प्रभ साचे पाईआ वंडीआं, रण भूमी सुत्ते पैर पसारा। कोई वढाई बैठे कंडीआं, सिर पैर ना होया किसे प्यारा। चारों तरफ चमकण चण्डीआं, ना होए किसे छुटकारा। अचरज खेल कराए दाता वरभण्डीआ , ना कोई पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणी सारा। घर घर होवे रंडी नारी। प्रभ साचे की कीती कारी। सुहागण रात विच मात ना आए दूजी वारी। चार कुन्ट प्रभ साचा आपणी हत्थीं फिराउँदा जाए शब्द बहारी। गुरमुख साचे सन्त जन विच्चों फड़ फड़ बाहर कढ्ढी जाए नितारी। आप बणाए साचे चन्न, सतिजुग देवे सच्ची सरदारी। जन भगतां बेड़े देवे बन्न्ह, ना होए कोई ख्वारी। सच्चा देवे माल नाम धन्न ना लग्गे सन्न्ह, ना कोई लुट्टे चोर यारी। गुरमुख साचे पल्ले लैणा बन्न्ह, बण सच्चे वपारी। साचा शब्द सुण लैण कन्न, रक्खणा विच काया महल्ल अटारी। हत्थीं बन्न्हे साचे गन, प्रभ चरन करन निमस्कारी। प्रभ सरन अरपन मन तन, बचन मोड़े ना कोए सिक्ख बलकारी। साचे घर लग्गे डन्न, ना करदा किसे हुदारी। खड़ी रहण ना देवे किसे दी फन, जूठे झूठे रहे फूक फुकारी। प्रभ अग्न जोत लगाए तन, जो दर आए जीव हँकारी। प्रभ भाग लगाए तेरी काया छप्परी छन्न, प्रभ वसे तेरी आत्म सच्ची महल्ल अटारी। गुर दर निकले झूठा जन, कढ्ढे हउमे विच्चों बिमारी। भाण्डा भरम देवे भन्न, वखावे वस्त

सच्ची हरि थारी। मिटाए अन्धेर आत्म अन्नू, जगाए जोत अपर अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाउ चरन सरन बलिहारी। सन्त जनां हरि पन्ध मुकाया। दिवस रैण जो रहे ध्याया। अट्ठे पहर धूढ़ी लाया। सवा पहर बिसराम रखाया। जेठ दुपहर बलदी अग्न काल तन लगाया। कलिजुग तेरा झल्लदे रहे कहर, चारों तरफ लकीर लगाया। प्रभ अबिनाशी कीनी मेहर, मातलोक विच जामा पाया। अन्तिम कलिजुग ना लाए देर, जोत सरूपी होए सहाया। जोत सरूपी पाए खैर, आओ सन्तो चल सरनाया। प्रभ अबिनाशी गम्भीर गहर, भेव किसे ना पाया। घर साचे दी कर लओ सैर, सच बगीचा हरि जी लाया। दूजा वड़न ना देणा गैर, मदिरा मास जिस रसन लगाया। सच्चा नगर खेड़ा वसाए शहर, मनजीत सिँघ जिथ्थे डेरा लाया। ना कोई आवे ऐर गैर, शब्द डण्डा प्रभ मगर लगाया। गुरसिक्खां नूं ल्याए घेर, हरि साचे दा खेल वखाया। आप मुकाए मेर तेर, सच विचोला आप बणाया। झूठा प्याला ना पीणा ज़हर, दे मति आपणी समझाया। जन भगत जाण एथे ठहर, शब्द सोहला हरि सुणाया। ना कोई तज़ ना कोई लहर भोला भाला हरि रखाया। सृष्ट सबाई ढेह ढेह होए ढेर, एथे कोई रहण ना पाया। ना कोई माली ना कोई महर, झूठा दिसे जगत सबाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक हरि रघुराया। साचे सन्तां सच संदेश। प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी भेजे विच्चों माझे देस। जोत सरूपी जामा धारे किया अवल्लड़ा भेस। निहकलंक नरायण नर अवतारे, गुरमुख साचे विच प्रवेश। बेमुख ना जानण प्रभ दी सारे, दूरों वेखण खुल्ले केस। प्रभ अबिनाशी दी साची कारे, ना कोई जाणे दर दरवेश। आपे जाणे आपणी धारे, जो करदा रिहा हमेश। एका एक सच्ची सरकारे, ना सुणे किसे उपदेश। आपे रहे आपणे सहारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर पूरे को सदा आदेस। माझे देस वज्जी वधाई। उठो सन्तो बण जाओ राही। अग्गों हो के मिले साचा माही। सोहँ ढोला साचा गाओ, जाओ चाईं चाईं। शब्द बोला एका नांउँ, हरि हरि वेखे सभनी थाँईं। एका दिसे चिट्टा चोला, भरम भुलेखा कोए नाही। ना एह झूठा ना एह गोला, पूरा कला सोलां साचा माही। ना कोई देवे धक्का ना कोई देवे झकोला, आपणीआं आप हिलाए बाहीं। प्रभ अबिनाशी ना कोई जाणे भोला, सर्ब जीआं विच रिहा समाई। क्या कोई करे प्रभ साचे तों उहला, अट्ठे पहरे रिहा हिसाब लिखाई। होया दर साचे दा गोला, लक्ख चुरासी गेड़ मिटाई। मैल पापां वाली धो लै, रंगण नाम सच चढ़ाई। आत्म बीज साचा बोअ ला, दरगाह साची बैठा थाँईं। अमृत मज्झ साची चो ला, साचा सीर मुख चवाईं। साचा शब्द बणाए होला, चीर रंग नाल रंगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दिवस रैण सदा ध्याईं। माझे देस खुल्लया दर। चल के आवण साचे घर। सन्त जनां भगतां नूं देवे वर। नाम झोली देवे भर। जोत

सरूपी किरपा कर। वड वड भूपी आवे डर। बाहर द्वारों रहण खड़। अग्गे दिसे साचा गढ़। प्रभ अबिनाशी बैठा दड़। दो हत्थीं बेमुखां दी वढ्ढी जाए जड़। कोई ना सके प्रभ सच्चे अग्गे अड़। कलिजुग जीव पत्तीआं वांगू जायण झड़। झूठे जूठे विच तत्तां जायण वड़। माया लूठे प्रभ दर कढ्ढे बाहर कन्नो फड़। हत्थीं फड़ाए खाली ठूठे, मंगो घर घर। मातलोक पुट्टे गए बूटे, जो लाए फड़ फड़। कौण देवे विच पंघूड़े झूटे, प्रभ अबिनाशी छड्डया लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा सच घर जाए वड़। सन्त जनां दे जणाए। शब्द धुन हरि उपजाए। चारों तरफ चुण चुण सुत्तयां लए जगाए। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, कलि की खेल वरताए। सृष्ट सबाई लए सुण, मातलोक हरि जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नाउँ रखाए। नाउँ रख्या विच जहानां। जोत सरूपी पहरया बाणा। अचरज खेल किया महाना। ना कोई जाणे राज राजाना। वरते खेल की भगवाना। कलिजुग मिटे किवें निशाना। सतिजुग आवे वड बली बलवाना। सच धर्म दा सिक्का चलावे प्रभ अबिनाशी बणे सच सुल्ताना। कर्म धर्म सच लेख लिखावे, साचा शब्द सुणाए काना। झूठे भरम सर्ब चुकावे, साचा शब्द वजावे नाम दमामा। आपणी खेल आप रचावे, जिउँ द्वापर कृष्ना काहना। आपणी हत्थीं वाग उठावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। जगत पित जगदीश अगम्म अपारया। सच कर्म तेरा क्या कोई करे रीस

हरि निरंकारया। भेव मिटावे बीस इकीस, अचरज खेल वरते विच संसारया। मिटाए राग छतीस, सीस सेहरा आप बन्न्हा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बणत आप बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राग रागणी ना कोई अलाए। स्वांगी स्वांग ना कोए रचाए। दर दर घर घर नच्च नच्च ना कोए जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नांउँ सृष्ट सबाई इक्क जपाए। एका एक हरि राह चलाए। साचा मार्ग सतिजुग लाए। चार वरन इक्क सरन रखाए। ना कोई जात पात ना बरन आख सुणाए। एका मात धरत सर्ब बणाए। दूजा नात श्री हरि राए। तीजा साथ आप हो जाए। चौथे गाथ सोहँ जगत चलाए। पंजवीं माथ गुरसिक्खां लेख लिखाए। छेवें रक्खे सिर हाथ, लज्ज पत्त आपणे हत्थ रखाए। सतवें देवे धीरज जति, सति किसे टुट्ट ना जाए। अठवें देवे साची मति, नाम तत्त विच रखाए। नावें फड़े नत्थ आपणे हत्थ, जिध्धर चाहे लए भवाए। दसवें राह साचा दस्से समरथ, सच दुआरे बूझ बुझाए। सच दुआरा आप बुझाउणा। आत्म अन्ध अन्धयारा दूर कराउणा। सच अन्गयार जोत जगाउणा। शब्द शंगारा तन पहनाउणा। नाम हारा गल लटकाउणा। दु:ख लग्गे ना भारा, दरगाह साची गुरसिख अग्गे जाणा। आपे रिहा कर्म विचारा, प्रभ अबिनाशी सुघड़ स्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क वखाए सच टिकाणा। सच धाम सदा अस्थूल। साचा

पलँघ ना कोई पावा ना कोई चूल। साचा रंग गुरसिख ना जाणा भूल। होए सहाई सदा अंग संग, शब्द पंघूड़े रिहा झूल। मानस जन्म ना होए भंग, प्रभ चुकाए साचा मूल। साचा शब्द चढ़ाए कंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए सूलीउँ सूल। सच दुआरा सच घर वेख। जिथ्थे वसे हरि वसेख। जोत सरूपी ना कोई दिसे रंग रेख। वड वड भूपी कलिजुग भुलाए कर विच मात अवल्लड़ा भेख। साचे मार्ग विरला गुरमुख आए, जिस लिखाए साचे लेख। अमृत आत्म प्रभ इक्क प्याए, जन सन्त साचे नेत्र पेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे औल्या पीर शेख़। औलीए शेख़ ना किसे विचारया। जूठे झूठे झूठीआं कताबां रहे वेख, प्रभ अबिनाशी खेल अपारया। आप लिखाए अगले पिछले सदा लेख, तोड़े माण वडे हँकारीआ। सदी चौधवीं पुट्टे आपणी हत्थीं मेख, पुट्टी जड़ ना कोई लगा रिहा। कलिजुग तेरी मिटदी जाए रेख, सतिजुग पैरां नाल घसा रिहा। गुरसिख लैणा नेत्र पेख, भाणा हरि साचा वरता रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थांउँ थांईं सृष्ट सबाई आपणे आप हिला रिहा। सृष्ट सबाई दए हुलारा। इक्को लग्गे धक्का भारा। बेमुख डिग्गण मूंह दे भारा। उत्तों वज्जे शब्द कटारा। गुरसिख वेखण प्रभ साचे दा साचा खाड़ा। बेमुख अग्गों कढ्ढण हाढ़ा। चरनां नाल छुहावण दाढ़ा। अग्गे जोगा ना कोल किसे दे भाड़ा। धर्म राए अग्गे बैठा चबाई जांदा विच दाढ़ां।
३६१ ०३ बेमुख अग्गे कदम उठाउँदा, तपया दिसे तन्दूर जिउँ लग्गी अग्न हाढ़ा। पिछे उठ उठ बेमुख वल मां दे जांदा, क्यों छड्डु आई माता मैनूं विच उजाड़ां। ना कुछ खांदा ना कुछ पींदा, अग्गों मिलदीआं झाड़ां। मैं निज तेरे घर जम्मदा, निज जगत विच जींवदा, मेरा लेख होया माढ़ा। धृग धृग मां संसार तूं जिस ना दस्सया राह, ना प्रभ साचे घर वाड़ा। कवण मेरी अन्त पकड़े बांह, घर बाहर कढ्ढु तूं किया बन्द कवाड़ा। झूठी माणी मैं तेरी छाँ, अग्गे लगदी अग्ग विच बहत्तर नाड़ां। मुड़ के कुख तेरी विच आवां ना, ना दुःख पावां ना तन नूं साड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव आप मिटाए मगर लगाए अगम्मी धाड़ां। गुरसिख साचा उठ उठ जागे। प्रभ अबिनाशी चरन लागे। पूरे होए मात विच भागे। वेले अन्तिम अन्त प्रभ अबिनाशी दिसे खड़ा आगे। नाल ल्याए साध संगत हँस बणाए कागे। आप चढ़ाए साची रंगत गंवाए गीत सुहागे। ना दर किसे विच गया मंगत, साक सनबन्धी सन्त जन घर आए सारे भागे। दर्शन करन ल्या चारों तरफ मेरी लागे। प्रभ का भाणा ल्या जर, मात धोए आपणे दागे। सच भण्डारा ल्या भर, ना तोट आवे आगे। हरि दुआरा ल्या वर, गुर संगत तेरे आगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत ना मोया सोया सदा जहान विच जागे। जीवे जागे साचा लाल। उत्ते धरया प्रभ इक्क चिट्टा रुमाल। तिल फुल दित्ता सच्चा धन्न माल। हस्सदे गए बुल्ह, फुल्ल

टुट्टा ना अजे डाल। सच दुआरा धुरदरगाही गया खुल्ल, तोड़ गया जगत जंजाल। कोई जीव ना जाए भुल्ल, प्रभ खड़या गोद उठाल। मातलोक ना गया हुल, लग्गा फल विच जहान। भाग लगाया आपणी कुल, झुलया इक्क सच्चा निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी आप महान। प्रभ हत्थ वडयाईआ। ना चले किसे चतुराईआ। क्या कोई किसे समझाईआ। आपणी बूझ किसे ना पाईआ। भुल्ली रहे सर्ब लुकाईआ। अन्तिम लेखा हरि आप चुकाईआ। बैठा लिखे थाउं थांईंआ। ना कोई पर्दा ना उहला हरि रखाईआ। काया चोला सर्ब तजाईआ। विच अग्नी दे जलाईआ। साची जोत विच्चों उडाईआ। जांदी नज़र किसे ना आईआ। वैद हकीम बैठे रहि गए फड़ के बाहींआ। केहड़ा अंदर वड़या चोर, दर द्वार कोई नज़र ना आईआ। काया कोठड़ी अन्धेरा घोर, किवें वस्त साची हत्थ आईआ। प्रभ अबिनाशी साचा चोर, द्वार दसवें विच्चों बाहर नठ्ठ जाईआ। ना कोई जाणे होर, जिस दी वस्त उहो घर आपणे लै जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त जोती जोत मिलाईआ। ना एह काया ना एह धड़। ना एह किल्ला ना एह गढ़। प्रभ अबिनाशी साचा चोर अंदर गया वड़। जांदा आउँदा नज़र ना आए, पौड़ी पौड़ी जाए चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बाहों ल्या फड़। गुरसिख साचे बाहों फड़या। किथे भन्न के जाए मेरा घाड़न घड़या। छोटा बाल जगत ना जाण, मैं दर तेरे अग्गे रहूं अड़या। पूरा सतिगुर मैं ल्या पछाण, छाती उप्पर रहूं चढ़या। होया मैं वड बली बलवान, तोड़ीं जाऊँ किल्ले गढ़या। मात पिता दी रखूं आण, जिस लड़ लाया प्रभ साचे अड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छुट्ट ना जाए मनजीत सिँघ लड़ तेरा फड़या। रोणा धोणा झूठा विहारा। प्रभ साचे दे जाउ चरन बलिहारा। दर घर साचे आए पाए सारा। काया देही भाण्डे काचे, टिकाई वस्त इक्क अपारा। आप ढालया साचे ढांचे, इट्ट बणाई लगाई सच मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसाए सच्चा घर बाहरा। जगत प्यार झूठा मोह। बिन हरि पूरे अग्गे ना मिलदा को। एथे सर्ब रहि जाण, नाल ना लग्गण ना सके कोई छोह। पहले पहर उठ उठ वेखण, पिछे बहिण अक्खीं धो। दूजे पहर वरते कहर, उठो छेती काहनी लओ जो। तीजे पहर ना लाओ देर, कवेला रिहा हो। चौथे मिटी ढेर, घर विच छड्ड जाए बो। झूठे साक सनबंधी बहिण दूर हो। कोलों मुशक आवे मन्दी, वेख वेख कालजे पैंदी खो। चिट्टे दिसण दूरों दन्दी, अग्गे हो कोई ना सके टोह। मात पिता भैण भाई सभ पुकारन बाहर कढ्ढो छेती ना होए सहाई को। ना होए सहाई ना सहारा। झूठा दिसे जगत प्यारा। प्रभ साचे दा सच वरतारा। दो जहानां होए रख्वारा। साची काहनी सचखण्ड लै जाए ना जाणे कोई भारा। विच वरभण्ड लाज रखाए, आप बहाए चरन दुआरा। मात पिता दिल ठंड रखाए, नेत्र

नीर ना चले फुहारा। आत्म साची गंढु बन्नाए, रोगां सोगां करे किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बख्शे चरन प्यारा। माता मनजीत सदा सुख जाण। सदा सुरजीत तेरा बाल अञ्याण। हरि साचा बणया मीत, संग लै आया सन्त सुजान। वेला हत्थ ना आवे जो जाए बीत, करे कराए श्री भगवान। सदा सदा गया जग जीत, झुलदे रहण निशान। सतिजुग चलाई साची रीत, क्रिया कर्म कर्म क्रिया साची कर मुड़ घरां नूं आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे दर्शन देवे आण। भाग लगाया माता कुक्ख। उज्जल होया जगत मुख। सच धर्म दी साची मां सुक्खणा रही सुक्ख। साध संगत मैनूं दयो वधाई, मैं सुक्खणा रही सुक्ख। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, मनजीत दा लथ्था दुःख। मैं हस्सां चाईं चाईं, मेरी आत्म आया सुख। प्रभ अबिनाशी चुकया आपणी बाहीं, ना चुकया किसे मनुक्ख। धुरदरगाही आया सांईं, आप उखेड़या उलटा रुक्ख। औसीआं पाईं काग उडाईं, विच दरगाह पुत्त आपणे दा वेखीं साचा सुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाई, भाग, लगाया तेरी कुक्ख। भाग लगाया मात सुलक्खणी। तेरी गोद होई नहीं सक्खणी। तेरी लाज प्रभ साचे चार जुग विच रक्खणी। चार वरन तेरा नाम ध्यायण, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खणी। साचा सीर मुख चवाया। बत्ती धार प्रभ दे बख्शाया। आत्म अधार इक्क रखाया। शब्द अस्वार आप चढ़ाया। तेरी हत्थीं गुर पूरे आप नुहाया। बाहों पकड़ ल्या लपेट, चिट्टे चोले विच टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कुठाली विच तपाया। सच कुठाली आपे पाए। सोहँ शब्द दी फूक लगाए। काया तन वांग रूं जलाए। भम्बल भूसे खाए धूं, विच अस्मान दे जाए। गाउँदा तूं ही तूं, सच मिली तेरी सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभनी थांए। उडया धूं रलया पवण। जावे तीन लोक विच गवण। साधां सन्तां देवे ना सवण। उठ उठ वेखण सुनेहड़ा देवे कवण। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रसना सावण। सड़या तन होया अन्गयार। लालो लाल जिउँ कुठयाली सुन्यार। प्रभ अबिनाशी रंगण चढ़ाए, सोहँ सुहागा उप्पर डार। गुर साचा कंगण बणाए, गुर संगत गल पाए हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख पूरे किया प्यार। किया प्यार हरि जी हरि। सच विहारा दिया कलि कर। निर्मल जिया अग्गे धर । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं चुकाए मौत सरूपी झूठा डर । मौत कोलों मूल ना डरना । अन्तिम वेले जिस ने वरना। बहे कोई ना विच मात मार के धरना। वहिण मौत दा सदा वहे, अग्गे कोई ना एहदे अड़ना। चारों तरफ करदी जाए खै। साहमणे हो किसे ना लड़ना। गुरसिख साचा प्रभ चरनी जाए ढैह, अन्तिम आए बाहों जिस फड़ना। आप बहाए साची थांए, ओथे होर किसे ना वड़ना। दरगाह साची साचा नाएं, गुरसिख साचे हरि आपे आए खड़ना। महाराज

३६३ ०३

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जोड़े आपणे लड़ना। साची सिख्या लैणी मन्न। आत्म आपणा लैणा बन्न्। जगत भुलेखा झूठा लेखा कढुणा जन। जे कोई आखे माढ़ा होया, कहणा धन्न धन्न। साचा सुत्ता लाड़ा होया, गुरसिख बण जंञ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ आप चढ़ाया। जोत सरूपी हत्थीं गाना बन्न्। हत्थीं गाना आप बन्न्हाया, शब्द चीरा इक्क रंगाया। नाम हीरा विच टिकाया। सच कलीरा तन पहनाया। साची डोली आप चढ़ाया, कलिजुग बोली दे व्याहया। कलिजुग होली दे खिलाया। लहू मिझ दा घाण वहाया। खान पठाण सर्ब उठाया। वज्जण वांग वधान, इट्ट नाल इट्ट देण खड़काया। आपे जाण जाणी जाणे, जिस ने खेल रचाया। किसे ना आवे विच पछाण, करे कराए जो मन भाया। आपे रखाए आपणी आण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दूजा कोई संग रखाया। मंगी इक्क सच्ची दात। पहली पट्टी पहली इक्क जमात। आप मिटावे पहले आत्म अन्धेरी रात। दूजा बन्न्हे चरन नात। तीजे पुच्छे आपे वात। चौथे डाले लाए पात। पंजवें नाम रखाए साचा नात। छेवें बैठा वेखे आप इकांत। सत्तवें मारे गुरमुख झात। अठवें कोए ना पुच्छे जात पात। नाम देवे साची दात। दसवें मिटाए अन्धेर काया पिण्ड प्रांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म कराए गुरसिख शांत। आप कराए आत्म शांती। प्रभ अबिनाशी जीव इकांती। जोत टिकाए जगाए बिन तेल बाती। गुरसिख साचे सन्त जनां देवे दरस सुत्तयां रातीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोए आप जगाए, खेल करे बहु भाती। खेल करे हरि न्यारा। दूरों बैठे साचे तक्कण, ना कोई आरा ना कोई पारा। ओथे कोई पहुंच ना सकण, साध सन्त थक्क थक्क हारा। गुरमुख साचे ना अक्कण ना थक्कण, चढ़दे जाण सच दुआरा। आत्म पर्दे आपणे चक्कण। अग्गे दिसे हरि निरँकारा। नेत्र पेख ना दस्स सकण, जोत सरूपी खेल अपारा। काया काअबा गुरसिख हाज़ी वड़ जा साचे मक्कण, जिस दा ऊँचा इक्क मनारा। पंजे चोर अग्गों डक्कन, शब्द खण्डा मारीं दो धारा। दूजा ना कोई आवे चक्कण, प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़ा दोवें बांह पसारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस पाई मेरी सारा। तेरा उज्जल होया मुक्ख, सोहँ शब्द उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म दर दुआरे वसे जोत सरूपी खेल न्यारा। शब्द दात गुरसिख भण्डार है। जिस नाल चलदे दो जहानां दे सच विहार है। एथे मिले ना कोई तंगी, अग्गे पैंदा नाम अधार है। साची रीत विच मात चंगी, ना कोई दूजा वणज वपार है। साचे दर मूल ना संगी, प्रभ अबिनाशी अंगीकार है। सच्ची दात हरि दर मंगी, प्रभ लाया सच भण्डार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणया आप वरतार है। सच सन्तोख हरि गुर चरन है। अन्तिम मिटदे दुःख, चुकदा मरन डरन है। घर साचे मिलदी साची मोख, बेमुख दुखड़े अन्त भरन है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आप मिटाए आत्म दोख, जो जन आए साची सरन है। हरि चरन सच सुख विचार। हरि चरन हरि देवे नाम अपार। हरि चरन गुरमुख साचा लेवे करे साचा वणज वपार। अमृत खाए साचे मेवे, मिले फल सच्चे दरबार। जुग जुग जगत विच जीवे किरपा करे जिस अपार। लहणा देणा साचा देवे, लेखा कर सच्ची सरकार। प्रभ अबिनाशी रसन सेवे, झूठा जाणे जगत विहार। दोए जोड़ प्रभ दर नीवें, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पावे आपे सार। पावे सार हरि सुख अनन्दा। देवे शब्द धार, कर प्यार आत्म तोड़े जिंदा। साचा कर विहार, सतिजुग वरते जो वरतार। आपणी हत्थीं बन्ने धार, ना कोई भेव रखंदा। चारों कुन्ट वेखे संसार, प्रभ शब्द हलूणा देवे मार, जड़ उखड़े इक्क हुलार, ना कोई मात रखंदा। कलिजुग जीव होए गंवार, धीआं भैणां करन वपार, प्रभ साचे सुणी पुकार, साची जोत विच मात जगन्दा। गुरसिख सुहागण सुलक्खणी नार, इक्क हंढाए सच भतार, दुहागण होर सर्ब रखंदा। आपे होए पहरेदार, फिरदा रहे चार चुफार, चोर यार ठग्ग कोई नेड़ ना आंयदा। बणे आप सच्चा सिक्दार, फड़ शब्द हत्थ कटार, तिखीआं दोवें धार रखंदा। कलिजुग बेड़ा कर ख्वार, सतिजुग ल्याए विच सच्चे दरबार, दोईं हत्थीं दए प्यार विच मात धरंदा। चार कुन्ट कराए हाहाकार, बेमुखां कराए डाहढी ना होए कोई सहार, गुरसिख आपणी साया हेठ रखंदा। पूर्ब कर्म रिहा विचार, लहणा देणा सच चुकाए, ना करे कोई हुदार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका खेल हरि वरतन्दा। आपणा खेल वरतावणा। साचा लेखा शब्द आप लिखावणा। कलिजुग तेरा झूठा भेख आपणी हत्थीं हरि मिटावणा। जो कुछ वरते गुरसिख नेत्र नैणां पेख, ना देर हुण लगावणा। कलिजुग तेरी मिटदी जाए रेख, सोहँ अक्खर उप्पर घसावणा। सतिजुग तेरी लग्गदी जाए मेख, शब्द हथौड़ा इक्क तेरे सिर लगावणा। जोत सरूपी धारे भेख, शब्द घोड़ आप चढ़ जावणा। गुरसिक्खां फड़े लिखाए साचे लेख, धर्म राए सीस झुकावणा। बेमुख कलिजुग रहे वेखा वेख, प्रभ अबिनाशी सभ आप भुलावणा। भेव ना पाए कोई औल्या पीर शेख़, पढ़ पढ़ थक्के सर्ब कुराण्ना। गुर पूरा राखे गुर चरन टेक, बाहों पकड़ पार करावणा। सोहँ शब्द हरि साचे फड़ी तेग, आपणी हत्थीं सीस सर्ब कटावणा। इक्क चढ़ाए कलिजुग अन्तिम तेरी देग, लक्ख चुरासी विच पकावणा। आप मिटाउँदा जाए जूठयां झूठयां जोत सरूपी धर धर भेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरे आत्म दर दुआरे बैठा रिहा वेख। आत्म वेखे हरि विचारे। वसे तेरी काया महल्ल मुनारे। साची देवे शब्द धुन, उपजे राग अपारे। गुरसिख गुर चरन आए सुण कन्न, तेरे उतरन पापां भारे। तेरी आत्म जाए मन्न, आत्म जोत होए उज्जयारे। ना दरगाह साची लग्गे डन्न, जाए घर सच्चे दरबारे। ना होए आत्म अन्नृ, माया पाए पर्दे भारे।

आपणा बेड़ा लैणा बन्न्हु, जाए घर हरि सच दुआरे। इक्क झूठा रहि जाए तन, जिस संग करे सच प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे दे मति समझावे। कलिजुग दिसे रैण अँध्यारे। रैण अन्धेरी कलिजुग अन्धेरा। ना कोई संञ ना सवेरा। चारों चक्क वज्जे धक्क, ना सके कोई डक्क, शब्द सरूपी प्रभ पाए घेरा। नत्थ पाए नक्क नचाए बूरे कक्ख, तन सुक्के होण सक्क, आप जलाए वांग करीरां। अन्तिम करे नबेड़ा हक्क। गुरमुख साचे लए रक्ख। बेमुख बाहों फड़ कीने वक्ख। कौडी मुल ना पाए दरगाह साची जेहड़े पल्ले बन्न्ही बैठे लक्ख। गऊ गरीब निमाणयां रहे सताए, मारदे फिरन झक्ख। निहकलंक कलि जामा पाए, प्रगट होए माझे देस प्रतक्ख। इक्क धकेल आप लगाए, ना सके कोई रक्ख। माझा देस तेरा खुल्हा वेहड़ा आप कराए, तेरे विच उडदी दिसे भक्ख। बेमुखां ना कोई छुडाए, कलिजुग पाई नकेल नत्थ। करदे जाण हाए हाए, कोल ब्यासा जायण थक्क। कौण छुडाए मेरी माए, पिछां भौं भौं रहे तक्क। बाल अञ्याणा कोई समझ ना पाए, सुघड़ स्याणे गए अक्क। गुरमुख साचे सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नाओ चढ़ाए, पहले पूर लँघाए दोवीं हक्कीं आपे धक्क। आप चलाए साची नईआ। सोहँ शब्द वंञ मुहाणा इक्क रखईआ। एका चप्पू नाम लगईआ। साध संगत बणाए भैणां भईआ, उप्पर आप बिठईआ। झूठे दिसण साक सैणां, मदिरा मास जो मुख रखईआ। दर घर साचे मिले ना बहिणा, प्रभ साची खेल आप हरि रचईआ। भाणा हरि का पवे सहिणा, ना कोई लुके लुक लुकईआ। साचा देणा पवे लहणा, सच हिसाब हरि रखईआ। ना कोई मरना मंगदा, रहणा एका एक, गुर चरन टेक, ना लागे सेक, होए बुध बबेक, आपणा आप सिर हत्थ रखईआ। हत्थ रखाए सिर वेले अन्त। गुर चरन बहाए गुरमुख साचे सन्त। कलिजुग माया पाए बेअन्त। भुल्ले फिरन सर्ब जीव जन्त। गुरसिक्खां मिल्या हरि साचा कन्त। जिन बणाई साची बणत। जुगो जुग आदि जुगादि महिमा जगत अगणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक एक जोत सरूप वड शाहो भूप आदिन अन्त। गुरसिख तेरी धन्न कमाई। धन्न धन्न गुरसिख धन्न जणेंदी माई। आपणा बेड़ा जाए बन्न्हु, आपणा भार आपणे सिर उठाई। कलिजुग जीव कोई ना डाहवे अग्गे कंध, प्रभ दोईं हत्थीं रिहा दबाई। झूठी माया कीने अन्ध, नेत्रां विच्चों गई सच्ची रुशनाई। आत्म होई झूठी कंध, मोह तुटा भैणां भाई। जूठे झूठे गाउँदे फिरन झूठे छन्द, साचा राग किसे हत्थ ना आई। खुशी कराए बन्द बन्द, आत्म देवे जोत सवाई। आप दिखाए परमानंद, निजानंद दे विच समाई। जो जन रसना लायण मदिरा मास गन्द, दर दवारयो हरि देवे दुरकाई। गुरमुख साचे सन्त जन दोए जोड़ भुल्ल लैण बख्शाई। वेला अन्तिम कलिजुग आ गया, घुंड पापां वाला प्रभ आपणी हत्थीं दे उठाई। सतिजुग साचा मात धरा ल्या, सोहँ शब्द

मुख छुहारा लाई। कलिजुग तेरा अन्धेरा मिटा ल्या, उत्ते पापां चादर पाई। सतिजुग सुत्ता फेर उठा ल्या, प्रभ अबिनाशी आपणी किरपा आप कराई। कलिजुग गूढ़ी नींद सवा ल्या, तीन जुग ना कोई हिलाई। सतिजुग साचा आप सिखा ल्या, सोहँ नाम मात जपाई। वेद पुरानी खाणी बाणी कुरान अञ्जीलां आप मिटा ल्या, कलिजुग तेरी ढेरी उप्पर दे टिकाई। सतिजुग साचा सोहँ दीपक आप जगा ल्या, चार कुन्ट करे रुशनाई। कलिजुग मिटी विच रुला ल्या, सिँघ मनजीत तेरी ख़ाक सिर एहदे विच पाई। रहे जगत सदा अतीत, प्रभ देवे लेख लिखाई। चार जुग जायण बीत, जन भगत रसना तेरा नाम ध्याई। अज काया होई ठंडी सीत, सतिजुग तेरी साची नींह रखाई। झूठी तजाई जगत प्रीत, साची प्रीत गुर चरन लगाई। आपे परखे साची नीत, सचखण्ड दुआरे जा बहाई। गुरसिख बणया गुर पूरे दा साचा मीत, आपणी हत्थीं रिहा चँवर झुलाई। मानस जन्म गया जग जीत, दोवें हत्थीं खड़या प्रभ उठाई। ना कोई अग्गे दिसे भीतर भीत, सच महल्ल हरि आप बहाई। सदा गाओ सुहागी गीत, साध संगत गुर पूरे नूं दयो वधाई। गुरसिख साचा रखणा चीत, पुरी इन्द्र विच हरि दे टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव कोई ना जाणे एका आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। लग्गी प्रीत तोड़ निभाईआ। वाह वाह कीती चंगी, धुरदरगाह दे साचया साईंआ। साची वस्त गुरसिख इक्क तेरे दर मंगी, आपणी चरन सरन रक्ख रघुराईआ। दो जहानी मैनूं कोई ना दिसे तंगी, इक्क तेरी ओट रखाईआ। होए सहाई सद अंगी संगी, विछड़ कदे ना जाईआ । ना कोई भुक्ख ना नंगी, अट्ठे पहर मेरी आत्म तृष्न मिटाईआ। मेरी काया चोली साची रंगी, उप्पर रंग मजीठ चढ़ाईआ। होए धन्न भाग काया मिट्टी काची वंगी, चूड़ीदार किसे होर ना दूजी कोई चढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना साची गीत सुहागी गाउँदी दर तेरे ते आईआ। ना कोई सके तोड़ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा होया आप सहाईआ। हरि रंग गुरसिख रतया। कलिजुग वा ना लग्गे तत्तया। आप समझावे देवे मतया। रक्खणा आत्म साचा धीर गुरसिख जतया। रंगणा आपणा काया चीर, रंग केसरी ला इक्क रत्तीया। तेरी कट्टी जाए भीड़, मातलोक विच साचे सत्या। आपे बन्न्हदा जाए बीड़, शब्द चादर उप्पर घत्तीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गाउँदे रहणा बत्ती दन्दियां। हरि रंग शब्द अपार है। गुरसिख करना सच विहार है। काया झूठा दिसे कच्च, भन्नणा अन्त प्रभ भन्नणहार है। एका नाउँ प्रभ का साचो साच, सृष्ट सबाई चलणहार है। कलिजुग माया विच जायण मच, जिन्हां आत्म वड हँकार है। झूठे रहे दर दर नच्च, मंगदे फिरन झूठी भिखार है। गुरसिख साचे जायण बच, चल आयण निहकलंक तेरे चरन द्वार है, हरि हिरदे जाए रच, अमृत धारा गुरसिख देवे ठंडी ठार है। साचा अमृत गुरसिख जाए पच, बेमुखां

चाढ़ी जाए बुखार है। टुट्टण हड्ड जिउँ नारी जच, पेट चढ़दा जाए अफार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वेखो की वरतावे कलिजुग वरतार है। हरि रंग शब्द अपार है। करना इक्क गुर चरन प्यार है। दूजे सरन गुरसिख होए तेरी निमस्कार है। प्रभ देवे दरस नेत्र तीजे, हरन फरन खोल्हणहार है। तन मन तेरी काया भाजे, प्रभ अबिनाशी उत्ते अमृत छिड़कणहार है। साचा बीज तेरे आत्म बीजे, फल लगाए अपर अपार है। हरि वस्सया सदा दर दहिलीजे, बेमुख जानण बाहर है। गुरसिक्खां करे हरि आपे रीझे, आप पहनाए सोलां शिंगार है। इक्क नाम वस्त दात साची दीजे, सिर बन्न्हे सच्ची दस्तार है। आपणा काम हरि आप कीजे, सिँघ मनजीत आपणी हत्थीं पाए गल तेरे विच हार है। लँघियो पार लोक तीजे, जित्थे वसे इक्क निरँकार है। दूसर कोई ना दीसे ओथे चीजे, जगे जोत अगम्म अपार है। प्रभ अबिनाशी गोद आपणी विच लीजे, बाल अञ्याणा वेख करे सच्चा प्यार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा हरि साचे घर सिँघ सिँघासण उप्पर हरि दातार है। हरि रंग सहज सुभाए है। प्रभ देवे मात सच्ची दात आपणी हत्थीं आए है। झूठा तोड़े जगत नात, आप छुडाए भैण भ्रात, मात पित संग ना कोई रखाए है। कलिजुग आई अन्धेरी रात, बाल अञ्याणे वेखीं मार झात, झूठी दिसे सृष्ट सबाई तेरी दात, बिन गुर पूरे अग्गे कोई ना पुच्छे बात ना लैंदा कोई छडाई है। ना कोई जात ना कोई पात, साचे सन्त जन तेरी बणे बरात, प्रभ अबिनाशी तैनूं देवे सोहँ साची दात, घर साचे दे वधाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा आप कमाई है। हरि रंग हरि वड्याई। गुरमुख विरले विच मात दे पाई। नानक दादक मिल के दयो वधाई। मनजीत तेरी साची रीत, प्रभ अबिनाशी विच मात चलाई। एका गाओ सोहँ गीत, नेत्र नीर ना कोई वहाई। निभी तोड़ चरन लग्गी प्रीत, गया पन्ध मुकाई। मातलोक विच जो गई बीत, बाल अञ्याणा भुल्ल होई ना राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान सभ थांई होए सहाई। थान सुहाए गुरसिख आए। साध संगत संग रलाए। अंग संग संग अंग आप हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरा सरबंग बाल भुयंग आपणी गोद जाए उठाए। सच रंग हरि जाणा तुल। भाग लगाउणा आपणी कुल। अट्ठे पहर रसन ध्याउणा, प्रभ अबिनाशी आप बरसाए गुर संगत उप्पर फुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाए भुल्ल। हरि रंग हरि गुण वथ है। जोत सरूपी पारब्रह्म सर्ब समरथ है। बिन रंग रूपी आदि जुगादि अकथ्थना अकथ्थ है। मिटाए अन्धेरी रात अन्ध कूपी, सतिजुग चलाई आवे रथ है। जगे जोत सति सरूपी, चारों कुन्ट होए रुशनाई है। उठ उठ वेखण शाहो भूपी, जोत किस जगाई है। गुरसिख साचा माणक मोती, प्रभ आपणे गल लए लटकाई है। सृष्ट सबाई रही सोती, गुरसिख

गाउँदे चाईं चाईं है। प्रभ आप टिकाए एका जोती, सच बणत रिहा बणाई है। दुरमति मैल जाए धोती, नाम साबण रिहा लगाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे रंगण नाम इक्क चढ़ाई है। हरि रंग हरि ही जाणे। गुरसिख साचे आप चलाए आपणे भाणे। साचा नाम रंग इक्क वखाए, रंग दूसर कोई ना लाणे। सच वस्त हरि विच टिकाए, जगे जोत इक्क भगवाने। होए रुशनाए थाएँ थाएँ, कलिजुग अन्धेर आप मिटाणे। गले लगाए फड़ के बाहीं, गुरसिख सोए आप जगाणे। साचे तीर्थ गुरसिख नुहाए, अमृत धार हरि आप चलाणे। पापां दाग सर्ब धोए, चरन धूढ़ हरि इशनान कराने। आत्म बीज साचा बोए, साचे फल जो आगे खाणे। कलिजुग जीव जाणे कोए, भुल्ले हरि बण निधाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणे भाणे। भाणा भगवान बड़ा दूर है। सृष्ट सबाई मन्नणा पए जरूर है। बेमुखां प्रभ साचा दिसे दूर है। गुरसिक्खां अग्गे खड़ा हाजरा हजूर है। धन्न धन्न गुरसिख जो प्रभ चरन लग्गे, हरि सर्ब कला भरपूर है। कलिजुग अग्न विच ना दगे, खेल वरताणा मात जरूर है। झूठे तुटे काया तग्गे, बज्झे रहण ना किसे जंजीर है। कलिजुग जीव फिरन भज्जे, ना देवे कोई धीर है। लाउँदे फिरन अज्जे पज्जे, अन्तिम लथ्थणे विच मात दे चीर है। गुरमुखां हरि सज्जे खब्बे, कटदा जाए भीड़ है। बेमुखां पैरां हेठ दब्बे, भन्नदा जाए हड्डी रीड़ है। फड़ फड़ आपणी दाढ़ीं चब्बे, होण ना देवे किसे पीड़ है। वेला अन्तिम ल्याए झब्बे, गुर संगत तेरी भेट चढ़ाया इक्क तुहाड्डा छोटा वीर है। साचा माल धन किसे ना लभ्भे, घती जाण सर्ब वहीर है। खाली लटकदे दिसण छब्बे, खाली होए महल मुनीर है। प्रभ अबिनाशी ना मदीने ना मक्के, जोत सरूपी सभ थाईं गहर गम्भीर है। दिवस रैण ना कदे अक्के ना थक्के, चार कुन्ट तिन्न लोक पैंडा रिहा चीर है। गुर संगत बणाए भाई भैण, प्रेम गलवकड़ी गल पवाए होया मेल जिउँ विछड़यां भैणां वीर है। शब्द तकड़ी आप तुलाए, धीरज देंदा जाए साची धीर है। शब्द डण्डी उप्पर आप लगाए सोहँ बोदी पकड़े आप अखीर है। बेमुख डिगदे जाण वांग मक्कड़ी, नेत्रां विच्चों वैहन्दा जाए नीर है। गुरसिख साचे गुर चरन प्रभ दर आए पकड़ीं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कट्टी जांदा हउमे पीड़ है। हउमे पीड़ दए कट्ट। उत्तों लाहे पापां छट्ट। शब्द झपट मारे झट्ट। झूठे कढ्ढदे देही वट। जगे जोत लट्ट लट्ट। प्रभ अबिनाशी वसे घट घट। गुरसिख साचे पार उतारे सोहँ रसना रट्ट रट्ट। आत्म देवे अमृत साची धार काया झूठे मट्ट। गुरसिख साचा बाल अञ्याणा आप लपेटयां शब्द सरूपी साचे पट्ट। ना कोई जाणे राजा राणा, ना कोई जाणे सन्त सराणा जो रहे ख़ाक चट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा सिँघ मनजीत पार कराया, साचे तीर्थ जा बहाया, ना कोई मुनारा ना कोई तट्ट। शब्द घोड़े आप चढ़ाया, धुर दरगाहे जाईं एका चाल रक्खीं

सरपट। एका रक्खीं चाल निराली। होवे हरि सच्चा रखवाली। तेरा घर ना होए खाली। बूटा लाए मात माली। दिनो दिन चढ़दी जाए लाली। गुर संगत करे निमस्कार, दोवीं हत्थीं वज्जदी ताली। गुर पूरे जाओ चरन बलिहार, कलि चली चाल निराली। कारज दए संवार, दो जहानां वाली। बेड़ा कर जाए पार, गुरसिख कोए ना रहे खाली। आपे आए चल द्वार, सोहँ शब्द लै आए डाली। गुरसिक्खां कर्म रिहा विचार, सच प्रीत जो मात घाली। सिँघ मनजीत उठ हो त्यार, प्रभ करे तेरी आप रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात शब्द दात, तेरे नांउँ जगाए इक्क दीवाली। हरि पूरन काज कराया। कलिजुग सतिजुग दोवें कुड़म बणाया। सच कुड़माई आप कराई, गुर संगत संग रलाया। पंज दिवस गाउँदे रहे चाईं चाईं, पंचम हरि हरि विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म जोत सरूपी खेल रचाया। जोत सरूपी किया खेल। कलिजुग सतिजुग होया मेल। आपे दोए इक्क थां बहाए, अचरज कराए खेल। कलिजुग जूठे झूठे इक्क लगाए धकेल। चारों कुन्ट आप फिराए, फड़ हत्थ नकेल। सतिजुग साचा मार्ग लगाए, उत्तों वार लैण दा वेल। जांदी वारी हत्थ मिलाईं, फेर जाणा धर्म राए दी जेल्। आप थां टिकाणा दस्स के जाईं, फिर होसी कदों मेल। जूठया झूठया मेरया कुड़मा अन्तिम होयउँ फेल। सतिजुग साचे सच कर्म कमाया, प्रभ शब्द चलाया इक्क गुलेल। आपणी हत्थीं अमृत आप छिड़काया, जिउँ अतर फुलेल। सति सुगंधी दे उपजाया, सन्त जनां कराए मेल। आत्म तोड़ी जाए जिंदी, पाउँदा जाए नाम साचा तेल। विच्चों कढ्ढदा जाए वासना कलिजुग गन्दी, पऱ्हां करे धकेल। पैणां बेमुख अन्त विच धर्म राए दी बन्दी, बेड़ा तेरा जाए ठेल। सृष्ट सबाई होई अन्धी, ना कोई गुरू ते ना कोई चेल। सृष्ट सबाई भागां मन्दी, कलिजुग तेरी कट्टी मातलोक विच्चों वेल। गुरसिख साचे सन्त जन, प्रभ साचे दे साक सज्जण सुहेल। आपे चुक्क लै जाए आपणी कंधी, वसाए घर जिथ्थे पारब्रह्म दा खेल। कट्टे जगत ज़ंजाल बन्द बन्दी, कराए हरि साचे नाल साचा मेल। गुरसिख साचे सन्त प्यारयो, गाओ सोहँ साचा छन्दी, नेत्र नीर गुर चरन चवाओ साचा तेल। साचा तेल देणा चुआ। आपणा आत्म दर लैणा खुल्ा। अट्ठे पहर गुरसिख तैनूं आउँदी रहे ठंडी वा। छड्ड सिँघासण उठ के आए, अग्गों पकड़े तेरी बांह। गुरसिख बाल अञ्याणयां सुघड़ स्याणयां, शब्द सरूपी आपणी हत्थीं करदा जाए छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा पित मां। आपे पिता आपे माता। प्रभ अबिनाशी पुरख बिधाता। झूठा जाणो जगत नाता। चारों तरफ गुरसिख साचे प्रभ शब्द सरूपी आपणी हत्थीं ताणे चार कनातां। चार जुगां दा हरि रखवाली, आपे पुच्छे तेरीआं वातां। सच बाग दा साचा माली, गुरसिख लगाए सच सुगातां। देवी देवते उप्पर तरसण निउँ निउँ मारन झातां। निहकलंक कलि जामा पाया, इक्क

पढ़ाए जमाता। सोहँ साचा शब्द सिखाया, कलिजुग तेरी मिटाई अन्धेरी राता। गुरसिक्खां दी झोली पाया, ना कोई पुच्छे जातां पातां। बेमुखां नूं परे हटाया, जिउँ रन्नां कमजातां। गुरसिक्खां नूं चन्न चढ़ाया, देवे सच्चीआं दातां। बाहों पकड़ गले लगाया, जिउँ बालक माता। आप आपणे धाम बहाया, पाड़ गगन दीआं छातां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत किरपा कर साचे हरि आप बणाया चरनी साचा नाता। साचा नाता ना जाए टुट्ट। कलिजुग जड़ जाए पुट्ट। दाणा पाणी गया निखुट्ट। पीणा मिले ना मात विच इक्क घुट्ट। चारों तरफ मूंह विच पैंदा थुक्क। माता गर्भ विच बाल अञ्याणे जायण सुक्क। साचा भाणा हरि वरताए ना सके रुक। भज्जे फिरन जीव हलकाए, किसे हत्थ ना आवे टुक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आपणी हत्थीं लए चुक्क। मन सखियां सज्जण सुहेला। होया गुर संगत दा मेला। जुड़या जोड़ बैठा एका थां गुर चेला। ना कोई सके तोड़, प्रभ अबिनाशी बन्दी तोड़, साचा साक सज्जण सुहेला। ना कोई सके अजोड़ ना होए रंग दुहेला। बेमुखां देही चले कोढ़, जो मूहों कढुण बोला। प्रभ अबिनाशी बन्दी तोड़, सोहँ गाओ साचा ढोला। ना होए कदे विछोड़। गुरसिक्खां बणया रहे गोला। प्रभ साचे दी साची लोड़, धुरदरगाही एका इक्क विचोला। कलिजुग जीव भन्ने कौड़, छड्डुणा पए सभ नूं चोला। पट्टी होए सभ दी चौड़, खाली दिसे सर्ब पटोला। गुरसिख गुर चरनी आयण दौड़, प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी रक्खे उहला। चिट्टा अस्व मारे पौड़, चारों तरफ होए हिल हलोला। आपे चढ़या साचे घोड़, सृष्ट सबाई दा वेखे मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सदा इक्क इकेला। इक्क इकेला एका थां। भौंदा रहे सारे थां। जगाउँदा रहे गुरसिक्खां फड़ फड़ बांह। जपाउँदा रहे आपणा नां। आपे आप वखाउँदा रहे, दवाउँदा रहे इक्क दूजे नूं थां दहा बहा। सतिजुग साची कार कमाउँदा रहे, सोहँ देवे झोली पा। साचा ढोल वजाउँदा रहे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पा। गुर पूरा गुण निधान है। गुर संगत बली बलवान है। गुर पूरा वड सुल्तान है। गुर संगत नौजवान है। गुर पूरा शब्द किरपान है। गुर संगत हत्थ उठान है। गुर पूरा वड मेहरवान है। गुर संगत रही वखाण है। गुर पूरा जाणी जाण है। गुर संगत होई निमाण है। गुर पूरा देवे ब्रह्म ज्ञान है। गुर संगत लाए चरन ध्यान है। गुर पूरा झुलाए सच निशान है। गुर संगत साया हेठ रखान है। गुर पूरा वड दानी दान है। गुर संगत झोली भर घर लै जाण है। गुर पूरा सोहँ देवे वस्त महान है। गुर संगत पाई प्रभ दर आण है। गुर पूरा वड बली बलवान है। गुर संगत देवे जिया दान है। गुर पूरा जोत भगवान है। गुर संगत मेल मिलाण है गुर पूरा सर्ब सुखदेव है। गुर संगत खाए साचा मेव है। गुर पूरा वड देवी देव है। गुर संगत कमाउँदी रहे सेव है।

गुर पूरा रसना जपण जिह्वा जेहव है। गुर संगत लहणा देण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक गुरदेव है। हरि साचा भोग लगांयदा। पूरन कर्म करांयदा। गुर संगत चोग चुगांयदा। हउमे रोग गवांयदा। राह सच्चा इक्क रखांयदा। गुर दर आए जो सीस झुकांयदा। लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। सच वक्खर नाम झोली पांयदा। इक्क अक्खर नाम सोहँ शब्द पढ़ांयदा। फड फड़ करदा जाए वक्खर, संगत साची विच रलांयदा। बेमुख जीव उडदे फिरन वांग मच्छर, प्रभ आपणी हत्थीं अग्न तेल पाए जलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दया कमांयदा। जन भगतां जन्म सुधार। प्रभ साची करी कार। साचा बख्शे गुर संगत इक्क प्यार। दूजे दर ना होणा मंगत, बण के जगत भिखार। प्रभ साची चाढ़ी रंगत, एका एक निहकलंक नरायण नर अवतार। चुण चुण बणाए साची संगत, फड़ फड़ बाहों करदा जाए बाहर। होए सहाई जिउँ नानक अंगद, जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क दातार। दाता दातार, करदा सर्ब प्यार। कर्म धर्म जगत विचार। साचा ब्रह्म हरि चितार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बहाए चरन द्वार। चरन बहाए देवे चरनोध। शब्द कुठाली गुरसिख देवे सोध। आपे चाढ़े साची लाली, आप बिठाए आपणी गोद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप नरायण नर शब्द लिखाए बोध अगाध अगाध
३७२ ०३ बोध। तेरा हिरदा रिहा धुख। घर तेरे विच्चों देवे धक्क। आपे लै जाए अग्गे हक्क। दाणा पाणी सिँघ पाल अग्गे बहि ३७२ ०३
के छक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम खेत बेमुखां वढ्ढे अन्तिम गया पक्क। सुण पुकार वड दातारया। भुक्ख नंग कीता लाचारया। अट्ठे पहर रिहा मंग, ना मिले कितों भण्डारया। आत्म होई बड़ी तंग, रो रो अर्ज़ गुज़ारया। मानस जन्म हुंदा जाए भंग, ना दिसे कोई सहारया। होए सहाई अंग संग, खेल मेर दर, द्वारया। सुक्कीआं हड्डीआं वांग होइयां कुरंग, अंग अंग मेरा पुकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्न दान हरि भगवान रिहा मंगदे वस्त सच्ची भण्डारया। धन्न माल दे, आया दर। कर निहाल दे, चुका डर। पूरा ताल दे, दुःख रहे ना घर। दूजी अग्नी फिर बाल दे, दुःख भुक्ख रोग दूर कर। चरन प्रीती साची नाल दे, नित आउँदे रहीए तेरे दर। जन भगतां वाली चाल दे, मानस जन्म पूरा जाईए कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तैनूं ध्याईए, वसाओ साडा घर । कलिजुग मैला होया तेरा चोला । दर होयउँ साचे अन्तिम गोला। जूठे झूठे जगत यार, वड्डु सिक्दार करदे रहयो घोला। घर घर भोगण वेसवा नार, प्रभ अबिनाशी दित्ता विसार, गुर पूरे नूं मारन बोला। आपे वैहन्दी धार, उत्ते पाए पापां भार, चुकया जाए ना झूठा थैला। आपे डुब्बा विच अन्धकार ना आर पार, झूठा लहणा विच मात दे लै ला। ना भुल्लणा निरँकार, सतिजुग बन्नूदा जाए धार, गुरसिख

गल फड़ फड़ पाउँदा जाए हार, भाणा हरि का गुरसिख सहि ला। बेड़ा लाउँदा जाए पार, झेड़ा जगत जाए हार, खेड़ा वसे विच संसार, चार दिहाड़ मिल गुर संगत विच बह ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसन चितार, अन्तिम अन्त आप कराए मेला। कलिजुग चोला मैला होया। वज्जे बोला ना किसे धोया। हरि साचे पर्दा खोल्हा। जोत सरूपी प्रगट होया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचा साचे धागे आप परोया। गुरसिख साचा होए सन्मुख। प्रभ अबिनाशी गढ़ तोड़े दुःख। घनकपुर वासी आप मिटाए तृष्ना भुक्ख। कट्टी जाए जम की फाँसी, उलटा होए ना मात गर्भ विच रुक्ख। अट्ठे पहर रहे उदासी, प्रभ चरन दी लग्गी रहे भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए दरस दिखाए, सद सुक्खना रहो सुक्ख। सुक्खणा सुक्ख हरि जी आवे। साध संगत संग रलावे। रंगत नाम आप चढ़ावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना हरि ध्यावे। कलिजुग चोला गया पाट। अट्ठे पहर रहे घाट। लम्बी मुक्क गई तेरी वाट। आपणा कर्मां दा फल लैणा चाट। जूठा झूठा पेट जो रिहा पाट। प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं आप सवाए तैनूं उप्पर खाट। आपणी हत्थीं बाहर कढाए, कलिजुग तेरा दूर दिसे घाट। छेती फेर मात ना आई, प्रभ जेवड़े दिते काट। जा बैठ आपणी थांए, तेरी विक गई मातलोक विच लाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धराए गुरसिक्खां पूर कराए घाट। गुरसिख घाटा पूरा करे। शब्द झोली आपे भरे। क्या कोई मारे बोली, करनहार सर्ब किछ आपे करे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सच दरे। सच दर सच दरबार। दोए जोड़ करो निमस्कार। पूरा कर के पूरा चल्लया, आपणा सच विहार। ना भाणा किसे उथलया, जुगो जुग वरते हरि वरतार। ना लग्गे घड़ी पलया, प्रभ लेखे रिहा सर्ब विचार। प्रभ अछल ना कदे किसे छलया, जोत सरूपी रंग अपार। कलिजुग तेरा अन्तिम परछावां ढलया, आ गई रैण अंध्यार। प्रभ पासा तेरा थलया, सुत्ता उठ क्यों पैर पसार। बेमुख मूर्ख झल्लया, क्यों रिहा झक्ख मार। वांग दाल जाए दलया, प्रभ करे आप दो फाड़। कलिजुग जूठे झूठे लूण दे डलया, खुर खुर गयों ना होई कोई विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वार कराए सिर धड़ वक्ख वक्ख इक्क चलाए शब्द कटार। कलिजुग जीव उठ उठ भाग। तेरे सिर तों लथ्था ताज। मातलोक दा मुक्कया राज। ना कोई दीसे दर दरबान, ना कोई मारे आवाज़। ना कोई दीसे शाह सुल्तान, जो रक्खे तेरी लाज। ना कोई दीसे बली बलवान, जो सहाई आज। कलिजुग जीव सर्ब शैतान, पैंदी वेख भाज। प्रभ फड़ फड़ मारे बेईमान, रखदे रहण याद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सोहँ शब्द देवे साची दाद। कलिजुग चीरा एथे लाह, नंगे सिर भज्जा जा। प्रभ अबिनाशी तेरे सिर ते पापां छज्जा दए बन्हा। घनकपुर

वासी शब्द धुजा तेरी उप्पर धौण दए लगा। दोए हत्थीं मारे गुज्झां, किसे दिस ना आ। अट्ठे पहर वज्जण हुजां, ना कोई सके छुडा। प्रभ अबिनाशी ना अजे बुझा, विच माझे आया जामा पा। आपणा भेव रखाए गुज्झा, गुरसिक्खां करदा जाए छाँ। चरन प्रीती जो जन लुज्झा, फड़ फड़ पार लँघाए बांह। धर्म राए दी कोठड़ी छोटा कुज्जा, प्रभ अबिनाशी बेमुखां देवे बन्द करा। एका राह प्रभ साचे सुझा। आपणे दर तों दए दुरका। ना गुरसिख लड़ाए ना वेखे बल भुजा, जोत सरूपी दए खेल वरता। अट्ठे पहर रहे रुज्झा, खा खा हलूणे सारा जगत दए हिला। भेव चुकाए एका दूजा, कलिजुग पहले तेरी अल्ख मुका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा देवे मात धरा। कलिजुग लहणा साचा लै। मातलोक विच ना रहणा बह। पीणा खाणा तेरा एथे कुझ ना रहि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाना बीना वड प्रबीना गुरसिक्खां विच सदा वसदा रहि। रसना लग्गे भोग, अमृत रस धार है। गुरसिक्खां बख्शी जाए जोग, कर कर हरि प्यार है। ना होए कदे विजोग, सदा रहण चरन द्वार है। साचा रस लैणा भोग, होर झूठा सर्ब विकार है। करना दरस अमोघ, प्रभ अबिनाशी हरि हरि के द्वार है। घनकपुर वासी कर के जाए विहार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां बणया आप वरतार है। गुरसिक्खां बणे हरि वरतारा। देवे नाम शब्द अपारा। पहली चली ए सतिजुग सच्ची धारा। महाराज

३७४ ०३ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए साची कारा। सच काज हरि आप कराया। गंढ्ढी दे दे गुरसिख मंगाया। साची लेख ३७४ ०३

लिख्त लिख लेख एह कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिल संगत मंगल साचा गाया। मंगल गाया सखी प्यारीए। प्रभ साचे दी साची नारीए। किरपा करे हरि अपर अपारीए। दर आयां देवे वर, सदा रहो वड सुहागण संसारीए। तेरा वसदा रहे घर, ना होए दुहागण ना हैसिंआरीए। प्रभ देवे साचा वर चरन कँवल कँवल चरन चरन सदा निमस्कारीए। भव सागर जाणा तर, फेर ना आणा दूजी वारीए। चुकाउँदा जाए जम का डर, बहाए एको सच अटारीए। नुहाउँदा जाए साचे सर, एका धार ठंडी ठारीए। आत्म जोती आप जगाउँदा जाए, सचखण्ड सच्ची सरकारीए। जन भगतां मेल मिलाउँदा जाए, वड दाता हरि दरबारीए। गुरसिख साचा गाउँदा जाए, सोहँ करदा जाए जै जै जैकारीए। गुरसिक्खां नूं समझाउँदा जाए, आउणा सभ ने वारो वारीए। फड़ फड़ बाहों राहे पाउँदा जाए, चढ़ना महल्ल सच्ची अटारीए। राह इक्क सच्चा दिसाउँदा जाए, गुर संगत इक्क इक्क अपारीए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ करन निमस्कारीए। साची सरन गुर आप बहाया। गुर संगत तांईं दया कमाया। प्रगट जोत हरि भोग लगाया। गुर संगत तांईं दे वरताया। दे मति समझाए, दूजा दर ना मंगण जाया। आपे रक्खे तेरी पति, जिस आपणी चरनी लाया। ना तुटे तेरा जति, शब्द

धीरज आप रखाया। आपे बीजे साचे वत्त, सति सन्तोख बीरज आप टिकाया। रसना सूत्र साचा लैणा कत्त, काया चरखा दे भवाया। साचे खाते लैणा घत्त, प्रभ अग्गे दे खवाया। बेमुखां ना कीती मति, मूंह थुक्कां प्रभ भराया। गुरसिख जाणे मित गति, प्रभ आपणी सरन लगाया। कलिजुग तेरी मिटे अन्धेरी छत, दोवीं हत्थीं पर्दा उत्तों लाहया। सतिजुग बख्शया एका तत्त, सोहँ रसना दए जपाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे साचे घर प्रगट होए भोग लगाईआ। लग्गा भोग हरि दुआरे। खाली भरदा जाए भण्डारे। विच मातलोक दे तरदा जाए, ना आए विच घुंमणघारे। बेमुख मानस जन्म हरदा जाए, कलि विच अद्ध पुकारे। गुरसिख हरि हरि रसना करदा जाए, अग्गों मिले आए कट्टे पन्ध भारे। भाणा प्रभ दा जरदा जाए, वेखे रंग करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दरस दिखाए तृखा मिटाए, सोहँ शब्द रसना कराए जै जै जैकारे। भगतन चोग तेरे मुख लगाई। चिन्ता सोग गुरसिख मिटाई। साची दात तेरी भेट चढ़ाई। साध संगत धी बेट बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां साचा मेल मिलाई। संगत आए गुर द्वार। गुर पूरा अग्गों करे निमस्कार। धन्न धन्न धन्न मैं अक्खीं वेखे आपणे लाल दुलार। गुरमुख साचे हरया होवे मन तन, गुर पुरे मिलण भुजां पसार। गुर पूरा कढदा जाए जन, दोवें हत्थीं देवे प्यार। गुर संगत भाण्डा भरम देवे भन्न, आए तेरे दरबार। आए
३७५ ०३ छाए गुरसिख छपरी काया छन, फड़ फड़ आपणी हत्थीं दए उसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां बख्शे इक्क ३७५ ०३
प्यार। गुर संगत आए चल दुआर। गुर पूरा जाए गुरसिख बलिहारे। गुरसिख करे गुर चरन निमस्कारे। गुर पूरा दुखड़े लाहे भारे। गुरसिख इक्क बेनन्ती करे गुर चरन दुआरे। गुर पूरा आपे काज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां बख्शे इक्क प्यारे। गुर संगत गुर चरन बलि बलि जाईं। गुर पूरे आउँदा सिक्ख वेख, निउँ निउँ सीस झुकाईं। गुर संगत कोई होवे भुल्ल, गुर दरबारे जा बख्शाईं। एह लाल अनमुल्लड़ा ना जाए रुल, गुर पूरे आपणी गोद उठाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संगत गुर गुर संगत एका मेल मिलाई। गुर संगत गुर बख्शण योग है। गुर पूरे गुरसिक्खां होण ना देणा कदे विजोग है। गुर संगत हरि कट्टणा हउमे रोग है। गुर पूरे तेरी आत्म कदे ना आवे चिन्ता सोग है। गुर संगत रस लैणा साचा भोग है। गुर पूरे गुरसिक्खां दिया सोहँ साचा जोग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम गुण साचा शब्द सलोक है। प्रभ झोली भिच्छया पाई जा। आपणी हत्थीं आप वरताई जा। दोवीं हत्थीं मेघ बरसाई जा। दुक्खां भुक्खां सर्ब गंवाई जा। साचीआं सुक्खां घर घर उपजाई जा। उतरन दुक्खां, दे दरस तृखा मिटाई जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर प्रसादी गुर प्रसादि अमृत मेघ आप बरसाई जा। आपणी हत्थीं हरि बरसावे। गुरसिक्खां

दी झोली पावे। साचा दरस कर गुरसिख तर जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मतिी सर्ब समझावे। अमृत मेघ बरसे ठंडी धारा। गुरसिक्खां कर कर विच मात वड प्यारा। हउमे रोग देवे कढ्ढ, देवे चीर धर के शब्द आरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत फल मुख लगाए, कढ्ढे तन लग्गा अफारा। घनकपुर वासी उठया जागया। सन्त मनी सिँघ तेरे कहणे लागया। धोंदा जाए मल मल दो दो हत्थीं तेरे पिछले लग्गे दागया। बीज साचा आप बिजाउँदा जाए, रल संगत मगर फिराए सुहागया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उठया उठ जागया। उठ जाग मूंह फेरया हत्थ। लिख्त लिखाई पूरी करे आप समरथ। तेरी रसना कलम चलाई, सतिजुग बण जाए सची वत्थ। इक्क अमृत बूंद आप बणाई, समुंदर सागर सारे मथ। इक्क आपणे हत्थ टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई सके कथ। आपणे हत्थ बूंद उठाई, बासठ साल रक्खी गोद उठाई। अज्ज रुत्त सुहागणी विच मात दे आई। गुरसिख बणाए साचे सुत्त, नाल लै आया धुर दरगाह दी जामनी पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, अचरज खेल आप वताई। मनजीत सिँघ हरि साचा सुत्त, तेरी हड्डी सर सरोवर भेट चढ़ाई। बेमुखां मूंह पउँदा जाए थुक्क, अमृत धार घनकपुरी लै जावणी। अग्गे खेत्र जाणा रुक्क। इक्क चरन ना अग्गे उठावणी। कलिजुग दाणा पाणी गया मुक्क, सतिजुग तेरी सेव कमाई, छत्ती मील छत्ती राग रल रसना गीत सुहागी गावणा। प्रभ चाढ़दा जाए रंग, तेरे दर कदे ना आउणी शामनी। दोए धार वेख विचार, प्रभ इक्क लकीर लगावणी। तीर्थ यात्रा तेरी विच संसार, चार वरन नुहावे साची नुहावणी। आपे कर सच्चा विहार, गुर प्रसाद गुरसिक्खां आप वरतावणी। गुर चरन कर प्यार, इक्क इक्क पतासा विच सर्ब डारनी। प्रभ मिट्टी करदा जाए धार, कूड़ कुड़यार मेट मिटावणी। ख्वाज़ा खिज़र नेत्र वहाए नीर, प्रभ पूरी कर मेरी भावनी। गुरसिख साचे सिर बद्धा साचा चीर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत जिस तेरी सेव कमावनी। चौथे दिन पाए प्रभ फुल्ल। गुर पूरे पाया गुरसिख तेर मुल्ल। शब्द अन्धेरी जाए जगत झुल्ल। कलिजुग जीव जायण रुल्ल। गुरसिख साचे आप तराए वड्ड लाल अनमुल्ल। आपणी झोली आप उठाए, ना कोई जाए भुल्ल। सच भण्डारा हरि आप वरताए, सतिजुग साचे जाए खुल्ल। आत्म तृखा तृष्ना रोग मिटाए, जो जन पीए इक्क चुल। प्रगट होए दरस दिखाए विचकार दोवें पुल। चढ़दी धार सतिजुग रखाया, वहन्दी धार कलिजुग रुढ़ाया। घनकपुरी प्रभ तेरी हद्द, आपणी हत्थीं पार कराया। गुर संगत हरि ल्याया सद्द, कलिजुग अन्तिम अन्त विहार कराया। साध संगत मिल गाओ सुहागी तत्त, प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्न्ह वखाया। उठ सिक्ख वरता प्रसाद। दिउँ वड्याई हरि रघुराई आदि जुगादि। गाउँदे जाणा वजाउँदे जाणा शब्द नाद। बेमुखां सुणाउँदे जाणा, काया अग्न लगाउँदे जाणा, आपणे हिरदे रखणा याद।

साची सिख्या साची भिख्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, आपणी हत्थीं गुरसिक्खां देवे सुण फरियाद। जल धार तेरी सरनाई। इक्क वस्त हरि साचे टिकाई। दस्त बदस्त लेखा दए मुकाई। चिट्टे बस्त्र तन पहनाई। ना कोई लग्गे दाम मुल रिहा सस्त, बाल अञ्याणा भेट चढ़ाई। गुर संगत तेरी अमृत रसत, प्रभ साचे अमानत इक्क रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे मात वड्याई। इक्क इक्क दाणा करना भेट। प्रभ अबिनाशी राखो साची टेक। बणे जल ठंडी धारा, गुरसिख तेरे तन ना लागे सेक। गुरसिक्खां कर प्यारा, करदा जाए बुध बबेक। बेमुखां फेरी जाए सीने आरा, करदा जाए छेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा दर दुआरा रखाए एक। सतिजुग तेरा इक्क दुआरा। चार वरन होए भिखारा। दूजी सरन दए निवारा। अठ्ठ सठ्ठ पाणी तेरा भरन, ना कलिजुग आई विचारा। गुरसिख भाणा तेरा जरन, कर कर चरन प्यारा। कलिजुग झूठी मौते मरन, गुरमुख उडदे मार शब्द उडारा। प्रगट होए खोल्हे हरन फरन, दर्शन देवे अगम्म अपारा। जोत सरूपी तरनी तरन, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुर संगत रक्खे साचा सरन, देवे नाम शब्द अधारा। आप चुकाए मरन डरन, आई मौत ख़ुशी कराए सौ सौ वारा। इक्क जगाउँदा जाए जोत, मातलोक लाए सच्चा दरबारा। ना कोई वरन ना कोई गोत, एका एक एकँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संग रलाए, साचा मेल मिलाए, अमृत बणाए जल साची धारा। अमृत धार वह के जाणा। गुर चरन सरन साची गोद बह के जाणा। राह जांदयां राहीआं पान्धीआं नूं एह कह के जाणा। निहकलंक कलि वरते भाणा। सभनां सिर ते सह के जाणा। ना कोई दिसे राजा राणा, तख़्त ताज सभ दा लह के जाणा। ना कोई दीसे सुघड़ स्याणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा तेरी गोदी बह के जाणा। अमृत भर सच्चे द्वारया। गुरमुख साचा विच मात पुकारया। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ हुंदी पए ख्वारया। धीआं भैणां करन ओथे वपारया। जूठयां झूठयां मिलीआं वड्ड सरदारीआं। माया लूठयां दुष्ट दुराचारीआं। आत्म वड हँकारीआं, सुण पुकार हरि दातार जामा घनकपुरी विच धारया। घनकपुरी हरि जामा पाए। जोत सरूपी खेल रचाए। वड शाहो वड भूपी, आप भुलाए। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। गुर दिसे सति सरूपी, जोत सरूपी दरस दिखाए। ना कोई रंग ना कोई रूपी, निहकलंक कलि नांउँ रखाए। एका दिसे साची जोती, तीजा नेत्र जिस खोल्ह वखाए। ना कोई वरन ना कोई बरन ना जाणे गोती, एका रंग सभ समाए। गुरमुख बणाए माणक साचे मोती, आपणे कंठ लगाए। सृष्ट सबाई रही सोती, भेखाधारी भेख कमाए । गाउँदे फिरन कोटन कोटी, हरि साचा किसे हत्थ ना आए। लक्खां बन्न्ही फिरन लंगोटी, तन ते भस्म लगाए। लक्खां मुन्नी फिरन चोटी, प्रभ जाए दग़ा कमाए । लक्खां खांदे फिरन जीआं

जन्तां दा मास बोटी बोटी, प्रभ धर्म राए दे दर टंगाए। अग्गे हत्थ ना आवे किसे रोटी, बैठे नग्न करन हाए हाए। कलिजुग जीआं किस्मत होई खोटी, कलिजुग वेले अन्तिम ना होए कोई सहाए। गुरसिख गुर चरन रक्खे एका ओटी, बाहों पकड़ प्रभ पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। सच तीर्थ सच इशनान। गुर चरन धूढ़ गुरसिख कर जाण। वड्ड सूरबीर बली बलवान। रसना चलायण खिच शब्द तीर, बेमुखां वज्जे बाण। घत्ती जाए चारों तरफ वहीर, तोड़ी जाए सर्ब माण। कोई शाह ना अड़े हकीर, एका सिद्धा इक्क निशान। बेमुखां जाए पीड़, ना सके कोई अटकान। गुरसिक्खां देवे धीर, चरनी डिग्गण आण। करे आत्म शांत सरीर, आप बिठाए विच बबाण। कलिजुग कट्टी जाए भीड़, होए सहाई आपे आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चरन सरन गुरमुख साचे राखो सदा ध्यान। धरो ध्यान हरि चरन गोबिन्द। दरगाह देवे साचा माण, हरि सदा बख्शिंद। घर साचे होए परवान, माण गंवाया सुरपति राजे इन्द। आप खड़या विच बबाण, वड दाते गुणी गहिंद। कलिजुग जीव सर्ब पछताण, इस वेले करन जो निंद। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरनी डिग्गण आण, प्रभ साचे दी साची बिन्द। सर तोड़ माण ताण, सरन आए वाली हिन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वड्डा दाता मृगिन्द। जोग जुगत जगत गुर जाण। मुक्त जुगत शक्ति हरि फ़रमाण। ना कोई रोके ना सके रुकत, की जाणे कलिजुग जीव निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे देवे माण। माण पाओ दुःख दर्द मिटाओ। सहज अनन्द सुख घर लै जाओ। उतरे आत्म चिन्दया भुक्ख, दिवस रैण सद रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरँजण नरायण भुल्ल ना जाओ। आपणे अंदर साचे मन्दिर दिवस रैण सदा वसाओ। हरि जी वसे साचे मन्दिर। इक्क अन्धेरी काया कंदर। जिथ्थे वज्जा रहे जंदर। कलिजुग जीव नच्चदे फिरन चारों तरफ बन्दर। गुरमुख साचे सन्त जन गुर चरन बहिण आप लै जाए साचे अंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दीपक आप जगाए तेरी काया महल मन्दिर। काया महल मन्दिर अटारी। विच जगे जोत अगम्म अपारी। मूर्ख जीव ना पावे सारी। लभ्भदा फिरदा दर बण भिखारी। ना कोई खुल्हावे आत्म दर द्वारी। गुर पूरे सद बलि बलि जावे, जो देवे नाम अधारी। माया पर्दे सारे लाहे, मिटे रैण अंध्यारी। बाहों पकड़ राह साचे पाए, जिथ्थे वसे आप निरँकारी। बेमुख बन्न्हण झूठे दाअवे, धर्म राए जाए खायण मारी। गुरसिख साचा सच तीर्थ नुहावे, आवे चल द्वारी। अमृत साचा सीरथ पीवे, प्रभ देवे आप भण्डारी। गुर चरन साचे तीर्थ नुहावण होए ना दूजी वारी। जुगो जुग गुरसिख साचा जीवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी करदा आपे कारी। ना कोई जाणे ना कोई पछाणे हकीम वेदा। जोत सरूपी बहत्तर नाड़ी, प्रभ साचे दा अचरज

भेदा। फड़ फड़ बाहीं सारे वेखण, ना कोई जाणे राह सीधा। एका जाणे हरि लेखा, लिखण झूठा लेख विच कतेबां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अछल अछल्ल अभेद अभेदा। ना वेला ना कवेला, गुरसिक्खां दा जिथ्थे मेला। अचरज पारब्रह्म सच खेल कलि खेला। गुरसिक्खां वक्त सुहा गया, बेमुखां आया वक्त दुहेला। बाहों पकड़ दे हलूण जगा गया, आपे गुर बण जाए चेला। सोहँ साचा राग सुणा गया, अग्गे जाए ना गुरसिख अकेला। तेरे संग साची वस्त रखा गया, दरगाह साची वेंहदा जाईं मेला। बेमुख मूंह दे भार डिगा गया, ना होए कोई सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे एका एक वसे जोत सरूपी इक्क इकेला। इक्क निरँकार है। इक्क निराधार है। एका एक सर्ब जीआं दी टेक आप करतार है। एका एक सर्ब थांईं वेख गुरसिख वेख गुर पूरे कर निमस्कार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपर अपार है। सति सरोवर साकिया, अमृत प्याला भर। खोल्ह वजीआं होइयां ताकीआं, आप चुकाए जगत डर। लेखा देणा पवे ना किसे बाकिया, जावो सिद्धे घर। ऐथे ओथे ना होए कोई आकिया, प्रभ चरन निवावां सिर। मार चढ़ इक्क पलाकिया, प्रभ घोड़े लै आया दर। उप्पर अस्मान पाटी टाकिया, अंदर जाईं साचे वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे कर्म रिहा कर। सर सरोवर वड वड सागर। भरी रहे तेरी साची गागर। निर्मल होए जगत उजागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा करदा रहे आदर। अमृत नीर भरया सच प्याला। तेरे विच आप टिकाए अञ्याणा बाला। साची दात भेट चढ़ाए उठे उठ उठ मारे छालां। आपणा अग्गा खेत रखाए पिच्छा जेठूवाला। मात पिता दा हित्त तजाए, ना डरे राती काला। उत्तों महीना चेत आए, वेखे की चल्लया प्रभ चाला। वेख वेख हरि लेख लिखाए, घर बैठे जो कढ्ढुण गालां। जोत सरूपी जामा पाए, तन पहनाए कलिजुग सूसी काला। आपे वेखे दिस ना आए, बेमुखां करे मूंह काला। गुरसिक्खां आत्म विस लुहाए, जो पीवे अमृत भर प्याला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होया रहे रखवाला। अमृत आत्म साचा सर। खुल्ले रहण अट्ठे पहर दर। गुरमुख साचे सन्त जन, काया ठूठे लैण भर। कलिजुग जीवां दर घर साचे औंदा रहे डर। अमृत साचा गुर दर पीवां, तन मन प्रभ हरया देवे कर। चार जुग विच मात दे जीवां, साची करनी आया कर। चलदा रहूं हो हो नीवां, आपणी झोली आया भर। काया जामा पाटा आपणी हत्थीं सीवां, जा बैठा विच साचे सर। भरम भुलेखयां झूठयां जीवां, अमृत भर भर प्याले मैं प्रभ दर उत्ते पीवां, जगत कहे मनजीत सिँघ गया मर। मैं सदा जगत ते जीवां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीत सच्चे दर थीवां। सच दुआरा हरि की पौड़ी। छत्ती मील रक्खे लम्बी छत्ती कर्मां चौड़ी। गुरसिख साचे सच घर आयण, पी अमृत अमर होए घर साचे जाईं दौड़ी।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर टिकाए ना दिसे वस्त कोई कौड़ी। लम्बी पौड़ी सोने डण्डा। आपे पाउँदा जाए वंडां। छत्ती दर हरि देवे कर, इक्क इक्क थां इक्क इक्क रखाए डण्डा। गुरमुख साचा जाए चढ़, प्रभ अबिनाशी वेखे अंदर वड़, जगे जोत चण्ड प्रचण्डा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम इक्क बणाए विच नव खण्डां। पहला डण्डा इक्क लगाया। कन्ढे उप्पर चरन छुहाया। पहली माघी दूजा देवे हत्थ फड़ाया। पंचम जेठ अग्गे चढ़न दा देवे राह बताया। गुरमुख साचे घर साचे फड़न, ना सके कोई अटकाया। बेमुख जीव कलिजुग लड़न, प्रभ साचे साचा भेड़ भिड़ाया। चार कुन्ट दिसण धड़, प्रभ आपणी हत्थीं सर्ब सीस कटाया। हुंदी दिसे कड़ कड़, ढहिंदे जाण किल्ले गढ़, शब्द तीर इक्क चलाया। ना कोई जाए अंदर वड़, बेमुख कढ्ढे बाहों फड़, दाणा पाणी जगत मुकाया। गुरमुख साचे प्रभ साचे दा फड़ लड़, आपणी रक्ख सच्ची जड़ ना सके कोई हिलाया। ना कोई जाणा अग्गे अड़, शब्द कांग चढ़ाया। हरि आपे ठेले ठेल ठिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सवरनी सच पौड़ी आपणी हत्थीं दे लगाया। तीर्थ बणाए वसाए दोवें तट्ट। प्रभ अबिनाशी वसे घट घट। सतिजुग जो जन दर आए रसना रस लवे चट्ट। कलिजुग लग्गी मेले सतिजुग साचे प्रभ साचा देवे कट्ट। अट्ठ सट्ठ तीर्थ जो रही फैल, प्रभ आप झुकाए विच भट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

३८० ०३ सतिजुग साचे तेरा इक्क रखाए साचा हट्ट। साचा हट्ट आप रखाए। धीरज गट्ठ आप दवाए। सट्ठ अट्ठ अठसट्ठ ल्याए तेरी सरनाए। गंगा गोदावरी रहीआं सीस झुकाए। शिव शंकर जटा जूट सीतल धार सीस बन्द कराए। गोदावरी अमृत गरुढ़ चुंच इक्क गिराए प्रभ आपणी खिच वखाए। करोड़ तेतीस हरि जगदीश रहे तरस, सानूं आपणी हत्थीं दे पिलाए। गुरसिख तेरी कोई ना करे रीस, जो गाए राग छतीस, नारद मुन सेव कमाए। प्रभ करदा आया भेस विच माझे देस, पुरी घनक डेरा लाए। गुरसिख नेत्र लैणा पेख, हरिभगत जनक प्रगट फेर मात कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सर सरोवर आपणीं हत्थीं आप बणाए। सति सरोवर सच देवे माण। आपणी हत्थीं आप बणाए झुलाए सच निशान। गुरसिख गुर संगत सेव आप कमाए, अमृत मेवा फल साचा खाण। जोत सरूपी हरि संग रहाए, देवी देवते उत्तों फुल्ल बरसाण। गण गंधरब रहे तकाए, प्रभ दस्से इक्क सच्चा फरमाण। दर आईए सेव कमाईए, साडी होए फेर कल्याण। हिसेदार मातलोक दे बण जाईए, निहकलंक तेरी चरनी लग्गीए आण। एथे ना कुझ पीए ना कुझ खाईए, अट्ठे पहर रहन्दा इक्क ध्यान। भोग अपच्छरां आपणा वक्त गंवाईए, ना आउँदा ब्रह्म ज्ञान। तेरी जोत मिलण नूं असीं आप तरसाईए, किरपा कर हरि भगवान। इक्क वेर लोकमात विच आईए, सतिजुग साची नींह आपणी हत्थीं सेव कमाईए, एका घल शब्द बबान। तेरा

सच्चा मल मल तीर्थ नहाईए, जुगां जुगां दी मैल गंवाईए, लाईए बैठ इक्क ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं झुलाईए तेरा इक्क सच्चा निशान। इक्क सिक्ख तेरा एथे आया। सच सुनेहड़ा आण सुणाया। निहकलंक कलि जामा पाया। जोत सरूपी खेल कराया। सिँघ मनजीत जिस तराया। बाहों पकड़ इन्द्रपुरी दे विच बहाया। करोड़ तेतीस सुत्ता गूढ़ी नींद, छोटे बाल जाए जगाया। क्यों झूठा पीसना रिहा पीस, जाओ हरि सरनाया। मात धरे जोत जगदीश, करोड़ तेतीस क्यों बैठे मुख भवाया। दर मंगे ना कोई दूजी फीस, निउँ निउँ चलणा इक्को इक्क समझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं होए सहाया। बाल अञ्याणा जा सुणाए। उठो उठ बल धारो, क्यों बैठे वक्त गंवाए। छोड़ो अपच्छरां झूठीआं नारां, बिन गुर पूरे ना कोई पार लँघाए। संग रक्ख एहनां भी जाए तारो, दोए जोड़ सरन करो निमस्कारो। साचा खुल्लया हरि का द्वार, उत्तर जाओ पारो। सतिजुग बन्ह्दा जाए धार, गुर संगत दसदा जाए इक्क प्यार, आपणा करदा जाए सच विहार, सभ दी पाउँदा जाए सार, रूप अगम्म हरि अपारो। जाओ सच दरबार। दोए जोड़ करो पुकार। बैठा रहे करोड़ तेतीस ना पाए कोई सार। सतिजुग साचा विच मात धराया, साडे कर्म विचार। लोक परलोक दे उलटाया, इन्द्र पुरी क्यों दित्ता विसार। साडा हिरदा आप हुलसाया, छोटे बाल दस्सया मातलोक विच आया साचा यार। खाणा पीणा सौणा बहिणा सानूं भुल्लया भोग बिलासा छड्ड आए हासा, नारां छड्डया प्यार। तेरे दर होए दासन दासा, कर घनकपुरी विच साडा वासा, प्या अमृत घुट्ट इक्क ठंडी धार। दु:ख रहे ना मासा, होण सुखाले स्वासा, दर आए पूरी होए आसा, गुर पूरे देवीं तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। अष्टभुज आई हरि दुआरे। आप खलोती दर तों बाहरे। दूरों करे चरन निमस्कारे। उत्ते सिँघ होई अस्वारे। गदा चक्र संख धुज फड़ी हत्थ भारे। तीर तुरंग मृदंग खण्डा दिसे दो धारे। बीर बेतालया संग, कलजोगणा पिछे लग्गे आवण वारो वारे। दोए जोड़ करे बेनन्ती हुक्म दे सच्ची सरकारे। मारूं कर कर गिणती, चारों कुन्ट करूँ ख्वारे। मिणदी जाऊँ कर कर मिणती, सुंभ निसुंभ जिउँ दैंत हँकारे। मिटांदी जाऊँ सभ दी चिन्ती, उठाऊँ खण्डा दो धारे। किरपा कर बख्शणहार, सेवा ला इक्क संसारे। आ जा दर ना वेख डर। प्रभ साचे दा साचा घर। दरस कर, लै जा वर। पहली कूटे जाईं चढ़। कलिजुग वड़्या जिथ्थे अड़ । बाहों फड़ करीं दो धड़ । प्रभ अबिनाशी तेरा वेखे खेल, सिँघ उप्पर बैठी जिथ्थे रही तूं लड़। झूठे भाण्डे भन्न वखाईं, खण्डा डण्डा तन लगाईं, मिझ लहू दा घाण चलाईं, कालका नूं संग रलाईं, खप्पर उहदे हत्थ फड़ाईं, भर भर लहू प्याले आप प्याउँदी जाईं, ना कोई सके अग्गे अड़। लग्गी तृष्ना अग्ग बुझाईं, बीर बेताले सर्ब रजाईं, गुरसिख निमाणे

कंगाले लईं बचाई, प्रभ अबिनाशी जिन्हां फड़या लड़। सिँघ अस्वारी चढ़ के जाईं, निहकलंक नरायण नर अवतारी लड़ फड़ के जाईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उखाड़े सभ दी जड़। अस्त्र शस्त्र साचे पहन। नाल लै जा कालका भैण। जगत खपाईं बण बण डैन। ना कोई वेखीं साक सज्जण सैण। घर घर पवाउँदी जाईं वैण। प्रभ साचे दा मन्नणा कहण। भाणा हो जाए औखा सहिण। गुरमुख साचे वेखी जाईं खोल्ह खोल्ह के नैण। प्रभ आपणे हत्थीं वाड़ी आपणी लाई, ना खाए कालका डैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा ज्वाला तेरा हरि रखवाला। जिध्धर जांए तेरा भरदा रहे प्याला। राजयां राणयां कढदी जाईं दवाला। गुरसिक्खां बाल अञ्याणयां गल पाउँदी जाईं फूलण माला। जो होए माण निमाणयां, नेत्र वेख भुल्ल बख्शाउँदी जाईं। बेमुख भुन्नाईं जिउँ भठयाले दाणयां, इक्क इक्क फड़ फड़ विच पवाउँदी जाईं। ना कोई वेखीं बल अञ्याणयां, सारे इक्को राह झुकाउँदी जाईं। ना कोई छड्डी अन्ने काणयां, लंगढ़े लूलयां साथ मुकाउँदी जाईं। ना कोई वेखीं वेद पुरानयां, ना कोई वेखीं वड ज्ञानीआं, शब्द खण्डा सीस लगाउँदी जाईं। प्रभ साचे दीआं वड मेहरबानीआं, गुरसिख सोए आपणी हत्थीं आप जगाउँदी जाईं। दूसर रहे ना कोए, एका धार विच संसार वगाउँदी जाईं। पुत्तर धी ना छड्डीं किसे नार, मां पुत्तां प्यार हटाउँदी जाईं। ना कोई बुढ्ढी ना मुटयांर, सभ गूढ़ी नींद सवाउँदी जावीं।
३८२ हुक्म दित्ता सच्ची सरकार। लैणी संभाल आपणी तलवार। खण्डा हत्थ फड़ीं दो धार। फिरीं विच सारे संसार। हुक्म देवां ३८२
०३ वारो वार। पहली कूट फिर फिर आवीं सच्चे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई नूं देवे दो हत्थां दा ०३
प्यार। ल्या वर उठ तुर जा। प्रभ अबिनाशी दित्ती दया कमा। घनकपुर वासी दित्ती सेवा ला। कारज पूरे कर के घरां नूं आवीं, ना आवीं पिठ वढा। सिँघ आसण बैठा हरि जी वेखे, रिहा ख़ुशी मना, सच सुनेहड़ा लै के आईं, दर आईं फतह दा डंक वजा। प्रभ अबिनाशी अमृत साचा सीर पिलाए, फड़ के तेरी बांह सर सरोवर विच तेरा छोटा वीर नुहाए, मनजीत सिँघ जिस दा नां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सभना देवे मेल मिला। फतह देणा डंक संख पूर, आई चल प्रभ दर सच्चे हज़ूर। अष्टभुज तेरी सच सवारी, करदी आई चूरो चूर। तेरा मेरा भेव ना राई, ना कोई जाणीं दूर। तेरी जोत हरि आप उपजाई, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक जा देवतयां तूं लएं घूर। सुंभ निसुंभ जिउँ बड़े बलवान, होए मात विच ग़रूर। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई, अष्टभुज देवी काया आपणी आप बणाई, कारज करदा आया पूर। अष्टभुज तेरी वड्याई। सच शक्त हरि रघुराई। वेले वक्त हरि दए उपजाई। गुर गोबिन्द इक्क वेर ध्याई। प्रगट होए चण्ड प्रचण्ड साहमणे आई। खिच इक्क कटार सिँघ गोबिन्द हत्थ फड़ाई। मातलोक विच साची रीत जा चलाई। साचा पन्थ खालसा

पुरी अनन्द लई उपजाई। जोत सरूपी जोत हरि, भेव कोई ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अडोल सदा अतोल ना तोल्लया जाई। गुर पूरा दया कमावंदा। गुर संगत विदा करावंदा। शब्द दात झोली पावंदा। दे मति आप समझावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां मानस जन्म लेखे लांयदा। गुर संगत हरि दए वधाई। घर मुड़ जाणा चाईं चाईं। जाए सुनाउणा भैणां भाई। मिल के आए साचे माही। जिस साडी बणत बणाई। होए सहाई सभनी थांईं। साचा दित्ता नाम निधान सोहँ रसना गाई। आए दर कर गए चरन धूढ़ इशनान, कलि पापां मैल धवाई। मिल्या नाम दान उपजे ब्रह्म ज्ञान, चरन प्रीती इक्क रखाई। सन्तां भगतां मेल मिलान, किरपा कर कर हरि भगवान ना दूर कोई रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुर संगत तेरी सेवा लेखे लाई। सेवा लेखे गई लग्ग। गुरसिक्खां बुझे आत्म अग्ग। आप बन्न्हाए आपणी हत्थीं सोहँ साचे तग। मातलोक विच वड्याए, लज्ज पत्त लए रक्ख। एका बख्शे चरन सरनाए, सुक्के डाले रहे कराए, फल फुल्ल लगाए नाम सच्चे वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दे समझावे मति। गुर संगत हरि दे समझाई। पहली माघी नेड़े आई। नेत्र पेखणा गुर दर आई। तृखा तृष्ना लए बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत देवे आप वड्याई। पहली माघी आए नेड़े। मुकदे जाण जगत झेड़े। उजड़दे जाण नगर खेड़े । खुल्ले हुंदे जाण धरत मात दे वेहड़े । प्रभ अबिनाशी खेल वरताए रोक सकण केहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां लेख लिखावे जिउँ बन्न्हे बेड़े। पहली माघी लेख लिखाउणा। प्रभ अबिनाशी भेव भेख ना कोई लिखाउणा। जो कुछ वरते सो लैणा वेख, भउ भरम सर्ब मिटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुर दर आ पहली माघी दर्शन पाउणा।

✻ पहली माघ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

सिँघ आसण बैठा हरि दातार। गुरमुख मंगण आए चल द्वार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, इक्क वखा सच्चा घर बाहर। आत्म जोती साची धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। आए दर सज्जण सुहेले। प्रभ अबिनाशी कीए मेले। गुरमुख साचे सन्त जन हरि आपणे साचे रंग रंगाए, आपणा रंग हरि आपे खेले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ लड़ लगाए कलिजुग अन्तिम मेले। कलिजुग अन्तिम फड़ना लड़। बेमुख जीव जायण झड़। ढहिंदे जाण किल्ह्े गढ़्। दो हत्थीं प्रभ अबिनाशी पुट्टे जड़्। राजा राणा कोई ना बैठे अंदर वड़। अट्ठे पहर दिवस रैण शब्द सरूपी प्रभ रिहा लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कर दरस, पंज तत्त तेरे जायण सड़ । गुरमुख

साचे सन्त आत्म प्रकाश। प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर रहे दास। घनकपुर वासी निज आत्म रक्खे वास। ना होए कदे उदासी, गुरमुख साचे हरि वसे सद तेरे पास। बेमुख कलिजुग जीव अन्तिम नेत्र आपणे वेख कलिजुग चढ़या फाँसी, ना कट्टे कोई गलों धर्म राए दी फाँसी, चार कुन्ट एका अन्धेरा छासी, करे कराए पुरख अबिनाश। ना कोई रहण देवे मदिरा मासी, घर घर दर दर इक्क दूजे दे उप्पर चढ़दी दिसे लाश। नौ खण्ड पृथ्मी आवे डरे, बेमुखां कोई अन्त ना खाए मास। आपणा किया लैण भर, वक्त भुलाया जो पुट्ठे लटके मात गर्भ दस मास। कलिजुग अन्तिम वेले प्रगट जोत, निहकलंक विच मात कर जाए नास। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ सरन लगाया, होए निमाणे सोहँ शब्द मुख लगाया घास। आपे रक्खे हेठ आपणी छाया, मानस जन्म कराए रास। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी जणेंदी माया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस रसन ध्याया स्वास स्वास। रसना गाओ सहज सुख पाओ। वेला अन्त भुल्ल ना जाओ। गुर दर बण जाओ साचे सन्त, कलिजुग माया विच रुल ना जाओ। आप बणाए गुरसिक्खां बणत, दरगाह साची साचा मुल पवाओ। लक्ख चुरासी विच मात जीव जन्त, आवण जावण फंद कटाओ। प्रभ मिले गुरसिक्खां साचा कन्त, लाग चरन पिछली भुल्ल बख्शाओ। एका गाओ सुहागी साचा छंत, दरगाह साची सहज सुख पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी सदा सदा

३८४ ०३ सदा गुरसिख माणो छाँओ। अष्टभुज आए दरबार। प्रभ अबिनाशी देवे तार। अट्ठे भुजां अट्ठे हत्थ आपणे फेर सवार। दर ३८४ ०३

दर घर घर बेमुख जीवां फड़ फड़ विच मात कर ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना साचा हुक्म सुणावे मुड़ आई फेर सच्चे दरबार। हुक्म मन कर परवान, देवे हरि साचा धुर दरगाही इक्क फरमाण। चारों कुन्ट किते रहि ना जाए काण। जोत सरूपी हरि साचा वेखे शब्द सरूपी बैठे विच बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट बेमुखां आप वहाए लहू मिज्झ दा एका घाण। लहू मिझ घाण वगाई। कलिजुग डैण बण के खाई। सृष्ट सबाई पुण छाण, छाण पुण घर आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गों मिले चाईं चाईं। अष्टभुज प्रभ अबिनाशी आप सुणाए। प्रगट होए विच माझे देस, जोत सरूपी जामा पाए। गुरमुख साचे विच प्रवेश, जीव जन्त कोई सार ना पाए। प्रभ अबिनाशी आप वटाया भेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वखाए, बेमुखां पर्दा पाए। खुल्ले केस जगत स्यापा। ना कोई माई ना कोई बापा। सृष्ट सबाई मारे तीनो तापा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा घर विरले गुरमुख जाता। खुल्ले केस कवण विचारे। प्रभ अबिनाशी खेल अपारे। कलिजुग जीव रंडी नारे। ना होए सुहागण दूजी वारे। खुल्ली गुत्त विच संसारे। फिर ना आए दूजी रुत्त, प्रगटे जोत प्रभ अबिनाशी अचुत्त, गुरमुख साचे बाहों पकड़ कलि तारे।

महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरताई, सृष्ट सबाई दए दुहाई, करे कराए आपणी कारे। शिव शंकर जटा जूट धार। गंगा वहाई जटा जूट ना पाई किसे सार। मूर्ख मुग्ध पांधे पंडत करदे आपणी झूठी कार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे करावे साची कार। चिट्टा काला सूहा लाल। कलिजुग सतिजुग द्वापर त्रेता आपणी आपे रक्खण वस्त संभाल। सतिजुग साचे चिट्टा वेस, ना होए कदे कंगाल। कलिजुग पापी काला सूसा खुल्लड़े केस, होया अन्त बेहाल। जोत धरे प्रभ माझे देस, गुरमुख चुणे अनमुल्लड़े लाल। सिँघ सिँघासण प्रभ धारी बैठा भेख, उत्ते ल्या इक्क दोषाल। बेमुखां मिटाउँदा जाए रेख, गुर साचे गोद आपणी लए उठाल। जो वरते भाणा गुर संगत नेत्र लैणा पेख, इक्क शब्द रक्खणा संभाल। कवण मिटाए हरि साचे दा लिख्या लेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी एका वेर धर्म राए दी जेल्ह। धर्म राए खोल्ह कवाड़। महीना चढ़दा आए हाढ़। प्रभ साचे दी इक्को उठे धाड़। लुकया रहण ना देवे कोई विच जंगल जूह पहाड़। एका तीर चले वज्जे बेमुखां दे सीने काड़। बची रहे ना कोई विच्चों बहत्तर नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं रिहा गगन नूं पाड़। शब्द सरूपी गगन पाटा। काया मन्दिर साचा हाटा। गुरमुखां आत्म जोत जगाए, आप कढाए जोत ललाटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण ना कोई बाज़ीगर नाटा। ना बाज़ीगर ना एह नट। ना पखण्डी ना एह भट्ट। वसे सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी घट घट। वेला अन्तिम आप ल्याए, चिट्टे अस्व चढ़ सरपट। सचा लाहा गुरसिख साचे लैणा खट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भुल्लया रहि ना जाए आप कराए पूरे घाट। पिछला घाटा पूर कराए, हाज़र हज़ूर हो दरस दिखाए। साचा शब्द रसन चलाए। गुरसिख तेरा पाटा, तन आपणीं हत्थीं सीं वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची नींह रखाए। आपे वड्डे बण बण बाढी। आपे बण जाए कलिजुग अन्तिम गाडी। बेमुखां कलिजुग चुग चुग ल्याए हाडी। गुर संगत तेरे दर दुआरे खड़ा अट्ठे पहर लडावे लाडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दवारिउँ देवे काढी। दर दुआरा दिसे दूर। प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूर। गुरमुख अट्ठे पहर जोत सरूप प्रभ साचे दा वेख एका नूर। हउमे ममता रोग गंवाए, भन्न भन्न कुट्ट कुट्ट पंजे चोर करे दूर। सृष्ट सबाई पाए फुट्ट, गुरसिख लाहा लैण लुट्ट, भाणा वरते कलि जरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त आप लिखाए, ना कोई मेटे मेट मिटाए, सर्ब कला आपे भरपूर। सर्ब कला भरपूर, सर्ब बिध जाणे। सृष्ट सबाई हत्थीं मौत सरूपी बन्न्हे गाने। घर घर दिसण तत्तां उप्पर खाली काने। कलिजुग जीव अन्तिम अन्त होए निधाने। ना प्रभ दिसे सर्ब जीआं दी आपे जाणे। ना रोवे ना हस्से, ना अन्धेर ना सवेर एका एक राह साचा दस्से, मेल

मिलाए गुरसिक्खां विष्नूं भगवाने। फूलण हार गुरसिख भेट चढ़ांयदा। प्रभ साचा लेखे लांयदा। साचा जगत विहार, हरि आपे आप करांयदा। सतिजुग तेरी बंधे आपे धार, सोहँ शब्द चलांयदा। सृष्ट सबाई बद्धा पापां भार, ना अग्गे कोई उठांयदा। किरपा कर हरि निरँकार, छोटा काका अग्गे लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो भाणा की वरतांयदा। बाल अञ्याणा अग्गे गया लग्ग। गुरमुखां आत्म तृखा बुझाउँदा जाए अग्ग। सृष्ट सबाई वखाउँदा जाए आपणा राह पग। बेमुख जीव उठाउँदा जाए अग्न जोत विच जायण दग। साची जोत मात जगाउँदा जाए, गुरमुख लाज रखाउँदा जाए जॅग। फड़ फड़ बाहों राहे पाउँदा जाए, देवे सुनेहड़ा निहकलंक कलि जामा पाए सूरा सरबग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट वसे सदा अलग्ग। बाली बुध वड्ड बलधार। प्रभ अबिनाशी देवे दो हत्थां दा सिर ते इक्क प्यार। गुर संगत कर जा हौला भार। कलिजुग बेड़ा बन्नॄणा लक्ख चुरासी तैनूं धन्न धन्न धन्न करे पुकार। सतिजुग धार हरि देवे बन्नॄ, पहली माघी दिवस विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे पूर्ब कर्म विचार। आपणा भाणा आपे जाणे। पहली माघी मुहम्मदी सर्ब कुरलाणे। गुरमुख साचे साचे राहे जाणे लग्ग, मानस जन्म सुफल कराणे। बेमुखां पकड़े शाह रग, प्रभ अबिनाशी हत्थीं गूढ़ी नींद सवाणे। राजे महाराणयां वड ज़रवानयां तुट्टे तग, ना कोई लड़ बंधाए। एका हरि शाह सुल्तानयां, छत्र आपणे सीस झुलाए। जोत सरूपी पहरया बाणयां, दिस किसे ना आए। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणयां, प्रभ आपणी सरन लगाए। जो जन आए गुर दर बण निमाणयां, प्रगट होए दरस दिखाए। साचा रंग गुरमुख साचे माणयां, जो रसना हरि हरि गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चले चलाए आपणे भाए। चले चलाए आपणे भा। सृष्ट सबाई चलाए एका राह। निहकलंक कलि जामा पाया, आपणा भेख लए वटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द ढंडोरा रिहा वजा। कलिजुग माया विच रुल ना जाए, दे मति रिहा समझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पर्दा ना कोई उहला ना कोई भरम भुला। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, सर्ब कला भरपूर। एका जोती धार, एका साचा नूर। गुरमुख साचे सन्त जनो, आत्म सहिँसा करो दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द वखाणे ना जाणो कूड़ो कूड़। जन भगतां सहिँसा लैणा कढ्ढ। शब्द आरी नाल प्रभ देवे वढ्ढ। गुरमुखां करे सुखाले हड्ड। ना मंगे कोई दलाली, ना मंगे कोई हलाली, गुरमुखां दए छड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख अन्तिम जीव कोई ना देवे छड्ड। उठो सिँघो उठ बल धारो। भरम भुलेखा सर्ब निवारो। भुल्ल रुल कलिजुग अन्तिम ना जाओ डुल्ल, प्रभ बख्शण आया बख्शणहारो। दाग ना लाउणा आपणी कुल, मानस जन्म संवारो। अन्तिम पाणी पैणा काया चुल्लॄ, चढ़े झूठा रंग रंगा कुड़यारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, निहकलंक जामा पाए प्रभ साचा सच भतारो। सच भतार सन्तन सुहेला। कर विहार शब्द सरूपी मेल मेला। एका पुरख अपार वड्ड अलबेला। दस्से शब्द सच्ची धार, गुरमुख बणे सच्चा चेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्तां आप कराए आपणा मेला। मेल मिलाए साचे सन्त। आप बणाए जगत बणत। मेल मिलावा साचे कन्त। दरगाह साची खेल बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां इक्क सुणावे शब्द तत्त । हरि सन्त हरि हरि जाणे । हरि सन्त हरि आप पछाणे। हरि सन्त हरि आप चलाए आपणे भाणे। हरि सन्त हरि पहनाए शब्द बाणे। हरि सन्त हरि आप बणाए विच मात सुघड़ स्याणे। हरि सन्त हरि आप उठाए, अन्तिम कलि बाल अञ्याणे। हरि सन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन ध्याने। हरि सन्त हरि रंग वेख। हरि सन्त प्रभ अबिनाशी धारे भेख । हरि सन्त मिल साचे कन्त चल आओ माझे देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच प्रवेश । हरि सन्त वेखो जाणो । हरि सन्त प्रभ अबिनाशी रंग पछाणो। हरि सन्त ना जाणा भुल्ल, गुरमुख साचे बण निधानो। हरि सन्त बणाए बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानो । हरि सन्त हरि का रूप । हरि सन्त सन्त हरि एका दर एका घर दिसे सति सरूप । हरि सन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त महिंमा जगत अनूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दात झोली पाए साचा शब्द बणाए दूत। सिर ताज दिया गुर पूरे। उपजे धुन अनाहद तूरे। साचे सन्त कारज होए पूरे। अट्ठे पहर ना तुट्टे धुन, खुल्ले सुन्न दिसे हाज़र हज़ूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी साचे हरी, साचे सन्त साचा कन्त प्रभ दर वरी, प्रभ वसे नेड़ ना जाणो दूरे। साचा कन्त हरि सन्त ल्या पछाण। प्रभ अबिनाशी इक्को देवे साचा माण। आत्म साची जोत जगाए करे रुशनाए कोटन भान। रोग सोग कोई रहण ना पाए, एका चढ़ाए शब्द बबाण। दरस दिखाए, हरस मिटाए, प्रगट होए आप श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन सन्तां आदि अन्त जुगां जुगन्त देंदा आया माण। गुरमुख साचे सन्त गायण चाईं चाईं। साध संगत मेल कर, देवे नाम सच्ची वड्याई। अचरज पारब्रह्म कलि खेल कर, साचे मार्ग लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां सार साची पाई। पाए सार सच धुन। साचा शब्द लए कन्न सुण। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरन ल्याए चुण। ओथे कोए ना पहुंचे रिख मुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। कवण जाणे गुण हरि तेरे। सृष्ट सबाई भुलाई कर कर हेरे फेरे। हरि ना किसे दिसे घर, ना किसे दर ना किसे मन्दिर ना किसे डेरे। ना किसे जूह पहाड़ जंगल डूंघी कंदर, ना किसे नगर खेड़े। कलिजुग जीव भौंदे फिरदे बन्दर, चारों तरफ पाउँदे फिरदे फेरे। ना कोई करे शांत अंदर, ना कोई मिटाए झूठे

झेड़े। गुरमुख साचे सन्त जनों प्रभ अबिनाशी वसे काया महल्ल अटारी अंदर, जिस दे सदा खुल्ले वेहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपे करे नबेड़े। सच नबेड़ा आपे कर। किसे कोलों लैण ना जांदा कोई वर। ब्रह्मा विष्न महेश शिव अट्ठे पहर खड़े रहण दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि मुख भवाए, एका मुख रखाए गुरसिक्खां घर। निहकलंक कलि जामा धारे। तीन लोक सर्ब पुकारे। चौदां लोक हाहाकारे। साची हट्टी साची खट्टी ना किसे खट्टी, झूठे बणे सर्ब वणजारे। अन्तिम अन्त कलि जाए जड़ पुट्टी, लग्गे इक्क धक्का भारे। गुरमुख साचे पी अमृत एका घुट्टी, हरि आत्म खोल्ह खुल्हारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं गुरसिक्खां सीस छत्र झुलारे। कलिजुग अन्तिम होणा अन्त। रोण सभे लक्ख चुरासी जीव जन्त। हत्थ मल मल धोणा, वेला गया हत्थ ना आउणा किसे साध सन्त। गुरमुख साचे सन्त जनां, प्रभ देवे वड्याई विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा घर पाओ हरि बणाओ साचा कन्त। कलिजुग अन्तिम कर विचार। घनकपुर वासी जामा धार। ब्रह्मा दित्ता हरि दुरकार। ब्रह्मपुरी विच्चों हो जाणा बाहर। कलिजुग अन्तिम चार वेद तेरे होए ख्वार। अथर्बण डिगा मूंह दे भार। ना पाए आपणी सुध, कलिजुग जीवां उलटी बुध, प्रभ आपे जीवां जन्तां पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जामा पाए, इक्क लगाए सच्चा सच दरबार। ब्रह्मे वेद चार उचार। सृष्टी दस्सी साची धार। अन्तिम कलि ना कोए करे विचार। बेमुखां औखा चुक्कणा होया भार। चित्र गुप्त हरि लेखा लिखे, करदा रहे विचार। गुरमुख साचा मंगे साची भिखे, साचा शब्द हरि देवे झोली डार । आत्म लाहे झूठी विखे, साचा नाम इक्क ख़ुमार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त आपे लए विचार। सतिगुर पूरा सर्ब सुखदाई है। सतिगुर पुरा ममता मैल रिहा धवाई है। सतिगुर साचा सोहँ शब्द काया साबण आप लगाई है। सतिगुर साचा गुरमुख साचे आपे लए बणाई है। सतिगुर साचा साची पट्टी इक्क जमात लए पढ़ाई है। सतिगुर पूरा साचा लाहा गुर दर खट्टी, पंचां चोरां नाल ना करनी पए लड़ाई है। सतिगुर पूरा वसे घट घटी, तेरी आत्म जोत करे रुशनाई है। सतिगुर पूरा वेखो काया झूठी माटी, भरम भुलेखे क्यों रिहा वक्त गंवाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांईं आप सहाई है। सतिगुर पूरा नर नरायण। सतिगुर पूरा ना कोई रसना सके कहण। सतिगुर पूरा गुरमुख साचे साचा लाहा प्रभ दर लैण। सतिगुर साचा बेमुखां अन्तिम अन्तकाल घर घर पवाए वैण। सतिगुर पूरा खुल्हड़े केस धुर, बेमुख खपाए जिउँ खाए डैण। सतिगुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणे साक सज्जण सुहेल। सतिगुर पूरा हरि वरतार। सतिगुर पूरा गुरसिख विचार। सतिगुर पूरा एका देवे नाम शब्द अपर

अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म जरम गुरसिक्खां रिहा विचार। सतिगुर पूरा सच्ची जोत जगाई है। गुर पूरा गुरसिक्खां देवे आप वड्याई है। सतिगुर पूरा गुर संगत साचा मेल पहली माघी आप कराई है। सतिगुर पूरा प्रीत जिस जन लागी, साची सरन गुर पूरा आप बहाई है। सतिगुर पूरा चुकाए मरन डरन, खुल्हाए हरन फरन जिस जन सेव कमाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी धर मात जोत प्रगटाई है। सतिगुर पूरा सर्ब गुणवन्त। सतिगुर पूरा मेल मिलाए गुरमुख साचे सन्त। सतिगुर पूरा गुरसिख बणाए अन्तिम कलिजुग साचा कन्त। सतिगुर साचा दरगाह साची नाल हंढाओ, आप बणाओ एथे आपणी बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई आओ चल सरनाई विच सर्ब जीव जन्त। सतिगुर जगत गुरदेव। बिरथा जाए ना गुर दर सेव। अमृत देवे साचा फल, सोहँ साचा मेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पछाणे ना कोई जाणे करोड़ तेतीस देवी देव। अन्तिम हरि हरि हरि जी आया। जोत सरूपी जामा पाया। अचरज खेल रिहा वरताए, धरत मात दे लाल उठ दुलारया। तेरा वक्त सुहाया, क्यों सुत्ता पैर पसारया। प्रभ अबिनाशी फेरा पाया, आवे जावे वारो वारया। आपणा भाणा आपणा बाणा आपणे हत्थ रखाया, ना जाणे कोई भेव राजा राणा सुघड़ स्याणा तख्तों लाह बहाया, ना कोई किसे सिक्दारीआ। गऊ गरीब निमाणयां प्रभ अबिनाशी आपणे गले लगाए, देवे सच्ची सरदारीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन जाओ बलहारया। गऊ गरीब दर पुकारे। धरत मात दिवस रैण करे हाहाकारे। कलिजुग जीव तुट्टा नात, प्रभ अबिनाशी जामा धारे। गुरमुखां देवे सच सुगात, सोहँ शब्द अपर अपारे। ना होए अन्धेरी कदे रात, अट्ठे पहर जोत सरूप एका जोत चमत्कारे। गुरसिक्खां पुच्छे आपे वात, आपणे रक्खे आप सहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन आप बणाए सच दुलारे। धरत मात दर पुकारे। प्रभ अबिनाशी जामा धारे। जीवां जन्तां सर्ब विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक वज्जा डंक गुरसिक्खां खिच ल्याए चरन दुआरे। जामा धार भेव छुपाया। पर्दा उहला आप रखाया। बेमुखां कढ्ढे पोला वेला अन्तिम आया। आप छड्डया तन झूठा चोला, जोत सरूपी जामा पाया। ना कोई सुघड़ ना स्याणा प्रभ अबिनाशी भेव ना जाणे कोई राया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दे मति रिहा समझाया। दे मति आप समझांयदा। फड़ बाहों राहे पांयदा। प्रगट हो प्रभ साचा दरस दिखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अन्त मुकांयदा। कलिजुग लेखा हरि मुकाया। सतिजुग साचा मात धराया। पहली माघी जन्म दवाया। साचे रागी साचा राग सोहँ शब्द सुणाया। एका धुन चार कुन्ट वाजी साधां सन्तां दए सुणाया। जिस प्रीती हिरदे लागी, मुन सुन दे तुड़ाया। सतिजुग साचे निहकलंक तेरा नाउं विच

मात धराया। गुरसिख किस्मत सोई जागी , गुर दर दर्शन पाया। कलिजुग माया तन ना लागी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ प्रगट हो गुर संगत तेरे विच समाया। पहली माघ सुहंञणी रात। गुर संगत बणे सच सुगात। प्रभ झोली पाए साची दात। सोहँ शब्द वड करामात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए इक्क जुड़ाए चरन नाता। साचा नात देणा बन्नृ। धर्म राए ना लाए डन्न। साचे धाम आप बहाए, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए लै जाए धर के आपणे कन्नृ। कलिजुग उठ उठ तुर जा । प्रभ अबिनाशी जामा पाए, बाहर कढाए फड़ के तेरी बांह । तिन्न जुग ना तैनूं कोई जगाए, सौं जाए धर सराहणे बांह। तेरा लेखा फेर लिखाए, पहलों सतिजुग दवाए थां। सतिजुग साचे तेरा जन्म विच मात दवाए। धरत मात बणाए तेरी मां। चिट्टा बाणा तेरे तन पहनाए, साधां सन्तां रक्खी ठंडी छाँ। सोहँ शब्द तेरे तन पहनाए, ना लग्गे तत्ती वा। बेड़ा तेरा बन्नृ वखाए, साचा नाम चप्पू लाए, गुरमुख साचे उप्पर लए चढ़ा। नगर खेड़ा आप वसाए, झूठा झेड़ा आप मुकाए, गुरमुख साचे आपणी चरनी लए ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां दे मति लए समझा। सोए जागो पहली माघो। धो दागो सुणो रागो। बण जाओ हँस कागो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा कलि पाया गुर पूरे दी चरनी लागो। पहली माघ जाणा जाग। कुल आपणी ना लाउणा दाग। चार कुन्ट दिवस रैण प्रभ साचा आपणी हत्थीं लाउँदा फिरे आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर चलाए किया सच स्वांग। सच तीर शब्द चलाया। पीर फ़कीर सर्ब हिलाया। अहिमद मुहम्मद चार यार ना कोए धीर धराया। गुरसिख वेखो किवें पैंदी मार, प्रभ साचा हुक्म सुणाया। वैहन्दे जाण वैहन्दी धार, पहली कूट शब्द डंक आप वजाया। आपे जाणे आपणी सार, फड़या हत्थ खण्डा दो धार, करदा जाए सर्ब सफाया। ना कोई छड्डे नारी नार, बाल बिरधां ना करे प्यार। हरि इक्को धार सर्ब वहाया। करे कराए साची कार, कलिजुग झूठा हो जाए बाहर, सतिजुग तेरी बंधे साची धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। आप मिटाए मुहम्मदी दीन। ना कोई मन्ने किसे ईन। रले रूसा संग चीन। झूठी भन्ने हँकारी बीन। झूठा देस झूठा वेस अन्तिम अन्त कलि लए छीन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए वड दाता प्रबीन। पहली कूट हरि हुक्म सुणाया। लाड़ी मौत फड़ के आपणी हत्थीं राहे पाया। उठ उठ जाह वेला अन्तिम कलि नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी जामा धार शब्द डण्डा मगर लगाया। ना वेखीं मात पित ना छड्डीं कोई थां, बचया कोई रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी अट्ठे पहर आपे वेखे करे कराए जो मन भाया। लाड़ी मौत गई भज्ज। लहू पीवां

जा के रज्ज। लाउण ना देवां किसे अज्ज पज्ज। शब्द कटारा जाए वज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई शब्द सरूपी रिहा गज्ज। पहली कूट हरि कीनी वंड। जीव जन्त सभ पायण डण्ड। घर घर दिसे नार रंड। कच्चे भज्जण झूठे अंड। बेमुखां प्रभ साचे अन्तिम अन्त कीनी झण्ड। गूढ़ी नींद सवाया वेखे कर कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई कराए चण्ड प्रचण्ड। पहली कूटे चले चण्डी। ना कोई दीसे जीव घमंडी। प्रभ पाउँदा जाए सभ दी वंडी। चारों तरफ वहीर कराए, ना दीसे कोई राह डण्डी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कर खण्डी खण्डी। पहली कूट आप मुकाए। दूजा हुक्म फेर सुणाए। वरते वरतावे जो मन भाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप आप हरि राए। गुर पूरे धार बंधाई है। सतिजुग साचे तेरी बणत बणाई है। महिंमा अगणत ना गणी जाई है। बेअन्त बेअन्त कहे सर्ब लोकाई है। गुरमुख साचे आपणे भेव रिहा खुल्ाई है। सर्ब भुल्ले जीव जन्त, ना सार किसे पाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आपे आप वरताई है। आपणी खेल हरि आप वरताई है। दूजे सिर ना भार रखाई है। ताअना मेहणा क्या कोई देवे, डोर आपणे हत्थ रखाई है। साचा माण ताण हरि आपे देवे, गुरसिक्खां दे वड्याई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां बणत रिहा बणाई है। आदि अन्त हरि बणत बणाए। साचे सन्त हरि आप वड्याए। जीव जन्त विच्चों फड़ हरि बाहर कढाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे आपे लाए। पहला लेखा आप चुकाया। आपणा भेव ना किसे वखाया। अचरज खेल पारब्रह्म आपणा आप कराया। गुर तेग बहादर नांवे गुर, जन्म फेर मात दवाया। जोत सरूपी किरपा कर, आपणा मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे दर साचे साचा माण दवाया। तेग बहादर गुर वड्याई। मातलोक हरि जन्म दवाई। आपणा आप संग रखाई। जिउँ अंगद नानक अंग लगाई। साध संगत गुर पूरे नूं दयो वधाई। जुगां जुगां विछड़यां गुर संगत मेल मिलाई। आपणा भाणा आपे जाणे, कोई जीव कह सके ना राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा मात पित आपे बणे भैण भाई। साचा जन्म मात दवाया। आपणा आप नाल उपाया। सिँघ पाल हरि नाम रखाया। एका शब्द हरि साचे, गुरसिख पूरे आख सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव सृष्ट सबाई रिहा छुपाया। एका शब्द दिया सिक्ख पूरे। जिस वस्सया आत्म ना होया दूरे। दिवस रैण अट्ठे पहर रक्खे शब्द तूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जामा पाया। नाथ त्रिलोकी करके जाए कारज पूरे। पूरा कारज आप कराउणा। तीन लोक हरि आप उलटाउणा। सच्चा कर्म हरि साचे विच मात आपणी हत्थीं आप वरताउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी आत्म अमृत

मेघ आप बरसाउणा। सिँघ पाल आप जगाया। बाल अवस्था दरस दिखाया। काहना कृष्ना प्रगट होए बाहों पकड़ गले लगाया। उठ अनभोल सुत्तया, घनकपुरी हरि जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आपे आप समाया। गुरसिख साचा लए उठाए। सच विचोला गुरसिख रखाए। पड़दा उहला ना कोई रखाए। शब्द बोला इक्क सुणाए। आपणी हत्थीं तोल पूरे तोला, ना घाट कोई आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग इक्क ल्याया शब्द डोला, आपणी हत्थीं उप्पर चढ़ाए। शब्द डोला आप लै आया। पाल सिँघ नूं हुक्म सुणाया। उठ लाल प्रभ दर तेरे ते आया। कर दरस हो निहाल, जोत सरूपी हरि लए जोत मिलाया। अग्गों करे दोए जोड़ चरन निमस्कार, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। ना सुणे पुकार सच्ची सरकार, वेला अन्तिम नेड़े आया। तिन्न लोकां दी बध्धी धार, भाणा आपणे हत्थ रखाया। उठ सिक्ख हो अस्वार, सच रथ प्रभ साचा घर तेरे लै आया। इक्को मार शब्द उडार, अन्तिम अन्त हरि कलि ब्रह्मे वक्त चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा आपे कर, साचे धाम आपणी हत्थीं दए बहाया। दूजी बद्धी फेर धार। वीह सौ सत्त बिक्रमी सप्तम जेठ कर विचार। सिँघ सवरन हो उठ त्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर तेरे पहले आए गुर संगत नाल लै दुलार। सिँघ सवरन हो त्यार। बेमुख कलिजुग विच्चों होया बाहर। हरि चरन कर प्यार मिले साचा सुक्ख, रोग सोग जगत निवार। तेरी उतरे भुक्ख, कर दरस हरि निरँकार। सुफल कराए मात कुक्ख, फिर जन्म ना आवे दूजी वार। तेरी काया लगाए साचा फल ना जाए सुक्क, तेरे हरे रहण डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी करदा रहे सदा सदा प्रितपाल। सप्तम जेठ सति सरूप। महिंमा कीनी जगत अनूप। नज़र ना आया जिस खेल रचाया, ना कोई वेखे रंग रूप। जोत सरूपी जामा पाया, आपे बण जाए वड शाहो वड वड भूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आप परोया सोहँ साचे सूत। सिँघ सवरन कर त्यार। आप होया नाल पहरेदार। इक्क लवाई शब्द उडार। चढ़दा जाए वारो वार। आप बहाए सच घर बाहर। धू्र दरबान अन्तिम कलि आई हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग आपे पावे सर्ब सार। चौथे जुग वक्त चुकाया। भगत धू्र विच जोती मेल मिलाया। गुरसिख साचा विच्चों मात धूह आपणी सरन बहाया। झूठी काया घर विच दिसे ना हां ना हूं, सारा बंस दे दुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संगत दर बहाई, इक्को शब्द दए पढ़ाया। बंस सारा करे पुकार। प्रभ अबिनाशी घर खिड़ी सच्ची गुलज़ार। गुरसिख साचा घर साचे होया नाल त्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ी आप चढ़ाया, सिर बन्न्ही चिट्टी दस्तार। सिर दस्तारा दित्ता बन्न्ह। आप उठाया आपणे कन्न्ह। मातलोक विच चढ़या चन्न। भैणां भाईआं देवे धीरज बन्न्ह। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख कहे धन्न धन्न। सिँघ चेत अर्ज़ गुजारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। सुण पुकारे की वरते कलिजुग वरतारे। साचा सुत घर मेरे सुत्ता पैर पसारे। किरपा कर जोत धर मैं गले लगावां भुजा पसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द सुणाए गुरमुख साचे पार उतारे। सन्मुख गुरसिख बहाया। गुर पूरे साचा शब्द सुणाया। चेत सिँघ मन गया मन्न, नेत्र नीर ना इक्क वहाया। हस्स हस्स खुशी मंग तेरी वस्त हरि तूं आपे लै घर जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच आपे आप समाया। धू दरबान होया दूर। सिँघ सवरन बैठा जा हज़ूर। देवे दरस कर तरस, अमृत मेघ रिहा बरस साचा नाम देवे सरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि सर्ब कला भरपूर। कलिजुग वेला नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी साचा लेखा आप कराया। जगत भुलेखा कढ्ढ वखाया। जो जन रहे वेखी वेखा, वेला गया हत्थ ना आया। ना जाणे कोई औल्या पीर शेखा, प्रभ साचा किसे दिस ना आया। सृष्ट सबाई लेखा लिखणहार आप रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, जो किछ करे कराया। आपणा भाणा आपे कर। भाग लगाए साचे घर। प्रगट होए जोत सरूप, गुर संगत ल्या वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करनी रिहा कर। सच विहार सच करतार। सृष्ट सबाई प्रभ साचा बंधे साची धार। रैण सबाई गुर संगत किया मंगलाचार। अमृत वेला पहली माघी, रुत्त सुहाई किरपा कर हरि दातार। ना किसे सोवणा बिरध बाल जवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना आपे जाणे ना कोई आखे आख वखाणे, एका शब्द धुर फ़रमाण। कलिजुग अन्तिम हरि विचारया। आपणा रंग आपणा संग आप निवारया। शब्द सरूपी साचा तंग, आप कसा रिहा। कलिजुग जीव भन्ने जिउँ काची वंग, ना कोई अटका रिहा। सृष्ट सबाई होए जंग, साची भट्ठी आप चढ़ा रिहा। लक्ख चुरासी होए भंग, ना हरि किसे विचारया। गुरसिख साचे पार जायण लँघ, चरन सेव जिस लगा रिहा। होए सहाई अंग संग, ना भेव कोई छुपा रिहा। साची मंगो प्रभ दर मंग, प्रभ भेव सर्ब चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कट्टे भुक्ख नंग, जो जन दर आए भुल्ल बख्शा रिहा। भुक्ख नंग हरि करे दूर। देवे दरस साचे घर जो आए हज़ूर। गुरसिख ना जाए कोई डर, प्रभ वड दाता वड सूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई चार कुन्ट कराए नूरो नूर। एका जोत नूर नुरानी। रहण ना देवे कोए दुरानी। वेखो कोई रहण ना पाए जीव शैतानी। एका शब्द तीर चलाए, सीने वज्जे साची कानी। पीर फकीर सर्ब मिटाए, ना कोई दिसे नीला बानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, पहली देवे इक्क निशानी। पहला लाया इक्क निशाना। अचरज किया खेल वाली दो जहानां। आप मिटाए वड वड शाह

सुल्ताना। राउ रंक रंक राउ एका थाउं बहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँच नीच भरम सभ मिटाना। हरिजन एका थाउं। हरिजन एका नाउं। हरिजन एका छाउं। हरिजन प्रभ अबिनाशी आप लगाए आपणे पांउँ। हरिजन हरि द्वार। हरिजन हरि चरन प्यार। हरिजन हरि देवे दरस अगम्म है। हरिजन मिटाए हरस, आप सुहाए आत्म दर द्वार। हरिजन अमृत मेघ देवे बरस, काया करे ठंडी ठार। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगे करतार। हरिजन हरि सुख। हरिजन उतरे भुक्ख। हरिजन उज्जल मुख। हरिजन उलटा होए ना मात गर्भ विच रुक्ख। हरिजन दिवस रैण सदा सुक्खणा रहे सुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए तृष्ना भुक्ख। हरिजन हरि साचा जाण। हरिजन हरि नेत्र पेख, दरस विष्नूं भगवान। हरिजन लिखाए साचे लेख, पिछले लेख सर्ब मिट जाण। हरि दर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होवे मिलावा वाली दो जहान। हरिजन हरि हरि वेख। हरिजन धरे जोत धारे भेख। हरिजन आप मिटाए तेरी लिखी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि रहण ना देवे कोई औल्या पीर शेख़। हरिजन जगत मूल। हरिजन हरि ना भूल। हरिजन विच मात फल फूल। हरिजन बेमुखां लगाए प्रभ साचा इक्क त्रसूल। साचा हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे आसण डेरा लाए जिस दा ना कोई पावा ना कोई चूल। हरिजन हरि हरि मन
३६४ ०३ मन्न। हरिजन भाण्डा भरम आत्म भन्न। हरिजन हरि शब्द सुण कन्न। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली ३६४ ०३
माघी बेड़ा देवे बन्नृ। हरिजन हरि द्वार। हरिजन हरि चरन निमस्कार। हरिजन मिल हरि सच भतार। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां करे सद प्यार। हरिजन हरि मन भाए। हरिजन हरि दरस दिखाए। हरिजन कर तरस, कलिजुग अन्तिम वक्ख कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई छाणे पुणे लक्खां विच्चों कोई इक्क हत्थ ना आए। सृष्ट सबाई छाण पुण। गुरमुखां जाणे आपे गुण। सृष्ट सबाई विच्चों लए चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गरीब निमाणयां जगत निताणयां लए पुकार सुण। सुण पुकार हरि दातार। एका एक सच विहार। साची बध्धी जगत धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपे ढाहे ना कोई पावे सार। जगत धार आप बंधाए। शब्द अस्वार आप अख्वाए। इक्क अकार सर्ब थांईं रहावे। वेखे विगसे करे विचार, ना कोई सके भेव छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताए। सच कर्म कलिजुग रीती। सतिजुग साचे सच वस्त हरि साचे दीती। मात जोत धर काया कीनी सीतल सीती। छोटा बाला भेट कर गुरसिख काया कीती पतित पुनीती। छोटा बाल हरि ल्या संभाल। गोद आपणी प्रभ ल्या बठाल। उत्ते दित्ता इक्क चिट्टा रुमाल। साचा माल धन हरि झोली पाया, दरगाह साची ना होए

कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा फल लगाया आत्म डाल। साचे लाल हरि हुक्म सुणाया। आपणी हत्थी देह छुडाया। सिध्धे राहे आपे पाया। इन्द्रपुरी विच वसाया। सुरपति राजा इन्द बाहों पकड़ तख्तों लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले दे मति समझाए, निहकलंक कलि जामा पाया। पुरी इन्द्र गया सच घर। प्रभ अबिनाशी दित्ता साचे लाल सोहँ वर। शब्द सोहँ साचा शब्द विच पुरी करोड़ तेतीस अग्गे जाए धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा रहे कर। छोटे बाले चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी पकड़ी बांह। आप बहाए साचे थां। जिथ्थे कोई जाए ना। साचा नाम रसना रिहा जणा। सोहँ शब्द रसना गाओ, प्रभ अबिनाशी देवे दया कमा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे मानस जन्म दवाए, तुहाढ्ढी बणत दए बणा। सोहँ शब्द रसना गाओ। सतिजुग साचे जन्म पाओ। प्रभ अबिनाशी चरन सेव कमाओ। आपणा लेखा फेर लिखाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग अमरा पद पाओ। करोड़ तेतीस सर्ब पुकारन। प्रभ पूरे नूं अवांजां मारन। पिछले अवगुण बख्श जो कीते कारन। भोग अपच्छरां नार होए हँकारन। एका मार शब्द खण्डा दो धार, दूई द्वैत पड़दे पाड़न। सतिजुग साचे पा साची सार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलकारन। छोटे बाले दित्ती मति। बहत्तर नाड़ां उबली रत्त। दिवस रैण अट्ठे पहर सोहँ शब्द रसना रहे घत्त। कलिजुग वेला अन्तिम आया, सतिजुग साचे आया वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द साडी आत्म देवे साचा बीज घत्त। छोटे बाले आख सुणाया। प्रभ अबिनाशी क्यों मनों भुलाया। झूठे वहिण आपणा आप गंवाया। ना कोई चुकाए लहिण देण, ना कोई होए सहाया। मातलोक हरि जामा धारे वेखो जाए आपणे नैण, निहकलंक नाम रखाया। जिस दा ना कोई मात पित ना भाई भैण, गुर संगत हित्त रक्खदा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आपणा आप कमाया। छोटा बाला दए दुहाई। कलिजुग आया साचा माही। जेहड़ा फड़दा दोवें बाहीं। सिँघ सिँघासण सच तख्त बैठा सुल्तान, भेव ना रक्खदा राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा काका बाल अञ्याणा आपणी गोदी बैठा आप उठाई। बैठ गोद लाल दुलारा। सतिजुग दा चन्द सतारा। सृष्ट सबाई लग्गे प्यारा। आप बन्न्हे प्रभ साचा साची धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया, गुर संगत तेरा वड्डा भार उहदे सिर रखाया। बाहों पकड़ गुरसिक्खां अग्गे लाया। गुरसिक्खां अग्गे दित्ता ला। आप चढ़ाया साचा चाअ। आप रखाए हेठां आपणी ठंडी छाँ। गुर गोबिन्द दोए सुत्ते, थल्ले रक्खी बैठे बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप चुकाए गुरसिख साचे तेरा जगत रखाए नां। अचरज खेल हरि कराई। गुर संगत विच दए दुहाई। साची भिच्छया कलि कोई पाई। सारी संगत चुप चुपीती ना कोई

दिलासा धराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो करे जो आपणे मन भाई। तिन्न दिन हरि भिच्छया मंगी। कोई ना देवे भेट सचा इक्क भुयंगी। सृष्ट सबाई वेखी हरि हरि बहु रंगी। घर घर दिसे मां पुत्तर विछोड़ा, औखी झल्लणी तंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाण, सच वस्त साचा किसे दरों ना मिले मंगी। जे कोई मंगे प्रभ इक्क दुलारा। सृष्ट सबाई करे विचारा। ना कोई आवे फेर दुबारा। झूठा दिसे सर्ब पसारा। निहकलंक नरायण नर आपे जाणे आपणी सारा। आदि अन्त जिस दे भरे रहण सद भण्डारा। ना जायण कदे निखुट, प्याउँदा रहे अमृत धारा। एका अमृत प्याए घुट्ट, लक्ख चुरसी गेड़ निवारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा किया आपे सच विहारा। साची खेल हरि वरतांयदा। कलिजुग सतिजुग दोहां मेल मिलांयदा। सतिजुग साचा आए मात, प्रभ साचा जन्म दवांयदा। आप सुहाए भिन्नड़ी रात, साचे लेख लिखांयदा। सोहँ शब्द देवे दात, सतिजुग तेरी झोली पांयदा। तेरा कदे ना तुटे नात, चरन प्रीती जोड़ जुड़ांयदा। ना कोई पुच्छे जात पात, लक्ख चुरासी विच समांयदा। बैठा रहे सद इकांत, दिस किसे ना आंयदा। गुरसिक्खां अमृत बूंद प्याए स्वांत, आत्म तृखा सर्ब बुझांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग

३६६ ०३ सतिजुग दोहां कलिजुग सतिजुग जोड़ जुड़ाया। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ अबिनाशी तेरा नाता विच्चों मात तोड़ वखाया। सतिजुग साचे हरि साचे घोड़ चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी जन्म दवाया। सतिजुग साचे जन्म ३६६ ०३

दवा। कलिजुग अन्तिम दए मिटा। सतिजुग साचे हुक्म सुणा। कलिजुग धक्का देवे ला। सतिजुग साचे शब्द सुणा। कलिजुग सुध बुध हरि दए भुला। सतिजुग साची जोत जगा, कलिजुग अन्धेर दए मिटा, सतिजुग साचे सन्त उपजा, कलिजुग बेमुख दए खपा। सतिजुग साचा राग सोहँ शब्द जपा, कलिजुग अन्तिम अन्त राग रागनी दए भस्म करा। सतिजुग साचे चार वरन दए बहा। कलिजुग अन्तिम अन्त मेर तेर दए मिटा। सतिजुग साचे प्रभ कर्म धर्म दए जगत चला। कलिजुग अन्तिम एका करत, प्रभ देवे खेह उडा। सतिजुग साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी विच मात वड्डी दात साचा जन्म दवा। पहली माघी हरि जन्म दवाया। भिन्नड़ी रैण संग रलाया। गुर संगत बेड़ा बन्नृ वखाया। नगर खेड़ा इक्क वसाया। झूठा झेड़ा जगत मुकाया। इक्क उखेड़ा आपे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बेड़ा आप उठाया। कलिजुग बेमुख ऐंवें मारे फोकी तड़। बेमुखां क्यों रिहा लड़। धर्म राए दे अंदर वड़। झूठे जूठे झूठी पौड़ी जायण चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे अग्गे खड़। सतिजुग उठ उठ बलधार। पहली माघी वक्त विचार। प्रभ अबिनाशी बंधे तेरी धार। सृष्ट सबाई कर ख्वार। बेमुख वहा वैहन्दी धार। गुरसिख जगा, ल्या चरन द्वार। आत्म

तृखा बुझा, मिले मेल सच भतार। दर घर साचे निथावयां देवे थां, बेमुखां धक्के मार कढ्ढे बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव निमाणयां आपे पावे सार। सतिजुग साचे उठ उठ जाग। पहली माघ लग्गा भाग। एका सुण सचा राग। चार कुन्ट वज्जे साचा नाद। शब्द लिखाए हरि बोध अगाध। आप उठाए सोए वड वड गुरसिख साचे सन्त साध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण गुरमुख साचे रसन अराध। सतिजुग साचे लै अंगड़ाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। चारों कुन्ट हरि दए हिलाई। पंचम जेठ ना भुल्ल रक्खे राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे छेड़े छेड़ छिड़ाए थाउँ थांईं। सतिजुग साचे उठ ललकार। कलिजुग हो जाए घर तेरे विच्चों बाहर। लक्ख चुरासी जिस कीती बड़ी ख्वार। अन्तिम होए ना बन्द खलासी, जाए धर्म राए दे द्वार। हरि लेखा मंगे शाहो शाबाशी, ना रक्खे कोई उधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए लेख लिखार। सतिजुग साचे सुरत संभाल। गुरमुखां दुखी होया वाल वाल। साचा नाम धन्न मंगण हुण बण कंगाल। सच वस्त कितों हत्थ ना आए, ना मिले अनमुल्लड़ा लाल। अठसठ तीर्थ फिर फिर थक्के, सुक्के हरे ना होए डाल। कलिजुग अन्तिम सारे अक्के, ना होए कोई रखवाल। गुरसिख साचा प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर राह तेरा तक्के, फड़ बाहों गोद उठाल। प्रभ मिले ना मदीने ना मक्के, गुरसिख तेरे हिरदे रिहा
३६७ संभाल। आप तुड़ाए आध विच टंगे छिके, एका मारे शब्द छाल। गौंस पीर सभ आपे हक्के, वज्जण देवे ना किसे ताल। ३६७
०३ ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उम्मत नबी रसूल दी आपे देवे गाल। आप मिटाए झूठी रीत। ना कोई देवे बांग विच मसीत। गुरसिख साचे सन्त जनो, प्रभ अबिनाशी राखो चीत। अन्तिम अन्त कलि आ गया, प्रभ एको बणे साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एको शब्द सुणाए सोहँ सुहागी गीत। सतिजुग साचे बण दलेर। बेमुखां प्रभ मारे घेर घेर। शब्द खण्डा हरि हत्थ उठाए, सिँघ शेर शेर दलेर। उच्च मुनारे आपे ढाहे, ना ढाउँदिआं लग्गे देर। आपणे खाते आपे पाए, ना कोई कढाए दूजी वेर, कलिजुग अन्धेरी रात आप मिटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट भुलाए कर कर हेर फेर। उच्च मुनारे हरि देवे ढाह। शब्द तीर दए चला। बेमुखां आत्म धीर दए गवा। किसे हत्थ ना आवे नीर, चारों कुन्ट बिरध बाल जवान सारे दए रवा। ना बालक पिलाए माता सीर, ना होए कोई सहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार लँघाए आपे फड़े बांह। एका छेड़ हरि छिड़ाए। दूजा कदम फेर उठाए। सत्तर लक्ख पठाण चढ़ाए। माझे वाली हद्द लँघाए। सर अमृत हरि थेह कराए। आपे वेखे दिस ना आए। आपणे भाणे विच समाए। कलिजुग वेला अन्तिम ढुकया, पर्दा उहला ना कोई रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तर लक्ख पठाण चढ़ाए

सत्तर लक्ख चढ़ पठाण। इक्क करन सच निशान। उडण अकाश विच बबाण। करे खेल आप महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे भन्ने काया टाहण। माझे देस उडे धूढ़। बेमुखां पैंदे जायण जूड़। गुरसिक्खां आत्म रंग चढ़ाए गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख चतुर बणाए दर आए मूढ़। माझे देस हरि जामा धारया। बेमुखां ना कलि विचारया। भरम भुलेखे आपणा आप गंवा रिहा। साचा लेखा प्रभ आपे आप चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वैहन्दी धार ब्यासा आप रुढ़ा रिहा। अचन अचेती वज्जे सट्ट। हत्थीं रहण प्याले जो पींदे गट गट। रातीं सुत्या प्रभ भन्ने काया मट। कलिजुग अन्तिम घर घर विच गए फट्ट। बेमुख जीव अंध्या, देस माझे जोत जगे लट्ट लट्ट। माझे देस पुरी घनक हरि जामा पाया, बेमुख जानण बाज़ीगर नट। माझे देस फिरे ढंडोरा। शब्द सरूपी हरि फेरे घोड़ा। अन्तिम वेला कलिजुग आया, हरि पाउण ना देवे किसे पैरीं जोड़ा। बहुता वक्त हरि लँघाया, हुण रहि गया थोड़ा। साचा शब्द आप सुणाया, गुरसिक्खां गुर पूरा बौहड़ा। बाहों पकड़ चरन लगाया, आप चड़ाया साचे पौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सन्त जनां आप ल्याए चढ़ के उप्पर उत्ते शब्द घोड़ा। चिट्टे अस्व हरि तंग कसाया। चारों कुन्ट दए भजाया। सच अस्वार उप्पर आसण लाया। आपे वेखे वेख विचारे, सृष्ट सबाई दए हिलाया। रण भूमी सुत्ते पैर पसार, प्रभ अबिनाशी एका धक्का सृष्ट सबाई आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रक्खे हेठ आपणी साया। पहली माघी तंग कस। वड वड जरवाणयां, प्रभ हिरदे जाए वस। देवे उलटी मति बणाए निधानयां, आपस विच जायण फस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तीर चलाए रसन कमान विच्चों कस। चार कुन्ट हरि चाकरी करे दिवस रैण। ना चल्ले कोई किसे चातरी, प्रभ वेखे परखे वखाए साचे नैण । ना कोई रहे प्रभ अग्गे आकरी, प्रभ लैंदा रहे लहणा देण । कलिजुग जीव कौड़ी काकड़ी, अन्तिम खावे मौत डैण। घर पूरा विच केहड़ा बणे लाकड़ी, ना कोई जाणे जाण पछाणे, ना रसना कुछ कहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां निताणयां मात पित साक सज्जण सैण। सच्चा मीत यार प्यारड़ा। इक्क इकल्ला वसे धाम न्यारड़ा। सृष्ट सबाई राह साचा दस्से, ना करे कोई हुदारड़ा। निमाणयां निताणयां हरि हिरदे वसे, मिले गुरमुखा हरि यार प्यारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर पाउँदा रहे सारड़ा। पाए सार अट्ठे पहर। अंदर वड़ मारी रक्खे दड़। सारे घाड़न हरि रिहा घड़। सच घर आसण लाए, गुरमुख विरला पौड़ी पौड़ी जाए चढ़। अग्गे हरि जी नज़री आए, दर दरबारे जाए खड़्। जोत सरूपी हरि दरस दिखाए आप बंधाए साचे लड़। साचा शब्द कन्न सुणाए, शरअ हदीस ना कोई रखाए, कुरान अञ्जील ना खाणी बाणी वेद पुरानी आपणी हत्थीं फड़। साचा

भाणा हरि वरताए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर बेमुखां नाल रिहा लड़। निर्धन निरमाण प्रभ सच भूमिका तन सुहाए, दरस दिखाए सच अस्थान। अंदर डूंघी कंदर हरि दिस ना आए, बेमुखां दिसे सुंझ मसाण। झूठा वज्जा रहे जंदर, बिन गुर पूरे ना कोई खुल्हाए बेमुख भज्जे फिरन दर दर बन्दर, ना मिले किते सच्चा निशान । जती सती हठी सभ हारे, गोपी नाथ गोरख मच्छन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप नचाए, नत्थ आपणे हत्थ रखाए, उठाए नचाए जिउँ बन्दर हत्थ कलंदर, आपणे हत्थ रक्खे डोर। जिध्धर चाहे लए मोड़। बेमुख वहाए डुबाए विच अन्ध घोर। गुरसिख साचे आप जगावे, पंज चोर जिस दर ना पायण शोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम धन्न तेरी झोली पाए, दरगाह साची खाईं भोर भोर। होए निमाणा गुर चरन आ। आत्म तृष्ना प्रभ दए मिटा। काहना कृष्ना जोत सरूपी आया जामा पा। अतुल अडुल निखुट्ट सभनी थांईं होए सहा। साचा लाहा लैण लुट्ट, वेला गया पिच्छे रहे सभे पछता। गुरसिक्खां गल लाए घुट्ट, अमृत जामा दए पिला। सृष्ट सबाई पाए घर घर फुट्ट, गुर संगत बणाए भैण भ्रा। बेमुख दर तों कढ्ढे कुट्ट, गुर संगत विच ना देवे थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई बेमुख फिराए जिउँ सुंञे घर कां। निर्धन होए कर्म विचारे। आपे पाए निमाणयां निताणयां घर जाए सारे। जो चले हरि के भाणयां, बाहों पकड़ पार उतारे। हरि रंग साचा जिस जन जाणयां, प्रभ साचा देवे नाम अपर अपारे। ना भेव जणाए सुघड़ स्याणयां, देवे माण जो जन चरन निमस्कारे। मंगया भिख ना मिले राजे राणयां, वेखो चल आयण दुआरे। वेला नेड़े आ गया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पा लए सारे। राणा संगरूर सरन आए। दोए जोड़ पिछली भुल्ल बख्शाए। अग्गे प्रभ साचे मार्ग पाए। प्रभ अबिनाशी किरपा कर गुर संगत संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आपे आप चलाए। मन्ने प्रभ साचे दा साचा भाणा। गुर संगत संग इक्क हो जाणा। राजा राणा ना कोई सुल्ताना। वड ज़रवाणा ना कोई बली बलवाना। एका एक आपे आप, ना कोई रंक ना राजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी आत्म वसे हरि जी हरि श्री भगवाना। हरि का नाम इक्क जगत रखवाल है। प्रभ मिलण दी सिक वड भगती विच जहान है। गुरसिख साची सिख्या लैण सिक्ख, इक्क ना भुल्ले हरि भगवान है। आत्म उतारे कलिजुग झूठी विक्ख, अमृत प्याए नाम निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी होया आप मेहरवान है। हरि रंग नाम चलूल। गुरमुख साचे ना जाणा मात भूल। प्रभ अबिनाशी दया कमाए कलि कन्त कन्तहूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा जाम प्याए, आत्म तृखा सर्ब गंवाए, गुरमुखां बणाए सूलिउँ सूल। पहली माघी हरि वड्याए। सचखण्ड निवासी सच धाम डेरा

लाए। संझ सवेरा एका इक्क कराए। हेरा फेरा जगत अन्धेरा गुरसिख गंवाए। करे खेल पहली वेरा, साची छेड़ा आप छिड़ाए। आप रुढ़ाए प्रभ जूठयां झूठयां विच मात बेड़ा, ना किसे थां फेर बहाए। शब्द मारे आप लफेड़ा, मूंह दे भार सभ गिराए। आपे देवे उलटा गेड़ा, वांग दाणे आप पिसाए। आप मुकाए झूठा झेड़ा, आपणा नाए तीर चलाए। ना कोई दिसे नगर खेड़ा, इट्ट नाल इट्ट दए खड़काए। धरत मात तेरा खुल्ा वेहड़ा, प्रभ आपे आप कराए। गुरसिक्खां बंधाए बेड़ा, आपणी हत्थीं पार कराए। कलिजुग अन्तिम किया नबेड़ा, सतिजुग साचा मात धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जन्म दवाए। करे नबेड़ा दीना नाथ । गुर संगत तेरा सगला साथ । एका गाओ साची गाथ । साचे लेख हरि लिखाए, गुरमुख साचे सन्त जन आप चढ़ाए आपणे राथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए त्रैलोकी नाथ। नाथ त्रैलोकी वड शब्द सलोकिया। तेरा भाणा वड ज़रवाणा ना कोई सके रोकिया। सृष्ट सबाई छोटे बाले तेरे पिच्छे झोकिया। छोटा बाला किया भेटा। गुरसिक्खां बण जाए खेवट खेटा। बेमुखां आप वहाए किसे ना सके कोई अटका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध जेवड कोई ना दीसे, ना करे तेरी रीसे ना कोई फड़े बांह। पहली माघी वज्जे नगारा। सोहँ शब्द चले साचा इक्क जैकारा। चारों कुन्ट होए हाहाकारा। गुरमुख साचे सन्त जन तेरा आपणी हत्थीं प्रभ साचे बणाया गारा। इक्क मन्दिर सुंदर साचा रथ सुहाया, विच दिसे इक्क छोटा चुबारा। निहकलंक उप्पर आसण लाया। गुरमुख विरला पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण आपे आप वसाए आपणा सच दुआरा। सुच दुआरा आप बणाए। पंचम जेठ नींह रखाए। आपणीं हत्थीं प्रभ साचा बेमुख पीस वखाए। नेत्र लैणा पेख जो हरि खेल वरताए। सिँघ मनजीत जिथ्थे प्रभ तेरी रत लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सारी आख सुणाए। गुर संगत हरि दए जणाई। सुणो सन्तो सर्ब कन्न लाई। वेला हत्थ ना आए जीव, भुल्ली रही सर्ब लोकाई। शब्द घोड़ा आप भजावणा, चार कुन्टां विच फिराई। इक्क अस्वार आप अख्वावणा, दूजा कोई रहण ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वाग एका आपणे हत्थ रखाई। आपणे हत्थ रक्खे वाग। शब्द लिखाए पहली माघ। गुरसिख सोए कलिजुग गए जाग। गुर दर आए माण पाए पिछले धोए दाग। प्रभ दरस दिखाए हँस काग। काग हँस, गुरसिख फेर वड्याए बणाए राज हँस। साचा माण दवाए, गुर पूरे दा साचा बंस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सिर छत्र झुलाए, देवे वड्याई विच सहँस। विच सहँस दे वड्याई। तीन लोक माण रखाई। सतिजुग साचा मात धराई। साधां सन्तां माण दवाया, सिर उप्पर हत्थ टिकाई। आपणा बाणा हरि आप सुहाया, उत्ते चिट्टी चादर पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर

किरपा घर आपणे लै जाई। आपणे घर लै के जावे। आप लिखावे साचे नांवे। सदा रखावे आपणी छाँवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गावे। नेड़े नेड़े हरि जी वसे। बेमुख ना राह दिसे। गुरमुखां संग सद है वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दुआरा एका शब्द जैकारा नाम बाण हरि एका कसे। उठया हरि शेर दलेर। कलिजुग ल्याए वगाए इक्क अन्धेर। बेमुख जीव आपणी हत्थीं झाड़े जिउँ झक्खड़ डिग्गे बेर। गुरसिख साचे सन्त जन, प्रभ चरन बहाए घेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि साचा सद वसे नेरन नेर। नेरन नेर हरि बसेरा। गुरमुख साचे कर दरस मन चढ़े चाउ घनेरा। आत्म तृखा मिटे हरस, मिट जाए कलिजुग अन्त अन्धेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, सिँघ आसण लाया डेरा। साचा हुक्म हरि सुणाया। साचा घोड़ा दर मंगाया। चिट्टा जोड़ा चरन छुहाया। दौड़ा दौड़ा अग्गों सिक्ख ल्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे पौड़ा डण्डा आपणी हत्थीं आप लगाया। शब्द घोड़ा आए दरबार। अग्गों करे इक्क निमस्कार। साचे शाह सुल्तान हो मेरे उप्पर अस्वार। तूं बण के उप्पर बैठ काहन, मैं फिरावां विच जहान। बेमुखां भन्ना जवानी टाहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, चिट्टे अस्व अस्वार। चिट्टा अस्व चरन पुकारे। प्रभ अबिनाशी हो अस्वारे। धरत मात पई पुकारे। दुखी होए जीव जन्त करन हाहाकारे। चार कुन्ट कर ख्वारे। एका डण्डा मगर ला, कढ्ढी जा मातलोक विच्चों बाहरे। नौ खण्ड पृथ्मी वंड वखा, ना कोई रहे छुपया विच उजाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे जन सतिजुग साचे सति बणाए साचे लाड़े। शब्द खण्डा खिच दो धार। चारों तरफ मारीं एका मार। चिट्टा अस्व पवण सरूपी उडे इक्क उडार। पहली उडारी इक्को लाईं, जाईं सच दरबार। जोत सरूपी डगमगाईं, निउँ निउँ करीं चरन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाई हुक्म सुणाई, पंचम जेठ नेड़े आई फेर तेरे उप्पर होवां अस्वार। साचा अस्व हरि वेख वखाणयां। आप चबावे सोहँ शब्द साचा दाणयां। साचा हुक्म आप सुणावे, मारीं पौड़ राजे राणयां। चारों कुन्ट जाणा दौड़, सुट्टीं मूंह दे भार कलिजुग जीव वड वड बैठे बण जो सुघड़ स्याणयां। गुरमुखां पाई सार, कलिजुग पा पल्ले गल दर जो होए निमाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणयां। पहली माघी तंग कसाया। प्रभ अबिनाशी संग रखाया। धरत मात मंगी साची मंग, देण वर घर हरि साचे आया। आप मिटाए लक्ख चुरासी, धर्म राए दा दर दए खुल्हाया। धर्म राए हो त्यार, प्रभ अबिनाशी एका धक्का आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मक्का मदीना पहले ढाहया । मक्का मदीना जाए ढठ्ठ। आप गिढ़ाए उलटी लट्ठ। अग्न जोत आप लगाए, इक्क बणाए वड्डा मट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, गुर संगत दए जणाए, जोत प्रगटाए गुर संगत फेर करे इक्खु। गुर संगत सौणा पैर पसार। भाणा वरताए हरि करतार। गुरमुखां देवे शब्द हुलार। आपणे चरन ल्याए, वेले अन्त ना कोई अधार। गुरमुख विरला जाणे सन्त जिस किया शब्द प्यार। प्रभ बणाई साची बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्क दाता सिरजणहार। सिरजणहार सर्ब गुणकारीआ। गुरसिक्खां देवे वड वड सिक्दारीआं। सोहँ शब्द रसना गाओ, सदा सदा जै जैकारीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वड बलकारीआ। सतिजुग साचा वेला आया। गुरसिख विरला इक्क इकेला हरि जी आपणा संग रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीआं वक्त दुहेला गुरसिक्खां मेला पहली माघी गुर चरन लाया। पहली माघ मिल्या मेल। साचा दीपक जोत जगाए बिन बाती बिन तेल। गुरसिख साचे सन्त जनो हरि हरि गाओ, हरि प्रभ पाओ, आप कराओ आपणा मेल। प्रभ अबिनाशी भुल्ल ना जाओ, बेड़ा आपणा ना जाणा शौह दरयाए ठेल। कलिजुग माया झूठी छाया विच रुल ना जाओ, फल लगाउणा आपणी काया वेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई गुरसिक्खां साचा सज्जण सुहेल। साचा सज्जण सुहेल साचा मीत है। गुरसिक्खां दस्से साची रीत है। सृष्ट सबाई परखे नीत है। गुरमुख एका बख्शे चरन प्रीत है। दर घर आए जो दर्शन पाए काया होए सीतल सीत है। महाराज शेर सिँघ

४०२ ०३ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कर दरस मानस जन्म ल्या कलि जीत है। हरि जोत अकार जगत प्रकाश है। गुरसिख साचे करो विचार, सृष्ट सबाई अन्तिम होणा नास है। अग्गे पैंदी डाहढी मार, ना कोई करे बन्द खलास है। धर्म राए लै खलार, लेखा चुकाए शाह शाबाश है। ना कोई जाए सच दरबार, बेमुख मरे कलिजुग जूठे झूठे रस रस हास है। धर्म राए घर गए फड़े, ना कोई करे बन्द खलास है। आपणा किया आपे भरे, साचा नाम ना किसे पास है। डूंघी कंदर अग्गे आवे डरे, एका अग्नी निकले लाट है। हरि परखे खोटे खरे, बेमुखां अन्तिम आउणा घाट है। गुरमुख साचे विच मात तरे, प्रभ चरन धूढ़ रसना रहे चाट है। आत्म दर द्वार आपे आए खड़े, ना जाणे दूर दुराडी कोई वाट है। शब्द घोड़े उप्पर चढ़े, एका चाल रक्खे सरपट है। दरगाह साची जाए धरे, जोत सरूपी एका हरि डगमगाहट है। किरपा आपणी आपे करे, गुरसिख साचे दर साचे तरे, बेमुखां गल पाया चोला गया पाट है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि नर नरायण ना नटीआ ना नाट है। बेमुख रोवण करन पुकार, राए धर्म मारे डाहडी मार। खाओ पीओ जो कीता कर्म, ना होए कोई अग्गे सहार। मानस जन्म गंवाया विच माया, भरम भुलाया हरि करतार। दर आवे शर्म, ना मुख वखावे विच दरबार। झूठा तन एथे रहि जाए चरम, जीव जन्त होए गंवार। एका नाम धन साचा धर्म, गुरसिख साचे सच विचार।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम उठावे आपणीआं दोवें भुजां पसार। धर्म राए वडा शाह, लेखा मंगे थाउँ थां। किसे ना ओथे मूंह विच्चों निकले ना। अठाई कुण्ड अग्गे वखाए, जिथ्थे मिले ना कोई ठंडी छाँ। आपणी हत्थीं बेमुखां रिहा झुकाए, किधरे पुत्त किधरे मां। इक्क दूजे नूं मारन मेहणे, पुत्त कहे तूं झूठी बणी मेरी मां। झूठे कलिजुग उडाउँदी रही कां। हरि जी साचा जोत प्रगटाए, ना दस्सया तूं साचा थां। मावां पुत्तां पै जाए झेड़ा, कोई नबेड़ा करे ना। साची मां होवे जग, दाग लग्गण ना देवे चिट्टी पग्ग, पुत्तां फड़ फड़ बहाए प्रभ साचे दे दर, दोईं हत्थीं बांह। बेमुखां पकड़े शाह रग, अन्त कोई छुडाए ना। गुरमुख साची सेवा आप कमाए, झूठी मैहन्दी ना हत्थीं लाए, चरन धूढ़ साची थां। दूजे दर ना मंगण जाए, ना अग्गे सके कोई अटका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नबेड़ा नगर खेड़ा आपे आप दए वसा। धर्म राए सच द्वार। इक्क पासे रोवे मां, दूजे पासे सच दुलार। झूठा होया कलिजुग ठूठा, डिग्गा मूंह दे भार। हत्थ अंगूठा ना लगा लेखे ना होए कोई सहार। गुरमुखां हरि किरपा कर पहली माघी देवे अमृत धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द आप लिखाए, लाए सच दरबार। बेमुख जीव दए दुहाई। औखी घाटी ना देवे कोई चढ़ाई। काया माटी प्रभ साचे अन्तिम भन्न वखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण हरि जी बैठे रिहा डन्न लगाई। धर्म राए दा लग्गया डन्न। शब्द ना सुणया साचा कन्न। आपणा बेड़ा ना ल्या बन्न्ह। झूठी अग्नी लग्गी साचे तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द ज्ञान दवाए, गुरसिख साचा जाए मन। हरि सिर उठाए फूला खारी। गुरसिख लगाए विच मात सच्ची फुलवाड़ी। सृष्ट सबाई आपे वेखे पिच्छा अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी करे वाड़ी। फूलन खारी हरि उठाए। गुरसिक्खां भार रिहा वंडाए। साचा चरन प्यार आपणा आप रिहा बंधाए। किरपा कर हरि दातार, साची धार रिहा चलाए। कर्म धर्म जरम विचार, भरम भुलेखे दूर कराए। प्रभ दर आए सेव कमाए। पहली माघी लेखे लाए। जो जन चढ़ायन प्रभ गल पायण फूलणहार, प्रभ आत्म बरखा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच मात फुल्ल विच संसार आपणा एका राह बणाए। गुरसिख साचे सच गुलज़ार। प्रभ पूरी करे अन्त बहार। आपणा आप करे सच विहार। इक्क इक्क फुल्ल तोड़े हरि डाली, बण बण मालण कँवल नैण मुँधार। गुरसिख हिरदा रहे ना कोई खाली, प्रभ आपणी झोली भरे अमृत झिरना झिरे अपार। मातलोक विच आया माली, फड़ फड़ बूटे आप लगाए आपणे चरन द्वार। शब्द झूले आप झुलाए, देवे इक्क शब्द हुलार। साचा तन सोहँ सूटे आप पहनाए, किरपा कर अपर अपार। बेमुख दर तों कढ्ढे, कोई ना करे चरन निमस्कार। गुरमुखां प्याए अमृत पहली माघी एका घुट्टे, देवे सच खुमार। एथे ओथे

ना जम की छुट्टे, धर्म राए करे ख्वार। दिन दिहाड़े जायण लुट्टे, ना पावे कोई सार। सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा जड़ सभना दी पुट्टे, एका देवे दो हत्थीं हुलार । फड़ फड़ हत्थीं शौह दरया सुट्टे, आप वहाए वैहन्दी धार। गुरमुख साचे सन्त जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ कलि जाए तार। फूलणहार गुरसिख पाए। प्रभ अबिनाशी तन लगाए। मन तन धन्न हरि दे वड्याए। शब्द सुणाए कन्न, भाण्डा भरम भन्नाए। धर्म राए ना देवे डन्न, राह विच ना कोई रखाए। दर घर साचा साचा धाम ना संन्ह कोई लगाए। सोहँ शब्द जिस हिरदे वाचा, प्रभ प्रगट होए दरस दिखाए। बेमुख जीव देही भाण्डा काचा, हरि अन्तिम भन्न वखाए। गुरमुख साजण हरि साचो साचा, वेले अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फूलन बरखा लाए, गुरसिक्खां दया कमाए। शब्द फूल हरि बरसाए। गुरसिक्खां मूल आप चुकाए। शब्द त्रसूल बेमुखां दे सीने लाए। कलिजुग तेरी भन्नी पहली चूल, ना बाडी कोई बणाए। गुरसिख ना जाणा भूल, वरते सो जो पहली माघ लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हत्थ रखाए। आपणे हत्थ रक्खे हरि भाणा। ना कोई जाणे राजा राणा ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा। ना दिसे कोई वंञ मुहाणा। गुरमुख राह साचा दस्से, गुर चरन प्रीत सच्चा टिकाणा। दूजी थां तेरे कोई ना आई वस्से, चार कुन्ट सृष्ट सबाई होए सुंञ मसाणा। बेमुख जीव अग्न माया विच जायण लूसे, प्रभ एका भट्ठ तपाया। बेमुख बैठा जो मुख छुपाए, वेले अन्त प्रभ दए सजाया। लुकया रहण ना देवे विच किसे गुट्ठे, अग्न जोत प्रभ दए लगाया। बेमुखां हत्थ फड़ाया ठूठा, दर दर फिराए। गुरमुख साचे सन्त जनो रंग साचे माणो अनूठा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी दया कमाया। माणो रंग हरि हरि जाण। आपणा आप लैणा पछाण। भरम भुलेखा करना दूर, अग्गे खड़ा श्री भगवान। जिस जन होए आत्म गरूर, दर आऐ दूजी हरि मिटान। ना कोई धोखा ना अधर्म, ना कोई भूत प्रेत जिन्न मसाण। प्रभ दर आओ वेखो हरि पुकारे, शब्द वखाए इक्क बबाण। गुरसिक्खां लिखाए साचे लेखे, धुरदरगाही आप सुणाए सोहँ सच फरमाण। गुरमुख साचे सन्त गाए, जन्म मरन हरि फंद कटान। मानस जन्म लेखे लाए, लक्ख चुरासी फेर ना पाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी जो जन चरन सरन करे ध्यान। पहली माघी चरन निमस्कार। जुगां जुगां दा लाहया भार। गुरसिख हौला हो जाए, चल आए गुर चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई करे खेल अपर अपार। गुरसिख साचा वणज वपार करो प्रभ साचा हट्ट खुल्हा रिहा। साची नाम दात झोली भरे, प्रभ दो हत्थीं आप भरा रिहा। अमृत सोमा मात फुट्टे पहली माघ पीओ नाम सोहँ घुट्ट साचा पिला रिहा। गुरमुख साचे सन्त जन साचा लाहा लैण लुट्ट, लक्ख चुरासी गेड़ मुकावे।

जम्म का जेड़ा जावे तुट्ट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड भण्डारी वड भण्डारा आप लगा रिहा। वड्डा हरि भण्डार है। सच्चा इक्क दरबार है। सच्चा इक्क घर बाहर है। सच्चा दर गुरसिख मंगण हरि देवणहार दातार है। दोए जोड़ करन निमस्कार, प्रभ देंदा जाए प्यार है। आत्म बंधे सच्ची धार, झिरना झिराए अपर अपार है। प्रभ अबिनाशी आत्म देवे ठार, अमृत साचा सीर पिलाए, निहकलंक अवतार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी कर्म विचार है। पहली माघी कर्म विचार। पिछले दाग दए उतार। आप वखाए फिर सच्चा घर बाहर। गुरमुख साचे सन्त जनो हरि हरि नेत्र पेखो भरम भुलेखा दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए, चलाए, सुणाए, फड़ फड़ राहे पाए, गुरसिख कोई भुल्ल ना जाए, आपे होए सद रख्वार। आपे होए राखा आप रघुबंस। मात पित पुत्तर धीआं कोई

४०५ ०३ ना जाणे, ना दिसे होर कोई बंस। बेमुखां हरि आप पछाड़े, जिउँ काहना कंस। गुरसिक्खां लगाए धर्म जड़। बेमुख जायण पहले हड़। गुरसिख जगाए बाहों फड़। आत्म हँकारी तोड़ गढ़। जिथ्थे बैठा हरि अंदर वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी साचे हरी आप फड़ाया आपणा लड़। आपणा लड़ हत्थ फड़ाना। पहली माघी जोड़ जुड़ाना। जुड़या जोड़ ना किसे तुड़ाना। बन्दी छोड़ आप अख्वाना। शब्द घोड़ आप चढ़ाना। कलिजुग वेला नेड़े आणा। ना मिट्ठा ना कौड़ा हरि, गुरसिख साचे आओ दर, पहली माघी प्रभ दया कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख ना किसे मिटाणा। करो वणज हरि वणजारिओ। प्रभ अबिनाशी आया चल दवारिओ। घनकपुर वासी आत्म लाहे सर्ब उदासी, दोए जोड़ करो निमस्कारिओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो सदा सदा सद बलहारिओ। बलिहारी बलिहार बलिहार। गुर संगत तारी, प्रभ आपणी किरपा धार। बाल बिरध जवान नर नारी, एका बख्शे चरन प्यार। ऊँच नीच ज़ात पात राउ रंक ना करे कोई विचार। एका नाम एका डंक, सृष्ट सबाई एका दर बणे भिखार। एका नाम एका अंक, सृष्ट सबाई मिटाए शंक, प्रगट होए गुरसिख वड्याए जिउँ राजा जनक, आप बहाए चरन द्वार। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त आण ढुकया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका शब्द बणाया वड सिपासलार। पंचम राणी मारी धा। प्रभ अबिनाशी कलि पाया फाह। दो हत्थीं रिहा गल घुट, केहड़े रस्ते खां। जड़ तेरी रिहा पुट्ट, ना दिसे होर कोई थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचा राणी वड जरवाणी करदी जाईं पछोता। पंचा राणी उलटी बुध। हिरदा होण ना देवे किसे सुध्ध। झूठी जाग आप लगाई, जिउँ कांजी दुध्ध। अट्ठे पहर करदी रहे काया अंदर जुध्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा आपे मारे, लैण ना देवे गुरमुख तेरी आत्म विच सुध्ध। पंचम पंचायण पंचम डायण। ४०५ ०३

सृष्ट सबाई वहाए वैहन्दे वहिण। साचे लेखे ना किसे लाए, झूठे गुहाए गहिण। औज्झड़ राहे सारे पाए, ना अन्तिम मिलाए किसे साक सज्जण सैण। गुरसिख साचे प्रभ आप उपजाए, दर साचे लाहा लैण। सच दर भिच्छया पाए, गुरसिख भर झोली घर लै जाए, सोहँ शब्द हरि ल्याए, बबाण उप्पर आप चढ़ैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए गुरसिख ना जाए विच मढ़ी मसाण। गुरसिक्खां विच बबाण आप उडाए। साची दया आप कमाए। साची काण आप रखवाए। गुरसिख चुक्क हरि सच दरबार लै जाए। जिथ्थे होवे इक्क जोत अकार, दूसर कोई ना दिसे राए। बण हरि राए गुरसिक्खां नाल मिलाए, साची वस्त झोली पाए, आप पहनाए साचा बस्त्र साची दया कमाए। हरि हरि सभ थांईं वसे कीड़ी विच हस्त कोई भुल्ल ना जाए। गुरमुख साचे सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संगत आपणी आपणे धाम बहाए। सच तख्त दित्ता ताज। सतिजुग लगाए पहली माघ। गुरमुख विरला प्रभ दर आए, रुक ना जाए प्रभ पूरन करे काज। साचा शस्त्र तन पहनाए, सोहँ शब्द उडाए हत्थ तेरे विच बाज़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरे संग रलाए सिर टिकाए साचा ताज। सतिजुग तेरा सच दरबार। लिख्त लिखाए हरि निरँकार। पहली माघी दिवस विचार। आप उपजावे करनहार दातार। हत्थीं गाना तेरा बन्ने, सतिगुर मनी सिँघ बणे सच्चा सिक्दार। गुरमुख चढ़ाए संग रलाए किरपा कर अपार। बेमुख जीव कोई ना जाणे होया धुंधूकार। अन्तिम गए धर्म राए दे बन्दीखाने, डिग्गे मूंह दे भार। पुत्तां मां ना कोई पछाणे, ना कोई वेखे नार भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो की वरते वरतार। सतिजुग साचा तखत बहाया। मातलोक विच माण दवाया। जाण पछाण गुर दर साचा हरिभगत भगवान दए कराया। इक्क दूजे दे बणो जाणी जाण, पर्दा उहला सर्ब हटाया। सृष्ट सबाई पुण छाण, लाल अनमुल्लड़ा हरि इक्क लै आया। उत्ते चिट्टे ताणा ताण, साची सेजा आप बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मनजीत तेरा मानस जन्म विच मात लेखे लाया। लेखे गया लग्ग, लगाया हरि निरँकार। मौत लाड़ी व्याहे बेमुख वग्ग, भरी जाए धर्म राए दे द्वार। मूंह विच्चों डिगदी रहे सारयां झग्ग, मूंह थुक्कां भरे वारो वार। बेमुख जीव दर पुकारे, ना कोई बचावे अन्त होया ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए गुरसिख साचे ताण रखाए आपे लै जाए विच दरबार। सच दरबार आपे खड़्। आप फड़या आपणा लड़। बेमुख जीव जायण झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, पहली माघी ल्याया बाहों फड़। गुरमुख आए चल हज़ूर। साची जोत हरि जगाए करे नूरो नूर। बेमुख जीव दर रहण ना पाए, आप कराए दूरो दूर। मदिरा मास जो जन मुख लाए, प्रभ आप कराए चूरो चूर। सोहँ जाप जो जन प्रभ साचे घर गाए, होए सर्ब कला भरपूर। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा करे पूर। मदिरा मासी दुष्ट दुराचार। प्रभ अबिनाशी देवे दर दुरकार। साचे घर विच्चों हो जाणा बाहर। एथे पैंदी शब्द मार। बेमुख जीव रहे झक्ख मार। काया चोली आपणी हत्थीं पाड़ी, ना कोई सके खुल्ह़ार। बेमुखां हरि पुट्टे दाढ़ी, तोड़े जवानी डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लुकया रहण ना देवे कोई विच झाड़ी, शब्द सरूपी मगर लाए धाड़। शब्द सरूपी हरि की धाड़। उचे टिल्ले विच पहाड़। समेरू परबत वेख वखाणे, चौदां लोकां विच फिराए बेमुखां टोहे नाड़ नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द आप लिखाए आप वरताए, चार कुन्ट होए काड़ काड़। एका चले नाम धमाका। इक्क दूजे दे छुट्टण साका। घर घर दे दिसण खुल्ले ताका। लहणा देणा रहि जाए बाका। बुढ्ढी माई किसे ना मिले चुक्कणा काका। दिन दिहाड़े पैणा डाका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचा शब्द लिखाए, ना कोई रहे शाह सुल्तान अग्गे आका। गुरसिख साचा सच विचोला, जे रहे खबरदार। दोहीं धिरीं कोई ना निकले बोला, जे खड़ा होवे अद्धविचकार। दोहां धिरां दा बणया रहे गोला, ना छुट्टे लड़ सच्ची सरकार। ना कोई पर्दा ना कोई उहला, ना कोई झकोला, सन्त मनी सिँघ सच्चा सिक्दार। सिँघ मोता बणे भोला भाला, प्रभ पावे साची सार। गुरसिख साचा गावे एका नाम प्रभ साचे दा साचा सोहला, प्रभ साचे करदा रहे सद निमस्कार। नाम वस्त हरि साची देवे, साचा करना वणज वपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक आपणी जाणे धार। हरि वड धारना, लक्ख चुरासी विच पसारे जीवां जन्तां सर्ब विचारना। आपे करे काला सूसा, आपे खुल्ले केस गले विच डारना। आपे बणे फूलण मालन, आपे बणे गुरमुखां दर दर घर घर भिखारना। आपे बणे गुर संगत पालन, बाहों पकड़ फड़ फड़ सुत्तयां उठालना। गुरसिख फुल्ल चुग ल्याए हरि बालण, जो सेजा सीड़ी उत्ते डालना। गुरमुख विरले झल्लण साची झालण, हँकार विकार विच्चों सर्ब निकालना। फल फेर लग्गे सच्चे डालन, गुर दर दोए जोड़ जिस निमस्कारना। साचा दीपक जोत चानण, अन्ध अन्धेर सर्ब निवारना। देवे दरस विच पंखीआं आल्ह़ण, रसना जिस उचारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे सिर ना पाए आपणा भारना। आपणा भार ना किसे सिर रखाया। जोत सरूपी जामा धार, आपणे कंधे आप उठाया। निहकलंक अवतार नर सज्जा मोढा अग्गे डाहया। सतिजुग साचा कर अकार, सज्जे कंधे आप टिकाया। कलिजुग झूठा ल्या विचार, खब्बे कंधे आप उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी गोदी विच्चों बाहर कढाया। आपणा भार हरि उठाया। गुर संगत हौले भार रखाया। उत्ते ख़िलअत आए भारी, हरि सच खेल कलि वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे नाम जपाया। गुरमुख साचे शब्द उपदेश। अट्ठे पहर हरि साचा देवे विच माझे देस। गुरमुख विरला दर आए लेवे,

ना पाए भरम भुलेवे, ना वेखे खुल्लड़े केस। गुर संगत वेला अन्तिम कलिजुग आया, प्रभ बणया आप दरवेश। जुगो जुग जामा धारे आपे जाणे आपणा भेख। हत्थ ना आए किसे राजे राणे, उचे महल्ल मन्दिर बैठे रहे वेख। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, हत्थ ना आवे औलीए पीर मुसायक शेख। गुरसिख साचे दर साचा पा लै, एका राखो गुर चरन टेक। साचा नाम रसना गा लै, प्रभ करे बुध बबेक। हउमे अग्न सर्ब जला लै, शब्द सरूपी हरि करे छेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नर नरायण आदि जुगादि एको एक। एको एक नर हरा। गुरमुख साचे वेख आत्म दर खड़ा शब्द भण्डारा अमृत धारा सीर प्या, आपे किरपा कर हरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण मोह ना कोई जाणो वेले अन्तिम कलिजुग होया हाहाकारा। माण मोह हरि आप तजाए। झूठा ध्रो ना नाल किसे कमाए। आपणी काया भाण्डे लैणे धो, सच वस्त हरि आपे पाए। सोहँ शब्द गुरसिख तेरी आत्म ढोआ देवे ढो, तेरी हत्थीं कंगण आप पहनाए। ना मरे ना जाए दोए धिरां बहिण इक्ठे हो, भुक्ख रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्को दाता तोट कोई ना आए। घर दयां क्यों करे ख्वारी। जिन्नां पाई साची सारी। मुख भवाए सार ना आए, आत्म होए हँकारी। प्रभ बाहों पकड़ उठाए, भेव चुकाए आप रखाए पिछे अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणो दूर, विच रहाए बहत्तर नाड़ी।
४०८ ०३ बहत्तर नाड़ी जोत प्रकाश। जोत सरूपी जोत हरि, हर हिरदे रक्खे वास। एका जोत हरि बलोए, पिछले दाग सारे धोए, साची जोत करे प्रकाश। गुरमुख विरला जाणे कोए, आप बंधाए एका मुट्ठे हरि सर्ब गुणतास। जो जन रहे दर घर साचे रुट्ठे, साचे घर ना होए वास। शब्द तीर रसन छुट्टे, जाए पाड़ अकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम रखाए वसाए सचखण्ड निवासी एका एक, आपणा आसण आप वखाए जिथ्थे रक्खे वास। आत्म साचा हरि का वास। बेमुख क्यों लभ्भण जाए विच प्रभास। दोए जोड़ कर निमस्कार, प्रभ साचे दा बण जा दास। नेत्र वेख्या नज़र ना आए मात पताल अकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म वसे सदा रहे आस पास। सहिँसा सागर डूंघी गार। कोई ना पावे प्रभ साचे दी साची सार। घर बैठे कर रहे सर्ब विचार। करनहार सो करे, जो कर्म रिहा विचार। लहणा देणा अग्गे धरे, ना करे कोई उधार। गुरसिक्खां भण्डारे साचे भरे, जो मंगण आए दर दुआर । दर घर साचे कारज सरे, किरपा करे आप निरँकार । गुरमुख साचा ना जन्मे ना मरे, लै जाए आप सच्चे दरबार। आप चुकाए जम का डरे, पहरेदार होए ख़बरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सदा सदा होए रख्वार। शब्द नगारा ढोल साचा वज्जदा। जोत सरूपी जामा धार, विच मात हरि गज्जदा। कलिजुग घाड़न घड़या हरि, अन्तिम वेखो भज्जदा। खाली हत्थ दोए

खड़या दर, मैं अजे नहीं रज्जदा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, तूं सभ दे पर्दे कज्जदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण बैठा दर दरबार सच्चे सजदा। कलिजुग आया चरन द्वार। दोए जोड़ करे निमस्कार। प्रभ अबिनाशी मेरा कर्म धर्म ना विचार। अग्गे पैंदी डाहढी मारा। अन्तिम कलिजुग तूं जामा विच मेरे पाया, चरन धूढ़ तूं मस्तक मेरे डार। अवगुण गुण ना हरि मेरे विचार। मैं आया दर तेरे खाली हत्थ, गल विच पल्ला डार। सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा आदि अन्त बख्शणहार। सच सुणावां सच दुआरे साची सुण पुकार। जूठा झूठा माया लूठा आए दर करे हाहाकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो की वरते वरतार। कलिजुग तेरी सुणां पुकार। एका एक अन्तिम वार। मातलोक विच्चों कढ्ढां बाहर। वसदा घर तेरा दयां उजाड़। सृष्ट सबाई आपे वढ्ढे आपे कट्टे, जिउँ खेत किरसाणी हाढ़। आपे लाए दो हत्थीं झट्टे, आप उखड़ाए जड़्ह पहाड़। किसे स्वास ना होए झूठी काया मट्टे, आपे सुट्टे पाड़ पाड़। गुरसिख तेरी आत्म जोत जगे लट लटे, ना होण भाग माढ़। जंगल जूह विच पहाड़ां साचा शब्द लोड़ साचे हट्टे, ना मारे कोई धाड़। ना कोई ढाहे ना कोई भन्ने, प्रभ अबिनाशी आपे पाए सार। ना कोई चूहड़ा ना कोई जट्टे, चार वरन एका धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म हँकारीआं दुष्ट दुरचारीआं मारे शब्द मार। प्रभ अबिनाशी मारे शब्द बान। झूठी काया देवे छान। एका एक आप रखाए आपणी आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। आपणी आण आप रखाए। सृष्ट सबाई सरन लगाए। वरन बरन कोई रहण ना पाए। बगल कुरान ना कोई उठाए। विछा मुसल्ला ना निमाज किसे पढ़ाए। रोज़ा बांग ना कोई किसे सुणाए। प्रभ साचा वरते इक्क सांग, चारों कुन्ट करे रुशनाए। आप चढ़ाए शब्द कांग, गुरमुख साचे विच नुहाए। आपे वरते स्वांगी स्वांग, वेला गया किसे हत्थ ना आए। गुरमुख रक्ख प्रभ मिलण दी तांघ, बेमुखां प्रभ देवे छाँग, टाहण किसे रहण ना पाए। धर्म राए दर देवे टंग, पुठ्ठी खल्लृ लुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां बेड़ा बन्न्ह वखाए। बेड़ा बन्न्ह अन्तर हरि। पिण्ड बुग्घे जोत धर। गुर संगत मुख कराए उग्घे, जो जन रसन रहे उचर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख फिराए घर घर। तोड़ जंजाल दर आए काल। मेरी वेख इक्को छाल। बेमुख जीवां आपणी गोद लवां उठाल। पाणी फेर पीवां जे लवां सुरत संभाल। तेरे दर रहिवां नीवां, बणया रहिवां सदा कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दे वर, सृष्ट सबाई लवां सुरत संभाल। आया काल करे अरदास। प्रभ अबिनाशी दे दर द्वार, खलोता दोए जोड़ होया दास। साची सेवा हरि जी दे, देवां फल खवाल जो बेमुखां बोया। चार कुन्ट सारे करावां थेह, आपणी मिटावां भुक्ख तेह, खावां बी जो आपणी हत्थीं बोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुद्ध जेवड अवर ना कोया। आए

काल करे कल्याण। साची सेवा दे विष्नूं भगवान। बेमुखां रसन ना गाया ना जपया जीवा, मैं आपणा करां पीण खाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण आया दर, दे दईं साचा वर, मैं छोटा बाल अञ्याण। सिँघ सिँघासण हरि बिराजे। प्रगट होए देस माझे। मैं दर तेरे आया मेरी रक्खीं लाज पहली माघे। मैं मरया भुक्खा ते तिहाया, मारी इक्को अवाजे। सृष्ट सबाई मैं इक्को गाह पाया, फेर चौबलद सुहागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए वेखो किवें छेड़ छिड़ाए कोल वाघे। कलू काल कलि कलंदर। साचे दर आया अंदर। नाल ल्याया गोरख मच्छन्दर। बेमुखां नत्थ मेरे हत्थ, मैं नचावां दर तेरे ते बन्दर। आपणी कल दयां वरता, घर घर मरवावां जंदर। फेर ध्यावां तेरा नाउँ, जिस बणाया काया साचा मन्दिर। मेरी फड़ लईं हरि साचे बांह, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाई मैनूं चाईं चाईं ना कोई छड्डां विच जंगल जूह पहाड़ां डूंघी कंदर। आया काल दर पुकारदा। आया कलिजुग जीआं पासा हारदा। घनकपुर वासी दे दे वर, मैं गल विच पल्ला डारदा। लक्ख चुरासी बाहों फड़ मैं तेरे अग्गे देवां धर, फिर करां शुकर सच्चे परवरदिगार दा। लाहुंदा जावां भार, ढाहुंदा जावां किल्ह द्वार, धर्म राए तेरे दुआरे देवां भर तूं क्यों उठ उठ अवाजां मारदा। मौत लाड़ी तेरी सच दुलारी, प्रभ रक्खी आप प्यारी, वेले अन्तिम उहनूं नाल वंगारदा। कलिजुग लाड़ी मौत होए

४१० ०३ इक्ट्ठे, वेखे खेल हरि रंग करतार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पाए निहकलंक नरायण नर भेख ४१० ०३

धारे श्री भगवान दा। कलू कलि इक्क इकल्ला। मंगण आया दर तेरे ते दे सोहँ भाला। सीने सभ दे सिट्टां पाड़, ना किसे वार मेरा झेला। सभ दी जड़्ह देवां उखाड़, आप फिरावां शब्द सरूप तेरा हल्ला। मौत लाड़ी नाल व्याहवां, धर्म राए दे घर घल्लां। चारों तरफ उठ उठ वेखां दिसे सर्ब उजाड़, गुरसिख साचा तेरी छत्र छाया हेठ पल्ला। आप चबाए आपणी दाढ़ बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्ला। इक्क इकल्ला वड बलकारी। मंगण ना जाए किसे द्वारी। देवणहार सर्ब संसारी। एका शब्द रसन लगाए किरपा धारी। बेमुख खपाए इक्क धकेल आप लगाए पहली कूट करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द आप लिखाए दूजी कुन्ट फेर ल्याए वारी। उठो उठो हो त्यार, चुक्कणा मिले ना किसे भार। कलिजुग जीव क्यों सोए पैर पसार। एका छड्डो जूठा झूठा जगत प्यार। मिलाओ मेल हरि सच भतार। दीपक जोत विच मात दे जगो मिटे अन्ध अंध्यार। प्रभ मिलदा अग्गों दोवें भुजा पसार। झूठे तन ना बन्न्हो झूठे तगो, जो अन्त देवे हार। मन तन आपणा प्रभ दर रंगो, चढ़े रंग अपर अपार। पहली माघी पी अमृत रज्जो, प्रभ साचे दे भरे भण्डार। आपणे पर्दे आपे कज्जो, विच खड़ा सिरजणहार। कोई ना करना अज्जो पज्जो, लेखा सभ दा रिहा

विचार। बेमुख जीव छटाए जिउँ दाणे पाए विच छज्जे, वांग भक्ख दए नितार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो की वरते वरतार। ना कोई गोपी ना कोई काहन। करे खेल आप भगवान। आत्म शब्द लगाए बाण। वारो वारी सर्ब हिल जाण। सिँघआसण बैठा करे सर्ब पछाण। एका राह साचा दस्सया, गुर चरन जाओ कुरबान। मिटे अन्धेर जिउँ चन्द मस्सया, झुल्ले इक्क सच्चा निशान। साचा तंग प्रभ साचे कस्सया, उत्ते चढ़े प्रभ बली बलवान। कलिजुग पैरां दे हेठ झस्सया, ना उठे फेर जीव निधान। जो आए दर जाए घर हस्सया, सहिँसे रोग सर्ब मिट जाण। बेमुख जाए दर तों डरदा नस्सया, एका चले रसना तीर कमान। गुर संगत हरि साचा तेरे हिरदे वस्सया, कर कर वेखो सच पछान। होए प्रकाश कोट रवि सस्सया, करे तेज वड भानन भान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत मेल मिलाया, पहली माघ करना चरन धूढ़ इशनान। साची चरन धूढ़ जगत इशनाना। प्रभ दोवें हत्थीं बन्न्हे गुरसिक्खां गाना। आपे लै जाणा साचे घर, प्रभ साचे दा साचा बाणा। ओथे कोई ना पुजे शाह अस्वार, जिथ्थे गुरसिख हरि बहाणा। बेमुख राह आवे डर, धर्म राए बाहों लए फड़ विच अद्ध अटकाणा। गुरसिक्खां प्रभ लम्बा पैंडा आप चुकाना। प्रभ आ लै जाए साचे घर, ना जन्मे ना मरे आदि जुगादि विच सृष्ट रहाना। आपणी करनी रिहा कर, निहकलंक नरायण नर श्री भगवाना। महाराज

४११ ०३ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी माझे देस पहरया बाना। माझे देस मिली वधाई। गुर संगत बणाए भैणां भाई। पहली माघी खुशी मनाई। गुर संगत होए आप सहाई। दोए हत्थीं सिर रिहा छत्र झुलाई। अन्तिम अन्त काल आपे रक्खे आपणी छाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जामा धार, तेरा कर्म ल्या विचार देवे अन्त सजाई। घर घर होए जीव कुलखणी नार। ना मिल्या हरि सच्चा भतार। दर घर साचे वेखो किवें पैंदी मार। वेला अन्तिम नेड़े आ गया, दिन रहि गए चार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई रिहा कर्म विचार। कर्म विचारे लेखा जाणे विच संसारे, धारे बाणा अंदर बाहरे, हरि हरि वखाणे सोहँ शब्द लगाए नाअरे। घर घर कराए जै जैकारे। मन्दिर मसीतां सारे ढाहणे, ना किते दिसण गुरदुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। मन्दिर मसीत जाणे ढहि। कलिजुग अन्तिम वेला होया, इक्क पासे जाए बहि। सतिजुग साचा हरि दर अर्ज़ गुज़ारे, मैं जा वसां केहड़ी थां। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे, आप लगाए मात वक्त सुहावणा। सतिजुग तेरी आपणी हत्थीं फड़े बांह, साचा धाम तेरे नाम लगावणा। पुरी घनक नाम रखाए, वज्जे डंक चार कुन्ट सुनावणा। राजा राणा फड़ चरन बहावणा। पहलों पीणा खाणा सर्ब छुडावणा। दाणा किसे हत्थ ना आवणा। दीन मुहम्मदी हरि आप मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां गूढ़ी नींद ४११ ०३

आप सवावणा। गूढ़ी नींद दए सवाल। ना सके कोई उठाल। उत्तों मारे सतिजुग छाल। प्रभ अबिनाशी हो रखवाल। मैं तेरे साचे सन्त जनां दी जा करूँ प्रितपाल। लक्ख चुरासी विच्चों लभूं, इक्क इक्क नूं भाल। विच संगत दे मैं लभूं, गुरसिख अनमुल्लड़े लाल। वेला ल्याए झब्ब झब्बू, असीं होए बैठे कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरे फल लगाए डाल। गुर संगत साचा फल लगावणा। सोहँ मेवा मुख लगावणा। वड देवी देव किसे विरले गुरमुख दर आ सेव कमावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी आपणा भेव आप खुल्हावणा। पहली माघी दिवस भागी। गुरसिख आए बण के साचे रागी। साची धुन आप उपजाए, साचा वज्जे नादी, हरि ब्रह्मादी। साचा शब्द हरि आप लिखाए, गुर संगत तांईं आख सुणाए, आपे होए सर्ब विस्मादी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो सद रसन अराधी । रसना गाओ हरि गुणवन्ता । कारज करे पूरे साचे सन्ता। सतिजुग बणाए तेरी बणता। आपे गिणे साची गणता। ना कोई जाणे जीव जन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप दए वड्याई चरन लगाई सतिजुग साचे गुरसिख साचे सन्ता। सतिजुग साचे जन्म दवाई। भिन्नड़ी रैण नाल रलाई। साध संगत कर इक्की, एका मेल तिन्नां मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथी बाही आपणे हत्थ रखाई। तिन्ने पासे हरि जीव अपारे। चौथे पासे आपे दिसे खड़ा पहरेदारे। चौथा दरवाजा चौथा घर साचा दर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर घर भाग लगाए आए दर दुआरे। छुट्टे तीर रसन कमान। तुटे हड्डी रीड़ जो जन रसन होए बेईमान। प्रभ आप कराए अन्तिम अन्त फड़ एका छड्डुया सच ईमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए नर हरि श्री भगवान। रसना तीर चढ़े चिल्ला। वारो वारी प्रभ मारे जो अक्खों दिसे बिल्ला। दोहीं हत्थीं हरि पाए चीर, होया चिल्ला ढिल्ला। खिची जाए चिट्टे उत्ते इक्क काली लकीर, रहण ना देवे कोई बूरा पिल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी गुर संगत तेरा पूर कराया दुक्खां वाला शिला। तीर कमान चढ़े रसन तरंग। तीर तफंग प्रभ अबिनाशी दूजी कट्टे आप मिटाए शाह फरंग। एका धक्का लाए खाए डक्को डोले आपे वेखे प्रभ साचे दा साचा रंग। बेमुख जीव रहे भोले भाले, आपे भन्ने अंग अंग। पहली माघी वक्त सुहाया, चिट्टे अस्व कसाया हरि साचे तंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दर सभनां मिलदी मूंहों मंगी मंग। सच मंग प्रभ दर मंगण। बीर बैताले अन्त ना संगण। होए बहाले नाल प्याले, ला मैहन्दी हत्थ रंगण। बेमुख जीवां फड़ उठाईए झोली पाईए, आपणी तृखा मिटाईए इक्क लगाए साचा जंगन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ तीर रसन चलाया, चार कुन्ट वजाए मृदंगन। रसना चोट लग्गे नगारे। तीन लोक चार कुन्ट होए जै जैकारे। ना

४१२
०३

कोई सके रोक, प्रभ साचे तेरी साची कारे। पहली माघी बणत बणाई, सतिजुग तेरी नींह आपणी हत्थीं आप रखाई। आपे ढाहया कर स्यापा। ना कोई छुडाए माई बापा। कलिजुग झूठा मार मुकाया, ना कोई चढ़या तीजा तापा। ना किसे कोलों हरि मंगण जाए कोई जापा। प्रभ अबिनाशी वक्त सुहाया, विच मात दे सतिजुग थापा। थापी दे देवे प्यार। सच धर्म दा करो वपार। प्रभ अबिनाशी देवे साची मति, सोहँ कंगण गुरसिक्खां हत्थीं दिते डार। दूजे दर ना जाए मंगण, गुरसिख झोली अड्डु ना होण दिते किते भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत अग्गे दिसे खड़ा भतार। अग्गे दिसे नेड़े नेड़े। प्रभ आप वसे आत्म खेड़े। मुकाउँदा जाए पहली माघी झूठे धन्दे झेड़े। धरत मात उठ मार झात, तेरे खुल्ले कराए आपे वेहड़े। धरत मात तेरा दर्द वंडाया। बेमुखां हरि कंड वखाया। चण्ड प्रचण्ड विच नव खण्ड दोहीं हत्थीं दए खड़काया। साचा खण्डा प्रभ साचे आपे फड़ बहाया। बेमुखां मगर प्रभ शब्द डण्डा आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव ना रहण, सभ दी आत्म रंड कर वखाया। बेमुख नार होई विभचार। प्रभ अबिनाशी आया जामा धार। बेमुखां फड़ फड़ बाहों कढ्ढदा जाए बाहर। सर्ब कला आपे समरथी, गुरसिक्खां सिर सोहँ शब्द बन्नाई जाए सच्ची दस्तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर दर दर जा गुरसिक्खां देवे दरस, चरन सरन साचा देवे इक्क अधार।

४१३
०३

सन्त मनी सिँघ धन्न कमाई। जिस ने डाहडी कलम चलाई। निहकलंक तेरी लिख्त लेख पिच्छे आपणी देह छुडाई। गुरमुख तेरा लिख्या लेख, प्रभ पूरा रिहा कराई। जोत सरूपी हरि धरया भेख, तूं बैठा वेख आसण लाई । आपे लिखे तेरी दूजी वारी, पिता पूत कर जन्म दवाई । आप लगाए साची सेवे, घर साचे मिले सन्त वड्याई। सच शब्द हरि भेजे दूत, गुरमुख साचे पहली मिलण घनकपुरी विच आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई। इक्को मिल्या सिक्ख प्यारा। सन्त मनी सिँघ शब्द प्यारा। आए विच माझे देस, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया, मिल्या हरि सच भतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त सुरत दवाई, अकाल मूर्त एह दया कमाई, सुणे शब्द होए रुण झुण, वज्जे धुन अपर अपारा। वज्जे धुन शब्द सरूपी साचा ताल। प्रभ अबिनाशी किया खेल मात कमाल। लुध्याणे इक्क लपेटयां काया झूठी विच साचा लाल। विच घनक पुरी हरि जामा पाया, सुत्तयां ल्या उठाल। सिँघ महताब जो बचन सुणाया, गुरमुख साचे रक्खया संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़या जगत जंजाल। गुर का हुक्म मन वसाया। बीस बरस ना किसे उठाया। एका राह रिहा तकाया। प्रभ अबिनाशी कलि जामा पाए, प्रगट होए आपे लए जगाया। गुरमुख साचे तेरा साचा माण ताण, गुण निधान हरि भगवान जाणी जाण, शब्द सरूपी मेल मिलाया। सुत्ता पैर पसार, रक्खी ओट हरि। प्रभ अबिनाशी पाई

४१३
०३

सार, लाई शब्द चोट घर। साचे हरि जोत जगाई, झूठा खोट बाहर धर। एका दित्ती सच रुशनाई। शब्द सरूपी सन्त मनी सिँघ दित्ती पोट भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देवे वड्याई कोटां उप्पर कोट कर। साचा सन्त जिस सच कर मन्नया। राणा संगरूर जिस ने डन्नया। हत्थीं बन्न्हे हत्थकड़ी, होया मातलोक विच अन्न्हया। अन्तकाल ल्यावे फड़ी, कलिजुग भाण्डा देवे भन्नया। साचे वेले ना कीती सेवा, ना मन्ने मूर्ख ना सुणे कन्न कन्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अक्खीं पर्दा पाई बैठा, सृष्ट सबाई करे अन्नयां। सन्त मनी सिँघ सच दुलारा। भगत जनां दा वड प्यारा। दस्सया राह जिस अपर अपारा। कटया फाह गुरसिक्खां लक्ख चुरासी गेड़ निवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप कमाए आपे पाए साचे सन्त जुगा जुगन्त आत्म साची सारा । हरि साचे साची सेजा आप विछाया । फूलन खारी तिन्न दिन जो उठाया । साचा लाल इक्क नौजवान दित्ता उप्पर चढ़ाईआ। गुर संगत गुर पूरे मिल मिल दयो वधाईआ। गुर पूरे नूं दयो वधाई। गुरसिख संग रलाई जाए चाईं चाईं। आपणी हत्थीं हरि आपे फड़, साची सेजे दित्ता आप सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताई। आपणा भाणा दित्ता कर। गुर संगत मिल्या साचा वर। सिँघ मनजीत अग्गे धर। गुर संगत तेरा चुकाया कलिजुग अन्तिम वाला डर। साचे घर हस्स हस्स आवो, आत्म सरोवर साचे नहावो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस कलि जाओ तर। जो जन मंगे शब्द दान। पहलों करे आपणी आप पछाण। साचा मिले हुक्म धुर फ़रमाण। जो जन नेत्र पेखे कलि, जम के डर सर्ब मिट जाण। लिख्या लेख जो आया नाल धुर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाणी जाण। साचा शब्द जे कमाउणा। पहलों आपणा मन समझाउणा। गुर संगत विच नाम रखाउणा। दूजा थां ना कोई होर तकाउणा। प्रभ देवे ठंडी छाँ, जिस जन चरन ध्यान रखाउणा। आपे फड़ी बैठा बांह, ना किसे छुडाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति गुरसिक्खां समझाउणा। पहली मति तत्त विचार। फेर मंगे शब्द धार। किरपा करे हरि दातार। गुरसिख दोए जोड़ करे चरन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। शब्द बाणा जिस जन पाउणा। पहलों मदिरा मास तजाउणा। गुर दर आ फिर सीस झुकाउणा। बेमुखां प्रभ साचे दर तों बाहर कढाउणा। बेमुख जीव भाण्डे काचे, प्रभ आपणी हत्थीं आप भन्नाउणा। गुरमुख वेख हरि साचो साचे, ना फेर मन डुलाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाउणा। पहली दस्से शब्द धार। दूजी करे फेर विचार। तीजे पावे आपे सार। चौथे आप वखाए सच्चा घर बाहर। पंजे तत्त मार कढ्ढे बाहर। छेवें दो हत्थीं साची रक्खे छाँ, किरपा कर आप निरँकार। सतवें करना सति सति ना होए कदे ख्वार। अठवें

रहणा साचा हट्ठ, प्रभ उलटी लट्ठ आप गिड़ार। नावें आप बंनाए साचा नत, ना फेर होवे छुटकार। दसवें दे समझाए मति, साची दया आप कमाए, दहि दिशा ना मनुआ धाए, शब्द सरूपी बन्हृ वखाए, पंजे चोर अट्ठे पहर तक्कण घर साचे संनृ कोई ना लाए। गुरसिख साचे ना अक्कण ना थक्कण, पौड़ी पौड़ी चढ़दे जायण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाए। सुणो मति आत्म धारो। अचरज़ भेख हरि करतारो। घर बैठे नेत्र लैणा पेख, खुल्ले केस दर द्वारो। ना वसे दूर दुराडे देस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे हिरदे वसे सच घर बाहरो। साची सिख्या लैणी मन्न। पहलों कढ्ढणा आपणा जन। भाण्डा भरम प्रभ दर लैणा भन्न। हरया फेर होवे तन। साची वस्त हरि झोली पाए, तेरी आत्म धरे सोहँ शब्द साचा धन्न। आपणी किरपा आपे करे, धर्म राए ना देवे डन्न। गुरसिख तेरे कारज सरे सारे, जे गुर सिख्या लए मन्न। मदिरा मास देणा तज। अमृत पीणा प्रभ दर रज्ज। आत्म सेजा जाए सज। प्रभ अबिनाशी चढ़ जाए उत्ते भज्ज। साचा वक्त आप सुहाए पहली माघी लेख लिखाए गुरसिक्खां पर्दे लए कज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां सिर बन्हे छज्ज। इक्क भुयंग किया त्यार। मंगे मंग सच्चे दरबार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। साची दे नाम वत्थ, आप आपणा बणा सच्चा दुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए बण बण लेख लिखार। रक्खे नाम अपर अपारा। मात पिता दा सुत्त दुलारा। पाई चोली साची डोली ना कोई किया बोल बुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वणज कराए बण सच्चा वणजारा। सच वणज कर प्रीत। नाम रखाए सिँघ मनजीत। गुरसिख बैठे दूर दुराडे तेरी काया होई सीत। प्रभ अबिनाशी साची जोत विच टिकाए, झूठी ढाहे भरमां वाली खड़ी मसीत। झूठी दित्ती ढेरी ढाह। गलों फाही दित्ती लाह। साचा मिल्या माही आ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस हत्थ सच्ची वडयाईआ। वड्डी वड्याई हरि गुणकार है। आदि अनादी करदा रहे सच्ची कार है। गुरसिख दर साचे मंगण प्रभ देवणहार दातार है। गुरसिक्खां देवे साची दर रंगण, वड़न ना देवे कोई ऐर गैर है। अन्तिम अन्त कलिजुग कराया, लग्गी जेठ दुपहर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे शायर है। जेठ दुपहर तत्ती वा। बेमुखां नूं रही खा। सोहँ शब्द करदा जाए गुरसिक्खां नूं ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां नूं बाहों पकड़ बहाए साचे थां। साचे चरन सच दुआर। कलिजुग जीव ना भुल्ल गंवार। दर साचा गया खुल्ल, सतिजुग पहली वार। प्रभ दर मिले सोहँ नाम अनमुल्ल, ना करे कोई अधार। पूरे तोल जाणा तुल्ल, प्रभ साचा तोल तोलणहार। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल, कलिजुग वैहन्दा डूंघी धार। प्रभ अबिनाशी गल पाई बैठा फुल्ल, गुरसिख साचे चुग चुग आप गुंदाए साचे हार। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल मात वरताए आपे जाणे आपणी सार। संगत सुणाए शब्द संगीत। सतिजुग तेरी चलाई साची रीत। एका बंधाए साची चरन प्रीत। चारों तरफ उठ उठ वेखे, ढाहुंदे फिरदे सर्ब मसीत। गुरसिख साचा अग्गे लाया, प्रभ अबिनाशी दया कमाया सिँघ मनजीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे तेरी रीत। शब्द लगाए रसना भोग। गुर संगत चुगाए साची चोग। प्रगट होया घनकपुर वासी, दरस दिखाए खड़ अमोघ। गुरमुख साचे सन्त प्यारिओ, प्रभ आया कट्टण रोग। बैठे सच दरबारिओ, हरि मिल्या मेल लिख्या धुर संजोग। पूर्ब आपणे मन विचारिओ, ना होए कदे विजोग। एका सोहँ शब्द रसन उचारिओ, आप मिटाए चिन्ता सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी पूरी आस कराए आप लगाए साचा भोग। भोजन लग्गे भोग, लगाए हरि भगवान। गुर संगत सारी उठ चाईं चाईं खाण। प्रभ अबिनाशी सेवा करे गुरसिक्खां हो मेहरवान। चोग चुगाए फड़ फड़ दोवीं हत्थीं, भुक्खा ना कोई दर कुरलान। प्रभ सोए आप उठाए, विच मात कर कर आप पछाण। अन्तिम बीज साचा बोए, सोहँ शब्द वड्डी खाण। साचे धागे लए परोए, अद्ध विच तुट ना जाण। पिछले दाग आपे धोए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। पिछले दागां धोणी मैल। अड्ड सड्ड जो उप्पर रही फैल। गुर संगत प्रभ अबिनाशी चले तेरी गैल गैल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई शब्द सरूपी करदा फिरदा सैल। कलिजुग तेरी मात फुल्वाड़ी। प्रभ उठ उठ वेखे चारों तरफ किधरों पक्के मेरी हाढ़ी। इक्को धारी शब्द फिराए, आपे खोल्हे सभना ताड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दर आई मंगत चारों तरफ शब्द सरूपी करदा जाए वाड़ी। शब्द वाड़ पाए घेरा। विच लगाए गुर संगत डेरा। अंग संग संग अंग हरि सद रहाए, प्रगट जोत दरस दिखाए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ माण दवाए, आपणी सरन बहाए ना करे हेरा फेरा। हेरा फेरा जगत ख्वारी। प्रभ अबिनाशी जगत बन्न्हे साची धारी। पहली माघी आई विच संसारी। सोहँ शब्द सुहागी गाओ गीत, दर घर साचे आए नर नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बीज बिजाए गुरसिख तेरी आत्म इक्क क्यारी। निहकलंकी लै अवतार। फतह डंक इक्क वजाए, आपे बणे सुन्यार, सृष्ट सबाई फड़ उठाए, सुत्ता दिसे ना कोई विच बाज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपणी खेल कर जाए जमन किनार। मस्तूआणे माण दवा। जमन किनारे जाए बह डेरा ला। जोत सरूपी लए जोत जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा वाली हिन्द दए शब्द जणा। सोए राणे उठ जाग। विच भारत लग्गा भाग। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, आप पछाणे गुरसिक्खां बुझाए आग। वेला अन्तिम क्यों भुलाया, आप धो पिछले दाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखाया

४१६
०३

पहली माघ। उठे राणा होए ख़बरदार। आपणे मन करे विचार। केहड़ा चोर अंदर वड़या, जिस दित्ता शब्द हुलार। प्रभ अबिनाशी अंदर वड़या, कीता खबरदार। ना भुल्ल अनभोल सुत्तया, प्रभ तेरा होवे पहरेदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच सुल्तान वाली दो जहान अट्ठे पहर रहे पहरेदार। वाली हिन्द फड़ उठाए। फेर आपणी सरन लगाए। अगला पिछला लेखा सर्ब मुकाए। अट्ठ दस अठारां कोई रहण ना पाए। वरन बरन सभ मिट जाए। साचा हुक्म हरि जी आपणा आप सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत, वाली हिन्द आपणा दरस दिखाए। शब्द तिलक लगाए ललाट। आप कराए पूरा घाट। साचा सन्त जणाए नेड़े आए वाट। गुरसिक्खो अन्तिम अन्त झूठा चोला गया पाट। एका एक जगे जोत, निहकलंक नरायण नर शब्द सरूपी छुट्टे एका लाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे बाकी जिंनी रहि गई वाट। भिन्नड़ी रैण हरि वक्त सुहावणा। गुरसिख साचे साचा लाह लैण, दरगाह साची हरि बणे जामना। सोहँ शब्द तन पहनाए साचा गहणा पूर कराए भावना। गुरमुख साचे सन्त जन उठ भिन्नड़ी रैण रसन कहण कलि अन्तिम जुग पकड़े दामना। भिन्नड़ी रैण जगत अन्धेरा। गुरमुख तेरी आत्म सद वसेरा। डूंघी कंदर क्या वेख विचारो, प्रभ वसे नेरन नेरा। जोत सरूपी प्रगट होए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि

४१७ ०३ पाया फेरा। भिन्नड़ी रैण कलि सुहाई। वेले अन्तिम कलिजुग तेरे एहो हिस्से आई। दूजे हिस्से सतिगुर साचे सतिजुग तेरी ४१७ ०३

वंड रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे सद वड्याई। भिन्नड़ी रैण सन्त करे प्यार। अमृत वेला उठ उठ जागे प्रभ अबिनाशी अवाज़ां मार। अगल वांढी फड़ लै वागे, आत्म खोल्ह दर द्वार। सोए भाग कलिजुग जागे, गुरमुख मिल्या हरि दातार। आप परोए सोहँ साचे धागे, गल आपणे विच लए डार। आप बणाए हँस कागे, अमृत मुख चवाए धार। एका शब्द उपजाए साचे रागे, चले विच संसार। प्रभ अबिनाशी जो जन सरनी लागे, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। भिन्नड़ी रैण रुत्त सुहाए। साचे सुत्त आप जगाए। बेमुखां वड नक्क गुत्त, कलिजुग तेरे अग्गे लाए। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, चारों कुन्ट मूंह थुक्कां नाल भराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी सेवा आपणी हत्थीं आप कमाए। भिन्नड़ी रैण राज दुलारी। प्रभ अबिनाशी लग्गे प्यारी। आप बहाए चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार सुणे पुकारी। भिन्नड़ी रैण कलि अन्तिम रोए। हन्झूआं नाल मूंह धोए। कलिजुग जीव जूठा झूठा अन्तिम आपणा आप खोए। माया लूठा एका झूठा बीज बोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए होए रुशनाए तिन्नां लोए। भिन्नड़ी रैण राज सुख

माण। देवे माण आप भगवान। नाल रलाए तेरे सन्त जन सुघड़ स्याण। साचा शब्द सुणाए कन्न, भरम भुलेखे सर्ब मिट जाण। शब्द सरूपी लाए डन्न, बण के आए साचा काहन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण प्यारी तैनूं देवे माण। रैण प्यारी वक्त सुहेला। साधां सन्तां लग्गा मेला। प्रभ अबिनाशी आपणे धाम एका वसे इक्क इकेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग अन्तिम खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां एका एक लगाए सोहँ शब्द अमृत फल केला। भिन्नड़ी रैण जगत सुखदाई। गुर संगत दर साचे तैनूं देण आई वधाई। सन्तां नाल सन्त मिले जिउँ मिले विछड़े भाईआं भाई। एका ऊँचा धाम आपे दस्से, दूजा कोई रहण ना पाई। गुरमुख साचे सन्त जनां विच मात हरि आप देवे वड्याई। आपे होवे सभ तों नींवां, अचरज खेल करे रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भिन्नड़ी रैण गुरसिख बणाए तेरे साक सज्जण तैनूं देण सभे वधाई। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्हे। प्रभ अबिनाशी किथ्थों बोले। ना किसे मन्दिर ना डूंघी कंदर ना दिसे विच खोल्हे। गुर संगत तेरा साचा धाम सुहाया, प्रभ अबिनाशी तेरे विच मौले। गुरमुख साचे सन्त जनों सोहँ शब्द गाओ सुहागी, हरि सच जैकारा बोले। एका शब्द सुणाए राग, उपजे धुन नाद, गुरसिख साचा कदे ना डोले। आपे पकड़े दो हत्थां नाल वाग, प्रगट होया जिउँ पहली माघ, अट्ठे पहर गुरसिख साचे आत्म तेरे बोले। भिन्नड़ी रैण गुर संगत देण आई सति सुगात, नाम शब्द भर लैणे झोले। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, रंक रजान शाह सुल्तान बुड्ढा बिरद बाल जवान एका रंग हरि वखान, ना कोई रक्खे पर्दे ओहले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत इक्क टिकाई, अट्ठे पहर करे रुशनाई, विच काया साचे चोले। काया चोले जगे जोत। ना कोई वरन ना कोई गोत। एका एक करे बुध बबेक। गुरमुख साचे सन्त जनां आप रखाए आपणी टेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त जनां तन लग्गण ना देवे सेक। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मना। इक्ट्ठे होए भैण भ्रा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साची संगत लई बणा। दर घर साचे देवे वर, सोहँ नाम दए रंग चढ़ा। आत्म भण्डारे देवे भर, सर सरोवर आत्म बैठे गुरसिख तारी ला। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आत्म तेरी जोत जगाए, अट्ठे पहर डगमगाए, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए, जोत सरूपी दीपक देवे आप जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत भिन्नड़ी रैण संग मिला, आत्म जोत दए जगा। भिन्नड़ी रैण भज्जी आई। गुर संगत मैनूं संग रलाईं। फड़ मिलाईं साचे माही। दरस कराउणा जेहड़ा दिसे किसे नाही। मेरे उत्ते प्रभ अबिनाशी तरस कमावणा मैं नींवी हो हो आई। उच्चा सुच्चा आपे होए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई नाहीं। उच्चा सुच्चा हरि निरँकार। एका जोत अगम्म अपार। तिन्न लोका करे अकार। जीवां जन्तां पावे सार। लक्ख चुरासी पसर पसार। फिर वी वसे

सभ तों बाहर। कदे गुप्त कदे ज़ाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई पावे तेरी सार। सच कवाए हरि जी पाई है। सिर कल्गी आप लगाई है। प्रगट होया आप रघुराई है। तीन लोकां वज्जी वधाई है। पहली माघी रुत्त सुहाई है। गुरसिख साचे सन्त जनां मिल साची सेज विछाई है। किरपा कर साचा हरि उप्पर आपणा चरन छुहाई है। जामा धार वड बली बलवान, सृष्ट सबाई आपणे हत्थ रखाई है। बण के आया साचा काहन, गुर संगत गोपीआं नाल ल्याई है। गुरमुखां देवे साचा नाउँ, सोहँ शब्द वड वड्याई है। दर घर साचे पाउणा माण, चरन धूढ़ कर जाणा इशनान, दुरमति मैल सर्ब गंवाई है। जामा धारे श्री भगवान, रसना चलाए इक्क किरपाण, आपणे हत्थ उठाई है। देवे सोहँ साचा दान, गुरमुखां मन जाए मान, भुल्ल रहे ना राई है। दूसर कोई ना सुणना कान, ना कोई रंक ना राजान, निहकलंक हत्थ तेरे वड्याई है। साचा वक्त आप सुहाए, दिल्ली जाए चरन छुहाए, उप्पर सिँघासण आसण लाए, वाली हिन्द दोए जोड़ आए सरनाए, वाह वाह तेरी सच वड्याई है। पिछली भुल्ल बख्शाए, अग्गे हुक्म हरि सुणाए, चार वरन दा सेवादार बणाए, साची सेवा लाई है। भरम भुलेखा दर कढाए, साचा शब्द कन्न सुणाए, इक्क लफेड़ा उत्तों लाए, चरन धूढ़ ला आत्म मूढ़ आत्म लाट हरि जगाई है। इक्क चढ़ाए रंग गूढ़, कट्टी जाए सभ दे जूड़, साचा प्रभ विच मात कर आया धाई है। गुर संगत सारी रल मिल दयो वधाई, पहली माघी आ गुर दर मनाई है। सतिजुग तेरा सच्चा बाणा, प्रभ अबिनाशी आपे बणे सृष्ट सबाई वड्डा राणा, चार कुन्ट तेरी सरन आए निहकलंक वड बली बलवाना। गुरसिख साचे सन्त जन प्रभ आपणे संग रलाए आप उडाए विच शब्द बबाना। दूसर कोई दिस ना आए, गुर संगत तेरा मेल पहली माघी कलिजुग आए तेरी मुकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणा भाणा। गुर संगत सारी संग बणाया। पहली माघी कलिजुग तैनूं इक्को धक्का लाया। कोई राम नाम कोई काहन किसे दिसे शाह टिक्का, प्रभ अबिनाशी इक्को इक्का, आदि अन्त साध सन्त पैज रखदा आया। आप चलाए आपणा सिक्का, सिँघ आसण हरि दिल्ली डेरा लाया। जोत सरूपी जोत हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार शब्द सरूपी गुरमुखां हुक्म सुणाया। चार पावे अट्ठ चूल। उत्ते बैठा हरि जी दिसे साचा धाम इक्क अस्थूल। गुर संगत तेरा वक्त चुकाया, साचा समां आण सुहाया, आप गंवाए पिछला मूल। फड़ फड़ बाहों राहे पाया, औज्झड़ राह ना कोई वखाया, सोहँ साचा नाम जपाया, हिरदे हरि जी नाम रखाया, दासन दास आप हो आया, गुरसिख ना जाणा भूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा साचा कन्त कन्तूहल। गुरसिख साचे साची नार। अट्ठे पहर करन प्यार। साची सेजा आत्म वसे, सुत्ता पैर पसार। जिउँ लछमी चरन हरि जी

इस्से, ना लथ्थे हरि ख़ुमार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सन्त जनो, सद अंदर वसे वेखो झाती मार। अंदर मारे एका झाती। बैठा रहे सदा इकांती। प्याउँदा रहे बूंद स्वांती। गंवाउँदा रहे किल विख जाती। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ दर आए, आपे पुच्छे वाती सुत्तयां राती। सोहँ साचा शब्द सुणाए, इक्क पढ़ाए जमाती। एका आपणा नाम जपाए, चरन बन्ह्आए साची नाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन माण दवाए, ना कोई ऊँच नीच ना कोई वड्डा जाति। ज़ात पात किया नबेड़ा। खाणी बाणी चुकया झेड़ा। वेद पुरानी खुल्ह्आ हो जाए वेहड़ा। मढ़ी मसाणी गुरसिख ना चुक्के तेरा झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, पहली माघी करे सच नबेड़ा। ना कोई कुरान ना अंज़ीला। ना कोई दीसे काला पीला। ना कोई जीव दस्से, जो पाई फिरदा नीला चोला। चारे जुग चारे रंग काला पीला चिट्टा लाल। कलिजुग खट्टी कालख, रंगया रंग इक्को काल। प्रभ अबिनाशी आपे धोए गुरसिख बाल अञ्याणयां, जो दर आए मार वड्डी छाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग फेर रंगाए, शब्द भट्ठी देवे डाल। शब्द भट्ठा आप तपाया। साची रंगण गुरसिख रंगाया। सोहँ कंगण तन पहनाया। गुरमुख साचे दर साचा मंगण जो आत्म भाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे आपणी सरनाया। किरपा कर जाए साचे घर साचे

४२०
०३

दर, साचा आण आत्म दर सदा खुल्ल्ह्आ। गुरमुख साचा पूरे तोल तुल्ला। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, तेरा आप पाए पहली माघी मुल्ला। साची सेवा दर कमाए, चरन प्रीती घोल घुल्ला। साची सेवा लेखे लाए, एका जोत विच टिकाए, पंज तत्त जो बणया झूठा कुला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मेघ बरसाए, गुरसिख लाल इक्क वार विच मात दे मिला। इक्को इक्क हरि साची धार रखावंदा। साचा माण ताल बाल अञ्याणे आप रखावंदा। एका देवे शब्द निशान, झण्डा धर्म आप झुलावंदा। नारी दुख्यारी कुक्ख लग्गे ना भाग, आए दर द्वार प्रभ साची वस्त हरि झोली पावंदा। वाह वाह सिँघ मनजीत सदा सुरजीत तेरी वड्याई, गुर संगत सदा आपणे रंग रंगावंदा। साध सन्त तेरे हत्थ वड्याई, करे कराए जिवें मन भाई, प्रभ अबिनाशी अतोल अतुल ना तोलया जाई। वड अछल वड सिक्दार ना छल्लया किसे तों जाई। प्रगट होवे घड़ी घड़ी पल पल, अचरज लीला माझे देस लगाई। चारों तरफ वेखो किवें हुंदी जल थल, सृष्ट सबाई ना सके झल्ल, एका जोत अग्न लगाई। बेमुखां हरि लाहे खल्ल्ह्। आप सुटाए धर्म राए दी डूंघी डल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां लए बचाई। गुर पूरा विदा करांयदा। गुर संगत संग रलांयदा। गुरमुख साचे सन्त जनां, साचा माण दवांयदा। रसना कहण धन्न धन्न, सच दात हरि झोली पांयदा। जाओ सुणाओ सारयां कन्न, निहकलंक कलि जामा

पांयदा। कढ्ढी जाए जन मन, प्रभ आपणा हत्थ सिर रखांयदा। भरम भाण्डे सभ दे देवे भन्न, साधां सन्तां हत्थ हथौड़ा आप शब्द फड़ांयदा। बेमुखां लाओ डन्न, प्रभ अबिनाशी साचा राह वखांयदा। गुरसिख साचे सन्त जन सिँघ मनजीत दर दर घर घर जाए साचा हुक्म सुणांयदा। उठो सन्तो करो त्यारी, प्रभ अबिनाशी माझे देस जोत जगांयदा। भज्जे आओ वारी वारी, प्रभ दोवें भुजां अग्गे उठांयदा। बेमुखां घर जाए दिओ बहारी, गुरसिक्खां नूं जाओ तारी, सच सुच्च हरि वरतांयदा। बेमुखां ल्याउणा फड़ फड़ दाढ़ी, नक्क नकेल सोहँ शब्द फड़ांयदा। खिच्ची फिरो जंगल जूह विच पहाड़ी, ना कोई किसे छुडांयदा। निहकलंक वड बली बलवान शाह सुल्तान साचा कन्त साचे सन्तां विच अट्ठे पहर समांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लिखाए तेरां मग्घर तेरे लेखे प्रभ पहली माघी पूरे करांयदा। साचे सन्तां देवे वधाई। जो चल आए वाहो दाही। पहली माघी हरि दर मनाई। गुर संगत साची साचे सन्त साची लिख्त लिखाई। वाह वाह गुरमुख गुरसिख प्यारया, तेरी होवे जगत रुशनाई। गुर चरन सीस झुका ल्या, पै जाए आपणे राहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे पिच्छे लग्गा रहे सच्चा माही। अमृत बूंद सुहावणी। दर आए पन्ध मुका, पूरा करे हरि साचे भावनी। साडा पिछला लेख अज्ज चुका, गुर संगत होए निमावणी। साचे चरनां छुपया कलिजुग चमके जंडी दामनी। गल आपणे लईं लगा, दर

४२१ ०३ घर साचे दईं जामनी। गलों कट्टीं जगत जंजाला फाह, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझा तृखा भुक्ख अग्न ४२१ ०३

कामनी। शब्द कटारी नाम है। गुर संगत अमृत साचा जाम है। प्रगट होया विच मात हरि बनवारी घनईआ शाम है। सारे वेखो मार झात, चारों तरफ रैण अंध्यारी है। कितों ना मिले साची दात, अट्ठ सट्ठ तीर्थ बैठे ठग्ग चोर यारी है। विच्चों उड गई सभ करामात, धीआं भैणां होए ख्वारी है। झूठयां जीवां तुट्टा नात, मदिरा मासी बैठे गुर घर सच्चे झक्ख मारी है। प्रभ अबिनाशी उत्ते बैठा थल्ले मारे झात रोवे धरत मात प्रभ दर आए पुकारी है। जो बैठा इक्क इकांत, वेखे लक्ख चुरासी बड़ी ख्वारी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि फिर मात जोत जगाई हरि सच्ची निरँकारी है। किस किया अकार कौण बणांयदा। किस बणाई शब्द, धार किवें चलांयदा। किस उपजाए जोत अपर अपार विच जोती आप समांयदा। वड्डा छोटा ना कोई अकार, रूप रंग ना कोई जणांयदा। ना कदे करे तन शिंगार, तीर कमान ना हत्थ उठांयदा। ना जावे किसे द्वार, पहलों इक्को इक्क आपणा आप उपजांयदा। आपणा नाउँ धर निरँकार, फिर डूंघी सोच विच पै जांयदा। केहड़ी करनी मैं आपणी कार, आपणा आपणे नाल मता पकांयदा। एका किया सच्चो सच विहार, चौदां लोक हट्ट खुल्लांयदा। किरपा कर फेर दातार, लोक तिन्न बणत बणांयदा। पूर्ब कर विचार, सत्त दीप आप उपजांयदा।

आपे बन्ने आपणी धार, नव खण्ड कर वखांयदा। जोत सरूपी कर अकार, माया रूपी सर्ब उपांयदा। आपे जाणे आपणी सार, केहड़े वेले सारे इक्ट्ठे ढाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समांयदा। जोत निरँकार आप जगाई। तिन्नां लोकां बणत बणाई। वारो वारी देंदा आया तिन्नां लोकां वड्याई। सताई जुग प्रभ डूंघी भँवर, आपणी आत्म बणत बणाई। फेर बणाया कँवल फुल्ल, आपणी नाभी ल्या टिकाई। आपे गया विच मवल, माता पिता कोई दीसे नाही। नाभी पाटी प्रगट होया उप्पर धवल, ब्रह्मा नाम रखाई। फुट्टया कँवल जोती जोत सरूप हरि, आपणी लीला अचरज आप वखाई । नाभी पाटी ब्रह्मा आया, प्रभ अबिनाशी सिँघ सिँघासण बैठ आपणे आप नूं रिहा समझाया। इक्क इकल्ला तिन्नां लोकां ब्रह्म विचारा किवें पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आपणा अकार फेर बणाया। आपणा इक्क अकार कराए। नार मुन संग उपजाए। चार सिर ब्रह्मे लाए। चारों तरफ मुख रखाए। उठ उठ वेखे केहड़े पासिउँ हरि जी आए। अट्ठे पहर अट्ठे नेत्र साचा राह तकदे रहे प्रभ अबिनाशी किरपा कर आत्म धुन उपजाए। आप खुल्हाए मुन सुन, चारे वेद लए लिखाए। आपणा भाणा आपे जाणे, ब्रह्मा लए भुलाए। हँकार आया मन अंदर, प्रभ अबिनाशी साचा खेल वरताए। सीस गधे दा ब्रह्मा दे उप्पर लगाए। जोत सरूपी जोत हरि, माया पर्दा सभ नूं पाए। माया रूपी तणया जाल। आकाश मात पताल। सभनां करे आप संभाल।

जोती जोत सरूप हरि, आपणी चले आपे चाल। तीन लोक हरि उपजाए। चार वेद ब्रह्मा मुख गाए। फेर उतारे राग छतीस, नारद झोली पाए। नारद मुन जिथ्थे चाहे ओथे गाए, सारे रंग वखाए। हरि हरि हरि लोक उसारे। ब्रह्मा बहाए इक्क चुबारे। शिवलोक वसे विचकारे। इन्द्र वसे थल्ले करे आपणी कारे। सभ तों उप्पर हरि जी वसे, निउँ निउँ झातीआं मारे। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोकां पाउँदा सारे। लक्ख चुरासी हरि उपाई। आपणी जोत विच टिकाई। आप बहाए थाउँ थांईं। आपणा भेव आपणे अंदर रिहा छुपाई। जोत सरूपी जोत हरि, कवण जाणे तेरी वड्याई। ब्रह्मा विष्नूं महेश उपाए। आप आपणी सेवा लाए। जटा जूट धार रहे नाग गल लटकाए। अठासी हज़ार बरस कर तप, फिर प्रभ अबिनाशी दर्शन पाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप रहाए। शिव जी होए जटा धार। गंगा चलाई विच संसार। एका सोमा फुट्टया साचा धार। साचे दर तों जो ल्याया गरूड़ विच संसार। इक्क बूंद डिगी गोदावरी दूजी पई गंगा जल धार। तीजी आई जमन किनारे, टंगे रहि गई अद्धविचकार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। पुरियां लोआं लोक आप बणाए। थाउँ थांईं सर्ब टिकाए। माया रूपी चारों तरफ एका जाल लगाए। जोती जोत सरूप हरि, फेर कराए हिस्से आपणी दया कमाए। चार कुन्ट चार हिस्से। चारों कुन्ट हरि जी दिसे। सूरज चन्द सदा सदा दोवें निवाउँदे

सीसे। जोती जोत सरूप हरि, क्या कोई करे तेरी रीसे। पहली वंड आप कराई। साची कंध नींह रखाई। सतिजुग साचा नां उपजाई। चिट्टी चादर उत्ते पाई। साध सन्त संग रलाई। एका हुक्म सर्ब सुणाई। खुल्ले केस सभ ने रक्खणे, गाउँदे रहणा साचा माही। जोती जोत सरूप हरि, आपणी बणत आप बणाई। सतिजुग साचा चिट्टा दुध्ध। उज्जल करे सभ दी बुद्ध। पंचां तत्तां नाल कोए ना करे युद्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त चिट्टे अस्व सच्चे चढ़दा, मार छाल उत्ते बहिंदा कुद्द। सतिजुग चिट्टा मात धराया। उत्ते हरि जी चिट्टी चादर पर्दा पाया। साचे सन्तां करदा आदर, साचा हुक्म आपणा आप सुणाया। जोत सरूपी जोत हरि, शाम वेद संग रलाया। सतिजुग साचे सच विचारो। जूठ झूठ ना धरो विच संसारो। कोई ना जावे रूठ, वेला मिले ना फेर दूजी वारो। जोती जोत सरूप हरि, आपे पावे सभ दी सारो। सतिजुग साचे तेरी वड्डी वड्याई। विच तेरे हरि जी जोत प्रगटाई। करे खेल अपर अपार, अचरज जामे हरि पहनाई। कदे बणे नरायण नर, कदे सूकर जून आप अख्वाई। पीठ पताल ल्या धर, उप्पर धरत उठाई। उप्पर ल्याया चुक्क विच मात फेर टिकाई। अचरज खेल हरि कर, सभनां देंदा रिहा वड्याई। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे तेरी साची बणत बणाई। रंग रूप हरि जी धारे। अन्तिम सतिजुग फेर करे साची कारे। मानस देही जामा धार बणया बिरध अवतारे। आया बल द्वार, बुढ्ढा ब्रह्मण ना कोई पावे सारे। आउँदे जांदे करन विचार, ना कोई विचारे। जोती जोत सरूप हरि, इक्क टंग खलोता चार वेद रसन उचारे। खाणा पीणा कोई ना सूझे, आपणे रंग करे करतारे। राज राजाण वड्ड सुल्तान पुच्छे सभ अहिलकारे। चारों कुंट वेखो ना खाली भुक्खा रहे मेरे दुआरे। अस्वमेध जग मैं कराया पहले सौ होए ख्वारे। जोती जोत सरूप हरि, दर खलोता अवाजां मारे। इक्क उठया चोबदार। बाहों पकड़ हलूणयां, तूं खलोता कवण गंवार। तेरे खपरे दिसदे खाली, ना भरे ना ऊणे की मुक्खों रिहा उचार। तोतल मोतल कुछ नहीं जाणदे, ऐवें रिहा तूं झक्ख मार। तूं गुनाही वड्डा होया, हुक्म ना मन्नया सच्ची सरकार। फड़ के बाहों अंदर खिच्चे, तैनूं दवावां सज़ा भार। अग्गों हरि जी हस्स के बोले, सुण साचे पहरेदार। राजन नूं इक्क दे सुनेहड़ा, बुढ्ढा ब्रह्मण करे विचार। ना कुछ खांदा ना कुछ पींदा, खड़ा खलोता निराधार। प्रभ अबिनाशी साचा भेख धर, खड़ा बल द्वार। साचा दूत अंदर जाए, दोए जोड़ दित्ती अर्ज़ गुज़ार। इक्क दरवेश खड़ा दर अग्गे, ना कुछ पीए ना कुछ खा। इक्क टंग दे भार खलोता, ना पता की गाउँदा नां। जे कोई उहनूं गुसे हुंदा, हस्स के अग्गों कैंहदा हां। बल राजे नूं मिलण मैं आया, होर ना कोई मंगां थां। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा नां। राजा बल तख्त ते फब्बे। चोबदार खड़े सज्जे खब्बे। एका

विच सच्चा सरदार लभ्भे। सच सुनेहड़ा देवे चोबदार, मार छाल उतरे झब्बे। आया चल बाहर, चारों तरफ दर दरवेश नूं लभ्भे। अग्गे कढ्ढी बैठा लकार, ना कोई पैर धरे अग्गे। राजा बल आया चरन द्वार, अग्गों लग्गे तत्ती अग्गे। दिल आपणे विच करे विचार, किथे भाबड़ जगे। जोत सरूपी किरपा धार आपणा सीना खोल्ह वखाया एथे लग्गी अग्गे। गुरमुख साचे सन्त जन तेरे मन ना होए हँकार, प्रभ आया तेरे दर ते झब्बे। जोत सरूपी किरपा धार, गुरमुखां हरि आपे लभ्भे। राजे बल मन विचारया। जोत सरूपी दरस पाया, जगी जोत अपारया। दोए जोड़ करे बेनन्ती, डिग्गा मूंह दे भारया। जोत सरूपी जोत हरि, बाहों पकड़ आपणे गले लगा रिहा। राजे बल अर्ज़ गुज़ारी। मूहों मंग हरि मुरारी। अजे ना पाई पूरी सारी। जोती जोत सरूप हरि, कवण जाणे तेरी सच सिक्दारी। अग्गों हरि जी आख सुणाए। वस्त कोई नहीं मंगण आए। इक्क बणाउणा छोटा कुला, जिथ्थे बहि के इष्ट लँघाए। राजा बल हो दलेर अग्गों कैंहदा मंगो छेती जिथ्थे लग्गे चंगी थाएँ। प्रभ अबिनाशी रसना कैंहदा ढाई कर्मां देणा थां बणाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेव रिहा छुपाए। राजे बल चढ़या चाअ। ढाई कर्मां जिहड़ा थां। विच्चों महल्लां लओ मिणा। उठे होए हरि जी अगांह। जोती जोत सरूप हरि, आपणा मिणदा आपे थां। राजे बल किया परवान। करे खेल आप भगवान। दो कर्मां कर तिन्न लोआं सत्त दीप नौ खण्ड
४२४ सभे मिण जाण। अद्धी कर्म बाकी रहि गई, फेर बोले भगवान। राजा बल उप्पर वेख, ना बण हुण नादान। ढाई कर्मां ४२४
०३ पूरी करदे, नही ते मिट जाउ नाम निशान। साचे भगत आई विचार। एह बुढ्ढा ब्रह्मण नहीं गंवार। अग्गे डिग्गा मूंह दे ०३
भार। मुक्खों कहे रसन उचार। अद्धी कर्म लओ मिणाए, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। पूर्ब कर्म ल्या विचार। बाहों पकड़े गले लगाई, उत्तों पाया दो हत्थां दा भार। आप घल्लया हेठ पताल। साचा नाउँ बल्ख बुखार दए लिखाई। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल दे वरताई। सतिजुग तेरा संग निभाया। साधां सन्तां रंग चढ़ाया। भुक्खा नंगा कोई दिस ना आया। किसे अंग ना भबूत लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा वेला आपे आण सुहाया। चिट्टा दुध्ध चिट्टा बाणा। सतिजुग साचे हरि जी तेरा साचा वेला आणा। दोवें अक्खीं पुट्ट पुट्ट वेखे, ना अन्न्हा ना काणा। जोत सरूपी धारे भेख, ना जाणे कोई सुघड़ स्याणा। साचे सन्त इक्ठे कर बणाए बणत, सारयां जुगां दी लाहुंदा रहे मुकाणां। सतिजुग साचे किया खेल, भुल्लया इन्द्र लुबाणा। घर गौतम दे आया डुलया रंग रलीआं माणा। दित्ता इक्क सराप रिखी ने, आप उलटाया जुग दा बाणा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भाणा। सतिजुग तेरे नां रुशनाई। भगत जनां हरि दे वड्याई। सच पदवी ध्रू ने पाई। बैठा दर दरबान, अट्ठे पहर दर्शन पाई। वड्डा दाता हरि सुल्तान, भगत प्रहलाद रिहा गाई। एका

नाम रक्खया याद, हरनाख्श अट्ठे पहर रिहा समझाई। दूतां दुष्टां कीने कहर, अपार हिरदा इक्क अटल रखाई। वेले अन्तिम जोत प्रगट नर सिँघ रूप हरि बणाई। जोत सरूपी जोत हरि आपणी बणत रिहा बणाई। हरनाख़श दैंत हरि जी मार। अग्गे जाए वेखे इक्क रिखी ते इक्क नार। दोहां दा सांझा दिसे प्यार। नारी वेखे नैण उग्घाड़। सिँघ रूप हरि अग्गों दिस्सया, डिग्गी मूंह दे भार। झूठा तन ओथे पसारया, विच्चों हँस गया मार उडार। साचा रिखी होया गुस्से, कौण तूं आया दर मेरे गंवार। अग्गों हरि जी हस्स के बोले, मैं जोत सरूपी नर अवतार। साचा रिखी फेर ना डरे, रसना खिच चलाए इक्क कटार। अट्ठे पहर असी तेरे होए गोले, तूं विच उजाड़ां मारी मेरी नार। ऐवें भेख वटाया पाए झूठे चोले, ना करे चंगी कार। जोती जोत सरूप हरि, आपणा आप रिहा विच विचार। साचे रिख आख सुणाया। रसना नाल सराप दवाया। तूं चंगा हरि जिस उजाड़या मेरा घर, नहीं तेरे मन भाया। जोत सरूपी जोत हरि, अग्गों फेर मुस्कराया। साचे रिखी तीर चलाया। नारी पिछे हरि जी तूं वी फिरे हलकाया। सतिजुग अन्तिम प्रभ अबिनाशी एका पन्ध चुकाया। उत्ते वेखे विच मात दे त्रेते जन्म दवाया। लग्गा सराप सच रिक्खी दा, प्रभ अबिनाशी बण राम अवतार विच मात जोत जगाया। त्रेता हरि जी मात धराए। सतिजुग साचे वक्त चुकाए। चिट्टी चादर छोटे छोटे आपणी हत्थीं दाग लगाए। जोत सरूप

४२५ जोत हरि, जुग त्रेते तेरे सिर दे उप्पर पड़दे छाए। त्रेता जुग मात धराया। साच नात जगत बंधाया। रिग वेद संग ४२५

०३ रलाया। लाल बाणा तन पहनाया। आपणा भाणा आप सुणाया। रिषीआं मुनीआं हठ्ठ जप तप करना एह समझाया। बणत ०३

बणाए आपे आप, थोड़ा उहला, थोड़ा पर्दा आप रखाया। त्रेते तेरे पल्लू थोड़ा पाप, आपणी हत्थीं बन्नृ वखाया। जोत सरूपी जोत हरि आपणा खेल आप वरताया। त्रेता जुग वेख विचार। हरि जी आए लए अवतार। साचा कर्म सर्ब विचार। जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्ने साची धार बण राम अवतार। त्रेते तेरी सच निशानी। रिखीआं मुनीआं साचे केस, मस्तक बद्धी गानी। साचे भगत आप उपजाए, बणाए जगत निशानी। मुक्त जुगत आपणे हत्थ रखाए, ना कोई सके पहचानी। बाल्मीक वड्डा नीच, दे मति आप समझाए। बाल्मीक होया जवान। फरकण अंग ना सके संभाल। राह जांदयां नूं मारे डंग, लुट्ट लुट्ट लै घर जाण। प्रभ अबिनाशी आप निभाया आपणा संग, दे मति हरि आप समझान। साचे मार्ग फड़ के पाया किया चतुर सुजान। आत्म दिया ब्रह्म ज्ञान साचा शब्द रिदे वसाया, इक्क रखाया चरन ध्यान। साचा हुक्म आप सुणाया, जोती जोत सरूप हरि, आपणा लेखा आपे आप लिखाया। त्रेते जुग बाल्मीक मारे धाड़े। बरस सौ पंज पहले तेरा बणे लिखारे। जीव जन्त जिस कीने तंग, हुण वसे हरि दुआरे। फेर लई मंग मंग, होवे मेल कदों भतारे। जोती

जोत सरूप हरि, आपणी रसनी आप उचारे। कलिजुग अन्तिम सृष्ट सबाई होए तंग, निहकलंक कलि जामा धारे। तैनूं रक्खे अंग संग, आप बणाए सच दुलारे। पहलों प्याए पोस्त अफीम भंग, पी पी शराबां विच बज़ारां मारे ललकारे। तेरी आत्म तुट्टे तंग, पंजे यार करन ख्वारे। जोती जोत सरूप हरि, फिर मात जामा धारे। पी शराब मारे ललकार। अट्ठे पहर चढ़या रहे बुख़ार। चवी घंटे किसे वेले टुट्टण ना देवे तार। सुध बुध सर्ब भुलाई, जूठयां झूठयां किया प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। लए अवतार पावे सार सुरत संभाले। त्रेते मंगी मंग कलिजुग अन्तिम तेरी निभ जाए नाले। निहकलंक कलि जामा पाया, सोया पुत्त फेर जगाया, शब्द बाणा तन पहनाया, आप उठाया सिंघ पाले। जोती जोत सरूप हरि, आपे चले आपणे भाणे। त्रेता त्रीया करे ख्वारी। आपणी करे आपे कारी। रावण दुष्ट होया हँकारी। उत्ते धरत आई भारी। जोती जोत सरूप हरि, आप उठाए वड वड बलकारी। उठे जोधा वड बलकार। चारों तरफ होए धूआँधार। चारों तरफ होए ख्वार। थाउँ थांईं दए मार। आप वगाए नेत्र धार। पूर कराए जगत विहार। ऊँच नीच ना करे विचार। जाए भीलनी देवे तार। गौतम अहिलया होई पार। चरन छुहाया पहली वार। जोती जोत सरूप हरि, त्रेता राम ल्या अवतार। राम अवतार हरि जी हरि, भगतां देवे माण जाए दर घर। बेमुखां लाहे घाण तीर कमान हत्थीं फड़। रण भूमी सुत्ते पैर पसार, नौंजवान जो रथां उत्ते आए चढ़। दहि दिशा भौंदे सिर, जिमी उप्पर डिग्गण आण। जोती जोत सरूप हरि, आपे मारे आपणा बाण। रावण दिसे ना दस सीस। एका जाणे हरि जगदीश। सर्ब जीआं नूं रिहा पीस। जोती जोत सरूप हरि, सिर धड़ आप कटाए, करे वक्खरे सीस। त्रेते जुग दो रलाए। पाणी दुध्ध इक्क थां बहाए। बेमुखां उलटी बुध, बूझ कोई ना पाए। जन भगतां दवाए सुध, आपणा दरस दिखाए। रामा राम ना दिसे कोए जेवड तुध, दुष्ट हँकारी मार खपाए। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त त्रेते आपणे खेल वखाए। त्रेता अन्त आप चुकाया। फेर द्वापर मात धराया। सूहा वेस तन पहनाया। युजर वेद संग रलाया। देस वदेस आप फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल आप वरताया। साचा खेल आप कर। काहना कृष्ना बण कर। जोती जोत सरूप हरि, एका आपणी शान धर। कृष्न मुरार वड बलकारया। ना करे युद्ध ना फड़े हत्थ कटारया। बेमुखां भुलाई फिरे सुध, ना पावे सार वड दुर्योध्न हंकारया। दोवें अस्व रहे कुद्द, रत्थ चलावे आप बनवारया। जोती जोत सरूप हरि, काहना कृष्ना आप अख्वा रिहा। साची बिध आप कराया। चारों तरफ लकीर खिचाया। तिखी धार हरि दातार शब्द कटार आप बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद आप रहाया। रण भूमी बणया सच अखाड़ा। चारों तरफ चण्डी चमके विच मैदाना चड़के जिउँ तेली ताड़ा। प्रभ

अबिनाशी बणे रथवाही, ज़िमीं अस्मान तुट्टा पाड़ा। अर्जन ब्रह्म ज्ञान दवाया आपणा मूंह खोल्ह वखाया, सृष्ट सबाई चबाई बैठा हेठ आपणी दाढ़ा। एका जोत अग्न लगाए, हाढ़ महीना नेड़े आया। साचा नीर किसे हत्थ ना आया। अठारां दिन गिण गिण वक्त लँघाया। कोरौं कुरक्षेत्र तेरी भेट द्वापर जीव सर्ब चढ़ाया। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा, आपे आप हरि जी आप बणाया। किरपा करी आप महान। शब्द सुणाया भगत काहन। अर्जन उठया नौजवान। एका उठ लई अंगड़ाई, हत्थीं फड़े तीर कमान। दूजे पासे उस दा करन भाई, जम्मया जेहड़ा कंवारी माई, सूरज पिता सर्ब वखान। जोती जोत सरूप हरि, दोवें भाई इक्क दूजे नाल लड़ाए, चलाए रथ वेखे खेल हरि भगवान। जोती जोत सरूप हरि, जुग द्वापर तेरी अन्तिम अन्त आपे लाही विच मात मकाण। द्वापर जुग अन्त कराया। गीता ज्ञान सर्ब दवाया। हरि भगवान एका भगत इक्क वार समझाया। सृष्ट सबाई रही रसन वखान, वेला गया हत्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग आपणा भाणा आपणा बाणा विच मात करदा आया। द्वापर कीनी अन्त त्यारी। लोकमात विच्चों होया बाहरी। कलिजुग जूठे झूठे मिली सच्ची सिक्दारी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा करे आप बनवारी। कलिजुग कूड़ कुड़यार मात जन्म दवाया। सिर झुकाया वड्डा भार, काम क्रोध हँकार एहदे संग रलाया। उत्ते तन प्रभ साचे लई छार , कलिजुग जीवां काला मूंह कराया। मातलोक विच आया कर विचार कोई ना छड्डा थां, जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म कलू काल कलिजुग आपणा आप सुणाया। कलिजुग हरि मात धराया। धरत मात तेरी गोद बिठाया। एका दित्ती हरि सुगात, जूठ झूठ पल्ले बन्न्ह लै आया। सदा रक्खे अन्धेरी रात, ठग्गां चोरां यारां लए बुलाया। जन भगत ना पुच्छे वात, प्रभ अबिनाशी काला टिक्का एहदे मस्तक लाया। आपणी हत्थीं पुट्टे डूंघे खात, प्रभ साचे मगर शब्द डण्डा लाया। कलिजुग लक्ख चुरासी पढ़ाई इक्क अपुठी जमायत, धर्म राए दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग विच मात टिकाया। कलिजुग की करे विचारा। पिछे लग्गा डण्डा भारा। नाम शब्द हरि अपारा। ना कोई वेखे ना दिसे पैंदा रहे उत्ते वारो वारा। कलिजुग झूठा बाल अञ्याणा मात विच आण पुकारा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर चार लक्ख बतीस हज़ार मैथों दुःख झल्लया नहीं जाणा। मेरी आत्म पैंदी घार, पंजां यारां मैनूं ख़ाक रुलाणा। मेरी किसे नहीं बन्न्हणी धार, तेरा हुक्म ना किसे अटकाणा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग झूठा बाल अञ्याणा दे मति आप समझाणा। कलिजुग ना रो ना कर पुकार। छेती छेती हो जवान, सभनां कर ख्वार। सिर दे वाल दोहीं हत्थीं खोह, बाल जवान ना कोई वेखी बुढ्ढी मुटयांर। वांग बक्करे सारे कोह, विच वसाया काम क्रोध लोभ मोह हँकार। एका हल्ल आपणा जो, जूठा झूठा बीज डाल। बेमुखां दी आत्म बो, फल ना लग्गे किसे डाल। हरि ना

पछाणे कलिजुग को, कलिजुग जीव होए गंवार। गुरमुख साचे सन्त जनां सतिजुग भाण्डा लैणा धो, पूर्ब कर्म विचार। जोती
जोत सरूप हरि, दे दिलासा कलिजुग तांईं दित्ता इक्क प्यार। कलिजुग होया वड बलकारी। पूरन कीनी आपणी कारी।
चार कुन्ट नौ खण्ड पृथ्मी ना कोई छड्डुया घर बाहरी। धुरदरगाही साचा हुक्म वंडी गया वारो वारी। जोत सरूपी जोत
हरि, शब्द सरूपी अवाज़ां मारी। कलिजुग आपणी कार कमाई। सृष्ट सबाई फड़ फड़ बाहों झूठे धन्दे आपे लाई। जूठे
झूठे हो गए पापी गन्दे, आपणा आप गए भुलाई। आत्म हो गए अन्धे, ना रही विच रुशनाई। हरि हरि ना गाया बत्ती
दन्दे, भुल्ली सर्ब लोकाई। प्रभ अबिनाशी वेख विचारे किरपा धारे, गौतम बुद्ध हुक्म सुणाई। आपणी सेवा आपे लाया।
झूठा ताज सिरों परे हटाया। फिर मारी शब्द अवाज़, सोया पुत्त आप जगाया। शब्द सुणाया संग रलाया, नाल दात चारों
कुन्ट दे सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अंदर झूठे मन्दिर बेमुखां डेरा लाया। चारों तरफ आख सुणाए। मदिरा
मास कोई ना खाए। कलिजुग जीव भुल्ले रुल्ले डुल्ले अग्गों करदे नाहे। घर घर बैठे करन विचारां, एह कर्म कौण कमाए।
झूठीआं बण गईआं मावां नारां, ना दे मति पुत्तां कोई समझाए। जोत सरूपी जोत हरि, कलिजुग तेरी गणत आप गिणाए।
४२८ कलिजुग हरि फेर समझाया। पूरा कर्म ना तूं अजे कमाया। उहला पर्दा हरि रखाया। अग्गों करे दोए जोड़ बेनन्ती, किरपा ४२८
०३ कर मेरे रघुाया। मैं इक्क इकल्ला लक्ख चुरासी मेरा हौला पल्ला तूं रखाया। इक्क दे मैनूं नवां साथी, फेर करां जो मन ०३
भाया। प्रभ अबिनाशी साचे हरि साचा वर कलिजुग तेरी झोली पाया। साचा वर हरि झोली पाया। ईसा मूसा नाल रलाया।
वड कुकर्मी आप बणाया। जीव धर्मी कोई रहण ना पाया। उलटी मति दे जगत, एह पल्ले आप बंधाया। जोती जोत
सरूप हरि, करे कराए जो मन भाया। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी, कलिजुग पिच्छे एक शब्द डण्डा लाया। कलिजुग
आया फेर दरबार। दोए जोड़ करे निमस्कार। प्रभ अबिनाशी असीं दोवें गए हार। विच नौ खण्ड पृथ्मी ना साडी गलदी
दाल। किरपा कर साचे हरि, इक्क दे दे साथी नाल। दूजी वार मिली दात। तिन्नां मिल बण गई इक्क जमात। कलिजुग
आउँदी जाए अन्धेरी रात। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे आसन बैठा एका एक इकांत। पूरन आस कलि कराई। अहिमद
मुहम्मद संग रलाई। चारों यार देण सलाही। अथर्बण वेद इक्को अलाह साडे हिस्से आई। साडे हिस्से आया ऐड़ा, अलो
नाम लए उपजाई। प्रभ अबिनाशी वाला छड्डुया खैहड़ा, दिवस रैण जो रिहा ध्याई। प्रभ अबिनाशी किरपा कर जोत धर
भाईआं नाल मिलाया भाई। तिन्ने भाई करन सलाह। केहड़ा लाईए असीं दाअ। यसू कृष्ती कहे ना मेरी कोई चले वाह।
इक्क मुहम्मद कीती हां। कलिजुग जीवां पकड़ां बांह। चारों कुन्ट एका वारी देवां भवा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी

बणत आपे लई बणा। अहिमद मुहम्मद कर्म कमाया। चाली बरस हरि जी ध्याया। फेर हरि जी दरस दिखाया। साचा शब्द कन्न सुणाया। प्रभ दर मंग चार यार संग चढ़े रंग दूण सवाया। अन्तिम वेले होए भंग, धर्म राए घर देवे टंग, बहुती देर ना किसे लाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म आपणा आप सुणाया। मुहम्मद अग्गों करे निमस्कार। किरपा कर मेरे दातार। सदी चौधवीं मेरी झोली डार। फेर करीं आपणा सच विहार। चढ़न ना देवीं पार किनार। बेड़ा डोबीं विच मंञधार। फेर बणी आप सच्ची सरकार। तेरा हुक्म मैं पूरा करां मेरे परवरदगार। दीन इस्लाम विच मात दे धरां, नाल लै लां चारे यार। बूहा खोल्हां कुफर हँकार दा, मति अपुट्ठी देवां डार। दोवें जोड़ प्रभ दर निमस्कारदा, सदी चौधवीं मैनूं अक्खीं वखाईं बेमुखां पैंदी मार। जोती जोत सरूप हरि, संग मुहम्मद किया इक्क सच्चा प्यार। मंगी मंग हरि दरबारी। उत्ते सृष्ट आई भारी। अहिमद मुहम्मद मिली सिक्दारी। चारों तरफ होए ख्वारी। आपणे हत्थ इक्क उठाई वड जुल्म कटारी। गऊ गरीब निमाणयां वढु वढु सुट्टण मूंह दे भारी। उठण वड वड शाह सुल्तानयां, घर घर फेरदे जाण बहारी। वेख वेख एह निशानीआं, धरत मात प्रभ अग्गे जा पुकारी। जोत सरूपी जोत हरि, आपणी किरपा धारी। धरत मात करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। पाप ज़ुल्म दा लग्गे, सिर मेरे उत्ते भार। चारों तरफ बेगुनाही हुंदे फिरन ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर फेर घल्लया नानक निरँकार। नानक निरँकार मात उपजाया। पिण्ड तलवंडी डेरा लाया। माता तृप्ता पिता कालू छोटे बाले जन्म दवाया। पंदरां सौ छब्बी बिक्रमी मातलोक विच चन्द चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, गऊ गरीब निमाणयां ख़ुशी बन्द बन्द कराया। नानक आया जामा धार। बाल अवस्था करे खेल अपार। माता पिता ना जाणे सार। इक्को इक्क समझण साडा पुत्त जम्मया गंवार। ना एह हाली ना एह पाली, ना खावे रोटी विच एह थाली, बैठा रहे मढ़ी मसाण। ना एह पढ़े पोथी बाणी, ना एह पढ़े अञ्जील कुरानी, ना एह जाणे शेख़ पंडताणी, आपे आप रिहा झक्ख मार। जोती जोत सरूप हरि, आपे रिहा सर्ब कर्म विचार। नानक होया नौजवान। चारों तरफ मार ध्यान। पिच्छों शब्द आवे आत्म वज्जे इक्को बान। किस कर्म हरि घल्लया, क्यों सुत्ता वड बलवान। कलिजुग पाप फलया फुलया, एहदे भन्न दे डाहण। पाप अन्धेर एका झुल्लया, जीव जन्त सर्ब कुरलाण। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे जाणी जाण। नानक करी सच विचार। डुब्बा बेंई किनारे डूंघी चुभ्भी मार। आप गया सच दुआरे गल विच पल्ला डार। दर दरबारिउं बाहर खलोता , दोए जोड़ करे निमस्कार। अग्गे हरि जी सिँघ आसण सोता, उठे भुजा पसार। आ नानक मैं दर अग्गे खलोता, जिस ने तैनूं दित्ता इक्क अकार। साचा रथ मैं लई खलोता, उत्ते मार छाल हो अस्वार। नेत्र भर भर नीर नानक

रोता, ना जाए झल्लया चमत्कार। चारों तरफ वेखे झिलमिल जोत करे अपार। जोती जोत सरूप हरि, तेरी महिंमा रसना गाए एका अपर अपार। नानक गया हरि दुआरे। अग्गों मिल्या प्रभ अबिनाशी दोवें भुजा पसारे। आ नानक अट्ठे पहर मेरी तेरी तेरी मेरी वज्जदी रहे इक्क सतारे। तेरी आत्म मेरा घर, हरि जी वसे तेरी काया महल्ल मुनारे। जोत सरूपी जोत हरि, अग्गे बैठा सच्चे दरबारे। तख्ते बैठा सच सुल्ताना। दर घर साचे आया नानक पहन गरीबी बाना। प्रभ अबिनाशी किरपा कर आपणी हत्थीं बद्धा गाना। दूजी वस्त हत्थ फड़ाई, सतिनाम दित्ता इक्क निशाना। धरत मात दे विच वड़ बेमुखां दे दिल वसाना। जोत सरूपी जोत हरि एका तैनूं देवे दाज, सिर तेरे ते रक्खे ताज, चढ़या फिरे विच पवण बबाना। साचा वर झोली पा। आपणा हुक्म दित्ता सुणा। नानक गुर जा विच मात साचे थां। जोत सरूपी जोत हरि, सारयां तांईं जा सुणा। नाम सति लै के आया। आपे वेखे केहड़ा वत्त केहड़ा तत्त केहड़ा जत्त जिथ्थे दे बजाया। एहदा फल लग्गे सति, मातलोक दे उपजाया। रसना चरखा लैणा कत्त, साचा हुक्म आप सुणाया। चारों तरफ चारों कुन्ट चार उदासी आपे आप लगाया। चार कूट नानक जाए। अट्ठे पहर कन्न सुणाए। बेमुख जीव ना भुल्लो हरि राए। जिध्धर जाए पैण झाड़ां, सिर ते फिरदा भार उठाए। कदी सुत्ता विच उजाड़ां, रोड़ां सेज विछाए। मुगल पठाणी मगर लग्गी धाड़ा, सिर ते भार चुकाए।

४३०
०३

बन्दी खाने दे विच वड़दा, आपणी हत्थीं चक्की आपे आप चलाए। जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर रसना नाल गाउँदा जाए। नानक करी फेर विचार। केहड़ी लभ्भां दूजी धार। जेहड़ी मेरे कन्न सुणाए करतार करतार। बाहों पकड़ मरदाना किया ख़बरदार। उठा ल्या इक्क सितार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। मरदाना जाए विच बाज़ार। फड़ फड़ टोहे इक्क सितार। कोई ना लवे अग्गे सार। आत्म डोले ना मुक्खों बोले किधरों आया पासा हार। आत्म पर्दा केहड़ा खोल्हे, बाहर बैठा विच उजाड़। नानक निरँकार कोल आया, मुड़ करे निमस्कार। हरि जी मैनूं ना मिले कोई सितार। जेहड़ी बोले हरि करतार। जा सारंगा इक्को भाल। जेहड़ा वज्जदा रिहा राजे जनक दे दरबार। मेरा उहदा त्रेते जुग दा सच्चा है प्यार। कीता होया पक्का वायदा, कलिजुग तेरी करूँ विचार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। मरदाना उठे उठ के धाए। अग्गों मिल्या इक्क बाला मोढे सितार उठाए। करदी जाए खेल निराला, गाउँदी जाए निरँकार। ना कोई किल्ली, ना होवे किसे पासिउँ ढिल्ली, ना बणाई ना घड़ाई किसे सुन्यार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। मरदाने अंगों अर्ज़ गुजारी। ओ बाल निधाने एह लभ्भदा नानक निरँकारी। आत्म वज्जे सीने बाणा, किथे बैठा सच दरबारी। तिन्न जुग हो गए विछड़यां, हुण कलिजुग आई मिलण दी वारी। भज्जा आया वाहो दाही, दूरों वेखे

चमत्कार। दूरों करे निमस्कार। सतिगुर साचा किरपा धार। पूर्ब कर्म रिहा विचार। दोहां हत्थां देवे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप दातार। साची सितार संग रलाई। इक्क धार जिस रखाई। चारों कुन्ट विच फिराई। बेमुखां मति दे समझाई। फड़ फड़ बाहों राहे पाई। भरम भुलेखा रहे नाही। जोती जोत सरूप हरि, वसे सभनी थाईं। नानक तेरी सच सितार। करदी रही सच पुकार। प्रभ अबिनाशी सदा रिहा उत्तों पर्दे सभ उतार। साचा जोड़ जुड़दा रिहा, पूर्ब कर्म ल्या विचार। अन्तिम अन्त कलिजुग निहकलंक ल्या अवतार। साचा कर्म हरि कमाया। पिछला गाया लेखे लाया। गुरमुख साचे साचे घर विच मात जन्म दवाया। प्रभ अबिनाशी किरपा कर अट्ठे पहर जिस दे विच समाया। गुरमुख साचे वेख विचारो, अन्तिम अन्त कलिजुग निहकलंक ल्या अवतार। साचा कर्म हरि कमाया। आपे कर हरि विचार सिँघ मनजीत नाम रखाया। तेरां मग्घर वज्जी वधाई, सोलां मग्घर खुशी मनाई, साध संगत तेरा बेड़ा बन्नृ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच सद आप समाया। गुर नानक सचा कर्म कमाया। सच सुच्च दा राह चलाया। बेमुखां नूं बह समझाया । प्रभ अबिनाशी कवण जाणे तेरी अचरज माया । जोत सरूपी जोत हरि, आत्म पड़दा सभ ते पाया। अन्तिम नानक गया हार। ना समझया कलिजुग जीव झूठा गंवार। इक्को जोत इक्को गोत विच अंगद दित्ती डार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, दोहां

४३१ ०३ मिल्या इक्क भतार। इक्को जोत हरि जगाई। गुर नानक छड्डी गुर अंगद हत्थ फड़ाई। खडूर विच होई रुशनाई। अन्तिम ४३१ ०३

अन्त कलिजुग प्रभ वेखे किवें दए बुझाई। आपणी खेल करदा आया, साध संगत संग रलाई। एका बोला शब्द लिखाया। जीव जन्तां सभ समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच रखाया। अंगद छड्डया काया चोला। अमरदास दा पर्दा खोल्हा। बहत्तर बरस जो रिहा गोला। जोती जोत सरूप हरि, आदि जुगादि विच ब्रह्माद सद सद वसे ना जाणे कोई भोला। अमरदास अमरा पद पाई। रामदास जोत जगाई। साचा सर अमृत आपणी हत्थीं नींह रखाई। साचे दर साचे घर चार दुआरे चौहां वरना एका थां बहाई। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगां जुगन्त एका एक बणत बणाई। राम दास मारी उडारी। गुर अर्जन ने करी त्यारी। गुरदास बणे सच लिखारी। खाणी बाणी ताण कनात, रसना नाल उचारी। आत्म वेखो मार झात, अगली पिछली लाहे शाही। जन भगतां पुछे वात, बवंजा धार नाम लिखारी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल आप कराई। अर्जन तेरी वड वड्याई। तत्ती लोह पैरां हेठ ठंडी कराई। उत्ते बैठा ताड़ी लाई। इक्को जोत हरि जी तेरे नाल मिलाई। कलिजुग जीवां झूठयां मत्थो छाही लाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणी बणत आपे रिहा बणाई। अर्जन मारी इक्क उडारी। होया तिन्नां लोकां तों बाहरी। हरि गोबिन्द तेरी आई वारी। राणा बाणा सुहणा लग्गे,

सच्ची मिली सरदारी। मीरी पीरी सज्जे खब्बे, उत्ते अस्व अस्वारी। बेमुखां पैरां नाल दब्बे, पौड़ मारे सिर विच अधकारी। इक्को तारी होए पहली वारी, बाकी झेड़ा मुक जाए झब्बे, महल्ल अंदर ढाहुंदा जाए, जोती जोत सरूप हरि, आपणी जाणे आपे कारी। हरि गोबिन्द बड़ा बलकार। उह वी गया अन्तिम हार। मूर्ख मुग्ध ना पायण सार। अग्गों मुड़ गई खण्डे धार। फेर करी विचार। निहकलंक कलि आए जामा धार। कलिजुग जीव होर वधा लओ आपणा भार। एका खण्डा हत्थ उठाए, सभ नूं सुट्टे मूंह दे भार। उत्तों वढ्ढे पिट्ठां कंडां करे दो दो फाड़। जोती जोत सरूप हरि, पहली हाढ़े देवे साड़। हरि गोबिन्द करे त्यारी। हरि राए नूं करो निमस्कारी। सतवां गुर सत्तां दीपां होए उज्जयारी। कलिजुग जीव भुल्लया फेर ना पावे सारी। ना वेला एका झुल्लया, राम राए उठया दूजा भाई बलकारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारी। हरि राए हरी हरि। अन्तिम काया अग्नी भेट गया कर। छोटे बाले बाल अञ्याणे, अष्टम गुर हरि कृष्न विच गया वड़। खेल करे बहुत भारे, बाल अवस्था दिल्ली खड़या फड़। साचे दर आप बुलाया, बेमुखां दे शाह अड़। आपणा वेला आप सुहाया, उत्ते सीतला आई चारों तरफ लए फड़। झूठी काया चोला आप तजाया, गुरसिक्खां नूं हुक्म सुणाया, बाबे बकाले दा राह वखाया जिथ्थे बैठा अंदर वड़। हरि कृष्न आपणा आप छुपाया। राजे बाई धार हो त्यार, वड मसंदा

४३२
०३

खोद कंदां आपणा डेरा लाया। उठया इक्क सच्चा वपारी। जिस ते औकड़ बणी भारी। बेड़ा रुढ़दा जाए विच मंझधारी। दोए जोड़ करे हरि चरन निमस्कारी। औखा वेला नेड़े आया। पा सार इक्क वारी। तेगा कमला जिस मूंह छुपाया। थल्ले मोढा जा डाहया। बाहों फड़ के बाहर कढाया। शाह लुबाणा फुल्लया ना समाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच आप समाया। उठया मक्खण शाह लुबाणा। आपणे आत्म करे ध्याना। किस दी भेट चढ़ावां पंज सौ मोहर किहनूं गुरू बणावां। जोती जोत सरूप हरि, किथे बैठा दस्से कोई टिकाणा। आ बकाले करां विचार। केहड़ा वेखां सच दरबार। बाई बैठे भुजा पसार। मैं सुणदा आया इक्को इक्क सच्चा निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, मेरी आत्म पूरी करो विचार। आत्म इक्क इक्क विचारी। वेखां केहड़ा सच्चा शाहकारी। इक्क इक्क अशरफी सभ दे चरनां उत्ते जाए डारी। झूठे झूठे माया धारी। फड़ फड़ जेबे पाउण वारो वारी। जोती जोत सरूप हरि, ना दिस्सया अजे निरँकारी। पूरी होई ना अजे आस। आत्म धरे ना धरवास। पुच्छे फेर आस पास। केहड़ा गुरू जिस दे जावां मैं बलि बलि होवां दास। सारे आखण इक्क तेगा कमला रमला झमला सद अंदर रक्खे वास। उहदे दर फिर आया। जिथ्थे बैठा मूंह छुपाया। बाहरों आ कुण्डा खड़काया। चुताली बरस लुक लुक डेरा लाया। बाहर निकल अमृत मेघ दे बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, गुर तेग

बहादर अंदर वड़या डेरा लाया। अन्तिम किया इक्क विचार। दोहां हत्थां नाल खोल्या इक्क कवाड़। शाह मक्खण नेड़े आया, डिगया मूंह दे भार। इक्क अशरफी अग्गे रक्खी अग्गों बोले शाह अलखी क्यों होयो मूर्ख मुग्ध गंवार। पंज सौ मोहर किथे सांभ रक्खी, क्यों रिहों मनों विसार। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेव आपे दित्ता खुल्हार। भेव खुल्हाया दिया उपदेश। वजाओ ढोल माझे देश। फेर होया अचरज वेस। दिल्ली जाए सीस कटाया। मती दास ते भाई दयाला दोहां संग रहाया। अन्तिम वेले सारे संगी, नट्ठ नट्ठ घरां नूं जाया। प्रभ साचे दा सुण हुक्म अपर अपार, आपणे आत्म धीरज इक्क रहाया। दयाला उब्बल देग अंदर, मती दास आरे नाल चिराया। तेग बहादर बाहों फड़, विच चौंक चांदनी आया। शाह सुल्तान आपणा हुक्म फ़रमा, अन्तिम वार इक्क सुणाया। तेग बहादर दा सिर कटाओ। सारी हिन्द ईन मनाओ। एका धार सर्ब रखाओ। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भाउ। तेग बहादर कटया सीस। आपे वेखे हरि जगदीश। एका शब्द नाम रखाया बीस इकीस। अन्तिम वारी भेव चुकाए, ना कोई करे रीस। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई जाए पीस। गुर गोबिन्द फेर उठाया। पन्थ खालसा जिस सजाया। सतारां सौ तेई बिक्रमी विच मात साचा चन्द चढ़ाया। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी दया कमाया। पंज प्यारे सच दुलारे आपणे आप बणाया। प्रभ अबिनाशी वेखे मार झात, माछीवाड़े जिस ने नंगीं पैरीं डेरा लाया। ऊँच नीच ज़ात पात गुर पूरा आपणी हत्थीं दे मिटाया। सतारां सौ पैंठ बिक्रमी साची आई। गुर गोबिन्द करी सचखण्ड चढ़ाई। गुर संगत सारी हुक्म सुणाई। पन्थ खालसा इक्क मुद्ध हो जाई। प्रभ अबिनाशी पाए नत्थ, निहकलंक लए जोत प्रगटाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणी बणत आपे आप बणाई। साचा चोला सतिजुग पाया। काला रंग उप्पर चढ़ाया। दीन मुहम्मदी संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा वेला आपे आण सुहाया। कलिजुग अन्तिम अन्त करावणा। गुरमुख साचे सन्त दे मत्ती आप समझावणा। आप बणाए साची बणत, सच समग्री आपणे हत्थ रखावणा। जोती जोत सरूप हरि, एका लम्बू पहली माघ लगावणा। कलिजुग तेरा दाणा पाणी गया निखुट्ट। दोईं हत्थीं हरि जी फड़ के तेरा गल देवे घुट्ट। तेरा वेला मुकदा जाए, सिंघ पूरन दा गला छुटदा जाए झट्ट। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, मातलोक विच्चों तैनूं कढ्ढे बाहर कुट्ट। कलिजुग तेरा अन्त सुहाया। साचा वर तेरी झोली पाया। छिन्न भंगर जिस प्रभ चरनी सीस झुकाया। करनी कर धरनी धर बेड़ा बन्न्हे लाया। जोत सरूपी जोत हरि, निहकलंक कलि जामा पाया। कलिजुग तेरा बणे अखाड़ा। विच मात दे पहली हाढ़ा। प्रभ अबिनाशी बण जाए लाड़ा। लक्ख चुरासी आप बहाए लाहे उत्तों पहाड़ां। देव दंत सर्ब उठाए, नाल हनवन्त हरि रलाए, जो उत्ते बैठे समेरू लुक उजाड़ां।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन ल्याया घर अंक सहेलड़ीआं लाया मिल के इक्क सच्चा अखाड़ा। साचा लाड़ा हरि रंगीला। आपणी हत्थीं चोला पाड़े कलिजुग तेरा रहण ना देवे नीला। सच समग्री इक्ठी कीती, आपणा कर कर हीला। साध संगत प्रभ दर आई नठ्ठी, चुक्क ल्याई इक्क इक्क तीला। प्रभ अबिनाशी पहली माघी ताअ भट्ठी, बेमुख जीव एका वार चढ़ा अग्नी जोत ला तीला। साची भट्ठी आप चढ़ाई। साची संगत आप बचाई। बासठ साल जो अग्ग थल्ले रक्खी धुखाई। आप कराए साचे चट्ठी, नील आपणे हत्थ उठाई। ख़ल्कत सारी आवे नठ्ठी, निहकलंक तेरी जोत होवे रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्त ल्याए भैणां छड्डण भाई। कलिजुग तेरा वक्त सुहाया। वेला अन्तिम विच मात दे आया। लाड़ी मौत सद्द ल्याया। बीर बैताले नाल रलाया। माई गौरजां सच्चा इक्क मृदंग वजाया। अष्टभुज आपणा रंग दूजी वारी आपणी हत्थीं फेर लए चढ़ाया। कलिजुग तेरा करन काल पहली माघ कलू काल प्रभ दर अग्गे चरन सीस झुकाया। साचा काल इक्क फ़रमाण, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींदे दे सवाया। आप उठाया वड बली बलवान, विच बबाण देवे बहाया। उत्तों अग्न सिँघ बरसाण, कलिजुग जीव थल्ले हाहाकार कर चारों तरफ बिललाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा धार, कर विचार कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त कराया। कलिजुग तेरा अन्त होए नबेड़ा। मुक्क जाए विच्चों मात दे झेड़ा। कोई ना दिसे चारों कुन्ट नगर खेड़ा। आपणी हत्थीं तेरी चक्की आप चलाए, इक्को देवे गेड़ा। गुरमुख साचा सन्त रहि जाए जिउँ किली लागे दुफेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच समां सुहाए वक्त आ गया नेड़ा। कलिजुग हो गया त्यार। कर्मां उत्ते होया अस्वार। डिगदा जाए मूंह दे भार। चारों कुन्ट दिसे पैंदी मार। घर घर दर दर जीव जन्त दिसण दुष्ट दुराचार। गुरसिक्खां मिलदा साचा वर, देवे हरि आप जोत सरूपी जामा धार। कलिजुग अन्त ना डर प्रभ आप तरया, गुर संगत पिछे जाए तार। बेड़ा करे ब्यासों पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए चिट्टे घोड़े उत्ते अस्वार। चिट्टे घोड़े तंग कसाया। कलिजुग तेरा वक्त चुकाया। साध संगत तेरा साचा बेड़ा बन्नृ वखाया। सिँघ मोता लगाए लड़, जेहड़ा दस साल भुक्खा रक्ख रक्ख औखा कर कर वक्त लँघाया। पहली माघी आपणा हत्थ फड़ाया घोड़ा, पैरीं पाउण ना दित्ता जोड़ा, सन्त मनी सिँघ संग संग रखाया। सतिजुग कलिजुग एका हल हरि साचे साचा जोता, हाली बण के लाया। जोती जोत सरूप सन्त मनी सिँघ दे वड्याई, साचा राज तिलक मथ्थो लगाया। मनी सिँघ होए सिक्दार। निहकलंक उहदा होए पहरेदार। चारों तरफ गुरमुखां नूं करे ख़बरदार। सोहँ शब्द डंक लगाए, उपजाए इक्क सच्ची धुन्कार। दुआरा बंक जा सहाए, सन्त मनी सिँघ तेरे सिर रक्खे दस्तार। जोती जोत

सरूप हरि, सतिजुग साचे तेरा लाए सच्चा दरबार। सतिगुर मनी सिँघ सच कर्म कमाउँदा जाईं आप बणाईं सरवण वैहन्गी इक्क पासे रखाईं बेमुख चढ़ाउँदा जाईं। सच धर्म दा करना विहार, जूठे झूठे नष्ट कराउँदा जाईं। प्रभ अबिनाशी पाए सार, बेमुखां मुकाउँदा जाईं। सोहँ शब्द कंडा पकड़ हत्थीं वंडां पाउँदा जाईं। कलिजुग अन्तिम वरते कहर, गुरसिक्खां अग्न बुझाउँदा जाईं। कर कर आपणीआं मेहरां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दूजे नूं गुरसिख मिलाउँदा जाईं। सतिजुग तेरी आई बहार। घर घर मात खिड़ी गुलज़ार। गुर पूरा आया हो त्यार। सुहणे बांके दा अस्वार। तिन्नां लोकां दा सरदार। नौ खण्ड पृथ्मी आया करन विचार। सत्तां दीपां पहली माघ करया खबरदार। कलिजुग अन्तिम जाणा जाग, पैणी डाहढी मार। प्रभ अबिनाशी चरन जाणा लाग, ना होणा फेर ख्वार। दोईं हत्थीं गुरसिक्खां पकड़े वाग, प्रभ पूरन कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। सतिजुग तेरा जन्म दवाया। इक्क बगीचा हत्थीं लाया। पहली माघी बीज बिजाया। हाली हो के हल चलाया। तिन्न दिन तिन्न रातां वाह वाह जोतरा डाहढा लाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा फल गुर संगत तैनूं दे खवाया। सतिजुग तेरा वज्जे ताल। कलिजुग खाण आया पहली माघी काल। प्रभ अबिनाशी उठ उठ जाग, साची सुरत संभाल। गुरमुख साचे सन्त जन हँस बणा काग धो पिछले दाग। अग्गे फल लगा साचे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गलों कट्ट गुरसिक्खां जगत जंजाल। सतिजुग तैनूं मिले वधाई। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई। बण के मालन फूलण खारी सिर उठाई। आओ सिक्खो सन्त प्यारयो, प्रभ साची बणत रिहा बणाई। इक्क इक्क फुल्ल कर इक्ठा इक्क सोहणा हार बणाई। गुरसिख साचे सन्त जनों उत्ते शब्द बन्नू लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सन्त फूलणहार तन शिंगार आत्म देवे पहनाई। सतिजुग तेरी बध्धी धार। प्रभ अबिनाशी आपणे अग्गे पिच्छे पाए हार। सज्जे खब्बे खेल रचाई, आप बैठा हरि विचकार। गुर संगत फूलन वाड़ चारों तरफ कराई। किसे उंगल दु:ख ना लग्गे भार। एह कन्डयां विच्चों हरि जी तोड़ ल्याई, फेर बणाया इक्क सच्चा सोहणा हार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर जोत धर गुरसिख साचे सन्त जनो गल तुहाढे देवे डार। फूलणहार दित्ती वड्याई। सतिजुग तेरी साची रीत चलाई। अग्गे पिच्छे आपणे हरि जी रिहा लटकाई। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर सोहणी सेजा आप बणाई। सोहणा नगर विचार कर, सोहणा मनजीत उत्ते दित्ता सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी बणाई बणत, इक्क बाला भेट चढ़ाई। सतिजुग तेरा साचा चानण। गुरसिक्खां देवे हरि प्रभ ज्ञानण। एका राखो चरन ध्यानण। गुरमुख साचे सन्त जन फूलण सेजा साची मानण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खो एह बणाया तुहाढा

बालण। अन्तिम सीढ़ी फूलन दए बणा। गुरमुख साचे सन्त जनां अन्तिम वारी उत्ते दए टिका। आपणी किरपा देवे कर, शब्द बबाणे लए चढ़ा। किते ना जाए राह विच अड़, साचे अंदर जाए वड़, जिथ्थे बैठा जोत जगा। दोवीं हत्थीं चरन लए फड़, प्रभ अबिनाशी देवे ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे गुर संगत माण दवाए, साचे थां बहाए, आपे फड़े दो हत्थां नाल बांह। साचा सच विहार आप कराउणा। गुरसिख तेरे दर घर जाए शब्द सरूपी आत्म जोत जगाउणा। देंदा जाए साचा वर, बाहों फड़ आप उठाउणा। नुहाउँदा जाए साचे सर, काग हँस आप बणाउणा। अमृत भण्डारे जाए भर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ गुरसिख साचे तेरी बणत आपणी हत्थीं आप बणाउँणा। साचे घर करे रुशनाई। पहली माघी जोत जगाई। उची कूके कूक पुकारे, निहकलंक कलि जामा पाई। गुरसिख बणाए बणत सच दुलारे, सिर सिहरा हत्थ लगाई। आओ सन्त प्यारयो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्ची वड्याई। पहली माघ कर्म कमाया। सतिजुग साचा मात धराया। वाली दो जहानी बण के हरि जी आया। कोई हत्थ ना दिसे खाली, घर घर गुरसिख रुशनाई करदा आया। देंदा जाए वर, साचा सिहरा सीस तेरे धराया। आपे बंध आपणे लड़, गल विच जेहड़ा लटकाया। लक्ख चुरासी विच्चों प्रभ अबिनाशी बाहों फड़, इक्क अट्ठ गुरसिख इक्ठे कर, कर दर आपणे लए बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गया तुठ, गुरसिख जो गया रुठ, पहली माघी फेर मनाया। सन्त मनी सिँघ हो त्यार, छेती उठ वेला नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी खड़ा खलोता देवे दो हत्थां दा प्यार, आप होए सहाया। देवे माण सच्चे दरबार, पर्दा उहला ना कोई रखाया। प्रभ अबिनाशी सच भतार, ना कोई ठग्ग ना कोई चोर यार, भरम भुलेखा दूर कराया। आओ वेखो हरि निरँकार, जोत सरूपी जामा पाया। सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा दोवें भुजा पसार, गुरमुख साचे सन्त जनां आपणा मेल मिलाया। पंचां दूतां देवे मार, आपणा आप विच दे टिकाया। फेर ना निकले विच्चों बाहर, हँकार विकार नेड़ कोई ना आया। सतिजुग तेरी बद्धी धार, सिर आपणे ते चुकया भार, रस्ता बन्द कराया। गुरसिक्खां संग किया प्यार, पिच्छला कर विचार विहार, निहकलंक कलि जामा पाया। हरि सच्चा शाह सुल्तान है। खोल्हे सतिजुग तेरी सच्ची इक्क दुकान है। सिँघासण बणाए सच्चा मकान है। चार पावे चार कुन्ट दा सच्चा निशान है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर जोत जगाए ना कोई दिसे किला मकान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द लगाए सच्ची उडान है। सच खुल्हाया हरि द्वार। वणज करना गुरसिख इक्क सच्चा वपार। सोहँ वस्त लैणी रसद विच मात अपर अपार। प्रभ कस बैठा तंग, सच्चे हस्त उत्ते होण वाला अस्वार। किसे पाउणा मिले ना तन बस्त्र, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप अस्वार। साचा वणज कर गुरसिख वणजारया। साचा लाहा खट्ट, प्रभ आप द्वारया। एका वसे झूठे मट्ट, अन्तिम भन्ने भन्नण हारया। प्रभ वसे घट घट, जोत जगे लट लट, आत्म जोती आप जगा रिहा। साचा शब्द विहाजो पट्ट, तन गहणा आप पहना रिहा। दिवस रैण रसना रट, दुःख रोग पाप कट्ट, अमृत कांग इक्क चढ़ा रिहा। पी अमृत गट गट, दूई द्वैत फट शब्द पट्टी ला झट्ट, प्रभ सारे रोग गंवा रिहा। चरन धूढ़ प्रभ दर चट्ट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला घाटा पूर करा रिहा। पिछला घाटा होया पूरा। अग्गा नेड़े आ गया, पिछा रहि गया दूरा। गुर गोबिन्द जो वक्त गंवाया, फिर पछोताव कराया, कर के जाए पूरा। निहकलंक कलि जामा पाए जोत जगाए करे रुशनाया, करे कराए जो मन भाया बचन ना रहे अधूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड सूरा सूरबीरा। सूरबीर सखी सुल्तान। लाई बैठा इक्क दुकान। रिद्धां सिद्धां एहो खान। कलिजुग लाहुण आया मकान। बैठा उप्पर शब्द बबान। चारों तरफ बेमुखां भन्नदा जाए टाहण। एका शब्द तीर चलाए वज्जे सीने बाण। उठ उठ भज्जे आउण मैदान। बचे कचे दूजे दा लाहुण घाण। गुरमुखां हरि पर्दा कज्जे, पहली माघी जो जन आए दर्शन पाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला गया हत्थ ना आवणा। दे मति विच मात बिन गुर पूरे ना किसे समझावणा। गुरसिक्खां बाल अञ्याणयां, बाहों फड़ ना किसे गले लगावणा। हँकारी वड जरवाणयां सुघड़ स्याणयां, प्रभ धक्के दे पर्रे हटावणा। गरीब निमाणयां, प्रभ साचे विच मात गले लगावणा। प्रभ चरन लगाए राजे राणयां, गुर संगत तेरे संग रलावणा। फेर पहने चिट्टा बाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर वेस माझे देस, गुरसिक्खां नूं समझाणा। गुरसिक्खां हरि समझांयदा। राह साचे आपे पांयदा। भाण्डे काचे हिरदे वाचे, आपे पोचे, आपे पाचे दीपक जोती विच टिकांयदा। प्रभ अबिनाशी साचो साचे, झूठा वणज ना किसे करावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुत्तयां आप उठाए, दे मति आप समझाए, गुरमुख साचे दरगाह लेखे लांयदा। प्रभ अबिनाशी कंडा फड़या अद्धविचकार। एका दित्ता चारों तरफ हुलार। सतिजुग इक्क पूरे तोल तोल्लया, कलिजुग होया हौला भार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मातलोक विच्चों कढ्ढया बाहर। दूजा कंडा आप उठाया। सिद्धा डण्डा आप रखाया। इक्क पासे गुर संगत पाई दूजे पासे नौ खण्ड पृथ्मी वरभण्डा आया। एका देवे फेर हुलारा, गुरसिख तेरा भार ना हौला सके कोई कराया। गुरसिख साचा लेखे लाया। बेमुख अद्धविचकार धर्म राए लए खलार। एथे लेखा दे के जाणा, अग्गे सच्ची सरकार। चारों तरफ उठ उठ वेखण सिर ते चुकया जूठयां झूठयां झूठा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, लोकमात आया जामा धार। धर्म राए अद्ध विच अटकाए। साचा हुक्म इक्क सुणाए। पिछला

लेखा खोल्ह् वखाए। अड्डो अड्डी लेखे लाए। वही खाता हर इक्क दा आप बणाए। प्रभ अबिनाशी उत्तों वेखे पाड़ गगन दीआं छाँतां, कलिजुग जीवां अन्तिम अन्त कलि धर्म राए किवें लेख मुकाए। धर्म राए घर होए चाली। पुत्तर मावां कढ्ढुण गालीं। ऐवें खवाई रोटी विच पापां थाली। ना शब्द साचा राह वखाया, ना घर साचे जा बहाया ना मिल्या साचा माली। अग्गे हो ना कोई छुडाए, सारे दिसण दोहां हत्थां तों ख़ाली। मात पित भैण भ्रा साक सज्जण इक्क दूजे नूं कढ्ढुण गाली। कलिजुग झूठा मातलोक विच्चों बाहर कढाया। सिद्धे राहे आपे पाया। झूठे झूठा भार सिर चुकाया। पौड़ी पौड़ी दे चढ़ाया। कलिजुग अग्गों दोए जोड़ करे सरनाया। प्रभ अबिनाशी मारे धक्के, इक्क इक्क घुट्ट पाणी दे प्याया। दूजा हुक्म सुणाया मौत लाड़ी जा मदीने मक्के, पीर कुतब गौंस वड मुनारे सारे ढाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो नेत्र पेख दर घर साचे वेख पहली माघी की सांग वरताया। धर्म राए साचा शाह। बेमुख जीवां सूद लाए महिंगे भा। एथे लेखा सच चुकाउणा, बेईमानां वड शैतानां ना कोई मिले थां। गुरसिख साचे सन्त जनां प्रभ नेत्र नाल वखाउणा, चारों तरफ फिराउणा, अग्गे फड़ के तेरी दो हत्थां नाल बांह। सतिजुग तेरा चुक्कया भार। मातलोक आया सच्चा सिक्दार। सतिजुग बन्न्हे साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे गुरसिक्खा वरते आपणी कार। सतिजुग प्रभ हत्थ तेरी डोर। चारे
४३८ ०३ तरफ करे शब्द घनघोर। ना कोई दिसे ठग्ग यार चोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए मोर तोर। ४३८ ०३

❊ २ माघ अते ३ माघ २०१० बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर घनकपुरी दे नाम दी वड्याई ❊

घग्गा घर सच बणाया, ओथे कोई ना वड़े होर। प्रभ बाहों फड़ पार कराया, अंदर वड़या विच पंज तत्ती चोर। बाहर कढ्ढ प्रभ अबिनाशी गुरसिक्खां आपणा दरस नेत्र खोल्ह् वखाया, रहण ना देवे कोई हराम खोर। घग्गा घोड़ा इक्क रखाया, जेहड़ा अट्ठे पहर पाउंदा रहे शोर। पहली माघ जिस दा तंग कसाया, प्रभ दर आया धुर दरगाहों दौड़। साचा हुक्म हरि सुणाया, कलिजुग सिर विच मारया पहला पौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहला घग्गा आख सुणाया, पट्टी कीती चौड़। घग्गा दस्सां पिण्ड घविंड। बेमुखां जीवां आत्म होई रंड। कलिजुग अन्तिम सारे वेखो बेमुखां मूँधी होई टिंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार आपे वसे गुरसिख साचे घर आत्म पिण्ड। घग्गा घर पाया घेरा। चारों तरफ लग्गा पहरा, फिरे चार चुफेरा। साचा हुक्म इक्क सुणाए, वड़न ना देवे ऐरा गैरा। पाचों चोर हराम खोर

ढह ढह पैंदी पैरां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां आपे तारे सच दुआरे कर कर वड्डीआं मेहरां। घग्गा घर घर दए संदेश। प्रभ प्रगट्या माझे देस। प्रभ धारी बैठा जोत सरूपी भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, सिँघ आसण डेरा लाए सृष्ट सबाई दा इक्क सच्चा नर नरेश। नन्ना, नन्ने तेरी आई वारी। नरायण नर जोत धारी। सच बणाई इक्क अकारी। गुरसिख तेरी काया प्यारी। सच्चा आसण आत्म सेजा, प्रभ अबिनाशी सुत्ता दोवें पैर पसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी, आया मातलोक जामा धारी। नन्ना नर हरि हरि अवतारा। एका किया सच विहारा। कलिजुग जामा अन्तिम पाया, मातलोक विच्चों किया बाहरा। सतिजुग साचा मात धराया, धरत मात तेरा बणाया छोटा निक्का इक्क दुलारा। गुर संगत सारी नाल रलाए, आपे देवे चारों तरफ पहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार, सोहँ शब्द चार कुन्ट इक्क कराए जै जै जैकारा। नन्ने नाम देवे वड्याई। सोहँ शब्द तेरी सति कमाई। सतिजुग साचे मात धर, तेरी जोत जगाई। चरन प्रीती नात कर, गुरसिक्खां दे समझाई। दूजे नाल ना बात कर, दर दरबारिउँ बाहर कढाई। ज़ात पात दूर कर, चार वरन भैण भ्रा बणाई। साची

४३६
०३
झोली हरि दात भर, गुरसिक्खां सोहँ देवे सच्ची वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेटे गुरसिक्खां लग्गी छाही। नन्ना नौ निध नाम निधान है। पहली माघी देवे गुरसिक्खां बण के मेहरबान है। नवां नाल नावें घरे अठारां सिद्धां, तेरे दर दर धक्के खाण है। आप बणाई साची बिधा, कलिजुग तेरी लहुण आया मकान है। लाड़ी मौत पहला इक्क वखाया राह सिध्धा, मुहम्मदी दीना आप मिटाण है। खाण ना देवे किसे पक्का रिध्धा, वेले अन्त सर्ब पछताण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार, एका मारे शब्द बाण है। नन्ना नईआ जगत चलाई। गुर संगत भैणां भईआ आप बणाई। आपे बणे साचा पित, धरत मात साची मां बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द साची दात गुरमुखां झोली पाई। साची नईआ आप चलाए। गुरसिक्खां उप्पर चढ़ाए कन्धयां उप्पर दोहीं पासीं गुर संगत सारी लए उठाए। गुरमुख साचे सन्त जन आत्म जाए मन्न, प्रभ अबिनाशी अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे आपणे हार लटकाए। गुर संगत कहे हरि धन्न धन्न, पहली माघी जो गुर दर आए। प्रभ अबिनाशी मिल्या वागी, कर इक्ट्ठे घर बहाए। सोई किस्मत जिन्हां जागी, साचा नाम भिच्छया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार, पूरी इच्छया गुरसिक्खां आप कराए। नन्ना निंरकार जो नाम ध्याया। सभ तों पहलों एह बणाया। सृष्ट सबाई फेर अकार कराया। फिर बद्धी जगत धार, दीपां लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां नव खण्डां सभ थांईं आप समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार,

आपणा भाणा आपे आप जणाया। नन्ने देवे आप वड्याई। भगत जनां दा होया सहाई। नर सिँघ नर हरि रूप बणाई। सारे वेखण थर थर कम्बण, भेव कोई ना पाई। वेला अन्तिम कलिजुग आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर मात जोत प्रगटाई। नन्ना नर नरायण सच्चा नाअरा। सोहँ शब्द सतिजुग बंधावे तेरी साची धारा। सच विहारा आप कराए, गुर संगत ना किया कोई अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए पहली माघी जो आए चरन दुआरा। नन्ना नाम निरँजण नेत्र पाए साचे अंजना। चरन धूढ़ कराए साचा मजना। एथे ओथे सभनीं थांईं बणे साक सैण सज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग मात जामा धारे गुर संगत चारे कुन्ट विच मैदाना गज्जणा। नन्ना नूर सच्चा प्रकाश। धरी जोत पुरख अबिनाश। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना होए कदे नास। गुरसिख साचे सन्त तेरा होया रहे सदा दास। आपे बणे साचा कन्त निज आत्म रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची वड्याई करे बन्द खलास। नन्ना नीर अमृत जल धार है। जिस नाल हरया होवे सरीर, लभ ना लग्गे एह प्यार है। चल्ले सदा इक्को तीर, पहली कूट करे दोफाड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो हत्थीं रिहा पाड़ है। नन्ना नाद शब्द वजाया। साचे सन्त हरि आप उठाया। आदि जुगादि जन भगतां पैज रक्खदा आया। आप मिटाए वाद विवाद, जिस जन रसना गाया। शब्द लिखाए बोध अगाध, पहली माघ वक्त सुहाया। इक्ठे होए कलिजुग सतिजुग दोहां दे नानक दादक कुड़म कुड़माई प्रभ आपे आप कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपे आप कराया। नन्ना नींह रक्खे सतिजुग। साध संगत कर इक्खी पिण्ड बुग। साचा माण आप दवाए रहे चार जुग। जिस कुल हरि चरन छुहाए, इक्क वस्सया रहि जाए झुग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पकड़ पछाड़े महीने हाढ़े चुग चुग। नन्ना नर नारी समझांयदा। सिध्धे राहे आपे पांयदा। भैण भाई गुर संगत इक्को नाता बणांयदा। गुर घर ना मिले वड्याई किसे धी जवाई, उच्च पलँघ ना किसे हेठ नज़री आंयदा। प्रभ अबिनाशी सच्ची सेजा एका ख़ाकी रिहा बणाई, जिस दे उप्पर सभ टिकांयदा। लेखा रहण ना देवे बाकी, जो मन हँकार रखांयदा। गुरसिक्खां खोल्हे आत्म ताकी, मार झाकी आपणा आप वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाणा साचा राणा आपणे तन आपे पांयदा। नन्ना निरगुण सरगुण रूप। दोए एका थांए मिल हो गए सति सरूप। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए वड शाहो वड भूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे उठ उठ नेत्र पेखो हरि साचा किते दिस ना आए ना कोई रंग ना कोई रूप। नन्ना निराधार निरवैर। गुर दर वरते कदे ना कहर। गुरमुख साचे सन्त जनो घर साचा जाणा ठहर। मन तन साचा आप रंगो, वसणा नगर खेड़े साचे शहर। महाराज

४४१ ०३

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गम्भीर गहर। नन्ना निउँदरा कलिजुग पाया। साध संगत सारी सद्द ल्याया। साचा लाड़ा हरि जी आपे बण के आया। आपे बन्ने हत्थीं गाना, आपे पहने आपणा बाणा शब्द रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर साचे हरि कलिजुग साचे घर हरि साचा आप लै जाए विहाया। नन्ना निझरों नीर वहांयदा। शब्द तीर इक्क लगांयदा। हउमे पीड़ बाहर कढांयदा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन साची बीड़, सतिजुग तेरी पहली माधी बन्नांयदा। कक्का काम क्रोध हँकार चण्डाल। गुर संगत तेरे सारे प्रभ इक्क इकल्लड़ा लए संभाल। आत्म साची धरे नाम खज़ाना करे मालो माल। जगे जोत कोटन भाना। प्रभ अबिनाशी जामा धारे बण के आया साचा काहना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। कक्का कर्म हरि विचारे। कूड़ कर्म सर्ब निवारे। दोहीं हत्थीं कलिजुग धक्के मारे। सतिजुग साचे तेरे दर सच घर लैण वर गुरसिख सन्त प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर उठ उठ अवाजां मारे। हरि उठ उठ वाजां मारदा। गुरसिक्खां तांईं तारदा। ना आवे पासा हार दा। फड़या लड़ सच्ची सरकार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्ने दस्से सच्चा राह इक्क परवरदिगार दा। पप्पा सिँघ पूरन विच प्रवेश। भाग लग्गा माझे देस। अट्ठे पहर दिवस रैण वसे विच हमेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा हरि भुल्ले बैठे जीव जन्त लभ्भदे फिरन श्री दस्मेश। श्री दस्मेश इक्को हरि। निहकलंक आया जामा धर। दूजा नहीं जे होर कोई घर। चारों तरफ आउण डर। सच्चा देवे ना कोई वर। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ दर नावण साचे सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप धरनी धर। पप्पा पूरा रिहा सभ थाईं। गुरमुख जगाए फड़ के बाहीं। साचा नाम दान झोली पाई। साची दरगाह जाए खाईं। गुरसिख साचा संग निभाईं। अग्गे देवे ठंडी छाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां लैण आउँदा दूर दुराडा चाईं चाईं। पप्पा पाल सिँघ प्रधान। ब्रह्मे कोलों लई जिस इक्क सच्ची दुकान। प्रभ अबिनाशी किरपा कर फल लगाया उहदे डाहन। सिँघ पूरन विच जोत धर विच बैठा रहे बली बल बलवान। सृष्ट सबाई भौंदी फिरे दर दर, ना सके कोई पछाण। खुल्ले केस हरि दर बध्धी दाढ़ी, कलिजुग जीआं किस्मत माढ़ी, धरया इक्क अवल्लड़ा भेस। गुरमुख साचे सन्त जनो प्रगट होया इक्क दस्मेश। प्रभ अबिनाशी किरपा कर। प्रगट होया अवतार नर। मातलोक आया जोत धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां इक्क इकलड़यां आपणा मेल ल्या कर। पप्पा पुट्टे सभ दी जड़। गुर संगत प्रभ अबिनाशी दर दुआरे खड़। आपे भन्ने आपे डन्ने, लक्ख चुरासी जो लई घड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई रहण ना देवे चार कुन्ट जो मूंह नाल पींदे नड़। पप्पा पूरना देवे पा। मदिरा मासी

सर्ब मिटा। शब्द स्वासी लए बचा। अट्ठे पहर दिवस रैण जो रहे हरि साचे नूं गा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उठ उठ वेखे नेत्र खोल्हे गुरसिख बैठा मेरा केहड़ा थां। पप्पा पूरी करे आस। सोया सिक्ख उठ उठ वेखे, घर साचे पैंदी रास। गुरसिख साचे गऊ निमाणे सोहँ शब्द मूंह विच रक्खण घास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि होया सर्ब दास। पप्पा पुरी इक्को वेख। जिथ्थे वसे हरि वसेख। गुरसिख नेत्र खोल्ह लउ वेख केहड़ा भेस। हरि जी जोत सरूपी करदा केहड़ा वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख भुल्ल फिरदे इक्को जोत श्री दस्मेश। जाति पाति सर्ब मिटाई। अट्ठ दस अठारां आपणी हत्थीं डूंघी धार वहाई। फेर सार सतिजुग तेरी पाई। ला इक्क सच्चा दरबार, उप्पर आप बैठा रघुराई। आपणे सीस रिहा चवर झुलाई। बैठी उत्ते आप सच्ची सरकार, करे आप सच न्याईं। गुरमुख साचे सन्त जनां ना आई हार, मिली साची वड्याई। गुरमुख साचे सन्त जनो इक्को पुरी साचा धाम तुहाढ्डी आप बणाई। पप्पा पिता होवे सुजान। क्यों पूत होवे निधान। जिस चरन देवे ध्यान। शब्द मारे खिच सीने विच बाण। आपणी हत्थीं गातरे पाई कढ्ढे तीर कमान। इक्को चिल्ल्हा नाम चढ़ाए, सिद्धा जाए निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो अग्गे लई खलोता शब्द सरूपी इक्क बबाण। पिता पूत करे विचार। आपे पावे साची सार। अमृत आत्म वहाए , एका साची धार। साचा कन्त आप बण जावे गुरसिख बणावे साची नार। साचा सन्त आप जगावे, देवे शब्द हुलार। साची बणत आप बणाए गल पाए फूलन हार। महिंमा अगणत गणी ना जाए, क्या कोई करे विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी बद्धी विच देह धार। रारा राज जोग गुरसिख जाण। प्रभ अबिनाशी कर चरन ध्यान। आपणा भेव ना किसे दस्से, सर्ब घटां घट जाणी जाण। कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि जी खिड़ खिड़ हस्से, बेमुख जीव सर्ब पछताण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां आत्म जोत जगाए कोट रवि सस्से, करे तेज कोटन भानन भान। कलिजुग जीआं अन्धेरी रैण जिउँ चन्द मस्से, गुर दर सच्चे ना होए परवान। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे तेरे हिरदे वसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। रारा रूप रंग ना वेख। प्रभ धारी बैठा भेख। सच लिखाए जन भगतां लेख। पिछली मिटाए बिध्ना लिखी रेख। लक्ख चुरासी विच्चों वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी नेत्र खोल्हे, घर साचा लैणा वेख। पप्पा पंडत ज्ञान विचारन। प्रभ अबिनाशी ना पाए सारन। तिलक ललाटी औखी घाटी ना जानण साचा कारन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जाणे आपणी साची धारन। रारा रिख मुन सर्ब पुकारदे। इक्को वार दरस करतार दे। बाल जवानी सारी ला ला धूणीआं गालदे। गुरसिक्खां देवे सोहँ साची नाम निशानी, प्रगट होए दरस

दिखाए हरि रघुराए पूरन चरन प्यार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भण्डारे भराए साचा शब्द धन्न माल दे। रारा रीत सच्ची चलाई है। सतिजुग साची नींह रखाई है। साढे तिन्न हत्थ सीं सच बणाई है। सिँघ गुरमुख तेरी हत्थ दित्ती वड्याई है। जिस जा लकार लाई है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर उत्ते मनजीत सिँघ दित्ता टिकाई है। राज बणत करे रघुराई है। गुर संगत काया कीता सीत, छोटी काया अग्गे आप लगाई है। अग्गों मिले साचा मीत, तिन्नां लोकां करे जणाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली कूट मुलां मसीत सभ ढाही है। राजा राज तिलक संजोग। सतिजुग बख्शया तैनूं सोहँ सच्चा जोग। गुरसिख साचे सन्त जनो, साचा रस रसना लैणा भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे होण ना देवे कदे विजोग। रारा राग छतीस गाउँदे। चार वेद पुरान अठारां संग रलाउँदे। कुरान अञ्जील इक्ट्ठे बह बह मता पकाउँदे। जोत सरूपी जोत हरि, भेव कोई ना पाउँदे। खाणी बाणी रहे अलाए। हरि जी किसे दिस ना आए। उतरे पार जो रसना गाए। करे विचार आत्म विच वसाए। होए राम कृपाल। प्रगट होए दरस दिखाए। तोड़े जगत जंजाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर नाही कोए। रारा रिड़के सर्ब जहान। विच्चों मिल्या बाल निधान। आप बिठाया विच बबान। जा टिकाया सच भूमिका सच अस्थान। सतिजुग जिथ्थे बणे इक्क सच्चा थान। चौथे दिन हरि

४४३ ०३ विहार कराया, गुर संगत सारी रल मिल चरन कर ध्यान। साचा हरि किरपा कर करे आप फ़रमाण। सिँघ प्रीतम उठ बल धार, सिर चुक्क सच्चा प्रसाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बद्वी मुनिआद। गुर गोबिन्द दया कमाई। सारी संगत नाल रलाई। हरि जस गाउँदे बाहर कन्ढे नहर आई। इक्क किनारा पार कर, दूजे किनारे लए बहाई। अग्गे वेखे नज़र मार औखी घाटी दिसे नाही। पूर्ब करे विचार, साची किरपा आप कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे साचे फुल्ल गुरसिक्खां हत्थ फड़ाई। गुरसिक्खां हरि हत्थ फड़ाए। फेर आपणा हुक्म सुणाए। इक्क इक्क फुल्ल वरता गुर संगत विच जल रुढ़ाए। छत्ती मील इस वहि के जाणा, नां हीरा घाट रखाए। पिछा सिँघ मनजीत रखाए, विचकार माहणा सिँघ बहाणा, तीजा थां फेर वखाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे बहि जाए डक्का लाए। अग्गे जा के लए डक्क। कलिजुग फल गया पक्क। गुरसिख जिहनूं वेंहदे दूर दुराडा आउँदयां जांदयां गए थक्क। प्रभ अबिनाशी मातलोक विच्चों आपणी हत्थीं अग्गे लाए लै जाए हक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साची धार वहाए ना जाए कदे अक्क। कलिजुग हरि जी कलधार। करे स्यापा पहली वार। सच ना जपया किसे जापा, सारे गए मानस जन्म हार। अट्ठे पहर चढ़या रहे हँकारी तापा, ना लथ्थे कदे बुखार। वेले अन्तिम कलिजुग कांपा, प्रभ अबिनाशी पाई सार। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तिम करे सच विहार। कलिजुग तेरी सिड़ी हरि जी लए चुण। सृष्ट सबाई लए कन्न सुण। आपणा कर्म हरि कमाया, पिछले विचार गुण अवगुण। पहली माघी भरम चुकाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे लए चुण। कलिजुग तेरी सो मन्दी। बेमुखां होई आत्म गन्दी। अन्तिम पए धर्म राए दी बन्दी। दोहीं हत्थीं वज्जे जंदी। चारों तरफ दिसण कंधी। बेमुख जीव कुलक्खणी नार, एथे ओथे होए अन्धी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए धर्म राए दी बन्दी। बन्दी खाने देवे वाड़। शब्द सरूप अग्गे करे वाड़। दूतां दुष्टां मारे कर ख्वार। जेहड़े घड़े जोत सरूपी भन्न वखाए, अग्न सुट्टे झाड़ झाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई बैठा हेठां दाड़। कलिजुग तैनूं लम्बू लाया। धूँआं धार जगत कराया। रंडी नार कर वखाया। सर्ब संसार हाहाकार कर रवाया। सुहागी कन्त किसे नज़र ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां सुण पुकार कर विचार जामा घनकपुरी विच पाया। कलिजुग अन्तिम जाए सड़। शब्द बबाणे जाए चढ़। झूठे तहिसीलां थाणे टुट्ट जाण गढ़। वढ्ढी खाणे जाण हढ़। गुरमुख साचे सन्त जनां, हरि आप फड़ाए आपणा लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर शब्द सरूपी आपे रिहा छड़। शब्द सरूपी वज्जे पौला। बेमुखां हरि कढ्ढे पोला। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी गुरसिख साचे सन्त जन बण घर साचे दा साचा गोला।
४४४ ०३ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, ना वेखो खुल्ह्ड़े केस ना जाणो भाला भोला। कलिजुग ४४४ ०३
वेला होया दजन दा, अन्तिम वेले मारी इक्को धाह। प्रभ अबिनाशी आप फड़ाई मैनूं आपणी बांह। लक्ख चुरासी धर्म राए दे दर आपे दई बहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, रखाए सदा सदा ठंडी छाँ। कलिजुग काल रूप कुलवन्त, वेले अन्त ना रक्खीं किसे हित्त। झूठे दिसण ठग्ग चोर यार मित्त। रातीं सुत्तयां उत्तों पाड़न छत्त। कोई ना मिली सच्ची सरकार, ख़बरदार ना होया कोई चोबदार, निहकलंक कलि आया जामा धार, गुरसिक्खां गल पाए हार, सृष्ट वहाए नुहाए एका नदी रत्त। नदीआं वा वहिण अपुट्ठे। बेमुख सारे होण इक्ठ्ठे। प्रभ आप बन्न्हाए एका गट्ठे। फेर गिड़ाए उलटी लट्ठे। आप चढ़ाए एका भट्ठे। अग्ग बाले थल्ले मट्ठी मट्ठे। झूठे बेमुख जीव चिट्टे बाणे तन विच पहनण, नां रखाए लट्ठे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब मिटाए तीर्थ अट्ठ सट्ठे। अट्ठ सट्ठ हरि मिटावणा। गुर संगत मेल मिलाए आत्म जोत जगाए, दूई द्वैती फट प्रभ आपणी हत्थीं पहली माघ आप सुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा साचा हट्ट, किरपा कर आप खुल्हाए। भुक्खयां नंगयां करी विचार। उठया हरि सच्चा सरदार। गुरसिख कीने ख़बरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा सर्ब चुकाए, ना करे कोई हुदार। साचा हुक्म हरि सुणाया।

बण के बावन घर विच आया। फड़ के दामन लड़ नाल लड़ बंधाया। होवे सच्चा जामन लक्ख चुरासी विच्चों छुडाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा दुःख भुक्ख रोग कढ्ढण विच मात दे आया। दुःख भुक्ख हरि कर जाए दूर। बचन लिखाए प्रगट होए हाज़र हज़ूर। संगत खाणा दाणा हरि भगवाना, आप बणाए वड्डा इक्को पूर। साचे हत्थीं भट्ठ तपाए, पहलों फड़ के उहनां डाहे, जो खांदे रहे सूर। दूजा नाल हट्ट खुल्ाए। गुर संगत साची भिच्छया झोली पाए। जो दर साचे मंगण आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ कंगण तन पहनाए। गुरसिख गुर संगत बल ल्या धार। लंगर कीना इक्क त्यार। प्रभ अबिनाशी सार समाले प्रितपाले गुरसिख बणाए साचे सच दुलार। चोग चुगावे रोग सोग मिटावे, दरस अमोघ दिखावे खड़ा होवे विच दरबार। भोग लगावे लेखे लावे, साचा लेख आप लिखावे, हरि सच्ची इक्क सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा पूरा करे प्यार। गुर संगत साचा लंगर चलाया। गुर घर दा घाटा दूर कराया। अग्गे वाटा नेड़े आया। बेमुख जीवां झूठा तन चारों तरफ पाटा, शब्द सूई लै ना किसे सुआया। गुरसिख साचे सतिजुग साचे प्रभ आप बणाया। प्रेम तेरा साचा आटा लेखे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हत्थीं आप खवाए, बजर कपाटी खोल्ह वखाया। साचे लंगर भोजन खाओ। तन दे संगल सर्ब कटाओ। परमानंदन विच समाओ। निजानंद सदा रस पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हस्स हस्स राह दस्स दस्स, गुरसिक्खां राहे पाओ। गुर संगत तेरी धन्न कमाई। गुर लंगर विच जिस ने पाई। प्रभ अबिनाशी लेखे लाई। सृष्ट सबाई नेत्र पेखे वेला गया हत्थ ना आई। साची लिख्त लिखाए गुरसिक्खां जुगत बणाए जो आए हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा अतुट निखुट ना भण्डार कदे मुक्क जाई। साचा हरि वड भण्डारा। मंगण आवण कोट दुआरा। सभ दी पावे आपे सारा। ऊँच नीच दे विच पसारा। लक्ख चुरासी दए सहारा। होए सहाई जंगल जूह पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भट्ठा एका चाढ्ढा। साची भट्ठी हरि चढ़ाई। गुर संगत कर इक्ठी गरीब निमाणयां दुःख भुक्ख हरि देवे आप कटाई। जो जन दर तों गए रुठ, अन्त रहण पछताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे आप वड्याई। हरि सच्चा सिक्दार, सर्ब थांयदा। करे खेल अपर अपार, लोकमात जामा पांयदा। जन भगतन कर प्यार, चरन द्वार हरि लै आंयदा। आप उठाए सारा भार, गुरसिख हौले भार रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सखियां साचा मंगल गाया। जूठा झूठा कलिजुग वज्जा संगल, प्रभ पहली माघ आप तुड़ाया। मुख सोहँ लग्गा सगन, गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ आपणी हत्थीं दे लगाया। आत्म जोती माणक मोती उठी सोती शब्द फुंकार हरि लगाया। वरनी वरना धरनी

धरना सच्चा गोती, साचा रंग चढ़ाया। गुरमुख साचे सन्त जनो पहली माघी साचे मन्दिर हरि जी अंदर होया सच अस्वार आपणे घाट लँघाया। किरपा कर साचे हरि आत्म भण्डारा दित्ता भर, गुर प्रसादी आपणी हत्थीं पहलों आण वरताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा हुक्म दए सुणाया। चौथा दिन चाल निराली। करदा रिहा दो जहानां वाली। गुरमुख साचे सन्त जन दीपक सच जगाए आत्म रक्खे अट्ठे पहर एका हरि जोत इक्क अकाली। लाहौर शहर होणा कहर, चारों कुन्ट पैणी गहर, दस्से पहली एह निशानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा आपे बणाए बानी। उठे धुँआंधार, चारों तरफ अन्धेरा। ना कोई पावे सार, चारों तरफ पै जाए घेरा। ना आवे किसे विचार, रुढ़या जाए सभ दा डेरा। चारों तरफ पै जाए मार, वेला अन्त आया नेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विहार आप कराया, सिर बन्नू के आपणा सेहरा। साचा सिहरा सिर लटकाया। इट्ट नाल इट्ट दए खड़काया। धरी नींह इट्ट कोई रहण ना पाया। दर दर घर घर हरि हरि जाए आपणीं हत्थीं देवे पुट्ट, अन्तिम अन्त कलिजुग ढाहया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्के गाहे लक्ख चुरासी देवे गाहया। गुर संगत मन विचारना। घर जा ना हरि विसारना। रक्खणा आत्म साचे थां ना कदे हँकारना। ना कुछ पीआं ना कुछ खां, ना कुछ करां उधारना। कोई मैथों डर ना जाए, प्रभ अबिनाशी

४४६ ०३ किस तरां पालना। सारी संगत कह दे हां, प्रभ अबिनाशी आपे करे आपणी भावना। एका मंगे प्रेम कटोरी। फड़ी रक्खे गुरसिख तेरी काया वाली आपणी हत्थीं डोरी। बेमुख झूठा जीव अञ्याणा गुर पूरे तों करे चोरी। लक्ख चुरासी मात भोगण जून पायण ढोरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, हिरदे अंदर वसे ना रहे किसे मन्दिर मस्जिद ना रहे विच भोरी। तन काया सेज बणाई है। हरि सिँघासण साची सेजा, हरि आपणी आप बणाई है। ना कोई पावा, ना चूल कोई रखाई है। एका मूल सच अस्थूल हरि आपणी बणत बणाई है। उत्ते बैठा रहे कन्त कन्तूहल, जोती दूण सवाई है। गुरसिख तेरी आत्म तन चढ़ाउँदा रहे फड़ फड़ साचे फूल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो घर जा ना जाणा भूल है। आत्म सेजा मार ध्यान। आसण लाए हरि भगवान। बैठा रहे बण के काहन। कराउँदा रहे आत्म सर साचे दा सच्चा इक्क इशनान। आपे दस्से आपणा घर गुरसिख कर चरन ध्यान। आप चुकाए जम का डर किरपा कर आप महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणो बाल निधान। आत्म पेख हरि प्यारा। सति सवरनी उची सेजा उत्ते बैठा हरि भतारा। भक्ख भोज लहिजा फहिजा चारे बणाए इक्के वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर साचे घर गुरसिक्खां वंडदा रहे सदा इक्को भण्डारा। आत्म सेजा रंग अनूप। उत्ते बैठा हरि शाह वड्डा

भूप। एका जोत जगे अगम्मी ना कोई रंग ना कोई रूप। काया गगन बैठा थम्मी, करे रुशनाई विच अन्धकूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो आपणा आप दिखाए, प्रगट होए स्वच्छ सरूप। साची सिख्या लैणी मन्न। आत्म कढुणा झूठा जन। धर्म राए ना लाए डन्न। घर साचे चढ़ाओ साचे चन्न। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्नृ। जूठे झूठे बेमुख जीवां वेले अन्त हरि कलिजुग देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए गुर संगत सुणना कन्न। सच शब्द हरि सुणावे। गुरमुख साचा रसना गावे। आत्म सर साचे तीर्थ अट्ठे पहर नुहावे। किरपा कर दित्ता वर अमृत आत्म साचा सर भर प्याले आप प्यावे। प्रगट होया वाली दो जहानां वड पीरन पीर, भुल्ल कोई ना जावे। चारों तरफ होए वहीर नीर किसे हत्थ ना आवे। भज्जे फिरन दस्तगीर शेख़ मुसायक औलीए ना पीर कोई सहाई होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाया तीर, ना कोई रोक वखावे। चल्लया तीर तिक्खा मुख। लाहुंदा जाए दुःख तेरी कट्टदा जाए भुक्ख। एका देंदा जाए सुख। सिध्धा राहे पाउँदा जाए, पुट्ठा लटकया रिहों चुरासी मानस रुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो, फेर आउण नहीं देणा कुक्ख। आपे कट्टे गर्भवास। आपणी किरपा कर हरि अबिनाश। सोहँ शब्द नाम जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म काया अंदर अट्ठे पहर पाउँदा रहे रास। पावे रास बण के काहन। जोत सरूपी इक्क निशान। राग छतीस गुरमुख साचे तेरे अंदर गान। धुन नाद साज़ बाज प्रभ आपणी हत्थीं करे खड़कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूतीआं नगारे आप वजाए गुरसिख तेरे अंदर बैठा हरि किरपा कर भगवान। वज्जे ढोल नगारा शब्द जणाईआ। उठे सिक्ख प्यारा, हरि जी आसण आत्म सेजा लाईआ। वज्जे इक्क नगारा सोहँ, चोटा आप लगाईआ। फिर खुल्ले सच्चा चुबारा, दस्म दुआरा दिसे आप खुल्लाईआ। जगे जोत इक्क निरँकारा, वेखे रंग अगम्म अपारा, उत्ते बैठा हरि शाह अस्वारा, आसण बैठा लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सन्त जनो, करदा रहे सदा न्याईंआ। आत्म वेख पैंदी रास। क्यों भुल्ले पुरख अबिनाश। दस महीने उलटा लटके रक्खया, गर्भवास। अट्ठे पहर रिहा ध्याया, बाहर आए वक्त भुलाया, आपणा आप किया नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म फेर सुणाए पुरख अबिनास। साचा हुक्म हरि सुणाया। शब्द डंका मगर लगाया। साचा कंडा हत्थ फड़ाया। गुरसिख तेरे विच रखाया। काया बणाई अप तेज वाए पृथ्मी अकाश महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग आपे रक्खे वास। गुर संगत धन्न कमाईआ। धर्म दिहाड़ा साचा मन्न, पहली माघी ख़ुशी मनाईआ । प्रभ साचे जग चढ़ाया साचा चन्न, दिनो दिन करे रुशनाईआ । ढाहुंदा जाए कलिजुग छप्परी छन्न, अग्न आपणे हत्थ

लगाईआ। सतिजुग सुणाउँदा जाए कन्न, सोहँ गीत ढोला गाईआ। कलिजुग देंदा जाए डन्न, जिन्हां विसारया हरि रघुराईआ। सतिजुग वसाउंदा जाए तन, नाम धन्न झोली पाईआ। कलिजुग अन्तिम जाए भन्न, झूठी काया जो बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां रक्खे थाउँ थांईआ। सतिजुग सच धर्म दा इक्क दुलारा। कलिजुग होया अन्त ख्वारा। प्रगट हो साचे हरि पहली बद्धी ए साची सतिजुग धारा। कलिजुग झूठा रिहा रो, धक्का लग्गे इक्को भारा। सतिजुग साचे जन्म दवाया आया विच संसारा। कलिजुग झूठा बाहर कढाया, मातलोक विच्चों होया बाहरा। सतिजुग साचे साचा कर्म कमाया, चार वरन इक्क दुआरा। कलिजुग झूठा भेख वटाया, डिग्गा मूंह दे भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां कराए आपणा सच्चो सच विहारा। सतिजुग उठया सुरत संभाल। कलिजुग अन्तिम होया कंगाल। एका मंग सतिजुग मंगी, गुरसिख दे दे एका नाल। कलिजुग तेरा कोए ना संगी अंगी, सारे गए पिठ वखाल। सतिजुग साचा गुरसिक्खां जाए रंगी, देवे रंग इक्क कमाल। बेमुख कलिजुग जीव करे पिट्ठ नंगी, ना कोई रोक सके जूठी झूठी ढाल। सतिजुग साचा मात विच आया, मारी इक्को छाल। कलिजुग झूठा बाहर कढाया, अन्तिम होया मात बेहाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां लए सुरत संभाल। सतिजुग रिहा हत्थ जोड़। कलिजुग जूठे झूठे दोहीं हत्थीं चल्लया कोहड़। सतिजुग साचा अट्ठे पहर मंगे प्रभ साचे तेरी साची लोड़। कलिजुग बेमुख जीवां बूटा लाया प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं पुट्टे डूंघा पतालीं लग्गा बोहड़। सतिजुग साचा करे बेनन्ती, मेरी निभ जाए नाल संग तोड़। कलिजुग बेमुख जूठा झूठा हाहाकार पुकारे, पीड़ पवे डाहढी जोड़। सतिजुग साचा प्रभ चरन बलिहारे, अट्ठे पहर पुकारे प्रभ अबिनाशी वागां मोड़। कलिजुग अन्तिम होए ख्वारे, ना कोई निभाए लग्गी तोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, दोहां धिरां नूं पै गई लोड़। सतिजुग साचा मंगे दात। कलिजुग झूठे तुट्टा नात। सतिजुग साचा अर्ज़ गुज़ारे, ना होए अन्धेरी रात। कलिजुग जीव दुःख लग्गा भारे, ना कोई मिले अन्त भैण भ्रात। सतिजुग साचा दोए जोड़ डिग्गा चरन कमलारे, प्रभ अमृत बूंद प्याई स्वांत। कलिजुग डिग्गा मूंह दे भारे, उप्पर धवलात। दीन मुहम्मदी पहलां होए ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वारो वारी ढाहुंदा जाए सर्ब चुबारे। सतिजुग आया सच्चा सिक्दार। वेखो कलिजुग पैंदी मार। तख्त बैठा आप निरँकार। लक्ख चुरासी करे दासी घल्ले धर्म राए दे द्वार। सतिजुग साचा चल के आया हरि हरि द्वार। फड़ पाए दोहां हत्थां नाल हार। कलिजुग जूठा झूठा रो रो करे पुकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द रसन चलाया एका तिखीआं दोवें धार। सोहँ खण्डा दो तिखीआं धारां। गुरमुख साचे करो विचारा। सतिजुग पावे गुरसिख सारा। कलिजुग अन्तिम बेमुख जीवां करे

आप दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोवीं पासीं चीर धराए छेती होवण आरा पारा। साचा चीर हरि चिरावना। पीर फ़कीर अमीर वज़ीर शाह हकीर सर्ब मुकावणा। कलिजुग अन्तिम अन्त अखीर, नीर सीर किसे हत्थ ना आवना। ना कोई देवे किसे धीर, कुरान अंजील खाणी बाणी वेद पुरानी सभ ने मुख छुपावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका डंक चार कुन्ट वजावणा। सोहँ शब्द वज्जे डंक चार कुन्ट होए जैकार, सतिजुग साचा माण दवाए। आप सच्ची सरकार, चार वरन एका थां बहाए। ऊँच नीच दा भरम निवार, राजा राणा सुघड़ स्याणा वड जरवाणा पछोताउणा, बेमुहाणा कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारयां बहाए इक्को थाएँ। इक्क दर आप खुल्हाया। साचा राह जगत बणाया। एका नाम शब्द जपाया। दुःख दलिद्र सारा लाहया। पूरी कर जाए सध्धर, जो जन प्रभ अबिनाशी तेरी सरनी आया। खेल कराया जो सोलां मग्घर, साचा चन्न चढ़ाया। गुरसिख साचे सन्त जनो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वीरा छोटा हीरा सिँघ मनजीत तुहाडे अग्गे लाया। गुर संगत हरि वड्याई है। जगत पित कर हित, आपणे संग रखाई है। बणया साचा मित, विछड़ कदे ना जाई है। रखणा सदा चित्त, निहकलंक हरि रघुराई है। ना कोई दर दरवाजा ना कोई भीतर भित्त, दस्म दुआर ना किसे बूझ पाई है। अमृत आत्म प्रभ देवे सिंच, तृखा अग्न बुझाई है।
४४६ ०३ ना कोई वार ना कोई थित, अट्ठे पहर गुरसिख पूरे विच रिहा समाई है। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, सर्ब घटां वास रखाई है। ४४६ ०३
है। जोत प्रगटाए नित्त नवित्त, अचरज खेल बणाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दे वधाई है। गुर संगत साचा कर्म कमाउणा। मदिरा मास हत्थ ना लाउणा। बेमुख होए ना मुख लगाउणा। लग्गे दुःख ना किसे छुडाउणा। सुक्क जाए कुक्ख, ना हरी किसे कराउणा। छाही लग्गे मुक्ख, ना दाग किसे मिटाउणा। उलटा होया जीव मनुक्ख, लक्ख चुरासी विच फिराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति गुरमुखां आप समझांउणा। मदिरा मास जे रसन लगाओ। मुड़ फेरा इस घर ना पाओ। झेड़ा सच्चे दर दा आपणीं हत्थीं आप चुकाओ। काया नगर खेड़ा बेमुख आपणी हत्थीं आपे ढाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मत समझावे, देवे ठंडी छाउँ।

❊ ३ माघ २०१० बिक्रमी बुग्घीं घर तों बाहर खेत विच ❊

मंगल गाया साचे घर। गुर संगत विदा देवे कर। ख़ुशी जाणा आपणे दर। नाल लै जाणा साचा वर। सोहँ शब्द झोली भर। आत्म नुहाउणा साचे सर। रसना गाउणा करनी कर। चरन सीस धरावणा, आत्म हँकार दूर कर। आपणा

आप भेट चढ़ावना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सहिंसा देवे कढ्ढ, जोती साचा नूर धर। गुर संगत हरि विदा कराई। सिद्धा राह इक्क रखाई। दूजे राह कोई ना जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभनां मिले थाउँ थांई। दूर दुराडा हरि ना जानो। पहले आपणा आप पछाणो। प्रभ अबिनाशी हिरदे वसे, आत्म रंग साचा माणो। बेमुखां ना हरि जी दिसे विच बैठा नैण मुधानो। साची वस्त हत्थ ना आई किसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, नहीं बाल अंञानो। संगत गुर गुर संगत चढ़ जाए चाअ दोहां डिठा सच्चा थां। हरि जी साचे आसण लाया, फड़ के बैठा दोहां बांह। आपणा बाणा गुरसिक्खां अक्खीं आप वखाया, ना छड्डुया खाली कोई थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां दर दर फिराए जिउँ सुंञे घर कां। गुरमुख विरला गुर हरि धारदा। दर आए चरन निमस्कारदा। भाण्डा भरम भौ भन्ने तोड़े कुफल हँकार दा। आत्म फेर मन्ने, अग्गे ना लग्गे तने, किसे थां ना जाए डन्ने, करे दरस हरि निरँकार दा। वांग धन्ने आपे भन्ने गन्ने, आप क्यारे बन्ने आत्म क्यारी आपे वेख वखांयदा। ना छप्परी ना छन्ने, जोत सरूपी जोत हरि, आपणा धाम आपे आप सुहावंदा। गुर संगत गुर संगत एका रंग। दोहां बण जाए साचा संग। दूजा दर ना कोई लए मंग। कट्टण आया हरि साचा भुक्ख नंग। पिछला वक्त जो लँघाया गुरसिक्खां होए तंग। साचा वक्त आण सुहाया,
४५० ०३ शब्द सरूपी नाद वजाया, कलिजुग सुणाया साचा मृदंग। एका आपणा नाम चढ़ाया, भट्ठी डाहढी साचा बाढी आपे लए बणाया। ४५० ०३
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख मूल तेरा रंग चलूल ना जाणा भूल, हरि असूल हरि अस्थूल सोहँ शब्द साचा चोला तेरे तन पहनाया। तन पहनाए साचा चोला। प्रभ अबिनाशी पूरा कला सोलां। साचा शब्द हरि सुणाए, ना कोई पर्दा ना कोई उहला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणे दर गुरसिख साचा गोला। प्रभ अबिनाशी शाह मस्ताना, ना कोई जगत अमीर है। बण के आए जगत दीवाना, गुरसिक्खां कट्टण आया भीड़ है। हरि का भेव ना किसे पछाणा, ना शाह ना हकीर है। गुरमुख साचे हरि साचे दा सच निशाना, तेरी आत्म वज्जे तीर है। आप चलाए वाली दो जहानां, बज़र कपाटी जाए चीर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण उप्पर बैठा वड दाता पीर है। अमृत तेरी साची धार। गुर संगत हिरदा देवे ठार। इक्क दूजे दा सांझा करे प्यार। गुरसिक्खां गुरमुखां चुक्के आपे सच्चा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बख्शे किरपा धार। अमृत साची तृखा मिटावीं। सिद्दे रस्ते गुर संगत पावीं। गुरसिख जे कोई भुल्लण लग्गे, बाहों फड़ के हलूण जगावीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण ताण तेरी झोली पाए सभ दे मुख लगावीं। नर नरायण तेरी साची धार। धरत मात सुण पुकार। मात आया जामा धार। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणाए सच्ची सरकार। साची बणत हरि बणाए। सतिजुग कलिजुग इक्ठे कर वखाए। साचा हाली साचा पाली, आपणा हल आपे आण जवाए। धरत मात तेरे चार चुफेरे पहला फेरा लाए। कलिजुग जीव नौ खण्ड पृथ्मी बाहर कोई रहि ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेजा आसण लाए। साचा हाली हल चलावे। पहली कूट इक्का रहिल मल्ल वखावे। मुहम्मदी दीनां कीना वख आपे मार वखावे। घर घर लाउँदे वेखो भक्ख, कोई रहण ना पाए। जिन्हां पल्ले बन्न्हे लक्ख, दाणा हत्थ ना आए। कलिजुग अन्तिम साचे हाली साचा हल चलाया। पाड़ा कोई रहण ना पाया। ज़िमी अस्मान पाड़ा, चाढ़ी इक्को धाड़ा, सभ नूं गूढ़ी नींद सवाया। चारों तरफ दिसण तपीआं उजाड़ां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड किरसाना। बेमुहाणा कीती जाए वाहो दाही, कलिजुग सतिजुग दोवें जायण थक्क। पिच्छों प्रभ अबिनाशी मारे इक्को धक्क। आपणी हत्थीं आपे लए हक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली कूट लाए झकोले, दए हलूणे मार मुकावे झट्ट। साचा हाली हल चलाए। उत्तों रिहा खूब दबाए। जड़्ह किसे दी रहि ना जाए। अंदर वड़ मार दड़ कोई छुप ना जाए। आपे भन्ने जो लए घड़, शब्द हथौड़ा उप्पर लाए। कलिजुग अग्न विच गए सड़, दोष ना किसे राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे जो करे कराए। पहली कूट वण्ड कराई बेमुख

४५१ ०३

जीवां ठुड्डे नाल छण्ड वखाई। अग्गे जे कोई दिसे अड़या, पिच्छों धक्का देवे लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अक्खीं वेखो किवें करे सफाई। साचा हल हरि बणाया। सोहँ फाला अग्गे लाया। सभ दी जड़्ह वढ्ढदा जाए, ना घिसे किसे घसाया। पत्थर जूह उजाड़ पहाड़ां अंदर वड़दा जाए, ना अटके ना किसे अटकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्तों दो हत्थीं रिहा दबाया। ख़ुशीआं नाल हरि हल चलाए। सिध्धी राहल इक्क रखाए। दोवें बैल कलिजुग सतिजुग रहे तकाए। प्रभ अबिनाशी मार अवाज़, सन्त मनी सिँघ सद्द ल्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग सतिजुग बाहर कढ्ढ, अग्गे उहनूं आप जुआए। उठ सन्त तेरी बणदी जाए बणत, सतिजुग वेला नेड़े आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग लेखा रिहा मुकाए। सन्त मनी सिँघ ख़ुशी मनाई। पूरे हरि किरपा कर मेरी सेवा वाह वाह लेखे लाई। मैनूं चुकया सारा डर, इक्को लाउणा धकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा करी, दे के वर ना सिर तों हत्थ उठाईं। साचा कर्म कमाउँदा जाए। गुरसिख सोया आप उठाउँदा जाए। साचा बीज आपणी हत्थीं प्रभ अबिनाशी विच मात बिजाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची नींह रखाई, गुरसिक्खां साचा अमृत फल आप खवाउँदा जाए। पहला जोतरा लए लगाए। दूजे दी फेर वारी आए। शब्द सरूपी सन्त मनी सिँघ हरि जी हुक्म सुणाए। सिध्धा हो के बन्न्हे लग,

दूजी गुट्ठे फेरा पाए। प्रभ अबिनाशी सूरा सरबग्ग, बूरे कक्के वाहुंदा ढाहुंदा आप जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात गूढ़ी नींद संवाए। ना फेर कोई उठावंदा, आपणा भाणा साचा राणा आपे करदा जाए। अगली गुट्ठों सन्त मनी सिँघ तेरा मोड़ मुड़ाए। मुड़ अंदर आ, सन्तां वल फेरा पा। जेहड़े रहे प्रभ पूरे नूं ध्या। अग्गों आई सरन लगाईं फड़ लईं सच्ची बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हाली साचा पाली, जगत सारा कढ्ढे गाली, गुरमुख साचे बलि बलि जां। सन्त मनी सिँघ खिची जावीं। सिद्धा राह इक्क दिखावीं। बाहवां थक्कण हरि जी ध्यावीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोवें पासे रक्खे तेरी पंजाली सांवीं। सांवां लग्गे तेरा ज़ोर। सिँघ मोता प्रभ तेरे नाल लए तोर। कलिजुग जीव सारे खिच्चणे, अन्तिम मर गए ढोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मेट मिटाए करे सफाए, रहण कोई ना पाए, बेमुख झूठे पाउँदे फिरन शोर। साचा हाली कदे ना थक्के। पहली मार मुहम्मदी दीनां ढाहे मदीने मक्के। दूजा फेरा फेर चलाया, हेरा फेरा सर्ब मुकाया, अग्गे लाए बूरे कक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ईसा मूसा तेरी जड़् उखाड़े, विच्चों पतालां उप्पर चुक्के। दूजी कूट हरि विचारी। साचे बैल रिहा शिंगारी। दोवें सन्त हरि दुलारी। पासा एधर होवे भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखो की वरते खेल नरायण नर अवतारी। दोहां लए अग्गे जोअ आपे
४५२ बणे साचा हाली, जिस दे चिट्टे बस्त्र तन पहनाए, सोहँ साबण नाल लए धो। आप कराए चिट्टयां चाली, राज मुल्क तेरा ४५२
०३ साचा तिलक, प्रभ साचा लए खो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म रिहा कमाई, अंदर बैठयां सारयां पै जाए ०३
खोह। साचा हल चलदा जाए। बेमुख जीव गलदा जाए। ख़ाक नाल ख़ाक हो रलदा जाए। गुरमुख साचा प्रभ साचे तेरी छत्र छाया हेठ पलदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए कलिजुग अन्तिम अन्त वेखो परछावां एहदा ढलदा जाए। दोहां कूटां होए ख्वारी। आपे वरते आपणी कारी। प्रभ अबिनाशी लाड़ी मौत अग्गे लाए, पिछे पिछे हल चलाए, फेरी जावे बहारी। उचे टिब्बे वाहुंदा जाए, थलां विच चलाउँदा जाए, जलां विच तराउँदा जाए करे खेल न्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार आपणा भाणा साचा राणा आपे आप वरताउँदा जाए। पहला जोतरा होया पूरा। चुकया हल प्रभ साचा आपणे मोढे बणया साचा सूरा। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत नेड़े वसे जिस नूं जाणो दूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बचन लिखाए फेर वरताए कर वखाए पूरा। पूरा करे कर वखाए। गुरसिख वेखे नेत्र पेखे प्रभ अबिनाशी दए दिखाए। जो रहे भुल्ल भुलेखे, प्रभ गूढ़ी नींद संवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा आउणा लाया लेखे, तेरी सेवा दोहीं हत्थीं आप कमाए। दोहीं हत्थीं हल चलांयदा।

अग्गों खिच्चे पिच्छों सोहँ साचा बीज गुर संगत तेरे लई बिजांयदा। तेरी आत्म काया जाए सिंच, अमृत मेघ बरसांयदा। आप कराए गुरसिक्खां पूरी रीझ, सतिजुग साचा वक्त लिआंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका फल एका डाल, गुर संगत तेरी काया तन लगांयदा। साचा बीज हरि बिजाया। अमृत फल नाउँ रखाया। ना मुक्के ना तुट्टे, तोट कदे ना आया। ना हरया ना कदे सुक्के, एका रंग रंगाया। दाणा पाणी सभ दा चुक्के, गुरमुख विरला सरन बहाया। किसे अग्ग ना दिसे हुक्के, पाणी सभ दा आप रुढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार विच मैदाना बुक्के, आपे बणया सच लिखार। उची कूके बोल बुलावे, सोहँ शब्द लगावे साचे नाअरे। साचा कर्म करे, साचा धर्म धरे विच संसारे। गुरमुख साचे सन्त जनो साचा देवे नाम धन्न, सुणना कन्न बेड़ा लैणा बन्नृ, जाओ दर सच्चे दरबारे। साचा हाली हल चलाए। धरत मात आपणी हत्थीं जल प्याए। लछमी पुच्छे वात, जेहड़ी चरन झसाए। दोहां बणी इक्क जमात, इक्ट्ठीआं हो करन सलाहीं। प्रभ अबिनाशी हाली गया उठ प्रभात, खाणा कोई दित्ता नाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गों खिच्चे पिच्छों दब्बे थक्कीआं अजे ना बाहीं। दोहां भैणां करी सलाह। आपणी बणत लई बणा। भुक्खा ना मरे साडा शहनशाह। साचा भत्ता लईए बणा। सृष्ट सबाई एका भट्ठा, दोवें भैणां लईए चढ़ा। लक्ख चुरासी कर इक्ट्ठा, सारा दईए
४५३
०३
पका। उत्तों सोहँ शब्द पा लईए थोड़ा मिट्ठा, प्रभ अबिनाशी अग्गे दईए टिका। उत्ते पर्दा चिट्टा पाईए चिट्टा लट्ठा, ना लग्गे तत्ती वा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी बैठा लक्ख चुरासी आपे जाए खा। लक्ख चुरासी बणया तोसा। हुण पाणी मंगदा हरि जी कोसा। जलां थलां आप तपाए, बताली लक्ख दजन कराए एका जोत अग्न लगाए झोसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्त मिटाए दए जलाए जो पहनयां काला सूसा। लक्ख चुरासी हरि जी खा। दोहां भैणां नूं दए सुणा। मेरी भुक्ख लथ्थी ना। उप्पर चढ़ चढ़ वेखो कोई बचया रहे ना। किसे घर किसे दर ना धूंआं जाए धुख, देवां बड़ी सज़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खाणा अन्तिम खाणा, कलिजुग दोहीं हत्थीं रिहा खा। खाणा खाए दाढ़ां हेठ चबाए। पहलों अग्नी नाल तपाए। जीव जन्त सर्ब कुरलाए। वेले अन्त ना कोई छुडाए। प्रभ अबिनाशी कलिजुग माया पाए बेअन्त, सर्ब भुलाए एका वड्डा शाह इक्का नर नरायण नरायण नर हरि राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि देवे सर्ब सजाए। लक्ख चुरासी कीती पाई। गुरसिख साचे लेखे लाई। मातलोक हरि मेख लगाई। नेत्र पेखो गुरसिक्खो, की हरि जी खेल रचाई। आप मिटाए पीर गौंस, शेखो उत्ते चढ़ चढ़ सभ दीआं इट्टां रिहा गिराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां दे हरि वड्याई। अमृत साचा सीर

हरि पिलांयदा। वेखो वक्त अखीर, साचे नीर इशनान करांयदा। एका धार वगाए नीर, दोवें मुख ठंडे ठार रखांयदा। प्रभ अबिनाशी करे साची कार, साचा भेव आप खुल्लांयदा। जोत सरूपी जोत हरि, द्वार दसवें बूझ बुझांयदा। थल्ले रक्खे हरि जी मुट्ठी। एह बद्धी पई त्रैकुटी। सरगण निरगुण दोवें राह तीजी आप जाए छुट्टी। गुरमुखां मिल्या साचा थां, बेमुखां जड़ जाए पुट्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर पिलाए गुरसिख पीओ हस्स हस्स घुट्टी। सोहँ डण्डा कर इशनान। पहली माघ होया सवाधान। प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ रखा, किरपा कर श्री भगवान। कई बरस जो रख्या लुका, इस दा चढ़ा सच निशान। साचा शब्द जो पहले दित्ता लिखा, तिन्न लेख उत्ते बण जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा झण्डा आपे रिहा झुलान। साचा डण्डा, गुरमुखो एह वखाउँदा, कलिजुग अन्तिम कन्डा। भन्नी मरोड़ी जावे रहण ना देवे एह किसे दी कंडा। गुरसिक्खां नाल गुरसिख मिलाउँदा, प्याए अमृत साचा जाम मुख चुआउँदा पाई जाए ठंडां। विच ब्रह्मण्डां साचा हुक्म सुणाउँदा जाए, पाउँदा जाए वंडां। मात खेल रचाए वेख सर्ब लुकाए आपे खड़काए इक्क दूजे नाल चण्ड प्रचण्डां। वाह वाह डण्डे तेरी धार। फड़या हत्थ सच्ची सरकार। मारी जावीं सभ नूं मार। पहली माघी प्रभ उत्तों रिहा हुलार। बेमुखां जीवां हो हो नीवां, देवीं सिर नूं पाड़। तेरे उत्तों बलि बलि थीवां, करनी सच कार।

४५४ ०३ गुर संगत हरि दे वड्याई वेखो की वरते वरतार। डण्डा फड़या हत्थ हथौड़ा। भन्न वखाउणा कलिजुग जीव कौड़ा। गुरसिख ४५४ ०३

साचा सन्त प्यारा, प्रभ चरनी आए दौड़ा। सोहँ शब्द नज़री आए पहला दिसे चढ़े जो पौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह दिसाए, ना भेव कोई छुपाए, ना लम्बा ना चौड़ा। सोहँ डण्डा सिरों भारा। बेमुखां सिर लग्गे करारा। पाड़ी जाए वारो वारा। झाड़ी जाए कच्चे फल उच्चे लग्गे डाला। लुकया कोई रहण ना पाए। मगर लगाए अगम्मी धाड़ा। फड़ फड़ दोहीं हत्थीं पाड़ी जाए साड़ी जाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरीआं सन्त सहेलीआं तेरे अंदर लाया खाड़ा। हरि डण्डा हत्थ उठाया। उप्पर कंधे लए टिकाया। आत्म अन्धे लए जगाया। पापी गन्दे लए ढाहया । मदिरा मास लाउँदे बत्ती दन्दे, प्रभ भन्न भन्न दए वखाया। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्दे, साचा माण हरि दवाया। सोहँ शब्द रंदे साचे रंदे, कलिजुग माया पर्दा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो साचा मेल मिलाया। सोहँ डण्डा बल बलकार। सतिजुग बणयां तेरा सच सरदार। गुरसिख अनभोल सुत्या, करदा जाए ख़बरदार। बेमुख जूठयां झूठयां कुत्तयां, मार मार धरत मात विच्चों कढ्ढे बाहर। अज सुहाई रुत्त, गुर संगत संग हरि किया प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। लिख लिख थक्के वेद पुरान। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान। नाल रल गई अंजील

कुरान। चारे करन हक्क ब्यान। सच खुदाई हरि रघुराई वाली दो जहान। नूर इल्लाही साचा माही जगे जोत जगत महान। खाणी बाणी फेर रलाई। सच सुनेहड़ा देवण आई। जम का जेवड़ा कटावण आई, गलों कट्टे फाही। बेमुख जीवां कलिजुग अंदर किसे ना मिल्या साचा माही। चारे वेद लए उचार। चहुं जुगां दा कर विसथार। बंधी गया साची धार। किरपा करी फेर प्रगट किया, वेद व्यास हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, पुरान अठारां दए रसन उचार। पुरान अठारां सर्ब पुकारे। प्रभ अबिनाशी दे दरस्सण कारे। इक्ठे हो हो सारे हस्सण, इक्क दूजे नूं बहि बहि दस्सण, कितों ना लभ्भा हरि निरँकारे। जोती जोत सरूप इक्क इकल्लड़ा सदा सुखल्लड़ा दिसे हरि दुआरे। कुरान अंज़ील जिस बणाई। इक्का ओट हरि रखाई। साची चोट शब्द जिस लगाई। बाहर कढ्ढे सारे खोट, जोती विच टिकाई। कलिजुग अन्तिम आलणिउँ डिग्गे बोट, ना फेर कोई उठाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात जामा पाई। वेद पुरान करन सलाह। कलिजुग अन्तिम लभ्भे केहड़ा मलाह। केहड़ी कूटे केहड़ी दिशा असीं वेखीए जा। गुर संगत तेरे आया हिस्से, माझे देस सच्चा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई नाही दीसे, गुर संगत तेरे विच रिहा समा। वेद पुरान लैण अंगड़ाई। उठ उठ वेखण साचा माही। किसे दिस ना आवे गुर संगत तेरे अग्गे बैठा चिट्टी सेज विछाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर हरि उत्ते बैठा आसण लाई। वेद पुराना मारी धाह। किते ना मिलदा सानूं थां। बणे बणाए सारे थां, प्रभ अबिनाशी देवे ढाह। सच उसारी एका लाए, आपणा कर्म आप कमाए, मनजीत तेरी भस्म लई बणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मन्दिर रिहा बणा। कुरान अंज़ील करे पुकार। अन्तिम आ गई सानूं हार। उठया इक्क माझे सच्चा सरदार। जिस ने फड़या सोहँ डण्डा दोहां हत्थां नाल रिहा हुलार। आपे पाउँदा जाए वंडां, चिट्टीआं उत्ते मारे काली लकार। वेखो की वरते वरतावे विच नौ खण्डां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, केहड़ी करदा कार। कुरान अंज़ील होए गम। गगन पताल हिले थम्म। केहड़ा पया मात जम्म। जिस ने लाहुणा साडा चम्म। नेत्र नीर वहायण रोवण छम्म छम्म। प्रभ अबिनाशी सोहँ डण्डा हत्थ उठाए आपे करे फोकट खाली झम झम झम्ब। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए आपणा कम्म। कुरान अंज़ील उठे रो। केहड़ा देवे मुक्खड़ा धो। कलिजुग वेले रहे सो। वेला अन्त ना होए सहाई को। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए, आपणे कर्म पीणे धो धो। अल्ला नूर इक्क अलाही। जिस नूं लग्गी पापां छाही। अन्त वेले ना कोए लाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूठयां झूठयां आपे पाए अन्तिम फाही। कुरान अंज़ील रहे पुकार। अन्तिम क्यों आई सानूं हार। आपणा कर्म ना ल्या विचार। अन्तिम

पैंदी दिसे मार। माझे देस प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार। जिस ने हल साचा जोया, उत्ते पाई जांदा भार। शब्द डण्डा हत्थ विच फड़या, मारे डाहढी मार। आपे तोड़े विच्चों गंढां, सुट्टे मूंह दे भार। उत्तों करदा जाए झण्डां, बेमुख जीव रण भूमी सुत्ते पैर पसार। वढाई बैठा कंडां घर रोवण नारां रंडां, प्रभ अबिनाशी तूं किहीआं पाईआं वंडां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी कार। कुरान अंज़ील उठ उठ वेखे। केहड़ा लिखदा रिहा साडे लेखे। अन्तिम अन्त वेला नेड़े आया, ना निकले भरम भुलेखे। चारों तरफ दिस ना आया, जोत सरूपी धारे भेखे। माझे देस भाग लगाया, गुरसिख साचे विच प्रवेशे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत सिक्खो जाणो, दूजी नहीं होर कोई दस्मेशे। कुरान अञ्जील मारे धाई। गल विच पैंदीआं जांदीआं फाही। अन्तिम छुडाउणा किसे नाही। सारे रोवण थाउँ थांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमुख प्यारयो, अग्गों मिलदा कर के लम्मीआं बाहीं। कुरान अञ्जील नाता तुट्टा। इक्को तीर शब्द छुट्टा। दिन दिहाड़े कलिजुग झूठा पापी मचाउँदा रिहा लुटां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी एका जाम बणाया प्याए पहली घुट्टा। कुरान अञ्जील चढ़ मुनारे। उच्ची कूकण रो रो पुकारन प्रभ साचे नूं वाजां मारे। उत्तों बैठा हरि जी वेखे देवे झूठे लारे। बेमुख जीव निमाणयां ना वक्त पछाणयां घनकपुरी विच जामा धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए बाणयां, ढहि जायण उचे महले मुनारे। कुरान अंज़ील आया यादा। लेखा लैण आया हरि जी, वढु वढु मास जो ढोरां खाधा। वेले अन्त ना लए कोई छुडाया, धर्म राए घर जाए बाधा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, शब्द लिखाए बोध अगाधा। मिटदी जाए जगत कुरान। आपणा भेख वेख बेईमान। ना कोई दीन ना ईमान, मिटदी जाए मुस्लमान। कोई ना दिसे बिरध बाल जवान। प्रभ अबिनाशी मारे छाण छाण। घर घर लाहुंदा जाए सभना आप मकान। साचा हुक्म सुणाउँदा जाए, मुक्क गया पीण खाण। उच्चे मन्दिर ढाहुंदा जाए, ना सौणा किसे विच मकान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ मिटाए सर्ब शैतान। अन्त मिटाई जाए कुरान। उडे गौंस निशानी एह शैतान। झूठी मारन धौंस बगले फड़ी फिरन कुरान। कलिजुग चलाई झूठी रौंस, हत्थ मस्सला सर्ब उठान। अग्गों प्रगट्या शाह गौंस, माझे देस बली बलवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे फड़ फड़ मारे वड्डे वड शैतान। अन्त काल मिटदी जाए कुरान। करे रंग हरि भगवान। आप निभाए आपणा संग, शब्द लगाए साचा बाण। जोत सरूपी जोत हरि चल्लया विच मैदान। दूजे वेखो होर मजौर। जिन्हां बदले अट्ठे पहर तौर। प्रभ अबिनाशी जोत धर, पहलां कीता ओथे गौर। बाहों पकड़ हलुणयां, होश कर तेरा पासा होया चौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द मगर

लगाया दूजा घोड़ा संग रलाया, पहलों मारी सिर विच पौड़। कुरान कुरलाई दए दुहाई। निहकलंक वज्जा डंक, ना कोई लए छुडाई। गुरसिख साचे जिउँ भगत जनक, गुर साचा लए बचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखाए चारों तरफ पए दुहाई। कुरान अन्धी होई कुड़यारी। पहली कूटे आई भारी। हुंदी दिसे सर्ब ख्वारी। उत्ते शब्द डण्डा लग्गे भारी। दीन मुहम्मदी अग्गे भज्जे, पिच्छे लशकर लग्गे भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां साचा हुक्म सुणाए जो वरते वरतारी । सन्त मनी सिँघ तेरी धन्न कमाई। पूरन बुध सच्ची सुध, प्रभ तैनूं इक्क दवाई। आपणी हत्थीं सीर पिलाया, मुख चवाया चिट्टा दुध्ध। साचा शब्द हरि जणाया, आपणा आप विच टिकाया, निर्मल होई बुध। निरँकार एह खेल बणाया। सिँघ सिँघासण आप सजाया। चिट्टी चादर उत्ते पाया। उत्ते बैठा डेरा लाया। कलिजुग अन्तिम जिस व्याहया। साचा सन्त अगल वांढी डोली चाढ़न आया। गुर संगत प्रभ आप बणाए जोड़ी। हरि मारे छाल बण जाए सन्त घोड़ी। साचा मेल होया वाह वाह, गुर संगत जो प्रभ दर आई दौड़ी। सतिजुग कलिजुग दोवें कुड़म, कर कुड़माई हरि जी आपणा खेल कराया। कुड़म कुड़माया दोहां जोड़ किसे बद्धा किसे दित्ता तोड़। सतिजुग साचा मात धराया, कलिजुग दित्ता रोढ़। गुरसिख साचा आण जगाया, बेमुखां पुट्टे बूटा बोहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण

नर, जिहनूं कहण प्रगट होणा घर ब्रह्मण गौड़। दोहां धिरां कारज कराए। विच विचोला सन्त बणाए। जांञी लाड़े गुरसिख रलाए। साचे पसारे हरि जी लाए। कलिजुग झूठे जुग, चारे फेरे आप दवाए। आपे पाए साची डोली, तोरी जाए हौली हौली, कलिजुग चीख चिहाड़ा पाए। अमृत वेले आ छुडाईं मेरी माए, मैं धी निमाणी भोली भाली महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग झूठी नारी घर व्याह लै चल्लया बणाए झूठी गोली। कलिजुग रोवे चीखां मारे। घर विच्चों जाए कढ्ढुया बाहरे। जमदूत कुहार चुक्कण आए, चुकया ना जाए भारे। उठ उठ पिछांह नूं भज्जे, धर्म राए दे दर पुकारे। सुण बेनन्ती धर्म राए कलिजुग पाप कीते भारे। चारे जणे रहे उठाए, चुकया ना जाए कोई किनारे। चंगी लाड़ी हरि जी व्याही, बहाए केहड़े चुबारे। प्रभ अबिनाशी साचा माही, जिस दे अस्थल सोहण चुबारे। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल रचाया सन्त मनी सिँघ शब्द सुणाया कर ला सच विहारे। धर्म राए आख सुणाए। पहले जाओ हरि सरनाए। दोए जोड़ करो निमस्कार, मंगो वर देवे हरि, पिछली भुल्ल लए बख्शाए। साचा हरि किरपा कर पहली माघी दया दए कमाए। चुको डोली कलिजुग गोली, सृष्ट सबाई अंदर लक्ख चुरासी जिस ने रोली, लै जाओ मेरे थांए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आपा काज रचाया। साज बाज ताज जोड़ा घोड़ा कल्गी तोड़ा आपणे सिर लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग

नारी तेरा साचा लाड़ा फड़ के डण्डा हत्थ विच आया। साचा लाड़ा डण्डा फड़। मातलोक विच गया खड़। कलिजुग नारी कर त्यारी, जाईं अंदर वड़। बेमुखां मैं पावां सारी, मारां फड़ फड़। शब्द खण्डा साचा डण्डा फड़ इक्क दो धारी, जीव जन्त सर्ब मिटावां, इक्क अपुट्ठी मति पावां मरन लड़ लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई दयो वधाई देवे माण ताण निथांविआं थां अग्गे खड़। मातलोक वरते वरतार। करे करावे सिरजणहार। अग्गे पिच्छे बन्न्हे भार। सृष्ट सबाई करे खुमार। घर घर रोवे नर नार। शब्द डण्डा रिहा मार। कलिजुग जीव अन्धा झूठा बन्दा, अन्तिम चढ़या बुखार। मदिरा मासी गन्दा जो लाउँदा रिहा, प्रभ इक्क इक्क दए उखाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी कार। साचे डण्डे सेवा लाई। कच्चे अंडे भन्न वखाईं। विच नव खण्डे आपणा तेज वखाईं। विच वरभण्डे चार कुन्ट रंड कराईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तैनूं देवे फेर वड्याई। सोहँ डण्डा अग्गों पुकारे। सुण मेरे सच भतारे। दोए जोड़ करे निमस्कारे। किरपा कर साचे हरि मंगां वर, दे मैनूं इक्क निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि दे दे इक्क अधारे। शब्द मंगे वर अग्गे साचे हरि। इक्क दईं भैण प्यारी, मैं नाल उहदे जावां तर। चारों कुन्ट करां सर। खुल्ह्ा कोई ना दिसे घर। जिस दा नां रक्खया कटारी। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघासण

४५८ उप्पर चढ़ भैण भ्रावा बध्धी धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दित्ता वर, पहली माघी पहली वारी। भैण ४५८

०३ ०३

भ्रावां ल्या बल धार। दोए जोड़ करन निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर जांदी वारी, इक्का दे दोहां हत्थां दा प्यार। फेर आईए तेरे दर साचे घर पहलों कारज तेरा इक्क सवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बैठा सृष्ट सबाई वेखे जिउँ रंग करे करतार। भैण भ्रा उठ पए दोवें गए तुर। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी दोहां बणाई इक्को सुर। इक्क दूजे दा ना होए विछोड़ा, इक्ठे हो गए दोवें जुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे विच्चों तोरन आया उप्पर चढ़ाए साचे घोड़। सच कटार करी विचार। भैण भ्रावां बड़ा प्यार। तूं सुट्टी जाईं मूंह दे भार। मैं कट्टी जावां वढ्ढी जावां जिउँ झाड़ी झाड़े झाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां हुक्म सुणाए मगर लगाए मौत लाड़। इक्क हत्थ खण्डा इक्क हत्थ डण्डा। भज्जा फिरे विच नव खण्डा। फिरदा जाए विच ब्रह्मण्डा। भन्नी जाए कच्चे अंडा। तोड़ी जाए सर्ब घमंडा। रोड़ी जाए तोड़ी जाए कंडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भैण भ्रावां मेल मिलाया, राहे साचे पाया, पहली पाई एका वंडां। पहली वंड दित्ती कर। उहनूं करना पहलों सर। फेर आउणा मेरे दर। दूजा देखां फेर वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भैण भ्रावां देवे साचा वर। कलिजुग तेरा सीस गुंदाया, उत्ते पाई सग्गी। प्रभ अबिनाशी साचे नर जोत

माझे देस जगी। तत्ती वा चारों तरफ पहली माघी वगी। किते ना मिलणी ठंडी छाँ, चुक्कणी मिले ना बध्धी डग्गी। घर घर भौंदे दिसण कां, अंदर अग्ग सभ दे लग्गी। पीणा दुध्ध ना मिले किसे मां, गाँ मझ किले रहि जाण बध्धी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी तेरी वेल वध्धी। कलिजुग तेरा सीस गुंदाया उत्ते दित्ता दुपट्टा। बेमुखां सौं के वक्त लँघाया, प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं सिर विच पाया घट्टा। गुरसिक्खां साचा हल चलाया, सोहँ बीज दित्ता छट्टा। आपणी कार आप कमाया। जुगो जुग जन भगतां सेवा करदा आया। पैज रखदा आया, जोत धरदा आया, साचा फल दए ख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा राह साचा थां आपे आण बुझाया। कलिजुग नारी तेरी खुल्ली गुत्त। मावां छड्डुण घर सुत्ते पुत्त। वेला नेड़े आ गया छेती बौहड़े रुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दर दुरका गया, वड़न ना देवे विच गुर संगत दे घुत। कुत्ते कूकर कुड़यार बाहर खलोते दूरों वेखण रहे झक्ख मार। अग्गे आवण आवे डर, सच तख्त बैठा आप सच्चा सरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हत्थ विच फड़या, पंजां चोरां नाल लड़या करदा जाए खबरदार। सतिजुग साचे प्रभ तैनूं दित्ती चिट्टी चादर। तेरा माण ताण रखाया, किया पहला आदर। फेर आपणा उप्पर चरन छुहाया, उत्ते बैठा शेर सिँघ बहादर। सृष्ट सबाई भुल्ली फिरदी, सभ मुसली रुली फिरदी, जोत सरूप निहकलंक करता कादर। कलिजुग नारी हत्थीं ला मैहन्दी। बेमुख जीव भुल्ले फिरदे प्रगट होणा अमाम मैहन्दी। भेव ना पावण हरि अबिनाशी, प्रगट होया पुरी घनक हीरा घाट दिशा लहिंदी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची कार आप कराई सिँघ मनजीत भेट चढ़ाई जिस दी धार लहंदे नूं वहन्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रीत चलाई वेखो सृष्ट सबाई इक्क दूजे नाल किवें खहंदी। प्रभ अबिनाशी चार कुन्ट भाखी, उठ उठ वेखे सारा थां, सतिजुग साचा मात धराया। आपणा भेख हरि वटाया। साचा सांग कलि वरताया। सन्त मनी सिँघ साचा गुर विच मात प्रगटाया। आपे आया वेस धर, सिँघ सिँघासण डेरा लाया। नीवें होए दोवें इक्ठे गए जुड़, इक्क दूजे नाल करन सलाहया। प्रभ अबिनाशी चढ़ना घोड़, चार कुन्ट लए दुड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ सन्त मनी सिँघ तेरे हत्थ वाग फड़ाया। फड़नी वाग संगत सारी। उत्ते सृष्टी आउणी भारी। चुकणा भार कर त्यारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी गुर संगत तारी। निहकलंक नरायण नर, तेरा सच्चा हरि भतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची देवे इक्क शब्द उडारी। गुर गोबिन्द मता पकाया। साध संगत मात पित भैण भाई सका बणाया। झूठी माया दर तों भागी पहली माघी सोहँ शब्द सवरन टिक्का हरि उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी झोली पाया। खट्टणा खाणा रक्खणा संभाल। एथे ओथे चलणा नाल।

इक्क अनमुल्लड़ा दित्ता लाल। होर किसे कोल ना जाणा भाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। सृष्ट सबाई करदी जाए खै। गुरमुख विरला विच मात दे रहै। अट्ठे पहर दिवस रैण जो नाउँ तेरा साचा लए। अन्तिम अन्त कलिजुग मन्दिर मसीतां जाणे ढैह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आखो तेरी सदा जै। गुर गोबिन्द करी सलाह। पहला मता ल्या पका। साचा हुक्म पहली माघी दित्ता सुणा। सारी संगत गले लगाउणी ना सौणा धर हेठ सरहाने बांह। गुर गद्दी बड़ी औखी निभाउणी, पिछली टुट्टी फेर गंढाउणी, कलिजुग अंदर दिसे इक्क अड़ाउणी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे सिर उत्तों हत्थ चुक्के ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी साचे हरी अग्गे दर द्वार खड़ी, दोहां भाईआं इक्क दूजे दी फड़ाए बांह। अग्गा पिच्छा इक्को इक। इक्क दूजे नूं ना मारो खिच। जिन्हां दा माही सच्चा पित। झूठयां नाल क्यों करना हित्त। सच्चा हरि सच्चा दर सृष्ट सबाई लैणी जित्त। साची जोत विच टिकाई, पूरन लिख्त आप कराई, पहली माघी वार थित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संगत तेरी तोड़ निभाया, तेरा पहला किया हित्त। सन्त मनी सिँघ सोझी पा। गुरसिख वेखी थां थां। दरस दिखावीं पकड़ उठावीं घर घर जावे बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि पहरया जामा, जिस दी ना कोई पित ते ना कोई मां। शेर सिँघ तूं होया सड़ के सुआह। जिस दी माता ताबो जवंद सिँघ रखाया नां। गया कोई फेर ना आया, किसे लभ्भे विच कतेबां ना। घनकपुर वासी जामा पाया, मढ़ी मसाणी जोत जगाया, प्रगट होया विच्चों सुआह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ भाग लगा। सड़या तन होया ढेर। चारों तरफ होया अन्धेर। पंचम जेठ नेड़े आई, प्रभ अबिनाशी प्रगट होया फेर। विच्चों समाधी निकल आया वेखे चार चुफेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली नींह रखाई, लम्मे पै के हद्द रखाई नेत्र वेखो ना कीना हेर फेर। सन्त मनी सिँघ तेरी कलम चलाई, हरि जी आपे पूर कराई। अक्खीं गुरसिख घविंड ना वेखण दूर खलोते वड शेर दलेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत आप जगाई, घनकपुर दए वसाए दूजी वेर। हरि हरि हरि भगवान। हरि हरि हरि सच निशान। हरि हरि हरि गुण निधान। हरि हरि हरि चतुर सुजान। हरि हरि हरि वड बली बलवान। हरि हरि हरि अट्ठे पहर नौजवान। हरि हरि हरि बुढ्ढा बिरध ना बाल जवान। हरि हरि हरि कारज करे सिध्ध, आपे आपणे आण। हरि हरि हरि लक्ख चुरासी लई रिद्ध, बणया पकवान। हरि हरि हरि आप बणाई आपणी सिध्ध, जोत अग्नी दित्ती बाल। हरि हरि हरि जोत सरूपी जामा धर मातलोक विच आया बण के सच्चा काहन। हरि हरि हरि सच्ची हरि निशानी। हरि हरि हरि अमृत बोले हरि रसना बाणी। हरि हरि हरि चार कुन्ट जिस वखाणी। हरि हरि

४६०
०३

हरि आपणी करनी रिहा कर, रसना चलाए तीर कमानी। हरि हरि हरि चारों तरफ आवे डर, हरि हरि हरि सतिजुग दिन गया चढ़, आउँदी जावे झट्ट जवानी। हरि हरि हरि कलिजुग अग्गे गया हढ़, मिटदी जाए मात निशानी। हरि हरि हरि खुल्ले रक्खीं दर, गुरसिख लैणी झोली भर, ना होवे कदे खाली। हरि हरि हरि गुरमुखां भाणा लैणा जर, चुकाउणा सभ दा डर, सिर हत्थ देवे धर, दो जहानां वाली। हरि हरि हरि ना जन्मे ना जाए मर, गुरमुखां देवे साचा वर, दोहीं हत्थीं रिहा झोली भर, कोई हत्थ ना दिसे खाली। हरि हरि हरि गुर संगत आई दर चुक्के डर, चढ़दी जाए दूण सवाई लाली। हरि हरि हरि आपणा आप बणाया घर, आपे करे आपे रक्खे अट्ठे पहर रखवाली। हरि हरि हरि गुरमुख साचे दूर दुराडे अंदर बहि के लए फड़, साचे घोड़ चढ़ाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा बेड़ा आपे बन्नृ वखाया। हरि हरि हरि सुखदाई। हरि हरि हरि बणत रिहा बणाई। हरि हरि हरि वसे साचे घर, जिस दा किसे ना लभ्भे दर, बैठा जोत जगाई। हरि हरि हरि ना कोई दिसे शरायत ना शरअ, एका सोहँ शब्द रिहा जपाई। हरि हरि हरि सृष्ट सबाई साचा नायक, गुरसिख साचे सन्त जनो रसना लैणा गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी साची बणत बणाई। हरि हरि हरि राम रहीम है। हरि हरि हरि कादर करता धरनी धरता वड वड हकीम है। हरि हरि हरि वड दाता गुणी

४६१
०३

गनीम है। हरि हरि हरि गुरसिख साचे आपे बणाए जिउँ सूरा विच द्वापर भीम है। हरि हरि हरि आप खुलृाया साचा दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान है। हरि हरि हरि साची वेख वखाणी। अमृत वेला साचा होया सतिजुग तेरी सुहाई रात राणी। कलिजुग जीव बेमुख सोए गुरसिक्खां प्याए अमृत साची बाणी। रसना गाए साची बाणी। वक्त दुहेलड़ा आए, हाणीआं छड्डणे हाणी। इक्क इकल्लड़ा हरि जी बैठा, चारों कुन्ट खेल वरताए। दिस किसे ना आए ना किसे फड़ाए पलड़ा, राजे राणे वड जरवाणे सूरबीर रहे सर्ब कुरलाए। गुरमुख साचे सन्त जनो तुहाढ्डे दर दुआरे खलड़ा, ना कोई दलाल विच रखाए। एका दित्ता नाम अनमुल्लड़ा, ना किसे तोल तोलड़ा, सोहँ साचा गुरसिख साचा रसना गाए। वसदा रहे काया कुलड़ा, जित्थे हरि जी डेरा लाए। जगत भुलेखा कलिजुग जीव लाल अनमुल्लड़ा, कौडी मुल्ल कोई ना पाए। गुरमुख साचे सन्त जनां अमृत आत्म अजे ना डुल्लृड़ा, सिद्धी नाभी आप रखाए। सोहँ शब्द लगाओ बुल्लृड़ा, अट्ठे पहर एका रंग रंगाए। प्रभ साचे दा साचा दर अट्ठे पहर खुल्लृड़ा, ना बन्द कदे कराए। ना लैंदा कोई मुल्लड़ा, प्रेम वढ्ढी विच रखाए। साचा छत्र प्रभ साचे दा झुल्लड़ा, जो आपणे हत्थ रिहा उठाए। कलिजुग झूठा अन्तिम हुलड़ा, किसे डाले फल नज़र ना आए। सतिजुग साचा फुलड़ा, गुर संगत फल लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम रंगत उत्ते आप चढ़ाए। सतिजुग साचे

४६१
०३

तेरा खिड़या फुल्ल। गुरमुख साचे सन्त जनां पहली माघी पाया मुल्ल। मन तन नाम रसना भिन्नया, साचा शब्द ल्या सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा हरि साचे दे गायण गुण। हरि हरि हरि अनमोल। आपे तोले पूरा तोल। दूई द्वैती पर्दे खोल्ह। सोहँ शब्द वजावे साचा ढोल। बेमुखां हरि दिस ना आए, गुरमुखां सद वसे कोल। जूह जंगल पहाड़ उजाड़ां काहनूं वेखो, आत्म गंढ्ढी लउ खोल्ह। जगे जोत विच बहत्तर नाड़ां, प्रभ अबिनाशी गुरसिख साचे अट्ठे पहर तेरे नाल करदा रहे चोल्ह। सिक्ख नारी हरि जी कन्ता, एका सेजा इक्क दूजे दे नाल रहे बोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा मुल पवाया, पहला तोल आप तुलाया, साचा कंडा हत्थ रखाया, सोहँ जिस दा नाम रखाया, सृष्ट सबाई रही अनभोल। हरि हरि हरि रंग करतार। आपणा करे आप विहार। पहली माघी ल्या विचार। गुर संगत आई हरि ल्या खिच चरन द्वार। फेर सतिजुग तेरी बणत बणाई, शब्द लिखाई रसन उचार। दूजा ना कोई होया सहाई, आपणी रीत आप चलाई, आपे करन करावणहार। दूजी दित्ती हरि वड्याई। सोहँ दात झोली पाई। सतिजुग तेरी बणत बणाई, दोहां बणाया इक्का साथ। तीजी हरि जी रीत चलाई। गुर संगत चरन प्रीत बणाई। काया ठंडी सीत कराई। साचा पित रक्खणा चित्त परखे नीत अट्ठे पहर ना देणा मनो भुलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे रिहा आप समाई। हरि हरि हरि गुर संगत मीता। पहली माघी तन काया पाटा दोहीं हत्थीं आपे सीता। अग्गे फेर ना आवे घाटा, जगे जोत विच ललाटा, प्रभ अन्तिम किया ठंडा सीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा गुर संगत देवे सोहँ सुणया सुहागी गीता। हरि हरि हरि भगवान। बण के आया मातलोक दर साचा काहन। झुलदे चारों तरफ गुर संगत वेखे हरि साचे दे सच निशान। दूसर कोई रहण ना पाए, वेला अन्तिम ढुकया आण। सारे मिट जाण थाउँ थाईं, सोहँ शब्द वज्जे बाण। इक्क दूजे ना होए कोई सहाई, मल मल हत्थ सर्ब पछताण। दूरों करन लम्मीआं बाहीं, रो रो मारन उच्चीआं धाहीं। वेद पुरान कुरान अञ्जील खाणी बाणी ना मिलदा साचा माही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा साचा कर्म कमावे, जोत सरूपी जामा पावे, शब्द सरूपी साची वथ, गुर संगत तेरे अग्गे आण रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दर ना गया मंगत, ना भुक्खा ना नंगत, अट्ठे पहर एका जोत एका गोत एका रंगत चढ़े दूण सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम वसे हस्से रसे। गुरसिख मात कुरलाए उत्तों आया नस्से। फड़ फड़ बाहों पकड़ उठाए, राह साचा घनकपुरी दा दस्से। आओ सिँघो सन्त जनो प्रभ अबिनाशी दर्शन पाउ, हरि घर साचे विच वसे। करे नबेड़ा हक्क सच। सुल्तान वाली दो जहान आप अखवांयदा ना सके कोई डक्क। उडे ख़ाक मदीने मक्क।

ना हड्डीआं सके कोई चक्क। दूरों सारे रहे तक्क। वेखो खेल हरि वरतांयदा फल गया पक्क। बीर बेताले थल्ले बैठे उप्पर रहे तक्क। प्रभ अबिनाशी दे हलूणा, साडा आत्म होया ऊणा, तेरे दर करी पुकार इक्क वार लईए रज्ज। चिट्टे अस्व हो अस्वार, चारों तरफ घेरा डार, गुरसिक्खां बण जा पहरेदार, आपणी गोद विच लईं रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अकथ्थना अकथ्थ ना सके कोई लक्ख, सभ तों रहे सदा वक्ख, गुर संगत साची लए रक्ख। मोर मुकट सच निशान। खड़ा दिसे हरि भगवान। पाउँदा जाए हिस्से, लाउँदा जाए आपणी हत्थीं आप निशान। भेव ना लग्गे किसे वड राजे राजान। चारों कुन्ट हरि जी वसे ना दिसे जोती जोत सरूप हरि आपे जाणी जाण। आपणी आण आपे जाणे, करे हरि पछाण। पहला भेख हरि मिटाए, वेख वेख सर्ब उठाए, जो बगले रक्खण कुरान। गानीआं मणके गल विच रहे लटकाए, हत्थीं तसबीआं रहे वखाए, ना जानण हरि भगवान। कूड़ मुसल्ला रहे उठाए, सच्चा अल्ला हत्थ ना आए, इक्क इकल्ला साचे थां रहाए, रोज़ा बांग निमाज़ तिन्ने रक्खण। प्रभ मिले ना उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण। लहिंदे कर कर मुख सारे रहे सीस झुकाए, अन्त वेले ना कोई सहाए ना कोई रक्ख सकण। प्रभ अबिनाशी माझे देस जामा पाए, ना कोई हाज़ी ना कोई मक्कन। सारे अद्ध विच ढाहे, झूठे प्याले कुत्ते लकण। जो हँकारी भराए, गौंस मजौर सारे धक्कण। हाकन डाकन मगर लगाए, पिच्छा भौं भौं फेर ना तक्कण। मक्का मदीना वेख ना सकण, पीर फकीर दस्तगीर औल्या शेख ना कोई मारे धौंस, प्रभ उलटी चलाई रौंस, ना कोई होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर माझे देस कर वेस, गुरसिख साचे विच प्रवेश, चिट्टी चादर आप विछाई, पहलां किया आदर, आप लिखाए सभ दे लेख। उत्ते बैठा रिहा वेख, नेत्र किसे नज़र ना आवे, सारे कहण अन्न्हा शेख। प्रभ अबिनाशी सर्ब जीआं दा आपे जाणे, लक्ख चुरासी विच प्रवेस। क्या कोई जाणे हरि साचे दे साचे भाणे, भुल्ले सर्ब नरेश । कलिजुग जीव अन्धे काणे, ज्ञानी ध्यानी वड स्याणे । मिल्या हरि ना चुकया डर ना वस्सया घर, जिथ्थे जाण अन्त वड़, सारयां पहने चिट्टे बाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप चलाए आपणे भाणे। देवे बांग कूक पुकारे। बेमुखां नूं अवाज़ां मारे। आत्म भुक्खा हत्थ विच हुक्का, उत्ते अग्ग धरी अन्यारे। थल्ले पाणी विच पवण मसाणी, थल्ले प्राणी पहले साड़े। प्रभ अबिनाशी किरपा कर उम्मत नबी रसूल तेरी आप कटाए फसल हाढ़े। जगत पित जगदीश नर हरि। आप चढ़ाई सदी बीस किरपा कर। विच जोत धरी आपणा भाणा रिहा कर। धड़ अड्ड सीस वक्ख करी, ना रक्खे कोई डर। आपणी करनी रिहा कर। गुरसिक्खां देवे साचा वर। चरन लाग पूरे भाग, पहली माघ गुर संगत तेरा सुणया राग, धोया दाग, बुझी आग, गए जाग, कलिजुग

माया ना डस्से नाग, किरपा पूरे हरि करी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लैण वर। वर वरयाम हरि सुल्तान। पूरन करे काम, जोत सरूपी हुंदा जाए दिनो दिन जवान। दस बरस अवस्था होई खिचया तीर कमान। जोती जोत सरूप हरि, आप बणया वड बलवान। दस साल हरि होया जामा धारे। जोत सरूपी करे खेल अपर अपारे। कदे थल्ले कदे उप्पर कदे अंदर कदे बाहरे। कदे लेटे मिटी नाल तन लपेटे, कदे पिता कदे बेटे करे रंग अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच लिखाए लेख जो वरते विच मात वरतारे। दस बीस इकीस इकीस बीस सृष्ट सबाई जाए पीस। साचा दर इक्को रहणा जिथ्थे लग्गे ना कोई फीस। ना कोई मुल्लां शेख़ काज़ी दिसे ना कोई दिसे होर हदीस। ना कोई पंडत वेद पुरानी दिसे, दूजे थां ना निवाए सीस। ना कोई खाणी बाणी ब्रह्म ज्ञानी दिसे, सोहँ शब्द गुरसिक्खां एका आया हिस्से, दित्ता हरि जगदीश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी क्या कोई करे रीस। ग्यारवां साल पंचम जेठ चढ़णा आण। पूरा कर वखाए वेद व्यास जो लिखाए, विच गरुढ़ पुरान। गरुढ़ पुरान ग्यारां हज़ार सलोक प्रभ साची लिख्त लिखाए, इक्क दूजे नूं रहे टोक। धर्म राए रिहा बिल्लाए, प्रभ अबिनाशी तेरे घर विच आवण ना देवे तोट। लक्ख चुरासी बड़ी वधाई सिँघ मनजीत तेरे पिच्छे देवे झोक। आपणी हत्थीं मगर लाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साल ग्यारवें आपणी सुरत
४६४
०३
संभाल आपे कहर वरताए ना सके कोई रोक। गरुढ़ पुरान लेख लिखाया। अठाई कुण्डां भेव खुल्हाया। धर्म राए जो हट्ट लगाया। अग्गे हरि जी वट्ट लगाया। सोहँ अग्गे डण्डा डाहया। बेमुख जीव कोई लँघ ना जाए दोवीं पासीं पहरेदार, सन्त मनी सिँघ दूजा संग रलाया। धर्म राए दे प्यार, हरि निरँकार खबरदार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अजे छोटा बाल निक्का मुंडा आपणी हत्थीं कुण्डा धर्म राए तेरे दर दा आण खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई फड़ फड़ तेरे अंदर दए बहाया। तेरे घर विच लग्गे भाग। निहकलंक पया जाग। सतिजुग आ गया पहली माघ। गुरसिक्खां सुणया साचा राग। सोहँ वज्जा साचा नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणा सांग। धर्म राए ख़ुशी मनाई। प्रभ दर अग्गे सीस निवाई। धन्न भाग मेरे तूं करीं सच नबेड़े, कोई भगत मेरे दर ना घल्लीं, राजे जनक वांगू ना लए मैथों सारे छुडाई। करे पुकार घड़ी घड़ी पल पल एह भुल्ल मेरी बख़्शाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सति सुणाए धर्म राए तूं जाईं चाईं चाईं। धर्म राए वेख विचार। प्रभ अबिनाशी देवे तैनूं इक्क प्यार। इक्क सिक्ख एथे आउणा लँघ जाए घर तेरे तों बाहर बाहर। तेरा फेर अठाई कुण्डां ता इक्क कवाड़। पहलां पाया हरि जी मुल्ले, गुरसिख साचे पूरे तोल तुले, सिँघ मनजीत अग्गे लाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई उहदे

पिच्छे सारी देवे झाड़। धर्म राए चढ़या चाअ। मेरी ख़ुशी तूं मना। दूजी माघी किस्मत जागी कलिजुग अन्तिम वेला शाम होया। कलिजुग दुखड़े सारे भुन्न कड़ाही, गुर दर बहि के लओ खा। गुर पूरे नूं दयो वधाई, लक्ख चुरासी जिस कटाई, आपणी सरन ल्या लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म राए तेरा होए सहाई, लक्ख चुरासी तेरे घर बहाए तूं रक्खी थां थां। थां थां लईं बहाए। कोई लटकण पुठ्ठे कोई सीखां नाल परोए। कोई भुक्खे नंगे तरसण, दाणा हत्थ ना आए। कोई दूर दुराडे तरसण, पाणी कोई ना किसे प्याए। कोई वांग कबूतर तड़फन, खम्ब चारों तरफ हिलाए। अग्गे पै गई औखी अटकण, ना कोई आए छुडाए। सारे दर तों झिड़कण, इक्क दूजे नूं अक्खीं वेखण मां प्यो भैण भ्राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आपणे लड़ लई लगाए। धर्म राए दा खुल्ह्रा वेहड़ा। आपे फड़ बहाए, गिण गिण थां थां रखाए जा छुडाए केहड़ा। भट्ठे वांग अग्न तपाए, नंगे कर कर उप्पर बहाए मुकाए झूठा झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस जोत धर, निहकलंक अवतार नर, आप इक्क दवाए गेड़ा। इक्क जैकारा नाम बुलाया। तिन्न लोकां दे विच सुणाया। गुर संगत हरि आप सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दिहाड़ा खुशीआं नाल मनाया। नेड़े दूर सारे बैठे, दोए जोड़ करो प्रनाम। प्रभ अबिनाशी घर साचे चल्लया, गुर संगत तेरे पूर कराए काम। गुरसिख साचा फलया फुलया, हरि मिल्या साचा नाम। जो जन दर आया भुल्लया रुल्लया, प्रभ लेखे लाया चाम। जो जन चरन प्रीती घोल घुलया, प्रभ होण ना देवे रैण अंध्यारी वेला शाम। साचा दर हरि साचे दा खुल्लया, ना कोई लग्गे दाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे रल मिल दयो वधाई, जिस प्याया सोहँ शब्द जाम। एका जाम नाम खुमारी। देवे हरि आत्म सेजा बैठा करे साची कारी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर साचे घर, गुर संगत आण तारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट लाड़ी मौत भजाई देंदी फिरे घर घर बहारी। माया राणी होई प्रधान, कलिजुग मिटया सच निशान। वड हँकारन मारे फुंकारन खावे सेठ ते सिठान। नौजवान बली बलवान हत्थीं बन्ह्रदी गाने मारे हँकार जैकारे। माया राणी आपणा जाल बैठी ताणी, सृष्ट सबाई भरदी पाणी, ना होए अन्त छुटकारे। खाणी बाणी सर्ब पुकारे। सारे हो जाओ खबरदारे। निहकलंक कलि जामा धारे। काया आसण सभ दे वसे, उलटे राह अट्ठे पहर दस्से। राजयां राणयां आपणयां पैरां हेठ झस्से। उत्ते खड़ी हो के चैंचलहारी खिड़ खिड़ हस्से। कलिजुग जावे वहन्दी धारी। रो रो प्रभ अग्गे करी पुकारी। मैं केहड़े घर जावां कलिजुग जीव मेरी उजड़ी वाड़ी। मैं किहदे नाल वसां मैं रंडी होई दुहागण, फेर होणा मैं सुहागण, सतिजुग आया पहली माघण,। गुरमुख साचे प्रभ दर जागण, माया नारी होवे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह तेरी

सच्ची सिक्दारी। माया ममता माया मोह। करदी रही सर्ब धरो। इक्क दूजे दे नाल ना सकण छोह। कोई बैठा बण शाह सुल्तान कोई लम्मे पै पै रहे रो। सभनां विच इक्को भगवान, बेमुख जीव होए शैतान, सभ दे पर्दे लैंदे खो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे मार्ग लाए, दुखियां दुःख मिटाए पिछले दाग सोहँ बबान ला रिहा धो। साचा बीज आप बिजाए दूसर नाही को। माया माण होया हँकार। घर घर बैठे सरदार। गरीब निमाणयां कढ्डुण बाहर धक्के मार। कोई ना सुणे किसे पुकार। वढ्ढी खोर सरकार। चारों तरफ होए इक्ढे बेईमान वड शैतान ना दिसे कोई धार। जीवां जन्तां साधां सन्तां जामा धार, निहकलंक मात ल्या अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क रहाए। बाकी सारे मेट मिटाए। जोत आपणी सच जगाए। कल्गी तोड़ा सीस लगाए। उप्पर चवर आप झुलाए। सिँघासण बैठ डेरा लाए। नौ खण्ड पृथ्मी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म गुरमुख साचे सन्त जनां ख़ुशीआं नाल सुणाए। उठो उठ उठ जाओ, वंडो वंडी हिस्से पाए। नौ खण्ड पृथ्मी गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ बणाए दूत उचे थां बहाए। पिच्छे रक्खे शब्द धार, अग्गे मारी जाए मार, सर्ब तांईं आप समझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया राणी सतिजुग तेरे सच्चे दरबार अंदर रहण ना पाए। माया डस्सणी वड्डा नाग। घर घर अन्तिम उडदे वेखो काग। किसे रिद्धी दाल किसे पक्की रोटी किसे दा चुल्हे चढ़या रहि जाए साग। कोई सवाणी सुत्ती ना उठे, किसे दे दुध्ध नूं लग्गी रहि जाए जाग। किसे विच ना काड़ने दुध्ध पाया, उत्तों ना बुझी झाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व होया अस्वार, आपणे हत्थ रखाए, एका तनक लगाए चिट्टे घोड़े तेरी वाग। माया डुब्बी विच मंझधारा। इक्क पासे कलिजुग दूजे पासे सतिजुग आ गई दोहां दे विचकारा। सतिजुग होया निमाणा, किया प्रभ चरन ध्यान, हरि साचा रसन वखान, लीता हरि सच्चे दा इक्क सहारा, कलिजुग पापी होया ख्वारा। वेखो पैंदी डाहढी मार ना होए कोई रख्वारा। कलिजुग प्या थल्ले दड़। सतिजुग उत्ते गया चढ़। एह माया राणी दोहां दे अंदर बैठी वड़। प्रभ अबिनाशी आपणी हिकमत आपे कीती, दोहां बन्न्हाया इक्का लड़। दोहां मिल के बन्न्हया बेड़ा। सोहँ शब्द दोहां धिरां करे नखेड़ा। शब्द सरूपी विच रखाए आपणी हत्थीं देवे गेड़ा। धर्म राए तूं खुल्ल्हा रक्ख वेहड़ा। गुरमुख साचे सन्त जनो, प्रभ साचा करे नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा सदा वसाए नगर खेड़ा। सज्जे हत्थ नाल चलाई चक्की। खब्बे हत्थ नाल जाए धक्की। वाह वाह पीहण सोहणा पाया, दाणा सोहँ शब्द वाला ना किसे सुकाया, आपे पीहवे जिउँ गिल्ली मक्की। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा कर्म कमाए, आपे आपणा लेखा चुकाए ना अक्के ना थक्के। माया राणी तेरा बणया आटा। पूरा कराया सिक्खां घाटा।

आप चढ़ाया तेरा माटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी लंगर लवाया, सोहँ रखाया इक्को बाटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी संगत खाण आई, भोरा कोई डिग ना जाई, रसना नाल फड़ फड़ चाटा। साची चक्की आप चलाई। माया राणी दाल बणाई। कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़ विच लए पिसाई। सतिजुग पुड़ उत्ते रख्या, उत्तों भार डाहढा पाई। बेमुख जीव कोई कौड़ रहण ना पाई। गुरमुख साचे कलिजुग सोहँ शब्द विच डण्डा किली रक्ख चारों तरफ लए भजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया राणी पहली माघी वड्डी देग बणाई। साची देग लई उबाल। गुरसिक्खां नूं दित्ती खुल्ल माल। लंगर लाया हुक्म सुणाया, गुर संगत सेवा लई कमाया, आपणा आप लउ संभाल। एथे ओथे ना होए कोए कंगाल। कलिजुग टुट्टा गलों ज़ंजाल। उठो मारो इक्को छाल। निहकलंक कलि जामा पाया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बली बलवान, माया राणी होई नितानी गुरसिक्खां पेट भराया। दर आए सतिजुग डिठा। सोहँ शब्द पाया मिट्ठा। कलिजुग जीव भन्न वखाया, पहली माघी कौड़ा रीठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूर दुराडे किसे ना जाणे, एथे बैठा मार मुकाए सोहँ डण्डा, छोटीआं मोटीआं मिण मिण गिठां। सच समग्री आप बणाई। पंजां सिक्खां हुक्म सुणाई। उठो सेवा हरि जी लाई। बेमुखां हड्डीआं बालण हरि दए बणाई। छेती डाहो अग्न लगाउ उत्ते तेल सोहँ देवे पाई। साचा हुक्म किया वड शाहो, शब्द फुंकारी इक्क लगाई। निकली लाट होया घाट अग्गे नेड़ा आई वाट, प्रभ सारे दए मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा वाहवा जोड़ जुड़ाई। साचा लंगर आपणी हत्थीं रिहा आप चलाई, लूण मिरच पाया मसाला। आपे तोड़या जगत जंजाला। अग्गे लाया छोटा बाला। घर सच्ची मिली सरदारी, गुरसिख जो कलि होए रहे कंगाली, सोहँ माल धन्न झोली पाया, किया माल माला। पहली वारी पहली माघी सच कर्म कमाया, पहलों अग्गे लाया सिँघ मनजीत निक्का बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेल मिलाया, आपणे संग रलाया, सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाया, नाम रखाया सिँघ पाला। सिँघ पाल बड़ा हुशिआर। मातलोक विच्चों होया बाहर। पूर्ब करी विचार। एका मिल्या शब्द सच्ची धार। वेख्या जा हरी द्वार। मिल्या सच सच्चे निरँकार। दोहां जोत इक्को धार। पिउ पुत्तां जिउँ होए प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर पाउँदा रहे सार। आत्म जोती खिच वखाई। आपणे नाल ल्या मिलाई। चवी चेत उन्नीं सौ अठंनवें बिक्रमी शब्द सरूपी बबाण ल्याई। शब्द सरूपी हुक्म सुणाई। उठ सिँघ पाल हो त्यार, प्रभ आया कर के धाई। दोए जोड़ करे अरदास, इक्क वार बख्श मेरे रघुराई। अग्गों किहा हरि पुकार, साची दरगाह तेरी वारी आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह तेरे जोगी सोहणी थां बणाई। अग्गों सिक्ख करी पुकार। दस्सीं

४६८
०३

मैनूं सच विहार। केहड़ी करनी ओथे कार। जिथ्थे ना तुट्टे तेरा मेरा लग्गा चरनां नाल प्यार। पा जफ्फी हरि साचा प्रभ घुट्टे, अग्गों बुल्ह खिड़े जिउँ खिड़ी गुलज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को शब्द बबाण ल्याया, लै गया सच दरबार। सच तख्त उत्ते बैठा मेहरवान। शब्द सरूपी अट्ठे पहर करदा रहे विख्यान। आवे जावे वारो वारी जोत जगाए महान। गुरमुख साचे फड़ उठावे, फड़ फड़ बाहों राहे पावे, भुल्ल कोई रहण ना पावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी आण। साचे घर धाम बहाया। फेर हरि जी हुक्म सुणाया। उठ सिक्ख हो त्यार, तेरा थां दयां वखाया। जिहड़ा लग्गा तेरे नां, उह तेरे नां दिआं चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़या बांह, सिँघ पाल आपणे नाल ब्रह्मलोक विच लै के आया। ब्रह्मलोक विच दोवें आए। दूजा तीजा कोई ओथे दिसे नाहे। आपस विच होए इक्ट्ठे जिउँ पिता पूत माए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पाल हत्थ फड़ चारों तरफ वखाए साची थाए। सच्चा थां इक्क अस्थूल। एथे बहि के चुका, सृष्ट सबाई दा साचा मूल। शब्द पंघूड़ा हरि जी दित्ता अट्ठे पहर झूल। ब्रह्म ब्रह्म सरूप हो रहणा, साची सेजा उत्ते बहिणा, ना कोई पावा ना कोई चूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उप्पर तेरे हत्थ रखाए, ना जाणा कदी भूल। सिँघ पाल अग्गे खड़ा करे निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मैं इक्क इकल्ला तेरा सिक्ख तूं रहीं पहरेदार। चारों तरफ ना दिसे कोई होर, मैं करदा इक्क विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा राह इक्क रखाईं, मेरी निगाह उतांह उठाईं, मैं वेंहदा रहां तेरे सच्चे दरबार। साचे हरि किया परवान। दित्ता गुरमुख नूं पूरा दान। किरपा कर आप महान। अट्ठे पहर रक्खूं ध्यान। उत्ते बैठ करूँ इशनान। अमृत धारा डिग्गू, तेरी चोटी लग्गू आण। सच फुहारा तेरे आत्म वग्गू, अमृत सर साचे दर अट्ठे पहर देवे नुहाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी होया आप मेहरवान। गुरमुख पूरा करे निमस्कार। मैं ना जाणा तेरी धार। मैनूं दस्स सच्चा विहार। प्रभ अबिनाशी किरपा करे साचे हरे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कारज दए सवार। साचा करूँ सच विहारा। फेर बणू मैं निरँकारा। झूठा जूठा खेल जे दिसे छड जाईं दरबारा। इक्को लोक आया तेरे हिस्से, ला चौंकड़ा भारा। चार मुख ना किसे दिसे, झूठा बोल बुलारा। इक्को शब्द इक्को धुंन दहि दिश बोलणहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण नर अवतारा। चार मुख ब्रह्मा लिखाए। चार सिर ना हरि जी लाए। चौहां जुगां दी सुरत दवाए। एका धुन शब्द उपजाए। एका सुरत शब्द दवाए। जोती जोत सरूप हरि, चारे वेद जिस लिखाए। गुर पूरे दया कमाई। गुर संगत भिच्छया पाई। आपणी हत्थीं दोहां रल मिल गुर गोबिन्द सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा विछोड़ा सारा दए

मिटाई। हरि नर गुर दी झोली भरांयदा। गुर पूरा किरपा कर गुरसिक्खां झोली पांयदा। हरि नर पिछला घाटा पूर करांयदा। साचा गुर अग्गे वाधा फेर करांयदा। गुरमुख गुरमुख जन भगत इक्क इक्ट्ठा मेल मिलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखियां भुक्खीआं सारे दुःख मिटांयदा। झोली भर भर लैंदे जाओ। खुशीआं नाल बैठे खाओ। एथे वक्त सुहेला होया, साध संगत दा मेला होया, अग्गे फल साचा खाओ। आपे गुर आपे चेला होया, दोवें रल मिल इक्क थां बहि जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे रल मिल रसना गाओ। हरि वड साचा दातार है। गुर पूरा बख्शणहार है। हरि आपणी जोत अधार है। गुर पूरा शब्द अपर अपार है। कलिजुग मिटदा जाए भेख, जामा धारे नर अवतार है। सतिजुग लिखदा जाए लेख, गुरसिक्खां करदा आप प्यार है। दर साचे नेत्र लैणा पेख, प्रभ साचे दा सच विहार है। दरगाह साची लाउँदा जाए मेख, शब्द हथौड़ा उत्ते मार है। जोत सरूपी धारे हरि जी भेख, शब्द सरूपी आप अस्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत रिहा तार है। गुर संगत गुर दर वेखणा। ना कोई जाए भुल्ल रुल, प्रभ ना जाणो झूठा भेखणा। एथे साचा पैणा मुल, खोटा ख़रा जिस सारा वेखणा। भट्ठी काया तपदी रहे चुल्ल्ह, अमृत जिस ने उप्पर डालणा। अन्तिम मीटे रहि जाण बुल्ल्ह, विच्चों फेर ना किसे बोलणा। हरि का दर बड़ा अनमुल्ल, चरन प्रीती घोल घुलणा। गुरसिख विच मात दे फल फुल्ल, सोहँ शब्द रसना बोलणा। हरि साचा सदा है अडुल, गुरसिख कदे ना डोलणा। हरि साचा सदा अनमुल्ल, जिस सच दा बूहा खोल्ह्णा। भाग लगाउणा आपणी कुल, दर गुर झूठ कदे ना बोलना। जो दर साचे आयण रल, प्रभ पूरे तोल तोलणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद रसना बोलणा।

४६६
०३

✻ ४ माघ २०१० बिक्रमी ज्ञानी गुरमुख सिँघ अते डा० पाल सिँघ दे पिछले जन्म नवित्त ✻

इक्क चूहड़ा ते इक्क चम्यार। दोवें बण गए साचे यार। एह बाल्मीक मारे डाके ते धाड़। राह जांदे लुट्टे फड़ फड़ कुटे विसरया करतार। एह पाणा गंढु बहि के वाट डण्डे थल्ले गंगा माता दा सिणकार। ना उह सोना ना उह रुप्पा ना कोई परख करे सुन्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा आण मिलाया, दोहां भाईआं मेल मिलाया। नीचों ऊँच करदा आया। माण निमाणयां देंदा आया। इक्को धक्का लाउँदा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दा वाहवा मेल मिलाया। चूहड़ा ते चम्यार होए इक्ट्ठे, बण गए चिट्टे लट्ठे, प्रभ अबिनाशी बन्ने धार। बाकी उचे हो हो जो फिरन नट्ठे, प्रभ अबिनाशी तोड़े सर्ब हँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारे करे दर इक्ट्ठे, देवे नाम अधार। सारा

हाल फेर लिखावणा। जिथ्थे गुरसिख सच्ची सेव कीती, विच कताब लिखावणा। एका जोत सदा सुरजीती, बुझ कदे ना जावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला जामा स्पष्ट वखावणा। साचा हुक्म सच्ची सरकार। दोवें उठो हो त्यार। गुरसिख नाल करो प्यार। इक्क दूजे नाल अग्गे हो हो देंदे जाओ, जो सच्ची वस्त रक्खी संभाल। प्रभ अबिनाशी आप ना खावे। इक्क भोरा मुख लगावे। गुरमुख भुक्खे हरि साचा आप रजावे। आपणे आप दी सुध्ध ना रक्ख पहलों बालां नूं प्रचावे। बाल अञ्याणे गुरसिख जो चलाए आपणे भाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण निमाणयां माणे। भुक्खां कट्टे रक्खे तेह। गुरसिक्खां मन बरसे आत्म मेंह। करे तरस देवे वर ना तुटे नेंह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लहणा गुर संगत लै। सीत प्रसाद दीना वंड। गुरमुखां आत्म पाउँदे जाणा ठंड। साचा कर्म इक्क कराउणा, घुट्ट घुट्ट देंदे जाणा गंढु। इक्क इक्क भोरा मुख लगाउणा, बाकी घर दयां तांईं देणा वंड। प्रभ अबिनाशी वड रथवाही आप अख्वाउणा, सारयां भार लए वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा गुर मिल्या लेख लिख्या धुर, अन्तिम देवे कदे ना कंड। ना अन्तिम देवे पिच्छा। बणे औखी करे रिच्छा। साची देवे दात नाम हरि जी भिच्छा। बेमुख जीवां चारों कुन्ट नचाए जिउँ कलंदर हत्थ रिछा। खिच्चे नत्थ दए हुलारा, दर दर नचाए ना करे हुदारा, किते ना मिलदी साची भिच्छा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो जे जाओ पासा मोड़ फेर वी ना छोडे पिच्छा। इक्क वार सिक्ख मूंह मोड़े, फड़ के शब्द डण्डा मोड़ ल्याए। अगल वांढी जोत सरूप अग्गे खड़ा नज़री आए। फड़ के नत्थ खिच दुआरे आपणे ल्याए। सिर ते रक्खे हत्थ प्रभ अबिनाशी सोलां कला समरथ, आत्म देवे साची वथ, जुड़या जोड़ हरि रघुराए। ना कोई सके फेर तोड़, ना कोई सके झट्ट मरोड़, दूजे दी ना पए लोड़, इक्को इक्क विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बख्शे किरपा कर आपणी चरन सरनाए। गुर प्रसादि परमगति जाण। मिलदी नहीं किसे विच जहान। दर दर घर घर बैठे बैठे विच मन्दिर गुरदुआरे बैठे रहे ख़ाक छाण। मन्दिरां उत्ते फिरदे बन्दर, कदे भज्जण बाहर कदे वड़दे अंदर। आपे बणे ठग्ग चोर यार, घर साचे दा तोड़े जंदर। प्रभ अबिनाशी जामा धारे, बण जाए बेमुखां दा आप कलंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नक्कीं नत्थ कन्न पड़वाए आप नचाए जिउँ गोरख नचाया आपणा गुर मच्छन्दर। कामी क्रोधी कूड़ कुड़यारे। मल्ली बैठे गुरूदुआरे। आपणी आप ना पायण सारे। काया सच महल खाली होया क्यों मल्ले झूठे चुबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग जामा धर आपणी हत्थीं सर्ब सँघारे। अट्ठे पहर रहण सच दरबार। करदे रहण झूठी माया वाली विचार। झूठी करन सेवा, झूठा लग्गे मेवा, अक्खीं चुक्क चुक्क वेखण किधरों आउँदी धी भैण मुटयांर

। लज्ज पत्त ना रक्खी सांझी, ना जानण एह कोई सुहागण नार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जामा धार सभ दा सिर देवे पाड़। लग्गी जड़ दए उखाड़। गुरसिक्खां निभे नाल। आपणे ताणे तणे लए सुरत संभाल। गुरू घर जिस ने खाधा, दूणा सूद लगाया वध गया वाधा। जोत सरूपी प्रभ अबिनाशी जामा पाया, आपे कढ्ढे फड़ बकाया, जो ल्या प्यो दादा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा पार कराया, जिस ने रसन अराधा। पंडत पढ़न पुरान, आत्म होए ना फेर ज्ञान, आत्म होए बेईमान, झूठे तिलक विच ललाट लगाउँदे। भुल्लया हरि भगवान, जिस ने दित्ता पीण खाण, उहनूं वढ्ढी खोर बणाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धार लवे सार, जो नर नार प्रभ नूं हराम खोर सदाउँदे।

❊ ५ माघ २०१० बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❊

मनमति हरि बुलाई है। लक्ख चुरासी विच्चों खिच आपणे चरन बहाई है। वढ्ढी नक्क गुत्त, देवे पई दुहाई है। जिस ने तोड़या सभ दा जत्त, दर साचे आण शरमाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मनमति शब्द डोर नाल बंधाई है।
४७१ ०३ मनमत्त आई दुआरे। खड़ हरि जी अग्गे दोए जोड़ करे निमस्कारे। कलिजुग जीव मैं वहुंदी रही जूठे झूठे ढुगे, ना वेखे चंगे माढ़े। अग्ग लगाई रखी अंगे, ना विच कलिजुग संगे, ना कोई विचारे। वेला अन्तिम कलिजुग होए नंगे। लक्ख चुरासी चारों तरफ दिसण हरि संगे। केहड़ा दर किथे जावां किहदे कोल नाम दात साची मंगे। प्रभ अबिनाशी ल्या फड़, शब्द सरूपी घोड़ी चढ़ तोड़े सर्ब हँकारी। मनमति दए दुहाई। केहड़ी फाही मैनूं पाई। निहकलंक देवे अन्त बड़ी सजाई। गुरमुख विरले साध सन्त आपे लए बचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त सभ दा रिहा फंद कटाई। मनमति लई होश संभाल। लक्ख चुरासी जिस ने कीती मात कंगाल। पाउँदी रही गल विच जम की फाँसी, ना कोई सक्कया सुरत संभाल। जन भगतां होई रही दासी, ना चले एहदी चाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग एहदे भन्ने जवानी डाहण। मनमति करे पुकार। आई हरि सच्चे द्वार। किरपा मेरे उत्ते धार। मैं जावां तेरे सिक्खां दे द्वार। दोए जोड़ करां चरन निमस्कार। कलिजुग अन्तिम ल्या विचार। अग्गे पिच्छे आई हार। दोहीं हत्थीं पैणी मार। सतिजुग आया मात धराया, निहकलंक नरायण नर हरि अवतार। सोहँ साचा शब्द चलाया, बेमुखां दे मगर लाया, सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा दूरों तक्के रिहा विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करदा जाए सर्ब ख्वार। मनमति मूर्ख अञ्याण ४७१ ०३

है। जिस भुल्लया सर्ब जहान है। इक्क भुलाया हरि भगवान है। अन्तिम अन्त कलि धर्म राए देस जान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा लेखा आपे आप चुकान है। मनमति मूर्ख मुग्ध गंवार। वड्डे सुघड़ स्याणयां देंदी आई हार। वड्डे राणे राजे महांराणयां सुट्टदी आई मूंह दे भार। ना कोई जाणे जाण पछाणयां, झूठे रही महल्ल उसार। ना कोई जाणे वंञ मुहाणयां, डूंघे डूगर बेमुख जीवां रही उतार। ना जाणे हरि के भाणयां, अन्तिम कलिजुग निहकलंक लए अवतार। प्रभ पूरन कर्म आप विचारया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया कल्गीधर साचा हरि सच्ची सरकार। मनमति सृष्ट सबाई बेमुख जीवां मूंह दे विच पाउँदी फिरे थुक्क। गुरमुख साचे सन्त जनां, दर घर आए बाहर जाए रुक। अग्गे खड़ा हरि जी दिसे, ना पैर सके चुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं रिहा सुणाए कलिजुग वेला गया हत्थ ना आए, अन्तिम रहे सर्ब पछताए, ना कोई रोके ना सके रुक। मनमति झूठी वणजारीए। बेमुखां दी प्यारीए। कीते बेमुख वड वड मनुक्ख, उलटी फेरी इक्को आरीए। सभ नूं अन्तिम सहिणा प्या दुःख, कलिजुग अन्तिम आया भारीए। घर घर धूंए रहे धुख, हरि शब्द फुंकारा एका मारीए। देवी देवते नीवें हो के वेखण झुक, निहकलंक विच केहड़ी कूट विचारीए। कलिजुग जीवां बूटे गए सुक्क, आए बाडी शब्द कुहाड़ा जड़्ह उत्ते मारीए। भरम भुलेखा देवे कड्ढ, अड्ड अड्ड कराए इक्क
४७२ ०३ इक्क हड्ड, सोहँ आरे नाल चिरारीए। आपे बण जाए साचा गाडी, लै जाए धर्म राए द्वारीए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ४७२ ०३
भगवान, लक्ख चुरासी अन्तिम अन्त कलिजुग आपणा आप गई हारीए। दुरमति सर्ब दुःखदाई है। सृष्ट सबाई जिस भुलाई है। रैण सबाई, बेमुखां जीवां गूढ़ी नींद सवाई है। गुरमुख विरला राती उठे हो के नीवां गुर चरन ध्याई है। ठग्ग चोर यार चारों तरफ रातीं सुत्तयां लाउणा सीवां, प्रभ अन्तिम देवे सख्त सज़ाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति बेमुखां झोली पाई है। मनमति दुरमति दोवें भस्म कराई। कलिजुग अन्तिम अन्त वहन्दी धार वहाई। गुरमति साची जगत धर, सतिजुग झोली पाई। साचा नाम साचा तत्त साचा जत्त विच मात नाल कर साचा हुक्म सुणाए, विच मात रक्खणी पत्त, आपणी मति प्रभ साचा दए समझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी बणत रिहा बणाई। गुरमति आई चरन निरँकार। आपे पुच्छे आपणी कार। प्रभ गुरमुख साचे सन्त जन विच मात उठाए चन्दोआ चन्दन गुछे, जाए करीं घण छणकार। बेमुख रहे रुस्से, ना पावीं किसे सार। गुरमुखां तूं आई हिस्से, भज्ज जाईं सच्चे घर बाहर। होर किसे नूं मूल ना दिसे, सारे रहे झक्ख मार। कलिजुग जूठी झूठी चक्की सारे पीसे, कोई ना रिहा विच दो फाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आप समझाई, सोहँ शब्द डण्डे नाल रिहा ताड़। गुरमति गुरसिक्खां दे घर जा। जिथ्थे

होवे सिक्ख लाडला, उहनूं लईं गा। प्रभ अबिनाशी किरपा करे साचे राहे दए पा। निहकलंक कलि जोत धराया कन्न दए सुणा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चारों तरफ गुरमुख वेख सोहँ जैकारा देणा बुला। गुरमति हरि समझाई। साची डण्डी आपे पाई। वरभण्डी आवे कर के धाई। उत्ते बैठा वेखे हरि रघुराई। पिछा आया नस्सा, मातलोक विच जोत जगाई। पहला राह एका दस्सा, गुरमुखां दे दुआरे जाई। साची दात पावां सोहँ नाम तेरी झोली भिच्छा, गुरसिक्खां दी आत्म जाए टिकाई। पूरी कर दईं जा के इच्छा। जो महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, रहे ध्याई। गुरमति उठ उठ वड्डी बलकारन। चारों कुन्ट उठ के वेखीं कलिजुग जीव हँकारन। नेत्र पुट्ट के हरि जी वेख्या, दोए जोड़ करे निमस्कारन। साचा लेख जो प्रभ साचे लिख्या, मेरी बन्ही साची धारन। मैं गुरसिख विरला विच मात चारों तरफ मार नज़र देख्या। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मैनूं साचे राहे पाईं, सिर मेरे ते हत्थ रखाईं, मेरी करदा ना रहीं प्रीख्या। मैं अजे अञ्याणी बाली। मेरी सुरत हरि संभाली। बेमुख सारे तैनूं कढ्ढण गाली। गुरमुखां नूं नेत्र वेख मस्तक चढ़ जाए लाली। जोत सरूपी धारे भेख, जन भगतां बणया आप वाली। लिखाउँदा जाए साचे लेख, मिटाउँदा जाए बिधना रेख, गुरमुख साचे नेत्र पेख, अग्गे खड़ा दो जहानां वाली। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा बाग लगाया पहली माघी। गुरमुख साचे
४७३ ०३ साचा बूटा विच मात धराया। आपणी किरपा कर साचे हरि उत्ते अमृत मेघ बरसाया। गुरमुख विरले गए तर, जेहड़े गए ४७३ ०३
रंगाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग पहली माघी आपणी हत्थीं हरि समरथी विच मात दे लाया। गुरमुखां करनी साची कार, बेमुख देवीं दर दुरकार। गुरसिक्खां पावीं साची सार। आत्म वसीं राह साचा दस्सीं, बेमुखां वल खिड़ खिड़ वेख हस्सी, गुरमुख साचे जावीं तार। मदिरा मासी जूठा झूठा जे कोई दिसे छड्ड जावीं घर बुाहर। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ पहली वंड कराई पाए तेरे हिस्से देंदी जाईं प्यार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दूर दुराडा तैनूं वेखे करदी जाईं सच विहार। दुरमति मनमति मातलोक विच्चों टुट्टा नाता गुरमति मात आई। हरि जन्म दवाई रक्खे धीरज जत्त, मनमत्त दुरमति लथ्थी पत्त ना रिहा सति, प्रभ देवे अन्त मिटाई। गुरमति सोहँ देवे प्रभ साचा तत्त, रसना चरखा लैणा कत्त, दिवस रैण रिहा चलाई। प्रभ अबिनाशी अंदर बाहर पर्दे ओहले किते ना दिसे, ना वड़े किसे भित , आत्म अंदर रिहा टिकाई। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अग्गे दिसे आत्म सेजा बैठा जोत सरूपी जोत जगाई। आत्म सेजा करना ध्यान। उप्पर बैठा हरि भगवान। जोत सरूपी इक्क निशान। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, काया अंदर वसे ना कोई किल्हा कोट ना दूजा होर मकान। किल्हा काया कोट गढ़। प्रभ अबिनाशी अंदर बैठा वड़। बेमुखां हरि दिस ना आए, मारी बैठा दड़।

गुरमुखां आत्म विस लुहाए, पंचां चोरां नाल रिहा लड़। गुरमुख साचे सन्त तराए, आप फड़ाया आपणा लड़। प्रगट होए दरस दिखाए, जोत सरूपी शब्द घोड़ी चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धराए, सोहँ साचा जाप जपाए, नौ खण्ड पृथ्मी सरन ल्याए, ना कोई सके अग्गे अड़। अग्गे अड़े ना कोए राजान। साचा इक्क वड्डा शाह सुल्तान। जोत सरूपी जामा धारे, मातलोक विच साचा काहन। सोहँ शब्द लगाए साचा नाअरा, किरपा कर हरि भगवान। अन्तिम होए ख्वारे, वेद चारे जेहड़े रहे सर्ब वखान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाणी जाण। जन्म कर्म हरि हत्थ, जीव गंवार है । जन्म कर्म हरि हत्थ, लहणा देणा लहणा आपे रिहा विचार है । जन्म कर्म हरि हत्थ, भाणा मन्नणा रिहा पुकार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, तन देवे साचा गहणा, सोहँ शब्द अपार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, इक्ठे हो हो बहिणा, दर दर ना होणा ख्वार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ आप चुकाए लहणा देणा सच्ची सरकार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ गुरसिख वेखे नैणा, सृष्ट सबाई बद्धी बैठा भार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ लक्ख चुरासी जोत प्रकाश, अग्गे पिच्छे खुल्ले दर द्वार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, सृष्ट सबाई करे दास, करन करावणहार है। जन्म कर्म धर्म प्रभ हत्थ, करे कराए घनकपुर वासी गुरसिक्खां बख्शणहार है। कर्म धर्म प्रभ हत्थ, कलिजुग अन्त विनासी सतिजुग आया मात जामा धार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, सृष्ट सबाई करे दासन दासी, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार है। कर्म धर्म प्रभ हत्थ, सच्ची जोत मात प्रगटाई जगे जोत अगम्म अपार है। कर्म धर्म प्रभ हत्थ, मानस जन्म कराए रहिरासी, करे करावे सिरजणहार है। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, अन्तिम करे बन्द खलासी, गुरमुखां बेड़ा बन्नृणहार है। कर्म जन्म प्रभ हत्थ, धरे जोत मात वड शाहो शाबाशी, राउ रंक बहाए इक्क द्वार है। जन्म कर्म हरि हत्थ, अन्त मिटाए मदिरा मासी, ना कोई खेडण जाए शिकार है। जन्म कर्म हरि हत्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच रिहा पसर पसार है। हरि जोत हरि अकार। हरि जोत हरि पसार है। हरि जोत सृष्ट सबाई हरि रिहा पसर पसार है। हरि जोत इक्क दिसे अनेक है। हरि जोत एका इक्को टेक है। हरि जोत इक्क बुध करे बबेक है। हरि जोत इक्क गुरमुख काया लगण ना देवे सेक, रक्खे ठंडी छाउँ है। हरि जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सृष्ट सबाई वेखे, लिखे साचे लेख है। हरि जोत हरि लेख लिखारी। हरि जोत हरि सर्ब पसारी। हरि जोत वेखे विगसे करे विचारी। हरि जोत लक्ख चुरासी जीवां जन्तां साधां सन्तां पावे सारी। हरि जोत हरि मात धर, करे खेल अपर अपारी। हरि जोत दिसे साचे घर आत्म दर, बाहर लभ्भण जीव गंवारी। हरि जोत इक्क नर हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर अंदर वसे गुरसिख तेरी काया महल्ल अटारी।

काया महल्ल मुनारा। ना कोई लभ्भदा गुरूदुआरा। प्रभ अबिनाशी दिसे अंदर ना कोई पावे सारा। बेमुखां आत्म वज्जा रहे जंदर, ना कोई तोड़े दुःख लग्गा भारा। घर घर भौंदे फिरन बन्दर, कदे बाहर कदे अंदर, ना मिले कोई दुआरा। प्रभ अबिनाशी वसे काया डूंघी कंदर, गुरमुख विरला पावे सारा। हरि जी वस्सया रहे हरि आत्म मन्दिर, गुरमुख जोती दे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार लोकमात विच जामा धारा। लोकमात ल्या अवतारा। जोत सरूपी खेल अपारा। एका जोत एका गोत रूप रंग अपर अपारा । बेमुख जीव कलिजुग रहे रोत, अन्त दुःख लग्गा भारा। पैर पसार जो रहे सोत, अन्तिम होए ना कोई सहारा। गुरमुख तेरी आत्म जगदी दिसे जोत, सोहँ शब्द बोल जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए आपणी सरन लए रखाए, बाहों पकड़ गले लगाए, कलिजुग मिटाए दुःख माया ममता मोह जो लग्गा भारा। माया ममता मोह जगत धरो है। बिन गुर पूरे बात ना पुच्छे को है। अन्तिम वेले बेमुख सारे चारों तरफ रहे रो है। नेत्र नैण विचारे वहायण नीर, नूरी मुखड़ा रहे धो है। अठ्ठे पहर हउमे पीड़, सोहँ डण्डे तोड़ी हड्डी रीड़ है। साचा शब्द मगर लगाया, एका गेड़ा आप दवाया, बेमुखां रिहा पीड़ है। गुरमुख सोया आप उठाया, बाहों पकड़ गले लगाया, अमृत साचा मुख चवाया। दूई द्वैती पर्दा लाहया। लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। जम का डर परे हटाया। सोहँ शब्द इक्क सुणाया। ज्ञानी ध्यानी पढ़ पढ़ थक्के, हरि जी किसे हत्थ ना आया। कोई हाजी हज्ज करन नूं जावे मक्के, खाली हत्थ दोवें मुड़ घरां नूं आया। कांशी प्राग अयुध्या अठ्ठ सठ तीर्थ पैण धक्के, ना होए कोई सहाया। गंगा गोदावरी नहा नहा कलिजुग थक्के, आत्म मैल कोई ना लाहया। प्रभ अबिनाशी करे नबेड़ा हक्को हक्के, जूठयां झूठयां दोहीं हत्थीं आपे घुंड चुकाया। बेमुख खांदे रहे गरीब निमाणयां मार मार फक्के, निहकलंक नरायण नर सिर सोहँ डण्डा लाया। अग्गों हत्थ कोई ना चक्के, अन्त फल कलिजुग पक्के, प्रभ सारे झाड़ वखाया। बाहों फड़ अग्गे खड़ धर्म राए दे घर विच डक्के, ना लए कोई छुडाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगो जुग जन भगतां पैज रखदा आया। चारों तरफ हरि विचारे। जूठे झूठे माया लूठे, अन्तिम कलिजुग कढ्ढे बाहरे। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ चरन लूठे, हरि प्रगट होए दरस दिखाए जोत जगाए सच दरबारे। दरगाह साची सच लिखाए लेखे, ना करे कोई हुदारे। बेमुखां मूधे होए ठूठे, ना पावे कोई भिखारे। प्रभ दर तों गए रूठे, दुःख लग्गा भारे। निहकलंक कलि जामा पाया सारे हो गए झूठे, चारों कुन्ट रहे झक्ख मारे। गुरमुख साचे सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन बहाए करे सुत्त प्यारे। चरन बहाए गुरसिख दुलारा। करदा जाए हरि प्यारा। राह दस्सदा जाए, हिरदे वसदा

जाए, देवे दरस अगम्म अपारा। नाल नाल नस्सदा जाए, घोड़े दा तंग कसदा जाए, सृष्ट सबाई झस्सदा जाए, करे खेल अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारा। आपणी सार हरि आप समालदा। गुरमुख साचे सन्त जनां अंतरमत सीर प्याए आपणी हत्थीं मुख चवाए, बच्चे सोहणे आपे पालदा। बेमुखां दे सजाए, दर तों दए दुरकाए, सारे करन हाए हाए, प्रभ अन्तिम सभ नूं गालदा। गुरमुख सोए लए जगाए, साची दात झोली पाए, भिच्छया मंगे जो दर आए, साचे तोल हरि जी तोलदा। बेमुखां मुख भवाए, अन्तिम देवे डाहढी विच मात सज़ाए, आंढी गवांढी भैण भाई आण ना कोए छुडांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, जामा मातलोक विच धारदा। जामा धारे हरि हरि। करे विचार घर घर। वेखे जा दर दर। गुरमुख साचे सन्त जन आप नुहाए बाहों फड़ साचे सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म दए भण्डारे भर। हरि योग सच दवाया। रस भोग अमृत फल ख्वाया। होया सच संजोग, गुरसिख पूरा मेल मिलाया। कट्टे हउमे रोग, झूठा दाग धो वखाया। साची शब्द चुगाए चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाया। ना होवे कदे वियोग, निज आसण डेरा लाया। दरस देवे हरि अमोघ, जोत सरूपी जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप रहाया। भाणा हरि गुरसिख जानणा। वेला जाए बीत, पिछे सर्ब पछतानणा। मात जोत धर काया करे सीत, देवे नाम चरन धूढ़ इशनानणा। मानस जन्म जाणा जीत, सोहँ बन्ने हत्थीं गानणा। लग्गी तोड़ निभ जाए प्रीत, आत्म होवे ब्रह्म ज्ञानणा। गुरसिख कदे ना होए खोटी नीत, धीआं भैणां सर्ब पछानणा। इक्को जाणो हरि साचा मीत, होर कूड़ो कूड़ वखानणा। कलिजुग चलाई साची रीत, हरि साचा राह वखालणा। गुरसिख साचे सन्त जनों गाओ सुहागी गीत, हरि सोहँ शब्द जपानणा। कलिजुग अन्तिम गया बीत, सतिजुग करदा आया चानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म जोत जगाए, अज्ञान अन्धेर मिटाए, करे प्रकाश कोटन भानणा। मिटे अन्धेर जोत प्रकाशया। ना होई देर, प्रभ आया घर पुरख अबिनाशया। आपणा खेल किया पहली वेर, गुर संगत बणाए आपणी दास दास्सया। चरन लगाए घेर, कमलापत हरि बलि जास्सया। चुकाए मेर तेर, ना करे हेर फेर, एका राह चलास्सया। सृष्ट सबाई मारे भेड़ भेड़, ना कोई अन्त छुडास्सया। आपे छेड़ां रिहा छेड़, ना कोई जाणे शाह सुल्तान, करे कराए हरि घट घट वास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार मात पताल अकाश एका जोत करे प्रकाशया। साची जोत हरि टिकाए। साचा राह सतिजुग दिसाए। सोहँ शब्द रसन जपाए। सच सुच्च संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म एका एक आपणा आप सुणाए। सच सुच्च रल गई नाल। सतिजुग साचे उठी सुत्ती मार छाल।

४७६
०३

पहलां घर साचा वेखां, जिथ्थे गुरमुख होए अनमुल्लड़ा लाल। उहदी उतारां जाए तृखा, ना होए फेर बेहाल। अंदर वड़ के लाहूं झूठी विखा, लवां सुरत संभाल। सोहँ शब्द लवां तिक्खा, जेहड़ा जड़ पुट्टे वाल। प्रभ दित्ती साची भिक्खा, मैं होई बड़ी खुशहाल। मेरा लेख साचा लिखा, सतिजुग लै चल्लया मैनूं नाल। मैं जा के मिलां साचे गुरसिक्खां, मैनूं लैणां तुसां संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना जाणो बाल निधान अञ्याणा बाल। साचा नाउँ रसना गावना। प्रभ पूर कराए भावना। शब्द बणाए सच विचोला, आप बण जाए साचा ज़ामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जाणो जाण पछाणो श्री भगवानना। नाम जप रसन ध्याउणा। पूरन भाग हरि लगाउणा। कलिजुग माया भुल्ल ना आपणा आप गंवाउणा। जूठा झूठा खत्म होया जुग, सच सुच्च रहि राह चलाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाउणा।

❋ ६ माघ २०१० बिक्रमी अमरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

लिखे लेख लेख लेखनी, गुरसिख कलम अपार। साचे हरि सभ दर देखणी, बन्ने साची धार। मिटाए पीर शेखणी,
४७७ ०३ आप बणे सच्ची सरकार। सतिजुग लिखाए साची रेखनी, मातलोक दित्ता जन्म अपार। झूठ आप मिटाए भेखनी, सृष्ट ४७७ ०३
सबाई पैज संवार। गुरसिख साचे नेत्र पेखणी, जो वरते वरतार। लाई मात सच्ची मेखणी, ना सके कोई जड़ उखाड़। जो जन रहे वेखा वेखणी, प्रभ सोहँ डण्डे देवे झाड़। हरि रक्खे लाज केसनी, चवर झुलावे चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। सतिजुग साचा मात धराया। चिट्टा बाणा तन पहनाया। साचा राणा हरि अख्वाया। वड ज़रवाणा शब्द नाल ल्याया। सच सुच्च फ़रमाणा धीरज मति जति दे समझाया। गुरसिख मन्नो साचा भाणा, हरि जी हुक्म सुणाया। ऊँच नीच ज़ात पात डूंम डुंमाणा हरि एका रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे एका बाणा तन पहनाया। चिट्टा बाणा सर्ब पछाण। धरे मात हरि भगवान। गुरमुखां आत्म उप्पर शब्द देणा ताण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा फेर करे फरमाण। सच सिँघासण उत्ते सच्चा शाह। हरि जी लाई बैठा आसण, दाग कोई दिसे ना। सतिजुग बन्ने साची रासण, कोई जीव भुल्ले ना। आप मिटाए मदिरा मासण, सतिजुग खाए कोई ना। जो कर कर जायण हासण, दरगाह साची मिले ना थां। धर्म राए दी फाँसी फासण, ना लए कोई छुडा। सोहँ शब्द चले अकाशण, तिन्ना लोक दए जणा। प्रगट होया घनकपुर वासण, साची जोत देवे मात जगा। गुरसिक्खां

होया दास दासण, नाम दात देवे झोली पा। आपे कट्टे जम की फासण, जगत जंजाले रिहा कटा। उत्ते देवे शब्द दुशालण, गुरसिक्खां पर्दा रिहा पा। साचे फूल देवे नाल अन्तिम बालण, साची देवे सीढ़ी बणा। उत्ते रक्खे चुक्क चुक्क सिक्ख बाल अंञानण, होए आप सहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन सतिजुग बहाए साचे थां। सच्चा हुक्म सच्चा फ़रमाण। गुरमुख साचे सच पछाण। सतिजुग झुल्ले सच्चा इक्क निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणत बणाए, सत्त रंग आप चढ़ाए, उत्ते तिन्न लेख लिखान। सत्त रंग प्रभ दए चढ़ाए। सत्तां दीपां लोअ कराए। जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती लए जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा सच्चा झण्डा आपणी हत्थीं आप बणाए। सति धर्म हरि का बाणा। प्रभ आपणी हत्थीं आप बणाना। घनकपुर वासी किरपा कर साचे हरि, नाम डोरी नाल बंधाणा। फिर उप्पर जाए चढ़, चारों तरफ वेखे खड़, कोई ना दीसे किल्ला गढ़, सारयां उप्पर इक्क निशान रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तां दीपां एका झण्डा एका डण्डा सोहँ शब्द रखाणा। साचा झण्डा दए चढ़ाए। विच वरभण्डां होए रुशनाए। बेमुख पाउँदे झूठीआं वंडां, अन्त कोई रहण ना पाए। हरि वढ्ढी जाए सभ दीआं कंडां, धरत

४७८ मात दे उत्ते सवाए। घर घर चारों तरफ दिसण नारां रंडां, सुहागी कन्त ना कोए हंढाए। हरि जी फड़या हत्थ सोहँ खण्डा, ४७८

०३ बेमुखां पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्भुज सेत्ज अंडज ज़ेरज सभनां विच समाए। दीप लोअ पताल ०३

अकाश। सभे होए हरि प्रकाश। कलिजुग अन्तिम सारे रोए, होणा पैणा नास। कौण पिछले पापां दाग धोए, हरि नाम ना किसे पास। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ सोहँ धागे लए परोए, करे बन्द खुलास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जामा धारे, सतिजुग बणाए तेरी साची रास। साचा हरि बणत बणाए। सतिजुग साचा मात धराए। पंचम जेठ पहली आए। खुशीआं नाल हरि मनाए। कलिजुग तेरा काला सूसा गलों लाह परे हटाए। मिटदे जाण ईसा मूसा जो रहे डंक वजाए। ना कोई दिसे कुरान हदीसा, ना कोई मुला सबक पढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे आप जणाए। सतिजुग आए पहली पंचम जेठ। प्रभ फड़ फड़ भन्ने चारों तरफ वड वड सेठ। कूड़े जीव सर्ब कुड़यार, आपे भन्ने कौड़े रेठ। पूर्ब कर्म हरि विचार, सृष्ट सबाई पावे सार, उप्पर सिँघ सिँघासण बैठ। साचा हरि कर्म कमाए, साचा धर्म मात धराए। कलिजुग बाणा गलों लाहे। सतिजुग तेरा साचा बाणा हरि साचा राणा तन पहनाए। गुरमुख साचा सुघड़ स्याण कर ध्याना, आपणे नाल रलाए। सच्चा देवे शब्द बबाणा, सोहँ नाम पीणा खाणा, भुक्ख हरि सर्ब मिटाए। चारों तरफ ना होए हीणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे आपे लाए। साचे सिक्ख लए उपजाए। साचा

हुक्म पहली लिख्त गुरमुख साचे सन्त जनो सुणो सर्ब कन्न लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आपे आप रहाए। साचा हुक्म सच गुर मन्त्र। सर्ब जीआं हरि जाणे अन्तर। आप बणाए सतिजुग तेरी पंचम जेठ बणतर। साचा खण्डा कंडा हत्थ उठाए, सोहँ साचा शस्त्र। गुरमुखां हरि हुक्म सुणाए, चिट्टे बणाओ सारे बस्त्र। बेमुखां हरि बिन्न्ह वखाए, जिउँ फोड़ा नाई नस्तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए, शब्द सरूपी जंग कराए, गुरसिख ना उठाए कोई शस्त्र। गुरसिख चिट्टे बाणे लैण बणा। नेत्र वेख दूरों हरि जी ख़ुशीआं लए मना। सतिजुग तेरा वक्त सुहाए पंचम जेठी जेठा पुत्त गुर संगत लए बणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा गीत सतिजुग तेरी साची रीत, सृष्ट सबाई दए सुणा। साचा बाणा पा के आउणा। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाउणा। ख़ुशीआं नाल दिन मनाउणा। सौं के मूल ना वक्त लँघाउणा। साचा शब्द सच ज्ञान सच ध्यान इक्क रखाउँणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा साचा झण्डा, आपणा आप झुलाउणा। गुरसिख पायण चिट्टे बाणे। हरि साचा साचा शाहो वेख ख़ुशीआं माणे। सज्जे खब्बे अग्गे पिच्छे चारों तरफ हरि जी फिरदा, फिर खड़ा रहे सरहाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन विच मात आप पछाण पवाए चिट्टे बाणे। चिट्टे बाणे दए पवा। साचा खेल लए वरता। देवे माण निथाव्यां थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा देवे आपणी ठंडी छाँ। पहला बाणा हरि जी पाए। दूजा फेर हुक्म सुणाए। सन्त मनी सिँघ तन छुहाए। तीजा नेत्र खोल्ह वखाए। गुरसिक्खां दी वारी आए। उठो सिक्खो नेत्र वेखो, दर घर साचे हरि जी आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजा बाणा गुरमुख साचे सिँघ प्रीतम तन पहनाए। चौथा बाणा हरि उठाए। साचा हुक्म आप सुणाए। सिँघ बिशन हरि दए वड्याए। रक्खी लाज पग निशाना, किरपा फेर करे रघुराए। पंचम जेठ पंचम वारी गुरमुख साचे वेख, आपणी हत्थीं आप वड्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ तेजा सोया मोया आपे लए जगाए। छेवां बाणा हरि उठाया। साचा राणा दया कमाया। गरीब निमाणा गले लगाया। सिँघ इन्द्र दे तन पहनाया। करदा रहे आपणी छाया। आपणा भाणा आपे जाणे। सतवां देवे सति उपदेश। प्रगट होया माझे देस। जोत सरूपी किया वेस। ना कोई जाणे नर नरेश। गुरमुख साचे सन्त जन, सिँघ प्रेम तेरे तन पहनाणा। अट्ठवां बाणा हरि उठा। दूजा हुक्म दए सुणा। गुरमुख साचे लए मना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भोला भाला सिँघ आत्मा आपणी सरन लए लगा। नावां बाणा नावें दर। प्रभ अबिनाशी वेखे साचा घर। गुरमुख साचे सन्त जनां देवे किरपा कर। गुरमुख सिँघ तेरे तन पहनाना। करे चतुर सुजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे रंग रंगाना। दसवां वेखे वेख विचारे। किथे बैठे सिक्ख प्यारे।

खिच ल्याए चरन दुआरे, पाल सिँघ हरि माण दवाणा। यारवां मिल्या सच्चा यार। निहकलंक नरायण नर अवतार। अग्गों मिलदा भुजा पसार। देवे शब्द साची धार। सिँघ दर्शन देवे तार। बणयां रहे लेख लिखार। बारां बारां मास गुरसिख ना होए कदे उदास। पूरी करदा रहे आस। होए दुखड़ा नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल्ला रुल्ला डुल्ला गुरसिख गले लए लगाया, सिँघ जीवण होया दास। तेरां तेरी हरि वड्याई। पंचम जेठ नेड़े आई। अचरज खेल हरि वरताई। गुरमुख बेमुखां दोवें नाम लए लिखाई। सच दर दुआरे अग्गे खड़, दोवें राह लए बणाई। गुरमुख अंदर जाण वड़, बेमुख पिछे जाण धक्के खाई। सिँघ ठाकर खड़े पहरेदार, अग्गे खड़ बाहों लए फड़, मदिरा मासी कोई अग्गे लँघ ना जाई। अग्गे सिँघ सिँघासण हरि जी बैठे, उप्पर चिट्टी चादर विछाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ चारों तरफ देवे लकीर लगाई। इक्को राह हरि रखाउणा। गुरसिक्खां सिध्धा अग्गे आउणा। साचा हुक्म हरि सुनाउणा। चरनां उप्पर हत्थ सीस दोवें झुकाउणा। उप्पर किसे हत्थ ना लाउणा। दस्स मतीं हरि साचे आप समझाउणा। कलिजुग वेला खतम होया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोल घचोल सर्ब मुकाउणा। चौदां वेखे चौदां लोक। अट्ठे पहर आवे जावे, ना सके कोई रोक। गुरमुख साचे सन्त जन नेत्र लैणा पेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणाए पंचम सलोक।
४८० ०३ जो किछ वरताए सिँघ लछमण तेरे गुर संगत नाल लिखाए लेख। पंचम जेठ तख्त बणाउणा। चिट्टा बाणा सभ ने पाउणा। ४८० ०३
चार कुन्ट गुरमुख साचे आपणी हत्थीं छत्र झुलाउणा। सतिजुग साचा धरया मात, पंचम जेठ तिलक लगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ख़ुशी मनाए वक्त सुहाउणा। मिटया कलिजुग झूठा भेख, पंदरां सोलां सतारां, गुरमुख चुणे विच्चों लक्खां ते हज़ारां। आप लिखाए लेख बण लिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साची नाम भिख, जो मंगण सच दुआरा। पंदरां सोलां सतारां प्रभ जाणे सभ दीआं अंदरा। विच वड़या बैठा डूंघी कंदरा। तोड़ी बैठा गुरमुखां आत्म जंदरा। भेख मिटउँदा जाए, सृष्ट सबाई सोहँ गीत सुणाउँदा जाए, उचे टिल्ले निवाउँदा जाए, दर आए गोरख ते मच्छन्दरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाकी सिक्खां फेर नां लिखाए, पंचम जेठ हरि बैठ साचे मन्दिरा। लिखा लेखा लेख उन्नीं। गुरमुख उप्पर प्रभ देवे सोहँ चुन्नी। बेमुखां दी चोटी मुन्नी। कलिजुग जीव अन्तिम कलिजुग होई काया कच्ची भुन्नी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जना सृष्ट सबाई विच्चों आपे छाणे छाण कराए आपे रिहा पुणी। बीस इकीस इकीस बीस। दोहां दी ना करे कोई रीस। इक्क गुर संगत इक्क जगदीश। दोहां छत्र झुल्ले सीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच्चा शाहो ना कोई करे रीस। साचे हरि तख्त बराजणा। आपे साजे सृष्ट सबाई तेरी साजणा।

दूरों नेड़िउँ खिच ल्याए, शब्द सरूपी हुक्म सुणाए वड राज राजाना। आपे बैठा मुख छुपाए, जो किसे दिस ना आए, आपे वेख वेख वखाए, सर्ब जीआं दी आपे जाणे क्या कोई जीव भेव छुपाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ चिट्टे बाणे तन पहनाना। गुरसिख साचे जाणा जाग। प्रभ पकड़े आपणी हत्थीं मात तेरी वाग। हरि सर्ब कला समरथी, ना रहण देवे कोई दाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे इक्क सुणाए राग। सच सिँघासण कर त्यार। गुरमुख होणा खबरदार। खड़े रहण चारों तरफ चार चुफार। अट्ठे पहर आत्म बज्झी रहे सोहँ धार। बेमुख कोई हत्थ ना लाए, प्रभ रिहा रसन उचार। साचा सच्चा दर द्वार आप बणाए, दोवें लेख गुरमुख बेमुख राह विच लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए। गुरमुख आओ अंदर वड़। बेमुख वेखो दूर खड़। साचा डण्डा एथे लग्गा, मदिरा मासी कोई ना जावे चढ़। साचा झण्डा एथे लग्गा, दूर दुराडे उप्पर वेखो रिहा चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां आपणी हत्थीं लए फड़। गुरमुख साचे हो हुशिआर। प्रभ शब्द लिखाए अपर अपार। आपे जाणे आपणी सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरतावे आप भुगतावे आपणी कार। अष्टम जेठ उठ कर जाणा। विच खेतां डेरा लाणा। साचा लेख फेर लिखाणा। हीरा घाट चरन छुहाणा। साचा बंध आप बंधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

४८१
०३

भगवान, होर किसे थां ना चरन छुहाणा। सिध्धा जाए साचे थां। जिथ्थे मनी सिँघ वस्सया सच्चा शाह। साचे फुल्ल हरि मंगवाए, पिण्ड भंडाल रहण ना पाए खेतीं रक्खे टिका । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, केलयां थल्ले रक्खे छुपा । सन्त मनी सिँघ तेरा पाउण जाणा मुल्ल। सृष्ट सबाई तपाउण जाणा काया चुल्ह्। हरि रघुराई एका एक सदा आप अतुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कवण जाणे सारे गए भुल्ल। साची बन्ने धार हुक्म सुणांयदा। आपे बणे सच्ची सरकार, साचा राह वखांयदा। सिँघ आसण बैठ हरि दातार, गुरमुखां एह समझांयदा। गुरमुख साचे सन्त जनो, हरि दे पिच्छे हो ना सीस छत्र कोए झुलांयदा। सज्जे खब्बे खब्बे सज्जे चारों कुन्ट गुरसिख फब्बे, फेर हत्थ हिलांयदा। आपे बैठे अद्धविचकार। जिस दा दिसे ना कोई किनार। अग्गा पिच्छा सज्जा खब्बा, चारे तरफ पाउँदा रहे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी साची बन्ने धार। गुरसिख चवर झुलावे। इक्क हत्थ कदी ना लावे। दोवें हत्थीं फड़ उठावे। हउमे ममता माण गंवावे। लम्मी बांह ना कोए करावे। गुरसिख प्रभ पूरे तेरे सिर उत्ते ना कोई हत्थ फैलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धारा विच संसारा, अपर अपारा आपणी आप बंधावे। दोवों हत्थ करना चवर। सीस उप्पर आप उडाणा, जिउँ भौंदे रहण भवर। चारों तरफ सज्जण गुरमुख साचे सन्त जन विच बैठा गहर गवर। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए, जन पूरी सेव कमाए, मानस जन्म जाए संवर। चार कुन्ट चारों तरफ गुरसिख चार चुफेरे। प्रभ अबिनाशी आपे जाए गुरसिक्खां दे घेरे। राह कोई नज़र ना आवे, ना कोई करे हेरे फेरे। अट्ठे पहर संञ सवेरे करे हक्क नबेड़े। आवे जावे वारो वारे। विच मात मारे फेरे, मुकाए जगत झेड़े। सारे उठ उठ बेमुख वेखण, हरि वसे केहड़े खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आत्म वसे जिस दे खुल्ले वेहड़े। आपे वेखे वखाणे, सर्ब घट वास रखांयदा। सर्ब जीआं हरि गति मितक जाणे, ना कोई भेव रखांयदा। ना जाणे बुढ्ढे बाल अञ्याणे, अंदर बैठा लेख लिखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे होर किसे दिस ना आंयदा। आपे वेखे वेख वखाणे। तणदा रहे सारे ताणे। बणाउँदा रहे जीआं बाणे। लक्ख चुरासी खेल भगवाने। एका जोती मेल मिलाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवाने। वड बली बलवान, बल हरि धारया। बणदा जाए नौजवान, साल दसवां ख़ुशीआं नाल लँघा रिहा। पंचम जेठ आवे विच संसार, ग्यारवें साल हरि पहला चरन टिका रिहा। सृष्ट सबाई होए कंगाल, गुरसिख लभ्भे साचे लाल, आपे बणया विच दलाल, विचोला होर ना कोई रखा रिहा। सोहँ शब्द देवे धन मल, आपे लए सुरत संभाल, गुरमुख दिसे बाल अञ्याण, पर्दा उहला आप हटा रिहा। फल लगाए साचे डाल, गुरमुख साचे सन्त जन लग्गी प्रीत निभ गई नाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जंजाल आप तुड़ा रिहा। जगत जंजाला गया तुट। प्रभ अबिनाशी इक्क प्याया अमृत साचा घुट्ट। गुरमुख साचे सन्त साचा लाहा लैण लुट्ट। रसना कहण धन्न धन्न, शब्द सुण साचा कन्न, आत्म सभ दा जाए मन्न, मिले भण्डारा अतुट। बेमुखां प्रभ दए डन्न, आत्म कढ्ढे झूठा जन, काया ठूठा देवे भन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा कर्म आप कमाया अबिनाशी अचुत। सोहँ शब्द तिखी धार। सोहँ शब्द हरि हत्थ कटार। सोहँ शब्द हरि म्यान विच्चों कीनी बाहर। सोहँ शब्द कर ध्यान, सतिजुग होए जाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खपाए सर्ब कायर। सोहँ शब्द साची ढाल। कलिजुग तेरा वार अन्तिम ल्या संभाल। प्रभ अबिनाशी किरपा कर सतिजुग सोया ल्या उठाल। सतिजुग उठया, हत्थ पाए सोहँ मुठया, खिची शब्द सच्ची तलवार। कलिजुग वेख अग्गों रुड्डया, मैं लुका केहड़ी गुड्डया, प्रभ टंगे कर कर पुट्ठया, लक्ख चुरासी जो रक्खी मात संभाल। सोहँ शब्द तीर साचा छुट्टया, बेमुखां सीनां फुट्टयां, जगत जहान नाता तुट्टया, प्रभ रसना खिच्ची तीर कमान। कलिजुग चोग निखुट्टयां, दोहीं हत्थीं हरि साचे गल घुट्टया, खाली हत्थीं जगत जहानों गया पुट्टया, ना कराया अन्तिम किसे इशनान। सोहँ शब्द लगाए साचे बूटयां, आपे दए हुलारा सच्चा झूटयां, किरपा करे हरि मेहरवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ

सतिजुग दित्ता सच्चा दान। सोहँ शब्द आदि अन्त। जपदे आए साध सन्त। मेल मिलावा साचे कन्त। साचा दाअवा गुरमुख साचे संग हरि भगवन्त। अन्तिम अन्त एका जोती होए, बण गई साची बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलावा साचे कन्त। साचा कन्त हरि संसारा। गुरमुख साचे कर विचारा। घर घर वेखे लिखाए लेखे, जो जन आए चल दुआरा। गुरमुख विरला नेत्र पेखे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे सोहँ नाम अधारा। सोहँ नाम निधान गुरमुखां दात है। देवे हरि भगवान, ल्याया धुर दरगाहों सच्ची इक्क सुगात है। किरपा कीती आप मेहरवान, कलिजुग अन्तिम गुरसिक्खां नाल कराई मुलाकात है। आप बणाए चतुर सुजान, सतिजुग साचे रसना हरि चेत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका साचा कन्त है। सोहँ शब्द वड सरदार। गुरमुख साचे सन्त जनां सदा करदा रहे प्यार। देवे साचा नाम धना, रसना कराए सच्चा वणज वपार। बन्ने नाल छड्डदा जाए बन्ना, गुरमुख बेमुख दोवें खड़े होण जे इक्क द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंदर बैठ सभ कुछ वेखे, ना करे किसे हुदार। आत्म वेखे गुण निधान। वाहवा साची करे पछाण। इक्को वड्डा दिसे विच हरि बली बलवान। पंजे चोर जिस कोल वड्डे वड शैतान। शब्द तीर हरि साचा कसे, मारे खिच बेमुखां आत्म बाण। गुरसिक्खां हरि हिरदे वसे, देवे जोत महान। बेमुख जीव कलिजुग तेरी झूठी चक्की पीसे, हरि रस ना रसना गाण। गुरमुखां हरि आया हिस्से, पहली माघी पहली वंड कराण। बेमुखां प्रभ किते ना दिसे, मन्दिर मस्जिद सारे वेखण बगल फड़ कुरान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस रुत्त सुहाई, गुरमुख साचे सुत्त बणाई, जामा धारे श्री भगवान। माझे देस जोत जगाई। गुरमुख साचे आप उठाई। कलिजुग जीव खाली बुत्त, अन्तिम खाक मिलाई। चारों कुन्ट पए मुख थुक्क, ना होए कोई सहाई। गुरमुख साचे सन्त जन ना जायण किते रुक, प्रभ देवे पन्ध चढ़ाई। अन्तिम वेला कलिजुग आया, दूई द्वैती पर्दा गया चुक्क। सतिजुग साचा मात धराया, कलिजुग हो गया गुट। पी पी लहू गरीब निमाणयां, वड्डा भार रक्खया चुक्क। जामा धारे हरि भगवानयां, बेमुखां अन्त खपाए आपणी हत्थीं कुट्ट कुट्ट कुट्ट। आपणे हत्थ फड़ खण्डा दो धार। सिर धड़ धड़ सिर दोवे दए उतार। दर दुआरे दोवें वेखण, इक्क दूजे नूं नेत्र पेखण, एका चले लहू धार। मिहणे मारन करन स्यापे, क्यों ना हरि जी पाई सार। अन्तिम सहाई कोई ना जापे, मदिरा मासी होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सदा सहार। सदा सहाई आपे हरि। गुरमुखां देवे साचा वर। सोहँ साचा रसना गाओ, चुकाओ जम का डर। अमरापद घर साचे पाओ, ना जाओ कदे मर। आप बिठाए साचे थाउँ, जिथ्थे वसे साचा हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप

निरँजण नर नरायण अट्ठे पहर खुल्ले रहण दर। खुल्हा रहे दुआरा, हरि निरँकार दा। दूरों वेखे मारे वाज़ां, गुरसिक्खां सदा पुकारदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे, आप गगन दीआं छत्ता पाड़े, उत्तों हेठां झाती मारदा। थल्ले खड़े सिक्ख विचारे, दोए जोड़ करन निमस्कारे, प्रभ अबिनाशी वेख विचारे, जामा मातलोक विच धारदा। दर घर आए पाए सारे, सोहँ देवे नाम अधारे, गुरमुख साचे आपे तारे, भरम भुलेखे सर्ब निवारदा। जामा धार करे विचार, गुरमुखां पाए आपे सार, बेमुखां करे ख्वार, दे दरस मिटावे भुक्खां, सुफल कराए मात कुक्खां, जो जन चरन निमस्कारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, गुर संगत तेरा आपे चुक्की फिरदा भार, जगत जहान पार उतारदा। गुर संगत तेरा चुक्के भार। अट्ठे पहर दर द्वार। खलोता होया पहरेदार। बेमुख जीव कलिजुग रोता, ना कोई पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, सतिजुग साचे गुरसिक्खां रिहा कर्म विचार। ज्ञान गुरू के हत्थ है। करे ध्यान सर्ब समरथ है। वड दाता मेहरवान महिंमा अकत्थना अकत्थ है। मूर्ख मुग्ध गंवार करे चतुर सुजान जिस सिर धरे प्रभ हत्थ है। टुट्टे माण ताण, साचा शब्द करे परवान, प्रभ आप चढ़ाए साचे रथ है। मिले सच्चा इक्क निशान, सतिजुग लग्गा विच जहान, कलिजुग भज्जा बेईमान, प्रभ पाए अन्तिम नत्थ है। गुर पूरे सद कुरबान, जिस दित्ता पीण खाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल्ल कदे ना जाई है। मिटी धुंद गुबार जगत अन्धेर है। फिटी बुद्धि ना पाए सुधी, अन्त होए ख्वार है। उछली कुदी बेमुखां नाल करदी रही युद्धी, गुरसिक्खां दित्ती दर दुरकार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हत्थ फड़ाए, नाम डण्डा सच चढ़ाए गुरसिख रहणा खबरदार है। जगत अन्धेरा कूड़ तुफान है। बेमुख मूढ़ होया सर्ब जहान है। गुरमुख विरले मिले चरन धूढ़, करे सच्चा इशनान है। चढ़ाए रंग गूढ़, हरि साचा वाली दो जहान है। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, ना सके कोई वखान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां करे आप पछाण है। आप पछाणे कर्म विचारया। दित्ता निमाणयां माण जन्म संवारया। सोहँ शब्द साचा रसन वखान, आत्म भरया गुरसिख भण्डारया। धरे जोत हरि भगवान, मिटाए अन्ध अन्धेर होए फेर उज्जयारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक कलि जामा धारया। पुरी घनक हरि पूरी देवे मति। सति सन्तोख तेरी झोली पाए, सोहँ बीज बिजाए तेरी आत्म सति। शब्द डोली इक्क बणाए, सतिजुग साचे लए उठाए, गुरमुखां दुआरे दए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम आए, गुरमुख साचे लए उठाए, सच वस्त विच रक्ख। कूड़ी क्रिया कूड़ी नार है। ना मिल्या हरि सच्चा भतार है। कूड़ी कूड़ा कीता कम्म, संग रखया काम क्रोध मोह लोभ हँकार है। अन्तिम थोथा होया चम्म, ना मिले कोई दम, ना कोई करे वणज वपार है। नेत्र रोवे छम्म

छम्म, मैं केहड़े कीते कम्म, मैं काहनूं पई जम्म, दित्ता हरि विसार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया ना कीती आप विचार है। भोग लगाया हरि बनवारी। किरपा करी, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण मोहण माधव कृष्न मुरारी। गुरसिक्खां आस पूरी करी, जो आए चल द्वारी। हउमे चिन्ता रोग सोग हरि दूर करी पावे आत्म सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घर इक्क वखाए जगे जोत अगम्म अपारी। लगाया भोग रसना चक्ख। सतिजुग तेरा हिस्सा, प्रभ आपणे अंदर रिहा रक्ख। मातलोक जन्म दवाया, कलिजुग लाउँदा झूठे भक्ख। सोहँ शब्द नाल ल्याया, गुरमुख विरला पाए गुर दर आए लक्खां विच्चों होए वक्ख। बेमुख सारे होए हलकाए, साचा जाम ना कोई प्याए, मदिरा मासी पी पी थक्के, अन्तिम गए अक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन सोहँ साचा शब्द ख़वाए, अमृत आत्म सीर वहाए, दूर दुराडे जो बैठे रहे तक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अन्तिम अन्त विच मात लए रक्ख। सरन गुरदेव होए परवान, चरन ध्यान कर। पूर कराए, सोहँ शब्द खवाए मेव, आत्म ब्रह्म ज्ञान कर। हरि जोत जगाए वड देवी देव, गुरसिख साचे चरन धूढ़ इशनान कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर, साचा हरि जो जन आए दर, साचा मेल हरि भगवान कर। दूर नेड़ा हरि ना जाणे। सर्ब जीआं हरि वेख वखाणे। आसण बैठा
४८५ ०३ ताड़ी लाए, निज घर निज दर वास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जन करे सुघड़ स्याणे, ४८५ ०३
एका करे गुर संगत चरन ध्यान। आप चुकाए जम की कान। सच नाम हरि झोली पाए, मिटावे आवण जाण। आत्म पड़दे लाहुंदा जाए, गुणवन्त गुण निधान। गुर मति दे गुरसिख समझाउँदा जाए, मदिरा मास ना कोई खाए, साची दरगाह मिलदा माण। अमृत आत्म प्याउँदा जाए, जुगां जुगां दे विछड़े गुर संगत नाल मिलाउँदा जाए। गुरमुख सोए सन्त जन बाहों पकड़ उठाए गले लगाउँदा जाए। देवे साचा चरन ध्यान, बाहों फड़ के राहे पाउँदा जाए। जल थल पहाड़ जंगल जूह उजाड़ फड़ उंगली पार कराउँदा जाए। चौगिर्द रक्खे शब्द वाड़, शब्द धाड़ परे हटाउँदा जाए। आप लगाया सच अखाड़, गुर संगत अंक सहेलड़ीआं आपणीआं आप बणाउँदा जाए। हरि वसे इक्क इकल्ला अकेलड़ीआ, आत्म सेजा आसण लाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा तेरा घर चाईं चाईं गाउँदा जाए। चाईं चाईं गाउँदे जाण। मिल के आए साचे भगवान। जिस ने दित्ता नाम निधान। सोहँ प्याया साचा जाम। जूठ झूठ मिटे सर्ब निशान। पूरन होया काम, प्रगट होया वाली दो जहान। आप सुहाए, गुरसिख तेरी आत्म साचा धाम। अट्ठे पहर जोत सरूपी डगमगाया, एका शब्द सुणाए कान। अनहद धुन शब्द उपजाणा, नाम दात देवे वड्डी खान। एथे ओथे दोए जहानी बहि के खाण।

४८६
०३

साचा देवे नाम शब्द बबाण। अन्तिम अन्त गुरमुख साचे सन्त विच उहदे बहि के जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत मेल मिलाए, गुरसिख गुर इक्क जोत बण जाए, मिले जोत हरि भगवान। इक्क दुआरा सच्चा राह। दूजा दुआरा जम का फाह। इक्क दुआरा मिले सच्चा थां। इक्क दुआरा वात कोई पुच्छे ना। इक्क दुआरा अमृत मिले साचा सीर, जिउँ दुध्ध प्याए मां। इक्क दुआरा सार कोई ना पाए, सच्चे घर फिरदे कलिजुग जीव झूठे कां। इक्क दुआरा अट्ठे पहर रहन्दी ठंडी छाँ। इक्क दुआरा अट्ठे पहर रिहा अग्न तपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बेमुख दोवें चलाए बहाए आपो आपणे थां। गुरमुख आयण गुर दरबार। बेमुख दूर तक्कण खड़े बाहर। गुरमुख आए करे चरन निमस्कार। बेमुख वेखण हस्सण प्रभ बणाए गुआर। गुरमुख आए प्रभ देवे शब्द अधार। बेमुख जूठे झूठे दर देवे दुरकार। गुरमुख आयण प्रभ भरे शब्द भण्डार। कलिजुग जीव चारे पल्लू खाली गए झाड़। गुरमुख आए प्रभ शब्द कराए साची वाड़। बेमुख जीव कच्चे बेर, प्रभ अबिनाशी देवे झाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बेमुख दोवें आपणे आपणे घर दोहां देवे वाड़। सच तख्त सुल्तान हरि बराज्जया। कलिजुग तेरा जूठा झूठा वाजा वाज्जया। खेल करे आप करतार, जिस तेरा साजन साज्जया। शब्द देवे कर्म विचार, अतुल अडुल गरीब निवाज्जया। लेख लिखे सच्ची सरकार, जोत धारे विच देस माज्झया। मारे शब्द डाहढी मार, बेमुख तेरा किसे ना पर्दा काज्जया। गुरमुखां वेले अन्त रक्खे लाज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोक मृत्यु आया भाज्जया। मिरतू लोक मिरतक लोथा। कलिजुग जीव झूठी काया भाण्डा थोथा। पंडत पढ़न ज्ञान, ज्ञानी कर ध्यान, जूठा झूठा बोलण बोल साचा राह किसे हत्थ ना आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच समाया, आप कराए काया मित्रक लोथा। जुगत जगत प्रभ हथ कर्म विचारदा। जुगत जगत शब्द रथ हरि निरँकार दा। जुगत जगत गुरमुखां देवे नाम वत्थ, वड किरपा हरि तारदा । जुगत जगत बेमुखां पावे नत्थ, भाण्डा भन्ने हँकार दा । जुगत जगत करे आप समरथ, आदि अन्त जुगा जुगन्त पूर्ब कर्म सर्ब विचारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारदा। जुगत जगत हरि जणाए। जुगत जगत हरि आप बणाए। जुगत जगत हरि लिखाए। लिख्या लेख जाए भुगत, ना कोए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो रिहा लिखाए। घनकपुर वासी तेरी बेपरवाहिया। चारों कुन्ट उठ उठ वेखण, करदा जाए सर्ब सफाईआ। गुरसिख लैणा वेख, पुत्तरां छड्डुणा माईआं। प्रभ जोत सरूपी धारे भेख, आप भुलाए जांदिआ राहीआं। ना कोई जाणे औल्या पीर शेख़, उची कूकण देण दुहाईआ। धुरदरगाही साचा माही माझे देस लाए मेख ना सके कोए हिलाईआ। साचा लेख सच लिखाए, बेमुखां पाए फाहिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, वड दाता बेपरवाहिया। सूरबीर सुल्तान हरि निरँकार, जोत सरूपी धारे भेख हरि भगवान। करे आपणी साची कार, सृष्ट सबाई होई निधान। ना पावे कोई सार, गुरमुख साचे होए नौजवान। प्रभ उत्तों देवे शब्द हुलारा, आप बिठाए विच बबान। देवे हरि सच्ची उडान। सच्चा नाम पीण खाण। तृष्ना भुक्ख सर्ब मिटान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे साचा हरि, वाली दो जहान। वाली दो जहान सर्ब विचारदा। वक्त सुहाया आण, कलिजुग जूठे झूठे बेईमान दा। शब्द लगाया बाण तोड़े सर्ब माण, बेड़ा डोबे बेमुखां वक्त चुकाए पीण खाण दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, सृष्ट सबाई पुण छाण दा। धारे भेख हरि दातार। साची करे आपे कार। एका शब्द रक्खे दो धार। सृष्ट सबाई आप करे आर पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई करे रुशनाई विच सर्ब संसार। सर्ब संसार हरि दातार आप भुलाया। वेखे विगसे करे विचार, जोत सरूपी खेल रचाया। ना फड़े हत्थ कटार, सृष्ट सबाई मारे डाहढी मार, शब्द खण्डा एका हत्थ उठाया। पाउँदा जाए सभ दीआं वंडां विच नवखण्डां, पहली माघी पहला हिस्सा अड्ड कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां लाड लडाया। पहली माघी वंड करा के। साचा हुक्म धुर दरगाही आपणा आप सुणा के। गल विच पाउँदा जाए फाही, शब्द सरूपी साचा शब्द लिखा के। गुरसिक्खां पकड़े बाहीं, घर आए चाईं चाईं, जोत सरूपी जामा पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आपणा आप लिखाए पंचम जेठ साची जोत जगा के। पंचम जेठ सच विहारा। करे आपणा आप करतारा। जगे जोत अगम्म अपारा। साधां सन्तां पावे सारा। खिच ल्याए चरन दुआरा। एका नाम जोत लाए बत्ती, गुरसिख तैनूं वा ना लग्गे तत्ती, साचा हरि दर बुलाए देवे साची मत्ती, करे खेल अपर अपारा। आप बन्ह्राए चरन नती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दिसाए, दूई द्वैती पर्दा लाहे, आत्म खोल्ह वखाए इक्क दुआरा। हरि हरि हरि वेख विचारदा। किरपा कर कर गुरमुख साचे तारदा। खिच ल्याए दर, आत्म देवे रंग सच प्यार दा। हरि घर हरि समावंदा। हरि घर हरि दर आपणा आप खुल्हावंदा। हरि घर वसे नर, जोती जोत जगावंदा। हरि घर चुक्के डर, भाण्डा भओ भन्नावंदा। हरि घर अमृत सर सच तीर्थ इशनान करावंदा। हरि घर गुरमुख साचे लैणा वर, लक्ख चुरासी गेड़ चुकावंदा। हरि घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म आप बणावंदा। हरि घर आत्म वास। हरि घर गुरसिख साचे तेरे घट घट वास। हरि घर गुरसिख साचे वेख प्रभ अबिनशी जोत सरूप अट्ठे पहर पाउँदा रास। हरि घर साचा दर करे बन्द खुलास। हरि घर ना आवे डर, पंजां चोरां करे नास। हरि घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर सद रक्खे मिलण दी आस।

हरि घर आत्म ताकी। कलिजुग अन्तिम गुरसिख साचे निहकलंक चुकाए तेरी बाकी। पंज चोर कढ्ढे बाहर, कोई ना रहे आकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि घर जोत सरूपी जामा पाया, कोई ना जाणे बन्दा ख़ाकी। हरि घर सच्चा अस्थान। हरि घर गुरमुख साचे जाण। हरि घर हरि जोत सरूपी पवण मसाण। हरि घर प्रभ एका एक रखाए शब्द बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए दर श्री भगवान। आत्म दर डूंघी कंदर। गुरसिख तेरी काया अंदर बणया साचा मन्दिर। चुप चुपीता अंदर वड़या बैठा मारे जंदर। बेमुख जीव चारों कुन्ट भौंदे बन्दर। साचा राह कितों हत्थ ना आए मूंड मुंडाए उच्चे टिल्ले बैठे गोरख ते मच्छन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे साचा हरि, गुरमुख तेरा खोल्हे आत्म दर, बैठा रहे तेरी काया साचे मन्दिर। हरि घर गुरसिख तेरा तन। प्रभ बन्ह ल्याए आपणे चरन कढ्ढे झूठा जन। शब्द सरूपी बाण लगाए, भाण्डा भरम देवे भन्न। एका आपणी आण रखाए, नौ खण्ड पृथ्मी कोई ना सके तैनूं डन्न। उप्पर आपणा हत्थ टिकाए, चौदां लोक थल्ले रक्खे बन्ह। ब्रह्मा विष्न महेष खड़े गुरसिख तैनूं वेख कहण धन्न धन्न। प्रभ अबिनाशी तेरी बाहों फड़े, सचखण्ड दर दुआरे अग्गे खड़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा डण्डा हत्थ उठाया, बेमुखां मारे आत्म अन्ह। शब्द डण्डा हत्थ हथौड़ा। बेमुख कोई ना चढ़े साचा पौड़ा। गुरमुख साचा आवे चरन दौड़ा। पहली माघ विष्नूं भगवान, तंग कसाया , पंचम जेठ प्रभ अबिनाशी चढ़े चिट्टे अस्व साचे घोड़ा। साचे अस्व हो अस्वार। तिन्नां लोकां पावे सार। कदे अंदर कदे बाहर। चारों तरफ एका धार। जोत सरूपी हरि निरँकार। मारी जावे डाहढी मार। सुटदा जाए मूंह दे भार। नौ खण्ड पृथ्मी होए ख्वार। कलिजुग जीव भुल्ले हरि निरँकार। मदिरा मासी आत्म डुल्ले रुल्ले भुल्ले, लग्गी अग्ग इक्क काया कुल्ले, बलदा रहे इक्क अन्गयार। किसे अग्ग ना दिसे चुल्हे, प्रभ शब्द डण्डा हत्थ फड़या सिर तों लाहुंदा फिरदा वड वड बद्धे कुले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, केहड़ा जाणे तेरी धार हरि विहार। मुल्लां मुलाणे लैणे ढाह। शब्द सरूपी पाए फाह। पंचम जेठ शब्द ल्याए पहली हाढ़ लैणे उठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख फड़ाए आपणी बांह। आपणी बांह आप फड़ाए। कलिजुग वेला नेड़े आए। दूसर कोई नाही थांए। शब्द सरूपी साचा शब्द लिखाए। अठसठ तीर्थ ना होए कोई सहाए। पहला चरन आप उठाया, मदीने मक्के वेखो किवें ढाहे। धर्म राए अद्ध विच बैठा राह साचा तक्के, केहड़े राह हरि जी जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह साचा बाणा आपणे तन पहनाए। गुरसिक्खां संग रलाए। नौ खण्ड देवे वंड। सत्त दीप सच विचार आप कराए बेमुखां आत्म रंड। होए दुहागण नार, जोत धर हरि भेव छुपाया, इक्क रखाई बेमुखां वल कंड। रंग रूप शाह भूप किसे

४८८
०३

दिसे ना आया, गुरसिक्खां हिस्से आई साची वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए गुरमुख साचे सन्त जनो तुहाड्डी दुक्खां वाली सिर आपणे पंड। मातलोक ना दुःख विचारो। लक्ख चुरासी विच्चों देह मनुक्ख वड संसारो। बेमुखां आत्म काया रहे दुःख, ना मिले हरि भतारो। गुरसिख साचे तेरी आत्म साचा सुक्ख, जगाए जोत हरि किरपा कर अगम्म अपारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरे आत्म दर द्वार खलोता साचे घर हरि विचारो। साचा हरि गुर संगत सेवादार। मातलोक अन्तिम कलि आया जामा धार। पंचम जेठ कर प्रकाश, करे सच विहार। जन भगतां बण जाए आपे दास, देवे नाम सच्चा अधार। अट्ठे पहर हरि हिरदे वसे, गुरसिख ना होए तेरी काया विच्चों कदे बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ नेड़े आई होण वाला चिट्टे अस्व दा अस्वार। चिट्टा अस्व हरि मंगवाया। दक्खण दिशा आपणे दर बहाया। गुरसिक्खां उतारे तृखा भुक्खां, वेला अन्तिम नेड़े आया। साचा लेख प्रभ साचे लिखा, जुगां जुगां दे विछड़े कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे साचे सीस दोहीं हत्थीं रिहा छत्र झुलाया। दोहीं हत्थीं हरि छत्र झुलावे। गुरसिक्खां रिहा बणत बणाए, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तज गुरमुख साचे सच घर हरि लै जाए। आओ दर पंचम जेठ नेड़े आई, साचा रंग हरि वखाए। गुरमुखां लए पर्दे कज्ज, बेमुखां सिर छार दोहीं हत्थीं पाए। गुरसिक्खां प्याए अमृत गुरमुख पीण रज्ज, बेमुख जूठे झूठे साचे दर दुरकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राणा साचा बाणा आपणे तन छुहाए, गुर संगत नाल रलाए। कलिजुग मिटदा जाए निशान। सतिजुग हुंदा जाए जवान। कलिजुग चुक्कदी जाए कान। सतिजुग वधदी जाए शान। कलिजुग मुकदा जाए माण तान। सतिजुग बणदा जाए चतुर सुजान। कलिजुग रुलदा जाए विच जहान। सतिजुग फलदा फुलदा आए विच शब्द बबाण। कलिजुग झूठे तोल तुलदा, ना पूरी होई खाण। सतिजुग सच भण्डारा खुल्लदा, निहकलंक धरे जोत बली बलवान। कलिजुग खाधा पीता छुट्टदा, वज्जे शब्द सच्चा बाण। सतिजुग साचे साची दिशा हरि साचे दिसदा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। कलिजुग भया अन्ध अन्धयारा। सतिजुग लग्गा पहली माघी विच मात करे उज्जयारा। कलिजुग जूठा झूठा ढाहया दो हत्थीं, आप बणया झूठा महल्ल मुनारा। सतिजुग साचा मात धराया, खोल्ह्या सच्चा इक्क दुआरा। कलिजुग झूठा बाहों पकड़ प्रभ अबिनाशी विच्चों मात किया बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे विच मात जन्म दुआरा। कलिजुग तेरा भरया पूर। सतिजुग उत्तों रिहा घूर। कलिजुग घर साचे विच्चों हो जा दूर। सतिजुग साचे मिली साची दात, सोहँ शब्द डण्डा करे चूरो चूर। कलिजुग बेमुख जीवां आत्म कीनी रंड, लक्ख चुरासी भरया इक्क गरूर। सतिजुग साचा आया धराया विच

४८६
०३

नौ खण्ड, कर किरपा हरि दाते वड सूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जूठे झूठे माया लूठे, बेमुख जीव प्रभ साचे तों रूठे, बेड़ा डोबे पहले पूर। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारी। सतिजुग आया विच मात वटाए चार यारी। कलिजुग अन्तिम अन्त होए मात ख्वारी। सतिजुग साचा इक्क वस्त साची नाल लै आया शब्द कटारी। कलिजुग वेला वक्त हरि चुकाया ना सके कोए खल्हारी। सतिजुग साचे हरि मात जन्म दवाया, किरपा कर वडे बलकारी। कलिजुग सतिजुग दोहां करे नबेड़ा। साचा कर्म हरि कमाए इक्क वसाए गुरसिख आत्म लगा खेड़ा। चार कुन्ट सृष्ट सबाई आप हिलाए, कर कर हेरा फेरा। कलिजुग वेला अन्तिम नेड़े आए, ना लग्गे देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ दया कमाए, गुरमुखां आत्म अन्धेर मिटाए इक्क कराए संञ सवेरा। संञ सवेरा सुहंञणी रात। गुरसिख साचे सन्त जन बणन इक्क सच्ची बरात। जोत सरूपी जामा धर, सोहँ शब्द चार चुफेरे तनणी इक्क कनात। साचा देणा पहला वर, विच मात बणाउणी गुर संगत सच्ची इक्क जमात। आपणा हत्थ सिर रखाउणा, लेखे लाउणा मानस जन्म जो पाया विच लक्ख चुरासी मात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुगात ल्याए गुर संगत आप वरताए सोहँ शब्द साची दात। सोहँ शब्द वड भण्डारा। देवणहार हरि निरँकारा। कलिजुग अन्तिम करे खेल अपर अपारा। सतिजुग तेरी बन्न्हे साची धारा। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि झोली पाए जो मंगण आयण सच्चा इक्क दुआरा। एका रंगण नाम सच चढ़ाए, ना उतरे ना फेर कोई चढ़ाए दूजी वारा। सोहँ शब्द कंगण तन पहनाए, ना घड़े कोई सुन्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्को जाणो सच भतारा। सच्चा नाम दए वरता। पंचम जेठ चिट्टे अस्व उत्ते आसण ला। साचा कर्म हरि कराउणा गुरसिख मस्तक तिलक लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाउणा, साचे मार्ग लाउणा साचे बाणे लउ बणा। पहलों बाणा इक्क बणाउणा। साढे तिन्न हत्थ नाप रखाउणा। सोलां तणीआं नाल गुंदाउणा। प्रभ अबिनाशी गल विच पाउणा। मिटावे भेव हरि साचा, तिन्नां लोकां आप खुल्हाउणा। चोदां लोक जो हट्ट खुल्हाए गुरसिक्खां विच बहाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां दिवस रैण अट्ठे पहर उडाए जोत सरूपी शब्द पवणा। साचा शब्द साचा बाणा। गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ अबिनाशी तन पहनाणा। साचा देवे नाम धन्ना, बणाए सुघड़ स्याणा। आत्म कढ्ढे सभ जनां, देवे शब्द ज्ञाना। भाण्डा भरम भउ सभ भन्ना, करे प्रकाश कोटन भाना। सोहँ शब्द राग सुणाए सच कन्नां, तोड़े आत्म सर्ब अभिमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि जाणी जाना। जाणी जाण हरि निरँकार। अंदर बाहर दूर दुराडा रिहा कर्म विचार। काया तन मास हाडी हाडे सर्ब घटां हरि वसे निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आपणा आप दस्से,

४६० ०३

४६१
०३

गुरमुख करना सच विहार। सच विहार गुर संगत करे। प्रभ अबिनाशी जोत माझे देस धरे। पंचम जेठ चारे वेस जोत सरूपी हरि दस्मेश नर नरेश सिँघआसण बैठ करे। जगे जोत आदि अन्त जुगा जुगन्तरे। लोकमात हमेश वसे इक्क साचे घरे। प्रभ अबिनाशी साचा सच अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा साचा देस खुल्ले रहण सद दरे। जो जन प्रभ चरन पाए गल पलड़ा, प्रभ अबिनाशी किरपा कर पंचम जेठ गुरसिख साची नारी आपे आण वरे। आत्म दर दर साचा खलड़ा, गुरसिख इक्क वार पुकार आ जा कन्त घरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेजा आसण लाए गुरसिख तेरी आत्म सेजा नर हरि नर हरे। आत्म सेजा करे वसेरा। आप चुकाए हेरा फेरा मेरा तेरा। गुरसिख आपे तारे कर के आपणी मेहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग अन्तिम जोत प्रगटाए, तिन्न जुग ना मारे फेरा। तिन्न जुग जाण बीत। त्रैलोकी करे भय भीत । निहकलंक जामा धार, फेर चलाए उलटी रीत । चारों कुन्ट ढाहुंदा फिरे गुरदुआरे मन्दिर नाल मसीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनो लक्ख चुरासी जाणी जीत। लक्ख चुरासी लैणी जित्त। निहकलंक जग वेख एका करना साचा हित्त। मातलोक हरि जोत प्रगटाए, जन भगतां विच मात कुरलाए, आउँदा रहे नित नवित्त। जोत सरूपी जामा धारे, कलिजुग जीव अन्ध काणे ना कोई जाणे वार थित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त गए बीत जुग कित। केते जुग गए बीत। ना कोई जाणे प्रभ साचा केहड़ी चलाए आपणी रीत। वेद पुरान अंजील कुरान खाणी बाणी ब्रह्म ज्ञानी ना कोई जाणे ना कोई परखे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम ल्याया, गुर संगत साचा संग बणाया, एका नाम रंग चढ़ाया, शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व तंग कसाया, सोहँ शब्द सुणाए साचा गीत। तंग कस करे त्यारी। जोत सरूपी हरि निरँकारी। तिन्न लोक नेत्र वेखे गुरसिख साचे सन्त जनो आए चल तुहाड्डे आत्म दर द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राणा साचा बाणा पहन कर सच्ची अस्वारी। होए सच अस्वार, हरि निरँकार। शब्द घोड़ा ल्या शिंगार। दर साचे फड़ कीना बाहर। सिध्धा राह इक्क वखाया, सन्त मनी सिँघ तेरा इक्क द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल कराए आपणी अपर अपार। साचा हरि हुक्म सुणांयदा। गुरमुख साचे सन्त जनां फड़ बाहों राहे पांयदा। आप कढाए मन तन जनां, एका धार बन्न्हांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली सेवा सन्त मनी सिँघ आपे आप लगांयदा। सन्त मनी सिँघ हुक्म सुणाया। हरि जी साचे साचा मार्ग जगत चलाया। पंचम जेठ तिलक लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राग सोहँ शब्द नाथ त्रैलोकी रसना गाया। सन्त मनी सिँघ एका बाणा लए बणा। चिट्टा रंग साध संगत साचा संग, प्रभ गल आपणे लए पहना। प्रभ अबिनाशी चाढ़े रंग कट्टे

भुक्ख नंग, साचा देवे रंग नाम चढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे तन लगाए, चिट्टे बाणे तेरी देवे लिख्त लिखा। दूजा बाणा होर बणाउणा। लाल रंग इक्क रंगाउणा। दूजा ना कोई संग रलाउणा। प्रभ अबिनाशी गल विच पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सिँघ प्रीतम साध संगत जेठूवाल रल मिल बणाउणा। तीजा बाणा करना त्यार। सूहा रंग लैणा विचार। गुरमुख साचे सन्त जनां दुरमति मैल प्रभ सचे दए उतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि एका देवे शब्द नाम अधार। चौथा करना काला वेस। खेल वखाउणा माझे देस। नाल रखणे खुल्लड़े केस। सतिजुग तेरा वटाउणा भेस। कलिजुग वटाउणा साचा नर नरेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका गोत साची धरे हरि हमेश। काला बाणा आए काल। सृष्ट सबाई वज्जे ताल। ना कोई सके सुरत संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट माया रूपी सति सरूपी, वजाउंदा जाए ताल। काला बाणा लैणा रंग। सिँघ गुरमुख पाल सिँघ मिल के सारे संग। आपणी हत्थीं हरि जी साचा खिच खिच बन्ने तंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत गुर भाई देवे वड्याई साची मंगी इक्को मंग। चारे बाणे दर दरबार। साचा करे हरि विहार। ना कोई जाणे जीव गंवार। गुरमुखां साचे लेख लिखाए, हरि हरि नर निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण ताण बिरध बाल जवान एका वार कराए एका वार दए वखाल। गुर संगत तेरी सुरत संभाल। अकाल मूर्त देवे नाम ना होए कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती देवे बाल। चारे वेस करे रघुराता। गुरमुखां बन्ने चरन साचा नाता। एका एक मिले काया कोट अंदर किल्ले देवे नाम डूंघी कंदर साची इक्क सुगाता। आप सुहाए गुरसिख साचे तेरा साचा तन मन्दिर, पंचम शब्द तेरी आत्म बैठे रहण बण बराता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा काहन हिरदे वसे जोत सरूपी इक्क इकांता। इक्क इकांता वसे हरि। चारों तरफ करे बन्द दर। बेमुखां घर आवे साचा डर। गुरसिक्खां देवे दरस मिटाए हरस आपणी किरपा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाए देवे साचा वर। देवे वर हरि वरयाम। तारे आए दर घर जिउँ अर्जन घनईआ शाम। आत्म नुहाए ठांडे साचे सर, जिउँ त्रेता भीलनी राम। भण्डारे साचे देवे भर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। बण हँस जगत समझांयदा। हँसा बंसा हरि अवतार सृष्ट सबाई हँकार विकार सर्ब मिटांयदा। कर अवल्लड़ा भेस खेल वरतांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम किया भेख, ना कोई रूप ना कोई रेख, गुरसिख साचे विच समांयदा। तृष्ना आस सर्ब रखाईआ। दर दर आयण कर कर धाईआ। घर साचे बणत बणाईआ। गुरमुख गुरसिख नाउँ रखाईआ। प्रभ दर आए साचे मंगत, हरि आत्म झोली आप भराईआ। आपे कट्टे भुक्ख नंगत, दर

साचे गुरमुख गोली आप बणाईआ। आपे अंग लगाए गुरसिख साचे जिउँ नानक अंगद, शब्द होली इक्क खिडाईआ। मानस जन्म ना होवे भंगत, गुरसिख साची सखी नाम गुलाल आप चढ़ाए हरि जिउँ राधा कृष्न ख़ुशी मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दे विछड़े गुर संगत मेल मिलाईआ। बणाए भैणां भाईआ। गुरसिख गोली हरि बणाए। साची ल्याए शब्द डोली, पंचम जेठ विच बहाए। माझे देस चारों कुन्ट वज्जे बोली, गुरसिख तेरे मस्तक लग्गा कलंक प्रभ साचा सारा लाहे। सृष्ट सबाई भाली भोली, ना भेव कोई पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चले हरि आपणी रजाए। आत्म होली रंग मजीठ। साचा हरि जी लैणा डीठ। सृष्ट सबाई रिहा पीठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नांउँ झोली पाए, बेमुख कोई दर साचे रहण ना पाए कौड़ा रीठ। कौड़ा रीठा कूड़ कुड़यारा। मदिरा मासी पंचम जेठ ना बैठे दर दुआरा। कलिजुग अन्तिम जो करन हासी, प्रभ सुट्टे मूंह दे भारा। जोत प्रकाशी घनकपुर वासी, फड़े शब्द कटारा। जन भगतां होया दासन दासी, हिरदे वस्सया हरि निरँकारा। जूठे झूठे पंडत लभ्भदे कांशी, प्रगट होया माझे देस करे सच विहारा। लक्ख चुरासी आपणी हत्थीं पाउँदा जाए फाँसी, घल्ले धर्म राए दे दर द्वार। गुरसिक्खां लाहे जूठी झूठी सर्ब उदासी, देवे शब्द नाम अधारा। रसना गायण स्वास स्वासी, प्रगट होए दरस दिखाए खोले दस्म दुआरा। गुर पूरे सद बलि बलि जासी, गुरसिख साचा पार उतारा। हरि सच्चा शाहो भूप शाहो शाबाशी, जोत सरूपी इक्क निरँकारा। एका जोत जगाए मात पताल विच अकाशी, आपे वसे सभ तों बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म घर साचा हरि खड़ रहे दर दुआरा। साची होली इक्क खलाए। अमृत जाम इक्क पिलाए। कलिजुग दाम ना कोई लगाए। हरया सुक्का चाम आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म घर साचे हरि खड़ा रहे दर दुआरा, माझे देस जोत जगाई वज्जी वधाई पूरन काम आपणा आप कराए। साचा हरि जगत मलाह। दूजे नाल ना करे सलाह। तीजे कोलों लए पल्ला छुडा। चौथे घर गुरसिख तेरा देवे दास करा। पंजां चोरां यारां ठग्गां तेरे दर ना देवे कोई थां। छेवां छेवें घर हरि देवे जोत जगा। सत्तां सति सरूप निज घर वासी निज आत्म हरि साचा दए वखा। अठवां उठ उठ वेख हरि जी धरया वेस, वेला जाए सर्ब रहण पछता। नावें निज घर नर हरि आए, दूर दुराडा लम्मा पन्ध छिन्न भंगर आप मुकाए। बेमुख जीव चारों कुन्ट भौंदे बन्दर, हरि जी हिरदे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव देवी देव कोई ना पाए।

❈ ५ चेत २०११ बिक्रमी नसीब सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ❈

शब्द गुर जगत उपदेश। देवे हरि किरपा कर, धर अवल्लड़ा भेस। आत्म नुहाए साचे सर, आप रखाए खुल्लड़े केस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस जोत जगाए बेमुख जीव लभ्भदे फिरन श्री दस्मेश। गुर शब्द पवण अस्वार। पवण मसाणी जीआं जन्तां अधार। साचा नाम सोहँ शब्द सतिजुग तेरी सच्ची बाणी, उपजाए आप निरँकार। चहुं जुगां बणाए साची राणी, बन्ने साची धार। दिनो दिन हुंदी जाए जवानी, कलिजुग चढ़दा जाए बुखार। बेमुख जीव बेमुहाणे झूठी काया अन्धी काणी, ना जानण हरि सच्चा भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्त जनां आपे मेल मिलाए कर कर आत्म डूंघी सच्ची कार। गुर शब्द गुरसिख विचार। प्रभ अबिनाशी देवे आए दर घर किरपा कर, ना करे कोई अधार। अन्तिम वेला आया कलिजुग, ना पाई किसे कोई सार। गुरमुखां हरि जी आया हिस्से, सृष्ट सबाई होई अन्ध अंध्यार। आत्म लाहे ना कोई झूठी विसे, अमृत देवे ना कोई गुरसिख साचे साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाई, दयो वधाई, तिन्नां लोकां गुरमुखां पावे सार। गुर शब्द गुर ज्ञान। गुर शब्द जन भगतां देवे दरगाह साची साचा माण। एका एक आप हरि राए, दूजा कोई दिसे नाहे, ओथे जाए एका जोत जगाए सर्ब भगवान । श्री भगवान हरि गुणवन्त। साचा शब्द कन्न सुणाए, गुरमुख साचे सन्त। एथे ओथे बणत बणाए, मेल मिलावा साचे कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख साचे लाल अनमुल्लड़े लेवे चुण, कलिजुग बणाए साची बणत। लक्ख चुरासी वेख विचारी। चारों तरफ दिसण ठग्ग चोर यारी। लक्खां विच्चों गुरमुख विरला कोई हत्थ आए, वेले अन्त होए ख्वारी। आत्म भाण्डे होए शब्द सक्खणे, अमृत दिसे ना किसे धारी। फड़ फड़ बाहों हरि जी गुरमुखां देवे शब्द उडारी। वेले अन्त हरि जी साचा लए रक्ख, आप बहाए चरन द्वारी। कलिजुग चारों तरफ सृष्ट सबाई लाउँदे भक्ख, निहकलंक लाड़ी मौत मगर लगाई, चारों तरफ दए बहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप खपाए वेख चारे तरफ चार यारी। गुर संगत गुर एक थाउँ, माण दवाए थाएँ थाउँ। साची सेवा लेखे लाए, प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो। साचे मार्ग गुरमुखां लाए, देवे साचा नाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए, कलिजुग अन्तिम पार कराए फड़ फड़ गुरमुख साचे बांहो। गुर संगत मन वज्जी वधाई। मिल्या हरि जी जोत सरूपी चाईं चाईं। फूलणहार तन शिंगार, आत्म तन पहनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कन्त कन्तूहल देवे साचा नाउँ, आत्म साची जोत जगाई। आत्म सेजा तन शिंगार। जगाए जोत अगम्म अपार। दुरमति मैल धोत करे रुशनाई, आपे आप करनहार। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मिलाए साचा गुर, दरगाह साची दर बहाए करतार। गुर दर शब्द सच प्रकाशया। आवे दर मिले हरि, दुखड़ा जाए नास्सया। सुख वखाए साचे घर, प्रभ अबिनाशी पुरख अबिनाशया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, रक्खे घट घट वास्सया। घट घट वसे हरि निरँकारी। वेखे विगसे जीआं जन्तां साधां सन्तां पावे सारी। आत्म सुख उपजावे मेल मिलावा साचे कन्ता सच देवे शब्द उडारी। साचा मेल हरि मिलाया, मानस जन्म लेखे लाया, गुरसिख साचे माण दवाया ना आए दूजी वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी तंग कसाया, पंचम जेठ करन वाला अस्वारी। पंचम जेठ साची करनी कार। सचखण्ड निवासी करे त्यारी, आपणा चरन कढ्ढे बाहर। चिट्टा अस्व पावे शोर। कलिजुग विच होया अन्ध घोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई गुरमुखां मारे पंजे चोर। गुरसिख तेरी आत्म जोत जगी, जगाए हरि निरँकार। ओअं गुरमुख आत्म वेख, जोत सरूपी हरि जोत जगाए तेरी आत्म काया सच समग्री वेख। अट्ठे पहर आपणा आप कर्म कमाए, लिखाए तेरे साचे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा लेख चुकाए दिस ना आए किसे औलीए पीर शेख़। सोहँ नाद सदा वज्जे वेद साम। रिग वेद राम हरि का नाम। युजर होया द्वापर पूरा काम। अथर्बण अल्ला आई हिस्से, अन्तिम कलिजुग पल्ले रहे कोई ना दाम। निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुखां प्याए एका एक सोहँ सच्चा जाम। आपणा आप हरि उपाया, जोत सरूपी किसे दिस ना आया, लभ्भदे फिरदे मन्दिर घनईआ शाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राग इक्क सुणाए, बुझाए आग, पूर कराए गुरसिक्खां काम। गुरमुख साचा राग गाउँदे। प्रभ अबिनाशी रिदे ध्याउँदे। छत्ती राग सर्ब शरमाउँदे। नारद मुन बुज्झी धुन मात सुरसती जो उपजाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि वेला होया पूरा मता सर्ब पकाउँदे। राग रागणी गुरसिख विचार। एका रक्ख गुर चरन प्यार। साची धुन टुट्टे मुन्न खुल्ले सुन्न, उपजे शब्द अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भेव ना पाए रिख मुन, राग रंग अमृत रस। प्रभ अबिनाशी गुरसिख तेरे होया वस। पंजे चोर हरामखोर तन काया विच्चों जाण नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि एका शब्द तीर चलाए सोहँ बाण रसना कस। राग रागनी मन सर्ब विचारदे। साची धार किसे हत्थ ना आई मानस जन्म लक्ख चुरासी सच्चो सच आपणा आपे वेखो खेल करतार दे। गुरमुख साचे साचा राग, कलिजुग वेला अन्तिम जाणा जाग, पूरन होए भाग, गुरचरन सरन निमस्कारदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग पाया, बाहों पकड़ पार उतार दे। शब्द राग वसे साचे घर। बेमुख फिरन दर दर। आत्म ना खुल्हाया किसे साचे घर। जोत सरूपी हरि डगमगाया, एका रूप एका वसे

घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा नाम इक्को इक्क रखाया, सतिजुग साचा नाम धराया, सृष्ट सबाई विच्चों वक्ख कराया, एका कम्म हरि निरँकार दा। दूजा नाहीं कोए थाउँ। कलिजुग जीव दर दर भौंदे जिउँ सुंञे घर काउँ। तीजा खोल्ले तीजा नैण, बेमुख वहाए वैहन्दे वहिण। चौथे चारे जुग वेख, प्रभ अबिनाशी धारे मात भेख। पंचम होए साचा मेल, जोत जगाए बिन बाती बिन तेल। दूई द्वैती पर्दा गुरसिक्खां आपे पाड़दा। गुर दर मन्दिर हरि का द्वार है। लहंदा एथे तृष्ना अग्न बुखार है। देवे सच्चा माण ताण ना करे कोई उधार है। नाम शब्द सच्ची खाटी कराए सच्चो सच्चा प्यार है। धुरदरगाही नाम निधान हरि साचा देवे, गुरसिख बाल निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप कटाए जम की कान है। घर मन्दिर हरि घर वेख। घर मन्दिर काया अंदर चित्र गुप्त लिखे साचा लेख। खुल्ला मन्दिर डूंघी कंदर, ना जाणे कोई शेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मेल मिलावा जिन्हां लिख्या धुरों लेख। मिल्या मेल मस्तक लाली। देवे साचा नाम रंग, करे लाल गुलाली। आपे वसे अंग संग, साचा दाता देवे सच्ची नाम दलाली। शब्द सरूपी हरि हरि रंग, ना दिसे कोई पासा खाली। कलिजुग माया झूठी काया वज्जे मृदंग, फल रहे ना किसे डाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणया रहे आप सच्चा पाली। घर मन्दिर शब्द घनघोरा। बाहर कढ्ढे साचा हरि फड़ के

४६६ ०३ पंजां चोरां। आप फड़ाए आपणा लड़, खिच्ची रक्खे विच अकाशी शब्द सरूपी डोरा। साचे अंदर गुरसिख साचा जाए वड़। ४६६ ०३

रहण ना देवे बेमुख जीवां, ना कोई दीसे किल्ला गढ़। ना कोई अटकाए, गुरसिख ना जाए राह विच अड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व होए अस्वार, पहलां मारे बेमुखां सिर विच पौड़। बेमुखां मारे सिर विच पौड़। अन्तिम कलिजुग होए चौड़। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि साचा घर आए दौड़। बेमुख वेद वखानण सार ना जानण, रसना कहण प्रगट होणा घर ब्रह्मण गौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम गुरमुखां आत्म तृखा बुझाई, मानस देही लग्गी औड़। वेद व्यास लेख लिखारा। कलिजुग अन्तिम जिस विचारा। साचा हरि दर घर दिया जोत अधारा। जोत सरूपी जोत हरि, आपे बणे जुगो जुग भगत जगत लिखारा। साचा लेख आप लिखाया। पुरान अठारां दे मति समझाया। अन्तिम अन्त कलिजुग निहकलंक सृष्ट सबाई होए तेरी सरनाया। कलिजुग जीव भुल्ले रुल्ले माया डुल्ले, भेव किसे ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत साचा दीपक जोती दए जगाया। गुरमुख गुरसिख जन भगत सोए लए जगा। आत्म साची रंगत बण के साचे मंगत दर घर साचे लए चढ़ा। दूजे दर ना होए मंगत, ना लभ्भे कोई दूजा थां। बेमुख कलिजुग जीव होए बैठे नंगत, सिर छाही लई पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम निशान, जिस दा

दाग कदे लथ्थे ना। शब्द वागी हरि देवे ला। जगत जंजाले तोड़े गलों कट्टी जांदा फाह। एका रंग मिले गुर दर साचे हट्टे, ना मिले किसे होर थां। दुरमति मैल सारी कट्टे, सदा रक्खे ठंडी छाँ। लाल गुलाल गुरसिख साचा रसना चट्टे, प्रभ देवे माण ताण जिउँ सीर पिलाए पुत्तां मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई पार कराए गुरसिक्खां फड़ के बांह। मन तन रत्ता रंग चलूल। प्रभ अबिनाशी देवे साची मत्ता, ना जाणा भूल। सोहँ बीज तन साचे वता, हरि बिजाए कन्त कन्तूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वसे धाम अस्थूल। शब्द डोर हत्थ रखाईआ। गुरसिक्खां आत्म तन नाल बंधाईआ। खिच्ची आए वारो वार, प्रभ अबिनाशी साची रीत आपणी आप चलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां गल पाउँदा जाए आपणी हत्थीं फाहिया। गुरमुख गुरसिख हरि आप उपजावे। आप बहावे फड़ फड़ चरन दुआरे। कलिजुग अन्तिम नेड़े आए साचा नाम हरि सुणाए कन्न, एका मारे जोत सरूपी शब्द फुंकारे। गुरसिख हरि घर घर वखाणयां। कलिजुग अन्ध अन्धेर ना संञ ना सवेर, हरि साचे आप पछाणयां। चुकाए मेर तेर, ना होए जन्म फेर, देवे माण निमाण निमाणयां। चरन ल्याए घेर घेर, पंचम जेठ सिँघ शेर शेर दलेर जोत सरूपी पहरे बाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची जोत जगाए, सोए उठाए राजे राणयां। साची जोत लई जगा। राजे राणे लए उठा।
४६७ ०३ राणे संगरूर दरस दिखाए, तरस कमाए स्वच्छ सरूपी दरस दिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों फड़ लाए गले, ४६७ ०३
रक्खे ठंडी छाँ। राणा संगरूर उठ उठ प्या जाग। साचा शब्द हरि कन्न सुणाए सोहँ राग। आत्म तृष्ना अग्न बुझाए, तन लग्गी रही जो आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा साबण लाए, काया धोए झूठे दाग। राणे संगरूर सुरत संभाल। कलिजुग अन्तिम अन्त ना बण कंगाल। सन्त मनी सिँघ साचा लेख लिखाया, तेरे मस्तक जोती देवे बाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस भाग लगाया, जोत जगाई वज्जी वधाई, आओ सरनाई मार इक्को लम्मी छाल। आया हरि इक्क इकल्लड़ा। जोत सरूपी जामा पाए, दस्से राह इक्क अवल्लड़ा। गुरमुखां उत्ते दया कमाए, आप फड़ाए आपणा पलड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर गुरमुख विरले विच मात दे मलड़ा। कलिजुग आए हरि द्वार। दोए जोड़ करे निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। अन्तिम वेला बेड़ा कर पार। मातलोक विच्चों कढ्ढी बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाई फड़ बाहों देवे तार। कलिजुग रोवे रो रो पुकारे। दर घर साचे धाहां मारे। फड़ के बाहों कढ्या बाहरे। कलिजुग जूठा झूठा भरया पूर, ना कोई दिसे वंञ मुहाणे। ना जानण हरि बैठे दूर, भुलाए वड वड सुघड़ स्याणे। फड़ फड़ कीने चूरो चूर, बणाए कलि निधाने। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तुटा जत्त अन्तिम मिले साढे तिन्न हत्थ सीआं वड्डे वड राजे राणे। कलिजुग साची करे विचार। वेले अन्तिम आई हार। गया हरि दुआरे विच अन्ध अंध्यार। मैं हां छोटा बाला, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मैं हां काल काल लक्ख चुरासी जिस पाई उलटे राह, बणया रिहा पाली पाला, धर्म राए दे घलां इक्क द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाई, गुरसिक्खां पाए सार। कलिजुग काल रूप कुलवन्त, दर घर साचे आया होए निमाणा मैं भुलाया जीव जन्त। ना कोई छड्डया सुघड़ स्याणा, ना मेल मिलाया किसे साचे कन्त। फड़ बाहों दए हिलाया, राजे राणयां कलिजुग माया पाई बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाया, शब्द लिखाए सिँघ मनी सिँघ साचे सन्त। कलिजुग अन्तिम हो त्यार। आवे दर सच्चे दरबार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर दे दे वर, मातलोक आया जामा धार। गुरमुखां नुहा साचे सर, अमृत भण्डारे दे भर, बाहों फड़ देणा तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण ताण चरन ध्यान भगत भगवान दे मैं करां पुकार। सतिजुग देवे हरि वधाई। मातलोक जाणा चाईं चाईं। गुरसिक्खां मिलणा हरि मिलाउणा फड़ के बाहीं। बेमुख दर दुरकारीं दूजे करन ध्यान सुट्टी डूंघी खाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दित्ता माण ताण सोहँ दात चाईं चाईं। सोहँ दात हरि दर पा। सतिजुग साचे चढ़या चाअ। देवां माण सारे थां। निहकलंक कलि जोत जगाई साचे हरि, जिस दा ना कोई पिता ना कोई मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दोहां धिरां पहली माघी दित्ता मेल मिला। सतिजुग साचा करे सच सलाह। हरि जी साचे गुरसिक्खां दई मिला। तेरा मेरा इक्को राह गुरसिक्खां दई वखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर मेरे ते रक्खीं हत्थ कर के लम्मी बांह। अट्ठ सठ रोवे दर द्वार। मैं जावां गुरसिक्खां दे आत्म घर। बेमुख पंजे चोर अंदरों कढ्डां बाहर फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तेरा सोहँ शब्द गुरमुखां आत्म झोली देवां भर। साची दात भिच्छया मंग। सतिजुग साचे चाढ़े रंग। मातलोक ना होए भंग। गुरमुख साचे सन्त जन आप रलाए आपणे संग। बेमुख कलिजुग जीव धर्म राए दर देवे टंग। ना कोई ओथे होए सहाए, अड्डो अड्ड करन अंग अंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा लेख आप लिखाया, पहली माघी मंगी इक्को मंग। गुर पूरा भाग लगांयदा। आत्म भुक्खां सर्ब गवांयदा। साचा सुक्खा इक्क दवांयदा। उज्जल मुक्खा जगत करांयदा। गुरमुख साची सेवा लांयदा। मानस जन्म लेखे पांयदा। लक्ख चुरासी कट्ट वखांयदा। घनकपुर वासी प्रगट जोत दरस दिखांयदा। करे बन्द खलासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप चलांयदा। भोग लगाए हरि दातार। चिन्ता रोग सोग मिटाए, मिटाए अन्ध अँध्यार। साची जोत इक्क जगाए, गुरमुखां आत्म करे उज्जयार।

ऊँच नीच ना कोई पछाणे, विच मात किरपा कर हरि अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच गुरसिक्खां करे ठंडा ठार। लग्गे भोग दर परवान। गुरसिख साचे सन्त जन होए चतुर सुजान। बुझाए अग्न लग्गी तन देवे नाम दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा आप चुकाए जम की कान। भोग भगवान भगत वड्याई। साची सेवा लेखे लाई। आउणा जाणा जम का फाह, विच मात रिहा फंद कटाई। एका शब्द धरे सोहँ वड करामात, भरम भुलेखा दिसे नाही। गुर संगत बणाए इक्क जमात, गुरसिख भैण भ्रात विच विचोला ना कोई रखाई। ना कोई जाणे हरि जात पात, एका रंग लक्ख चुरासी रिहा चढ़ाई। गुरसिख साचे अंदर वेख मार झात, जोत सरूपी डगमगाई। विच बैठा रहे इक्क इकांत, बेमुखां हरि दीसे नाही। गुरमुखां देवे अमृत बूंद स्वांत, जो आए चल हरि सरन सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप हरि रघुराई। लाए भोग भगत भगवानयां। वेला गया हत्थ ना आवे, किसे राजे राणयां। वड वड भुल्ले शाह सुल्तान बेईमान प्रभ डन्ने हँकारी शैतानयां। गुरमुख साचा चतुर सुजान होवे दर परवान, देवे नाम कर कर वड मेहरबानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारे, गुरमुख विरले कलि पछाणयां । कलिजुग की करे विचारा। कलिजुग अन्तिम आई हारा। सतिजुग साचा लग्गा प्यारा। कलिजुग जूठा झूठा मात विच्चों होया बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, नर हरि सच्चा अवतारा। नर हरि सच्चा अवतारा। भोग लगाए पाए सार। चिन्ता सोग हउमे रोग गंवाए, मिल्या सच भतार। दरस अमोघ आप दिखाए, दीपक जोती सति जगाए, सोहँ साचा जाप जपाए आत्म तन देवे शंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां आदि अन्त पाउँदा रहे सार।

४६६
०३

❊ ❊ ❊ ❊ ❊